चिकित्सा-चन्द्रोदय

(दूसरा भाग)

लेखक

बाबू हरिदास वैद्य



मिलने का पता :

हरिदास एण्ड कम्पनी, मथुरा

प्रकाशिका :

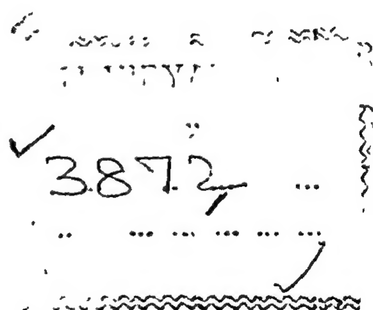
श्रीमती चमेली देवी,

हरिभवन, मथुरा

छठाँ संस्करण

जनवरी, १९४४

मूल्य – ७)



मुद्रक :

व्रजशंकर वर्मा,

योगी प्रेस, पटना

प्रकाशिका का निवेदन

आज मैं काँपते हाथों से, अपने पूज्य पिताकी पुस्तकोंके प्रेमी पाठकों की सेवा में, ये चन्द पंक्तियाँ लिख रही हूँ। मेरा दिल धड़क रहा है और आँखें तर हैं। मेरी ज़िन्दगीके एकमात्र सहारा—मेरे पिता, मेरे पास ही रुग्ण-शय्या पर लेटे-लेटे मेरी ओर निहार रहे हैं और मैं रुक-रुक कर ये शब्द लिखती जा रही हूँ। हिन्दी-संसार को मेरे पिता की जो सब से बड़ी देन है, वह मेरे लिये इस घड़ी में अभिशाप की तरह मालूम होती है। उन्होंने हज़ारों हज़ार पृष्ठ की और पुस्तकें लिखने में जो परिश्रम किया, वह तो किया ही; सैकड़ों महाग्रन्थों का मन्थन करके, चार हज़ार से भी ज्यादा पृष्ठोंका अनमोल ग्रन्थ "चिकित्सा-चन्द्रोदय" तैयार करनेमें उन्होंने अपनी कंचन-सी काया खराब कर ली; लगातार अठारह-अठारह घण्टोंकी मिहनतने उनके यकृत को खराब कर दिया; और तब से उनके शरीर पर वह पहला आब फिर नहीं आया। इसके अलावा भी दुनिया के और बहुत से घात-प्रतिघात आये, जिनका ज़िक्र करके सोए हुए दर्दों को बेदार करने में अब कोई लाभ नहीं।

नतीजा है कि जटिल व्याधि ने पिता जी को परेशान कर रखा है। जो शख्स अपने चिकित्सा-कौशल के लिये सारे उत्तर भारतमें मशहूर है, जो मलिकुल मौत से होड़ बद के लाइलाज कहके छोड़े हुए मरीजों को अपने हाथ में लेकर अपनी करामात दिखाता था, वही आज मरीज़ बन के बिस्तर पर पड़ा है और उसे ही डाक्टर लाइलाज कह-कहके मुझे रुला जाते हैं; पर फिर उसी शख्स के बताये नुसख़ोंको आज़माके मैं डाक्टरों को हैरत में डाल देती हूँ। मौत और जिन्दगी के बीच यह कशमकश आज कई वर्षों से चल रही है। बीच-बीचमें महीने दो-दो महीने तक

वे इतने अच्छे रहते हैं कि कारखानेका कारोबार देखते हैं, मरीजोंके पत्रों का उत्तर लिखते हैं और कभी-कभी सैकड़ों मीलकी यात्रा करके रोगी देख आते हैं; और कभी इस तरह नब्ज़ डूबती है कि मालूम होता है कि जीवन-ज्योति अब बुझी तब बुझी। इस संघर्षमें पिताजीका शरीर जर्जर हो गया है। भगवान जाने, वह मुझे किस हाल में छोड़ना चाहता है।

अन्त में पाठकवृन्द से मुझे यही निवेदन करना है कि मेरी कोई भूल आपको दीखे तो फ़ौरन उसे मेरी नज़र में लायें; मैं उसके निराकरण का तत्काल प्रबन्ध करूँगी। मुझ पर आपकी कृपा और सद्भावना बनी रहेगी, इसी विश्वास के बल पर मैं यह कार्य-भार सँभाले जाऊँगी।

वसन्त पञ्चमी (सम्वत् २८००) विनीता,

हरिभवन, मथुरा *चमेली देवी*

लेखक की ओर से

चिकित्सा-चन्द्रोदय (दूसरे भाग) का छठाँ संस्करण पाठकों की गुण-ग्राहकता और श्रीकृष्ण की कृपा का फल है; नहीं तो इस महंगीमें यह किताब नहीं छपती। मेरे द्वारा लिखित, संकलित या अनूदित—तमाम पुस्तकों के प्रकाशन, विक्रय, संशोधन, परिवर्द्धन, भाषान्तर और परिवर्तन—सब का एकाधिकार अपनी उत्तराधिकारिणी श्रीमती चमेली देवी को मैंने दे दी है। आशा है, मेरे मिहरबान पाठक मेरी पुत्रीके साथ सहयोग-भाव बनाये रखेंगे। कमज़ोरी के कारण मैं विशेष लिखने में असमर्थ हूँ, इसलिये क्षमा चाहता हूँ। यदि सेहत अच्छी हो गई, तो फिर सेवा में हाज़िर होऊँगा। आज—

अब तो चलते है मैक़दे से मीर,
फिर मिलेंगे, अगर ख़ुदा लाया।

रविवार, कृपैषी,

३०-१-१९४४ *हरिदास*

विषय-सूची

पहला अध्याय

दूसरा अध्याय

तीसरा अध्याय

चौथा अध्याय

पाँचवाँ अध्याय

छठा अध्याय

सातवाँ अध्याय

आठवाँ अध्याय

नवाँ अध्याय

दसवाँ अध्याय

ग्यारहवाँ अध्याय

बारहवाँ अध्याय

तेरहवाँ अध्याय

चौदहवाँ अध्याय

पन्द्रहवाँ अध्याय

सोलहवाँ अध्याय

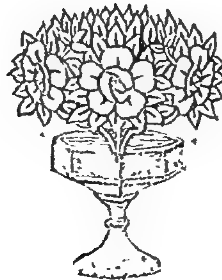
सत्रहवाँ अध्याय

अठारहवाँ अध्याय

उन्नीसवाँ अध्याय

बीसवाँ अध्याय

इक्कीसवाँ अध्याय





बाबू हरिदास वैद्य

चिकित्सा-चन्द्रोदय (सात भाग),
स्वास्थ्य-रक्षा, अँगरेजी शिक्षा, हिन्दी-
बंगला-शिक्षा आदि पुस्तकों के लेखक
और भर्तृहरि के शतकत्रय, गुलिस्ताँ
प्रभृति कितनी ही पुस्तकों के अनुवादक



पहला अध्याय

ज्वरकी उत्पत्ति और भेद

ज्वर रोगोंका राजा है

संसारमें, परमात्माने जितने रोगोंकी सृष्टि की है, उनमें ज्वर सबसे बलवान् और सबका राजा है। यों तो मनुष्यके प्राण-नाश करनेवाले, उसे भयङ्कर कष्ट देनेवाले क्षय, यक्ष्मा, गुल्म, अर्श, भगन्दर, उन्माद, प्रमेह, अपस्मार—मृगी प्रभृति अनेक रोग हैं; पर ज्वरकी समता करनेवाला, उपद्रव-पर-उपद्रव पैदा करनेवाला, अनेक प्रकारके रोगोंका जन्म देनेवाला, चिकित्सामें बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित करनेवाला, जन्मकालसे मरणकाल तक प्राणीके साथ रहनेवाला और रोग नहीं है; इसीसे ज्वरको सभी प्राचीन मुनियोंने "रोगराज" कहा है।

"सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में लिखा है:—

जन्मादौ निधने चैव प्रायो विशति देहिनः।
अतः सर्वविकाराणामयं राजा प्रकीर्तितः॥

"पैदा होनेके समयसे मरनेके समय तक ज्वर प्रायः प्राणीके शरीर में रहता है, इसीसे ज्वरको सब रोगोंका राजा कहा है।" "चरक" में लिखा है—"जीवके जन्म लेनेके समय ज्वर रहता है और उसके

मरनेके समय भी ज्वर रहता है। जन्मकालमें ज्वर रहता है, इसीसे प्राणी अपने पूर्व जन्मकी बात भूल जाता है। शेषमें, ज्वर ही प्राणियोंके प्राण नाश करता है।" दुनियामें यह बात मशहूर है, कि कोई रोग क्यों न हो, देह छूटते समय ज्वर आ ही जाता है, इसीसे प्राणी उस समय जो भयङ्कर दृश्य देखता है, उसका वर्णन नहीं कर सकता। ज्वरके वेगके मारे मनुष्य बेहोश हो जाता है, गला रुक जाता है, ज़बान बन्द हो जाती है; उस समय यदि वह कुछ कहना भी चाहता है तो कह नहीं सकता। मृत्यु-समय ज्वर होता है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। "हारीत संहिता" में लिखा है:—

ज्वरेण मृत्युर्विज्ञेयो न मृत्युः स्याज्ज्वरं विना।

"ज्वरसे मृत्यु होती है, विशेषकर ज्वर बिना मृत्यु नहीं होती।"

मनुष्य ही ज्वरको सह सकता है

ज्वर सभी प्राणियोंको होता है; पर मनुष्योंके सिवा और प्राणी इसका वेग नहीं सह सकते। कर्मफलोंसे मनुष्य देवत्व लाभ करता है। जब उसके पुण्यकर्मोंका अन्त हो जाता है, तब वही स्वर्गसे गिरकर मनुष्य-देहमें आता है; इसलिये मनुष्यमें देवांश रहता है। उस पहलेके देवांशके कारण ही, मनुष्य ज्वरके भयानक वेगको सह सकता है। पशु-पक्षी आदि और प्राणी ज्वरको नहीं सह सकते। यदि उनको ज्वर आता है, तो उनकी मृत्यु हो ही जाती है। गाय, भैंस और घोड़ा-हाथीमें ज्वर असाध्य समझा जाता है। मनुष्योंमें ज्वर कष्टसाध्य, किन्तु और जीवोंमें प्राणनाशक ही समझा जाता है।

ज्वर पूर्वजन्मके पापोंका फल है

"चरक" में लिखा है—"ज्वर निर्दोष प्राणीको नहीं आता। जिन्होंने पहले जन्ममें पापकर्म या बुरे कर्म किये हैं, उन्हींको ज्वर सताता है: इसीसे ज्वरको ज्वर, क्षय, तम, पाप और मृत्यु कहते हैं।"

ज्वरोंसे रोगोंकी उत्पत्ति

"हारीत-संहिता" में लिखा है—अधिक मिहनत करने, कसरत न करने, चिन्ता करने, शोक करने, भय करने, क्रोध करने एवं औषधियोंकी गंध और विशेषकर, धातुक्षयसे, कोठेकी अग्निको निकालकर, त्वचामें रहनेवाले रक्त-पित्त ज्वरको पैदा करते हैं। उस ज्वरसे मन्द ज्वर होता है। मन्द ज्वरसे अति मन्द ज्वर होता है। उस बहुत ही बारीक ज्वरमें रोगी, ज्वरको ज्वर न समझकर खट्टी चीजें जियादा खाता है, तो उसे कामला रोग हो जाता है। कामलासे हलीमक पैदा होता है। हलीमकसे पाण्डु-पीलिया होता है। राजरोगसे सूजन, सूजनसे उदररोग, उदर रोगसे वातगुल्म—वायुगोला, वातगुल्मसे श्वास और शूल रोग होता है। शूलसे मन्दाग्नि और मन्दाग्निसे स्वरभेद होता है। मतलब यह कि, ज्वरसे इन सब रोगोंकी उत्पत्ति होती है और अन्तमें ज्वरसे मृत्यु होती है। और भी कहा है—ज्वरसे रक्त-पित्त होता है। ज्वर और रक्त-पित्तसे श्वास होता है। दाह बढ़नेसे जठर रोग होता है। जठर रोगसे सूजन होती है। अर्श या बवासीरसे पेटमें दर्द और गोला होता है। जुकामसे खाँसी, और खाँसीसे क्षय होता है। इस तरह एक रोग दूसरे रोगका कारण होता है। पर ज्वर प्रायः अनेक रोगोंका कारण होता है।

मतलब यह कि ज्वर वनराजकी तरह रोगराज है और दुश्चिकित्स्य है। इसकी चिकित्सामें बड़ी होशियारीकी जरूरत है। जरा-सी भूलसे ज्वर बिगड़कर विषमज्वर अथवा सन्निपात ज्वरका रूप धारण करता है। सन्निपात ज्वरसे कोई विरला ही भाग्यवान बचता है; क्योंकि सन्निपात ज्वर और मृत्युमें कोई भेद नहीं। जो सन्निपात ज्वर होनेपर आराम हो जाता है, वह नया जन्म लेता है।

ज्वरकी उत्पत्ति

ज्वरके सम्बन्धमें अथवा ज्वरकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें आयुर्वेदमें बहुत कुछ लिखा है; पर सबका मतलब एक ही है। फिर भी हम पाठकोंकी

जानकारी और मनोरञ्जनके लिये दो तीन श्लोक उद्धृत किये देते हैं:-

"हारीत-संहिता" में लिखा है—

दक्षाध्वरप्रशमनः कुपितोहि महेश्वरः ।
श्वासं मुमोच दयिता विधुरश्च तीव्रम् ।
तेन ज्वरोऽष्ट विधसम्भवतोऽष्टधास्यात् ॥

दक्ष प्रजापतिसे कुपित होकर महेश्वर—महादेवने, सतीके लिये, आठ श्वास छोड़े, इससे ज्वर आठ प्रकारका हुआ ।

"सुश्रुत" में लिखा है: —

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः ।
ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वन्द्वसंघातागन्तुजः स्मृतः ॥

दक्षके अपमान करनेसे महादेवको क्रोध हुआ। उस क्रोधसे जो श्वास निकला, उसीसे पृथक्, द्वन्द्व, संघात और आगन्तुज आठ प्रकारके ज्वर हुए।

नोट—ये आठ प्रकार के ज्वर मुख्य हैं। इनसे ज्वरोंकी और बहुत-सी शाखाएँ निकलती हैं। उन सबका वर्णन हमने आगे किया है। पाठकों को चाहिये, ज्वरोंके भेदोंको अच्छी तरहसे याद कर लें; क्योंकि बिना भेद याद हुए चिकित्सा हो नहीं सकती।

"सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में भी लिखा है:—

रुद्रकोपाग्निसंभूतः सर्वभूतप्रतापनः ।
तैस्तैर्नामभिरित्येषां सत्वानां परिकीर्त्तितः ॥

ज्वर रुद्र यानी महादेव की कोपाग्नि से पैदा हुआ है और सब प्राणियों को सन्ताप देनेवाला है। अलग-अलग प्राणियोंमें वह अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। जैसे; मनुष्योंमें उसे ज्वर, हाथियोंमें पातक, घोड़ोंमें अभिताप, गायोंमें ईश्वर, भैंसोंमें दारिद्र, मृगोंमें मृग-रोग, बकरी और भेड़ोंमें प्रलाप एवं कुत्तोंमें अर्ल। इसी तरह सब

प्राणियोंमें ज्वर होता है और उसके जुदे-जुदे नाम हैं। सारांश यह कि, ज्वर महादेवके क्रोधसे पैदा हुआ है।

ज्वरकी प्रकृति

ज्वर रुद्रकोपसे पैदा हुआ है। "चरक" में लिखा है कि क्रोधसे पित्त पैदा होता है; इसलिए, क्रोधसे पैदा होने के कारण ज्वरकी प्रकृति पैत्तिक यानी पित्तकी है। अथवा यों समझिये कि ज्वरका स्वभाव गरम है। इसलिए इसका इलाज पित्तशमन करनेवाले—शीतल द्रव्योंसे करना चाहिये—पित्त-विरोधी चिकित्सा अच्छी नहीं। महर्षि वाग्भट्ट लिखते हैं:—

उष्मा पित्तादृते नास्ति ज्वरो नास्त्यूष्मणा विना।
तस्मात् पित्त-विरुद्धानि त्यजेत् पित्ताधिकेऽधिकम् ॥

गरमी विना पित्तके नहीं होती और ज्वर विना गरमीके नहीं होता, इसलिए ज्वरमें "पित्तविरोधी" चिकित्सा न करनी चाहिए; विशेषकर पित्तज्वरमें तो भूलकर भी पित्तका विरोध करनेवाली—गरम चिकित्सा न करनी चाहिए।

खुलासा यह है, कि सभी प्रकारके ज्वरोंमें पित्तका कोप होता है। अगर सभी ज्वरोंमें पित्तका कोप न होता, तो ज्वरोंमें गरमी न होती। पित्तसे ही ज्वरोंमें गरमीका सन्ताप रहता है; इसलिए सभी प्रकारके ज्वरोंमें ऐसी चिकित्सा करनी चाहिए, जिससे पित्त और भी कुपित न हो जाय। ख़ासकर पित्तज्वरमें तो इस बातका बहुत ही ख़याल रखना चाहिये। पित्तज्वरमें गरमी बड़े ज़ोरसे रहती है, रोगीको दाहके मारे कल नहीं पड़ती, शरीर जलने लगता है। बुद्धिमान् और अनुभवी वैद्य पित्तज्वरमें सुगन्धवाला, ख़स और चन्दनादि द्रव्योंके योगसे काढ़ा बना कर देते हैं; केले या कमलके पत्तों पर रोगीको सुलाते हैं; चन्दन और ख़स प्रभृतिसे छिड़काव किये हुए, ख़सकी टट्टियाँ लगे हुए, चन्द्रमाकी

किरणोंसे शीतल हुए घरमें पित्तज्वरवालेको रखते हैं; नाभि पर काँसीका वर्तन रखकर शीतल जलकी धारा देते हैं; किन्तु नासमझ वैद्य सभी ज्वरोंमें और पित्तज्वरमें भी, शीत आ जानेके भयसे, रोगीको गरम घरमें रखते हैं; उसे गरम कपड़ोंसे ढक देते हैं; घरके दरवाजे और खिड़कियोंको बन्द करा देते हैं तथा शीतप्रधान ज्वरोंमें देने योग्य गरम काढ़े देते हैं। नतीजा यह होता है, कि गरम ही गरम इलाज करनेसे सन्निपात ज्वर हो जाता है और रोगी परमधाम की राह लेता है।

मामूली क़ायदा यह है कि, गरमी से पैदा हुए रोगोंमें सर्द और सर्दीसे पैदा हुए रोगोंमें गरम दवा दी जाती है; पर डाक्टरोंकी तरह सिर पर वर्फ रखाना अथवा हकीमोंकी तरह एकदम शीतल दवा देना भी अच्छा नहीं है। पित्तमें जिस तरह गरम दवा देना अच्छा नहीं; उसी तरह अधिक सर्दी पहुँचाना भी बुरा है। ऐसी चिकित्सा भी न करनी चाहिये, जिससे सिर पर गरमी चढ़ जाय और ऐसी भी न करनी चाहिये, जिससे शीत आ जाय। ज्वरमें खूब सोच-समझकर, जहाँ जैसी ज़रूरत हो, वहाँ वैसी ही, चिकित्सा करनी चाहिये। पित्त-ज्वरमें तो पित्तका लिहाज़ रखना ही चाहिये; किन्तु संसर्गज ज्वरोंमें भी पित्त पर ही पहले ध्यान देना चाहिये। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में लिखा है—

निर्हरेत् पित्तमेवादौ ज्वरेषु समवायिषु।
दुर्निवारतरं तद्धि ज्वरार्तेषु विशेषतः॥

संसर्गज ज्वरोंमें पहले पित्तको शमन करनेवाली क्रिया करनी चाहिये; क्योंकि ज्वर-पीड़ित मनुष्योंमें, विशेष कर, पित्त ही कठिनाई से क़ाबूमें आता है।

नोट—यों तो सभी रोगोंकी चिकित्सामें बड़ी चातुरी और सावधानीकी ज़रूरत है; पर ज्वरमें इनकी विशेष ज़रूरत है। ज्वर ज़रा-सी असावधानीसे बिगड़ जाता है और अनमोल जीवन नष्ट हो जाता है। बहुतसे अनाड़ी वैद्य

ज्वरमें शीत आ जानेके भयसे अन्धाधुन्ध गर्म दवाएँ दिये जाते हैं। अगर ज्वरमें सर्दी अधिक होती है, तो रोगी बच जाता है; अन्यथा दिमाग़में गरमी चढ़ जाती है और रोगी बेहोश होकर मर जाता है।

ज्वरका साधारण स्वरूप

ज्वर रोग कैसा होता है, उसमें साधारण रूप से क्या-क्या लक्षण होते हैं, इसे प्रत्येक मनुष्य और स्त्री-बच्चा तक समझता है। सभी जानते हैं, जिस रोगमें शरीर गरम होता है, शरीरमें दर्द होता है, उसे ही ज्वर कहते हैं। बोलचालकी भाषामें "ज्वर" को बुख़ार, अँग्रेजीमें फीवर, हिकमतमें तप और संस्कृतमें ज्वर कहते हैं। शास्त्रोंमें ज्वरके लक्षण इस भाँति लिखे हैं—

ज्वरके लक्षण

स्वेदावरोधस्संतापः सर्वाङ्गग्रहणं तथ। ।
युगपद्यत्र रोगे तु स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥

जिस रोगमें पसीने न आवें, शरीर बहुत गर्म हो और सारे शरीर में दर्द या जकड़न-सी हो,—उसे "ज्वर" कहते हैं। ज्वरके साधारण लक्षण यही हैं। ज्वरमें शारीरिक और मानसिक सन्ताप अवश्य होता है; बिना सन्ताप ज्वर नहीं होता। ज्वरमें पसीना नहीं आता, यह साधारण नियम है। पित्तज्वरमें कभी-कभी पसीना आता है❀।

ज्वरकी क़िस्में

लक्षण-भेद से ज्वर बहुत क़िस्मका होता है; पर चिकित्सा-कार्य्यके

❀ यहाँ ज्वरके साधारण लक्षणोंमें पसीनोंका न आना लिखा है, किन्तु पित्तज्वरमें पसीने आते हैं और वातकफ ज्वरमें खूब पसीने आते हैं; इससे नियम में कोई गड़बड़ी नहीं होती। यह साधारण नियम है; किन्तु पित्तज्वर या वात-कफ ज्वर विशेष हैं। हाँ, शरीरका आगकी तरह कम और ज़ियादा जलना या गरम होना सभी ज्वरोंमें देखा जाता है।

सुभीतेके लिए, मुख्यतया, ज्वर आठ प्रकारका माना गया है:—

१—वातज्वर।	५—पित्तकफ ज्वर।
२—पित्तज्वर।	६—वातकफ ज्वर।
३—कफज्वर।	७—सन्निपात ज्वर।
४—वातपित्त ज्वर।	८—आगन्तुक ज्वर

सन्निपात ज्वरके भेद

आयुर्वेदमें रोगोंके अनेक वर्ग और उपवर्ग किये गये हैं। डाक्टरीमें रोगोंका वर्गीकरण और ही तरहसे किया गया है। ज्वरके जिस तरह आयुर्वेदमें अनेक भेद हैं; उसी तरह डाक्टरीमें भी हैं; किन्तु आयुर्वेदमें जिस तरह सन्निपात ज्वर ५२ प्रकारका या १३ प्रकारका माना गया है; उसी तरह डाक्टरीमें नहीं है। सुश्रुत और वाग्भट्टने सन्निपात ज्वरके अलग-अलग भेद नहीं लिखे हैं; परन्तु चरकाचार्य्यने, कमजोर दिमाग़वालोंके लिए, सन्निपातके ख़ास-ख़ास लक्षणोंसे १३ विभाग किये हैं। दोषोंकी कमी और जियादती अथवा प्रधानता और अप्रधानताके हिसाबसे सन्निपात ज्वरके १३ विभाग कर देनेसे, चिकित्साकार्य्यमें बड़ा सुभीता हो गया है।

वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषोंसे होनेवाले ज्वरको "सन्निपात ज्वर" कहते हैं। इस ज्वरमें जिस दोषके लक्षण अधिक हों, उसीकी उल्वणता या प्रधानता समझनी चाहिए। यदि एक दोष अधिक जोर पर हो तो एकोल्वण, दो दोष अधिक जोरपर हों तो दो दोषोल्वण और तीनों दोष अधिक जोरपर हों तो त्र्युल्वण या त्रिदोषोल्वण कहते हैं। दोषोंकी प्रधानता या उल्वणताके हिसाबसे सन्निपात ज्वर सात तरहके होते हैं:—

१—वातोल्वण, २—पित्तोल्वण, ३—कफोल्वण,
३—वातपित्तोल्वण, ५—वातकफोल्वण, ६—पित्तकफोल्वण,
७—त्र्युल्वण।

जिस तरह वातादिक दोषोंकी प्रधानता या उल्बणताके भेदसे सात तरहके सन्निपात ज्वर होते हैं; उसी तरह दोषोंकी हीनता, मध्यता और अधिकताके भेदसे ६ प्रकारके सन्निपात ज्वर और भी होते हैं। जैसे:—

१—अधिक वात,	मध्य पित्त,	हीन कफ।
२—अधिक वात,	मध्य कफ,	हीन पित्त।
३—अधिक पित्त,	मध्य वात,	हीन कफ।
४—अधिक पित्त,	मध्य कफ,	हीन वात।
५—अधिक कफ,	मध्य वात,	हीन पित्त।
६—अधिक कफ,	मध्य पित्त,	हीन वात।

इस तरह ७ दोषोंकी उल्बणताके हिसाबसे और ६ दोषोंकी हीनता, मध्यता और अधिकताके हिसाबसे—कुल तेरह प्रकारके सन्निपात ज्वर हुए, यही चरकमें लिखे हैं। दोषोंकी प्रधानता, अप्रधानता, और हीनता, मध्यता तथा अधिकताकी पहचान आ जानेसे बड़े मजेमें चिकित्सा होती है। जैसे; जिस सन्निपात ज्वर-रोगीके ज्वरमें वातके लक्षण बहुत हों, पित्तके कम हों और कफके और भी कम हों,—इसे वातोल्बण, अधिक वात, मध्य पित्त और हीन कफ सन्निपात कहेंगे। दोषोंकी कमी-बेशी के अनुसार ही चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सकोंके सुभीतेके लिए, अन्यान्य आचार्योंने सन्निपातोंके मुख्य लक्षणोंके हिसाबसे, उनके तेरह नाम लिख दिये हैं❀। उन तेरहों

❀ सन्धिकमें सन्धियों या जोड़ोंमें बड़ी वेदना होती है। अन्तक असाध्य है, वह प्राणी का अन्त ही कर देता है। रुग्दाहमें दाहका बड़ा ज़ोर होता है, इसीसे इसका इलाज पित्तज्वरकी तरह होता है। चित्तविभ्रममें रोगीके चित्तमें भ्रम हो जाता है और वह पागल हो जाता है। शीतांगमें सारा शरीर बर्फके समान शीतल हो जाता है। तन्द्रिकमें तन्द्राका ज़ोर रहता है, आँखें झिपी जाती हैं। कण्ठकुब्जमें कण्ठ रुक जाता है, रोगीको जल पीनेमें भयानक कष्ट होता है। कर्णक ज्वरमें कानकी जड़में गाँठ या सूजन होती है, रोगी बहरा हो

के नाम हम नीचे लिखे देते हैं। उनके लक्षण कण्ठाग्र रखने और पहचान लेने का अभ्यास कर लेनेसे, सन्निपात ज्वरोंकी चिकित्सामें और भी आसानी हो जाती है। उनके नाम ये हैं:—

१—सन्धिक, २—अन्तक, ३—रुग्दाह, ४—चित्तविभ्रम, ५—शीतांग, ६—तन्द्रिक, ७—कण्ठकुब्ज, ८—कर्णक, ९—भुग्ननेत्र, १०—रक्तष्ठीवी, ११—प्रलापक, १२—जिह्वक, १३—अभिन्यास।

विषम ज्वर

जिन ज्वरोंका वेग विषम होता है, कभी जोरसे चढ़ते हैं, कभी जोरसे नहीं चढ़ते, कभी किसी समय आते हैं और कभी किसी समय,—उनको "विषमज्वर" कहते हैं। ज्वर आने और उसके शान्त होनेपर शीघ्र ही स्नान आदि कुपथ्य करनेसे वातादि दोष फिर कुपित होकर रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इन सातोंमें से किसी एक धातुमें अपना घर कर लेते हैं। ऐसे ज्वरोंको "विषमज्वर" कहते हैं। आमज्वर यानी कच्चे ज्वरमें मूर्खतासे औषधि दे देनेसे भी विषम-ज्वर हो जाते हैं। "सुश्रुत" में लिखा है:—

भेषजं ह्याम दोषस्य भूयो ज्वलयति ज्वरम्।
शोधनं शमनीयं तु करोति विषमज्वरम्॥

दोषोंके बिना पके, आमज्वर या कच्चे बुखारमें दवा देनेसे ज्वर प्रचण्ड रूप धारण करता है और शोधन-शमन क्रिया करनेसे विषम-ज्वर हो जाता है। मतलब यह हुआ कि, पीछे कहे हुए वातज्वर या पित्तज्वर आदिकी ठीक चिकित्सा न होनेसे, अथवा ज्वरान्तमें कुपथ्य करनेसे, वे विषमज्वर हो जाते हैं और रस, रक्त आदि धातुओंमें घुस

जाता है। भुग्ननेत्रमें नेत्र टेढ़े हो जाते हैं। रक्तष्ठीवीमें थूकके साथ खून आता है। प्रलापकमें रोगी रात-दिन प्रलाप या वृथा बकवाद करता है। जिह्वकमें जीभमें भयानक काँटे पैदा हो जाते हैं और रोगी गूंगा हो जाता है।

जाते हैं, इसलिये हम विषमज्वरोंको उनके बाद लिख रहे हैं। यद्यपि आठ प्रकारके ज्वरोंमें विषम ज्वरोंका नाम नहीं आया है, पर इनकी जड़ वे ही हैं।

विषम ज्वरोंकी क़िस्में

मुख्यतया विषमज्वर पाँच प्रकारके होते हैं:—

१—सन्तत ज्वर। ३—अन्येद्युः ज्वर।
२—सतत ज्वर। ४—तृतीयक ज्वर।
५—चातुर्थिक ज्वर।

सप्तधातुगत ज्वर

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इनमें रहनेवाले सात ज्वर होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

१—रसगत ज्वर। २—रक्तगत ज्वर।
३—मांसगत ज्वर। ४—मेदगत ज्वर।
५—अस्थिगत ज्वर। ६—मज्जागत ज्वर।
७—शुक्रगत ज्वर।

नोट—सन्तत ज्वर ७ या १० अथवा १२ दिन तक एक सा बना रहता है, किन्तु १२ वें दिन अच्छी तरहसे छूटकर फिर बहुत समय तक बना रहता है; इससे इसको विषम ज्वरोंमें मानते हैं। सुश्रुत सन्तत ज्वरको विषम ज्वर नहीं मानता, किन्तु प्रलेपक ज्वरको पाँचवाँ विषम ज्वर मानता है। सतत ज्वर दिन रातमें दो समय होता है। अन्येद्युः दिन रातमें एक बार होता है। तृतीयक, जिसे बोलचालमें तिजारी कहते हैं, जिस दिन आया है उसके तीसरे दिन फिर आता है। चातुर्थिक, जिसे बोलचालमें चौथैया कहते हैं, अपने आनेके दिनसे चौथे दिन आता है।

रस, धातुमें दोषोंके होनेसे सन्तत ज्वर होता है। रुधिर या रक्तमें होनेसे सतत ज्वर, मांसमें होनेसे अन्येद्युः, मेदमें होनेसे तृतीयक एवं अस्थि और मज्जा में दोषके स्थित होनेसे, कालके समान प्राणनाशक, चातुर्थिक या चौथैया ज्वर

होता है, जब दोष शुक्र या वीर्य्यमें घर कर लेता है, तब रोगी एकदम असाध्य हो जाता है। उसकी चिकित्सा करना बदनामी मोल लेना है। इन सबके लक्षण और चिकित्सा आगे लिखेंगे।

जब दोष किसी एक धातुमें घर कर लेता है, वह उस धातुको बहुत दूषित नहीं करता तथा अनुलोम होनेसे कष्टसाध्य भी नहीं होता; किन्तु जब रसमें ठहरा हुआ दोष रसको ख़राब करके रक्तमें, फिर रक्तको बिगाड़कर मांसमें, मांसको दूषित करके मेदमें, मेदको दूषित करके अस्थि—हड्डीमें, हड्डीको ख़राब करके मज्जामें, शेषमें मज्जाको बिगाड़कर शुक्र या वीर्य्य में पहुँचता है; यानी इस तरह ऊपर-ऊपरकी धातुओंको ख़राब करता हुआ भीतर-भीतरकी धातुओंमें जाता है, तब उतना ही कष्टसाध्य होता जाता है। इसीसे कितने ही आचार्य्य धातुगत ज्वरोंको अलग मानते हैं। पर इनके जाननेसे लाभ यह है कि, जब ज्वर सब तरहकी चिकित्सा करनेसे न जाय, तब पता लगाना चाहिए, उसने किसी धातुमें तो डेरा नहीं लगा दिया है। लक्षणोंसे पता लगते ही, उसे उस धातुसे अलग करनेकी चेष्टा करनी चाहिये; बस, सफलता प्राप्त होगी।

नोट—इनके सिवा प्रलेपक ज्वर, वातबलासक ज्वर, शीतपूर्व्वक ज्वर, दाह-पूर्व्वक ज्वर, अन्तर्वेगी ज्वर, बहिर्वेगी ज्वर, प्राकृत ज्वर, वैकृत ज्वर एवं गम्भीर ज्वर प्रभृति और भी ज्वर होते हैं। उनको हम आगे लिखेंगे।

आगन्तुक ज्वर*

आगन्तु ज्वर ही आठवाँ ज्वर है। आगन्तुक ज्वर चार प्रकार

---

* आगन्तुक ज्वरोंको अलग इसलिये माना है कि, इनमें वह पीड़ा पहले होती है, जिसके कारणसे आगन्तुक ज्वर होता है; पीछे दोष कुपित होते हैं; यानी पहले ज्वरकी हेतु—कारण—पीड़ा पैदा होती है और पीछे दोष कुपित होते हैं। जैसे; कोई डर गया, डरनेसे ज्वर हो गया, पीछे वायु कुपित हुई। जो दोष कुपित हो, उसके लक्षणके अनुसार इलाज करना चाहिये। अगर क्रोध करनेसे ज्वर हो, तो पित्त कुपित होगा। फिर भी उसके लक्षण मिलाकर तसल्ली कर लो।

के होते हैं:—

१—अभिघातज॰। २—अभिचारज॰। ३—अभिषंगज॰। ४—अभिशापज॰।

इनकी और भी क़िस्में हैं। जैसे,—काम ज्वर, क्रोध ज्वर, शोक-ज्वर, भय ज्वर, भूत ज्वर, विष ज्वर और औषधिगन्ध ज्वर प्रभृति। इनके सम्बन्धमें भी आगे लिखेंगे।

चरकसे ज्वरके लक्षण और भेद

ज्वरके लक्षण

दैहिक और मानसिक सन्तापका होना—यह सब ज्वरोंका साधारण लक्षण है। ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जिसे ज्वर होने पर सन्ताप यानी गरमी न व्यापे।

ज्वरके भेद

(१) शरीर और मानस।
सौम्य और आग्नेय।
अन्तर्वेग और वहिर्वेग।
प्राकृत और वैकृत।
साध्य और असाध्य।

इन भेदोंसे ज्वर दो-दो प्रकारका होता है।

(२) दोष और कालके बलाबलसे ज्वर पाँच प्रकारका होता है। जैसे,—सन्तत, सतत, अन्येद्युः, तृतीयक और चातुर्थिक।

(३) सात धातुओंके आश्रय-भेदसे ज्वर सात प्रकारका होता है। जैसे,—रसगत ज्वर, रक्तगत ज्वर, मांसगत ज्वर, मेदोगत ज्वर,

॰ तलवार लकड़ी प्रभृति की चोट लगनेसे जो ज्वर होता है, उसे "अभिघातज" कहते हैं। विपरीत मन्त्र जपने और जादू टोनेसे जो ज्वर होता है, उसे "अभिचारज" कहते हैं। काम, शोक, भय, क्रोध अथवा भूत प्रभृतिसे जो ज्वर होता है, वह "अभिषंगज" तथा शापसे होनेवाला "अभिशापज" कहाता है।

अस्थिगत ज्वर, मज्जागत ज्वर और शुक्रगत ज्वर।

(४) वात-पित्त और कफके कारण-भेदसे ज्वर आठ तरहका होता है:—

१—वातज्वर, २—पित्तज्वर, ३—कफज्वर,
४—वातपित्त ज्वर, ५—कफपित्त ज्वर, ६—वातकफ ज्वर।
७—सन्निपात ज्वर, ८—आगन्तुक ज्वर।

शारीर और मानस ज्वरके लक्षण

शारीर ज्वर पहले शरीरमें होता है और मानस ज्वर पहले मनमें प्रकट होकर पीछे देहमें फैलता है। विकृत-चित्तता, चित्तकी अनवस्थता और ग्लानि,—ये मानसिक सन्ताप और मानस ज्वरके लक्षण हैं। इन्द्रियोंकी विकृति होना शारीरिक ज्वरके लक्षण हैं।

सौम्य और आग्नेय ज्वरके लक्षण

वातपित्तात्मक ज्वर शीतलता चाहता है और वातकफात्मक गरमी चाहता है। मिले हुए लक्षणोंवाला ज्वर सर्दी और गरमी दोनों चाहता है।

सौम्य सर्दीके और आग्नेय गरमीके ज्वरको कहते हैं।

अन्तर्वेग और बहिर्वेग ज्वरके लक्षण

देहके भीतर अत्यन्त दाह, प्यास, प्रलाप, श्वास, सन्धिशूल, अस्थिशूल, पसीना न आना एवं दोष और विष्ठाकी रुकावट—ये लक्षण अन्तर्वेगी ज्वरके हैं।

शरीरके बाहर सन्ताप अधिक हो, प्यास प्रभृति लक्षण थोड़े हों तथा सुखसाध्यता हो—ये बहिर्वेगी ज्वरके लक्षण हैं।

नोट—बहिर्वेगीके सुखसाध्य लिखने से मालूम होता है, अन्तर्वेगी ज्वर कष्टसाध्य या असाध्य होता है।

प्राकृत ज्वर और वैकृत ज्वरके लक्षण

वर्षाशरद्वसंतेषु वाताद्यैःप्राकृतःक्रमात् ।
वैकृतोऽन्यः सुदुःसाध्यः प्राकृतश्चानिलोद्भवः ॥

वर्षाऋतुमें वात ज्वर, शरद्ऋतुमें पित्त ज्वर और वसन्त ऋतुमें कफ ज्वर हों, तो "प्राकृत ज्वर" समझने चाहियें। इनके विपरीत; वर्षाकालमें पैत्तिक ज्वर हो, शरद्में कफ ज्वर हो और वसन्तमें वात ज्वर हो, तो "वैकृत ज्वर" समझने चाहियें। प्राकृत ज्वर सुखसाध्य होते हैं और वैकृत ज्वर दुःसाध्य होते हैं।

नोट—वातजन्य प्राकृत ज्वर भी दुःसाध्य होता है। और रोगोंमें प्राकृतत्व दुःसाध्य है; परन्तु ज्वरमें प्राकृतत्व सुखसाध्य है। वर्षा, शरद और वसन्त क्रमसे वात, पित्त और कफ के प्रकृत काल हैं। इनके विपरीतको विकृत काल कहते हैं।

गम्भीर ज्वरके लक्षण

गम्भीरस्तु ज्वरोज्ञेयो ह्यन्तर्दाहेन तृष्णया ।
आनद्धत्वेन चात्यथ श्वासकासोद्गमेन च ॥
हतप्रभेन्द्रियं क्षामं दुरात्मानमुपद्रुतम् ।
गंभीर तीक्ष्णवेगात ज्वरितं परिवर्जयेत् ॥

जिसके भीतर दाह हो, प्यास अधिक हो, दोष और मल जहाँके तहाँ रुके हों, श्वास और खाँसीका अत्यन्त जोर हो, कान्ति बिगड़ गई हो और इन्द्रियाँ भ्रष्ट हो गई हों, चित्त दुर्बल और ख़राब हो, हिचकी आदि उपद्रव हों, ज्वरका वेग गम्भीर और तीक्ष्ण हो—यह "गम्भीर ज्वर" के लक्षण हैं। ऐसे रोगी को त्याग देना चाहिये। यह ज्वर असाध्य है—सुश्रुत।

आम ज्वरके लक्षण

"चरक" में लिखा है,—अरुचि, अविपाक, पेटका भारीपन, हृदय

की अशुद्धता, तन्द्रा, आलस्य, ज्वरका विना विश्राम एकसा चढ़ा रहना और ज़ोर रहना, दोषोंका निकास न होना, लार बहना, सूखी ओकारी आना, भूख न लगना, मुखमें लिबलिबाहट, शरीरकी स्तब्धता, सुप्तता, भारीपन, पेशाब अधिक होना, मलका न पकना—कच्चा उतरना और शरीरका चिकना-सा रहना—ये "आम ज्वर" के लक्षण हैं। "सुश्रुत" में दस्तक़ब्ज़ रहना, कल न पड़ना और नींद न आना, वगैरः लक्षण लिखे हैं।

नोट—आम-दोषसे ही ज्वर होता है और "आम" उपवाससे नष्ट होता है, इसीसे ज्वरमें उपवास कराते हैं। आम ज्वरमें शमन औषधि और अन्न न देना चाहिये। निराम ज्वरमें दवा आदि देने से ज्वर शीघ्र आराम होता है।

निराम ज्वरके लक्षण

क्षुत्क्षामता लघुत्वंच गात्राणांज्वरमार्दवम्।
दोषप्रवृत्तिरुत्साहो निरामज्वरलक्षणम् ॥

भूखका लगना, देहका कृश होना, अंगोंका हलकापन, मन्द ज्वर होना, अधोवायु खुलना और मनमें उत्साह होना, ये निराम—आम-रहित या पके ज्वर के लक्षण हैं।

पच्यमान ज्वरके लक्षण

ज्वरवेगोऽधिकातृष्णाप्रलापः श्वसनंभ्रमः।
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेशः पच्यमानस्यलक्षणम् ॥

ज्वरका वेग, अधिक प्यास, प्रलाप, श्वास, भ्रम, मलकी प्रवृत्ति और वमन-सी आती जान पड़ना—ये "पच्यमान ज्वर" के लक्षण हैं।



दूसरा अध्याय

ज्वरके कारण और सम्प्राप्ति प्रभृति

रोगोंके कारण

हमारे आयुर्वेदमें सभी रोगोंका होना वात, पित्त और कफके कुपित होनेसे बतलाया गया है। वात, पित्त और कफके कुपित होनेका कारण मनुष्योंका "अपथ्य सेवन" बतलाया गया है; यानी हम लोगों के उचित रूपसे आहार-विहार न करनेसे उपरोक्त वातादिक दोष कुपित होते हैं और कुपित होकर नाना प्रकारके रोग करते हैं। "माधव निदान" में लिखा है:--

सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः।
तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्तं विविधाहित सेवनम् ॥

नाना प्रकारके अहित सेवनसे वातादिक दोष कुपित होते हैं और इन तीनोंके कुपित होनेसे सारे रोग होते हैं।

नोट--आरोग्य चाहनेवालोंको सदा अहित सेवनसे बचना चाहिये, जिससे दोषोंके कुपित होनेसे रोग न हों।

महर्षि चरक और वाग्भट्ट ने रोग और आरोग्यके कारण बड़ी ही खूबीसे एक-एक श्लोकमें ही लिख दिये हैं। सच पूछिये, तो उक्त महर्षियोंने थोड़ेमें ही सारी आरोग्यताकी कुञ्जी लिख दी है। अगर मनुष्य उनको समझे और समझकर उनपर ध्यान रक्खे, तो कभी रोगोंके पञ्जोंमें ही न फँसे--सदा आरोग्य रहकर, परमायु भोगता हुआ, सुख से जीवनका बेड़ा पार करे। वे अनमोल वाक्य ये हैं--

कालार्थकर्मणां योगा हीनमिथ्यातिमात्रकाः।
सम्यक् योगश्च विज्ञेयो रोगारोग्यैक कारणम् ॥ --वाग्भट्ट

काल बुद्धीन्द्रियार्थानां योगो मिथ्या न चाति च ।
द्वयाश्रयाणां व्याधीनां त्रिविधो हेतुसंग्रहः ॥ —चरक

काल, अर्थ, कर्म—इनका हीन योग, मिथ्या योग, और अति योग ही रोगका कारण है और इनका उचित योग ही आरोग्यका कारण है ।

काल, बुद्धि और इन्द्रियोंके विषयोंका मिथ्या योग, अयोग और अतियोग*—ये तीनों शारीरिक और मानसिक रोगोंके कारण हैं ।

नोट—जितने रोग होते हैं, वे सब मिथ्या आहार-विहार या काल, अर्थ और कर्मके हीन, मिथ्या और अतियोगसे होते हैं; अतः बुद्धिमानको उनसे बचना चाहिये ।

ज्वरके कारण

यहाँ तक तो हमने मनुष्यके सभी रोगोंके कारण सामान्य रूपसे बतलाये; अब हम ज्वरके ही कारण बतलाते हैं । यद्यपि आयुर्वेदमें लिखा हुआ निदान विवादास्पद है, तथापि युक्तियुक्त है । "सुश्रुत" में लिखा है—

वमन विरेचन आदिके बेक़ायदे होने, अधिक होने या बिगड़ जाने; नाना प्रकारकी चोट लगने, किसी दारुण रोगके उठने, शरीर में विद्रधि प्रभृतिके उठने और पकने, किसी तीक्ष्ण दवाके परिपाक, बहुत मिहनत, अजीर्ण, क्षय, विष ऋतुओंके विपरीत होने, तेज़ दवा या ज़हरीले फूलों की गन्ध, शोक, क्रोध, नक्षत्र-पीड़ा, उल्टे तन्त्र-मन्त्र जपने, शाप लगने, मनकी शंका, ग्लानि, भय, और भूतकी शंका प्रभृति कारणोंसे ज्वर होता है । स्त्रियोंके असमय में बच्चा होने या अयोग्य प्रसव होने अथवा ठीक प्रसव होने पर भी अहित आचरण—कुपथ्य सेवन करने और स्तनोंमें इतना अधिक दूध आनेसे, जो बालकसे न पिया जा सके प्रभृति

* काल, कर्म और अर्थसे हीन मिथ्या या अयोगके उदाहरण देखने हों तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पहले भागका ७७ वाँ पृष्ठ देखिये ।

कारणोंसे ज्वर होता है। हारीतने कसरत (अति कसरत), भोजन-पर-भोजन, कूप-जल और झरनेका जल पीनेसे भी ज्वर होना लिखा है।

अन्यान्य आचार्योंने मिथ्या आहार और मिथ्या विहारको ज्वर का मुख्य कारण ठहराया है। बात एक ही है। मिथ्या आहार और मिथ्या विहारके अन्दर ये सभी बातें आ जाती हैं। इनकी खुलासा टीका बड़ी लम्बी-चौड़ी है। फिर भी, हम पाठकोंके सुभीतेके लिये, इनकी कुछ व्याख्या किये देते हैं। देश, काल, प्रकृति प्रभृतिके विरुद्ध खाना-पीना, डोलना-फिरना या और काम करना, संयोगविरुद्ध* भोजन करना, समय-बेसमय चाहे जब खा लेना, कभी कम और कभी ज़ियादा-खाना, अपनी पाचन-शक्तिसे अधिक खाना, बिना भूख लगे खाना, एक भोजनके बिना पचे दूसरा भोजन करना, भूख लगनेपर न खाना, अपनी ताक़तसे ज़ियादा काम करना, अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्ग करना अथवा प्रभात-समय स्त्री-प्रसङ्ग करना, तेज़ घाम या धूपमें घूमना, विषैली हवा या बदबूदार हवामें घूमना या रहना, वर्षाके जलमें भीगना, कहींसे चलकर आते ही गरम शरीरमें स्नान कर डालना, स्त्री-प्रसंग या और मिहनत करके तत्काल स्नान कर लेना—ऐसे-ऐसे अनेक उदाहरण हैं और ये सब मिथ्या आहार और मिथ्या विहारमें शामिल हैं। इन मिथ्या आहार और मिथ्या विहारोंके कारणसे ही वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित हो जाते और ज्वर पैदा करते हैं; यानी जो लोग मिथ्या आहार-विहार नहीं करते अथवा काल, कर्म और अर्थका हीन, मिथ्या और अयोग नहीं करते, उन्हें ज्वर प्रभृति कोई रोग नहीं होता और जो लापरवाहीसे इनका ख़याल नहीं करते अथवा मिथ्या आहार-विहार करते हैं, उन्हें ज्वर प्रभृति नाना प्रकारकी शारीरिक और

---

* दूध-मछली, दही-मूली—इनको एक साथ खाना संयोग-विरुद्ध भोजन है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। इनको न जानने और ऐसा करनेसे ज्वर प्रभृति भयानक रोग हो जाते हैं। बहुतसे उदाहरण देखने हों, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" प्रथम भागका २८४—२८८ पृष्ठ देखो।

मानसिक व्याधियाँ सताती हैं। हमारे सारे आचरण आहार-विहारकी दो क्रियाओंमें आ जाते हैं। मिथ्या आहार-विहारसे शरीर-सिस्टम (Bodily System) बिगड़ जाती है। यहाँ तक कि, अन्नको पचानेवाली सिस्टम, जिसपर सारे शरीरका दारमदार है, बिगड़ जाती है। इस एकके बिगड़नेसे असंख्य रोगोंकी राह साफ हो जाती है। इसके बिगड़नेसे सब रोगोंकी जड़—मलावरोध यानी क़ब्ज़ होने लगता है—आँतोंमें जितने समय तक मलको रहना चाहिये, उससे अधिक समय तक मल रुका रहता है। यह मलावरोध या क़ब्ज़ आँतोंके शिथिल होनेसे होता है। असल रोग मलका रुकना या क़ब्ज़ ही है। इसीसे अनेक रोगोंकी उत्पत्ति है। जब यह मल-दोष आँखोंमें पहुँचता है, आँखोंके रोग करता है; सिरमें पहुँचता है, सिरके रोग करता है; हृदयमें पहुँचता है, हृदय-शूल प्रभृति हृदयके रोग करता है। जब आँतोंका बिगड़ा हुआ रस ख़ूनमें मिल जाता है, तब सारे शरीरकी नाड़ियाँ उससे भर जाती हैं, वायुकी चाल बन्द हो जाती है; क्योंकि वायु उसे ठेलकर निकाल नहीं सकती; तब वह अटका हुआ ख़राब द्रव्य वहीं तरह-तरह के रोग पैदा करता है। मतलब यह कि आँतोंके दोषसे ही सारी बीमारियाँ होती हैं। बीमारी एक आँतोंकी होती है, उसीके नाम मस्तक-रोग, हृद्रोग, नेत्ररोग, और गलगण्ड प्रभृति रख लिये गये हैं। जो लोग सुखी रहना चाहें, वे आँतोंको साफ़ रक्खें, उनमें क़ब्ज़ न होने दें और चिकित्सक चिकित्सा करते समय इस बातकी अवश्य खोज करें कि, आँतोंमें क्या गड़बड़ हुई है।

अब यह प्रश्न उठता है कि, मिथ्या आहार-विहारसे वातादिक दोष दूषित होकर शरीरमें किस तरह ज़्वर पैदा करते हैं, किस तरह शरीर गरम हो जाता है, किस तरह पसीना आना बन्द हो जाता है, किस तरह पसीना आनेसे शरीरकी गरमी कम हो जाती है इत्यादि। यद्यपि ये बातें हमारे आयुर्वेदमें साफ तौरसे नहीं समझाई गई हैं, तथापि जो कुछ कहा गया है, वही लिखते हैं।

ज्वरकी सम्प्राप्ति

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः ।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यु रसानुगाः ॥

अनुचित आहार-विहारके कारणसे वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष, आमाशय※ में जाकर, रसको दूषित करके, कोठेकी अग्निकी गरमीको बाहर निकालकर ×, ज्वर उत्पन्न करते हैं ।

नोट—यह विषय वैद्यक सीखनेवालोंको अच्छी तरह समझकर याद करना चाहिए । तोता रटन्तसे कुछ लाभ नहीं । समझकर याद करनेसे जन्मभर विषय याद रहता है ।

ज्वरमें शरीर गरम क्यों होता है ?

सभी जानते हैं कि, ज्वरमें शरीर गरम होता है, पर वह गरम क्यों होता है अथवा कैसे होता है, इसे बहुत कम लोग जानते हैं । "सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में शरीर गरम होनेके कारण इस भाँति लिखे हैं:—

तैर्वेगवद्भिर्बहुधा समुद्भ्रान्तैर्विमार्गगैः ।
विक्षिप्यमानोऽन्तराग्निर्भवत्याशु बहिश्चरः ॥
रुणद्धि चाप्यपां धातु यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः ।
भवत्यत्युष्णगात्रश्च न च स्विद्यति सर्वशः ॥

जब वातादि दोष दूषित होकर आमाशयमें जाते हैं, उस समय उनका वेग बढ़ा हुआ होता है । वे उद्दण्डकी तरह वहाँ ऊधम-सा मचा देते हैं । वे ऊधमियोंकी तरह इधर-उधर फैलकर टेढ़े-तिरछे घूमते हैं । उनके ऊधमसे भीतरकी गरमी या अग्निके परमाणु चमड़े और

※आमाशय—नाभि और स्तनोंके बीचमें है । यहीं भोजनका परिपाक होता और यहींसे ज्वरकी पैदायश होती है ।

× कोठेकी गरमीको बाहर निकालते हैं, सारी अग्निको बाहर नहीं निकालते । यदि सारी अग्नि निकल जाय, तो पीछे दोषोंका पाचन कैसे हो ?

रोम-मार्गोंकी ओर आने लगते हैं और धातुके पतले भाग—पसीनेका बाहर आना रोक देते हैं। पसीनोंके बन्द हो जानेसे ज्वरवाले मनुष्यका शरीर गरम हो जाता है। दोषोंकी इस कारस्तानीसे पसीना बन्द हो जाता है, सारे शरीरमें पसीना नहीं आता और किसी-किसी ज्वरमें जैसे, (पित्त ज्वरमें) आ भी जाता है। ※

※ आमाशयमें भोजन पकनेके कारण, भाफके अबख़रे पैदा होते और उठते हैं। जब वातादिक दोष, मनुष्यकी ग़लतीसे, मिथ्या आहार-विहार करनेसे, कुपित हो जाते हैं, तब भाफके गरम अबख़रोंमें मिल जाते हैं और रसमें पहुँचकर उसे ख़राब करते हैं तथा रसके साथ मिलकर, रस और पसीने बहानेवाले स्रोतोंकी राह बन्द कर देते हैं एवं जठराग्निको मन्दी करके, पाचकाशयसे बाहर निकालकर, शरीरके रोम-कूपों या चमड़ेकी ओर ठेल देते हैं। रसरूप धातुओंकी राह रुकनेसे पसीने नहीं आते, इसलिए बदन गरम हो जाता है। भीतरकी अग्नि मन्दी हो जानेसे भूख नहीं लगती। अग्निको तेज़ करने और दोषोंके पचानेके लिये ही लंघन प्रभृति कराये जाते हैं। गरम भाफके अबख़रोंमें, जो चमड़ेकी ओर आते हैं, यदि पित्तका अंश अधिक होता है यानी गरमी ज़ियादा होती है, तो पित्त-ज्वर होता है और पित्तके लक्षण मिलते हैं। अगर उन अबख़रोंमें कफका अंश अधिक होता है, तो गीलापन, चिकनाई और शरीरका भारीपन आदि लक्षण नज़र आते हैं। यदि वायुका अंश ज़ियादा होता है, तो रूखापन, हलकापन प्रभृति वायुके लक्षण मिलते हैं और वातज्वर होता है। अगर वात और पित्तके अंश अधिक होते हैं, तो वातपित्त ज्वर होता है। इसी तरह और ज्वरोंको समझ लो।

इतना लिखनेसे कुछ काम हो गया, पर हमारी पूरी तसल्ली न हुई। "वैद्य-कल्पतरु" में एक सज्जन लिखते हैं—शरीरमें ज्वर रूप गरमी बढ़नेका कारण अङ्गरेज़ी वैद्यक-शास्त्र इस तरह बताता है:—"विष या ज़हरकी जातिका कोई हानिकारी पदार्थ खूनमें मिल जाता है। उस पदार्थको पकाकर बाहर निकालनेके लिए खूनकी गरमी बढ़ती है। प्रायः सभी ज्वरोंमें पसीना बन्द रहता है। उसका कारण यह है, कि दोषका परिपाक करनेके लिए खूनकी गरमी बढ़नी चाहिये। आयुर्वेदमें जो दोषके पाचन करनेकी विधि है, उसका भी यही मतलब है। शरीरमेंसे सदैव निकलनेवाले पसीनेके बन्द होनेसे गरमी बढ़ती है और ज़ियादा पसीना आनेसे गरमी घटती है। ग्रीष्मकालमें गरमी बहुत बढ़ती है, बाहरी

साफ मतलब यह है, कि वातादिक दोषोंकी दुष्टतासे, रस बहनेवाले स्रोतों—नालियोंके रास्ते रुक जाते हैं, भीतरकी गरमी बाहर आती है, पसीना आना बन्द हो जाता है। इसीसे ज्वरवालेका शरीर गर्म हो जाता है।

नोट—एक बात और भी याद रखनी चाहिये। वह यह कि, वातादि दोष अपने-अपने कोपकारक आहार-विहारोंसे*, अपने-अपने समयमें, कुपित होकर और सारी देहमें फैलकर ज्वर करते हैं। वायुके कोपका समय वर्षा ऋतु है, इसलिए, बरसातमें "वात ज्वर" होता है। पित्तके कोपका समय शरद ऋतु है, इसलिए शरदमें "पित्त ज्वर" होता । कफके कोपका समय वसन्त ऋतु है, इसलिए वसन्तमें "कफ ज्वर" होता है।

जिस तरह वर्षके बारह महीनोंमें ग्रीष्म, वर्षा आदि ऋतुएँ होती हैं, उसी तरह दिन-रातके २४ घण्टोंमें भी छहों ऋतुएँ बर्त जाती हैं; दिनके पहले पहरमें वसन्त ऋतुका-सा समय होता है, दूसरे पहरमें ग्रीष्म, तीसरेमें प्रावृट्, चौथेमें वर्षा, आधीरातका समय शरद्का और पिछली रात हेमन्त ऋतुका समय होता है। दिनका पहला पहर वसन्तके समान है, इसलिए उस समय कफ कोप करता है और उस समय कफज्वर होता या बढ़ता है। तीसरा पहर वर्षाके समान है; उस

गरमीसे शारीरिक गरमी बढ़ न जाय, शरीरमें जितनी गरमी चाहिये उतनी ही रहे, ज़ियादा न हो जाय, इसके लिए गरमीमें पसीना अधिक आकर फालतू गरमीको बाहर निकाल देता है। शीतकालमें सर्दीके कारण शरीरकी गरमी कम न हो जाय, इसलिए पसीना बहुत ही कम आता है। यह प्राकृतिक रासायनिक उलट-फेर है। इस नियमके याद रखनेसे खूब लाभ है।

* वात, पित्त और कफ किन-किन कारणोंसे और किस-किस समय कुपित होते हैं, इन बातोंका जानना मनुष्यमात्रके लिए ज़रूरी है। अगर इनको जानकर मनुष्य सावधान रहे, तो रोग क्यों हो? वैद्यको तो इन बातों पर खूब ही ध्यान रखना चाहिये। इनका खूब खुलासा हाल "चिकित्सा-चन्द्रोदय" प्रथम भाग पृष्ठ १२७—१२९ में लिखा है। ऋतुओंके सम्बन्धमें उसी भागके १८४, १८५ और १८९ पृष्ठ देखिये।

समय वायुका कोप होता हैं और उस समय वात ज्वरका उत्थान या जोर होता है। आधीरात शरद् ऋतुके समान है; इसलिए उस समय पित्तका कोप होता है और उस समय पित्त-ज्वर होता या जोर करता है।

इनके सिवा बुढ़ापा, दिनका अन्त और रातका अन्त, वर्षाकाल और भोजन पच चुकनेके बादका समय—ये वायुके समय हैं; इसी तरह गर्मीका समय, शरद्ऋतु, मध्याह्नकाल, जवानी और भोजन पचनेका समय—ये पित्तके समय हैं। वसन्त, दिनका पहला भाग, रातका आरम्भिक काल और अन्तिम काल, बालकपन और भोजन कर चुकनेका समय—ये कफके काल हैं। इन सब समयोंको ध्यानमें रखकर इलाज करनेसे बड़ी अच्छी तरह सफलता होती है। वैद्योंकी जानकारीके लिये धन्वन्तरि महाराजने कहा है:—

दोषाः प्रकुपिताः स्वेषु कालेषु स्वैः प्रकोपनैः।
व्याप्य देहमशेषेण ज्वरमापादयन्ति हि॥

वात, पित्त और कफ अपने-अपने समयमें—अपने-अपने कोपकारक आहार-विहार प्रभृतिसे, कुपित होकर और सारे शरीरमें फैलकर ज्वर करते हैं।

ज्वरके सामान्य पूर्वरूप

श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः।
इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु॥
जृम्भांगमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः।
अप्रहर्षश्च शीतं च भवन्त्युत्पत्स्यति ज्वरे॥

बिना मिहनत किये थकान-सी मालूम होना, शरीरका गिरा जाना, चित्तका न लगना—बेचैनी-सी मालूम होना, शरीरका रंग बदल जाना, मुँहका जायका बिगड़ जाना, आँखोंमें पानी भर आना; सर्दी,

हवा और धूपका कभी अच्छा और कभी बुरा लगना, जँभाई आना, शरीर टूटना और भारी होना, रोएँ खड़े होना, भोजनकी इच्छा न होना, आँखोंके सामने अँधेरी या चक्कर-से आना, आनन्दका नाश और सर्दी-सी लगना—ये ज्वरके सामान्य पूर्वरूप हैं; यानी ये लक्षण उस समय नज़र आते हैं, जबकि ज्वर आनेवाला होता है। अगर किसीमें इन लक्षणोंमेंसे दो-चार लक्षण कम भी मिलें,तो भी समझ लेना चाहिये कि, ज्वर आनेवाला है।

नोट—"चरक" में इन लक्षणोंके सिवा, आँखोंमें सुर्खी आना, नींद ज़ियादा आना; आवाज़, गीत और धूपका बुरा मालूम होना, ज़रासे कामको बहुत देरमें करना, अपने काममें लापरवाही करना, माता-पिता और गुरुकी बात न मानना, बालकसे द्वेष करना, चन्दनादिका लगाना बुरा मालूम होना, मीठी चीज़ बुरी लगना, खट्टे, चरपरे और नमकीन पदार्थोंपर मन चलना प्रभृति लक्षण अधिक लिखे हैं। ये लक्षण ज्वरके पूर्वरूपमें होते हैं, इसीसे हमने यहाँ लिख दिये हैं।

पूर्वरूप जाननेसे क्या लाभ ?

किसी भी रोगके पूर्वरूप जाननेसे मनुष्य सावधान होकर उस रोगसे उसी तरह बच सकता है, जिस तरह आनेवाली विपद्के पूर्व चिह्न जान लेने और उसका यथायोग्य उपाय करनेसे मनुष्य बच जाता है। राहमें चलता हुआ मनुष्य सिरपर घनघोर घटा उमड़ी देखकर किसी सुरक्षित स्थानमें बैठ जाय, तो भीगनेसे बच जायगा और जो उन घटाओंको देखकर उनकी परवा न करेगा, वह भीग जायगा। इसी तरह अगर मनुष्य ज्वरके पूर्वरूप देखते ही उनका यथोचित उपाय कर ले, तो ज्वरसे बच सकता है। ज्वर आमाशयसे पैदा होता है। ज्वरके पूर्वरूपसे आनेके पहले उपरोक्त चिह्न नज़र आते हैं। उस समय, यदि मनुष्य हलका भोजन या लंघन करे, अथवा वमन-विरेचन से मलको निकाल डाले तो निश्चय ही ज्वरसे बच जायगा। ज्वरके पूर्वरूपोंमें क्या करना चाहिये, इस विषयपर "सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में लिखा है:—

ज्वरके पूर्वरूपमें कर्तव्य कर्म

ज्वरस्य पूर्वरूपेषु वर्तमानेषु बुद्धिमान् ।
पाययेत घृतं स्वच्छं ततः स लभते सुखम् ॥
विधिर्मारुतजेष्वेषु पैत्तिकेषु विरेचनम् ।
मृदु प्रच्छर्दनं तद्वत्कफजेषु विधीयते ॥
सर्वं त्रिदोषजेपूक्तं यथादोषं विकल्पयेत् ।
अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्यो लंघनादिना ॥
रूपप्राग्रूपयोर्विद्यान्नानात्वं वह्निधूमवत् ।

ज्वरका पूर्वचिह्न नजर आते ही * बुद्धिमान् साफ पुराना घी रोगीको, वातज्वरके पूर्वरूपमें, पिलावे। पित्तज्वरके पूर्वरूपमें हलका जुलाव दे और कफज्वरके पूर्वरूपमें साधारण हलके उपायसे वमन करा दे। द्वन्द्वज और त्रिदोषज ज्वरोंके पूर्वरूपोंमें उपरोक्त तरकीवोंमेंसे, दोषोंके विचारसे, जो मुनासिब समझे सो करे। इन उपायोंसे सुख

---

* निराम वातज्वरमें या शुद्ध वातज्वरमें ही पुराना घी पिलाना चाहिये। निराम वायु, निराम पित्त और निराम कफके लक्षण आगे लिखेंगे। वायु लंघन नहीं सह सकती, पित्त और कफ लंघन सह सकते हैं। लङ्घन हमेशा विचारकर कराने चाहियें। लङ्घन कब कराने, किसको कराने और किसको न कराने—इस विषयमें आगे लिखेंगे। वातज्वरमें वायु आम-रहित हो तो लङ्घन नहीं कराते, किन्तु आम-सहित हो तो लङ्घन कराते हैं।

नवीन ज्वरमें वमन विरेचनकी मनाही है (विशेष अवस्थाओंमें नहीं भी है); किन्तु पूर्वरूप और रूप में आग और धुएँकी तरह भेद है, इसलिए घबराना नहीं चाहिये। पूर्वरूपमें दोष प्रायः आमाशयमें ही रहता है, इसलिए शोधन (वमन या विरेचन) से साफ हो जाता है; किन्तु पूर्वरूप प्रकट हो जानेपर दोष रस और स्वेदवाहिनी नसों द्वारा चमड़ेकी तरफ आ जाता है। उस अवस्थामें शोधन करने यानी दस्त या क़य करानेसे "दोष" धातुओंमें घुसकर विषम ज्वर या धातुगत ज्वर उत्पन्न करता है।

होता है। यदि किसी कारणवश घी पिलाना, हलकी दस्तावर दवा देना या एक या दो वमन—क़य—कराना अनुचित या हानिकर जँचे, तो उसे लंघन करावे और गरम जल पिलावे। एक-दो लङ्घनों और गरम जलसे भी काम हो जायगा; क्योंकि ज्वर दोषोंके कारणसे होता है और अग्नि मन्द हो जाती है। यदि भोजन न किया जायगा, तो जठराग्नि, भोजन-रूपी ईन्धन न पानेसे, ख़राब दोषोंको पचा डालेगी; फिर ज्वर क्यों होगा? "चरक" में लिखा है—"दूषित आमाशयको हलके भोजन या लङ्घनसे शुद्ध करले, तो ज्वरका भय न रहे।" निस्सन्देह ये दोनों उपाय सर्वोत्तम हैं। इनमें कोई खटका नहीं।

ज्वरके विशेष पूर्वरूप

सामान्यतो विशेषात्तु जृम्भात्यर्थं समीरणात्।
पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम्॥

वात ज्वर आनेके पहले जँभाई या अँगड़ाइयाँ आती हैं। पित्तज्वर आनेके पहले नेत्रोंमें दाह या जलन-सी होती है। कफज्वर आनेके पहले भोजनसे अरुचि हो जाती है।

नोट—वातज्वर आनेके पहले शरीरमें पीड़ा और हाथ-पैरोंमें भड़कन तथा पित्तज्वरमें सिरमें दर्द होते देखा जाता है।

द्वन्द्वज ज्वरोंके पूर्वरूप

यदि वातपित्तज्वर आनेवाला होता है, तो जँभाइयाँ आती हैं और नेत्रोंमें जलन होती है।

यदि वातकफ ज्वर आनेवाला होता है, तो जँभाइयाँ आती हैं और भोजनसे अरुचि हो जाती है।

यदि पित्तकफ ज्वर आनेवाला होता है, तो आँखोंमें जलन और अन्न पर अनिच्छा होती है।

सन्निपात ज्वरके पूर्वरूप

अगर त्रिदोष ज्वर आनेवाला होता है, तो उसके आनेसे कुछ पहले जँभाई, आँखोंमें जलन और अन्नपर अरुचि—ये   ण होते हैं।

ज्वरके सामान्य लक्षण

जिस रोगमें पसीने नहीं आते हों शरीरमें सन्ताप हो; यानी बदन गरम हो और सारे शरीरमें दर्द या जकड़न हो, उसे "ज्वर" कहते हैं। अगर ये लक्षण हों, तो समझ लो "ज्वर" है।

——:०:——

जाड़ेमें खाने लायक़ औषधियाँ

मृगनाभ्यादि बटी

शीतकालमें ये गोलियाँ अमृतका काम करती हैं। जिनको धातुकी कमीसे स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा नहीं होती अथवा वीर्यकी कमीसे जो नामर्द हो गये है, उनके लिए ये गोलियाँ रामबाण हैं। कैसी ही धातु सूख गई हो या मर गई हो, इन गोलियोंसे उसे जीवित होना ही होगा। जिन्हें सिवा नामर्दीके और कोई रोग न हो, वे इन्हें जाड़े-भर खाकर मनमाना संभोग करें। बहुत क्या? नामर्दोंके लिए ये गोलियाँ आबेहयात हैं। ये गोलियाँ केशर, कस्तूरी, मोती, सोने-चाँदीके वर्क़ वगैर: क़ीमती चीज़ोंसे बनती हैं, फिर इनसे स्त्री-भोगकी इच्छा क्यों न बढ़े? पर ये बहुत महँगी पड़ती हैं, इसलिए इन्हें राजा-महाराजा और सेठ साहूकार ही सेवन कर सकते हैं। हरिदास एण्ड कम्पनी, मथुराके पतेसे पत्र-व्यवहार करके ब्योरा प्राप्त करें।

नोट—अगर जाड़ेमें ये गोलियाँ सेवन की जावें और "चन्दनादि तेल" या "नारायण तेल" की मालिश कराई जावे और रातके समय एक मात्रा "बल-वृद्धिकर चूर्ण" खाया जावे, तब तो सोनेमें सुगन्ध हो जाये।

तीसरा अध्याय

ज्वरकी सामान्य चिकित्सा



वात, पित्त, और कफ,—इन तीनों दोषोंके ज़ियादा और कम होने से प्रधानता और अप्रधानता होती है। मान लो, किसीके ज्वरमें वात का ज़ोर सबसे अधिक हो, पित्तका ज़ोर बीचके दर्जेका हो तथा कफका ज़ोर नीचे दर्जेका हो, तो उसे "वात-प्रधान त्रिदोष ज्वर" कहेंगे। इस तरह भी समझिये, किसीको त्रिदोष ज्वर है। उसमें पित्तकोपके कम लक्षण हैं, वायुके कोपके उससे अधिक हैं और कफके कोपके सबसे अधिक हैं; तो कहेंगे वृद्धपित्त है, वृद्धतर वायु है और वृद्धतम कफ है। क्योंकि यहाँ कफ वृद्धतम यानी सबसे अधिक है, इसलिये उस ज्वरको "कफ प्रधान सन्निपात" कहेंगे। इसी तरह ठीक-ठीक इस बातका भी पता लगा सकते हैं कि, पित्तका कोप तीन आने है, वायुका कोप पाँच आने है, और कफका कोप आठ आने है। जब इस तरह अंशांशकी कल्पना हो जाय, तब नुसख़ेमें औषधियाँ वात, पित्त और कफके कोप के अन्दाज़से मुक़र्रर की जा सकती हैं। जिन वैद्योंको वात, पित्त और कफके कोप, क्षय और वृद्धिके लक्षण अच्छी तरह याद होते हैं, वे ही लक्षणोंको देखकर अंशांशकी कल्पना कर सकते हैं। प्रत्येक आयुर्वेद-चिकित्सकको ये बातें अच्छी तरह याद रखनी चाहियें और रोगोंमें अंशांशकी कल्पनाका अभ्यास करना चाहिये। अभ्याससे कौन-सा काम सहज नहीं हो जाता ? लेकिन यह काम साधारण बुद्धि-वालोंका नहीं है, इसीसे शास्त्रोंमें अंशांशको न जान सकनेवालोंके लिए

"सामान्य-चिकित्सा" करनेकी सलाह दी गई है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

अंशांशो यत्र दोषाणां विवेक्तुम् नैव शक्नुयात् ।
साधारणीं क्रियां तत्र विदध्यात्तु चिकित्सकः ॥

जिस ज्वरमें वैद्य दोषोंके अंशांशको न जान सके, उसमें उसे साधारण चिकित्सा करनी चाहिये।

अब यह विचार करना है कि, साधारण चिकित्सा कैसी होती है और उसमें वैद्यको क्या-क्या करना होता है। ज्वरकी साधारण चिकित्सामें, मामूली तौर पर, ऐसे काम करने होते हैं, जिनसे किसी भी प्रकारके ज्वरमें हानि न हो, वरन् लाभ ही हो; औषधियाँ ऐसी देनी होती हैं, जो ज्वरकी क़िस्म या दोषोंका अंशांश न जान सकनेपर भी, रोगीके पक्षमें लाभदायक ही हों; हानि किसी सूरतमें भी न करें। विशेष चिकित्सा परमोत्तम और शीघ्र फलप्रद होती है; पर यदि कोई ऐसा स्थान हो, जहाँ प्रवीण और सर्वशास्त्रोंका जाननेवाला तथा अनुभवी वैद्य न हो; तो साधारण वैद्य भी साधारण चिकित्सासे रोगीको देर-अवेरसे रोग-मुक्त कर सके अथवा शास्त्रज्ञ वैद्यकी समझमें भी जल्दी ही रोग न आवे, ज्वरके अंशांश या उसकी क़िस्मका पूरे तौरसे भेद न मालूम न पड़े; तो पहले मामूली उपाय तो कर दे; पीछे विचार किया करे अथवा किसी और वैद्यसे सहायता ले। हमने अनेक वार अपनी आँखोंसे देखा है, बड़े-बड़े डाक्टरी और कविराजी शिक्षा-प्राप्त धुरन्धर विद्वान् वैद्य, कई-कई दिनों तक, रोगका असली मर्म नहीं समझ सके हैं—उन्होंने अपने नामके घमण्डमें रोगीको अब-तब की हालतमें पहुँचा दिया है। चिकित्सा-कर्ममें अभिमान करना बड़ी बुरी बात है। सभी शास्त्रोंके जान लेने और वर्षों अनुभव प्राप्त कर लेनेपर भी मनुष्य चूक जाता है। आखिर मनुष्य है तो मनुष्य ही न? भगवान् तो है ही नहीं, कि उससे भूल न हो। इस काममें दूसरे वैद्योंसे सहा-

यता लेने और मिलकर काम करनेमें बड़ा सुभीता है। डाक्टर लोग प्रायः ऐसा ही करते हैं; पर हमारे वैद्यराज तो दूसरेके नामसे उसी तरह चिढ़ने लगते हैं, जिस तरह स्त्री अपनी सौतके नामसे चिढ़ने लगती है।

ज्वर रोगीकी सामान्य चिकित्सा करनेवाले वैद्यको भी निम्नलिखित विषयोंका ज्ञान अच्छी तरह होना जरूरी है। कम-से-कम इतनी बातोंके जाने बिना कोई वैद्य किसी तरहकी चिकित्सासे भी रोगीको आराम नहीं कर सकता, बल्कि उल्टा बेचारेको यम-सदनकी राह दिखा सकता है:—

(१) ज्वर-रोगीको कैसे घरमें रखना चाहिये।

(२) ज्वरवालेके लिए हवाका कैसा प्रबन्ध करना चाहिये।

(३) ज्वरवालेको किन-किन आहार-विहारोंसे बचाना चाहिये।

(४) ज्वर-रोगीको लघु पथ्य देना या लङ्घन कराने चाहियें। यह काम किस तरह करना चाहिये। किन्हें लङ्घन कराने उचित हैं और किन्हें लङ्घन कराने अनुचित हैं, यह सब जानना चाहिये। अन्धाधुन्ध लङ्घन न कराने चाहियें।

(५) ज्वर-रोगीको गरम जल देना चाहिये या शीतल ?

(६) लङ्घन और गरम जल प्रभृतिसे भी दोष न पचें, तो क्या दवा देनी चाहिये ? किस प्रकारके ज्वरमें वमन-विरेचन मना हैं, और किसमें देनेकी आज्ञा है ? पहले पाचन देना या शमन औषधि देनी, कब देनी, कब तक न देनी; किस समय औषधि सेवन करानी जिससे अधिक लाभ हो, इत्यादि बातोंका अच्छा और पूरा ज्ञान वैद्यको होना चाहिये।

(७) सब तरहके ज्वरोंपर चलनेवाले ज्वरके परीक्षित योग या नुसखे याद रखने चाहियें।

(८) रोगीको कब अन्न देना चाहिये ? ज्वर-रोगियोंके लिए कौन-कौनसे अन्न-पदार्थ अथवा फल और तरकारियाँ अथवा मांस हितकारी

हैं और कौन-कौनसे अपथ्य या अहितकारी हैं? रोगीको कैसे स्थानमें भोजन कराना चाहिये, उसके मुखका स्वाद सुधारनेको क्या उपाय करना चाहिये इत्यादि बातें तथा ज्वर-रोगीके देने योग्य मण्ड, भांत, यवागू, पेया एवं रसौदन प्रभृति बनानेकी विधियाँ जाननी चाहियें।

नोट—इन आठों विषयोंको हम आगे अच्छी तरह समझा-समझाकर, साथ ही शास्त्रोंके प्रमाण दे-देकर, विस्तारपूर्वक लिखेंगे। जिसे चिकित्साकर्म करना हो, उसे इनमेंसे प्रत्येक विषय खूब याद कर लेना चाहिये।

ज्वर-रोगीके रहनेका स्थान

ज्वर आते ही ज्वर-रोगीको ऐसे मकानमें रखना चाहिये, जा खूब साफ-सुथरा हो—मैला-कुचैला न हो, जिसमें बदबू न आती हो, जिसमें खाने-पीने के सामान आटा, दाल, मिर्च-मसाले प्रभृति न रक्खें हों, आदमियोंका जमघट न हो तथा बाहरी हवा बहुत तेज़ीसे न आती हो। "भावप्रकाश" में लिखा है—

सामान्यतो ज्वरी पूर्वं निर्वाते निलये वसेत्।
निर्वातमायुषो वृद्धिमारोग्यं कुरुते यतः॥

"जिस दिन ज्वर आवे उसी दिनसे, ज्वर-रोगीको वायुरहित घरमें रक्खो, क्योंकि वायुरहित स्थान उम्रको बढ़ानेवाला और आरोग्यता करनेवाला है।" इस शास्त्राज्ञाका मर्म न समझकर आज़कल लोग रोगीको ऐसे मकानमें रखते हैं, जिसमें हवाका अंश भी न आता हो। दरवाज़ोंको बन्द कर देते हैं, जाली-झरोखोंमें कपड़े ठूँस देते हैं, इससे रोगीका दम घुटने लगता है, रोगी अधमरा हो जाता है, रोग बढ़ जाता है और उसकी मृत्यु न हो तो भी मर जाता है। इस बात को न रोगीके घरवाले विचारते हैं और न चिकित्सक महाशय ही कि, यदि बिलकुल हवा न मिले तो कोई भी प्राणी बिना रोग ही मर जाय। हवासे ही प्राणियोंकी जिन्दगी है। आरोग्यके लिए जिस तरह साफ हवाकी जरूरत है, रोगीको भी उसी तरह बल्कि उससे जियादा साफ

हवाकी ज़रूरत है, क्योंकि तन्दुरुस्त मनुष्योंकी अपेक्षा रोगी हवाको जियादा और जल्दी ख़राब करता है। रोगीकी साँस द्वारा गन्दी और रोगके परमाणुओंसे भरी हुई ज़हरीली हवा निकलती है, उसके बाहर जाने और बाहरसे ताज़ा हवाके आनेकी परमावश्यकता है। अगर हवाके आने-जानेके सब द्वार बन्द कर दिये जायँगे, तो गन्दी हवा कैसे बाहर जायगी और तन्दुरुस्तीको बख़्शनेवाली साफ़ हवा कैसे भीतर आवेगी? उपरोक्त शास्त्र-आज्ञा बहुत ठीक और उचित है। उसका अर्थ जैसा लगाया जाता है, वैसा नहीं है। उसका यह मतलब है, कि बाहरकी तेज़ हवा या तेज़ हवाके झोंके सीधे रोगीको न लगने पावें; क्योंकि तेज़ हवाके झोंके निश्चय ही रोगीके ज्वरको बढ़ानेवाले होते हैं; इसलिए रोगीको साफ हवादार मकानमें रखना चाहिये, घरके दरवाज़े बन्द न करने चाहियें, हवाके आने-जानेकी राह खुली रखनी चाहिये; पर इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिये कि, रोगीके शरीरको बाहरी हवाके झोंके न लगें, क्योंकि बाहरी हवा पसीनोंका आना और भी बन्द कर देती है तथा किसी-किसी दिशाकी हवा वात बढ़ानेवाली, पित्तको कुपित करनेवाली अथवा कफकी वृद्धि करनेवाली होती है। अगर रोगीको बाहरकी तेज़ हवा न लगने दी जाय तो कोई खटका ही न रहे, इसीसे वायुरहित स्थानकी बात लिखी गई है; पर हवाका आवागमन ही बन्द कर देनेकी बात नहीं लिखी गई है। अगर हवाके लगनेका भय हो, तो रोगीके पलंगके पास, कुछ स्थान छोड़कर, साफ-सुथरा पर्दा लगा देना चाहिए और दरवाज़े तथा छतके पासकी खिड़कियाँ खुली रखनी चाहियें। हाँ, नवीन ज्वरवालेको भारी और गरम वस्त्र उढ़ा देनेमें हर्ज नहीं, पर वह भी ऐसा उढ़ाना चाहिये, जिससे रोगी घबरावे नहीं और उसकी साँस न घुटे। ये सब व्यवस्थायें ज्वरके अनुसार करनी चाहियें। कोई ज्वर ऐसे होते हैं, जिनमें मकानको गरम रखना होता है तथा गरम वस्त्र उढ़ाने होते हैं और कोई ऐसे होते हैं, जिनमें मकान शीतल रखना होता है और-

शीतल ही उपचार किये जाते हैं। पित्तज्वर और दाहज्वरमें रोगीको ऐसे मकानमें रखते हैं, जो शीतल हो, जिसमें खसकी टट्टियाँ लगी हों तथा चन्दन और खसका छिड़काव हो रहा हो। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

हर्म्ये शुभ्राभ्रसंकाशे शशांककरशीतले।
मलयोदक संसिक्ते सुप्यात्पित्तज्वरी नरः॥

पित्तज्वर रोगी सफेद बादलके समान निर्मल, चन्द्रमाकी किरणों से शीतल हुए तथा मलयागिर चन्दनके जलसे छिड़काव किये हुए मकानमें सोवे। कहिये, अब तो समझ गये न ? सभी कामोंमें बुद्धिसे काम चलता है। जिसमें भी इलाज-मुआलिजेके काममें तो क़दम-क़दम पर बुद्धिकी जरूरत है।

ज्वरवालेके लिये हवा

क्योंकि ज्वर-रोगीके लिये बाहरकी हवाकी मनाही है औ से ज्वरोंमें ज्वर रोगीको इतनी गरमी लगती है कि, वह व्याकुल हो जाता है; इसलिये कृत्रिम उपायोंसे रोगीके हवा करनी चाहिये। पंखे की हवासे हानि नहीं होती; बल्कि लाभ ही होता है; क्योंकि शास्त्रमें कहा है—"व्यजनस्यानिलस्तृष्णास्वेदमूर्च्छाश्रमापहः" अर्थात् पंखेकी हवा पसीना, प्यास, बेहोशी और थकानको नाश करती है। परन्तु जिस क़िस्मके पंखेकी हवा रोगीके लिये अच्छी हो, उसी क़िस्मके पंखे की हवा करनी चाहिये। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

"ताड़के पंखेकी हवा त्रिदोषनाशक होती है। बाँसके पंखेकी हवा गरम और रक्तपित्तको कुपित करनेवाली होती है, कपड़ेकी हवा त्रिदोष-नाशक, चिकनी, हृदयको हितकारी और उत्तम है। चमर, मोरछल और बेतके पंखेकी हवा भी कपड़ेके पंखेकी तरह परमोत्तम होती है।"

"हारीत-संहिता" में लिखा है:—

"ताड़के पंखेकी हवा तथा केलेके पत्तेकी हवा शीतल और मधुर है। इनकी हवा थकानको हरती है, नींद लाती है और आनन्द करती है तथा शोक, रोग, विकार, दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको शान्त करती है। इन दोनों तरहके पंखोंकी हवा सब तरहसे उत्तम है; पर इसमें भी एक दोष है, वह यह कि गीलेपनके कारण कफको कुपित करती है।" ताड़का पंखा सूखा हो सकता है, पर केलेके पत्तेका पंखा सूखा किसी कामका नहीं। केलेके पत्तेका पंखा पित्तज्वर और दाह-ज्वरमें हर तरह उत्तम है।

ख़सके पंखे और मोरपंखसे बने पंखेकी हवा अच्छी होती है। इनकी हवा सुगन्धित, किसी क़दर शीतल, ग्लानि, भ्रम, मूर्च्छा, बेहोशी, शोष, विसर्प और विषको नाश करनेवाली होती है।

काँसीके बर्त्तनकी हवा रूखी और गरम होती है; किन्तु वातको शान्त करती, श्रम, दाह—जलन और थकानको नाश करती तथा सुख देती और नींद लाती है।

बाँसके पत्तेकी हवा तन्द्रा और निद्रा करती है, रूखी और कषैली है, किन्तु वातको कुपित नहीं करती।

कपड़ेकी हवा घाव पर सूजनवालेके हक़में अच्छी नहीं है। यानी इसके सिवाय और सबको अच्छी है। लाल कपड़ेकी हवा सदा ख़राब है, अतः लाल कपड़ेकी हवा सदा त्यागनी चाहिये, क्योंकि वह कफ और रक्त—ख़ूनको कुपित करती है, तथा अनेक रोग पैदा करती है और परिश्रम, ग्लानि, प्यास, तन्द्रा तथा निद्रा बहुत करती है।

नोट—रोगानुसार या दोषानुसार जैसे पंखेकी हवा उपकारी हो, वैसा ही पङ्खा काममें लाना चाहिये। लाल वस्त्रकी हवा सदा त्यागनी चाहिये। घावपर सूजनवालेको किसी तरहके भी कपड़ेके पंखेकी हवा अच्छी नहीं है। कफप्रधान रोगमें केले और गीले ताड़के पंखेकी हवा अच्छी नहीं है। बाँसके पंखेकी हवा रक्त-पित्त, पित्तज्वर और दाहज्वरमें अच्छी नहीं है। साधारणतया, ज्वरवालोंके लिये सफेद वस्त्र, मोरपङ्ख, चमर और सूखे ताड़के पंखेकी हवा हितकारी है। बिजलीके पंखेकी हवा ज्वरवालेके लिये हितकारी नहीं है।

ज्वरमें पथ्यापथ्य

(ज्वर-रोगीके त्यागने और सेवन करने योग्य आहार-विहार)

सभी रोगोंमें पथ्य और अपथ्यपर ध्यान देनेकी सबसे बड़ी ज़रूरत है; क्योंकि पथ्य यानी हितकारी आहार-विहार सेवन करने और अहितकारी आहार-विहार त्यागनेसे, बिना किसी दवाके भी, रोग आराम हो जाता है; पर अपथ्य सेवन करनेसे, हज़ारों दवाइयाँ खाने से भी, रोग-नाश नहीं होता। कहा है:—

विनाऽपि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्त्तते।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि॥
पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषध निषेवणैः॥

सारे रोग, बिना औषधि सेवन किये, केवल पथ्यसे ही नाश हो जाते हैं, परन्तु कुपथ्य सेवन करनेसे, सैकड़ों दवाइयाँ होनेपर भी, रोग आराम नहीं होता।

यदि पथ्य सेवन करे तो औषधिकी क्या ज़रूरत? अर्थात् हितकारी आहार-विहार सेवन करनेवालेको दवा खानेकी ज़रूरत नहीं, वह तो पथ्य सेवन करनेके कारण, बिना दवा ही आराम हो जायगा। इसी तरह अपथ्य सेवन करनेवाले यानी अहितकारी आहार-विहार सेवन करनेवाले को भी दवाकी ज़रूरत नहीं; क्योंकि जो अपथ्य सेवन करता है, वह हज़ार उत्तम-से-उत्तम दवाइयाँ खानेसे भी आराम न होगा।

कैसे अनमोल उपदेश हैं! इनके भीतर कैसा अमृत भरा हुआ है? ये रोग नाश करने और आरोग्य रहनेके सच्चे मन्त्र हैं। पर दुःख है कि, आजकल भारतवासी आयुर्वेदका पढ़ना छोड़ देनेके कारण, इन अनमोल उपदेशोंको जानते ही नहीं। जानते हैं, केवल चिकित्सक;

पर वे भी दुर्भाग्यसे ज़ितना ध्यान अच्छी-अच्छी औषधियोंपर देते हैं, इन मुख्य और शीघ्र रोग नाश करनेवाली तत्वपूर्ण बातोंपर नहीं देते। आजकलके वैद्य अच्छी तरह रोगीसे बात भी नहीं करते; ज़रा नाड़ी छुई, दो चार बातें पूछीं और नुसखा लिखा; फीस हाथमें आते ही नौ दो ग्यारह हुए। रोगी या रोगीके परिचारकने पूछा कि, वैद्यजी! रोगीको क्या पथ्य और अपथ्य है, तो जूते पहनते हुए फरमा दिया—"अभी तो लंघन होने दो।" यदि रोगी को अन्न दिलाना हुआ तो कह देते हैं—"रूखी रोटी, मूँगकी दालका पानी अथवा साबूदाना दे दो।" बस हो गया, सब काम। वैद्यराजका फ़र्ज़ अदा हो गया! अब रोगीका परिचारक या घरका आदमी आयुर्वेदका ज्ञाता हुआ, तब तो वह रोगी को हितकारी आहार-विहार सेवन करावेगा और अहितकारी आहार-विहारोंसे बचावेगा। नहीं तो वैद्यजीका यश धूलमें मिला और रोगीके प्राण सङ्कटमें पड़े। रोगी या रोगीके परिचारकको पथ्यापथ्य-सम्बन्धी बातें बतला देना वैद्यराजका पहला कर्त्तव्यकर्म है। जो वैद्य इस ओर ध्यान नहीं देते, अन्धाधुन्ध दवा दिये जाते हैं, उन्हें कर्म-भाग्यसे ही कभी सिद्धि प्राप्त हो जाती है। आयुर्वेदमें लिखा है:—

भिषक् सर्वेषु रोगेषु निर्दिष्टानि यथायथम्।
निदान पथ्यापथ्यानि त्रीणि यत्नात् विचिन्तयेत्॥
पूर्वं सर्वगदे कुर्यात् निदानपरिवर्जनम्।
तेनैव रोगाः शीर्यन्ते शुष्कनीराङ्कुराः॥
रुग्णः सर्वाण्य पथ्यानि यथास्वं च विवर्जयेत्।
ता ह्यपथ्यैर्विवर्द्धन्ते दोहदैरिव वीरुधः॥

वैद्यको चाहिए कि, समस्त रोगोंमें यथार्थ रीतिसे कहे हुए पथ्य और अपथ्य,—इन तीनों पर विचार करे।

पहले सब रोगोंमें, रोगका निदान यानी कारण बन्द करना चाहिये,

क्योंकि रोगके कारणको त्यागनेसे रोग इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह जलके सूख जाने पर वृक्षके अंकुर स्वयं नष्ट हो जाते हैं।

रोगी अपथ्य पदार्थोंको बिलकुल त्याग दे, क्योंकि अपथ्य-सेवनसे रोग इस तरह बढ़ते हैं, जिस तरह जल सींचनेसे बेल बढ़ती है।

सारांश यह है कि रोगीको अपथ्य-सेवनसे बचाना चाहिये और पथ्य-सेवनकी सलाह देनी चाहिये; साथ ही रोगके कारणको जानकर उसे फौरन बन्द करना चाहिये, नहीं तो अमृत पिलानेसे भी उपकार न होगा। जिसको मिट्टी खानेसे पीलिया हुआ है, उसका मिट्टी खाना बन्द न किया जायगा, तो उसे कैसे आराम होगा? जिसे एक साथ दूध-मछली या दूध-मूली खानेसे रोग हुआ है, उसका दूध-मछली या दूध-मूली एक साथ खाना बन्द न किया जायगा, तो रोग कैसे आराम होगा? जिसे अति स्त्री-प्रसंगसे क्षय-रोग हुआ है, उसको आगे स्त्री-प्रसंग करनेसे न मना किया जायगा, तो कैसे क्षयरोग जायगा? इसी तरह और उदाहरण भी समझ लीजिये। यदि कोई नये ज्वरवाला ज्वरमें स्नान अथवा स्त्री-प्रसङ्ग करेगा, तो वह कौन-सी दवासे आराम होगा? यदि नवीन ज्वरवालेको अन्धाधुन्ध वमन या विरेचन करा दिया जायगा, तो उसका ज्वर बिगड़कर विषमज्वर न हो जायगा? यदि ज्वरवालेको ज्वरकी हालतमें क्रोध करनेकी मनाही न की जायगी और वह क्रोध करेगा, तो उसका ज्वर बढ़ेगा या घटेगा?

ज्वर-रोगीको जिस तरह अपथ्य-सेवन हानिकारक है, उसी तरह मूढ़ वैद्यकी दवा लेना भी अनिष्टकारक है। लोलिम्बराज महोदय कहते हैं:—

औषधं मूढ वैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीडिताः।
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः॥

ज्वर-पीड़ित मनुष्य मूढ़ वैद्यकी दवाको उसी तरह त्याग दे, जिस तरह परपुरुषरता नारीको सज्जन लोग त्याग देते हैं।

बहुत समझा चुके, समझदारोंके लिए इतना कम नहीं है। अब हम यह लिखते हैं कि, ज्वरवालों और खासकर नवीन ज्वरवालोंको किन-किन बातोंसे परहेज़ करना चाहिये:—

नवीन ज्वरमें अपथ्य

परिषेकान्प्रदेहांश्च स्नेहान्संशोधनानि च।
दिवास्वप्नं व्यवायंच व्यायामं शिशिरं जलम्।
क्रोध प्रवात भोज्यांश्च वर्जयेत्तरुणज्वरी॥

तरुण ज्वर यानी नये बुखारमें रोगीको स्नान प्रभृति करने, चन्दनादिका लेप करने, तेलकी मालिश कराने—स्नेहपानादि—घी-तेल खाने-पीने, वमन, विरेचन—जुलाब वगैर: लेने, दिनमें सोने, मैथुन करने, कसरत करने, शीतल जल पीने, क्रोध करने, (बाहरी) हवा और भोजन—इन सबसे वचना अर्थात् इन्हें त्याग देना चाहिये। इन अपथ्योंके सेवन करनेसे शोप, वमन, मद, मूर्च्छा, भ्रम, तृषा—प्यास और अरुचि आदि उपद्रव उत्पन्न होते हैं।

"हारीत संहिता" में लिखा है,—"कसरत करनेसे ज्वर बढ़ता है; मैथुन करनेसे शरीर जकड़ा-सा हो जाता है तथा मूर्च्छा और मृत्यु होती है; स्नेह पान करनेसे मूर्च्छा—बेहोशी, वमन, मद और अरुचि होती है। भारी अन्न खाने और दिनमें सोनेसे मलविष्टम्भ हो जाता है, दोषोंका कोप होता है, जठराग्नि मन्दी हो जाती है और शरीरके स्रोत वा छेद बन्द हो जाते हैं।"

"चरक" में लिखा है:—

नवज्वरे दिवास्वप्न स्नानाभ्यंगान्न मैथुनम्।
क्रोध प्रवात व्यायाम कपायांश्च विवर्जयेत्॥

नये ज्वरमें दिनमें सोना, स्नान करना, शरीरमें तेलकी मालि

कराना*, अन्न भोजन, अत्यन्त हवादार स्थान, परिश्रम और कषाय यानी कषैले रसका क्वाथ पीना—इन सबसे बचना चाहिये।

और भी कहा है:—

स्नानं विरेकं सुरतं कषायं व्यायामभ्यंजनमह्नि निद्राम्।
दुग्धं घृतं वैदलमामिषं च तक्रं सुरां स्वादु गुरु द्रवं च॥
अन्नं प्रवातं भ्रमणं च क्रोधं त्यजेत् प्रयत्नात्तरुणज्वरार्तः।
आसप्तरात्रं तरुणज्वरं तत् सूर्याहमध्यं परतः पुराणम्॥

स्नान, जुलाब, मैथुन, काढ़ा, कसरत, उबटन और तेलकी मालिश, दिनमें सोना, दूध, घी, दाल, मांस, माठा, शराब, मीठे पदार्थ, भारी पदार्थ, पतले पदार्थ, अन्न, हवा, घूमना और क्रोध करना—इनको तरुण ज्वर अर्थात् नवीन ज्वरवाला रोगी त्याग दे; यानी इन सबसे परहेज़ करे। ज्वर आनेके दिनसे सात दिन तक ज्वर "तरुण या नया" कहलाता है; बारह दिन तक "मध्यम" और इसके बाद "पुराना" कहलाता है।

और भी लिखा है:—

---

* वातज्वरमें तेलकी मालिशकी मनाही नहीं है। "चरक" में लिखा है:—

ज्वरे मारुतजे त्वादावनपेक्ष्यापिहिक्रमम्।
कुर्यान्निरनुबन्धानामभ्यंगानापक्रमम्॥
पाययित्वाकषायञ्च भोज्येद्रसभोजनम्।
जीर्णज्वरहरंकुर्यात् सर्वशश्चाप्युपक्रमम्॥

यदि वातज्वरमें कफ अथवा पित्तका सम्बन्ध न हो; यानी शुद्ध वातज्वर हो, तो पहले ही लंघन आदि कर्मकी उपेक्षा करके, अभ्यङ्ग आदि चिकित्साका अवलम्बन करो अर्थात् शुद्ध वातज्वर हो, उसमें पित्त और कफका लवलेश न हो, तो लंघन वगैरः न कराकर, तेलकी मालिश वगैरः कराओ; रोगीको मीठे और चिकने काढ़े पिलाकर मांसरस पिलाओ। वातज्वरमें सारे काम जीर्ण ज्वरकी तरह करो। यानी वातज्वरका इलाज जीर्णज्वरकी तरह करो।

सज्वरो ज्वरमुक्तोवा विदाहीनि गुरूणि च।
असात्म्यान्यन्नपानानि विरुद्धाध्यशनानि च॥
व्यायाममति चेष्टां वाऽभ्यंगं स्नानं च वर्जयेत्।
एवं ज्वरः शमं याति शान्तश्च न पुनर्भवेत्॥

ज्वर-रोगी या ज्वरसे छूटा हुआ मनुष्य दाहकारक, भारी, अपनी प्रकृतिके प्रतिकूल—मिज़ाजके ख़िलाफ़ अन्नपान, विरुद्ध भोजन, कसरत, चलना-फिरना-डोलना तथा तेल वग़ैर:की मालिश और स्नान—इन सबको त्याग दे। इनके त्यागनेसे ज्वर शान्त हो जाता और शान्त होकर फिर नहीं आता।

"हारीत-संहिता" में लिखा है—"दाहकारक और भारी अन्न, कफकारी पदार्थ, तेलके पके हुए खट्टे साग, दही, दहीका तोड़, शिखरन, क्षुद्र अन्न, बहुत जल पीना, पान खाना, घी, शराब, क्रोध, शोक, रातमें जागना, दिनमें सोना, गाड़ी घोड़े, हाथी और गेंडेकी सवारी—इनको त्यागना ज्वरवालोंके लिए भला कहा है।"

"सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में लिखा है:—

ज्वरे प्रमोहो भवति स्वल्पैरपि विचेष्टितैः।
निषण्णं भोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौ च कारयेत्॥

ज्वरमें ज़रा-सी भी चेष्टा—मिहनत प्रभृति करनेसे मोह या बेहोशी हो जाती है। इसलिए रोगीको बिना मिहनत, बैठे-बैठे ही भोजन कराना चाहिये और पाख़ाने पेशाबके लिए भी सहारा देकर उठाना चाहिये।

ज्वरमें जिस तरह मिहनत करनेकी मुमानियत है, उसी तरह दिनमें सोनेकी भी सख्त मुमानियत है।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

दिवास्वापं न कुर्वीत यतोऽसौस्यात् कफावहः।
ग्रीष्मवर्जेषु कालेषु दिवास्वापो निषिध्यते॥

रोगीको दिनमें न सोना चाहिये, क्योंकि दिनमें सोनेसे कफ बढ़ता है। ग्रीष्म ऋतु—गरमीके मौसमके सिवा और सभी मौसमोंमें दिनमें सोना मना है।

ज्वर-रोगीको जहाँ तक हो सके, यदि वह लंघन करने योग्य हो, लंघन कराने चाहियें; क्योंकि ज्वर आम दोषसे होता है और भोजन न करने यानी उपवास करनेसे आम नष्ट होता है; किन्तु कितने ही नवीन ज्वरोंमें भी लंघन कराना—रोगीका बल घटाना और उसे मारना है; क्योंकि बलके अधीन आरोग्यता है और आरोग्यताके लिये ही चिकित्सा की जाती है। यदि रोगी बालक हो, बहुत कमज़ोर हो, स्त्री हो और गर्भवती हो अथवा कामज्वर, शोकज्वर और श्रमज्वर या निराम वातज्वर हो, तो रोगीको हलका भोजन देना चाहिये; पर भूलकर भी भारी भोजन न देना चाहिये। "वङ्गसेन" लिखते हैं:—

गुर्वभिष्यन्द्यकाले च ज्वरी नाद्यात्कथञ्चन।
न तत् तस्यहित प्रोक्तमायुषे वा सुखाय च॥

ज्वरवालेको कदापि भारी और अभिष्यन्दी पदार्थोंका भोजन तथा बिना समय भोजन न देना चाहिये, क्योंकि भारी और असमयका भोजन रोगीकी आयु और सुखके लिये हितकारी नहीं होता।

आजकल नये पुराने सब तरहके ज्वरोंमें दूध देनेकी चाल हो गयी है। डाक्टरोंकी नक़ल वैद्य लोग भी करने लग गये हैं। वैद्य इस बात को नहीं समझते कि, डाक्टरी दवाइयोंकी प्रकृति ही ऐसी है कि, उनके साथ दूधकी आवश्यकता है। हमारी आयुर्वेदीय औषधियाँ नये ज्वरमें दूधको नहीं मानतीं। दूध पौष्टिक पदार्थ है, इसीसे शास्त्रकारोंने नवीन ज्वरमें दूधकी सख्त मनाही की है। देखिये "सुश्रुत" में लिखा है:—

कृशोऽल्पदोषो दीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दितः।
विबद्धो दुष्टदोषश्च रुक्षः पितानिलज्वरी॥

पिपासार्त्तः सदाहो वा पयसा स सुखी भवेत् ।
तदेव तु पयः पीतं तरुणे हन्ति मानवम् ॥

जो रोगी दुर्बल हो, जिसके अल्प दोष हों, जीर्णज्वरसे पीड़ित हो, जिसके विवन्ध हो और और विवन्ध होनेके कारण दोप अनुलोमन न होते हों, जिसके दोप कुछ-कुछ निकलते हों, रोगी रूखा हो, पित्तवात ज्वर-वाला हो; प्यास और दाहसे युक्त हो—ऐसा रोगी दूध पीनेसे सुखी होता है, परन्तु तरुण ज्वर में पिया हुआ दूध रोगीको मार देता है। सारांश यह है कि, कफ क्षीण होनेपर, जीर्णज्वरमें दूध देना चाहिये। नये ज्वरमें दूध विपका काम करता है।

नोट—(१) नवीन ज्वर में वमन या विरेचन मना है; पर तत्काल अधिक खा जानेसे ज्वर हुआ हो तो वमन करा देनेमें हर्ज नहीं है। यदि स्रोतोंका मल पककर कोठेमें ठहर गया हो, तो वमन या विरेचनसे निकाल देना चाहिये; क्योंकि पका हुआ दोप, न निकलनेसे, विपम ज्वर आदि भयङ्कर रोग करता है। अगर बलवानके कफ ज्वर हो, तो हलकी वमन करा देनी चाहिये; अगर पित्तप्रधान ज्वर हो और पक्वाशय शिथिल हो, तो हलका जुलाब देना चाहिये। अगर वेदना-सहित उदावर्तयुक्त वातज्वर हो तो निरूहण वस्ति करनी चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो, तो सिरका भारीपन और दर्द दूर करनेवाली नस्य देकर, सिरका मलग़म निकाल सकते हो। अगर ये हालतें न हों, तो आमज्वर या कच्चे ज्वरमें शोधन औपधि देने या शोधन शमन औपधि देने से विपम ज्वर हो जाता है। हाँ, जिसने लंघन किये हों उसे, तथा गर्भवती, बालक, दुर्बल एवं डरे हुए को वमन न करानी चाहिये। इस विपयमें हम आगे विस्तारसे लिखेंगे। जहाँ तक हो, वमन विरेचन न कराना चाहिये। अगर रोगी अत्यन्त दुखी हो, विना हलके जुलाबके रोग जाता न दीखे तभी, मजबूरीसे, जुलाब—परन्तु बहुत हलका जुलाब देना चाहिये; क्योंकि, विना विशेप अवस्थाके नवीन ज्वरमें जुलाब देनेसे वमन, मूर्च्छा, मद, श्वास, मोह, भ्रम, तृपा और विपम ज्वर होनेका भय रहता है। जहाँ तक हो, गुदामें बत्ती वग़ैरः डालकर दस्त करा देना चाहिये। इस विपयमें भी आगे विस्तारसे लिखेंगे।

नोट—(२) नवीन ज्वरमें कपाय या काढ़ेकी मनाही है पर वह काढ़ा यदि अन्न और पेया प्रभृतिके संस्कारके लिये काममें लाया जाय, तो मनाही नहीं है।

नवीन ज्वरमें "आरग्वधादि पाचन" की मनाही नहीं है, क्योंकि वह त्रिदोषनाशक, आमपाचक, दीपन और शूलनाशक है। "षड़ङ्ग पानीय" क्वाथ ही है, पर उसकी भी मनाही नहीं है। वह दिया जाता है, क्योंकि उसमें काढ़ेके लक्षण नहीं मिलते। "षड़ङ्ग पानीय" प्रथम तो पकाया ही नहीं जाता और यदि पकाया भी जाता है, तो आधा पानी रक्खा जाता है; किन्तु कषाय या क्वाथमें जलका चौथा या आठवाँ भाग शेष रहता है और वह कषैले रस और कषैले रंगका हो जाता है। कषाय पीनेसे बढ़े हुए दोष अपना-अपना मार्ग छोड़कर आममें मिल जाते हैं। उस समय उनको क़ाबूमें करना महा कठिन हो जाता है। इसीसे नवीन ज्वरमें, बिना दोष पके, कषाय न देना चाहिये।

नोट—(३) जिस तरह नवीन ज्वरमें दूध विषके समान है, उसी तरह नवीन ज्वरमें "घी" भी नुक़सानमन्द है। बारह दिन हुए बिना ज्वररोगीको "घी" न देना चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है:—

घृतं द्वादशरात्रात्तु देयं सर्वज्वरेषु च।
तेनान्तरेणाशयं स्वंगता दोषा भवन्ति हि॥

सब तरहके ज्वरोंमें १२ दिन बाद "घी" देना चाहिये, क्योंकि इतने दिनोंमें सब दोष पककर अपने-अपने स्थानोंमें आ जाते हैं।

"वंगसेन" में लिखा है:—

पक्वेषु दोषेष्वमृतं तद्विषोपममन्यथा।
दशाहात्परतो दाने ज्वरोपद्रववृद्धिकृत्॥

ज्वरकी पकी अवस्थामें "घी" अमृतके समान गुण करता है; किन्तु ज्वरकी अपक्व अवस्थामें यानी आम ज्वर या कच्चे ज्वरमें "घी" विषके के समान अवगुण करता है। दश दिनके भीतर घी ज्वरके उपद्रवोंको बढ़ाता है।

"हारीत संहिता" में लिखा है:—

ज्वरे विबन्धे च विषूचिकायामरोचके वा शमितं
पानात्यये चापि मदात्यये वा शस्तं न सर्पिर्बहुमन्यते सुधीः॥

ज्वर, विबन्ध, हैज़ा, अरोचक, मन्दाग्नि, पानात्यय और मदात्यय-

इन रोगोंमें वैद्य "घी" देना अच्छा नहीं समझते।

नोट—(४) ज्वर-रोगीको दिनमें सोनेकी मनाही इसलिए है कि दिनमें सोनेसे "कफ" बढ़ता है और ज्वरमें कफका बढ़ना अच्छा नहीं। हाँ, गरमीके मौसममें सोना मना नहीं है। जिनको सदा दिनमें सोनेकी आदत है, उनको दिनमें सोनेकी कभी मनाही नहीं है; क्योंकि दिनमें सोनेकी आदतवाले अगर दिनमें नहीं सोते, तो उनके वायु आदि दोष कुपित हो जाते हैं, इसलिए आदतवाले बेखटके सोवें।

इनके सिवा जो कसरत, परिश्रम, स्त्री-प्रसंग, अधिक राह चलने और हाथी-घोड़ेकी सवारी करनेसे थक गये हों वे भी दिनमें सो सकते हैं। थका हुआ, अतिसार-रोगी, शूल-रोगी, श्वास-रोगी, वमन-रोगी, तृषा-रोगी, हिचकी-रोगी, वात-रोगी, क्षीण, कफक्षीण-रोगी, बालक, बूढ़ा, अजीर्ण-रोगी, रातमें जागनेवाला, शराब वग़ैर:का नशा करनेवाला तथा जिसने लंघन या उपवास किये हों—ये सब मनुष्य इच्छानुसार सो सकते हैं। जिसे मार्ग चलनेसे बुख़ार आया हो, उसे भी दिनमें सोनेकी मनाही नहीं है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

अध्वश्रान्तेषु चाऽभ्यंगं दिवा निद्रांचकारयेत्

जिसे अत्यन्त मार्ग चलनेसे ज्वर हुआ हो, उसके बदनमें वैद्य तेल की मालिश करावे और दिनमें सुलावे।

नोट—(५) नवीन ज्वरमें तेलकी मालिश करानेकी मनाही है, पर यह मनाही है क्यों, इस बातको जानना भी ज़रूरी है। असल बात यह है, तेलकी मालिशसे पसीने रुकते हैं; दूसरे तेल अपने चिकनेपनके कारण कफकारक और आमवर्द्धक है; इसीसे नये बुख़ारमें तेलकी मालिश कराना मना है; किन्तु किसी औषधिके साथ पकानेसे तेलके गुण बदल जाते हैं। रूखी औषधिके साथ तैयार किया हुआ तेल रूखा होता है; मेदनाशक द्रव्योंके योगसे बनाया हुआ तेल मेदनाशक होता है; पसीने नाशक द्रव्योंके साथ बनाया हुआ तेल पसीने नाशक होता है और पुराने ज्वरनाशक द्रव्योंके साथ पका हुआ तेल पुराने बुख़ारको नाश करता है। पुराने बुख़ारोंमें तेलकी मालिशसे ज्वर छूट जाता है। नये ज्वर में भी, वातज्वरमें, तेलकी मालिश करानेकी आज्ञा "चरक" में है। राह चलने की थकानसे पैदा हुए ज्वरमें तो तेलकी मालिश कराना स्पष्ट ही लिखा है। जहाँ

कहीं सारे शरीरमें तेल मलवाना मना किया है, वहाँ भी किसी ख़ास मुकाम पर तेल लगानेसे हर्ज नहीं।

ज्वरमें पथ्य

ज्वरवालेको यवागू, भात तथा लाल शालि चाँवल और पुराने साँठी चाँवल अत्यन्त हितकर और ज्वरनाशक हैं।

जिन ज्वरवालोंको यूप मुआफ़िक़ हो, उनके लिये मूंग, मसूर, चने और कुलथी तथा सोंठका यूप देना हितकर है।

ज्वरवाले साग खाना चाहें तो पटोल-पत्र, बैंगन, परवल, करेला, ककोड़ा, पित्तपापड़ा, कच्ची मूली और गिलोयके पत्ते—इनका साग वैद्य उन्हें दे। ये सब साग ज्वरनाशक हैं।

जिस ज्वरवालोंको मांस माफ़िक़ है, उनको लवा, तीतर, काला हिरन, लाल हिरन, चितकबरा हिरन, ख़रगोश, किसी क़दर लाल हिरन, काली पूंछका हिरन अथवा सारी जातिके हिरनोंका मांस देना हितकर है।

जिस ज्वर-रोगीको वायुका दोष हो उसको, मात्रा और कालका विचार करके, सारस, क्रौञ्च, मोर, काला तीतर और मुर्ग़ेका मांस दिया जा सकता है; परन्तु इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि इन पक्षियोंका मांस गरम और भारी होता है, इसलिये वह सब ज्वर-रोगियोंके लिए हितकर नहीं है।

जिन रोगियोंको खटाई सात्म्य या माफ़िक़ हो, उनकी इच्छा हो तो नीबू, अनार, आमला और पुरानी काँजी दी जा सकती है।

नोट—चूँकि सात, दश या बारह दिन तक ज्वरोंमें लंघन कराये जाते हैं, और ज्वर सात दिन तक "नवीन", बारह दिन तक "मध्यम" और इसके बाद "पुराना" समझा जाता है ; इसलिये हम नवीनज्वर, मध्यमज्वर, और जीर्ण-ज्वर प्रभृति ज्वरोंके पथ्य, पाठकोंके सुभीते के लिये, अलग-अलग लिखते हैं।

नवीन ज्वरमें पथ्य

यथोचित समयपर वमन, लंघन, यवागू, पसीने लेना, पाचन सेवन

करना तथा कड़वे और तिक्त रस सेवन करना "नवीन ज्वर" में हितकारी है।

नोट—नवीन ज्वरमें चेष्टा करके वमन न करानी चाहिये। अगर अपने आप वमन हो जाय तो हानि नहीं। हाँ, बहुत खा जानेसे तत्काल ज्वर हो जाय, तो वमन करायी जा सकती है, क्योंकि आरम्भमें विकार आमाशयमें रहते हैं। अगर बलवान रोगीको कफज्वर हो, दोष पककर कोठेमें ठहरा हुआ हो, तो उसको किसी हलकी वमन करानेवाली दवा—जैसे नमक और गरम जल—से निकाल देना ही अच्छा है। बिना दोष पके, ज्वरवालेको कोई भी दवा देने, वमन विरेचन कराने या रोग शान्त करनेवाली दवा देनेसे ज्वर बिगड़कर विषम ज्वर हो जाता है। वमनसे लंघन कराना अच्छा है, क्योंकि वमनमें बड़ी तकलीफ होती है; किन्तु कफज्वरमें दोष पके हों, तो वमन करा देना लंघनसे बहुत अच्छा है; क्योंकि जो काम लंघनोंसे कई दिनोंमें होगा, वमनसे शीघ्र ही हो जायगा। लंघन कराने और वमन कराने अथवा जुलाब देनेका मतलब एक ही है; यानी सबका मतलब ज्वर पैदा करनेवाले दूषित पदार्थों का निकाल देना है। लंघनमें खटका कम है। वमन विरेचन कराना ज़रा अधिक समझ-बूझ चाहता है। फिर भी, जिसमें सुभीता हो वही कराना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है—अगर स्रोतोंका मल पककर कोठेमें ठहर जाय तो थोड़े दिनके ज्वरवालेको भी विरेचन दे देना चाहिये; क्योंकि पके हुए दोषको न निकालनेसे वह भयङ्कर विषमज्वर प्रभृति रोग पैदा करता तथा बल नाश करता है। बलवान रोगी हो तो कफज्वरमें वमन और पित्त-प्रधान ज्वरमें, यदि पक्वाशय शिथिल हो, विरेचन दे देना चाहिये। वेदना-सहित वातज्वर हो और उसमें उदावर्त्त भी हो, तो निरूहण-वस्ति करनी चाहिये। अगर जठराग्नि दीप्त हो और कमर तथा पीठ जकड़ रही हों, तो अनुवासन-वस्ति करनी चाहिये। यदि सिर कफसे भर रहा हो तो सिरका भारीपन और दर्द नाश करनेवाली तथा इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाली "नस्य" देकर सिरका मलगम निकाल देना चाहिये। अगर रोगी कमज़ोर हो, उसके पेटपर अफारा और दर्द हो, और दस्त कराना जरूरी हो तो—दारुहल्दी, बच, कूट, सौंफ, हींग और सैंधानोन,—इन छहों दवाओंको काँजीमें महीन पीस-

कर, पेटपर लेप करना चाहिये। इससे अफारा और दर्द आराम होगा। यदि अपान वायु न खुलती हो; यानी हवा न निकलती हो, पाखाना और पेशाब रुक गये हों, तो मोटी अँगुलीके बराबर कपड़ेकी बत्ती बनाओ। उस बत्तीपर उपरोक्त दारुहल्दी, वच प्रभृति छहों दवाओं को महीन पीसकर लेप कर दो। पीछे उसे गुदामें घुसाते समय, उसपर कुछ चिकनी चीज़ घी या तेल भी लगा दो या गुदामें लगा दो, जिससे कि बत्ती गुदामें आसानीसे घुस जाय। बिना घी या तेलके बत्ती गुदा में न जायगी। इस बत्तीसे खराब मल निकल जायगा। आजकल डाक्टरोंने भी ऐसी ही एक सफेद-सफेद बत्ती निकाली है। उसमें ज़रा-सा घी चुपड़कर, उसे वे गुदामें घुसाते हैं। बस, पाँच मिनटके अन्दर सूखा लक्कड़-सा मल भी ढीला होकर बाहर आ जाता है। रोगी को कोई कष्ट नहीं होता। डाक्टर लोग उस बत्तीका प्रयोग बहुत करते हैं। उस बत्तीको ग्लैसरिन सपोज़िटरी (Glycerine Suppository) कहते हैं।

२—लङ्घन या उपवासके समान रोगनाशक और उपाय संसारमें नहीं है। ज्वर तो लंघनोंसे शान्त होता ही है, पर और भी बहुतसे दुस्साध्य रोग लंघनसे आराम हो जाते हैं। लंघन कराना प्राकृतिक चिकित्सा है। लंघनका बड़ा महत्त्व है। हमारे आयुर्वेदके मतसे सभी रोग वात, पित्त और कफकी घटती-बढ़तीसे होते हैं। जब ये तीनों दोष समान रहते हैं, तब मनुष्य निरोग रहता है। लंघन करनेसे दोष नष्ट होते हैं और जठराग्नि तीव्र होती है। मतलब यह कि लंघनोंसे रोग ही नाश हो जाते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है, अगर मनुष्य भोजन करता है, तो जठराग्नि भोजनको पचाती है; किन्तु जब उसे आहार नहीं मिलता, तब शरीर की धातुओं को जलाती है; यानी जब रोगी खाना छोड़ देता है, तब वही अग्नि शरीरके खराब विकारों को जलाती है। जब विकारोंका नाश हो जाता है, तब रोग भी नाश हो जाता है। इसीलिये ज्वरमें लंघनकी महिमा गायी गई है। सचमुच ही, नवीन

ज्वरमें लंघन भगवान्‌का शुभाशीर्वाद है। वातज्वर सात दिनमें, पित्त-ज्वर दश दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पचता है। वातज्वरमें सातवें दिन, पित्तज्वरमें ग्यारहवें दिन और कफज्वरमें तेरहवें दिन अन्न दिया जाता है। इतने-इतने दिन इन ज्वरोंमें उपवास करानेसे ज्वर पैदा करनेवाला ख़राब मल नष्ट हो जाता है। इन मियादोंसे बाद; हलका अन्न, पाचन या शमन दवा देनेसे रोगी सहजमें रोगमुक्त हो जाता है। दोप पच जानेपर स्वयं भूख लगती है और दोष पच जाने की यह पहचान सर्वोत्तम है। बिना दोप पचे, कच्चे ज्वरमें, अन्न या कोई औषधि देना रोगीको मारना है। लंघन करानेमें बहुत-सी बातोंका विचार करना होता है; उन्हें हम आगे लिखेंगे। अन्धाधुन्ध लंघन कराने, न कराने योग्य रोगीको लंघन कराने अथवा लंघन हो चुकते ही भारी पथ्यादि दे देने, अथवा लंघनवालेको वमन करा देने प्रभृति भूलोंसे रोगीकी जानको ख़तरा हो जाता है। गर्भवती, बालक, वृद्ध, जीर्णज्वर-रोगी, क्रोधज्वरवाले, कामज्वरवाले, श्रमज्वरवाले, क्षयरोगी एवं निरास वातज्वरवालेको लंघन करानेसे बड़ी हानि होती है।

२—यदि रोगी कमज़ोर हो, निराहार लंघन न कर सकता हो, बहुतसे लंघन करानेसे हानि नज़र आती हो, रोगीको भूख हो वह भूखा-भूखा चिल्लाता हो, तो समय हुआ हो या न हुआ हो, उसे हल्का अन्न देना उचित है; क्योंकि बिना आम पचे भोजनकी इच्छा हो, नहीं सकती, और जब आम पच जायगा, तब भोजनकी इच्छा होगी ही होगी। मगर ज्वर-रोगीको भारी अन्न भूलकर भी न देना चाहिये। शास्त्रोंमें यवागू या पेयाकी बड़ी तारीफ़ है। ये सबसे हलके और ज्वर-नाशक खाद्य समझे गये हैं। पर मन्दाग्निवाले और प्याससे व्याकुल तथा सदा शराब पीनेवाले रोगीको गरमीके मौसममें, पित्त और कफसे हुए रोगमें, ऊपरके रक्तपित्त और ज्वरमें, यवागू नहीं देनी चाहिये। 'सुश्रुत' में लिखा है, यदि रोगी मन्दाग्नि और प्याससे पीड़ित हो, तो पतली यवागू पिलानी चाहिये। अगर रोगीको प्यास, क्षय, दाह-जलन और

गरमीसे अधिक घबराहट हो तथा रोगी शराब पीनेवाला हो, तो उसे लाजातर्पण देना चाहिये; यानी धानकी खीलोंको पानीमें भिगोकर, मल-छानकर, उसमें शहद मिलाकर पिलाना चाहिये। जब यह पच जाय, तब यूपरस या भात देना चाहिये। अगर लंघन करने, व्रत उपवास करने या बहुत मिहनत करनेकी थकानसे ज्वर हुआ हो, रोगी कमज़ोर हो या वातादिक ज्वर हो, पर रोगीकी अग्नि दीप्त हो यानी रोगीको भूख हो; तो चतुर वैद्य ऐसे रोगियोंको रसौदन यानी मांसरस के साथ भात खिलावे। अगर कफज्वर हो, तो मूंगका यूप और भात दे। अगर पित्तज्वर हो, तो वही मूंगका यूप और भात मिश्री मिलाकर और कुछ शीतल करके दे; अगर वातपित्तज्वर हो, तो अनार, आमले और मूंगका यूप दे। वातकफज्वरमें कच्ची मूलीका यूप दे तथा पित्त-कफज्वरमें परवल और नीमका यूप दे। जिसे दाह और छर्दि हो; यानी जिसके जलन हो तथा क़य होती हों और वह रोगी दुर्बल हो तथा उसने अन्न न खाया हो एवं प्याससे व्याकुल हो, ऐसी अवस्थामें, रोगीको मिश्री और शहद मिलाकर धानकी खीलोंका तर्पण देना चाहिये। अगर रोगी कफपित्तसे व्याप्त हो, गरमी का मौसम हो, रक्त-पित्त हो, रोज़ शराब पीता हो—तो उसे "यवागू" नहीं देनी चाहिये। ऐसे रोगीको यवागू हानिकर है;मगर उसे खटाई या बिना खटाईके यूष, जङ्गली जानवरोंका मांस-रस अथवा और हितकारी पथ्य देना उचित है। नवीन ज्वरवालोंको दूध कभी न देना चाहिये। नवीन ज्वरमें दूध रोगीको मार डालता है। नवीन ज्वरमें या अपक्क ज्वरमें "घी" भी ज़हरका काम करता है। ज्वर आनेके दश दिनके भीतर दिया हुआ घी ज्वरके उपद्रव बढ़ाता है; पर ज्वरकी पक्क अवस्थामें घी अमृतका काम करता है।

"वंगसेन" में लिखा है:—लंघन करनेवाले रोगीके लिये पेया अत्यन्त हितकारी है। यथा दोषानुसार पाचन द्रव्योंसे बनाई हुई पेया दीपन, पाचन, हलकी और ज्वर रोगीके ज्वरको हरनेवाली है।

वातपित्तज्वरमें "लघु पंचमूल" के द्वारा बनाई हुई पेया हितकारी है। कफपित्तज्वरमें पीपल और धनियाके द्वारा बनाई पेया हितकारी है। वातकफज्वरमें "बृहत् पंचमूल" के द्वारा बनाई पेया देनी चाहिये। त्रिदोषज्वरमें कटेरी, जवासा और गोखरू, इन तीनोंके काढ़ेसे बनाई हुई पेया देना हितकर है।

वातज्वर, कफज्वर, पित्तज्वर, आमज्वर अथवा तरुण—नवीन ज्वरमें, पहले परवल और पीपलके द्वारा सिद्ध किया हुआ मण्ड या माँड अत्यन्त हितकारी है।

वस्ति, पार्श्व रोग तथा शिरोरोगमें लाल शालि चाँवलोंकी पेया देनी चाहिये। ज्वरमें गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे बनायी पेया भली होती है। मलबद्ध रोगमें जौ, पीपल और आमलोंके द्वारा सिद्ध की हुई पेया पीनी चाहिये। ज्वर और वात आदि दोषोंके अनुलोमन करनेके लिये रोगी पेयामें घी मिलाकर पीवे; खाँसी, श्वास और हिचकीमें पंच-मूलके द्वारा सिद्ध की हुई पेया पीवे। पसीनोंका न आना, निद्रा और प्यासकी पीड़ा दूर करने के लिये खिरेंटी, विषाँबिल, बेर, इमली, पृश्निपर्णी और शालिपर्णी—इनकी पेया बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर पीनी चाहिये।

सूचना—यवागू, पेया, भात, माँड़, रसौदन और यूप बनानेकी विधि आगे लिखी हैं।

मध्यम ज्वरमें पथ्य

जब ज्वर नवीन न रहे यानी सात दिन हो जायँ, तब।

आहार-विहार ज्वरवालेको पथ्य या हितकारी हैं :—

पुराने साँठी चाँवल, बैंगन, सहँजना, करेला, अपाढ़ीफल, परवल, ककोड़ा, मूली और पोई का साग; मूंग, मसूर, चना, कुलथी और मोट—इनमेंसे किसीका यूप। पत्तोंके सागमें गिलोय, बथुआ, चौलाई और जीवन्तीका साग; खटाइयोंमें दाख, कैथ और अनारकी खटाई ये

सब तथा और भी अपने आत्माके अनुकूल, पाचन और हलके पथ्य-पदार्थ मध्यम ज्वरवालेको हितकर हैं। यूषोंमें मूंगका यूष सबसे अच्छा माना गया है।

अगर ज्वरवाला मांसाहारी हो तो लवा, सफेद तितर, काला हिरन, बूंदवाला हिरन, शरभ (आठ पैरवाला जानवर, जो सिंहका शत्रु होता है), ख़रगोश, काली दुमवाला हिरन, किसी क़दर लाल रंगका हिरन अथवा सब तरहके हिरनोंका मांस पथ्य है। ज्वरवालेको पहले मांस-रस—शोरबा देना हितकारी है।

अगर ज्वरवालेको भात माफ़िक हो, तो एक वर्षके पुराने चाँवलों का भात देना चाहिये। अगर रोटी देनी हो तो दो साल के पुराने चाँवलोंका आटा पीसकर उसकी रोटी, मगर थोड़ी दे सकते हो। अगर रोगी जौ या गेहूँकी रोटी चाहे, तो बलाबल देखकर थोड़ी दे सकते हो; पर चुपड़ी हुई न देना। बैंगन, परवल, करेला और ककोड़े प्रभृतिका साग भी, बिना घी तेलमें छोंके ही देना चाहिये।

"हारीत-संहिता" में लिखा है:—

शतपुष्पा च जीवन्ती तण्डुलीयकवास्तुकम्।
घृतेन भाजिका सिद्धा शाकपत्राणि यानि च॥

सौंफ, जीवन्ती, चौलाई और बथुआ—इनका साग घीमें भूँजकर देना चाहिये। हमारी रायमें दश दिन पहले घीमें भूँजकर साग न देना चाहिये। इस ग्रन्थ में तोरई और सोंठ देना भी हितकारी लिखा है। वास्तव में तोरई ज्वरवाले के लिये बहुत ही उपकारी है। हकीम लोग जलका तोरईका साग अक्सर ज्वर-रोगीको दिलाते हैं।

——:०:——

द्वन्द्वज-ज्वरोंमें पथ्य

वातकफ ज्वरमें पथ्य

वात-कफ ज्वरमें नवें दिन दवा देनी चाहिये तथा "वृहत्पञ्चमूल" के क्वाथमें पकाया हुआ अन्न सातवें दिन देना चाहिये। इस ज्वरमें वृहत्पञ्चमूलके द्वारा सिद्ध की हुई पेया उत्तम पथ्य है। "सुश्रुत" में छोटी मूलीका यूप अच्छा लिखा है। इस ज्वरमें पसीने बहुत आते हैं; अगर पसीनोंका जोर हो, तो "भुनी हुई कुलथी" पीसकर शरीर पर मलनी चाहिये अथवा "पुराना सूखा गोवर और नमककी हाँडी" पीसकर मलनी चाहिये। इन उपायोंसे पसीना आना बन्द हो जाता है। अगर दर्द, श्वास और बहरापन प्रभृति लक्षण हों, तो "बालुका स्वेद" करना चाहिये। "बालुका स्वेद" वात-ज्वर और वातकफज्वर दोनोंमें हितकारी है। सैंधानोन, कालीमिर्च और बिजौरे नीबूकी केशरका कवल भी अच्छा है। बालुका स्वेद और कवल के सम्बन्धमें आठवें अध्यायके अन्तिम पृष्ठ में देखिये।

वातपित्त ज्वरमें पथ्य

वातपित्तज्वरमें पाँचवें दिन दवा देनी चाहिये। मूंग और आमलों का यूष पथ्य है। अगर दाह बहुत ही हो, तो चनेका यूष देना चाहिये। अनार, आमले और मूंगका यूष इस ज्वरमें सबसे अच्छा है। लघुपंचमूलके काढ़ेसे पकाई पेया भी बहुत अच्छी है।

नोट—मूँग और करेला आदि कफवात-नाशक पदार्थ वातपित्तज्वरमें न देने चाहियें। इनके देनेसे विष्टम्भ, शूल, अफारा और ज्वर होता है।

पित्तकफ ज्वर

पित्तकफज्वरमें दूसरे दिन दवा देनी चाहिये। इस ज्वरमें परवल और नीमका यूष,खटाई या बिना खटाई डाला यूष, जंगली जानवरोंका

मांसरस, धनिया और पटोलपत्रके यूपसे सिद्ध किया हुआ अन्न—ये सब पथ्य हैं।

नोट—पित्तकफज्वरवाले, रक्तपित्तवाले तथा रोज़ शराब पीनेवालेको, गरमीकी ऋतुमें, यवागू हितकारी नहीं है।

सन्निपात ज्वरमें पथ्य

सन्निपातज्वरमें कटेरी, गोखरू और जवासेके काथसे सिद्ध की हुई पेया देनी चाहिये। इसके सिवाय, नवीन ज्वरके समान काम करने चाहियें। आम और कफनाशक विधियोंसे काम लेना चाहिये। पहले कफको सुखानेवाला उपाय करना ज़रूरी है; पित्तको शान्त नहीं करना चाहिये, क्योंकि कफ और वातकी अधिकतावाला सन्निपात रोगीको मार देता है। कफ सूख जाय, तब वातको निवारण करना चाहिये; पीछे पित्तका कोप दीखे, तो पित्तको भी शान्त करना चाहिये; किन्तु कफ और वातको अवश्य सोखना चाहिये, पित्तको कभी नष्ट न करना चाहिये। अञ्जन, नस्य, गण्डूष, दागना प्रभृति क्रियाएँ "सन्निपात ज्वर" में हित हैं। पैरों और हाथोंकी जड़, कण्ठकूप और कनपटियोंमें पसीने आते हों, तो भुनी हुई कुलथीको पीसकर मलवाना चाहिये।

सन्निपातज्वर अपने आनेके दिनसे चौदहवीं, बीसवीं अथवा चौबीसवीं रात्रिमें शान्त हो जाता है या मार देता है। इस ज्वरमें पहले उत्तम विधिसे लंघन कराने चाहियें। औटाकर ठण्डा किया हुआ पानी पिलाना चाहिये; सन्निपातज्वरमें बहुत प्यास लगने, मुँह सूखने और पसलीका दर्द होनेपर, बिना औटाया कच्चा पानी देना, रोगीको विष देकर मारना है। मतलब यह है, कि औटाकर जल देना चाहिये। रुग्दाह सन्निपातज्वरको छोड़कर और सन्निपातज्वरोंमें शीतल जल छिड़कना और नहलाना रोगीको मारना है। केवल "रुग्दाह सन्निपात" में ही जलमें घुसकर स्नान करना अच्छा लिखा है।

इस ज्वरमें पहले लिखे हुए जवासे, कटेरी और गोखरूके काढ़ेसे सिद्ध किया हुआ आहार देना अच्छा है। यह आहार दोषोंको शान्त

करता तथा बल और जठराग्निको बढ़ाता है। दशमूलकी औषधियोंके द्वारा सिद्ध किया हुआ खीलोंका माँड़ देना भी अच्छा है। यह माँड़ दीपन, पाचन, पसीने लानेवाला और हितकारी है। सन्निपातज्वर-रोगीको अग्निके अनुसार बटेर, बतख़, लवा, तीतर, खरगोश, कुलिंग (घरका चिड़ा)—इनका मांसरस देना चाहिये। सन्निपातज्वरमें भूखसे व्याकुल रोगीको मांसयुक्त भात हरगिज़ न देना चाहिये। अगर सन्निपातज्वरवाला काँपे, बकवाद करे और अज्ञान हो जाय, तो पहले उसके शरीरमें "पुराने घी"की मालिश कराना पीछे और बलादि, रास्नादि और गुडूच्यादि औषधियोंका तेल बनाकर सेवन कराना हितकारी है।

रुग्दाह सन्निपातवाले के लिये, सौ बार शीतल जलसे धोये हुए गायके घीमें चन्दन घिसवाकर शरीरपर लगवाना, कमल और कमोदिनीकी माला पहनाकर शीतल जलके कुण्ड या जलाशयमें प्रवेश कराना, रोगीको चित्त सुलाकर उसकी नाभिपर ताँबे या काँसेका गहरा बर्तन रखकर—उसमें बहुत शीतल जलकी धारा छुड़वाना, बेरके पत्तों को दहीमें पीसकर लेप करना, नीमके पत्तोंको दही या माठेमें पीसकर लेप करना, मिश्री और शहद मिलाकर खीलोंका सत्तू खिलाना तथा ऐसे घरमें रखना जिसमें शीतल जलके फव्वारे छूट रहे हों, कमल खिल रहे हों और स्तनोंपर चन्दन-कपूर लगाये हुए, मोतियोंकी माला पहने हुए, मदमाती युवतियोंसे आलिंगन कराना—ये सब परम हितकर हैं।

नोट—पित्तज्वर और रुग्दाह-सन्निपातज्वरकी चिकित्सा एकसी है। इनके सिवा और ज्वरोंमें ये क्रियाएँ भूलकर भी न करनी चाहियें।

जीर्णज्वरमें पथ्य

जुलाब, वमन, अञ्जन*, नस्य, हुक्का या धूमपान, वस्ति, फ़स्द, संशमन औषधियोंका प्रयोग, तेलकी मालिश, जलमें स्नान, शीतल

---

* "चरक" में लिखा है, कि धूप और अञ्जनसे ऐसे जीर्णज्वर-रोगीका ज्वर भी शान्त हो जाता है, जिसके शरीरमें मांस और चमड़ा थोड़ा ही रह जाता है। समग्र आगन्तुज ज्वर धूपन और अञ्जनसे आराम हो जाते हैं।

ऋतुओंका सेवन; काला हिरन, चिरौंटा, मामूली हिरन, मोर, लवा, खरगोश, तीतर, मुर्गा, बगुला, कुछ लाल हिरन, बूंदकीवाला लाल हिरन, चकोर, सफेद तीतर प्रभृतिका मांस; गाय या बकरीका दूध, घी, हरड़, पर्वतके झरनेका जल, अरण्डीका तेल, सफेद चन्दन, चन्द्रमाकी चाँदनी और प्यारी स्त्रीका आलिंगन,—ये सब जीर्णज्वर* या पुराने ज्वरवालेको पथ्य हैं।

नोट—जुलाब देने और वमन करानेका काम बड़ा कठिन है। यह काम खूब सोच-विचारकर करना चाहिये; केवल शास्त्रपर ही नहीं रहना चाहिये।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

जीर्णज्वरगरच्छर्दिगुल्मप्लीहोदरेषु च।
शूले शोथे मूत्राघाते कृमिरोगे विरेचयेत् ॥

जीर्णज्वर, विष-विकार, वमन-रोग, वायुगोला, प्लीहा, उदर-रोग, शूल, सूजन, मूत्राघात और कृमि रोगमें जुलाब देना चाहिये।

और भी लीजिये:—

विरेचनं छर्दनमंजनं च नस्यं च धूमोऽप्यनुवासनं च।
ज्योत्स्ना प्रियालिंगनमप्यथं स्याद्गणः पुराणज्वरिणां सुखाय ॥

विरेचन—जुलाब, वमन, नस्य, अञ्जन, धूम, अनुवासन वस्ति, चन्द्रमाकी चाँदनी और प्रियाका आलिंगन—ये सब जीर्णज्वर-रोगीको हितकारी हैं।

"वंगसेन" में लिखा है:—

जीर्णज्वरीनरः कुर्यान्नोपवासं कदाचन।
ज्वरक्षीणस्य न हितं वमनं न विरेचनम् ॥
कामन्तु पायसं तस्य निरूहैर्वा हरेन्मलान् ॥

---

* "वंगसेन" के मतसे ज्वर सात दिन तक तरुण, चौदह दिन तक मध्यम, इसके उपरान्त यानी १५ दिन बाद जीर्ण हो जाता है। कोई १२ दिन बाद और कोई २१ दिन बाद भी जीर्णज्वर होना मानते हैं।

जीर्णज्वरवालेको उपवास या लंघन* हरगिज़ न कराना चाहिये। ज्वरसे क्षीण हुए रोगीको वमन और विरेचन हितकारी नहीं हैं। उसे इच्छानुसार गायका दूध पिलाना हितकारी है। दस्तक़ब्ज़ हो तो निरूह वस्ति (आजकल एनिमा) द्वारा संचित मल निकाल देना चाहिये।

"चरक" में लिखा है—यदि विधिपूर्वक चिकित्सा करनेसे ज्वर शान्त न हो और रोगीका बल और मांस क्षीण न हुआ हो, तो विरेचन यानी जुलाब देकर रोग शान्त करना चाहिये। ज्वरसे क्षीण रोगीको वमन विरेचन हितकारी नहीं होते, इसलिये ऐसे रोगीको यथेष्ट दूध पिलाना चाहिये तथा निरूह वस्तिसे मल निकालना चाहिये। दोष-समुदायके पक जानेपर, यदि निरूह वस्ति की जाती है; तो शीघ्र ही बल और अग्निकी वृद्धि होती है तथा प्रफुल्लता और रुचि होती है एवं रोगीका ज्वर चला जाता है।

कहीं वमन विरेचनकी आज्ञा और कहीं निषेध है, इसका यह मतलब है कि, आमतौरसे पुराने बुख़ारमें वमन विरेचन करा सकते हैं, पर सभी रोगियोंको नहीं। सब जगह विवेक बुद्धिकी ज़रूरत है। जहाँ जैसा मौक़ा हो, वहाँ वैसा ही काम करना चाहिये। पुराने बुख़ारके रोगी अक्सर अत्यन्त कमज़ोर हो जाते हैं, उनका कफ सूख जाता है; उनको यदि दो-चार दस्त भी करा दिये जाते हैं, तो वे फ़ौरन ही परमधाम जानेको तैयार हो जाते हैं। इसलिये अगर रोगी बलवान हो, वमन विरेचनको सह सकता हो, वमन विरेचन बिना और उपायसे काम न चलता हो, तभी वमन विरेचन कराने चाहियें; अगर कराने

---

* "वंगसेन" में लिखा है:—

पुराणेपि ज्वरे दोषाः यद्यपथ्यैः पुनस्तथा।
लंघयेत्तत्रतं पश्चाद्यथोक्तां कारयेत् क्रियाम्॥

पुराने बुख़ारमें, कुपथ्य करनेसे, वातादि दोष फिर बढ़ जावें; तो पहले लंघन कराकर पीछे ज्वरका इलाज करना चाहिये।

ही हों, तो हलके कराने चाहियें। जहा तक काम चल सके; वमन, विरेचन और लङ्घनका न कराना ही अच्छा है।

जीर्णज्वरवालेको गरमी बढ़ जाती है, उसमें वायुका अधिक कोप रहता है। शरीरमें बुखारके बहुत दिन रहनेसे, रक्त-मांस नाममात्रको रह जाते हैं। ऐसे रोगीको यदि लङ्घन या वमन-विरेचन कराये जाते हैं, तो रोगीके बिना मौत मर जानेकी सम्भावना रहती है।

२—जीर्णज्वरमें घी, दूध खिलाने की बड़ी ज़रूरत दिखाई गई है। "वंगसेन" में लिखा है:—

ज्वरोष्मणा ज्वरेऽजीर्णे वायुः कुप्यति रुक्षिते।
घृतं संशमनं तस्य दीप्तस्येवाम्बु वेश्मनः॥

जीर्णज्वरमें ज्वरकी गरमी और शरीरके रूखेपन से वायु कुपित होता है। उस वायुके शान्त करनेके लिए "घी" पिलाना चाहिये। घी पिलानेसे वायु इस तरह शान्त होता है; जिस तरह जलते हुए घरपर पानी डालने से घरकी आग शान्त होती है *।

"सुश्रुत" में कहा है:—

कृशोऽल्पदोषो दीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दितः।
विबद्धः सृष्टदोषश्च रुक्षः पित्तानिलज्वरी॥
पिपासार्तः सदाहो वा पयसा स सुखी भवेत्।
तदेव तु पयः पीतं तरुणे हन्ति मानवम्॥

यदि रोगी कमज़ोर हो, अल्पदोषवाला हो, दीन हो, जीर्णज्वरसे पीड़ित हो, विबन्धयुक्त हो, दोष कुछ-कुछ निकलते हों, रोगी रूखा हो, पित्तवातका ज्वर हो, प्याससे पीड़ित और दाहसे युक्त हो,—ऐसी

* "चरक" में लिखा है—सब तरहके जीर्णज्वरोंमें अपने-अपने लक्षणोंके अनुसार, औषधियोंके संस्कारसे बना हुआ 'घी' देना चाहिये। सिद्ध किया हुआ यानी औषधियोंके साथ तैयार किया हुआ घी वायुकी शान्ति करता है, संस्कार-योगसे कफकी शान्ति करता है और शीतल होनेसे पित्तकी भी शान्ति करता है।

अवस्थामें मनुष्य दूधसे सुखी होता है; परन्तु तरुणज्वरमें पिया हुआ दूध मनुष्यको मार देता है।

"सुश्रुत" में ही लिखा है:—

शृतं पयः शर्करा च पिप्पल्या मधुसर्पिषी
पंचसारमिदं पेयं मथितं ज्वरशान्तये।
क्षतेक्षीणे क्षये श्वासे हृद्रोगे चैतदिष्यते॥

औटाया हुआ दूध, मिश्री, पीपल, शहद और घी—इन सबको मिलाकर, ज्वरकी शान्तिके लिए पीना चाहिये। इसे "पंचसार" कहते हैं। यह क्षत, क्षीण, श्वास और हृदय-रोगमें श्रेष्ठ है।

"चरक" में लिखा है:—

जीर्णज्वराणां सर्वेषां पयः प्रशमनं परम्।
पेयंतदुष्णं शीतं वा यथास्वं भेषजैः शृतम्॥

सब प्रकारके पुराने ज्वरोंके नाश करनेमें दूध सबसे बढ़कर है दोषोंके अनुसार औषधियोंके साथ पकाया हुआ दूध, गरम या शीतल, जैसा मुनासिब हो वैसा ही पीना चाहिये। जैसे—पुराने रक्तपित्त ज्वरमें शीतल करके पीना चाहिये; किन्तु पुराने वात या कफज्वरमें गरमागरम पीना चाहिए। "चरक" में ही लिखा है कि, धारोष्ण दूध पीनेसे पुराना वातपित्तज्वर तत्काल नष्ट होता है। "पञ्चमूल" द्वारा सिद्ध किया हुआ दूध पीनेसे जीर्णज्वर नाश होता है।

जीर्णज्वरमें रोगी ऐसा कमजोर हो जाता है, अग्नि ऐसी मन्द हो जाती है, कि उसे कुछ भी नहीं पचता। उस दशामें दूधके झाग खिला-खिलाकर वैद्य रोगीको खड़ा करते हैं।

"हारीत संहिता" में लिखा है:—

क्षीणे ज्वरातिसारे च सामे च विषम ज्वरे।
मन्दाग्नौ कफमाश्रित्य पयः फेनं प्रशस्यते॥

क्षीणज्वर, अतिसार, आमज्वर, विषमज्वर और कफाश्रित-मन्दाग्नि—इनमें दूधके झाग पीना बहुत अच्छा है।

कहाँ तक लिखें, आयुर्वेदमें जीर्णज्वर आराम करने के लिए घी और दूध की बड़ी तारीफ की है। अनेक प्रकार की औषधियों द्वारा बनाये हुए घी और दूध जीर्णज्वर नाश करनेके लिए लिखे हैं। हमने वर्द्धमान पिप्पली, क्षीरपाक, सितादि क्षीर और पञ्चसार प्रभृतिको जीर्णज्वरमें रामबाणके समान पाया है। जीर्णज्वरमें कफ सूख गया हो, रोगी रूखा हो गया हो, प्यास और दाहके मारे घबराता हो, तो उसे दूध अवश्य देना चाहिये। बहुतसे अनाड़ी वैद्य—क्या नये और क्या पुराने—सभी ज्वरोंमें घी-दूध नहीं देते। यह उनकी भारी भूल है। नये ज्वरमें घी-दूध बेशक हानिकारक हैं; परन्तु पुराने बुखारोंमें ये रोग नाश करके रोगीकी जान बचानेवाले हैं।

"चरक" में लिखा है—"जिस तरह धातुओंकी क्षीणतासे क्षयज्वर होता है; उसी तरह जीर्णज्वरका प्रधान हेतु देहकी धातुओंकी दुर्बलता है; ज्वरका सम्बन्ध जब किसी धातु या धातुओंसे हो जाता है, तभी वह चिपट जाता है। जब अनेक प्रकारकी चिकित्सा करने पर भी ज्वर न जाय, तब तो कम-से-कम वैद्यको इस बातकी खोज करनी चाहिये कि, इस ज्वरका सम्बन्ध किस धातुसे है। जिस धातुसे ज्वरका सम्बन्ध हो, उस धातुसे उसका सम्बन्ध छुड़ाते ही ज्वर आराम हो जाता है। इस तरहके ज्वर बलदाता और बृंहण आहारों से जाते हैं। धातुओंके जिस प्रमाणसे क्षीण होनेसे ज्वर हुआ हो; बलवर्द्धक और बृंहण आहार उसी प्रमाणसे शरीरके भीतर पहुँचानेसे ज्वर आराम होता है।" ऐसे जीर्णज्वरमें विशेषकर गरमी बढ़ जाती है और वायुके कोपसे शरीर एकदम रूखा हो जाता है। जब तक वायुके शान्त करनेवाली क्रियाएँ नहीं की जातीं, कोई लाभ नहीं होता। वायुको शमन करनेवालोंमें "घी" सर्वोत्तम है। कहा है:—

लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करम् ।
घृतेन वातजान् रोगान् सर्व रोगान् गूढ़ान्वितः ॥

"नमकसे कफ नाश होता है, शक्कर या चीनीसे पित्त शान्त होता है, घी द्वारा बादीसे हुए रोग आराम होते हैं और गुड़ मिली दवाओंसे सब रोग आराम होते हैं।" बस, इसी वजहसे जीर्णज्वरमें घी दूध देने पर ज़ोर दिया गया है। पर इससे यह न समझ लेना चाहिये, कि जीर्णज्वरीमें एक तोले घी या एक पाव दूध भी पचानेकी ताक़त या अग्निबल हो या न हो, उसे दमादम घी दूधसे भर दिया जाय। सभी जगह अक्ल की ज़रूरत है। यद्यपि घी और दूध जीर्णज्वरमें अमृत हैं, मगर यही रोगीके बलाबलको बिना विचारे अनापशनाप दे दिये जायँ; तो रोगी न मरता होगा, तो भी मर जायगा। कोई-कोई जीर्णज्वरी ऐसे होते हैं कि, उन्हें छटाँक भर दूध या तोले भर अन्नसे दस्त होने लगते हैं, कुछ भी नहीं पचता; तब चतुर वैद्य दूधके झाग मिश्री मिलाकर खिलाते हैं। ज्यों-ज्यों शक्ति बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों और ताक़तवर पदार्थ दिये जाते हैं। बिना घी-दूधके जीर्णज्वरी और भी रूखा होता चला जाता है; इससे इनका देना ज़रूरी है, पर जितना पच सके उतना ही देना चाहिये।

"चरक" में लिखा है :—विसर्पज्वर और विस्फोटकज्वर (चेचक प्रभृति) में, यदि कफ पित्तकी प्रबलता न हो, तो, पहले से ही घी पिलाना उत्तम है। किन्तु इस बातका भी खयाल रखना चाहिये कि, विसर्पज्वर और विस्फोटकज्वरमें सर्वत्र कफपित्तकी प्रबलता रहती है। यदि कोई चिकित्सक यह समझकर कि, विसर्पज्वर और विस्फोटकज्वर में 'चरक'ने आरम्भसे ही घी पिलानेकी आज्ञा दी है, घी पिलाना शुरू करे और कफपित्तकी प्रबलता है या नहीं, इस बातका खयाल भी न करे और इन ज्वरोंमें कफपित्तकी प्रबलता हो, तो परिणाम क्या हो? मतलब यह है कि, चिकित्सकको चलना तो शास्त्रानुसार ही चाहिये, पर

शास्त्रकी आज्ञाओंपर बारीकीसे विचार करना चाहिये और हर बातमें तर्क-वितर्कसे काम लेना चाहिये। जो लोग अक्लसे काम नहीं लेते, दिमागको तकलीफ़ नहीं देते, वे रोगियोंको मारते हैं और यहाँ अपयश के भागी होकर, मरने पर घोर नरक भोगते हैं।

"हारीत संहिता" में लिखा है :—

बलक्षये तर्पणभोजनेषु श्रमे च पित्तासृजि रेणुयुक्ते।
नेत्रामये कामलपाण्डुरोगे क्षये नवं सर्पिर्वदन्ति धीराः ॥

बुद्धिमान वैद्य बलक्षय, तर्पण, भोजन, थकान, पित्तरक्त, नेत्ररोग, कामला, पीलिया और क्षयमें "घी" देना अच्छा कहते हैं। ठीक बात है, इन मौक़ोंपर घी देना वास्तवमें गुणकारी है; पर पाचन-शक्तिका विचार किये बिना, निर्बल क्षयरोगीको अथवा और रोगके रोगीको या निरोगको ही, उसकी ताक़तसे ज़ियादा, घी दे दिया जायगा, तो उसे निश्चय ही दस्त लग जायँगे—निरोग रोगी हो जायगा और रोगी का रोग बढ़ जायगा। ज्वरमें जो हर जगह भारी पदार्थ देनेकी मनाही की है, उसपर भी सदा ध्यान रखना चाहिये। खूब भूख लगनेपर पथ्य देना चाहिये और उतना ही देना चाहिये, जितना आसानीसे पच जाय। अहितकारी पदार्थ भी यदि थोड़ा-सा खा लिया जाय, तो किसी तरह पच जायगा, उतनी तकलीफ न देगा और कोई उपाधि न पैदा करेगा। कोई भी चीज़ ज़ियादा न खानी चाहिये, चाहे वह अमृत ही क्यों न हो। प्रत्येक चीज़ मात्रा या क़ायदेसे खाई हुई अमृतका काम करती है। इसलिए कहा है:—

अति भोजनं रोगमूलं आयुः क्षयकरम्।
तस्मादति भोजनं परिहरेत् ॥

बहुत खाना रोगकी जड़ है, बहुत खानेसे उम्र कम होती है; इसलिए बहुत खानेसे सदा परहेज़ करना चाहिये।

३—जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन अर्थात् नास देकर सिरका मलग़म निकालना ज़रूरी है। नास देनेसे सिरका भारीपन मिटता है, सिरदर्द आराम होता है और इन्द्रियोंमें चैतन्यता आ जाती है तथा रुचि होती है। जीर्णज्वरमें शहद या चिकनाईके द्वारा नस्य देना अच्छा समझा जाता है। जैसे, हींग और सेंधे नमकको पुराने घीमें मिलाकर नास देनेसे सिरका दर्द मिट जाता है ❀।

४—जीर्णज्वरमें अक्सर कफक्षय हो जाता है; इससे तथा नस्य, लंघन, चिन्ता, शोक, क्रोध, और मैथुन प्रभृतिसे मनुष्यकी नींद नाश हो जाती है। ऐसी दशामें, नींद लानेके लिए, रोगीके दोनों पाँवों पर तिलीके तेल या सौ बार धोये घीकी मालिश करना, भाँगको बकरीके दूधमें पीस कर लेप करना अथवा नाना प्रकारके मधुर बाजोंका स्वर या गाना सुनना वग़ैरः उपाय हितकारी हैं।

५—जीर्णज्वरवाले रोगीको बलाबल देखकर निम्नलिखित आहार-विहार भी सेवन कराये जा सकते हैं:—

मूंग या अरहरकी दाल, पुराने चाँवलोंका भात, गेहूँके अच्छे सिके पतले-पतले फुलके, गाय या बकरीका दूध, गायका घी, औषधियोंके योगसे तैयार हुआ घी, अनारदाने, आमले, कैथ, कागज़ी नीबू, कैथ या पोदीनेकी चटनी, ज़ीरा, धनिया, हल्दी, सैंधानोन, नारायण तैल, चन्दनादि तैल या लाक्षादि तैल, पट्तक्रतैल, प्रभृति तैलोंकी मालिश। नारायण तैल और चन्दनादि तैल साधारण अवस्थामें मलवाने चाहियें। दाह हो, तो "पट्तक्र तैल" मलवाना चाहिये। मालिश कराकर स्नान करना ※, चन्दन और कपूर गुलाबजलमें घोटकर लगाना,

---

❀ जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन देना चरक, सुश्रुत और बंगसेन प्रभृति सबने ज़रूरी और हितकारी लिखाहै; बशर्तेकि रोगीका सिर भारी हो और उसमें दर्द वग़ैरः हो।

※ चरकमें लिखा है,—वैद्य जीर्णज्वरमें, विचारपूर्वक, शीतल या गरम मालिश करावे, शीतल या गरम चिकना लेप लगवावे और शीतल या गरम जलसे स्नान करावे, तो वहिर्मार्गगत ज्वर शान्त हो जाय।

फूलोंकी माला, अंशूदक जल, झरनोंका जल, बागकी सैर, चन्दन कपूर लगाये हुए मोतियोंकी माला पहने हुए नवयौवना स्त्रियोंसे आलिंगन (मगर मैथुन हरगिज़ नहीं),—ये सब परम पथ्य हैं। क्रोध, शोक, मैथुन, चिन्ता और वहम,—ये सब महा हानिकारक हैं।

विषमज्वरोंमें पथ्य

"भावप्रकाश" में लिखा है,—जो मनुष्य माठेके साथ मांस, दूधके साथ मांस, दहीके साथ मांस अथवा उड़दके साथ मांस भक्षण करता है, वह विषमज्वरसे छुटकारा पा जाता है।

अग्निवेश ऋषि कहते हैं—विषमज्वरवाले मनुष्यको वैद्य माँड़के साथ शराब पिलावे और मुर्गा तथा तीतर और समस्त विष्किर जातिके जीवोंका मांस खिलावे,—ये पथ्य हैं।

"सुश्रुत" में लिखा है—सवेरे ही सवेरे "घी और लहसन" खानेसे विषमज्वर जाता है। घी, दूध, मिश्री, शहद और पीपल—इन पाँचोंको यथाबल, सेवन करनेसे विषमज्वर जाता है। दूध और मांस-रस खाते हुए, वर्द्धमान पिप्पलीका सेवन करनेसे विषमज्वर नाश होता है। मुर्गे के साथ उत्तम शराब पीनेसे भी विषमज्वर शान्त होता है:—

"वंगसेन" में लिखा है।

पिप्पली शर्करा क्षौद्रं शृतं घृतं नवम्।
स्वजेन मथितं पेयं विषमज्वरनाशनम्॥

पीपल, मिश्री, शहद, औटा हुआ दूध और नौनी घी—इन सबको कलछीसे मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश होता है। और भी लिखा है,—लहसनके कल्क (लहसनकी जलके साथ पिसी हुई लुगदी) को तिलीके तेलमें नित्य सेवन करनेसे विषमज्वर और वातज्वर दूर होते हैं। विषमज्वरके रोगीके पीनेके लिए शराब और मांड़ देना चाहिये तथा भोजनके लिए मुर्गा, तीतर और मोरका मांस देना चाहिये। क्षीण मनुष्यका बहुत दिनोंका सतत या विषमज्वर बढ़ जाय, तो उसे ज्वर-

नाशक पथ्योंसे जीतना चाहिये। रूखे मनुष्यका ज्वर कषाय, वमन, लंघन और हलके पदार्थोंसे शान्त न हो, तो उसे घी पिलाना चाहिये।

सभी विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं; यानी तीनों दोषोंके कोपसे होते हैं; इसलिए जिस-जिस दोषका अधिक जोर हो, उसी-उसीका इलाज करना चाहिये।

वाताधिक्य या वातप्रधान विषमज्वरमें घी पिलाना चाहिये, अनुवासन-वस्ति करनी चाहिये तथा चिकने और गरम पदार्थ खाने-पीनेको देने चाहियें।

पित्ताधिक्य या पित्तप्रधान विषमज्वरमें, गरम दूधमें घी मिलाकर देना अच्छा है, इससे दस्त हो जाता है। इस ज्वरमें तिक्त और शीतल पदार्थ खाने-पीनेके लिए देने चाहियें।

कफाधिक्य या कफप्रधान विषमज्वरमें वमन, पाचन, रूखे अन्न-पान (खाने-पीनेके पदार्थ), लंघन और गरम दवाइयोंके काढ़े—ये सब पथ्य हैं।

सब तरहके विषमज्वरोंमें पहले वमन विरेचनादि* कराना हितकारी है। किसी ने कहा है:—

विषमे वमनं चैव रेचनं कारयेत् भिषक्।
तथा संभोजनं पथ्यैर्लघुभिः समुपाचरेत्॥

---

* हमने देखा है कि, कितने ही विषमज्वर दो-तीन दस्त करा देनेसे अथवा दो-तीन हलके दस्त कराकर "महाज्वरांकुश वटी" देनेसे बहुत जल्दी आराम हुए हैं। निशोथके चूर्णमें शहद मिलाकर चटानेसे ही, दस्त होकर अनेक बार विषमज्वर नाश हो जाता है।

"चरक" में लिखा है,—ज्वरवाले, घी और शहदके साथ निशोथका चूर्ण; घी और शहदके साथ त्रिफलेका काढ़ा; दूधके साथ अमलताशका गूदा; दाखोंके काढ़ेके साथ निशोथका चूर्ण अथवा दाख और हरड़का काढ़ा,—इनमेंसे कोई-सा नुसख़ा काममें लावें। दाखोंका रस पीकर गरम दूध पीना भी अच्छा है। ये सब नुसखे, ज्वरोंमें, दस्तोंके लिए उत्तम हैं। मात्रा बलाबल देखकर नियत करनी चाहिये एवं घी और शहद बराबर-बराबर न लेने चाहियें।

विपमज्वरमें वैद्यको क्रय और दस्त कराने चाहियें तथा हलके पथ्य पदार्थ खाने-पीनेको देकर विपमज्वर नाश करना चाहिये।

विपमज्वरमें वमन विरेचन वड़े लाभदायक हैं; फिर भी जो रोगी इनके योग्य हों उन्हींको ये कराने चाहियें। बहुत ही ज़रूरत हो और रोगी कमज़ोर हो, तो हलकी दस्तावर दवा दे देनी चाहियें, जिससे मामूली तौरसे दो-तीन दस्त हो जायँ और रोगीको कष्ट न हो। जिनको वमन कराना उचित हो, उनको वमन करानी चाहिये और जिनको दस्त कराने उचित हों, उनको दस्त कराने चाहियें। जिनको ये दोनों ही हानिकर हों, उन्हें नहीं कराने चाहियें। जो घी दूधके लायक़ हों, उन्हें घी-दूध देना चाहिये; पर उनकी शक्तिका ख़याल ज़रूर रखना चाहिये। जो मांस देने योग्य हों, उन्हें मांस देना चाहिये; जिनको मांस न पचे, उन्हें और हलके भोजन देने चाहियें। हमने वलवान और दुर्वल सभीके लिये हितकारी, पथ्य और ज्वरनाशक पदार्थ लिख दिये हैं, वलावल और दोपोंकी प्रधानता और अप्रधानता प्रभृतिका ख़याल तो वही करेगा, जो इलाज करेगा।

"महेश्वर" प्रभृति धूप देने, अञ्जन लगाने, टोने-टुटके करने, यन्त्र-मन्त्र करने, और "लाक्षादि तैल" की मालिश करानेसे भी विषमज्वर नाश होते हैं। हमने कितने ही रोगी इस तरह आराम किये हैं। दाह होनेसे सौ वारका धोया घी या नीम अथवा वेरके पत्तोंके झागकी मालिश कराने अथवा ऐसे ही और-और लेप करनेसे दाह फ़ौरन शान्त हो जाता है। दाहमें "प्रह्लादन तैल या पद्मकट्टर तैल" से हमने वड़ा फ़ायदा उठाया है। इनसे दाह और शीत फ़ौरन मिट जाते हैं।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

निर्विषैर्भुजगैर्नागैर्विनीतैः कृततस्करैः।
त्रासयेदागमे चैनं तदहर्भोजयेन्न च॥

जिस समय ज्वर वढ़नेवाला हो उस समय विपहीन साँपों या पालतू हाथियों अथवा वनावटी तस्करों—चोर-डाकुओंसे रोगीको

डराना चाहिये और उस दिन उसे खानेको न देना चाहिये।

जिस तरह डराने-धमकाने या विस्मयजनक बात कह देनेसे "हिचकी" आराम हो जाती है; उसी तरह कई "विषमज्वर" भी ऐसे उपायोंसे जाते रहते हैं; पर डरानेके लिए वही साँप मँगाने चाहियें, जिनके दाँत तोड़ दिये गये हों। बिना दाँत तोड़े—ज़हरवाले साँप, भूलकर भी, न मँगाने चाहियें। उनसे तो अर्थमें अनर्थ हो सकता है।

आगन्तुक ज्वरोंमें पथ्य

इन ज्वरोंमें लंघन नहीं कराने चाहियें। तलवार, लकड़ी, घूँसा प्रभृति किसी प्रकारकी चोट लगनेसे होनेवाले अभिघातज ज्वरोंमें घी पीना, मालिश कराना, खून निकलवाना यानी फ़स्द खुलवाना अथवा सींगी वगैरः लगवाकर खून निकलवाना, शराब पीना, मांस-रस पीना और भात खाना पथ्य है। पहले मांसरस और दूध पीना ही अच्छा है।

"चरक" में लिखा है,—"अभिघातज ज्वरमें (चोट प्रभृतिसे होने-वाले ज्वरमें) घी पिलाना और घी की मालिश कराना ठीक है। फ़स्द खुलवाकर खून निकलवाना, प्रकृतिके अनुकूल—मिज़ाजके माफ़िक़ शराब पीना, मांसरसके साथ भोजन करना अच्छा और आवश्यक है। जो कहींसे गिरकर बेहोश हो गया है, उसे होशमें लानेके लिये फ़स्द खुलवाना और शराब पिलाना आवश्यक है; किन्तु यदि भूलसे ज़ियादा खून निकाल दिया जायगा, तो वायु कुपित हो जायगा, और अगर शराब अधिक पिला दी जायगी तो पित्त कुपित्त हो जायगा। ऐसी हालतमें, ग़लतीके कारणसे, रोगीकी मृत्यु भी हो जा सकती है।" देखो पाठको ! चिकित्सा-कर्म कितनी होशियारी, सावधानी और ज़िम्मेवरीका काम है।

क्षतज-ज्वरमें यानी उग्र ज्वरमें, जो तलवार, भाला प्रभृति हथि-यार लगनेके कारण, जख़्म या घाव होनेसे चढ़ा हो अथवा व्रण-ज्वरमें, यानी उस ज्वरमें, को फोड़े फुन्सियोंके ज़ोर धरनेसे हुआ हो,

अपथ्य

खुशबूदार तेल शरीरमें लगाना, लाल फूलोंकी माला या लाल कपड़े पहनना, वमन या क्रयको रोकना, दाँतुन करना, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना, संयोग-विरुद्ध अन्नपान, दाहकारक और भारी यानी देरमें पचनेवाले पदार्थोंका खाना, दिनमें दो वार खाना, पूर्वाह्नमें यानी दोपहर पहले अर्थात् दिनके पहले चार घण्टोंके भीतर खाना; अभिष्यन्दी, तीक्ष्ण और भारी अन्न खाना, एक साथ पेटभर खाना,—ये सभी ज्वरोंमें अपथ्य हैं। इनसे गया हुआ ज्वर फिर लौट आता है।

इनके सिवाय दूषित जल, खार, खटाई, पत्तोंके साग, अंकुर उपजा हुआ अन्न, खसका जल, पान, तरबूज, बड़हर, तोड़ा मछली, तिलोंकी खल, पिट्ठी और मैदाके बने पदार्थ, कचौड़ी, बड़े तथा और भी कफकारी पदार्थ ज्वरोंमें त्याज्य हैं।

ज्वरान्तमें अपथ्य

ज्वर छूट जाने पर भी कसरत, मैथुन, स्नान, भ्रमण, परिश्रम, ा खाना और शीतल जल—इनसे परहेज़ करना चाहिये। जब तक हले की-सी ताक़त न आ जाय, तब तक अवश्य बचना चाहिये। ज्वर ाने पर भी जल्दी ही स्नान कर लेनेसे फिर ज्वर आजाता है; इसलिये वर-मुक्त मनुष्य स्नानको विषके समान समझे। जब तक बल, वर्ण—रीरका रंग, अग्नि और देह, पहलेके समान प्रकृतिके अनुसार न ाजायँ, तब तक ज्वरमुक्त मनुष्य भी त्यागने योग्य कामोंको त्याग दे।

सुश्रुतमें लिखा है:—

परिषेकावगाहांश्च स्नेहान्संशोधनानि च।
स्नानाभ्यंग दिवास्वप्न शीतव्यायाम योषितः॥
न भजेत ज्वरोत्सृष्टो यावन्नो बलवान्भवेत्।
त्यक्तस्यापि ज्वरेणाशु दुर्बलस्याहितैर्ज्वरः॥
प्रत्यापन्नो दहेद्देहं शुष्कवृक्षमिवानलः।

तस्मात्कार्यः परीहारो ज्वरमुक्तेन जन्तुना ।
यावन्न प्रकृतिस्थः स्याद्दोषतः प्राणतस्तथा ॥

जलमें गोता मारना, स्नेह पान करना (घी तेल वगैरह चिकने पदार्थ पीना), वमन करना, जुलाब लेना, शरीरमें तेल आदिकी मालिश कराना, दिनमें सोना, सरदी खाना, मिहनत करना, स्त्रीप्रसंग करना,—इन सबसे, ज्वर छूटनेके बाद, जबतक शरीरमें पूरी ताक़त न आ जाय, परहेज़ करना चाहिये; क्योंकि ज्वरसे मुक्ति पाया हुआ; कमज़ोर आदमी अगर ज़रा-सी भी बदपरहेज़ी करता है वा कोई अनुचित काम करता है, तो उसे बुख़ार फिर धर दबाता है और शरीर को इस तरह जला देता है, जिस तरह सूखे वृक्ष को आग जलाकर ख़ाक कर देती है; इस वास्ते ज्वर जानेके बाद भी, जब तक दोष पूरे तौरसे प्रकृति पर न आ जायँ और पहलेकी-सी ताक़त न आ जाय, तबतक परहेज़ रखना चाहिये ।

नोट—ये अपथ्य ज्वर रहनेकी और छूटनेकी दोनों ही हालतोंमें त्यागने उचित हैं ।

सुश्रुतमें लिखा है:—

न जातु तर्पयेत्प्राज्ञः सहसा ज्वरकर्शितम् ।
तेन संदूषितो ह्येष पुनरेव भवेज्ज्वरः ॥

ज्वरसे कमज़ोर हुए मनुष्यको शीघ्रही खूब तृप्त न करना चाहिये; यानी ज्वर जाते ही ताकत लानेवाले पदार्थ न देने चाहियें; क्योंकि इनसे दूपित होकर फिर बुख़ार आने लगता है ।

अरोचके गात्रसादे वैवर्ण्येऽङ्गमलादिषु ।
शान्त ज्वरोऽपि शोध्यः स्यादनुबन्धभयान्नरः ॥

अगर ज्वर शान्त होने पर भी अरुचि रहे, अङ्गोंमें थकान हो, शरीरका रंग खराब हो, देह मलीन हो; तो ज्वरके न आनेकी हालत में भी, शोधन करना यानी जुलाब देना चाहिये । ऐसा न हो कि, दोष शेष रह गया हो, जिससे फिर ज्वर आने लगे ।

हृतावशेष ज्वरके लक्षण और उसकी शान्तिके उपाय

धातुगतज्वर यानी रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य में पेवस्त हुए ज्वर—वमन, विरेचन, लंघन, रक्तमोक्षण* प्रभृति तथा संशमन औषधियों द्वारा नाश किये जाते हैं। उस दशामें, यदि शमन-शोधनादि क्रियाओंके करने पर भी दोष शेष रह जाता है अथवा नवीन ज्वरमें दोष शेष रह जाता है; तो वह बुखार किया करता है। वैसे ज्वरको "हृतावशेषज्वर" कहते हैं। अगर ऐसा हो, तो उस अवस्थामें साधारण उपायोंसे बड़ा लाभ होता है। "सुश्रुत" में लिखा है:—

हृतावशेषं पित्तं तु त्वक्स्थं जनयति ज्वरम्।
पिबेत् इक्षुरसं तत्र शीतं वा शर्करोदकम्॥
शालिषष्टिकयोरन्नमश्नीयात् क्षीरसंप्लुतम्।
कफवातोत्थयोरेव स्वेदाभ्यंगौ प्रयोजयेत्॥

शोधन शमन आदिसे चमड़े में बाकी रहा हुआ पित्त ज्वर पैदा कर देता है। उस हालतमें, गन्नेका रस पीना या गँडेली चूसना अथवा शीतल शर्करोदक† का कोई उत्तम शर्बत पीना हित है। साथ ही दूध भात खाना भी पथ्य है। इन उपायोंसे वह शेष रहा हुआ पित्त

* रसगतज्वर यानी उस ज्वरमें जो रसमें हो; वमन और लंघन कराये जाते हैं। अगर ज्वर रक्तगत होता है, तो जलसे सींचना, लेप करना, खून निकलवाना ये कर्म करते हैं और संशमन औषधि देते हैं। मांसगतज्वरमें तेज जुलाब देते हैं। मेदगतज्वरमें मेदनाशक यानी मेदको सुखानेवाली क्रियाएँ करते हैं। अस्थि-गतज्वरमें यानी हड्डियोंमें होनेवाले ज्वरमें वातनाशक चिकित्सा करते हैं तथा वस्तिकर्म, तेलादिकी मालिश और उद्वर्तन करते हैं। मज्जा और शुक्रगतज्वरमें कुछ नहीं करते, क्योंकि जिसके मज्जा और वीर्यमें ज्वर घुस जाता है, वह निश्चय ही मर जाता है। सातों धातुगत ज्वरोंमें मज्जा और शुक्रगतज्वर त्याज्य हैं।

† शुद्ध जलमें मिश्री या सफेद खांड़ घोलकर उसमें अन्दाज़से छोटी इलायची, कपूर, लौंग और कालीमिर्च पीसकर मिला दो। खूब मिलजाने पर छानकर पी जाओ। यही "शर्करोदक" कहलाता है। इसकी विद्वानोंने बड़ी तारीफ़ की है। यह वीर्यको पैदा करता है, शीतल होनेसे जलन मिटाता है, दस्त लाता है,

शान्त हो जाता है और ज्वर छूट जाता है। अगर कफ या वायुके शेष रह जानेसे ज्वर आने लगे, तो पसीना देने और तेल प्रभृतिकी मालिश से काम निकालना चाहिये।

ताक़त लाता है, रुचि करता है, हलका है, ज़ायकेदार है तथा वातपित्त, रुधिर-विकार, मूर्च्छा, वमन, प्यास और दाहज्वरको शान्त करनेमें परमोत्तम है। पित्त-शेषज्वरमें यह रामबाण है। इसमें इतनाही दोष है कि, यह कफको बढ़ाता है, किन्तु वातको शान्त करता है और पित्तज्वरमें, शुद्ध पित्तज्वरमें अमृत है।

ज्वररोगियोंके लिए अन्नसाधन विधि

मण्ड

उत्तम शालि चाँवलोंको १४ गुने जलमें पकाओ। जब चावल अच्छी तरहसे सीज जायँ, पसाकर चाँवल अलग कर दो। जो पतला-पतला पदार्थ रहे, उसे ले लो। इसीको "मण्ड" या "माँड़" कहते हैं। इसमें सोंठ और सेंधानोन, अन्दाज़से, डालकर ज्वरवालेको दो। यह मण्ड अग्निदीपक, पाचक, ग्राही, हलका, शीतल, धातुओंको समान करनेवाला, तृप्तिकारक, वलकारक और ज्वरनाशक एवं पित्त, कफ और श्रमनाशक है।

पेया

लाल शालि चाँवलों वग़ैर:को चौदहगुने जलमें पकाओ। जिसमें चाँवलोंके कण कम हों तथा ज़ियादा पतली हो, उसीको "पेया" कहते हैं। पेया अत्यन्त हलकी, मल रोकनेवाली, धातु पुष्ट करनेवाली, प्यास, ज्वर, वात, कमज़ोरी तथा कोखके रोगोंको नाश करनेवाली, पसीना लानेवाली, अग्निदीपन करनेवाली, वायु और मलको अनुलोमन करनेवाली होती है। अगर इसमें अन्दाज़का सेंधानोन और सोंठका चूर्ण मिला दिया जाय; तो यह दीपन, पाचन, रुचिकारक और आमशूल तथा विवन्धको नष्ट करनेवाली हो जाती है।

नोट—जिसमें ज़रा भी कण न हों, उसे 'मण्ड' कहते हैं। जिसमें थोड़े कण हों और पतली हो, उसे "पेया" कहते हैं। जिसमें कण ज़ियादा हों और पतलापन कम हो, उसे "विलेपी" कहते हैं।

प्रमथ्या

चार तोले चाँवल या और कोई अन्न, जिसकी प्रमथ्या वनानी हो, लेकर साफ कर लो। पीछे उसे जलमें पीसकर लुगदी-सी वना लो और अठगुने या ३२ तोले जलमें उसे पकाओ। जब चौथाइ यानी

आठ तोले माल रह जाय, उतार लो। यही "प्रमथ्या" है। इसके गुण पेयाके समान ही हैं वल्कि इतनी विशेपता है कि,यह और भी हल्की है।

यूष

दो दालवाले मूँग, मोठ, चना प्रभृतिमेंसे किसी एकको लेकर १८ गुने जलमें पकाओ, जब अन्न अच्छी तरहसे गल जाय और पेयासे कुछ गाढ़ा हो जाय, तब उतार लो। इसको "यूष" कहते हैं। यूष बहुत ही रुचिकारक होता है।

दूसरी विधि

दो दालवाला अनाज मूँग या चना वगैरः चार तोले लेकर जल में पीस लो। पीछे ६ माशे सेंधानोन और ६ माशे पीपलको भी एक जगह जलमें पीस लो। शेपमें दोनों पिसी हुई लुगदियोंको ६४ तोले जलमें पकाओ; जब रस-सा हो जाय, उतार लो। इसे भी "यूप" ही कहते हैं। यह यूष बलकारक, पाकमें हलका, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी और कफनाशक होता है।

मूँगका यूष

आठ तोले मूंग लेकर १२८ तोले (१ सेर ६॥ छ०) जलमें पकाओ। जलते-जलते चौथाई पानी रह जाय, तब आगसे उतार लो। पीछे मूंगको हाथोंसे खूब मलकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस छने हुए रसमें अनारका रस चार तोले, सेंधानोन १ तोले, सोंठका चूर्ण १ तोले और धनियाका चूर्ण १ तोले मिला दो। अन्तमें ज़रा-सी पीपल और ज़रा-से जीरेसे छोंक दो। इसे "संस्कृत मूंगका यूप" कहते हैं। यह यूप पित्तनाशक, जठराग्निवर्द्धक, शीतल, हलका, घाव, उर्द्ध्वजत्रुरोग, प्यास, दाह, कफ, पित्तज्वर और रुधिरके विकारको नष्ट करनेवाला और सब यूषोंमें उत्तम है। पित्तज्वरमें मूंगके यूपसे लपेटा भात मिश्री मिलाकर देनेसे बड़ा लाभ होता है।

मूँग और आमलेका यूष

इन दोनोंका यूष दस्तावर, पित्त और वातनाशक, तृषा और दाह शान्तिकारक, शीतल तथा मूर्च्छा, श्रम और मदनाशक है।

मसूरका यूष

मसूरका यूष मल रोकनेवाला, पुष्टि करनेवाला, जायकेदार और प्रमेहनाशक है।

चनेका यूष

वातपित्तज्वरमें, अत्यन्त दाह होनेके समय, चनेका यूष अच्छा काम करता है।

यवागू

चाँवलोंको ६ गुने जलमें पकाओ। जब अन्न गल जाय और खूब गाढ़ा रहे, परन्तु कण अलग-अलग रहें और थोड़ा पानी भी रहे, तब उतार लो। इसे ही "यवागू" कहते हैं।

यवागू ज्वर-रोगीके लिए अत्यन्त हितकारी, अग्निदीपक, हलकी, प्यासनाशक, वस्ति-शोधक, थकान और ग्लानिनाशक है। ज्वर और अतिसारमें यवागू परम पथ्य है।

"चरक" में लिखा है, नवीन ज्वरवालेको वमन करने और लंघन करनेके बाद 'यवागू' देनी चाहिये। यह यवागू, दोषोंके अनुसार, औषधियोंके साथ बनानी चाहिये। पहले मण्ड देना चाहिये और जबतक ज्वर हलका न हो या जबतक ६ दिन न हो जायँ, तबतक "यवागू" देनी चाहिये। ईंधनसे जैसे आग तेज होती है, उसी तरह "यवागू" से रोगीकी अग्नि दीपन होती है। यवागू* औषधियोंके साथ

---

*मद्यसे पैदा हुए ज्वरमें, अधिक शराब पीनेसे हुए ज्वरमें, रोज-रोज शराब पीनेवालेके ज्वरमें, पित्तश्लेष्म प्रधान (पित्तकफप्रधान) ज्वरमें तथा उर्ध्वगत—ऊपरके रक्तपित्त ज्वरमें "यवागू" अहित यानी नुक़सानमन्द है। इसी तरह पेया भी मद्यजनित ज्वरोंमें न देनी चाहिये। दाह, वमन, प्यासमे घबराते हुए, गरमी से पीड़ित, दुर्बल और निराहारको भी यवागू या पेया न देनी चाहिये। ऐसे

संयोग होनेसे तथा हलकी होनेसे अग्नि दीपन करती है, वात, मूत्र और पुरीपको अनुलोमन करती है; यानी इसके सेवनसे हवा खुलती तथा पाखाना, पेशाव साफ़ होता है। "पेया" पतली और गरम होने के कारण पसीना लाती है, पतली होनेके कारण प्यासको नाश करती है, आहार होनेके कारण प्राण धारण करती है, सत्व-गुणके कारण देहमें हलकापन करती है और ज्वरमें सात्म्य होनेके कारण ज्वर नाशक है, इसलिये पहले-पहल पेया प्रभृतिका पथ्य देना चाहिये।

विलेपी

शालि चाँवलोंको चौगुने जलमें पकाओ, जब चाँवल गल जायें पर अलग-अलग हों और जल भी अलग हो, उतार लो। यह "विलेपी" है। यह अग्निदीपक, वलकारक, हृदयको हितकारी, मल रोकनेवाली, हलकी, घाववाले और नेत्ररोगीको पथ्य तथा तृप्तिकारक, प्यास और ज्वरनाशक है।

भात

१६ तोले चाँवलोंको चौदह गुने जलमें पकाओ, जब चाँवल ख़ूब गल जायँ, तब पसाकर माँडको अलग कर दो। इन पके हुए चाँवलोंको ही "भात" या "भक्त" कहते हैं। भात मधुर और हलका है। यह अग्निदीपक, पथ्य,तृप्तिकारक,पेशाव लानेवाला और हलका होता है।

अच्छी तरह धोया हुआ, पसाया हुआ गरम भात विशद और ज़ियादा गुणोंवाला होता है। नहीं धोया हुआ, नहीं पसाया हुआ और शीतल भात वीर्य पैदा करनेवाला, भारी और कफकारी होता है। शीतल और सूखा हुआ भात कठिनसे पचता है। अच्छी तरह न पका हुआ भात, बहुत समयमें, वड़ी दिक़्क़तसे पचता है।

रोगीको सन्तर्पण देना अच्छा है। यवागू तीन तरहकी होती हैं:—(१) मंड, (२) पेया, (३) विलेपी। ये उत्तरोत्तर भारी हैं; यानी मंडसे पेया भारी है और पेयासे विलेपी भारी है। यवागू पतली खिचड़ी-सी हो जाती है। यवागू चाँवल, मूँग, उर्द और तिल इनमेंसे जिसकी उचित हो बनानी चाहिये।

भुने हुए चाँवलोंका भात—रुचिकारक, सुगन्धियुक्त, कफनाशक और हलका होता है। ऐसा भात वातरोगी, निरूहवस्तिवाले, मन्दाग्निवाले और जुलाब लेनेवालेको अत्यन्त हित है।

मूँगके यूषके साथ भीगा हुआ भात कफज्वरमें और मूँगके यूषसे भीगा और मिश्री मिला भात पित्तज्वरमें बहुत उत्तम है।

रसौदन

पुष्ट जानवरकी जाँघका मांस अथवा हड्डी-रहित तीतरका मांस १६ तोले लेकर, उसके महीन-महीन टुकड़े कर डालो। पीछे पानीसे धो लो। इसके बाद पीपल, पीपलामूल, सोंठ, जीरा और धनिया—इनमेंसे हर एक आठ-आठ माशे ले लो। अन्तमें सबको मिलाकर, १२८ तोले (१ सेर ६।। छटाँक) जलमें पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, तब मांसको कलछीसे कूटकर और हाथोंसे मलकर उसका रस निकाल लो। इसके बाद इसे हींग, सैंधेनोन और भुने जीरेसे बघार लो और तैयार किये हुए भातमें मिला दो। इसीको "रसौदन" कहते हैं। रसौदन—वमन विरेचनसे शुद्ध हुए और शुद्ध होनेकी इच्छा करनेवाले दोनोंके लिए पथ्य है। यह भारी, मैथुनशक्ति बढ़ानेवाला, बलकारक और वातज्वर हरनेवाला है। श्रम, उपवास और वायुसे पैदा हुए ज्वरमें बहुत ही हितकारी है।

मांसरस

अगर गाढ़ा मांसरस बनाना हो, तो पहले मांसके टुकड़े करके धो लो; पीछे ९६ तोले मांस ४ सेर जलमें पकाओ। अगर पतला मांसरस बनाना हो, तो ४८ तोले मांस ४ सेर जलमें पकाओ। अच्छी तरह मांसका रस बनाना हो, तो पहले ८ तोले मांसको पत्थर पर पीसकर गोलियाँ बना लो और घीमें भून लो। पीछे उसे चार सेर जलमें पकाओ और चौथाई पानी रहने पर उतार लो। थोड़ा-सा मांस बहुतसे जलके साथ सिद्ध किया जाय तो उसका गल जाना सम्भव है।

औषधियोंके योगसे मंड आदि बनानेकी विधि

चार तोले औषधि लेकर ३ सेर १६ छटाँक जलमें पकाओ। जब जलते-जलते आधा पानी रह जाय, उतार लो। इस काढ़ेसे मंड और पेया, विलेपी आदि तैयार कर लो; यानी जलके स्थानमें ऐसा पकाया हुआ काढ़ा देकर पेया वगैर: बना लो।

औषधिसे तैयार की हुई पेयाके गुण

जो-जो दोष हों, उन-उन दोषोंके अनुसार पाचन औषधियोंसे तैयार की हुई पेया, भोजनके समय, देनेसे हितकारी, अग्निदीपक, पाचक, हलकी और ज्वरनाशक होती है।

भिन्न-भिन्न ज्वरोंमें भिन्न-भिन्न पेया

वातज्वर में पंचमूल (सरवन, पिथवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और गोखरू) का काढ़ा पाचन है। इसलिए अगर वातज्वरमें पेया देनी हो, तो चार तोले उपरोक्त पंचमूल लाकर, २५६ तोले या ३ सेर १६ छटाँक जलमें पकाकर काढ़ा करलो। जब आधा जल रह जाय, तब काढ़ेको उताकर छान लो। पीछे ६ तोले चाँवल लेकर इसी पंचमूलके तैयार रक्खे हुए काढ़ेमें पकाओ। जब उसमें थोड़ेसे कण रह जायँ और पतली-सी हो जाय, उतार लो। यही औषधिसे सिद्ध की हुई पेया है। यह पेया वातज्वरमें हित है।

पित्तज्वर में नागरमोथा, कुटकी और इन्द्रजौ—इन तीनोंका काढ़ा पाचन है। उसी ऊपरकी रीतिसे चार तोले तीनों दवाएँ लेकर ३ सेर १६ छटाँक जलमें काढ़ा बनाओ। आधा जल रहनेपर उतारकर छान लो। फिर उस काढ़ेमें ९ तोले चाँवल डालकर पकाओ। थोड़ेसे कण रहने और जियादा पतली होनेपर उतार लो। यह पेया पित्तज्वरमें पथ्य है। इस ज्वरमें मूंगके यूपके साथ मिला हुआ भात, मिश्री मिलाकर देना भी अच्छा है। यह पथ्य शीतल है।

कफज्वर में पिप्पल्यादि काथ पाचन है। पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, जीरा, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़, इन्द्रजौ, बकायन, मूर्वा (चुरनहार), अतीस, कुटकी और बायबिड़ङ्ग—इन २० औषधियोंको पिप्पल्यादिगण कहते हैं। इनको उसी तरह लेकर उतने ही पानीमें काढ़ा बनाकर, आधा रहनेपर उतार लो। शेषमें उसी तरह चाँवल डालकर पेया बना लो। यह कफज्वरमें हितकारी है।

नोट—मूँगके यूषके साथ भीगा हुआ भात भी कफज्वरमें हितकर है।

वातपित्तज्वर में लघु पंचमूलके काथ से पेया बनाकर देनी चाहिए।

कफपित्तज्वर में पीपल और धनियेके काथसे पेया बनानी चाहिये।

कफवातज्वर में वृहत्पञ्चमूल (बल, अरना, खभारा, पाढ़ल और स्योनाक) के काथसे सिद्धकी हुई पेया देनी चाहिये।

त्रिदोषज्वर में कटेरी, जवासा और गोखरूके काथसे सिद्ध किया हुआ अन्न, विशेषकर, पेया देनी चाहिये।

ज्वरमें अगर मूत्राशय, पसली और सिरमें दर्द हो, तो गोखरू और कटेरीके काथसे सिद्धकी हुई लाल शालि चाँवलोंकी पेया दो। यह पेया उक्त पीड़ाओंको नाश करती तथा ज्वर हरती है।

ज्वरमें मल-मूत्र यानी पाखाना-पेशाब रुक जायँ, तो पीपल और आमलोंके काथसे पकाई हुइ पेया घी डालकर देनी चाहिये। इस पेया से दोष उचित मार्गोंसे निकलते हैं।

ज्वरमें श्वास, खाँसी और हिचकी हों, तो लघुपञ्चमूल या वृहत्पञ्चमूलके काथसे सिद्ध की हुई, लाल शालि चाँवलोंकी पेया देनी चाहिये।

पंचमुष्टिक यूष

जौ, बेर, कुलथी, मूंग और सोंठ—इनमेंसे हरेकको चार-चार तोले लेकर, अठगुने (१६२ तोले) जलमें पकाओ। जब चौथाई भाग जल बाकी रहे, तब हाथोंसे मलकर छान लो। इसीको "पञ्चमुष्टिक यूष" कहते हैं। यह यूष वात, पित्त और कफको नाश करता है तथा शूल, वायुगोला, खाँसी, श्वास, क्षय और ज्वरमें अत्यन्त हितकारी है।

ज्वरमें बत्ती

ज्वरमें अगर दस्त-पेशाब बन्द हो जायँ, तो पीपल, पीपलामूल, अजवायन और चव्य—इनको जलमें पीसकर मोटी अँगुलीके बराबर, कपड़ेकी बत्ती बनाकर उसमें लपेटो और ऊपरसे थोड़ा घी भी चुपड़ दो। इस बत्तीको गुदामें चलानेसे पाखाना हो जाता है।

नोट—इसके साथ ही दोषोंको यथार्थ मार्गमें स्थित करनेवाली, उधर लिखी हुई पीपल और आमलोंके काढ़ेसे सिद्ध की हुई पेया भी देनी चाहिये।

दूसरी बत्ती

दारुहल्दी, बच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोन—इन छै औषधियोंकी बत्ती भी, उसी तरकीबसे बनाकर, गुदामें चलानेसे मल-मूत्र हो जाते हैं। अगर पेटमें दर्द और अफारा हो, तो इन्हीं ६ दवाओंको काँजीमें पीसकर, गरम करके, पेटपर लेप करना चाहिये।

सन्तर्पण

खीलोंका सत्तू, दाख, अनार और खजूर—इनको जलमें घोलकर, उसमें मिश्री, शहद और घी डालकर, जो चीज़ बनायी जाती है, उसे "सन्तर्पण" कहते हैं। वैद्य खीलोंके सत्तूको जलमें घोलकर, उसमें मिश्री और शहद मिलाकर भी तर्पण रूपसे पिलाते हैं।

जिन रोगियोंको यवागू या पेया देना मना है, उनको ये सन्तर्पण अच्छे होते हैं। इनके पीनेसे विशेषकर वमन, अतिसार, प्यास, दाह, विष, मूर्च्छा और ज्वरका नाश होता है।

"चरक" में लिखा है—दाह और वमनसे पीड़ित तथा लंघनोंसे क्षीण हुए ज्वरवालेको दाख, अनार, खजूर, चिरौंजीका पका फल और फालसे—इनका रस मिलाकर तर्पण देनेसे ज्वर नाश होता है।

दुग्धफेन

गायका ताज़ा दूध आँखोंके सामने कढ़ाकर ले आओ। उसे दो लोटोंमें भरकर, भाँगकी तरह एक दूसरेमें उड़ेलो; यानी एक लोटेमें थोड़ा दूध रक्खो और दूसरे लोटे में भी थोड़ा दूध रखो।। पहले लोटे को हाथमें रक्खो और दूसरे लोटेको ऊँचा ले जाओ, पीछे उसका दूध ऊँचेसे नीचेवाले लोटेमें उड़ेलो। इस तरह सैकड़ों बार करो। इस तरह करनेसे जो झाग आवें, उन्हें दूसरे बर्तनमें रखते जाओ। जब झाग आना बन्द हो जाय, तब दूध किसीको दे दो या फेंक दो। ये झाग ही बड़े कामके हैं। इनको ही "दुग्धफेन" कहते हैं। इनमें ज़रा-सी मिश्री मिलाकर, उस जीर्णज्वरी या अतिसार रोगीको दो,—जिसे तोले दो तोले अन्न भी न पचता हो। ये दूधके फेन त्रिदोषनाशक, रोचक और भूख बढ़ानेवाले हैं। "दुग्धफेन" बहुत ही हलका पथ्य है।



लंघन-विचार

हमारे शास्त्रोंमें लंघनकी बड़ी तारीफ की गई है। ज्वरनाश करने में तो इसे सर्वोत्तम ही माना है। वास्तवमें लंघन है भी ऐसा ही। शरीरके विकारों और रोगोंके नाश करनेमें इसका सानी और नहीं। लंघनसे शरीर और मन दोनों की शुद्धि होती है। जो शारीरिक और मानसिक रोग अच्छी-से-अच्छी दवाओंसे आराम नहीं होते, वे केवल लंघनोंसे आराम हो जाते हैं। शरीरकी वेढंगी मुटाई नाश करनेमें लंघन सर्वोत्तम है।

जो विद्वान हैं, वे तो जानते ही हैं कि "लंघन" शब्दका अर्थ क्या है, लंघनसे कौन-कौन रोग नाश होते हैं, लंघन किसको कराना चाहिये और किसे नहीं, लंघनोंसे क्या लाभ और क्या हानि होती है, लंघन किस रीतिसे कराने चाहियें; परन्तु अधकचरे वैद्य, जिन्होंने शास्त्र नहीं देखे, इन बातोंका मर्म बिना समझे ही, ज्वर रोगमें सभी रोगियों को, चाहे लंघनकी जरूरत हो या न हो, चाहे लंघनसे हानि होनेकी ही सम्भावना क्यों न हो, लंघनकी आज्ञा दे देते हैं। इसका बड़ा बुरा परिणाम होता है। अनेक रोगियोंके रोग बढ़ जाते हैं और अनेक रोगी कुटुम्बियोंको रुलाकर परम धामको सिधार जाते हैं। संसारमें जितने पदार्थ या कर्म अच्छे हैं, उनमें दोप भी मौजूद हैं। भोजन अमृत है, क्योंकि इससे प्राणोंकी रक्षा होती है, किन्तु वही अधिक या नियम-विरुद्ध सेवन करनेसे मनुष्यको मार डालता है। स्त्री आनन्दके बढ़ानेवाली, सुखके देनेवाली, कुलका नाम रखनेवाली, विपद्में सच्चे मित्रकी भाँति सहायता देनेवाली है; पर उसके भी अधिक सेवनसे बहुत-सी शारीरिक, आर्थिक, और नैतिक हानियाँ होती हैं। बहुत ही स्त्री-सेवन करनेवालोंको क्षय-रोग हो जाता है, जिससे वे असमयमें ही कालके गालके समा जाते हैं। मीठा भोजन सबसे अच्छा भोजन है,

परन्तु अधिक मीठा खानेसे कृमिरोग प्रभृति अनेक रोग हो जाते हैं। जल प्राणियोंका जीवन हैं, जलके विना मनुष्य शीघ्र ही चोलेको छोड़ देता है; पर वह भी बेक़ायदे और अधिक सेवन करनेसे मनुष्यको मार डालता है। शराब थकान दूर करने और चित्तको प्रसन्न रखनेके लिये परमोत्तम पदार्थ है; पर वह भी बेक़ायदे पीनेसे भयङ्कर रोग पैदा कर देती है। मुर्गेका मांस ताक़त लानेमें सबसे बढ़कर है; पर वही निहायत कमज़ोरको एकदम खिला देनेसे मार देता है। शहद कफपित्त-नाशक पदार्थोंमें सर्वोत्तम है और अनेक रोगोंका नाश करता है; पर गरम करके लेने या घीके साथ बराबर लेनेसे विष हो जाता है। कसरत शरीरको मजबूत करनेवाले उपायोंमें राजा है; पर वह भी बेक़ायदे की जाती है, तो अनेक प्रकारके रोग पैदा कर देती है। दूध जीर्णज्वरवालोंके लिये अमृत है; पर नवीन ज्वर-रोगीके लिये विष है। दूध और मांस बलवर्द्धक पदार्थोंमें सर्वश्रेष्ठ हैं; पर वे भी एक साथ खानेसे कोढ़ आदि भयानक रोग पैदा करते हैं। स्नान थकान नाश करनेवालों और चित्त प्रसन्न करनेवालोंमें परमोत्तम हैं; पर वही ज्वरवाले और ज्वरमुक्तको मार देता है। उपवास या लंघन ज्वर प्रभृति अनेक रोगोंके नाश करनेमें सर्वोत्तम उपाय हैं; पर नियमविरुद्ध या विना विवेक-विचारसे कराये जानेपर मनुष्यके प्राण ही नाश कर देता है। संसारमें जितने कर्म और पदार्थ हैं, सभीमें कुछ न कुछ नुक्स या दोष भी हैं। जितने अच्छे-अच्छे वचन हैं, उनके साथ उनके खण्डन भी हैं। बुद्धिमानको नियम और छूट, वाक्य और खण्डन दोनोंपर ध्यान देना चाहिये। दोनों पर ध्यान रखनेसे ही सफलता मिलती है। शास्त्रोंमें यदि लंघन करानेकी आज्ञा है, तो मनाही भी है; क्योंकि लंघन लाभदायक भी है और हानिकारक भी है।

लंघन किसे कहते हैं ?

"चरक" में लिखा है:—

यत्किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लङ्घनं स्मृतम्।

जिससे शरीर हलका हो या जो शरीरको हलका करे, उसे "लङ्घन" कहते हैं।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

शरीर लाघवकरं यद्द्रव्यं कर्म वा पुनः।
तं लंघनं इति ज्ञेयं बृंहणं तु पृथग्विधम्॥

जिस द्रव्य या जिस कर्मसे शरीर हलका हो, वही लङ्घन है; यानी जिस औषधि या कामसे शरीर हलका हो, उसे "लङ्घन" कहते हैं। बृंहण इसके विपरीत है।

"हारीत-संहिता" में लिखा है:—

अनशन वमन विरेचन रक्तस्रुति तप्ततोयपानैः।
स्वेदनकर्मसहितैः षड्विधं लंघनं गदितम्॥

न खाना, वमन करना, जुलाब लेना, खून निकलवाना, गरम-गरम पानी पीना और पसीने निकालना—ये छहों लङ्घन कहलाते हैं।

"चरक" ने कहा है—वमन, विरेचन, निरूहवस्ति, शिरोविरेचन, प्यास रोकना, हवा खाना, धूप खाना, पाचन, उपवास (न खाना) और परिश्रम ये लङ्घन हैं।

जो चीज़ लघु, उष्ण, रुक्ष प्रभृति गुणवाली हो, उसे भी "लङ्घन" कहते हैं। यहाँ लङ्घनका अर्थ उपवास ही है; क्योंकि सुश्रुतने कहा है, कि जिस द्रव्य या कर्मसे शरीर हलका हो वही लङ्घन है; वमन, विरेचन, निरूहवस्ति और शिरोविरेचन—इनको यहाँ लङ्घनके अर्थमें नहीं लेना चाहिये। यद्यपि ये चारों भी शरीरको शुद्ध और हलका करते हैं, किन्तु इनका उपयोग ज्वरकी ख़ास-ख़ास अवस्थाओं में ऐसी ही जरूरत आ पड़नेसे किया जाता है। सभी ज्वरोंमें वमन-विरेचन आदि नहीं कराये जाते।

"सुश्रुत" में साफ लिखा है:—

अव्यक्त रूपेषु हितमेकांतेनापतर्पणम् ।
आमाशयस्थे दोषे तु सोत्क्लेशे वमनं परम् ॥
आनद्धस्तिमितदोषैर्यावतं कालमातुरः ।
कुर्यादनशनं तावत्ततः संसर्गमाचरेत् ॥
क्रमेण बलिने देयं वमनं श्लैष्मिके ज्वरे ।
पित्तप्राये विरेकस्तु कार्यः प्रश्लिथिलाशये ॥
सरुजे निलजे काय सोदावर्ते निरूहणम् ।
कटीपृष्ठ ग्रहार्तस्य दीप्ताग्नेरनुवासनम् ॥
शिरोगौरवशूलघ्नमिन्द्रिय प्रतिबोधनम् ।
कफाभिपन्ने शिरसिकार्यं मूर्द्धविरेचनम् ॥

ज्वरका रूप प्रकट होते ही वेखटके लङ्घन कराने चाहियें; अगर आमाशयमें उत्क्लेश सहित दोष हों, तो वमन करानी चाहिये। जब तक दोष पच न जायँ, रोगीकी हालत न सुधर जाय, शरीर हलका न हो, तब तक लङ्घन कराने चाहियें; इसके बाद अन्न देना चाहिये। इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि लङ्घन शब्दसे यहाँ उपवास करानेसे मतलब है। पका हुआ दोष शरीरमें रह जानेसे भयङ्कर रोग पैदा करता है, उसका निकाल देना ही हितकर है। इसलिए कहा है, अगर बलवान रोगीके कफ़ज्वर हो और रोगीका कोठा कड़ा हो, दो दस्त करा देना चाहिये। अगर वायुसे ज्वर हो और उसमें वेदना या उदावर्त हो, तो निरूहण वस्ति करनी चाहिये। अगर कमर और पीठ जकड़ रहे हों, तो अनुवासन वस्ति करनी चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो तो सिरका दर्द और भारीपन मिटानेको इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाली कोई नस्य देकर सिरका मलग़म निकाल देना चाहिये। इस वचनसे स्पष्ट मालूम होता है, कि ज्वरकी विशेष हालतोंमें, जब कि पका हुआ मल

कोठेमें रुक जाय, थोड़े दिनके ज्वर-रोगीको भी, वमन-विरेचन प्रभृति करानेकी आज्ञा दी है। इसलिए चारों प्रकारकी वमन-विरेचन आदि संशुद्धियोंको यहाँ लंघन न समझना चाहिये।

ज्वर-रोगीको थोड़ा-थोड़ा जल देना चाहिये; रोकनेकी ज़रूरत नहीं; बहुत पीना भी ख़राब है। ज्वरकी विशेष अवस्थाओंमें प्यास रोकनी होती है।

अब रहा हवा खाना—ज्वरमें हवा सभी आचार्यों ने बुरी कही है। हाँ, ज्वरकी अवस्था विशेषमें, वायु-सेवन अच्छा है; सभी ज्वरोंमें नहीं। यही बात धूपके सम्बन्धमें भी है।

परिश्रम करना तो ज्वरमें क़तई मना है। सुश्रुतने तो यहाँ तक कहा है, कि रोगीको उसके पलंग पर ही खानेको देना चाहिये और हाथके सहारेसे उठाकर पास ही मल-मूत्र त्याग कराना चाहिये। ज्वरमें परिश्रम करनेसे अनेक उपद्रव खड़े हो जाते हैं।

गरम पानी ज्वरमें अच्छा है, इससे ज्वरमें बड़ा लाभ होता है। शीतल जल ज्वरको बढ़ाता है; किन्तु गरम करके शीतल किया हुआ जल ज्वरको घटाता है।

यदि लंघन करनेसे, गरम जल देनेसे और यवागू पीनेसे दोष न पचे; तो मुँहकी विरसता, प्यास, अरुचि और ज्वरनाशक तथा हृदयको हितकारी पाचन-रूपी क्वाथ पिलाना चाहिये। ज्वरके आरम्भमें लंघन यानी उपवास ही कराना चाहिये।

फ़स्द खुलवाकर या सींगी प्रभृतिसे खून निकाला जाता है, इससे शरीर हलका हो जाता है; पर यह काम भी सभी ज्वरोंमें नहीं किया जाता—ज्वरकी विशेष अवस्थाओंमें किया जाता है। जैसे—रक्तगत-ज्वरमें खून निकलवानेकी आज्ञा है।

अब यह बात खूब साफ हो गई कि, लंघनके अनेक अर्थ होने या लंघन कई प्रकारके होने पर भी ज्वरमें लंघनका मतलब उपवाससे ही है। अब यह विचारना चाहिये कि, लंघनसे लाभ क्या होता है अथवा लंघन क्यों कराया जाता है।

लंघन क्यों कराया जाता है ?

भट्टीकी आग हवाके झोंकेसे जब बाहर आने लगती है, तब उसके ऊपर रक्खी हुई कड़ाहीकी चीज़ एकदम पकती ही नहीं या अच्छी तरह नहीं पकती; मनुष्य-शरीरमें भी भट्टीकी आगकी तरह आग जलती है। उसकी गरमी जब दोषोंके कुपित होनेके कारण बाहर निकल जाती है, तब वह आहारको नहीं पचाती अथवा हलका अन्न खाया जाता है, तो धीरे-धीरे पचाती है। वह अग्नि दब जाती है या मन्दी हो जाती है। उस अग्निको तेज़ करनेके लिये ही लंघन-चिकित्सा की जाती है।

"चरक" में लिखा है—जीवकी नाभि और छाती—इन दोनोंके बीचमें आमाशय है। आमाशयमें ही चर्व्य, चोष्य, पेय और लेह्य, चारों प्रकारके आहारोंका परिपाक होता है। खाये हुए भोजनका पाक होनेपर रस और रससे खून बनता है। यह धमनियोंके द्वारा शरीरके भिन्न-भिन्न आशयोंमें पहुँचता है। इसी आमाशयसे ज्वरकी उत्पत्ति होती है।

"चरक और वाग्भट्ट" दोनोंमें ही लिखा है—दूषित हुए वातादि दोष आमाशयमें स्थित होकर—ठहरकर, जठराग्निको ढककर, उसके साथ मिलकर शरीरके छेदोंको ढककर, ज्वरको उत्पन्न करते हैं। आम दोषके कारणसे ज्वर होता है, इसलिये उस आम दोषको पचानेके लिये, जठराग्निको दीपन करनेके लिये और शरीरके छेदोंको खोलनेके लिए ज्वरमें लंघन कराते हैं।

लंघनसे लाभ

"वङ्गसेन" में लिखा है:—

लंघनेन क्षयं नीते दोषे, संधुक्षितेऽनले ।
विज्वरत्वं लघुत्वं च क्षुच्चैवास्योपजायते ॥

लंघन करनेसे वात आदि दोषोंका क्षय होकर, जठराग्नि दीप्त होती है तथा ज्वरकी हीनता और लघुता होती है एवं भूख लगती है।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

अनवस्थित दोषाग्नेर्लङ्घनं दोषपाचनम् ॥
ज्वरघ्नं दीपनं कांक्षारुचि लाघवकारकम् ।

जिस मनुष्यके दोष और अग्नि ठीक नहीं होते, उसको यदि लंघन कराया जाता है, तो उसके दोष पच जाते हैं। लंघन ज्वर नाश करनेवाला, अग्निदीपक, कांक्षा और रुचि तथा हलकापन करनेवाला है।

तात्पर्य यह कि, लंघन करनेसे बढ़े हुए दोष क्षीण हो जाते हैं, जठराग्नि दीपन होती है; इसलिए ज्वर नाश हो जाता है, शरीर हलका हो जाता है और भूख लगती है।

शास्त्रों में लिखा है:—

आहारं पचति शिखी दोषानाहारवर्जितः ।
पचति दोषक्षये धातून् प्राणान्धातुक्षयेऽपि च ॥

शरीरकी अग्नि खाये हुए आहारको पचाती है। आहार न होनेसे वात, पित्त और कफको पचाती है, दोषोंके क्षय होनेपर धातुओंको पचाती है और धातुओंका क्षय होनेपर प्राणोंको पचाती है; यानी प्राण-नाश कर देती है।

इस एक वाक्यमें रोग-नाशक तत्त्व भरा हुआ है। इसे हम रोग नाश करनेका महामन्त्र कह सकते हैं। जब मनुष्यको ज्वर आता है, तब अक्सर भूख बन्द हो जाती है। वह भूख बन्द होना—अग्निका इस बातका इशारा है कि, मेरे ऊपर इतना बोझ पड़ा हुआ है कि मैं दबी जाती हूँ, जब तक मैं इस बोझेकी सफ़ाइ न कर चुकूं, मेरे ऊपर और बोझ मत डालना। अगर बीमार इस इशारे को समझ लेता है और तदनुसार काम करता है, तो अग्नि कई दिनमें रोगके कारण दूषित मलको जला डालती है। जब वह उसको जला डालती है, तब

और ईंधन माँगती है और उसी समय मनुष्यको सच्ची भूख लगती है।

इस तरह भी समझिये:—प्रकृतिके हुक्मसे अग्नि शरीरके यन्त्रों को चलाती है, शरीरका पालन करती है और यन्त्रोंको साफ रखती है। जब उसको शरीरमें शरीर-नाशक कूड़ा-करकट दिखाई देता है, तब वह भूख बन्द कर देती है; यानी वह इशारतन कहती है,—तुम्हारी मूर्खतासे घरमें बहुत-सा रोगीला मैला जमा हो गया है। पहले मैं इसे साफ करूँगी। जब तक मेरा इशारा न हो, मेरे ऊपर और बोझा मत डालना। उस समय यदि मनुष्य खाना बन्द कर देता है, लंघन करता है; तो पचानेको आहार न होनेसे, फुरसतमें वह उस मैलेको जलाती है; क्योंकि उसका स्वभाव ही कुछ न कुछ जलाना है। जब वह रोगकी जड़ मैलेको जलाकर भस्म कर देती है, तब फिर भूख लगती है। यह उसका इस बातका इशारा है कि, मैं मैलेको जला चुकी, अब मेरे लिए हलका ईंधन दो; क्योंकि मुझे उस मैलेके जलानेमें बड़ा जोर लगाना पड़ा है और मैं थकी हुई हूँ।

इस सबका मतलब यह है, कि जब तक अग्निको आहार मिलता है; वह आहारको पचाती है। जब शरीरमें रोग हो जाता है, तब वह आहार पचाना पसन्द नहीं करती। पहले शरीरके दूषित अंशों—रोगके बीजोंको जलाती है। जब इनको जला चुकती है, तब आहार रूपी ईंधन माँगती है। अगर समय पर वह नहीं पहुँचता तो धातुओं को जलाती है; धातुओंके जलनेसे प्राणी मर जाता है। परमात्माने कैसे-कैसे प्रबन्ध किये हैं! हमारे शरीरके भीतर ही हमारे रोगोंको नाश करनेवाला वैद्य बैठा दिया है। अगर हम अपने शारीरिक वैद्यकी बात सुनें, उसकी इच्छाके विरुद्ध न चलें, रोग होते ही खाना छोड़ दें यानी उपवास करें, तो शीघ्र ही ज्वरसे छुटकारा पा जायँ। उपवासका आरम्भ आहार त्यागनेसे और अन्त सच्ची भूखसे होता है। भूखों मरनेका आरम्भ सच्ची भूखसे और अन्त प्राणनाशसे होता है। मतलब यह है, कि उपवाससे कोई मर नहीं सकता, वरन् फायदा ही उठा

सकता है; बशर्ते कि मनुष्य ठीक रीतिसे काम करे। कह चुके हैं कि, अग्नि पहले शरीरके खराब अंशों—दोषोंको पचाती है। जब वे नहीं रहते, तब भूख लगती है। उस समय यदि मनुष्य हलका भोजन करता है, तब तो कोई हानि नहीं होती; किन्तु यदि रोगीको उस समय भोजन नहीं दिया जाता, तो अग्नि शरीरके रक्तमांस प्रभृति धातुओंको पचाने लगती है। उनके भी शेष हो जानेपर प्राणनाश कर देती है; इसलिए उपवास तभी तक करना चाहिये, जब तक शरीरके दूषित अंश न खत्म हों। दूषित अंशोंका खात्मा होते ही भूख लगती है, तब अवश्य खाना चाहिये; पर बहुत हलका भोजन करना चाहिये; क्योंकि उस वक्त अग्नि कमजोर रहती है। अगर लंघन करनेके बाद, कोई बहुत भारी पदार्थ खा लेगा, तो वह निश्चय ही फिर बीमार हो जायगा और मर भी जायगा। पाश्चात्य विद्वानोंका मत है, कि लंघनके बाद जल्दी पचनेवाला पथ्य देना चाहिये। जो लोग दूध पचा सकें उन्हें दूध देना चाहिये; जिन्हें दूध भी न पचे, उन्हें फलोंका रस देना चाहिये। हमारे यहाँ ऐसे मौक़ेपर यवागू, पेया अथवा मण्ड वग़ैर:की व्यवस्था है और ज्वरमें यही ठीक भी हैं, क्योंकि नवीन ज्वरमें दूध देना मना है।

क्या सभी ज्वर-रोगियोंको लंघन कराने चाहियें ?

उपवास सभी रोगियोंको न कराना चाहिये। जिनकी सामर्थ्य घट गई हो, जिनमें हाड़मांसका ढेर रह गया हो, उन्हें भूलकर भी उपवास—लंघन न कराने चाहियें। क्योंकि यद्यपि लंघन से आरोग्य लाभ होता है और रोगका नाश होता है, तो भी आरम्भमें शक्तिका ह्रास ही होता है। शक्ति या बलका घटना बुरा है। "रोग रहे न रोगी," ऐसा काम करना महामूर्खता है।

"बंगसेन" में लिखा है:—

बलाविरोधेनाऽथैन लंघनेनोपपादयेत्।
बलाधिष्ठानं आरोग्यं यदर्थोहि क्रियाक्रमः॥

वैद्यको लङ्घन इस तरह कराने चाहियें, जिससे रोगीका बल न घटे; क्योंकि बलके अधीन ही आरोग्यता है और उस आरोग्यताके लिये ही इतने काम किये जाते हैं। जिनमें लङ्घन सहने योग्य बल हो, उन्हींको लङ्घन कराने चाहियें। पुराने ज्वरवालों और क्षयरोगवालोंमें बल नहीं रहता, उनका रक्तमांस सूख जाता है, कफक्षय हो जाता है और वायुका कोप हो जाता है; इसलिये ऐसोंको लङ्घन कराना मारना है। पाश्चात्य विद्वान् भी लिखते हैं, जिन लोगोंकी जीवनीशक्ति क्षीण हो गई हो, उनको लङ्घन नहीं कराने चाहियें।

लंघन निषेध

लोग भूल न करें, इसलिए हमारे महर्षियोंने लङ्घनके अयोग्य रोगियोंका खुलासा कर दिया है।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

तद्विमारुत तृष्णा क्षुन्मुखशोष भ्रमान्वितैः।
न कार्यं गुर्विणी बालवृद्ध दुर्बल भीरुभिः॥
न क्षयाध्व श्रमक्रोध काम शोषचिरज्वरी॥

वातज्वरवाले, प्यासवाले, भूखे, मुँह सूखनेके रोगवाले, भ्रमरोगी, गर्भवती स्त्री, बालक, बूढ़े, बलहीन यानी कमज़ोर, डरे हुए, धातुक्षय-वाले, क्षयरोगी, बहुत रास्ता चलनेसे थके हुए, मिहनत करके थके हुए, क्रोधी, कामपीड़ित, शोषरोगी और बहुत दिनोंके ज्वरवाले—इनको लङ्घन नहीं कराने चाहियें।

नोट—"चरक" में लिखा है, वातज, परिश्रमसे हुए, पुराने और क्षयसे हुए ज्वर और तपेदिक़में लंघन हितकारी नहीं हैं। इन ज्वरोंमें शमन औषधियोंसे इलाज करना चाहिये।

"हारीत" कहते हैं,—वेलाज्वर, भूतज्वर, श्रमज्वर, क्रोधज्वर, भयज्वर और कामज्वरमें लंघन कराना मना है। बालक, बूढ़े, दुबले, क्षीण, अतिसार-रोगी, घाव रोगी, गर्भवती और नाजुक—इनको भी लंघन मना है।

वातज्वर रोगीका वायु आमरहित हो, तो लंघन नहीं कराने चाहियें; किन्तु यदि वायु आमसहित हो, तो अवश्य लंघन कराने चाहियें; क्योंकि वातज्वरमें आम* के पचानेके लिए लंघन कराये जाते हैं।

फ़र्क इतना ही है कि, जिस तरह कफमें आमके पक जानेपर भी लङ्घन कराये जाते हैं, उसी तरह वातमें आमके पक जाने पर लङ्घन नहीं कराये जाते। इसकी वजह यह है कि, कफ और पित्त तो पतले होनेके कारण बहुतसे लङ्घनोंको सह सकते हैं; किन्तु वायु तो आमके पच जानेपर क्षण-भर भी लङ्घन नहीं सह सकता।

भ्रम और मुखशोषमें भी, जो आमसे रहित होते हैं, तो लङ्घन नहीं कराते; किन्तु यदि आम सहित होते हैं, तो अवश्य लङ्घन कराते हैं।‡

इसी तरह गर्भवती, बालक ÷ और बूढ़े वग़ैरः को भी अगर

---

* आहारका साररूप रस जब अग्निकी मन्दतासे नहीं पचता, तब उसे ही "आम" कहते हैं; अर्थात् कच्चे रसको आम कहते हैं। कोई अन्नके कच्चे रसको "आम" कहते हैं, कोई मल समूहको "आम" कहते हैं, कोई दोषोंकी पहली दुष्टताको "आम" कहते हैं और कोई अपक्व—कच्चा, मलसे अलग रहनेवाला, बदबूदार, बहुत चिकना और सब शरीरको पीड़ित करनेवाला जो पदार्थ है, उसे "आम" कहते हैं। उस आमसे मिले हुए दोष और दूष्य तथा उन दोष और दूष्योंसे पैदा हुए रोगको "साम" कहते हैं।

‡ आम दोषसे ही ज्वर होता है। उपवास करनेसे आम नष्ट होता है, इसीसे ज्वरमें उपवास कराते हैं। लेकिन वातज्वर में उपवास सहन नहीं होता, इससे चिकित्सामें विरोध होता है। वातज्वरमें लंघन घटता नहीं और ज्वरकी आम अवस्थामें लंघन कराना ज़रूरी है। इस विरोधके कारण, वातज्वरमें "वत्सनाभ विष" काम में लाया जाता है, क्योंकि वह आमदोषनाशक और वातनाशक है। वत्सनाभ विष देनेसे वातज्वर सुखसाध्य होता है।

÷ पाश्चात्य विद्वान कहते हैं कि, लंघनसे बालकको जितना लाभ होता है, उतना बड़ेको नहीं होता। दूधपीनेवाले बच्चेसे १५ साल तकके बच्चेको उपवास बहुत ही हितकर है। ऐसे बालकोंकी छोटी बीमारियाँ केवल उपवाससे ही निर्मूल हो जाती हैं। बालकोंको दवा देना अच्छा नहीं। बालकमें एक ऐसी शक्ति है, जिससे वह अपना रोग आप नाश कर सकता है। दूधपीनेवाले बच्चोंको जो रोग होते हैं, वे माता-पिताके दोषसे होते हैं।

आमसे रहित होते हैं, तो लङ्घन नहीं कराते; किन्तु यदि आम-सहित होते हैं तो अवश्य लंघन कराते हैं।

सूचना—जिन लोगोंको लङ्घन कराना मना है, उन लोगोंकी चिकित्सा करते समय, विशेष करके, इस बातकी परीक्षा कर लिया करें कि, दोष साम—आम-सहित हैं, या निराम—आम-रहित हैं। साम, निराम, वायु, पित्त और कफके लक्षण नीचे फुट नोटमें लिखे हैं।*

लंघनसे रोगोत्पत्ति

लंघनके रोगनाशक होने पर भी, नियम-विरुद्ध लंघन कराने या जिनको लंघन कराना मना है, उनको लंघन करानेसे अथवा उचितसे अधिक लंघन करानेसे उल्टा रोग पैदा होता है। "चरक" में लिखा है कि, लंघनसे देहकी अग्नि वल, वर्ण, ओज, शुक्र, मांस और बल, इनका क्षय होता है। ज्वर, खांसीका अनुबन्ध, पसलीका दर्द, अरुचि, सुननेकी शक्तिका कम होना, उन्माद, प्रलाप—वृथा बकना, हृदयमें

* साम वायुके लक्षण—साम वायु मलको रोकती है, अग्निको मन्द करती है, तन्द्रा और आलस्य करती है, आँतोंमें आवाज़ करती है; क्रमसे वेदना, सूजन, तोड़नेकी-सी पीड़ा करती है और कुपित हुई साम वायु एक ही समय आम सहित सारे अंगोंमें विचरती है और सब अंगोंको पकड़कर पीड़ित करती है तथा घी तेल प्रभृति चिकने पदार्थोंसे, वर्षाकाल, सूर्योदय और रातके समय बढ़ती है।

निराम वायुके लक्षण—निराम वायु स्वच्छ, रूखी, दुर्गन्धरहित और बहुत थोड़ी पीड़ा करनेवाली होती है। अपनेसे विपरीत गुणोंवाले पदार्थोंसे, विशेषकर तेल घी प्रभृति चिकने पदार्थोंसे, शान्त होती है।

सामपित्तके लक्षण—साम पित्त खट्टा, बदबूदार, हरा, भारी, कण्ठ और हृदयमें खटाईकी तरह दाह करनेवाला श्यामता-युक्त और स्थिर होता है।

निरामपित्तके लक्षण—निराम पित्त लाल, बहुत गर्म, चरपरा, दस्तावर, बदबूदार, रुचिकारक, जठराग्नि और बलको बढ़ानेवाला होता है।

सामकफके लक्षण—सामकफ मैला, रेशेदार, गाढ़ा, कण्ठको पकड़नेवाला, बदबूदार तथा भूख और प्यासका नाश करनेवाला होता है।

निरामकफके लक्षण—निरामकफ बदबूदार, झागोंदार, खंडित, गाँठदार, पांडुरंगका और मुखकी विरसताको नष्ट करनेवाला होता है।

दर्द, मल-मूत्रकी रुकावट, जाँघ, उरु और त्रिकस्थानमें शूल, पाँडु, हड्डी और शरीरके जोड़ोंमें फूटनी और उर्ध्ववात—ये सब तथा और भी वातरोग लंघन करनेसे होते हैं।

अति लंघनके दोष

उचितसे अधिक लंघन करनेसे फूटनी, शरीर टूटना, खाँसी, मुंहका सूखना, भूखका न लगना, प्यास लगना, आँखों और कानोंका कमजोर होना यानी कम दीखना और कम सुनाई देना, बारम्बार डकार आना, मनका व्याकुल होना, सदैव उर्ध्ववात, हृदयका मोह, शरीर और अग्निके बलका नाश—ये सब दोष होते हैं।

हीन लंघनके लक्षण

कफ वमनकी तरह निकलनेको तैयार हो, बारम्बार उबाकियाँ आवें, रोगी बारम्बार कफ थूके, कफसे कण्ठ जकड़ा हो और तन्द्रा हो; यानी आँखें मिची जाती हों—ये सब हीन लंघनके लक्षण हैं। इन लक्षणोंसे समझना चाहिये कि, अभी लंघन ठीक नहीं हुए, कसर है।

उत्तम लङ्घनकी पहचान

अधोवायु और मलमूत्रका अच्छी तरहसे निकलना, शरीरमें हलकापन, हृदय, डकार, कण्ठ और मुँहका शुद्ध होना, तन्द्रा और ग्लानिका नाश, पसीने आना, रुचि होना, भूख-प्यासका एक साथ लगना, अन्त:करणमें किसी तरहकी तकलीफ न होना,—ये लक्षण उत्तम लंघनोंके हैं। ये लक्षण हों या दो एक लक्षण कम भी हों या सारे लक्षण एक साथ हों; तो समझ लो कि लंघन ठीक हुए। ये लक्षण उस समय होते हैं, जब अग्नि शरीरके ख़राब अंशों—रोगके कारणों—को पचा डालती है।

लङ्घन-कालमें कष्ट

ज्योंही लंघन आरम्भ कराये जाते हैं, रोगीको बड़ा कष्ट मालूम होता है—नींद नहीं आती, रोगी तड़फड़ाया करता है। इन बातोंसे

घबराना न चाहिये। हमारे शरीर की रक्षक अग्नि तथा शरीरके अन्याय अङ्गोंको—दूषित दोषों, रोगके बीजों अथवा रोगसे बड़ा भारी युद्ध करना पड़ता है, इसलिये गड़बड़ी फैल जाती है और रोगीके कष्ट बढ़ने लगते हैं। इन कष्टोंको देखकर यह समझना चाहिये कि, रोग नाश हो रहा है। ज्यों-ज्यों विकार नाश होते जाते हैं, रोगीकी दशा भी सुधरती जाती है। उस समय जो बदबूदार पसीना निकलता है, वह शरीरके विकार निकालनेका चिह्न है। होठों और जीभपर छाले-से भी हो जाते हैं। जिनका पित्त कुपित होता है, उन्हें बड़ी तकलीफें होती हैं, उबाकियाँ आती हैं, और क़य भी हो जाती हैं। ये सब सुलक्षण हैं, इनको विकारोंका बाहर निकलना समझना चाहिये। जितना ही विकार ज़ियादा होता है, उतना ही कष्ट अधिक होता है। ऐसी हालत होनेपर, रोगीको तसल्ली देनी चाहिये।

लङ्घनसे शरीरमें एक प्रकारका खिंचाव-सा होता है और रक्तसंचार कम होता है; इससे पैर शीतल हो जाते हैं। उस समय पैरोंको खूब गरम कपड़ेसे ढके रखना चाहिये। बोतलमें गरम जल भरकर, उसपर कपड़ा लपेटकर, पैरोंपर फेरना चहिये। इससे पैरोंमें गरमाई आकर फौरन नींद आ जाती है। नींद आनेके उपाय हम आगे और भी लिखेंगे। ज़रूरत होनेसे, उनसे भी काम ले सकते हो। लङ्घन या उपवासकी हालतमें नींद न आवे, तो कोई हानि नहीं; क्योंकि उपवासकी दशामें शारीरिक शक्तियोंको कोई काम नहीं करना पड़ता।

लङ्घन करानेके नियम

सभी आचार्योंने ज्वर आते ही, ज्वरके शुरूमें लंघन करानेकी सलाह दी है। इसमें कहीं मतभेद नहीं है। यह व्यवस्था है भी सर्वोत्तम। ज्वर आते ही अगर रोगीका खाना बन्द कर दिया जाय, तो जठराग्नि ख़राब मल या दोषोंको पचाने लगती है। उससे जब ज्वर हलका हो जाय, शरीरका भार कम हो जाय; तभी पाचन, संशमन

औषधि और अन्न देना चाहिये। पर आजकल देखते हैं, कुछ वैद्य तो लंघनोंकी भरमार कर देते हैं और कुछ ज्वर आते ही ज्वरको शान्त करनेवाली औषधियाँ देते हैं। जो काम उन्हें जीर्णज्वर या क्षयज्वर प्रभृतिमें करना चाहिये, उसीको वे नवीन ज्वरमें करते हैं। जीर्णज्वर, क्षयज्वर, परिश्रमजन्यज्वर आदि ज्वरोंमें लंघन न कराकर पहले संशमन औषधि देनेकी रीति है, किन्तु नये बुख़ारमें तो सभी प्राचीन वैद्य लंघन करानेकी व्यवस्था कर गये हैं। इस बेक़ायदे कामसे अव्वल तो बुख़ार बिगड़ जाता है; यदि पीछा भी छोड़ देता है, तो आगे चलकर फिर-फिरकर आता है और मनुष्यको निकम्मा कर देता है। पाश्चात्य विद्वानोंका कहना है कि, दवासे इलाज करानेवालोंके रोग दवा छोड़ते ही फिर आ जाते हैं; किन्तु उपवाससे जो रोग आराम हो जाते हैं, फ़िर कभी नहीं आते। पहलेके वैद्य उपवास प्रभृति कराकर बाक़ायदे चिकित्सा किया करते थे और आजकलकी तरह रोगी भी चट रोटी पट दाल नहीं चाहते थे। पहलेके रोगी वैद्यराजपर विश्वास रखते थे और धैर्यसे काम लेते थे। आजकल तो यह हाल है कि, यदि आज किसीने दवा दी और आज ही ज्वर कम न पड़ा; तो शामको ही डाक्टर साहब बुला लिये जाते हैं। वे आते ही दवा दे ही देते हैं। यदि ज्वर उतर गया तब तो खैर, नहीं तो दूसरे दिन फिर और डाक्टर बुलाये जाते हैं। इस तरह सप्ताहके सप्ताह घुला देते हैं; पर ज़िससे उनका सदाको भला हो, वह काम पसन्द नहीं करते। रोगियों का यह हाल देखकर, विद्वान् वैद्य भी, अपनी रोज़ी मारे जानेके भय से, बेक़ायदे इलाज करने लग गये हैं। अनेक वैद्य तो नामको आयुर्वेदीय चिकित्सा करते हैं, अङ्गरेजी दवाइयाँ ला-लाकर रोगियोंको देते हैं। एक ही रोगमें देशी-विदेशीकी खिचड़ी बना देते हैं। संकर क्रिया का भी विचार नहीं करते। इसीसे आजकल रोगी और डाक्टरोंकी भरमार हो रही है। लोग सदा ही किसी न किसी रोग में गिरफ्तार रहते हैं।

"चरक" के विमान स्थानमें लिखा है,—"आमदोष होनेसे पहले रोगीको लंघन कराना चाहिये, जिससे बीमारीके पहलेका किया हुआ आहार पच जाय। इसके बाद जब अन्न देनेका समय हो, उस वक्त भी अगर वैद्य देखे कि, आमाशय दोषोंसे लिप्त है, कोठा आर्द्र और भारी है तथा रोगीकी इच्छा खानेकी नहीं है, अन्नपर अरुचि है, तो समझ ले कि, अभी दोष बाक़ी हैं। उस हालतमें शेष दोषोंके पचानेके लिये और अग्नि दीप्त करनेके लिए कोई अग्नि दीपन करनेवाली दवा दे; पर अजीर्ण रहनेपर, पहलेके दोष न पकनेपर, पाचन-औषधि न दे। क्योंकि आमदोषसे ढकी हुई जठराग्नि औषधि और आहारसे पैदा हुए आम—इन दोनोंको एक ही समयमें पचा नहीं सकती। अगर कोई ऐसा करता है, बिना पहलेके आहारके पचे या आमदोष के पचे पाचन प्रभृति देता है; तो आम, आहार और औषधि तीनोंका गोला-सा बँध जाता है। उससे भयङ्कर मन्दाग्नि रोग हो जाता है और कमजोर रोगी मर जाता है।" पाठको! अब तो आप लंघन कराने और न करानेके लाभ-हानिको अच्छी तरह समझ गये होंगे। हमेशा याद रक्खो! जठराग्नि जितना पचा सके, उससे उतना ही पचवाओ, उसपर अधिक भार मत डालो; नहीं तो वह बिल्कुल क्षीण या मन्दी हो जायगी और उसके मन्दी होनेसे आपका सारा सुख और जीवन नाश हो जायगा। जब ज्वर आ जाय और कोई ऐसा ही रोग हो जाय; तब जठराग्निको भगवान्के विधान-अनुसार, पहले रोगके कारण आम—आहारके कच्चे रस अथवा रोगके बीजको पचाने दो। जब वह उसे पचा ले, तब उसे और काम सौंपें।

अनेक बार देखते हैं, बुद्धिमान् लोग ज्वर आनेके आसार देखते ही उपवास करने लगते हैं। मामूली ज्वर या थोड़ेसे दोष उपवाससे ही नाश हो जाते हैं। उन्हें दवा खानेकी ज़रूरत ही नहीं होती। बहुत से रोगोंमें, ख़ासकर बुखारमें, उपवास करानेसे चिकित्सामें सहजमें ही सफलता मिल जाती है। "चरक" में लिखा है, थोड़े दोषवालेको लंघन

कराना ही उचित है। हवा और धूपसे जिस तरह थोड़ा-सा पानी सूख जाता है; उसी तरह लंघन करनेसे, जठराग्नि और वायुकी वृद्धि होकर थोड़ेसे दोष भी सूख जाते हैं। जिस तरह सूरजकी धूप, वायु और धूल—इन तीनोंसे मध्यम (न बहुत न कम) जल सूख जाता है; उसी तरह लंघन द्वारा बढ़ी हुई अग्नि और वायु तथा पाचनसे मध्यम (न कम न जियादा) दोष सूख जाते हैं। मतलब यह है कि नीचे दर्जे के और बीचके दर्जेके दोष तो केवल लंघन-उपवाससे ही, बिना किसी दवाके, नाश हो जाते हैं। दोषोंसे ही ज्वर होता है; जब लंघनसे दोष नाश हो जाते हैं, तब ज्वर कहाँसे रहेगा ? इसलिये ऐसा समझनेमें कोई दोष नहीं, कि लंघनसे हलका और लंघन तथा पाचनसे बीचके दर्जे का ज्वर ही नाश हो जाता है। अगर ज्वरके आरम्भसे ही नियमानुसार लङ्घन और पाचनकी व्यवस्था की जाय, तो दोष बढ़ें ही क्यों ? इस-लिए शास्त्रोंमें लिखा है,—"दोषेऽल्पे लङ्घनं पथ्यं, मध्ये लङ्घनपाचनम्।" दोष अल्प हों तो लंघन कराना चाहिये; मध्यम हों तो लङ्घन कराना और पाचन देना चाहिये। थोड़े दोषोंमें अकेला लङ्घन ही काम कर लेगा; यानी थोड़े दोषोंको अकेला उपवास ही मार लेगा। अगर दोष जियादा हों न कम हों, बीचके हों, तो वहाँ उपवास और उसका भाई पाचन—दोनों फ़तह हासिल कर लेंगे, क्योंकि पाचन भी तो लङ्घन ही है। इस तरह दोषोंके अत्यन्त बढ़नेकी नौबत ही न आवेगी। अगर पहले ही, यानी ज्वर आते ही लङ्घन वगैरःकी ठीक व्यवस्था न होनेसे दोष अत्यन्त बढ़ गये हों, तो उस दशा में शोधन यानी वमन विरेचन से काम लेना चाहिये; क्योंकि एक साथ ही तो दोष बढ़ नहीं जाते, कुछ समय अवश्य लगता है। उस अवस्थामें दोषोंका पक जाना भी सम्भव है। पके हुए दोष कोठेमें ठहरकर भयानक व्याधियाँ करते हैं। इसलिये यदि दोष पककर कोठेमें ठहर गये हों, बुखार बहुत दिनोंका न हो तो भी, उन दोषोंको वमन-विरेचनादिसे निकाल देना ही बुद्धि-मानी है। अगर वे न निकाले जायँगे, तो विषम-ज्वर प्रभृति रोग पैदा

करेंगे। अत्यन्त बढ़े हुए दोषोंको लङ्घन क़ाबूमें नहीं कर सकते; दूसरे लंघनोंमें देर लगेगी; देर होनेसे अनर्थ होनेका भय है; इसीसे वमन विरेचन आदि क्रियाकी आज्ञा दी गई है।

इस मौक़ेपर शोधन,—वमन, विरेचन, निरूहण वस्ति तथा शिरो-विरेचनमें भी बुद्धिसे काम लेनेकी ज़रूरत है। अगर रोगी ताक़तवर हो और ज्वर कफसे हुआ हो, तो वमन कराकर दोष निकालने चाहियें। अगर पित्तप्रधान ज्वर हो, कोठा कड़ा हो, तो जुलाब देना चाहिये। अगर वेदना-सहित वातज्वर हो, यानी वातज्वर उदावर्तयुक्त हो, तो निरूहण वस्ति—गुदाकी पिचकारी—द्वारा मल निकाल देना चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो, कफके मारे सिरमें दर्द और भारीपन हो, तो शिरोविरेचन—सिरका जुलाब—देना चाहिये, अर्थात् ऐसी नस्य या सूंघनी देनी चाहिये, जिससे सिरका कफ निकलकर सिर हलका हो जाय। इस संशोधन कर्ममें बुद्धिसानीकी बात यही है कि, रोगीका बलाबल देखना चाहिये। बलाबलके अनुसार ही हलका या बीचका जुलाब या वमन करानेवाली दवा देनी चाहिये। कमजोर रोगीको वमन-विरेचन मार देते हैं। कफसे हुए ज्वरमें जुलाब नहीं देना चाहिये और पित्तज्वरमें वमन नहीं करानी चाहिये। दोष और बलके अनुसार काम करना चाहिये।

लङ्घनादिका क्रम

ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्येतु पाचनं।
ज्वरान्ते भेषजं दद्याज्ज्वरमुक्ते विरेचनम्॥—*आत्रेय*
तरुणं तु ज्वरं पूर्वं लंघनेन क्षयं नयेत्।
आआम दोषं लिंगात् वा लंघयेत्तं यथाविधि॥—चक्रदत्त

ज्वरके आदिमें लंघन करना चाहिये, ज्वरके मध्यमें पाचन देना चाहिये, ज्वरके अन्तमें औषधि देनी चाहिये और ज्वरमुक्त होनेपर जुलाब देना चाहिये। चक्रदत्त महोदय कहते हैं,—"नवीन ज्वरको पहले

लंघनोंसे क्षय करना चाहिये। यदि आम—कच्चे दोषके लक्षण नज़र आवें अथवा साफ़ नज़र न आवें, तो यथाविधि काम करना चाहिये।"

अगर दोष अल्प हो तो लंघन कराना चाहिये, दोष मध्यम हो तो लंघन कराना चाहिये और पाचन भी देना चाहिये, अगर दोष अत्यन्त बढ़े हों, तो वमन विरेचन आदिसे शोधन करना चाहिये, क्योंकि वमन बिरेचन आदिसे दोष जड़से नष्ट हो जाते हैं।

वायु सात दिन लंघन करनेसे पचता है, पित्त दश दिन लंघन करनेसे और कफ बारह दिन लंघन करनेसे पचता है।

लंघन करने लायक़ ज्वररोगीको, दोषानुसार, तीन रात, एक रात और एक दिन-रात लंघन कराना चाहिये। वायु-रहित स्थानमें रखकर, पसीने निकालकर या बफारा देकर, लंघन कराकर और गरम जल पिलाकर आमज्वर❀ को क्षीण करके, पीछे औषधि सेवन करानी चाहिये।

लंघन करनेसे जिसके दोष नष्ट हो जायँ, उसके बाक़ी रहे हुए दोषों को पचानेके लिये और अग्नि दीपन करनेके लिये "यवागू" पिलानी चाहिये अथवा शालि या साँठी चाँवल और मूँगका यूष देना चाहिये।

नोट—जिनको यवागू अहित है, उनको यवागू न देनी चाहिये। इसी तरह यूष वग़ैरः भी दोषानुसार विचार कर देने उचित हैं।

❀ हृदयमें उचेद सी हो, तन्द्रा हो, मुँहसे लार गिरे, अरुचि हो, दोषोंकी स्थिरता, आलस्य, क़ब्ज़ ये सब हों, पेशाब ज़ियादा आता हो, पेट भारी हो यानी अफारा हो, पसीना न आता हो, पाख़ाना ठीक पक्कर न आता हो, बेचैनी हो, चमकनींद हो, शरीर जकड़ा हुआ और भारी हो, थोड़ी ग्लानि हो, ज्वरका वेग निश्चल और बलवान हो, इन लक्षणोंसे बुद्धिमानको जान लेना चाहिये कि 'आमज्वर' है। आमज्वरकी अवस्थामें दवा और अन्न न देने चाहियें। आमज्वरमें लंघन कराना ही हित है।

विरामज्वर—भूख थोड़ी लगे, शरीरमें हलकापन हो, श्रमसे शिथिलता हो, भ्रम और ज्वरका वेग—इनसे रोगी पीड़ित हो, शरीरके भीतर दाह हो, लाल पेशाब होता हो—अगर ये लक्षण हों तो समझो कि ज्वर उतरनेवाला है। ये विराम ज्वरके लक्षण हैं।

अगर रोगीने लङ्घन मध्यम किये हों, तो पञ्चकोल (पीपल,पीपला-मूल, चव्य, चीता और सोंठ) की यवागू बनाकर पिलानी चाहिये। लङ्घनकी दशामें यवागू या मूंग वगैर:का यूष देना अच्छा है।

जिस रोगीने अत्यन्त लङ्घन किये हों, उसको दाख, अनार, खजूर, चिरौंजी और फालसेसे तृप्त करना चाहिए। ये फल अत्यन्त हितकारक हैं। जो रोगी तर्पण कराने योग्य हों उनको, ज्वरकी शान्ति के लिए, तर्पण अवश्य कराना चाहिये।

जब तक दोष निश्चल रहें—जब तक रोगी दोषोंसे व्याप्त रहे, तब तक लङ्घन कराने चाहियें; पीछे औषधि और अन्नादिका संसर्ग कराना चाहिये; अर्थात् लघु पथ्य देना चाहिये।

लङ्घन इस तरह कराने चाहियें, जिससे बलका नाश न हो; क्योंकि आरोग्यता बलके अधीन है और आरोग्यताके लिए ही चिकित्सा की जाती है। अन्धाधुन्ध लङ्घन कराना अच्छा नहीं; यानी जो लङ्घन योग्य न हो उसे लङ्घन न कराने चाहियें।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

कृशंचैवाल्पदोषंच शमनीयैरुपाचरेत्।
उपवासैर्बलस्थं तु ज्वरे संतर्पणोत्थिते॥

अगर रोगी कमजोर या दुबला हो और उसके दोष भी कम हों, तो उसे शमनीय यत्नोंसे ही आराम करना चाहिये—यानी लङ्घन न कराकर रोगनाशक दवा देनी चाहिये। अगर रोगी बलवान हो तथा अति तर्पणसे ज्वर हुआ हो, तो उसका ज्वर लङ्घनोंसे ही शान्त करना चाहिए—यहाँ तक लिखा है। फिर भी,आमज्वर हो तो दो-तीन लङ्घन कराते हुए, यवागू देते रहने या मूंगका यूष देते रहनेसे भय नहीं है। और भी लिखा है,—अगर रोगीकी अग्नि मन्द हो, साथ ही प्यास हो, तो पतली यवागू देनी चाहिये। अगर रोगीको प्यास, दाह, वमन और गरमी बहुत हो और रोगी शराब पीता हो, तो

लाजातर्पण देना चाहिये। इसके पच जानेपर यूष-रस और भात देना चाहिये।

नवीन-ज्वरमें उपवास, स्वेदन क्रिया--बफारा प्रभृति देकर पसीने निकालना, समय, यवागू और कड़वे रस—ये सब विना पके—कच्चे दोषोंको निकालते हैं। इससे साफ जाहिर है कि, ज्वरमें लङ्घन करते हुए भी यवागू प्रभृति पथ्य देना उचित है।

जो ज्वर आमसंसृष्ट, कफजन्य और कफपित्तज हों; यानी जो बुखार, कफ या कफपित्तसे पैदा हुए हों और आमसंसृष्ट हों, उन्हींमें लङ्घन कराना चाहिये।

ज्वरमें लंघन कराते समय भी रोगीका जल बन्द न करना चाहिये, क्योंकि जल बिना मनुष्य मर जाता है। हाँ, ऐसे बहुत मौक़े हैं, जहाँ जल कम पीना चाहिये;पर एकदम मनाही किसी हालतमें भी नहीं है।

उपवास जितने ज़ियादा दिनोंका हो, उसपर भोजनके समय, भोजन उसी परिमाणसे हलका और कम देना चाहिये। उपवाससे दुर्बल रोगीको भारी भोजन मार डालता है। हमारे यहाँ जो यवागू अथवा यूष वगैरःकी आज्ञा है, वह उत्तम है। यवागू और यूष बहुत हलके और ज्वरनाशक हैं। उपवास या लंघन रोगोंको शरीरसे निकालने की सर्वोत्तम क्रिया है; इसलिए उपवास-कालमें मनको बिगाड़ना न चाहिये। ज्वर और लंघनके कष्टोंसे घबराना न चाहिये। ज्योंही दोष पच जायँ, शरीर हलका हो जाय, भूख लगने लगे—अच्छा फल हुआ समझना चाहिये। दोष पच चुकने पर, फालतू उपवास न कराने चाहियें। इस बातको हमेशा याद रखना चाहिये कि उपवासका आरम्भ भोजन त्यागनेसे और अन्त वास्तविक भूखसे होता है। जब तक खूब भूख न लगे, खानेको न देना चाहिये: क्योंकि दोषोंका नाश हुए बिना भूख नहीं लगती। कहा है:—

नहि दोषक्षये कश्चित् सहेत लंघनादिकम्।

दोषके क्षय होनेपर कोई लंघन आदिका नहीं सह सकता। इससे स्पष्ट है कि, भूखका लगना दोष-क्षय होनेकी निशानी है। जब तक भूख न लगे, हवा न खुले, दोषोंका जोर हो, तभी तक लंघन कराना उचित है। लंघनकी हालतमें भी, बल-रक्षाके लिये यवागू प्रभृति देने की हमारे आयुर्वेदमें आज्ञा है।

ज्वरमें कम-से-कम पहले तीन दिन तो उपवास करना ही जरूरी है। उन तीन दिनोंमें किसी तरहके काढ़े का जल या दवा हरगिज न देनी चाहिये। कहा है:—

ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लंघनं च दिनत्रयम्।
न देयं क्वथितं वारि भैषज्यं न च दापयेत् ॥

ज्वरके आरम्भमें ही कोई दवा देना ज्वरको बिगाड़ना है। रोगीके भूखा-भूखा चिल्लानेपर खयाल करना चाहिये; कि दोष पक तो नहीं गये। अनेक बार दोष अपने समयसे पहले भी पक जाते हैं। पित्तज्वर का दोष शीघ्र ही पक जाता है। कभी-कभी वातकफज्वर भी समयसे पहले पक जाता है। "हारीत" ने तो पित्तज्वरमें लंघन कराना भी मना किया है। मतलब यह है, भूख लगनेपर रोगीको हलका भोजन देना चाहिये, क्योंकि भूख लगनेपर भोजन न मिलनेसे जठराग्नि रोगीके शरीरकी धातुओंको जलावेगी, इससे रोगी कमजोर होकर मर जा सकता है।

इसीसे "धन्वन्तरिजी" कहते हैं:—

ये गुणा लंघने प्रोक्तास्ते गुणा लघु भोजने।

जो गुण लंघनमें हैं, वे ही गुण हलके भोजनमें हैं।

इसीसे "वङ्गसेन" में लिखा है:—

ज्वरितं ज्वरमुक्तं वा भोजयेल्लघु भोजनम्।
श्लेष्मक्षये प्रवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा।
वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥

ज्वरितो हितमश्नीयाद्यद्यप्यस्याऽरुचिर्भवेत् ।
अन्नकाले ह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा ॥

जिसे ज्वर आता हो अथवा जिसका ज्वर छूट गया हो, उसे अवश्य हलका भोजन देना चाहिये; क्योंकि कफके क्षय होनेसे गरमी बढ़ती है और जठराग्नि तेज हो जाती है। उस अवस्थामें दोष वेगको प्राप्त होकर ज्वरके वेगको बढ़ाते हैं। इस वास्ते ज्वररोगीको यदि अरुचि भी हो, खानेकी इच्छा न हो, तो भी हितकारी पदार्थ खिलाने चाहियें; क्योंकि अन्नके समय, भोजन न करनेसे ज्वररोगी क्षीण हो जाता है या मर जाता है और क्षीण रोगी असाध्य हो जाता है, इसलिए बलकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये।

और भी कहा है:—

सर्वज्वरेषु सप्ताहं मात्रयाद भोजनंहितम् ।
अन्नकाले ह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा ॥

सभी ज्वरोंमें सात दिन तक बहुत हलका भोजन देना चाहियें, क्योंकि भूखके समय भोजन न मिलनेसे रोगी कमजोर हो जाता है या मर जाता है। इसलिये हलका पथ्य देनेमें हर्ज नहीं; क्योंकि हलका भोजन और लंघन दोनों बराबर हैं।

सबका मतलब यही है, कि ज्वरके आरम्भमें लंघन अवश्य कराने चाहियें। कम और ज़ियादा कराना दोषोंके पकनेपर मुनहसिर है। ज़रूरत होनेसे, समय देखकर, हलका भोजन अवश्य देना चाहिये, क्योंकि रोगीके बलकी रक्षा परमावश्यक है।

"हारीत-संहिता" में तो साफ़ ही कहा है—

लंघिते चैव दोषे च यवागूपानमाचरेत् ।
शालिषष्टिमुद्गजं च यूषं शस्तं वदन्ति हि ॥

लङ्घन करता हुआ रोगी; दोषकी हालतमें भी; यवागू पीता रहे। शालि चाँवल, साँठी चाँवल और मूंगका यूप लंघनमें श्रेष्ठ है।

ज्वरमें जल

पहले लिख आये हैं कि, ज्वरके समय लङ्घनोंमें भी जल देना मना नहीं है; क्योंकि प्यासके मारे बेहोशी होती है और बेहोशीसे प्राणनाश हो जाते हैं। प्यास बड़ी भयङ्कर है, प्यासेका प्राणनाश करनेवाली है; इसलिये प्यासेको प्राणधारक जल अवश्य पिलाना चाहिये। ज्वररोगी को जल अवश्य पिलाना चाहिये, पर थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिये और जल्दी-जल्दी बहुत-बहुतसा न पिलाना चाहिये।

कहा है:—

जीविनां जीवनं जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम्।
अतोऽत्यन्त निषेधेन न क्वचिद्वारि वारयेत् ॥

जल जीवोंका जीवन है; सब जगत जलमय है; इसलिए किसी अवस्थामें भी जलकी अत्यन्त मनाही नहीं है। हाँ, अनेक अवस्थाओंमें जल थोड़ा-थोड़ा पीना चाहिये। अब यह सवाल उठता है कि, थोड़ा-थोड़ा जल किन-किन हालतोंमें पीना चाहिये ?

रोग जिनमें थोड़ा जल पीना चाहिये

"सुश्रुत" में कहा है:—

ज्वरे नेत्रामये कुष्ठे मन्देऽग्नावुदरे तथा।
अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥

ज्वर, नेत्ररोग, कोढ़, मन्दाग्नि, उदर-रोग, अरुचि, प्रतिश्याय—जुकाम, प्रसेक (मुँहमें जल भर-भर आना), सूजन, क्षय, व्रण (घाव) और मधुमेह—इन रोगोंमें थोड़ा-थोड़ा जल पीना चाहिये।

"हारीत" कहते हैं,—"सूतिका नारी और रक्तस्रावलेको भी पानी कम पीना चाहिये।" आप कहते हैं—"परिश्रमसे थककर बहुत पानी पीनेसे गुल्म और शूल रोग होता है। भोजन पचनेपर पिया

हुआ पानी जठराग्नि नाश करता है। अजीर्णमें पानी पीना दवा है। भोजनके बीचका और पीछेसे (कुछ देर बाद खूब प्यास लगनेपर) पिया हुआ पानी गुण करता है। रास्ता चलकर थका हुआ, भूखा, शोकग्रस्त, गुस्सेसे भरा हुआ, रोगसे पीड़ित और विषम आसन पर बैठा हुआ मनुष्य जल पीता है, तो रोग होता है। तबियत खुश होने पर भी थोड़ा जल पीना चाहिये। भोजनके आदिमें पिया जल मन्दाग्नि करता है, भोजनके बीचमें पिया अमृत है और भोजनके अन्तमें पिया जल कष्टसे पचता है तथा मुटापा करता है और आमाशयसे ऊपर कफ पैदा करता है।"

ज्वर प्रभृतिमें अधिक जल पीनेसे हानि

अतियोगेन सलिलं तृष्यतोऽपि प्रयोजितम्।
प्रयाति श्लेष्मपित्तत्वं ज्वरितस्य विशेषतः॥

प्यासा आदमी अगर जरूरतसे जियादा जल पीता है, तो वह जल कफपित्त हो जाता है। अगर ज्वररोगी अधिक जल पीता है, तो वह विशेषकर, कफपित्त हो जाता है।

नवीन ज्वरमें शीतल जल निषेध

नये ज्वरमें शीतल जलकी मनाही इसी कारणसे है कि, नये ज्वर में शीतल जल पीनेसे ज्वर बढ़ जाता है; इसलिये नवीन ज्वरमें कच्चा शीतल जल न पीना चाहिये—औटाकर और शीतल करके पीना चाहिये। कच्चे शीतल जलसे ज्वर बढ़ता है, किन्तु गरम करके शीतल किये हुए जलसे ज्वर घटता है।

"चरक" में लिखा है,—ज्वर आमाशय से पैदा होता है। पाचन, वमन और लङ्घनादि कर्म आमाशयसे होनेवाले प्रायः सभी रोगोंको शान्त करते हैं। ज्वर आमदोषसे होता है; इसीलिए आमके पचानेको गरम जल दिया जाता है। ज्वररोगी अगर गरम जल पीता है, तो वह गरम जल वायुको अनुलोम करता है, अग्निको दीपन करता है, जल्दी

पचता है, कफको सुखाता है और बड़ी खूबी यह है कि, थोड़ा-सा जल पीनेसे ही प्यास शान्त हो जाती है। परन्तु गरम जल, उत्तम होनेपर भी, कुछ रोगोंमें बड़ा नुक़सान करता है; इसलिये जिन रोगोंमें शीतल जल न पीना चाहिये, गरम पीना चाहिये, उनमें गरम जल ही पीना चाहिये। जिन रोगोंमें शीतल जलसे लाभ हो और गरमसे हानि हो, उनमें शीतल जल ही पीना चाहिये।

रोग जिनमें शीतल जल न पीना चाहिये

(गरम जल पीने योग्य रोगी)

नवज्वरे प्रतिश्याये पार्श्वशूले गलग्रहे।
सद्यः शुद्धौ तथाध्माने व्याधौ वातकफोद्भवे ॥
अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास कासेषु विद्रधौ।
हिक्कायां स्नेहपानेच शीतं वारि विवर्जयेत् ॥

नया बुखार, जुकाम, पसलियोंका दर्द, गलेका पड़ जाना, तत्काल वमन-विरेचन ले चुकते ही, अफारा वात और कफके रोग, अरुचि, संग्रहणी, वायुगोला, श्वास, खाँसी, विद्रधि और हिचकी,—इन रोगोंमें तथा स्नेहपान करनेवालेको कच्चा शीतल जल न पीना चाहिये। इन रोगोंमें औटाकर शीतल किया हुआ जल पीना चाहिये। "हारीत" अजीर्णमें भी शीतल जलको बुरा कहते हैं।

नोट—"चरक" में लिखा है,—"अत्यन्त पित्तकोपके दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसारयुक्त ज्वरोंमें गरम जल न देना चाहिये। इनमें गरम जल देनेसे दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसार अत्यन्त बढ़ जाते हैं। इसके विपरीत शीतल क्रियासे शान्त होते हैं।" याद रखना चाहिये, प्रलाप दो तरहका होता है—(१) वातकफका, (२) पित्तका। वातकफके प्रलापमें रोगीको होश नहीं रहता, वह बेहोशीमें बकता है; किन्तु पित्तके प्रलापमें रोगीको सब ज्ञान रहता है। पित्तके प्रलापमें ही गरम जल मना है।

रोग जिनमें शीतल जल पीना चाहिये

मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषेरक्ते मदात्यये ।
भ्रमश्रमपरीतेषु तमकेश्वयथौ तथा ॥
धूमोद्गारे विदग्धेऽन्ने शोषे च मुखकण्ठयोः ।
उद्र्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतलाम्बु प्रशस्यते ॥

"सुश्रुत" में लिखा है,—मूर्च्छा, पित्त, गरमी, दाह, विष, खूनके , मदात्यय रोग, भ्रम, श्रम, तमकश्वास, सूजन, धुएँकी डकार, भोजनकी विदग्ध अवस्था, मुखशोष, कण्ठशोष, और उर्द्धगत रक्तपित्त इनमें शीतल जल (बिना औटाया-कच्चा) कच्चा ही हितकारक है। "हारीत" रक्तप्रमेहमें भी गरम जलको बुरा कहते हैं। "चरक" अत्यन्त पित्त-कोपयुक्त दाह, भ्रम, प्रलाप (पित्तका प्रलाप) और अतिसारयुक्त ज्वरमें गरम पानीको हानिकर कहते हैं।

नोट—ज्वर सहित दाहादिक रोगोंमें गरम करके शीतल किया हुआ जल पीना चाहिये; किन्तु ज्वर रहित—अकेले दाहादिक रोगोंमें बिना औटाया कच्चा जल ही पीना हितकर है।

रोग जिनमें औटाकर शीतल किया जल पीना चाहिये

दाहातिसारपित्तास्रमूर्च्छामद्य विषार्तिषु ।
मूत्रकृच्छ्रे पाण्डुरोगे तृष्णाच्छर्दि श्रमेषुच ॥
मद्यपान समुद्भूते रोगे पित्तोत्थिते तथा ।
सन्निपातसमुत्थेषु शृतशीतं प्रशस्यते ॥

ाह, अतिसार, पित्त, रुधिर-विकार, मूर्च्छा, मद्यपानसे हुआ रोग, विषसे पैदा हुआ रोग, मूत्रकृच्छ्र, पीलिया, प्यास रोग, वमन, श्रम, शराब पीनेसे हुए रोग, पित्तसे हुए रोग, सन्निपातसे हुए रोग— इन रोगोंमें औटाया हुआ जल शीतल करके देना चाहिये।

जल औटानेकी विधि

जो जल औटाते-औटाते धीरे-धीरे झागरहित और निर्मल हो जाय, उसको औटा हुआ जल कहते हैं। औटाते समय जलपर ढकना न देना चाहिये। औटाये हुए जलको फिर न औटाना चाहिये। औटाया हुआ जल फिर औटानेसे विषके समान हो जाता है।

नोट—इसी तरह काढ़ा भी शीतल होनेपर, फिर औटानेसे विषके समान हो जाता है। कहा है :—

शृतशीतं पुनस्तप्तं तोयं विषसमं भवेत्।
निर्य्यूहोऽपि तथा शीतः पुनस्तप्तो विषोपमः॥

औटाये हुये जलके गुण और पीनेकी विधि

"सुश्रुत" में लिखा है,—"वातकफज्वरवाले मनुष्यको, प्यासके समय, औटाया हुआ जल अत्यन्त हितकारी है। ऐसा जल अग्निको दीपन करनेवाला, कफको छेदन करनेवाला, वातपित्तको अनुकूल करनेवाला, दोष और शरीरके स्रोतोंको नर्म करनेवाला है। शीतल जलमें इसके विपरीत गुण होते हैं।"

औटाकर शीतल किये जलके भेद

जो जल औटानेके बाद ढक दिया जाय और अपने-आप शीतल हो जाय, वह त्रिदोषनाशक, रूखा नहीं, सर्दी न करनेवाला, हलका, कृमि, प्यास और ज्वरनाशक है।

जो जल औटाकर धारा द्वारा शीतल किया जाता है, वह विष्टम्भ-कारक होता है।

जो जल हवा करके शीतल किया जाता है अथवा जिसे खूब बाहरी हवा लग जाती है, वह बड़ी मुश्किलसे पचता है।

औटाया हुआ बासी जल ख़राब

रातका औटाया हुआ जल दिनमें भारी हो जाता है और दिनका औटाया हुआ रातमें भारी हो जाता है, इसलिए रोगीको ऐसा जल न देना चाहिये। ऐसा जल त्रिदोषकारक, भारी, खट्टा पाक करनेवाला और विष्टम्भकारी होता है। बासी जल सभी रोगोंमें अपथ्य या ख़राब है।

रातमें गरम जल

रातमें सेरका आध पाव, सेरका एक पाव, सेरका आधा सेर अथवा योंही औटाये हुए जलको "उष्णोदक" कहते हैं। रातमें गरम जल पीनेसे कफ, वात, आम और मेद नष्ट होते हैं, अग्नि दीपन होती है, वस्तिका शोधन होता है तथा श्वास, खाँसी और ज्वर नष्ट होते हैं।

जल पचनेकी अवधि

कच्चा जल एक पहरमें पचता है, औटाकर शीतल किया हुआ जल चार घड़ी या डेढ़ घण्टेमें पचता है और औटाया हुआ किसी क़दर गरम जल दो घड़ी या पौन घण्टेमें पचता है।

ऋतुभेदसे जल लेना

हेमन्त और शिशिरमें तालाबका जल हितकारी है। वसन्त और गरमीमें कुएँ, बावड़ी और झरनेका जल लेना चाहिये; वसन्त और गरमीमें नदीका जल न लेना चाहिये। वर्षामें ज़मीनके भीतरसे निकला, कुएँका और मेहका जल लेना चाहिये। शरद् ऋतुमें नदीका जल या अंशूदक जल लेना चाहिये। जिस जलपर दिनमें सूरजकी और रातमें चन्द्रमाकी किरणें पड़ती हों, वही "अंशूदक" है। यह जल त्रिदोषनाशक, ताक़तवर, निर्दोष, शीतल, रसायन, हलका और अमृत के समान है।

उष्णोदकके गुण

जो जल औटाते-औटाते धीरे-धीरे झागरहित निर्मल—साफ हो जाय और आधा रह जाय, उसको "उष्णोदक" कहते हैं। यह उष्ण जल ज्वर, खाँसी, कफ, श्वास, वात, पित्त, आम और मेदको नष्ट करता है। "उष्णोदक" पाचक और पथ्य है।

आरोग्योदकके गुण

जो जल औटाते-औटाते सेरका पाव रह जाय, उसे "आरोग्योदक" कहते हैं। यह सदैव पथ्य है। यह कफ, श्वास और खाँसीको नाश करता है तथा मलरोधक, अग्निदीपक, पाचक, हलका, अफारा, पाण्डु, शूल, बवासीर, वायुगोला, सूजन और उदर रोग नाशक है।

ऋतुभेदसे जल

गरमी और शरद् ऋतुमें सेरका पाव जल पीना चाहिये। कोई आचार्य गरमीमें सेरका आधा सेर और शरद्में सेरका तीन पाव जल पीनेकी सलाह देते हैं।

हेमन्त, शिशिर, वर्षा और वसन्तमें सेरका आध सेर जल पीना चाहिये। कोई कहते हैं, वर्षामें सेरका आधा पाव रखना चाहिये। कोई कहते हैं,—वर्षामें सेरका आठवाँ भाग रहा जल पीना चाहिये। कोई कहते हैं, शरद्में सेरका छठा, शिशिरमें पाँचवाँ, वसन्तमें तीसरा और गरमीमें आधा भाग रहा जल पीना चाहिये।

इस तरह गरम जलके सम्बन्धमें बहुत मतभेद हैं। दोषोंकी उग्रता और हीनताके अनुसार जलकी कल्पना करनी चाहिये।

गरम जल सेरका तीन पाव—पित्तनाशक है।

„ „ आध सेर—वातनाशक है।

„ „ एक पाव—कफनाशक, मलरोधक और दीपक है।

औषधियोंका पानी

कुछ रोगोंमें औषधियोंके साथ पकाया हुआ अथवा पानीको गरम करके उसमें दवा डालकर बनाया हुआ पानी बहुत हित होता है। इसलिये वैसी अवस्था में वैसा ही पानी देना चाहिये।

मद्यविकार, पित्तदोष और विष-पीड़ित मनुष्योंके लिए कड़वे द्रव्यों—दवाओंके द्वारा जलको औटाकर और शीतल करके पिलाना चाहिये। ऐसे रोगियों को ऐसा ही पानी हितकर है।

तृषादि नाशक जल

"सुश्रुत"में लिखा है,—"नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, धनिया, खस और लालचन्दन,—इन छै दवाओंको एक जगह कच्ची ही कूटकर, जलमें डालकर, ऋतुके अनुसार, पकाओ। पीछे शीतल करके उपरोक्त मद्यविकार, पित्तविकार और विष-विकार-रोगियोंको दो। यह जल प्यास, दाह और ज्वरको शमन करता है।" चरक में भी लिखा है,—"सब तरहके ज्वरोंमें, विशेषकर पित्तसे और मद्यपानसे हुए ज्वरमें प्यास और ज्वर शान्त करने के लिये, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ,—इनको डालकर पकाया हुआ पानी देना चाहिये।"

नोट—"सुश्रुत"में धनिया लिखा है और "चरक"में सोंठ लिखी है, इतना ही भेद है। "सुश्रुत"ने अपने नुसखेको मद्यविकार, पित्तविकार और विषविकार-वालोंके लिए अच्छा कहा है; किन्तु "चरक" ने अपना नुसख़ा सभी ज्वरोंमें, विशेषकर पैत्तिक और मद्यजनित ज्वरोंमें, देनेकी सलाह दी है।

इन नुसख़ोंको बनाना हो, तो ६४ तोले जलमें एक तोला ये छहों दवाएँ डालकर औटाना चाहिये। जब आधा जल रह जाय, उतार लेना चाहिये।

षड़ङ्ग पानीय

"वंगसेन" का मत है कि, उपरोक्त नागरमोथा, पित्तपापड़ा प्रभृति छहों दवाओंको कूट लो। पीछे ऋतुके क़ायदेसे पानी औटा लो। पानी में औटते समय दवा मत डालो। पानी औट जाय, उतारकर रख लो। जब शीतल हो जाय, उस जलमेंसे १३ छटाँक जल निकाल लो। उस निकाले हुए जलमें कुटी हुई दवाओंको १ तोला लेकर, कच्ची ही डाल दो,—यही "षड़ङ्ग पानीय" है।

नोट—तृष्णादि नाशक जलकी दवाएँ औटायी जाती हैं, इसलिए वहाँ लाल चन्दन लिया जाता है; किन्तु "षड़ङ्ग पानीय" काढ़ा नहीं है; इसलिए इसमें लाल चन्दनके बजाय सफ़ेद चन्दन लेना चाहिये। याद रक्खो, लाल चन्दन प्रायः काढ़े और लेपमें लिया जाता है। षड़ङ्ग पानीयकी दवाओंको पीसकर, बारीक चूर्ण मत कर लेना, किन्तु जौकुट करना।

पित्तज्वरनाशक पान

कुँभेरके फल, चन्दन, ख़स, महुएके फूल, फालसे, सारिवा और मिश्री—इनको उधर लिखी षड़ङ्गपान की विधिसे पकाकर, आधा जल रहने पर, उतारकर, काममें लाओ। इस औटाये हुए पानीसे पित्तज्वर नाश होता है।

मुलेठी और कमल अथवा कमल और सफ़ेद चीनी—इन दोनोंमेंसे कोई-सा एक पान बनाकर देनेसे पित्तज्वर आदि रोग नाश होते हैं। बनानेकी तरक़ीब वही है।

"वंगसेन" का षड़ङ्गपान

"वंगसेन" ने लिखा है,—पित्तपापड़ा, नागरमोथा, ख़स, लाल चन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ;—इनको जलमें औटाओ, जब औट चुके, खूब शीतल करके छान लो; यह जल प्यास, दाह और ज्वरको शान्त करनेके लिये दो।

नोट—नये ज्वरमें कषाय या काढ़ा देनेकी मनाही है। उसपर "बङ्गसेन" महोदय कहते हैं, कि जब काढ़ेकी दवायें १६ गुने जलमें पकाकर, चौथाई जल

रक्खा जाय, तब उसे 'कषाय' कहते हैं। वही कषाय नये ज्वरमें मना है। षडङ्ग पानमें तो जल चौथाई रखा नहीं जाता, इसलिए नवीन ज्वरमें षडङ्ग पानका निषेध नहीं है। "बङ्गसेन" के और "चरक" के षडङ्ग पानमें कोई भेद नहीं है। दोनोंके नुसख़े एक ही हैं।

सूचना—वातकफज्वरमें अगर प्यास लगे, तो रोगीको गरम जल ही देना चाहिये। अगर पित्तका ज्वर हो या मद्यसे ज्वर हो तो भूलकर भी गरम पानी न देना चाहिये। बहुतसे वैद्य रोगीको बकते-झकते देखकर पित्तके प्रलापमें भी वायुका ज़ोर समझ लेते हैं और रोगीको गरम जल दिये जाते हैं, इससे प्रलाप बढ़ता जाता है। "ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज़ बढ़ता गया" वाली कहावत चरितार्थ होती है। प्रलाप वातकफसे भी होता है और पित्त से भी। दोनोंको पहचानकर जल या दवा की व्यवस्था करनी चाहिये। पित्तके प्रलापमें रोगीको होश रहता है, किन्तु वातकफके प्रलापमें रोगी बेहोशीमें बकता है।

"चरक" ने लिखा है, गरम जल और तिक्त औषधियोंके योगसे औटाये हुए जल—दोनों ही दीपन, पाचन, ज्वरनाशक, रुचिकारक, बलकारक, पसीना लानेवाले और मंगलकारी हैं; पर पित्तज्वरमें कड़वी दवाओंका जल देना चाहिये और वातकफात्मक ज्वरमें गरम जल देना चाहिये। गरम जल रोगीकी देह, निदान, देश और कालकी परीक्षा करके आमके पचानेको वैद्य लोग देते हैं।

ज्वरमें निद्रा

जिस तरह मनुष्यको खाने-पीनेकी ज़रूरत है; उसी तरह नींदकी भी ज़रूरत है। जिस तरह मनुष्य हवा, पानी और भोजन बिना मर जाते हैं; उसी तरह सुखनिद्रा न आनेसे भी मनुष्य मर जाते हैं। मनुष्यका सुख-दुःख, स्थूलता-कृशता, बलाबल-मर्दानगी-नामर्दी, ज्ञान और अज्ञान सब निद्राके अधीन हैं।

निद्रा तमोगुणसे उत्पन्न होती है और तमोगुण कफसे उत्पन्न होता है। मानसिक और शारीरिक परिश्रमसे भी नींद आती है। रात में नींद स्वभावसे ही आती है। किसी-किसी रोगमें बहुत नींद आती है और कितने ही रोगोंमें नींद जाती रहती है। लोकमें निद्राको "भूतधात्री" कहते हैं। कोई कोई इस तमोभवा निद्राको पाप-मूल भी कहते हैं। फालतू निद्रा रोगरूप समझी जाती है।

यद्यपि निद्रा देहयात्रा निर्वाहार्थ आहारकी तरह उपयोगी है— भूतधात्री है; तथापि कुसमयमें सोने, अधिक सोने अथवा निद्राको सर्वथा त्याग देनेसे मनुष्यके सुख और आयु रात्रिके उषाकालकी तरह शेष हो जाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह योगिजन सिद्धि लाभ करके योगकी सत्यबुद्धिको प्राप्त होते हैं, उसी तरह युक्तिपूर्वक निद्रा सेवन करनेसे देहके सुख और दीर्घायुकी प्राप्ति होती है। असमय में सोने या बहुत सोनेसे मनुष्योंको नाना प्रकारके रोग हो जाते हैं; इसलिए किस स्थलमें निद्रा हितकर है, और किस स्थल में अहितकर है, इस बातका विचार करके निद्रा सेवन करनी चाहिये।

असमयमें सोने या बहुत सोनेसे रोग

असमयमें सोने या बहुत सोनेसे मनुष्योंके हलीमक, मस्तक-शूल, स्तैमित्य, शरीरका भारीपन, शरीरमें दर्द, अग्निका नाश, हृदयमें

कफका लिपा-सा रहना, सूजन, अरुचि, उबकी, जुकाम, आधाशीशी, कोढ़, पिड़का, खुजली, तन्द्रा, खाँसी, गलेका रोग, स्मृतिनाश, बुद्धि-नाश, छेदों या स्रोतोंका रुकना, ज्वर, इन्द्रियोंकी सामर्थ्यहीनता और विषकी वृद्धि—ये सब होते हैं।

दिनमें सोना निषेध

"हारीत संहिता" में लिखा है,—दिनमें सोनेसे जुकाम होता है, जुकामसे खाँसी होती है और खाँसीसे पीनस होती है। पीनससे क्षय, क्षयसे सूजन और सूजनसे मृत्यु होती है। दिनमें सोनेसे कफकी वृद्धि होती है; इसलिए रोगीको और खासकर नवीन ज्वररोगीको दिनमें न सोना चाहिये। यों तो खास-खास अवस्थाओंको छोड़कर, दिनमें सोना सभीको मना है, क्योंकि उधर लिख आये हैं कि, असमयमें सोनेसे रोग होते हैं; इतनेपर भी निम्नलिखित व्यक्तियोंको तो दिनमें कदापि न सोना चाहिये:—

दिनमें न सोने योग्य मनुष्य

नवीन ज्वररोगी, मेदस्वी, स्नेह सेवन करनेवाला, कफप्रधान धातुवाला, कफरोगग्रस्त और दूषी विषसे पीड़ित प्राणी—इनको दिनमें हरगिज़ न सोना चाहिये। क्योंकि कहा है—"दिवास्वापं न कुर्वीत यतोऽसौ स्यात् कफावहः" अर्थात् दिनमें सोनेसे कफ बढ़ता है।

"चरक" में लिखा है:—

ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वप्नात् प्रकुप्यतः।
श्लेष्मपित्ते दिवास्वप्नस्तस्मादन्येषुनेष्यते ॥

गरमीके सिवा और मौसमोंमें दिनमें सोनेसे कफ और पित्त कुपित होते हैं, इसलिए गरमीके सिवा और ऋतुओंमें दिनमें सोना मना है।

ग्रीष्म ऋतुमें दिनमें सोनेकी आज्ञा

गरमीकी ऋतुमें प्राणियोंके शरीर उत्तरायण कालके धर्मसे रूखे हो जाते हैं तथा गरमीमें वायुका सञ्चय होता है और रात बहुत छोटी होती है, इसलिए गरमीके मौसममें दिनमें सोनेकी आज्ञा है।

ग्रीष्मकालके सिवा और ऋतुओंमें भी सोने योग्य मनुष्य

"चरक" में लिखा है, "जो गाने, पढ़ने, स्त्री-प्रसंग करने, काम करने, बोझा उठाने, रास्ता चलने और शराब पीनेसे थक गये हों, वे सदा दिनमें सो सकते हैं। अजीर्ण-रोगी, उरःक्षत-रोगी, क्षीण रोगी, बूढ़ा, बालक, दुर्बल, तृषा-रोगी, अतिसार-रोगी, शूल-रोगी, श्वास-रोगी, हिचकी-रोगी, कृश और गिरा हुआ, चोट लगा हुआ, बावला, सवारी करनेसे थका हुआ, रातके जागनेसे थका हुआ, क्रोधी, शोकार्त एवं भयातुर और दिनमें सोनेके अभ्यासी—ये सब हर मौसममें दिनमें सो सकते हैं। इन सबके दिनमें भी सोनेसे, धातु सात्म्य होने के कारण, इनकी बलवृद्धि होती है। दिनके सोनेसे पैदा हुआ कफ इनके अङ्गोंकी पुष्टि करता है। उससे इनकी आयु दृढ़ होती है।"

"भावप्रकाश" में लिखा है,—"कसरत, मिहनत, स्त्री-संग, बहुत राह चलने और हाथी-घोड़ेकी सवारी करनेसे थका हुआ, श्रमयुक्त, अतिसारवाला, शूलरोगी, श्वासवाला, वमनवाला, तृषा रोगी, हिचकी-वाला, वातरोगी, क्षीण, कफक्षीण रोगी, बालक, शराब वग़ैरः किसी तरहकी नशीली चीज़ सेवन करनेवाला, अजीर्ण रोगी, रातमें जागने-वाला और उपवास करनेवाला, ये सब दिनमें इच्छानुसार सो सकते हैं।

नोट—रातमें जागनेसे रूखापन होता है और दिनमें सोनेसे चिकनापन होता है। इसीसे रातके जागनेवालेको दिनमें सोनेकी आज्ञा है। रातके जागने

का रूखापन दिनके सोनेसे पैदा हुए चिकनेपनसे मिट जाता है; क्योंकि दिनमें सोनेसे कफ पैदा होता है। इसी तरह औरोंमें भी समझ लीजिये।

निन्द्रानाश के कारण

कार्य, काल—बुढ़ापा, रोग, अपनी प्रकृति और वायुकी प्रबलता ये सब निद्रानाशके हेतु हैं। कायविरेचन, शिरोविरेचन, वमन, भय, चिन्ता, क्रोध, धूम, परिश्रम, खून निकालना, उपवास, दुखदायी खाट, सत्वगुणकी जय और तमोगुणका क्षय—इन सब कारणोंसे, आई हुई निद्रा भी नष्ट हो जाती है।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

नावनं लंघनं चिन्ता व्यायामः शोकभीरुषः।
एभिरेव भवेन्निद्रानाशः श्लेष्मातिसंक्षयात्॥

नस्य, लंघन, चिन्ता, मिहनत, शोक, भय और क्रोधसे कफका अत्यन्त क्षय होता है और कफके क्षय होनेसे नींद नाश हो जाती है।

निद्रानाशकी चिकित्सा

नींदका आना ज़रूरी है। 'नींद न आना' बड़ा ख़राब है। नींदसे अनेक रोग नाश होते हैं, नींदसे शरीरकी पुष्टि होती है। जिस तरह भोजन बिना नहीं सर सकता; उसी तरह नींद बिना भी गुजारा नहीं; इसलिये यदि किसी कारणसे नींद न आती हो अथवा वातज्वर, धातुगत ज्वर प्रभृतिमें नींद न आती हो, तो उसका उपाय करना चाहिये।

नींद लानेके उपाय

(१) अभ्यङ्ग, उबटन, स्नान, ग्राम्य और जल-संचारी जीवोंका मांसरस, शालि अन्न, दही, दूध, स्नेह, मद्य, दिल खुश करनेवाले काम, मनोहर गन्ध, मनोहर शब्द, शरीर दबाना, नेत्र-संतर्पण, मस्तक और मुखका सन्तर्पण और लेपन, सुखदायी पलंग, घरका सुख और निद्रा का समय—ये सब द्रव्य और उपाय निद्राको लौटा लानेवाले हैं।

(२) जिनको थोड़ी नींद आती हो वे,—दूध, शराब, मांसरस, दही, तेलकी मालिश, उबटन, स्नान, सिरमें तेल लगाना, कानोंमें तेल डालना, आँखोंमें तेल भरना—इनकी आदत डालें; सुन्दरीकी बाहुलता को आलिङ्गन करें, मनमें सन्तोष और शान्ति रक्खें; चिन्ता, क्रोध और शोकको त्यागें; किसी तरहका भय न रखें; चित्तको प्रसन्न करने वाले काम करें—इनसे विषम निद्रावालोंको बड़ा सुख होता है।

(३) भुनी हुई भाँगका चूर्ण, शहदमें मिलाकर, रातके समय, खानेसे नींद आ जाती है। इस उपायसे अतिसार, संग्रहणी और अग्निक्षीणता भी नाश हो जाती है।

(४) पीपलामूलका चूर्ण गुड़में मिलाकर खानेसे बहुत दिनोंकी गइ हुई नींद भी लौट आती है। ८ माशे पीपलामूल गुड़में मिलाकर खानेसे निश्चय ही नींद आती है।

(५) काकजंघाकी जड़को सिरमें रखने या बाँधनेसे नींद आ जाती है।

(६) मकोयकी जड़को सिरमें बाँधने या सिरपर रखनेसे नींद आ जाती है। मकोयकी जड़को सूतमें बाँधकर, निरन्तर, मस्तकपर रखनेसे नष्ट हुई निद्रा भी तत्काल आ जाती है। मकोयकी जड़ और छालका काढ़ा बनाकर और उसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे भी नींद आ जाती है।

(७) मांसरसमें, सागमें, दालमें, घीमें, यूषमें और दूधमें 'प्याज' मिलाकर खानेसे तत्काल नींद आ जाती है।

(८) ईखके रससे बने हुए पदार्थ, पोईका साग, उड़द, शराब, मांस-रस, दूध, गेहूं, तिल और मछली—ये सब पदार्थ भी नींद लानेवाले हैं।

(९) बैंगनको, सन्ध्या समय, सिजोकर उसमें शहद मिलाकर खानेसे गई हुई नींद भी आ जाती है।

(१०) थूहरकी जड़को, गुड़के साथ, खानेसे अवश्य नींद आती है।

(११) रोगीके पाँवोंपर तिलीका तेल मलने अथवा काँजी या सौ बारका धोया घी प्रभृति मृदु पदार्थ मलनेसे नींद आ जाती है।

(१२) भाँगको बकरीके दूधमें पीसकर, पाँवोंपर लेप करनेसे बहुत दिनोंकी गई हुई नींद अवश्य आ जाती है।

(१३) उत्तमोत्तम स्वरोंके सुनने, नाना प्रकारके संगीत और रागोंके सुननेसे नींद आ जाती है।

(१४) कालीमिर्च और कस्तूरीको, लारमें घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे तीन दिनकी गई हुई निद्रा भी आ जाती है।

(१५) नींद न आती हो तो थोड़ी देर तक पैरोंको गरम जलमें डुबाये रखो। सिर और पैरोंपर गायका दूध मलो। अथवा अरण्डीका तेल और अलसीका तेल बराबर-बराबर लेकर काँसीकी थालीमें काँसीकी कटोरीसे घोटकर आँखोंमें आँज दो; तत्काल नींद आवेगी। (परीक्षित है)

नोट—नींद वातज्वर, जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर प्रभृति रोगोंमें भी नहीं आती। उपरोक्त नींद लानेके उपाय रोगी और अरोगी सबके लिये हैं। इसलिये ज्वरमें जो उपाय अहितकर हों, उनको छोड़कर और उपायोंसे काम लेना चाहिये। जैसे; नवीन ज्वरमें अभ्यंग, उबटन, दही, दूध प्रभृति अपथ्य हैं। यद्यपि ये निद्रा लाते हैं, पर ज्वरमें तो आफत कर देंगे। इसलिये बुद्धिमान ज्वरमें अहितकर न हो, उसी उपायसे नींद लानेकी चेष्टा करे।

ज्वरोंके पकनेकी अवधि

वातज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पचता है।

नोट—रस आम—कच्चा रहे, तो इस अवधिके भीतर ज्वर नहीं पचता, इस अवधिके बाद भी रहता है। "सुश्रुत" कहता है, बहुत दोषयुक्त तथा मन्दाग्निवालेका ज्वर सात दिनके बाद भी बना रहता है। यदि उसके दोष लंघन, गरम जल और यवागूसे न पचें, तो मुखकी विरसता, प्यास, अरुचि और ज्वर नाश करनेवाले पाचक और हृदयको हितकारी क्वाथोंसे चिकित्सा करनी चाहिये।

ज्वरकी अवस्थायें

ज्वर सात दिन तक तरुण कहलाता है और १२ दिन तक मध्यम कहलाता है और १२ दिनके बाद जीर्ण कहलाता है। कहीं-कहीं लिखा है, ६ दिनके बाद ज्वर जीर्ण हो जाता है। "जातूकर्ण" ऋषि कहते हैं,—ज्वर तेरहवें दिन जीर्ण हो जाता है। "बंगसेन" कहते हैं,—जो ज्वर १५ दिनके बाद भी शान्त न हो, मन्द वेगसे बना रहे, वही जीर्ण हो जाता है; यानी १५ दिनके बाद जीर्णज्वर हो जाता है। ज्वर सात दिन तक तरुण रहता है; इसके बाद चौदह दिन तक मध्यम रहता है और इसके बाद पुराना हो जाता है। वैद्यविनोदकर्त्ता लिखते हैं,—जो ज्वर २१ दिनके बाद शरीरमें सूक्ष्म होकर रहे तथा तिल्ली और मन्दाग्नि पैदा करे, वह जीर्णज्वर कहलाता है।

ज्वरमें औषधि देनेका समय

वातज्वरमें ६ दिन तक लंघन कराकर, सातवें दिन दवा देनी चाहिये। पित्तज्वरमें १० दिन तक लंघन कराकर, ग्यारहवें दिन दवा देनी चाहिये और कफज्वरमें १२ दिन तक लंघन कराकर, तेरहवें दिन दवा देनी चाहिये।

पहले कह चुके हैं, अगर वातज्वर रोगी साम हो, तो वैद्य सातवें दिन दवा खिलावे; अगर निराम हो तो शमनकारक ओषधियोंसे चिकित्सा करे।

"शार्ङ्गधर" भी कहते हैं, अगर वातज्वरके सब लक्षण हों, तो गिलोय, पीपरामूल और सोंठ—इन तीनोंका पाचनरूपी काथ रोगीको सातवें दिन दो।

"हारीत" कहते हैं,—६ दिन तक लंघन आदि क्रिया करो और सातवें दिन काढ़ेसे सिद्ध की हुई "पेया" पिलाओ।

"खरनाद" भी कहता है,—इस प्रकार नवीन ज्वरको नाश करने वाली विधि ६ दिन तक कही है। पीछे पाचन और शमन क्रिया ज्वरमें हितकारी है।

"वांग्भट्ट" महोदय कहते हैं,—रोगीको सातवें दिन हलका अन्न खिलाकर उसी दिनसे औषधि देनी चाहिये।

कोई कहता है,—रोगीको दशवें दिन हलका अन्न खिलाकर, उसी दिनसे दवा देनी चाहिये। कोई कहता है—अगर आम उल्वण हो, तो दवा हरगिज़ न देनी चाहिये।

"चरक" मुनि कहते हैं,—ज्वर रोगी यदि निराम हो, तो सातवें दिन हलका अन्न खिलाकर, पीछे आठवें दिन काढ़ा पिलाना चाहिए।

"सुश्रुत" कहता है—सात दिन बीतनेपर, आठवें दिन औषधि देनी चाहिए।

"चक्रदत्त" कहता है,—सात धातुओंमें प्राप्त हुआ मल सात दिनमें पचता है, इसलिये ज्वर विशेष करके आठवें दिन आमरहित होता है।

सबमें कुछ न कुछ मतभेद है, इसलिए असल मतलब यह है कि, वैद्य सातवें या आठवें दिनके भरोसे न रहे; किन्तु अवस्था, बल, अग्नि दोष, देश और कालका विचार करके दवा दे दे; यानी दोष पहले ही पच जाय, तो अवधि से पहले ही औषधि और अन्न दे दे और यदि दोष न पचे तो समय या अवधि आने पर भी न दे। "सुश्रुत" ने कहा है—थोड़े समयके पैदा हुए पित्तज्वरमें जब दोष पक जाय, तभी वैद्य दवा दे दे, दश दिन बीतने की राह न देखे। इसी तरह थोड़े दिनके पैदा हुए वातज्वर और कफज्वरमें भी सात और बारह दिनकी राह न देखनी चाहिए, जब यह दोनों दोष पक जायँ तभी दवा देनी चाहिए।

दोषोंके पकनेके लक्षण

"सुश्रुत" में लिखा है, जब ज्वर हलका हो जाय, शरीर भी हलका हो जाय; वात, कफ और मल ये अपने-अपने मार्गमें संचार करने लगें, तब समझो कि दोष पचकर आमरहित हो गये। अगर दोष पके हुए दीखें तो दवा दे दो।

कोई-कोई कहते हैं, कि दुष्ट हुए वात, पित्त और कफ,—इनके ज्वर और ज्वरके उपद्रव पैदा करनेका स्वभाव बदल जाय, तब समझ लो कि दोषोंका पाक हो गया। भूख, शरीरका हलकापन, ज्वरकी सूक्ष्मता, दोषोंका अपने-अपने मार्गमें संचारण और उत्साह, इन लक्षणोंसे जान लो कि ज्वर आमरहित हो गया।

नये ज्वरोंके इलाजमें आमज्वर—कच्चे ज्वर और पक्के ज्वरका ख़याल ज़रूर कर लेना चाहिए। कच्चे बुख़ारमें दवा देना, सोते साँप को उँगलीसे जगाना है। कच्चे ज्वरमें दवा देनेसे ज्वर बिगड़कर सन्निपात हो जाता है अथवा प्रचण्ड हो जाता है और शोधन शमन करनेसे विषमज्वर हो जाता है*। जब ज्वर हलका हो जाय, शरीर हलका हो जाय, हवा खुलने लगे, मलमूत्र होने लगें, तभी दोषोंके पाकके लक्षण देखकर दवा दे देनी चाहिये।

"वङ्गसेन" में लिखा है:—

पाययेदातुरं सामं पाचनं सप्तमेऽहनि।
शमनेनाथवा दृष्ट्वा निरामं समुपाचरेत॥

आमज्वरवालेको सातवें† दिन दवा दे दे, और यदि निराम हो तो तत्काल शमन औषधि दे दे।

ज़रूरत होनेसे ऊपरी उपचार करनेमें हर्ज नहीं। मसलन्—सिरमें दर्द हो तो लेप लगवा दो। किसी ख़ास जगह दर्द हो तो कोई वात-नाशक तेल लगवा दो। हिचकियाँ चलती हों, तो नस्य वग़ैरहसे हिचकी बन्द कर दो, इसमें हर्ज नहीं।

---

* इस बातको भी याद रखो कि, यदि दोष पक भी गया हो, परन्तु शरीरमें ही ठहर गया हो, उसे वैद्य यदि न निकाले तो वह भयानक हानि करता है, वह या तो विषम ज्वर करता है या बल नाश करता है।

† "हारीत" कहते हैं,—"आमज्वरकी अवस्था सात दिन रहती है। आमज्वरमें दवा न देनी चाहिये।"

दवा खानेके पाँच वक्त

(औषधि भक्षणके पाँच काल)

मनुष्योंके औषधि खानेके लिये पाँच समय कहे हैं:—

पहला समय—सूरज निकलते दवा लेना। वह काढ़ेका समय है।

दूसरा समय—दिनमें भोजनके समय दवा लेना।

तीसरा समय—साँझको भोजनके समय दवा लेना।

चौथा समय—बारम्बार दवा लेना।

पाँचवाँ समय—रातमें दवा लेना।

पहला समय प्रात:काल है। इस समय काढ़ा या कषाय लेना चाहिये। पित्तको विरेचन द्वारा निकालने, कफको वमन द्वारा निकालने, उसी तरह दोषोंकोको पतला करनेके लिये प्रात: समय दवा देनी चाहिये। जिस औषधिके पीनेका समय न कहा हो, उसे प्रात:कालमें पीना चाहिये।

२—दूसरा काल भोजनके समयका है। वह भी पाँच तरहका है। जैसे,—भोजनके पहले नमक और अदरख खाना, भोजनमें मिलाकर "हिंग्वाष्टक" आदि चूर्ण खाना, भोजनके बीचमें जल प्रभृति पीना, भोजनके अन्तमें लौंग या हरड़ वग़ैरह खाना, भोजनके आदि अन्तमें दवा खाना। जैसे,—अम्लपित्त रोगमें "धात्री अवलेह" भोजनके आदि और अन्तमें दिया जाता है।

अपान वायुके कुपित होने पर, भोजनसे ज़रा पहले दवा खानी चाहिये। अरुचि होनेपर अन्न अथवा और किसी रोचक चीज़में दवा मिलाकर देनी चाहिये। नाभिसे सम्बन्ध रखनेवाली समान वायुके कोप एवं अग्नि-मन्द होनेपर अग्निदीपन करनेवाली दवा भोजनके बीचमें देनी चाहिये। सर्वदेहव्यापी व्यान वायुके कुपित होनेपर, भोजनके अन्तमें दवा खिलानी चाहिये। हिचकी, आक्षेपक वायु तथा कम्पवायुके कुपित होनेपर भोजनके

पहले और अन्तमें दवा देनी चाहिये। यही दूसरा काल है।

३—कण्ठ-सम्बन्धी उदान वायुके कुपित होनेसे, (कण्ठके बैठ जा गूँगा हो जाने वग़ैरहमें) साँझके भोजन-समय, प्रत्येक ग्रास या कौरके साथ अथवा दो-दो ग्रासोंके बीचमें दवा खिलानी चाहिये। हृदयमें रहनेवाली, प्राणवायुके कुपित होनेसे, बहुधा सन्ध्या-समय भोजनके अन्तमें दवा खिलानी चाहिये। यह तीसरा काल है।

४—प्यास, वमन, हिचकी, श्वास और विष-दोष होनेसे बारम्बार अन्न सहित औषधि खानी चाहिये। अनेक मौक़ोंपर तृषा प्रभृति रोगोंमें अन्नरहित भी दवा देते हैं। यह चौथा समय है।

५—अगर हँसलीके ऊपरके कर्णरोग, नेत्ररोग, मुखरोग अथवा नाकके रोगोंका इलाज करना हो; या बढ़े हुए वातादि दोषोंको घटाना हो, या अति क्षीण हुए दोषोंको बढ़ाना हो, तो रातके समय, पाचन शमन औषधि, विना अन्नके, खिलानी चाहिए। कोई-कोई सारी रातदवा देनेको कहते हैं, परन्तु आमतौरसे रातके पहले पहरमें ही दवा दी जाती है।

वैद्योंको यह पाँचों औषधि-काल खूब याद रखने चाहियें। रोगानुसार, रोगके समयपर, दवा देनी चाहिये। इस तरह करनेसे निश्चय ही सिद्धि मिलती है। "हारीत" महोदयका कहना है कि, औषधि सवेरे और शामको देनी चाहिये।

सात प्रकारके क्वाथ

पाचन, दीपन, शोधन, शमन, तर्पण, क्लेदन और शोषण ये सात तरहके काढ़े या क्वाथ होते हैं। शृत, क्वाथ, कषाय और निर्य्यूह—ये क्वाथके चार नाम हैं।

पाचन—जिसमें औटाते-औटाते आधा जल रहे, उसे "पाचन" कहते हैं। पाचन काढ़ा दोषोंको पकाता है। इसीलिये ज्वरमें पहले दोष पकानेके लिये पाचन क्वाथ देते हैं।

दीपन—जिसमें औटाते-औटाते दशवाँ भाग पानी रहे, उसे "दीपन" कहते हैं। दीपन क्वाथ जठराग्निको तेज़ करता है।

शोधन—जिससें औटाते-औटाते बारहवाँ भाग पानी रहे, उसे "शोधन" कहते हैं। शोधन क्वाथ मलको साफ़ करता है।

शमन—जिसमें औटाते-औटाते आठवाँ भाग जल रहे, वह "शमन" कहलाता है। शमन रोगोंको शान्त करता है। प्राय: पाचन क्वाथसे दोष पकनेपर, शमन क्वाथ देते हैं; पके हुए दोषोंको शमन क्वाथ झट शान्त कर देता है। कच्चे दोषोंमें शमन क्वाथ देना उचित नहीं।

तर्पण—जिसमें ज़रा जोश दिया जाता है, उसे "तर्पण" कहते हैं। तर्पण धातुओंको तृप्त करता है।

क्लेदन—जिसमें औटाते-औटाते चौथा भाग पानी रहे, उसे "क्लेदन" कहते हैं।

शोषण—जिसमें औटाते-औटाते सोलहवाँ भाग पानी रहे, उसे शोषण कहते हैं। यह दोषोंको सुखाता है।

काढ़ा बनानेकी विधि

४ तोले दवाको ६४ तोले पानीमें डालकर हलकी आगसे औटाओ। औटाते समय काढ़ेके बर्तनको ढकना नहीं चाहिये; ढकनेसे काढ़ा भारी हो जाता है। जब ८ तोले पानी शेष रहे, तब उतारकर छान लो। मतलब यह है, जितनी दवा हो, उससे १६ गुने जलमें काढ़ा पकाओ। आधा, चौथाई अथवा आठवाँ भाग जैसा रखना हो, वैसा रक्खो। बनते हुए काढ़ेको बीचमें छोड़ना और चलाना नहीं चाहिये। अशुद्ध जगहमें काढ़ा बनाना नहीं चाहिये और ज़मीनपर गिरे हुएको उठाना नहीं चाहिये। काढ़ा सुहाता-सुहाता गरम पिलाओ और पिलाकर बासन औंधा रख दो। काढ़ेके पीनेके एक घण्टे बाद तक, प्यास लगने पर भी, जल मत दो। काला, नीला, कड़ा, लाल, झागदार, जला

हुआ, कच्चा या मुर्देकी-सी गन्धवाला काढ़ा विषके समान होता है और रोगको असाध्य कर देता है। दवाकी गन्धके माफ़िक़ शुद्ध और सुन्दर कान्तिवाला काढ़ा अमृतके समान होता है।

काढ़ेमें खाँड़ डालनी हो, तो वात-रोगमें काढ़ेका चौथाई, पित्त रोगमें आठवाँ भाग और कफरोगमें सोलहवाँ भाग डालो। शहद मिलाना हो तो पित्तरोगमें सोलहवाँ भाग, वातरोगमें आठवाँ भाग और कफरोगमें चौथा भाग डालो। अगर जीरा, गूगल, जवाखार, सैंधानोन, शिलाजीत, हींग, त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पीपर) ये डालने हों तो तीन-चार माशे डालो। अगर दूध, घी, तेल, गुड़, मूत्र या और कोई पतली चीज़ डालनी हो, तो तोले भर डालनी चाहिये।

वात, पित्त, कफ, रस, रक्तके संचयसे हुआ बुखार, जब अच्छी तरह पक जाय तब काढ़ा देना चाहिये। पाचन काढ़ा रातको, शमन काढ़ा दोपहर पहले, दीपन दोपहर बाद, सन्तर्पण और शोधन सवेरे ही प्रभात समय देने उचित हैं।

ज्वरमें संशोधन

नवीन ज्वरमें संशोधनसे हानि

अगर नवीन ज्वरवाला रोगी शोधन (वमन विरेचन आदि) औषधि पीता है, तो वमन, मूर्च्छा, मद, नशा, श्वास, भ्रम, प्यास और विषमज्वर उत्पन्न होता है।

नवीन ज्वरकी विशेष अवस्थामें

संशोधनकी आज्ञा

यद्यपि नवीन ज्वरमें संशोधन (वमन विरेचनादि) की मनाही है; तथापि अवस्था विशेषमें संशोधन कराना उचित है। रोगी दोषोंकी वृद्धिसे अत्यन्त दुखी हो और रोग-शोधन (वमन विरेचनादि) से ही शान्त हो, बिना शोधनके शान्त न हो—ऐसी दशामें वैद्य वमन विरेचन की हलकी दवा देकर दोषोंको उखाड़ डाले।

वमन कराने योग्य रोगी

"शार्ङ्गधर" में लिखा है—बलवान मनुष्य कफसे व्याकुल हो, जिसके मुखसे लार गिरती हो, धीरज धरनेवाला हो, उसे वमन करानी चाहिये। विषदोष, स्तन्यरोग, मन्दाग्नि, श्लीपद, अर्बुद, हृद्रोग, कोढ़, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, विदारिका—गण्डमालाका एक भेद, अपची, खाँसी, श्वास, पीनस, अण्डवृद्धि, अपस्मार—मृगी, ज्वर, उन्माद, रक्तातिसार, नासापाक, तालुपाक, होठका पकाव, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलशुण्डि, अतिसार, पित्तकफके रोग, मेदोरोग और अरुचि,—इन रोगोंमें वैद्यको वमन करानी चाहिये।

वमन न कराने योग्य रोगी

तिमिर रोगी, गुल्म रोगी, उदररोगी, अति कृश, अति वृद्ध, गर्भवती स्त्री, मोटा, उरःक्षतवाला, बालक, रूखा, भूखा, निरूहण वस्ति करानेवाला, उदावर्त रोगी, ऊर्ध्वरक्तपित्त रोगी, वमनको बर्दाश्त न कर सकनेवाला, पीलियावाला, कृमिरोगी, और जोरसे पढ़नेसे कण्ठ बैठ जानेवाला,—इनको वमन न करानी चाहिये।

नाजुक-मिजाज, कमजोर, बालक और बूढ़ा तथा डरपोक इन पाँचोंको वमन करानेवाली दवा विशेषकर न देनी चाहिये।

नोट—अगर उपरोक्त तिमिर आदि रोगी अजीर्ण या कफसे व्याप्त हों तो मुलहटीका काढ़ा या महुएकी छालका काढ़ा पिलाकर वमन करा देनी चाहिए।

नवीन ज्वरमें वमन-निषेध

कफादि दोषोंके बहुत ही ऊँचे आ जानेसे अपने आप वमन हो जाय, उससे नुक़सान नहीं; किन्तु नवीन ज्वरमें कफ आदि अपने-आप ऊपर न आते हों, तो उपाय करके वमन न करानी चाहिये। उपाय द्वारा ज़बर्दस्ती वमन करानेसे (नवीन ज्वरमें) हृदय रोग, श्वास, अफारा और मोह—बेहोशी उत्पन्न होती है।

नवीन ज्वरमें वमन करानेकी आज्ञा

नवीन ज्वरमें, अवस्था विशेषमें, वमन कराना मना नहीं है। जैसे:—

(१) तत्काल भोजन करनेपर तृप्तिसे ज्वर चढ़ा हो, तो वमन करायी जा सकती है। तत्काल ज्वर चढ़नेपर वमन करानेमें हर्ज नहीं। "चरक" में लिखा है, रोगीके आमाशयमें ठहरे हुए, ज्वर उत्पन्न करनेवाले सब दोष कफप्रधान हों और वे वमनोन्मुख हों यानी निकलनेको उत्सुक हों और रोगी वमन कराने लायक़ हो, तो उन दोषोंको वमन कराकर निकाल दो। लेकिन अगर सब दोष उपस्थित न हों, तो नवीन ज्वरमें वमन कराना मुनासिब नहीं। अगर दोषके मौजूद न रहनेकी हालतमें वमन करा दी जाती है, तो हृद्रोग, श्वास और बेहोशी हो जाती है। नवीन ज्वर और आमदोषमें रुक्षस्वेद, लंघन और वमन खूब विचार करके कराने चाहियें। अगर ज्वर रोगी दोषोंसे अत्यन्त घिरा हो; तो वमन और विरेचन कराना ही चाहिये।

(२) रोगी—गर्भवती स्त्री, अत्यन्त कृश और अत्यन्त बूढ़ा न हो, तो लंघनके एवज़में वमन करायी जा सकती है।

नोट—जिसने वमन की हो उसे लंघन करा सकते हो; किन्तु जिसने लंघन किये हों, उसे वमन नहीं करा सकते, क्योंकि वमन कष्टकर होनेके कारण लंघनसे कमज़ोर हुए रोगीको मार डालती है। अगर रोगी बलवान हो और उसके कफज्वर हो, साथ ही वमन कराये बिना काम न चलता दीखे, तो वमन करा देनी चाहिये।

वमन कराते समय खयाल रखने योग्य बातें

(१) जिसे वमन करानी हो, उसे पेट भरकर यवागू या दूध प्रभृति पिला देने चाहिएँ। जो चीज़ बुरी लगती हो वह अथवा कफकारी पदार्थ खिलाकर दोषोंको उत्क्लेशित करना चाहिये। इस तरह करनेसे

वमन अच्छी तरह होती है। जिसने घृतपान किया हो यानी घी पिया हो, उसे एक दिन बीच देकर वमन करानी चाहिये।

(२) जितने वमनकारक प्रयोग या नुसख़े हैं, उन सबमें सेंधानोन या शहदका मिला देना अच्छा है। वमन घी मिलाकर करानी चाहिये यानी वमन करानेवाली दवाओंमें घी मिला देना चाहिये। इसको "वीभत्स" वमन कहते हैं; किन्तु जुलाबकी दवाओंमें घी न मिलाना चाहिये।

(३) कड़वी और तीक्ष्ण * दवाओंसे कफको, मधुर और शीतल दवाओंसे पित्तको तथा मीठी, खारी, खट्टी और गरम दवाओंसे वातकफको (वात मिले कफको) जीतना चाहिये।

(४) कफदोष में पीपल, मैनफल और सेंधानमक—इनका चूर्ण करके, गरम जलके साथ पिलानेसे कफ निकलता है।

पित्तदोषमें—पटोलपत्र, अडूसा और कड़वे नीमके पत्तोंका चूर्ण करके, शीतल जलमें मिलाकर पिलानेसे पित्त निकलता है।

कफ और वायुके दोषमें—मैनफलका चूर्ण दूधमें डालकर पीना चाहिये। अजीर्णकी दशामें—गरम जलमें सेंधानोन मिलाकर पीना चाहिये। वमन होनेसे अजीर्ण दूर हो जाता है।

ज्वर शान्त करनेको पीपरके साथ या इन्द्रजौके साथ या मुलहटीके साथ मैनफल और गरम जलसे वमन करानी चाहिये। ज्वरमें शहद और जल, ईखका रस अथवा नमकका जल अथवा शराब अथवा तर्पण द्वारा वमन करानी चाहिये। इसी तरह वमनके लिये दाख और आमलेका काढ़ा पीना चाहिये अथवा आमलेका काढ़ा घीमें पकाकर पीना चाहिये। जहाँ जैसा उचित हो, वहाँ वैसा ही नुसख़ा देना चाहिये। इस बातको भी ध्यानमें रखना चाहिये, जिस तरह कच्चे फलसे स्वरस निकालनेसे फल नष्ट हो जाता है;

* सोंठ, मिर्च, पीपल, राई आदि तीक्ष्ण दवा हैं और अनार, मुनक्का, मिश्री प्रभृति मधुर दवा हैं।

इसी तरह सब देहमें व्याप्त धातुमें ठहरे हुए सारे ही साम दोषको निकालना कष्टकी निशानी है।

(५) जिसे वमन करानी हो, उसे वमनकारक दवा देकर, ऊँचे आसन-पर बिठाना चाहिये। अरण्डकी नालको मुखमें डालकर, हलके हाथसे कफको छूना चाहिये। इस प्रकार भीतर बाहरसे कण्ठको सिरा-सिराकर वमन करानी चाहिये। साथ ही वमन करानेवालेके मस्तक और दोनों कूखों यानी पसलियोंको धीरे-धीरे हाथसे सिराना चाहिये।

(६) अगर बहुत क्षय होनेसे प्यास लगे, हिचकियाँ चलें, डकार आवें, अङ्ग जकड़ जाय, संज्ञा जाती रहे, जीभ निकल आवे, नेत्र फटे-से होकर चञ्चल हो जायँ, भ्रम हो, ठोड़ी जकड़ जाय, पीड़ा हो, मुँहसे खून गिरे, बारबार थूक आवे, कंठमें दर्द हो, तो उसका उपाय शीघ्र करना चाहिये; घबराना उचित नहीं। बहुत क्षय होनेसे बहुधा ऐसा होता है। इसीलिये वमन विरेचन करानेके लिये होशियार चिकित्सककी जरूरत है।

अत्यन्त वमनके उपद्रव नाश करनेकी तरकीबें

(१) हलका-सा जुलाब दो।

(२) अगर जीभ बहुत घुस गई हो, तो मनको प्रसन्न करनेवाले खट्टे, तीक्ष्ण, मीठे, नमकीन पदार्थ भातके साथ खानेको दो। घी और दूध भातके साथ दो। उस रोगीके सामने दूसरे लोगोंको नीबू या नारङ्गी चूस-चूसकर खानेको कह दो। इस तरह करनेसे उसकी जीभ ठिकानेपर आ जायगी। खटाई देखकर मुँहमें पानी छूटेगा और काम बन जायगा।

(३) अगर जीभ बाहर निकल आई हो, तो तिल और दाखोंको पीस कर, लुगदी-सी बनाकर उसका रोगीकी जीभपर लेप करो और जीभको भीतर घुसाओ।

(४) अगर आँखें फटी-सी हो गई हों, तो आँखोंमें घी लगाकर ठीक करो। यह काम हलके हाथसे करना उचित है; ज़ोरका काम नहीं है।

(५) वमन करते-करते ठोड़ी रह गई हो, तो रोगीके अङ्गोंका पसीना निकालना चाहिये तथा कफवायु-नाशक औषधि नाकमें डालनी चाहिये। इससे ठोड़ीका रह जाना ठीक होगा।

बहुत वमन करनेसे अन्तमें खून गिरने लगे, तो रक्तपित्त रोगमें जो उपाय किये जाते हैं. उनसे खूनकी वमनकी शान्ति करनी चाहिये।

(७) अगर बहुत वमन होनेसे प्यास बढ़ जाय, तो आमले, रसौत, नेत्रवाला, शालि चाँवलोंकी खील, लाल चन्दन और ख़स ६ दवाओं को ४ तोले लेकर जौकूट कर लो; पीछे १६ तोले जल हाँड़ीमें डाल, उसीमें सब दवायें मिलाकर मथ डालो। मथनेके बाद नितार कर छान लो, इसीको "मंथ" कहते हैं। इस मन्थमें घी, शहद और मिश्री डालकर पिलाओ। इस नुसखे द्वारा वमनसे उत्पन्न हुए प्यास प्रभृति उपद्रव नाश हो जायंगे।

(८) अगर वमन अच्छी हो जाती है, तो हृदय, कंठ और मुख साफ़ हो जाते हैं, अग्नि दीप्त होती है, शरीर हलका होता है तथा कफ और पित्तके दोष दूर हो जाते हैं। अगर वमन इसी तरह अच्छे ढंगसे हो गई हों, उपद्रव न हुआ हो; तो तीसरे पहरके समय मूंग और साँठी चाँवलोंका यूष अथवा हिरन वग़ैरहके मांसका रस रोगीको दो। अच्छी तरह वमन होनेसे तन्द्रा, निद्रा, मुँहकी बदबू, खाज, संग्रहणी और विष-दोष, ये उपद्रव कभी नहीं होते।

(९) जिस दिन रोगी वमनकारक दवा पीवे, उस दिन उसे चाहिये कि, अजीर्ण करनेवाले, देरमें पचनेवाले, भारी पदार्थ, शीतल जल, दंड-कसरत, मैथुन, शरीरमें तेलकी मालिश और क्रोध—इनको त्याग दे अर्थात इन सब अपथ्योंसे परहेज़ करे।

विरेचन या जुलाब देने योग्य रोगी

जीर्णज्वर, विषविकार, वमन, वायुगोला, प्लीहा—तिल्ली, उदर-रोग, सूजन, मूत्राघात और कृमि-रोग,—इन रोगोंमें जुलाब दिया जा सकता है।

ज्वरके शान्त होनेपर भी शरीरमें थकान हो, शरीरका रंग ख़राब हो और शरीर मलीन हो, तो विरेचन दे देना उचित है। यदि दोष बाक़ी रह जायगा, तो ज्वर फिर आने लगेगा; इसलिए शेष रहे दोष को निकाल देना ही अच्छा है।

नोट—वायुगोला और कृमिरोग (कीड़ोंका रोग और उदर रोग) प्रभृतिमें वमन कराना मना है।

जीर्णज्वरमें भी अगर रोगी कमज़ोर हो, तो विरेचन न देना चाहिये। विरेचन करानेके कायदे और विरेचन-सम्बन्धी अनेक उपयोगी विषय देखने हों, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" प्रथम भागके अन्तमें देखिये।

नवीन ज्वरमें विरेचन निषेध

नवीन ज्वरमें और ख़ासकर अपक्व दोषोंकी हालतमें; शोधन (जुलाब वग़ैरह) और शमन औषधि मना है। कच्चे ज्वरमें जुलाब प्रभृति देनेसे ज्वर प्रचण्ड हो जाता है या विषम ज्वर होने लगता है।

नवीन ज्वरमें विरेचनकी आज्ञा

"सुश्रुत" में लिखा है, अगर थोड़े दिनके ज्वरमें भी दोष पककर कोठेमें ठहर जाय, तो विरेचन दे देना चाहिये; क्योंकि पके हुए दोषको न निकालोगे, तो वह शरीरमें रहकर विषमज्वर आदि भयङ्कर रोग पैदा करेगा तथा बलका नाश करेगा। इसलिए पके हुए दोषको वमन, विरेचन, निरूहवस्ति और शिरोविरेचन (सिरका जुलाब नस्य वग़ैरह) से निकाल देना चाहिये। और भी लिखा है,—अगर दोष चञ्चल हों, कोठा नरम हो, तो वैद्य शोधन औषधि दे दे। ऐसी अवस्थामें दोषोंसे निर्बल हुए मनुष्यको शोधनसे वमन आदि विकार उत्पन्न नहीं होते;

बल्कि शोधन न करनेसे और रोग हो जाते हैं। लंघन कराने, गरम जल पिलाने और पेया आदि पिलानेसे पका हुआ दोष अगर नीचेके रास्ते (गुदा) से दस्त द्वारा नहीं निकाला जाता है, तो वह शरीरमें रह कर महाकष्टसाध्य विषमज्वर—चौथैया और बल-क्षय करता है। "कार्तिक वैद्य" चौथैयाके स्थानमें महाकष्टसाध्य गम्भीर ज्वरका पैदा होना कहते हैं।

ज्वर रोगियोंको वमन विरेचन कराना हो, तो सदा बलाबल देख-कर हलके नुसखे ही काममें लाना अच्छा है। "आरोग्यपंचक" और "सारिवादि कल्क" देनेमें ज़रा भी खटका नहीं। इनके नुसखे आगे लिखे हैं।

अगर रोगी कमज़ोर हो, दस्त कराने लायक़ न हो, किन्तु उसके पेटपर अफारा हो, पेटमें दर्द हो; तो दारुहल्दी, बच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोनको काँजीमें महीन पीसकर पेटपर लेप करो। अगर हवा न खुलती हो, दस्त और पेशाब भी रुक रहे हों, तो दारुहल्दी आदि छहों दवाओंको पीसकर, कपड़ेकी बड़ी उँगलीके समान मोटी बत्तीपर लेप करके, ऊपरसे घी लगाकर, गुदामें हाथसे घुसाओ। इसके साथ ही पीपर, पीपरामूल, अजवायन और चव्य,—इन चारोंके काढ़ेसे बनाई हुई यवागू पिलाओ। यह भी हवा खोलती और मल-मूत्र उतारती है। अगर वमन विरेचन दोनों ओरके शोधनोंसे भी ज्वर शान्त न हो, दोष रह जाय; तो पुराने ज्वरमें, रोगीके रूखे होनेकी हालतमें, कोई उत्तम ज्वरनाशक घृत दो। इससे अवश्य लाभ होगा।

संशोधन और शमन औषधि निषेध

जिस मनुष्यने कड़वा—दवाओंका जल पिया हो, जो लङ्घन या उपवाससे कमज़ोर हो गया हो, जिसने तत्काल खाना खाया हो, जो बूढ़ा हो, ज़ो प्याससे दुखी हो—उनको संशोधन या शमन औषधि नहीं पिलानी चाहिये।

पाचन और शमन औषधि देनेका समय

अगर रोगी आम-सहित हो, तो सातवें दिन पाचन दे देना चाहिये। अगर रोगी आम-रहित हो, तो सातवें दिन शमन औषधि दे देनी चाहिये। इसी तरह कमज़ोर और थोड़े दोषवालेको भी शमन औषधि दी जा सकती है।

प्र०—आम ज्वरमें दवा देना मना है; क्योंकि आमज्वरमें दी हुई दवा ज्वर को बढ़ाती है, फिर आम सहित-ज्वर में पाचनकी आज्ञा क्यों दी गई है?

उ०—आमज्वर उपद्रव-रहित हो तो पाचन देना चाहिए। अगर आमज्वर उपद्रव-सहित हो, तो पाचन दवा न देनी चाहिए।

"वाग्भट्ट" महाशय कहते हैं—सात दिन बाद ज्वर आमसहित भी हो, किन्तु उपद्रव न हों तो पाचन दे देना चाहिए। अगर सात दिन बाद ज्वर आम रहित हो, तो शमन औषधि दे देनी चाहिये। किन्तु यदि ज्वर आम और उपद्रव दोनोंसे संयुक्त हो, तो दवा हरगिज़ न देनी चाहिये।

ज्वररोगीको अन्न देनेका समय

रस, दोष और मलोंके पकनेपर रोगीको भूख लगती है। जब रोगीको भूख लगे, तब भूखका समय हो या न हो; किन्तु उसीको अन्नकाल या खानेका समय कहते हैं।

और भी कहा है—जब मनुष्योंका आम पच जाता है, तब खाने की इच्छा होती है। चाहे वह समय खानेका हो या न हो, उसीको अन्नकाल कहते हैं; यानी उस समय भोजन देना ही चाहिये। मतलब यह है, कि ज्वर पचनेपर ही भूख लगती है, इसलिये भूख लगनेपर खानेको देना चाहिये।

वातज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पकता है। जब ज्वरका पाक होता है, तब रस और दोषोंका भी पाक होता है। एक दूसरेका सम्बन्ध है। बिना दोषोंका पाक हुए ज्वरका पाक नहीं होता और बिना रसका पाक हुए दोषोंका पाक नहीं होता। ज्वरका पाक होनेसे रस और दोषोंको पके हुए समझो। इसी

तरह रस और दोषोंका पाक होनेसे ज्वरको पका समझो। जब रस, दोष और ज्वर पक जायँगे तब भूख लगेगी ही। भूखका लगना—ज्वरके पकनेकी निशानी है। उस समय रोगीको भोजन, किन्तु खूब हलका भोजन, देनेमें हानि नहीं है।

"धन्वन्तरि" महोदय कहते हैं—'वातज्वरवाला रोगी वैद्यके आज्ञानुसार लंघन, गरम जल, वात रहित स्थानके निवास और भारी और गरम कपड़ोंके पहनने-ओढ़ने प्रभृति नियमोंका पालन करता है, तथा वात-दोषके पच जानेपर—६ दिन बीत जानेपर, सातवें दिन अन्न और औषधि खाता है, तो वह जल्दी ही आराम हो जाता है।'

"चरक" महोदय कहते हैं,—"वातज्वरवालेको ६ दिन बाद, पित्त-ज्वरवालेको १० दिन बाद और कफज्वरवालेको १२ दिन बाद हलका अन्न खिलाकर, पाचन या शमन क्वाथ पिलाना चाहिए।"

वैद्यको चाहिये कि, रोगीको दोपहरसे पहले अन्न दे दे; क्योंकि यह पित्तकी प्रधानताका समय है। यों तो दिनका सारा मध्य भाग पित्तकी प्रधानताका समय है, पर दस और बारह बजेके बीचमें भोजन देना भला है। दिनके पहले पहरमें यानी दस बजेके पहले खाना न देना चाहिये, क्योंकि दिनके पहले पहरमें कफका समय होता है। रोगीको दोपहर तक भूखा भी न रखना चाहिये। दूसरे पहरमें भोजन न करनेसे बलका नाश होता है। दिनके मध्य भागमें, पित्तके समयमें, कफका क्षय होता है। कफके क्षय होनेसे (कफ गीला है) जठराग्नि बलवान हो जाती है। जठराग्निके तेज होनेपर खाना देनेसे झट पच जाता है। दोपहर बाद, पित्तका समय निकल जानेपर, जठराग्नि फिर मन्द होने लगती है; उसका वह तेज नहीं रहता; इसलिये अग्निकी तेज़ी शान्त हो जानेपर जो खाना दिया जाता है, वह नहीं पचता और ज्वरके वेगको बढ़ाता है। इसीलिये दोपहरके पहले (दस और बारह बजेके दरम्यान) भोजन देनेकी बात कही गयी है। भोजन सदा एकान्तमें कराना अच्छा है।

सब तरहके विषमज्वरोंमें, ज्वरका वेग शान्त होनेपर, सात दिन तक, मात्राके अनुमानसे हलका भोजन देना चाहिये। यदि ज्वरके वेग के बिना शान्त हुए ही ज्वरके चढ़े रहनेकी हालतमें, भोजन दिया जाता है, तो वह भोजन विषमज्वरके जोरको बढ़ाता है; यानी बुखार का जोर हो जाता है।

सब तरहके ज्वररोगियोंको बहुत ही हलका भोजन देना चाहिये। उनसे ज़रा भी मिहनत न करानी चाहिये। रोगीको चारपाई पर ही या नीचे, बिना अधिक चलाये-फिराये खाना खिला देना चाहिये। पेशाब पाख़ानेकी हाजत होनेपर, वह भी कहीं पास ही करा देना चाहिये। ज्वररोगीके थोड़ा भी चलने-फिरने या मिहनत करनेसे "प्रमेह" रोग हो जाता है।

नोट—पित्तज्वर दस दिनमें पकता है और ग्यारहवें दिन भोजन दिया जाता है। कफज्वर बारह दिनमें पचता है और तेरहवें दिन भोजन दिया जाता है। वातज्वर सात दिनमें पचता है और सातवें दिन ही अन्न दिया जाता है। इसका कारण यह है कि, कफ और पित्त पतले होते हैं, वे अधिक लङ्घन सह सकते हैं; परन्तु वायु तो आम पक जानेके बाद क्षण भर भी लङ्घन नहीं सह सकता। मतलब यह है, कि वायुके निराम होनेपर, अगर भोजन न दिया जाय, तो वह शीघ्रकारी होनेके कारण विकलता—घबराहट प्रभृति विकार पैदा कर देता है।

सामान्य ज्वरमें पाचन कषाय

नागरादि क्वाथ

सोंठ, देवदारु, रोहिषतृण, कटेरी और बड़ी कटेरी—इनको बराबर-बराबर आधा-आधा तोला लेकर काढ़ा बनाओ। इसको "नागरादि क्वाथ" कहते हैं। सब तरहके ज्वरोंमें, ज्वरके पचानेके लिये, यह क्वाथ "सुश्रुत" और "शार्ङ्गधर" के मतसे अच्छा समझा गया है।

नोट—यह पाचन काढ़ा है। यह दोषोंको पकाता है। रोगको आराम करने वाला संशमन काढ़ा—इसे दोष पक जानेपर देना चाहिये। पहले संशमन काढ़ा नहीं देना चाहिये। हाँ, दोष पके हुए हों, तो संशमन काढ़ा दे सकते हो।

अगर "रोहिषतृण" न मिले, तो उसके बदलेमें "खस" लेनी चाहिये। कोई-कोई उसके बदलेमें "धनिया" लिखते हैं।

नोट—काढ़ा पिलाते समय रोगीको उत्तर या पूरब की तरफ मुँह करके बिठाओ। ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराकर काढ़ा पिलाओ। काढ़ा पिलानेपर काढ़ेके बर्तन को नीचा मुँह करके औंधा रख दो। रोगीसे कह दो, लेट रहो, पर सोना मत। काढ़ा पीकर एक घण्टे तक जल पीनेकी भी मनाही कर दो। यह काढ़ा पीनेकी उत्तम विधि है।

सूचना—अगर कभी पाचन काढ़ा पीनेसे ग्लानि और विकलता पैदा हो जाय, तो वमन करानेवाली दवा देकर उसे निकाल दो और पथ्यमें शमन क्वाथ दो।

सब तरहके ज्वरोंपर सामान्य संशमन औषधियाँ

दूध पाक

सफ़ेद पुनर्नवा (साँठ), बेलका गूदा और लाल पुनर्नवा (गदहपुनेरा)—इन तीनोंको चार तोले लेकर, ३२ तोले दूध और दूधसे चौगुने १२८ तोले जलको लेकर, सबको एकमेल कर मिट्टीकी हाँड़ीमें पकाओ। जब पानी जल जाय, केवल दूध रह जाय, उतारकर छान लो। पीछे शीतल होनेपर रोगी को पिलाओ। महर्षि "सुश्रुत" कहते हैं, इस नुसख़ेको वैद्य सब तरहके ज्वरोंमें दे सकता है। इससे सब तरहके ज्वर नाश होते हैं।

नोट—"नागरादि क्वाथ" से दोष पकाकर, यह नुसख़ा देना चाहिये। जो दोषोंके अंशांशको न जान सके, (यह वातज्वर है या पित्तज्वर है, या वातकफज्वर है, ऐसा निर्णय न कर सके) उसके लिए सब तरहके ज्वरोंमें "नागरादि क्वाथ" और दोष पक जानेपर यह "दूध-पाक" का नुसख़ा देना चाहिये। इनसे ज्वरकी क़िस्म न समझनेपर भी, हानि नहीं, लाभकी ही सम्भावना है।

सर्व्व ज्वरोंपर—दूसरा दूध-पाक

एक हिस्सा जल और दो हिस्सा दूध लेकर, उसमें शीशमका बुरादा और ख़स डालकर पकाओ। जब पानी जलकर दूधमात्र रह जाय, छानकर रोगीको पिलाओ। इसके पीनेसे सब तरहके ज्वर जाते हैं।

नोट—दूध-पाक बनाना हो, तो ४ तोला दवा, ३२ तोला दूध, १२८ तोला पानी मिलाकर औटाना और जब जल जलजाय, दूधमात्र रह जाय, छानकर और शीतल करके पिलाना। यह दूध-पाककी विधि उत्तम है। दूध-पाक इसी तरह किया जाता है। यह दूसरी तरकीब है। इसमें जलसे दूध दूना लिया जाता है; और उसमें दूधसे चौगुना जल लिया जाता है।

सब तरहके ज्वरोंपर—गुडूच्यादि क्वाथ

गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, पद्माख और लाल चन्दन,—इन सब दवाओंको बराबर-बराबर आधा-आधा तोला लेकर, काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़ेसे सब तरहके ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं। यह जगत् प्रसिद्ध क्वाथ ज्वरोंको हरनेवाला, अग्नि दीपन करनेवाला, दाह, उबकाई, प्यास, वमन और अरुचिको नाश करनेवाला है।

नोट—यह काढ़ा हमारा आज़माया हुआ है। अगर इसका अर्क़ भभकेसे खींच लिया जाय, तो इसका स्वाद भी अच्छा हो जाता है। देखनेमें भी साफ़ रहता है। महीने दो महीने रखे रहनेसे बिगड़ता भी नहीं। समयपर तैयार रहता है। औटाने छाननेकी दिक़्क़त मिटती है। हम इसे सब तरहके ज्वरोंमें आँख बन्द करके देते थे। सदा लाभ होता था। हाँ, इतनी बात है कि धीरे-धीरे आराम करता है। अर्क़ जवान आदमीको २ तोले या २॥ तोले देना चाहिये।

अर्क़ खिंचवाना हो, तो पाँचों दवाएँ बराबर लेनी चाहिये। कुल वज़न पौने चार सेर होना चाहिये; यानी प्रत्येक दवा तीन-तीन पाव लेनी चाहिये। और मिट्टी या काठके बासनमें अथवा चीनीके या क़लईके बर्तनमें २४ घण्टे तक दस बारह सेर पानी डालकर भिजो देनी चाहिये। दूसरे दिन अर्क़ निकाल लेना चाहिये। पीछे साफ़ सफेद बोतलोंमें भरकर काग लगा देने चाहिये। इसे "अमृतादि या गुडूच्यादि अर्क़" कहते हैं। यह अर्क़ सब तरहके ज्वरोंमें आँख बन्द करके देनेसे निश्चय ही लाभ होता है; पर जल्दी न करनी चाहिये। यह धीरे-धीरे आराम करता है; पर पक्का आराम करता है। इससे गया हुआ बुख़ार बरसों नहीं आता।

नोट—जिस दवाका अर्क़ बनाना हो, उसे २४ घण्टे तक तिगुने पानीमें क़लईदार या चीनीके या मिट्टीके ही बर्तनमें भिगो रखना चाहिये । पीछे भभकेसे अर्क़ निकालना चाहिये । जितनी दवा हो, उतना ही अर्क़ निकाला जाय, तो वह अर्क़ अव्वल दर्जेका होता है । ऐसे अर्क़में बड़ा गुण होता है ।

सब तरहके ज्वरोंमें पेट साफ करने को—

आरोग्य पञ्चक

अमलताशका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और जंगी हरड़,—इन पाँचोंका काढ़ा आम और शूलयुक्त कफ, वात और पित्तज्वरमें अत्यन्त हितकारी है । दीपन और पाचन है । "शार्ङ्गधर" में लिखा है, यह काढ़ा वात-कफज्वर और आमके शूलको तत्काल नष्ट करता है । इससे मल साफ होकर दीपन-पाचन होता है । इसको "आरग्वधादि क्वाथ" भी कहते हैं ।

नोट—नये बुखारमें कषाय या काढ़ा देना मना है, क्योंकि नवीन ज्वरमें आमकी हालतमें, कषैले रस और सम्पूर्ण कषाय देनेसे दोष रुक जाते हैं, पचते नहीं तथा विषमज्वर पैदा करते हैं, इसीसे नये बुखारमें जब तक दोष न पके, काढ़ा देना न चाहिये; पर इस "आरोग्य पञ्चक" या "आरग्वधादि क्वाथ"की नवीन ज्वरमें मनाही नहीं है ; क्योंकि यह आम-पाचक, त्रिदोष-नाशक, शूल-नाशक और दीपक है । बड़ी उत्तम चीज़ है । पचकर दस्त होता है, और ज्वरमें भी फ़ायदा होता है । यह "वात-कफज्वर" पर विशेष रूपसे चलता है ।

दूसरा आरोग्य पञ्चक

हरड़, अमलताशका गूदा, कुटकी, निशोथ और आमले,—इन पाँचोंका काढ़ा आमसहित जीर्णज्वरमें पाचन है । यह साफ दस्त लाता है ।

सारिवादि कल्क

अनन्तमूल, गोरीसाँव, सुगन्धवाला, नागरमोथा, सोंठ और कुटकी,—इन छहों दवाओंको बराबर-बराबर कुल एक तोले लेकर, मन्दोष्ण (न बहुत गरम न शीतल) जलमें पीसकर पीनेसे, थोड़े ही

दिनोंमें सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। इस कल्क* से कोठा साफ़ होता और जठराग्नि दीपन होती है।

सर्वज्वरनाशक-

सुदर्शन चूर्ण

त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, कटेरी, कटाई, कचूर, त्रिकुटा, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाण, सुगन्धवाला, नीमकी छाल, पोहकरमूल, मुलेठी, कुड़ेकी छाल, अजवायन, इन्द्रजव, भारङ्गी, सहँजनेके बीज, सोरठकी मिट्टी, बच, दालचीनी, पद्माख, ख़स, चन्दन, अतीस, खिरेंटी, शालि-पर्णी (सरिवन), पृश्निपर्णी (पिथिवन), वायबिड़ङ्ग, तगर, चीता, देवदारु, चव्य, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभक, लौंग, बंसलोचन, पुण्डेरिया, सुगन्धद्रव्य, काकोली, तेजपात, तालीसपत्र और जावित्री इन सब ५० दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, सबका आधा चिरायता लो। पीछे सबको मिलाकर हिमामदस्तेमें कूटकर, बारीक चलनीमें छान लो। इसका नाम "सुदर्शन चूर्ण" है।

---

* गीली दवा चटनी या भाँगकी तरह खूब महीन पीसनी चाहिए। अगर दवा या दवाएँ सूखी हों, तो पानी डालकर पीसनी चाहिये। इसीको "कल्क" कहते हैं। कल्कके सेवन करनेकी मात्रा एक तोलेकी है। अगर कल्कमें शहद, घी या तेल डालना हो, तो कल्कसे दूना डालना चाहिये। अगर खाँड़ या गुड़ डालना हो तो कल्कके समान डालना चाहिये। दूध पानी वग़ैरह पतले पदार्थ डालने हों तो कल्कसे चौगुने डालने चाहियें।

पोहकरमूल न मिले तो कूट लेना, भारंगीके अभावमें कटेरीकी जड़; सोरठ की मिट्टीके अभावमें फिटकरी, तगरके अभावमें कूट; तालीसपत्रके अभावमें स्वर्ण-तालीस या कटेरीकी जड़। जीवक और ऋषभक न मिले तो दोनोंके बदलेमें दो भाग विदारीकन्द लेना और काकोली न मिले तो असगन्धकी जड़ या मुलहठी लेना। जब तक मिल सकें; असल दवा लेना; न मिलनेपर अभावमें बदल लेने की शास्त्रमें आज्ञा है। बदल या प्रतिनिधियोंके लिये पहले भागके ३०३-३०७ पृष्ठ देखिये।

नोट—इस सुदर्शनचूर्णमें ५० औषधियाँ हैं और इक्यावनवाँ "चिरायता" है। अगर ५० दवाओंको एक-एक तोला लोगे, तो सब वज़न ५० तोले होगा। इस दशामें चिरायता २५ तोले लेना होगा; तब सब वज़न ७५ तोले हो जायगा। सबको कुटवाकर, बहुत बारीक तारोंकी चलनीमें छान लेना। पीछे एक मिट्टीकी हाँडी या अमृतवानमें भरकर रख देना। रोगीकी ताक़त देखकर मात्रा देना। जवानको ३ माशेसे ६ माशे तक और बालकको १माशेसे १॥ माशे तक देना चाहिये।

यह "सुदर्शन चूर्ण" तीनों दोषोंको हरता है और सब तरहके ज्वरोंको निस्सन्देह नष्ट करता है। इसके सेवनसे दोषज, आगन्तुज, धातुगत ज्वर, विषमज्वर, सन्निपातज्वर और मानसिक ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं। ज्वरोंमें होनेवाले शीतादि दोष, दाहादि दोष—जाड़ा लगना या गरमीसे जलन होना, प्रमेह, तन्द्रा, भ्रम, प्यास, खाँसी, श्वास, पीलिया, हृदयका रोग, कामला रोग, त्रिकस्थानका दर्द, पीठका दर्द, कमरका दर्द, जाँघोंका दर्द और पसलियोंका दर्द—ये सब इससे आराम होते हैं। जिस तरह विष्णुका सुदर्शनचक्र दैत्योंका नाश करता है, उसी तरह यह ज्वरोंका नाश करता है।

सेवन विधि—इस चूर्णको शीतल जलके साथ खाना चाहिये। अर्क़ हो, तो काँच या मिट्टीके बर्तनमें पीना चाहिये। पथ्य परहेज़ जैसा ज्वर हो वैसा ही रखना चाहिए। ज्वरके पक जानेपर, अगर यह दिया जाता है, तो बड़ा चमत्कार दिखाता है। कच्चे ज्वरमें न देना चाहिये। यह हमारा आज़माया हुआ है। पहले हम चूर्ण देते थे। पीछे अर्क़ खींचकर देने लगे, तब तो इसके देनेसे जो सफलता हुई, वह अकथनीय है।

अगर इस चूर्णकी दवाओंका गुडूच्यादि अर्क़की तरह अर्क़ खींच लिया जाय, तब तो कहना ही क्या है। अर्क़ बड़ा काम देता है। पीनेमें उतना बुरा नहीं लगता। उसी तरह ढाई सेर या पौने चार सेर सब दवायें लेकर, अर्क़ खिंचवाना चाहिये। मात्रा बलाबल देखकर २ तोले तक देनी चाहिये। बालक और स्त्रियोंको सदा हलकी मात्रा देनी चाहिये। पौने चार सेर दवाओंका १० बोतल अर्क़ अच्छा तेज़ होता है।

निम्बादि चूर्ण

नीमके पत्ते १० भाग, हरड़ १ भाग, आमले १ भाग, बहेड़ा १ भाग, सोंठ १ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, अजवायन ५ भाग, सैंधानोन १ भाग, विरियासंचर नमक १ भाग, काला नमक १ भाग और जवाखार २ भाग—इन सबको कूट-छानकर रख लो। इसे सवेरे के समय खाना चाहिये।

इसके खानेसे रोज़ आनेवाला, दूसरे दिन आनेवाला, तीसरे दिन आनेवाला, चौथे दिन आनेवाला, दिन-रातमें एक बार आनेवाला, दो बार आनेवाला; सात दिन, दस दिन या बारह दिन तक एक-सा बना रहनेवाला, धातुगत ज्वर और तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुआ ज्वर—ये सब ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं।

नोट—हमारी जाँचमें यह निम्बादि चूर्ण विषमज्वरोंपर अच्छा साबित हुआ है। मात्रा सुदर्शन चूर्णके समान है।

शुण्ठ्यादि क्वाथ

कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, सोंठ, पोहकरमूल, इलायची, गिलोय, कुटकी, पित्तपापड़ा, जवाखार, काकड़ासिंगी, चिरायता, देवदारु और दशमूलकी दसों औषधियाँ—कुल २३ औषधियोंको बराबर-बराबर एक-एक माशा लेकर काढ़ेकी तरकीबसे काढ़ा बनाकर, पीछे उसमें ३ या ४ माशे पिसा हुआ सेंधानोन डालकर, सुहाता-सुहाता पी जाओ। इसके पीनेसे सब तरहके ज्वर निस्सन्देह आराम होते हैं।

नोट—यह काढ़ा परीक्षित है। रोगी बलवान हो, तो प्रत्येक दवा दो-दो माशे भी ले सकते हो।

गुडूच्यादि चूर्ण

गिलोय, पीपरामूल, पीपल, हरड़, जंगी, लौंग, नीमकी छाल, सफेद चन्दन, सोंठ, कुटकी और चिरायता—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ सेवन करनेसे सब

तरहके ज्वर आराम होते हैं। यह चूर्ण हमारा परीक्षित है। मात्रा सुदर्शन चूर्णके समान समझनी चाहिये।

आमलक्यादि क्वाथ

आमला, चित्रक, छोटी हरड़ और पीपल—इन चारोंको मिलाकर २॥ तोले ले लो। पीछे काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़ेसे सब तरहके ज्वरोंमें लाभ होता है। अथवा उपरोक्त चारों चीज़ोंका चूर्ण बनाकर और चूर्णमें सेंधानोन मिलाकर, रोगीको गरम जलके साथ पिलाओ। यह भी परीक्षित है।

नागरादि चूर्ण

सोंठ, धमासा, खस, नागरमोथा और कुटकी—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णका गरम जलके साथ सेवन करनेसे, सब तरहके ज्वरोंमें फ़ायदा होता है। यह चूर्ण ज्वरनाशक और अग्नि-प्रदीपक है। परीक्षित है।

भारंग्यादि चूर्ण

भारंगीकी जड़ ८ तोला, काकड़ासिंगी ८ तोला, चव्य ८ तोला, तालीसपत्र ८ तोला, कालो मिर्च ८ तोला, पीपल १२ तोला, सोंठ २४ तोला, दालचीनी ४ तोला, इलायची ४ तोला, तेजपात ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, खसकी जड़ ४ तोला और सफेद खाँड़ ४ तोला—इन सबको कूट-पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे आठों प्रकारके ज्वर नाश होते हैं। साथ ही खाँसी, श्वास, सूज़न, पेटका अफारा वग़ैरह भी आराम होते हैं। यह चूर्ण त्रिदोष-नाशक है। परीक्षित है।

हरीतक्यादि बटी *

हरड़, निशोथ, त्रिधारा और विधारा—इन चारोंको आठ-आठ

---

* गुटिका, बटी, मोदक, बटिका, पिण्डी, गुड़ और बत्ती,—ये सात गोलियोंके नाम हैं। गुड़, खाँड़ या गूगलका पाक करके, उस पाकमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर गोली बनानी चाहिये। अगर बिना पाक किये गोलियाँ बनानी

तोले लो। पीपल, सोंठ, गिलोय, गोखरू, शतावर, सहदेई और बाय-विड़ङ्ग चार-चार तोले लो। कुल वज़न ६० तोले होगा। इन सबको एक जगह महीन कूट-पीसकर छान लो। पीछे शहद मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे ज्वर, खाँसी, श्वास, दस्त, क़ब्ज़ और अग्निमन्दता नाश होती है।

नोट—पहले पिसे-छने हुए चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे शहद दे-देकर खूब खरल करो। पीछे गोलियाँ बनाओ। यह नुसख़ा भी परीक्षित है।

उदकमञ्जरी रस

शोधा हुआ पारा १ भाग, शोधी हुई गन्धक १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, भुना हुआ सुहागा १ भाग, सफेद खाँड़ ४ भाग और मछली का पित्ता ४ भाग—इन सबमेंसे पहले पारे और गन्धकको खूब खरल करके कजली बना लो। पीछे शेष चारों को खरल में डालकर और साथ ही पारे और गन्धककी कजली डालकर, तीन दिनों तक, बराबर घोटो। यही "उदकमंजरी रस" है।

हर किसी तरह के नवीन ज्वरमें इस रसको १ या २ रत्ती बलाबल देखकर, अदरखके रसके साथ खिलाओ।

हों, तो गूगलको शोधकर और पीसकर और चूर्णमें मिलाकर, घीसे गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर जल-शहद-दूध आदि पतली चीज़ोंमें चूर्ण डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इनमें चूर्णको डालकर और खरल करके गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर खाँड़ या मिश्री आदि डालकर गोली बनानी हों, तो चूर्णसे चौगुनी खाँड़ या मिश्री मिलाकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गुड़ डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो चूर्णसे दूना गुड़ डालकर गोली बनानी चाहियें।

अगर गूगल और शहद दोनों डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इन दोनोंको चूर्णके बराबर लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर दूध या पानी वग़ैरह पतले पदार्थोंसे गोलियाँ बनानी हों, तो चूर्णसे दूने लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गरमी बहुत मालूम हो, तो शीतल जल पिलाओ और पंखे की हवा करो। अगर ज़ियादा गरमी लगे, पित्तकी तेज़ी हो, तो सिर पर शीतल जलकी धारा दो।

इस रसके खानेवालेको भूख लगे तो "माठा", भात और बैंगन दो। ये पथ्य हैं। इसके सेवन करनेसे तेज़ नया ज्वर एक ही दिन में भाग जाता है।

नोट—पारा, गन्धक और सुहागा—इनको विना शोधे कभी मत लेना। इन सबके शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है।

ज्वरधूमकेतु रस

शुद्ध पारा, शुद्ध समन्दरफेन, शुद्ध सिंगरफ और शुद्ध गन्धक—इन चारोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे अदरखका रस दे-देकर खरल करो। एक पहर तक खरल होनेपर; तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। रोगीका बलाबल देखकर, पूरी या आधी गोली अदरखके रसके साथ खिलाओ। एक दिनमें एक गोली खाने से नवीन ज्वर अवश्य चला जायगा।

नोट—सिंगरफ और समन्दरफेन प्रभृतिके शोधने की विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है।

ज्वरघ्नी रस

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंन्धक २ भाग, शुद्ध सिंगरफ ३ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ भाग—पहले पारे और गन्धकको खरल कर लो; पीछे उसी कजलीमें सिंगरफ और जमालगोटेके बीज डालकर खरल करो। खरल करते समय दन्ती या जमालगोटेकी जड़का रस डालते जाओ। खूब घुट जानेपर, चिरमिटीके बराबर गोलियाँ बना लो।

नवीन ज्वरमें, सवेरे ही, एक गोली शीतल जल और सफेद चीनी के साथ सेवन करानेसे नया ज्वर एक ही दिनमें उड़ जाता है। आजमानेवाले सज्जनको ज्वार या सरसोंके बराबर गोलियाँ बनानी ठीक होंगी।

सर्वज्वरहरी वटी

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध वत्सनाभ विष ३ भाग, सत्यानाशी कटेरीकी जड़ ४ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ५ भाग,—इन सबको एक जगह पीसकर, खरलमें डालकर, नीबूके रसके साथ खरल करो। खरल हो जानेपर, कालीमिर्चके बराबर गोलियाँ बना लो। प्रत्येक दिन १ गोली अदरखके रसके साथ सेवन कराओ। इन गोलियोंके सेवन करनेसे जीर्णज्वर, अजीर्णज्वर, सामज्वर, विषमज्वर तथा और सब ज्वर उस तरह भस्म होते हैं, जिस तरह दावाग्निसे वन भस्म होता है।

श्वासकुठार रस

शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध गन्धक ३ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष ३ माशे, शुद्ध सुहागा ३ माशे, शुद्ध मैनशिल ३ माशे, कालीमिर्च २ तोले, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर) १।। तोला—इन सबको खरल करके शीशीमें भर लो। यह रस सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है। हमारा आज़माया हुआ नहीं है।

हुताशन रस

सोंठ १ तोला, शुद्ध सुहागा २ तोले, कालीमिर्च १।। तोला, कौड़ीकी भस्म १।। तोला और शुद्ध विष ३ माशे,—इन सबको एकत्र महीन पीसकर शीशीमें भर लो। इसकी मात्रा १ रत्तीकी है। ज्वरमें हर दिन १ रत्ती खाना चाहिये। यह रस सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है।

ज्वरघ्नी वटी

शुद्ध पारा १ भाग, भूरिछरीला ४ भाग, पीपल ४ भाग, जङ्गी हरड़ ४ भाग, अकरकरा ४ भाग, सरसोंके या कड़वे तेलसे शोधी हुई गन्धक ४ भाग और इन्द्रायनके फल ४ भाग—इन सबको ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करो। पीछे इस खरल की हुई कजलीमें और सबका पीसा हुआ चूर्ण मिला दो; ऊपरसे इन्द्रायनके फलोंका

रस डाल-डालकर खूब खरल करो। घुट जानेपर उड़दके बराबर गोलियाँ बनालो।

इन गोलियोंको बलाबल देखकर, गिलोयके रसके साथ सेवन कराओ। इन गोलियोंसे नवीन ज्वर नाश होता है। हमने यह नुसखा "भावप्रकाश" से लिया है। "भावप्रकाश" में भूरिछरीला जहाँ लिखा है "शार्ङ्गधर" में वहाँ 'एलुआ' लिखा है। असलमें यह नुसखा "शार्ङ्गधर" का ही है।

नवज्वरहरी वटी

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध वत्सनाभ विष, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, शुद्ध किये हुए जमालगोटेके बीज—इन सबको बराबर-बराबर ले लो। पारे और गन्धकको खरल करके उस कजलीमें शेष आठों दवाओंके चूर्णको मिला दो। पीछे खरलमें द्रोणपुष्पी या गूमाका रस इतना भर दो कि, सब चूर्ण डूब जाय; पीछे खरल करो। जब सूखकर गोली बनाने योग्य हो जाय, तब उड़दके बराबर गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंसे नवीन ज्वर जाता है, यह बात 'भावप्रकाश' में लिखी है।

ज्वरघ्न वटिका

शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ माशे, कुटकी ८ माशे और गेरू ४ माशे—इन तीनोंको खरलमें डालकर, घीग्वारके रससे खरल करो और मटरके बराबर गोलियाँ बनालो। इनमेंसे एक गोली नित्य सेवन करनेसे जीर्णज्वर जाता है।

महाज्वरांकुश रस

शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष ३ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ६ माशे, चोक ३६ माशे—इन सब को लेकर पहले शोधे हुए गन्धक और पारेको खरल करलो। पीछे उस कजलीमें शेष सबका चूर्ण मिलाकर खरल कर लो। यही "महा-

ज्वरांकुश रस" है। यह रस जम्भीरी नीबूके रसमें अथवा अदरखके रसमें दो-दो रत्तीकी मात्रासे रोगीको दो।

यह महाज्वरांकुश रस "शार्ङ्गधर" में लिखा है। इसके सेवन करनेसे त्रिदोषज्वर, नित्य आनेवाला ज्वर, दिन-रातमें दो बार आने वाला ज्वर, इकतरा, तिजारी और चौथैया—ये सब ज्वर नष्ट होते हैं। यह बात "शार्ङ्गधर" में लिखी है। "भावप्रकाश" के लेखक महाशयने यद्यपि इसे "शार्ङ्गधर" से लिया है, तथापि उन्होंने उपरोक्त ज्वरोंके सिवाय इससे नवीन ज्वर, जीर्णज्वर प्रभृति सब तरहके ज्वरोंका जाना भी लिखा है।

हमने इसे सैकड़ों बार आजमाया है; पर हम इससे शीतपूर्वक विषमज्वरों यानी जाड़ा लगकर आनेवाले ज्वरोंको ही आराम कर सके हैं। जाड़ा लगकर आनेवाले इकतरा, तिजारी और चौथैया प्रभृति में यह सचमुच ही अचूक रामवाण है। अच्छी-से-अच्छी तेज़ अङ्ग-रेज़ी दवा इसकी बराबरी नहीं कर सकती।

हमारी परीक्षित विधि

हम उपरोक्त सब दवाओंको घोटकर गोलियाँ बनाते हैं। अगर चूका सूखा होता है, तो जँभीरी नीबूका रस डालकर घोटते हैं और पीछे सरसोंके बराबर गोलियाँ बना लेते हैं। हम ताक़तवरको दो और कमज़ोरको एक गोली ताज़ा पानीसे निगलवा देते हैं। हम चढ़े हुए ज्वरकी हालतमें कभी नहीं खिलाते। यद्यपि विषमज्वर सर्वथा शरीर के बाहर नहीं जाता, तथापि अपने समयपर एक तरहसे उतर ही जाता है। जब रोगीका बदन गरम नहीं रहता, रोगी कहता है अब ज्वर नहीं है; थर्मामीटरसे टेम्परेचर या ताप ९८, ९८॥ या ९९ डिग्री तक रहता है; तब हम रोगीको ज्वर आनेके समयसे १२ घण्टे या ६ घण्टे पहले, हर दो-दो घण्टेपर, एक-एक गोली ताज़ा जलसे निगल-वाते हैं। अगर गोली खिलाते-खिलाते ज्वर चढ़ आता है, तो गोली खिलाना बन्द कर देते हैं। ज्वर उतर जानेपर, पारीके दिन, अगर

ज्वर नित्य आता हो तो, ६ या ८ घण्टे पहले फिर उसी तरह गोली खिलाते हैं। इस तरह करनेसे हठी-से-हठी जाड़ा लगकर चढ़नेवाला बुखार अव्वल तो एक ही पारीमें—अगर १ में नहीं तो २ या ३ पारी में तो अवश्य ही छूमन्त्रकी तरह उड़ जाता है। इन गोलियोंसे हमें बहुत कुछ यश मिला है। मान लो, किसी रोगीको दिनके २ बजे बुख़ार आनेवाला हो, तो आप रातके २ बजे २ गोलियाँ निगलवा दें, पीछे ४ बजे १ गोली, फिर सवेरेके ६ बजे, फिर ८ बजे, फिर १० बजे और फिर १२ बजे १ गोली और निगलवा दें। अगर २ बजे भी ज्वर न चढ़े, तो २ बजे १ गोली और निगलवा दें। परमात्मा की दयासे उसी दिन ज्वर विदा हो जायगा। अगर उस दिन समय टालकर ज्वर ३ बजे, ४ बजे या ५-६ बजे आजाय; तो दूसरे दिन या दूसरी पारीको उपरोक्त विधिसे, जिस समय ज्वर चढ़े उससे १२ घण्टे पहले गोली खिलावें। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो तीन-तीन घण्टेपर एक-एक गोली खिलावें।

जाड़ेके ज्वरोंका यह क़ायदा है, कि रोगीको एक दो हलके दस्त करा देनेसे फौरन ही भाग जाते हैं। अनेक बार तो बिना किसी दवाके केवल दस्त करा देनेसे ही चले जाते हैं। इसलिये "स्वास्थ्य-रक्षा" के आरम्भमें ही लिखे "पंचसकार चूर्ण" की १ खुराक रोगीको, रातको सोते समय, गरम जलसे खिला देना अच्छा होगा। अगर यह न हो, तो "हरड़का मुरब्बा" खिलाकर (गुठली निकालकर), ऊपरसे पाव भर गरम दूध पिला देना चाहिये अथवा और कोई उत्तम हलकी दस्तावर दवा दे देनी चाहिये। इस तरह दस्त करा देनेसे एक या दो पारीमें बाज़ी बदकर जाड़ा लगकर आनेवाला बुख़ार—चाहे वह तिजारी और चौथैया ही क्यों न हो—काफ़ूर हो जाता है।

"वैद्यविनोद" में लिखा है—

विषमंतु निहंत्यूर्ध्वमधोवा शोधनम्परम्।
एकैका मधुनाहन्ति त्रिवृत्कृष्णा हरीतकी॥

वमन और विरेचनसे विषमज्वर नाश हो जाता है। निशोथ, पीपल और हरड़—इनमेंसे किसी एकको शहदके साथ चाटनेसे भी विषमज्वर चला जाता है। दस्त करानेके लिये ज्वरमें और ख़ासकर विषमज्वरमें, शहदके साथ निशोथका ३-४ या ८-१० माशे चूर्ण चटाना बहुत अच्छा है। "चरक" में कहा है, दस्त करानेवाले पदार्थोंमें "निशोथ" सर्वोत्तम है।

सावधानी—ये गोलियाँ गरम हैं, इनमें विष पड़ा हुआ है; इसलिये रोगीकी ताक़त देखकर कम या ज़ियादा देनी चाहिये। जल्दी आराम करनेके लिये, अधिक गोलियाँ न खिलानी चाहियें। बलवान को ६ गोलियाँ और निर्बलको ३ या २ गोलियाँ देनी चाहियें। रोगको १ दिन देरसे आराम करना भला, पर जल्दी करके उपद्रव मोल लेना अच्छा नहीं; १४-१५ सालके बालकको या तो यह गोली देनी ही नहीं; अगर देनी ही हो, तो बुख़ार आनेसे पहले आधी-आधी गोली, दिनमें ३ बार, दो-दो घण्टेमें देना अच्छा है।

अगर रोगीको गरमी बहुत लगे—प्यासका ज़ोर हो, तो मिश्री खिलानी चाहिये और ऊपरसे शीतल जल पिलाना चाहिये। मिश्रीके टुकड़े खाकर शीतल जल पीनेसे रोगीकी प्यास कम होती और बेचैनी मिटती है। अगर सिरमें दर्द हो या उबकियाँ आती हों, तो ज्वरके उपद्रवोंमें लिखे हुए उपाय ऊपरसे अलग करते रहना उचित है। अगर ज्वर न चढ़ा हो, गोली बहुत गरमी करे, तो एक बार चीनी या मिश्री का शर्बत पिलाना चाहिये।

पथ्य—इस दवासे ज्वर छोड़ जाने या उतर जानेपर दूध, भात और मिश्री खिलानी चाहिये। अगर रोगीको ज्वरने छोड़ा न हो, तो दूधमें साबूदाना पकाकर मिश्री मिलाकर देना चाहिये। ज्वर छोड़ जानेपर दूध, भात, मिश्री इन गोलियोंकी लाग है।

नोट—बहुत बार ऐसा होता है कि, एक-दो रोज़ इन गोलियोंके खिलानेसे ही जाड़ा लगना बन्द हो जाता है। एक तरहसे ज्वर चला जाता है; पर शरीर में कुछ हरारत-सी किसी-किसीको होने लगती है। अगर ऐसा हो, तो गन्नेकी गँडेरी चुसाना या "शर्करोदक" पिलाना ठीक होगा। अक्सर पित्त बाक़ी रह जानेसे ऐसा हुआ करता है। गन्नेके चूसने और शर्करोदकके पीनेसे निश्चय ही वह हरारत जाती रहती है। (देखो पृष्ठ ७२-७३)।

चौथा अध्याय

वातज्वरकी चिकित्सा

वातकोपके कारण

रूखे, हलके और शीतल पदार्थोंके सेवन करने, ज़ियादा मिहनत करने, वमन-विरेचनादि पंच कर्मोंके अतियोग, मल-मूत्र आदि वेगोंके रोकने, उपवास या व्रत करने, शस्त्र-लकड़ी वग़ैरहकी चोट लगने, बेक़ायदे स्त्री-प्रसङ्ग करने, घबराने, शोक करने, अत्यन्त खून निकलने, रातमें जागने, शरीरको टेढ़ा-तिरछा करने प्रभृति कारणोंसे वायु कुपित होकर रोग उत्पन्न करता है।

वातज्वर कैसे होता है ?

वातकारक आहार-विहारोंसे वायु कुपित होता है। कुपित वायु आमाशयमें घुसकर, आहारके सारभूत रसको दूषित करता है। उस समय रस और पसीनोंका बहना बन्द हो जाता है, अतएव पाचक-अग्नि मन्द हो जाती और जठराग्निकी गरमी बाहर निकल जाती है। उस समय वायु ही स्वतन्त्र मालिक बन बैठता और अपनी कारस्तानी करता हुआ वातज्वरकी उत्पत्ति करता है।

वातज्वरके पूर्व रूप

जब वातज्वर होनेवाला होता है, उससे कुछ पहले—प्रथम तो बिना मिहनत किये थकान-सी मालूम होती है, फिर शरीरका गिरना प्रभृति लक्षण होते हैं। इसके बाद जम्हाइयाँ आने लगती हैं।

वातज्वरके लक्षण

वेपथुर्विषमो वेगः कंठोष्ठमुखशोषणम् ।
निद्रानाशः क्षवः स्तंभो गात्राणां रौक्ष्यमेव च ॥
शिरोहृद् गात्ररुग्वक्त्र वैरस्यं गाढ़विट्कता ।
शूलाध्माने जृम्भणं च भवन्त्यनिलजे ज्वरे ॥

शरीरका काँपना, ज्वरका कभी तेज़ होना कभी मन्दा होना; कंठ, होठ, मुख या तालूका सूखना; नींद और छींकोंका न आना, शरीरमें रूखापन होना; सिर, हृदय और शरीरमें दर्द होना, मुँहका ज़ायका बिगड़ जाना या कपैला-सा हो जाना, पाख़ाना न होना और अगर होना तो सूखा-सा और थोड़ा-सा होना, जम्हाई आना, पेटमें अफारा होना और मीठा-मीठा दर्द चलना—ये लक्षण वातज्वरमें विशेषरूपसे होते हैं। ये लक्षण "सुश्रुत" में लिखे हैं।

"चरक" में लिखा है—ज्वर सदैव एक-सा न रहे, कभी घटे और कभी बढ़े; नाख़ून, नेत्र, चेहरा, मल-मूत्र और चमड़ा ये कठोर हो जायँ और लाल-लाल मालूम हों; शरीरमें स्थिर और अनस्थिर दर्द हो, पैर सो जाय, पैरोंकी पिंडलियाँ ऐंठें, घोंटू और जोड़ अलग-अलग-से जान पड़ें; कमर, पसली, पीठ, कन्धे और भुजाओं तथा छातीमें तोड़ने, दबाने, मथने, उचेलने और सूई चुभानेकी-सी पीड़ा हो; ठोड़ी जकड़ जाय, कानोंमें आवाज़ हो, मुँहका स्वाद कषैला हो, मुख, तालू और कण्ठ सूखें, प्यास लगे, सूखी ओकारियाँ आवें, छींक और डकार न आवे, अन्नरस मिला थूक आवे, खानेपर मन न हो, खाया पचे नहीं, दिलमें दुःख हो, जम्हाई आवें, शरीर नव जाय और काँपे, मिहनत विना किये थकान मालूम हो, भौंर या चक्कर-से आवें, रोगी बकवाद करे, नींद न आवे, शरीरके रोएँ खड़े हो जायँ, गरमीकी इच्छा हो, रूखी, हलकी और शीतल प्रभृति गुणवाली चीज़ोंसे ज्वर बढ़े और

इनके विपरीत चिकनी, भारी और गरम प्रभृति गुणवाली चीज़ोंसे ज्वर घटे।

"वाग्भट" भी कहते हैं,—वातज्वरमें रोएँ खड़े हो जाते हैं, दाँत खट्टे हो जाते हैं, कँपकँपी आती है और छींक नहीं आती हैं इत्यादि।

नोट—ये सब लक्षण हों या दो-चार लक्षण कम हों, तो समझ लो कि, "वातज्वर" हुआ है। लक्षणोंको कण्ठाग्र (बरज़बान) रखिये और मौक़ेपर ज्वरोंके पहचानने में काम लीजिये। जिन्हें रोगोंके लक्षण याद नहीं रहते, वे रोगोंको पहचान नहीं सकते।

वातज्वरमें नाड़ी और नेत्र प्रभृति

वातज्वरमें नाड़ीकी चाल साँप और जौंकके समान होती है। गरमीमें दोपहर या आधी रातको अगर वातज्वर होता है, तो नाड़ी धीमी-धीमी चलती है; किन्तु वर्षाकालमें, भोजन पचनेके बाद और पिछली रातको जब वायुके कोपका समय होता है, नाड़ी वातज्वरमें जल्दी-जल्दी चलती है; पर वह टेढ़ी, चपल और छूनेमें कुछ कम गरम होती है।

वातज्वरमें दस्त सूखा और थोड़ा होता है। पेशाब स्याही माइल होता है। शरीर रूखा और गरम रहता है। आवाज़ घरघराती-सी होती है। जीभ सख्त, फटी-सी, रूखी, गायकी जीभकी तरह खरदरी और हरे रंगकी होती है। जीभसे लार गिरती, मुखका स्वाद विरस और चेहरा रूखा रहता है। आँखें रूखी, धूमिल रंगकी, टेढ़ी और चंचल होती हैं।

वातज्वरके बढ़ने और पैदा होनेके समय

भोजन पचनेके बाद, सन्ध्या समय, गरमीके अन्तमें; यानी आषाढ़ में वातज्वरकी उत्पत्ति और वृद्धि होती है।

वातज्वरमें लंघन

वातज्वरमें लंघन कराना मना है। वातज्वरवालेका वायु आमसहित हो, तो लंघन कराने चाहियें; अगर वायु आम-रहित हो तो

लंघन नहीं कराने चाहियें। कफमें, आमके पक जानेपर भी, लंघन कराये जाते हैं; वातमें, आमके पक जाने पर, लंघन नहीं कराये जाते।

वातज्वरके पकनेकी अवधि

वातज्वर सात दिनमें पचता है और सातवें दिन ही अन्न दिया जाता है।

चिकित्सा

वातज्वरमें पाचन

(१) बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ और अरणी—इनको "वृहत्पञ्चमूल" कहते हैं। इनका काढ़ा बनाकर, दोष पचानेके लिए, वातज्वरमें देना चाहिये। सुश्रुत, वंगसेन और भावमिश्र सभीने वातज्वरमें इस पाचनको अच्छा कहा है।

(२) "वंगसेन" में लिखा है,—पीपरामूल, गिलोय और सोंठका पाचन-क्वाथ वातज्वरमें देना चाहिये। "भावमिश्र" कहतें हैं, इसके पीनेसे वातज्वर खड़ा नहीं रहता। इसका नाम "शुंठ्यादि-क्वाथ" है। "शार्ङ्गधर" कहते हैं, वातज्वरके पूर्ण लक्षण होनेपर सातवें दिनके बाद इसे देना चाहिये।

नोट—यह पाचन परीक्षित है। सातवें दिनसे आरम्भ करके, सुबह शाम ३ दिन तक, इसे देना चाहिये

(३) "हारीत-संहिता" में लिखा है,—बच, अजवायन, धनिया और सोंठका गरमागर्म काढ़ा रातमें पीना चाहिये। यह पाचन वात-ज्वर और वातकी पीड़ामें सुखदायी है।

(४) धनिया, देवदारु, कटेरी और सोंठ—इन चारोंका काढ़ा वात-ज्वरमें उत्तम पाचन है। वैद्यविनोदकर्त्ता लिखते हैं, यह दीपन और पाचन हैं; निश्चय ही ज्वरको नाश करता है।

नोट—कटेरी दोनों लेनी चाहियें। ज्वरवालेको पहले यही पाचन-क्वाथ देना चाहिये।

वातज्वर नाशक नुसखे

(१) बेल, कुम्भेर, पाढ़ल, सोनापाठा, अरणी, गोखरू, कटेरी, कटाई, पृश्निपर्णी, शालिपर्णी, रायसन, पीपल, पीपलामूल, कूट, सोंठ, चिरायता, नागरमोथा, खिरेंटी, गिलोय, सुगन्धवाला, दाख, जवासा और शतावर—इन २३ औषधियोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनानेकी विधिसे काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़ेसे उपद्रवों सहित वातज्वर नष्ट होता है। "भावमिश्र" लिखते हैं—यह योग सब योगों—नुसखोंसे उत्तम है। इसका नाम "दशमूलादि क्वाथ" है।

(१) चिरायता, गिलोय, सुगन्धवाला, कटाई, कटेरी, गोखरू, शालिपर्णी (सरवन), पृश्निपर्णी (पिथवन)–इन आठ दवाओंका काढ़ा वातज्वरको नाश करता है। इसका नाम "किरातादि क्वाथ" है।

(३) गिलोय, पीपरामूल और सोंठ–इनके साथ इन्द्रजौका काढ़ा बनाकर, वातज्वरमें सातवें दिन पीना चाहिये।

(४) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सुगन्धवाला, कटेरी, कटाइ, गोखरू, पृश्निपर्णी, शालिपर्णी और सोंठ—इन दशों दवाओंका काढ़ा वातज्वरको नाश करता है।

(५) बेलगिरी, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल, अरणी, खिरेंटी, रायसन, कुलथी और पोहकरमूल--इन ९ दवाओंके काढ़ेसे सन्धियों—जोड़ोंका दर्द, शिरका काँपना और वातज्वर नष्ट होता है। बङ्गसेन और भावमिश्र दोनोंने इसे अच्छा बताया है।

(६) शालिपर्णी, खिरेंटी, रास्ना, गिलोय और सरिवन—इन पाँचोंका काढ़ा सुहाता-सुहाता गरम पीनेसे तेज वातज्वर नाश हो जाता है।

(७) पीपल, अनन्तमूल, दाख, खिरेंटी और शालिपर्णी—बङ्गसेन कहते हैं—इन पाँचोंके काढ़ेसे अवश्य वातज्वर नाश होता है।

(८) दाख, गिलोय, कुम्भेर, त्रायमाण और अनन्तमूल—इन पाँचोंका काढ़ा, गुड़ मिलाकर, वातज्वर और कफज्वरमें पीना चाहिये।

(९) पीपल, लहसन, गिलोय, सोंठ, कटेरी, सेंधानमक, चिरायता और नागरमोथा—इन आठों दवाओंका काढ़ा, पथ्य भोजन करनेवाले रोगियोंके वातज्वर, कफज्वर, मन्दाग्नि, कंठरोध (कण्ठ-रुकना), हृदयका अवरोध, पसीना, रोमाञ्च, शीत और मोह (बेहोशी) सबको नाश करता है।

(१०) चिरायता, नागरमोथा, नेत्रवाला, दोनों कटेरी, गिलोय, गोखरू, सोंठ, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी और पोहकरमूल—इन ग्यारह दवाओंका काढ़ा वातज्वरवालेको पिलाना चाहिये। वैद्यविनोदकर्त्ताने इसका नाम "भूनिम्बादि क्काथ" लिखा है। सचमुच ही यह उत्तम है।

(११) जवासा, सोंठ, कुटकी, पाठा, कचूर, अड़ूसा और अरण्डकी जड़—इन सातोंका काढ़ा पीनेसे श्वास और खाँसी तथा शूल समेत वातज्वर नाश होता है।

(१२) सोंठ, नीमकी छाल, धमासा, पाढ़, कचूर, अड़ूसा, अरण्ड की जड़ और पोहकरमूल—इन आठोंको जौकुट करके और काढ़ा बनाकर पीनेसे वातज्वर नाश होता है।

(१३) ख़स, पृश्निपर्णी, सोंठ, चिरायता, मोथा, जवासा, दोनों कटेरी, गिलोय और बड़ा गोखरू—इन दसोंको तीन-तीन माशे लेकर जौकुट कर लो, पीछे काढ़ा बनाकर शीतल कर लो। शीतल होनेपर ३ माशे शहद मिलाकर पिलाओ। अगर ज्वरके पक जानेपर यह काढ़ा दिया जाय, तो तीन-चार दिनोंमें ही वातज्वरको नाश कर देता है। इसको दोनों समय पिलाना चाहिये। यह परीक्षित नुसख़ा है।

(१४) धनिया, लालचन्दन, नीमकी छाल, गुरुच और पद्माख—इनको ६-६ माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें औटाओ। आधापावके क़रीब जल रहनेपर मल-छानकर शीतल कर लो। पीछे शहद मिलाकर दोनों समय पिलाओ। इसके दोनों वक्त पिलानेसे वातज्वर और पित्तज्वर दोनों नाश होते हैं। यह भी परीक्षित है।

(१५) कल्पतरु रस—शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, शुद्ध वत्सनाभविष १ तोला, शुद्ध मैनसिल १ तोला, शुद्ध सोनामक्खी १ तोला, शुद्ध सुहागा १ तोला, सोंठ २ तोले, पीपल २ तोले और कालीमिर्च १० तोले—इन ६ चीजोंको तैयार कर लो। पहले पारे और गन्धकको छोड़कर, वत्सनाभ प्रभृति सातों दवाओंको, सिलपर महीन पीसकर कपड़छन कर लो। इसके बाद इन सातोंके छने हुए चूर्ण को तथा पारे और गन्धकको खरलमें डालकर ६ घण्टे तक लगातार खरल करो। बस, यही "कल्पतरु-रस" है।

"कल्पतरु-रस" कल्पवृक्षके समान गुण रखता है। यह वात और कफके रोगोंको नाश करता है। इसकी मात्रा १ रत्ती तककी है। कमजोरोंको दो चावल भर देना चाहिये।

अदरखके रसके साथ खानेसे वातज्वर, कफज्वर, श्वास, खाँसी, मुँहसे पानी गिरना, जाड़ा लगना, मन्दाग्नि और विशूचिका (हैजा) नष्ट होता है। इस रसकी नास देनेसे कफ सम्बन्धी और वात सम्बन्धी सिरकी वेदना आराम होती है तथा प्रलाप, मोह और छींक न आना ये सब भी आराम होते हैं।

(१६) त्रिपुरभैरव रस—शुद्ध वत्सनाभ विष १ भाग, सोंठ २ भाग, पीपल ३ भाग, मिर्च ४ भाग, ताम्बेकी भस्म ५ भाग और शुद्ध शिङ्गरफ या हिंगलू ६ भाग—इन छहोंको एकत्र करके, खरलमें डालकर, अदरखके रसमें खरल करनेसे "त्रिपुरभैरव रस" सिद्ध होता है। यह ज्वरको नाश करता है। इसकी मात्रा आधी रत्ती या ४ चावलकी है।

नोट (१)—पारा, गन्धक, विष, मैनसिल, सोनामक्खी, सुहागा, हिंगलू ये सब बिना शोधे कभी मत लेना। इन सबके शोधनेकी विधि आगे इसी पुस्तकके अन्तमें देखिये।

(२)—प्रथम तो किसीको एकाएकी रस देना ही नहीं चाहिये; क्योंकि आजकलके लोग धातुक्षीणता और गरमी सोज़ाकके कारणसे इनको बर्दाश्त नहीं कर सकते और यदि दिये बिना काम न चलता दीखे, तो मात्रा

कमती देनी चाहिये। शास्त्रकारोंके समय और अबके समयमें बड़ा फ़र्क़ हो गया है। जिसकी मात्रा रत्ती लिखी है, उसे दो चावलभर देना चाहिये। पीछे यदि रोगी सह जाय, लाभ दीखे तो धीरे-धीरे मात्रा बढ़ा सकते हो। इस तरह काम करनेसे दुःख खड़ा नहीं होता।

वातज्वरमें फुटकर इलाज

वातज्वरमें अक्सर जाँघोंमें दर्द, पसलियों और हड्डियोंमें पीड़ा, ज़ुकाम, श्वास, मुँह सूखना, अरुचि, मुखका स्वाद ख़राब रहना, नींद न आना, पेटमें दर्द, पेट फूलना, कानोंमें आवाज़ होना और सूखी खाँसी—ये तकलीफ़ें होती हैं। असल औषधि देते हुए इनका अलग-अलग उपाय करनेसे रोगीको बड़ा सुख होता है। इसलिये वैद्यको इनकी शान्तिकी चेष्टा करनी चाहिये।

वालूका स्वेद

अगर जाँघोंमें दर्द, पसलियों और हड्डियोंमें वेदना, ज़ुकाम, श्वास, बहरापन हो; तो ऐसे लक्षणोंवाले वातज्वर अथवा कफ़ज्वरमें वैद्यको स्वेद (पसीना) देना चाहिये; क्योंकि स्वेद—पसीना शरीरकी रस बहाननेवाली नाड़ियोंको नरम करके, अग्निको आमाशयमें पहुँचाकर, कफ और वायुके बन्धनको तोड़कर ज्वरको नाश करता है।

वालूको ठीकरोंमें गरम करके, कपड़ेमें बाँधकर, उसकी पोटली बना लो। पीछे काँजीमें बुझाकर बारम्बार स्वेद दो। अथवा एक ठीकरेमें वालूको खूब तपाकर रोगीके पास रखो। रोगीको कपड़ा उढ़ाकर, तपे हुए वालूपर काँजीके छींटे मारो। इस तरह बारम्बार करो। यह वालूका स्वेद वातकफके रोग, सिरका दर्द और शरीरका टूटना प्रभृतिमें बड़ा लाभदायक है। यह कम्प, सिर-दर्द, हृदयका दर्द, शरीरका दर्द, जँभाई, पाँव सोना, पिंडलियोंका फूटना, शरीरका जड़ हो जाना, ठोड़ीका जकड़ जाना और रोमोंका खड़ा हो जाना—इन सबको शान्त करता है।

कवल

बिजौरे नीबूकी केशर, सेंधानोन और कालीमिच—इनको एकत्र पीसकर, इनका कवल मुँहमें रखनेसे वात सम्बन्धी और कफ सम्बन्धी मुँहके रोग, मुँहका सूखना, जड़ता और अरुचि नाश होती है।

नोट—मन्या, मस्तक, कान, मुख और नेत्रोंके रोग, प्रसेक, कण्ठरोग, मुख-रोग, हुल्लास, तन्द्रा, अरुचि और पीनस—इन रोगोंमें कवल धारण करनेसे विशेष-रूपसे लाभ होता है। कल्क आदिक पदार्थको मुखमें रखकर इधर-उधर फिरानेको "कवल" कहते हैं। कवल में १ तोला भर कल्क लेना चाहिये। पाँच सालकी उम्रके बाद गण्डूष (कुल्ले) और कवलका प्रयोग करना चाहिये।

दूसरा कवल

मिश्री और अनारको पीसकर, उसकी गोली बनाकर, मुखमें रखने अथवा दाख और अनारका कल्क (लुगदी) मुँहमें रखनेसे मुख-शोष और मुखकी विरसता दूर होती है।

तीसरा कवल

दाख और आमलोंका कल्क बनाकर मुखमें रखने और उससे मुँहके भीतरका भाग घिसनेसे, लार गिरकर, तालू और गलेका शोष दूर होता है तथा मुखकी विरसता नाश होकर भोजनमें रुचि होती है।

नोट—गीली या सूखी दवाको सिलपर भाँगकी तरह पीस लेना चाहिये। उस पिसी हुई लुगदीको ही "कल्क" कहते हैं। सूखी दवा विना जल डाले नहीं पिस सकती, इसलिये जल डालकर पीसनेमें हर्ज नहीं। कल्कमें शहद, घी, तेल आदि डालने हों तो दूने डालने चाहियें अथवा १६ माशे डालने चाहियें। मिश्री और गुड़ बराबर डालने चाहियें तथा पतले पदार्थ चौगुने डालने चाहियें।

निद्रानाशका इलाज

नींद न आती हो तो निम्नलिखित उपाय करने चाहियें:—

(१) भुनी हुई भाँगके चूर्णको शहदमें मिलाकर रातमें खाओ।
(२) आठ माशे पीपलामूलका चूर्ण गुड़में मिलाकर खाओ।
(३) काकजंघा (मसी) की जड़ सिरपर धारण करो।
(४) मकोयकी जड़को सूतमें बाँधकर निरंतर मस्तकपर धारण करो।
(५) भाँगको बकरीके दूधमें पीसकर पाँवोंपर लेप करो।

(६) सिर और पैरोंमें गायका दूध मलो अथवा थोड़ी देर तक गरम पानीमें पैर डुबाये रखो।

नोट—नींद लानेके लिए ये सब उपाय परीक्षित हैं। नींद न आनेके कारण, नींदसे लाभ-हानि और निद्रा आनेके ज़ियादा उपाय पीछे पृष्ठ ११६-१२१ में लिख आये हैं।

पेटमें शूल और अफारा

देवदारु, सफेद वच, कूट, शतावर, हींग और सेंधानमक—इन सबको नीबूके रसमें पीसकर जरा गरम करके, पेटपर लेप करनेसे पेटका दर्द और अफारा आराम होता है।

कानमें आवाज़ होना

पीपल, हींग, वच और लहसन—इन चारोंको कड़वे तेलमें पकाकर, उस तेलको कानमें डालनेसे, कानमें शब्द होनेकी तकलीफ मिट जाती है।

सूखा खाँसी

पीपल, सुगन्धित वच, अजवायन और पान, (ताम्बूल),—इनके साथ पीपलको मुंहमें रखनेसे सूखी खाँसी नष्ट होती है।

रोगनाशक पथ्य

(१) श्रम, उपवास और वायुसे पैदा हुए ज्वरोंमें, रसौदन या मांस-रसयुक्त भात हितकारी है। रसौदन आमको पचाता है।

(२) अगर वातज्वरमें मल सूख गया हो, क़ब्ज़ हो, तो मूंग और आमलोंका यूष देना चाहिये।

(३) अगर वातज्वरमें मूत्राशय, पसली और सिरमें दर्द हो; तो गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलोंकी ज्वरनाशक पेया देनी चाहिये।

(४) अगर वातज्वरमें श्वास, खाँसी और हिचकी हों; तो लघु या वृहत् पंचमूलके काढ़ेसे सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलोंकी पेया दो।

(५) जल औटाकर देना चाहिये; क्योंकि कच्चा शीतल जल ज्वरको बढ़ाता है। दिनमें सोना, हवा, मैथुन, मिहनत, भारी भोजन, शीतल जल प्रभृति अपथ्योंसे रोगीको बचाना चाहिये।

(६) वातज्वरमें सेरका आधा सेर जल अच्छा होता है। सेरका आध सेर रहा हुआ जल वातनाशक होता है। ऋतुका भी खयाल करना जरूरी है। जल-सम्बन्धी बात पीछे पृष्ठ १०६-११५ में लिख आये हैं।

काढ़ेकी मात्रा

वैद्यको दोष, अग्नि, बल, अवस्था, व्याधि, औषधि और कोठेका विचार करके मात्रा नियत करनी चाहिये। फिर भी; हम, मामूली तौरसे, मात्रा बतलाये देते हैं। काढ़ेकी सब दवाएँ, अगर अलग-अलग वज़न न लिखा हो, तो बराबर-बराबर लेनी चाहियें। सबका वज़न मिलाकर जवानके लिए २ तोलेसे ४ तोले तक होना चाहिये; यानी जवानके लिये सब दवाएँ कम-से-कम २ तोले लेनी चाहियें (प्रत्येक दो-दो तोले नहीं) और ज़ियादा-से-ज़ियादा ४ तोले लेनी चाहियें। बालकको ३ माशेसे १ तोला तक लेनी चाहिये। काढ़ेकी दवाओंको जौकुट करके ३ घण्टे तक पानीमें भिगो देना चाहिये; पीछे जोश देना चाहिये। वातकफके रोगमें काढ़ा गरमागर्म और पित्तके रोगमें शीतल करके पिलाना चाहिये। शहद हमेशा काढ़ेके शीतल होनेपर मिलाना चाहिये। काढ़ेके सम्बन्धकी और बातें इसी भागके पृष्ठ १२६-१२८ में देखनी चाहियें। दवा खानेके क़ायदे और समय जाननेके लिए १२५-१२६ पृष्ठ देखने चाहियें।

सूचना

वातज्वरमें श्वास, खाँसी, हिचकी, दस्तक़ब्ज़, अरुचि प्रभृति कोई उपद्रव हो और उस या उन उपद्रवोंके लिये किसी चलते हुए नुसख़े की ज़रूरत हो; तो आप पुस्तकके अन्तमें देखिये। वहाँ ज्वरके दसों उपद्रवों और सिर दर्द, पसलीका दर्द, निद्रानाश प्रभृतियोंमेंसे हरेकपर दर्जनों उत्तमोत्तम प्रयोग लिखे गये हैं। पेया और यूष वग़ैरह बनानेकी विधि और दस्त लानेवाली फलवर्ति प्रभृति अनेक आवश्यक चीज़ें पीछे पृष्ठ ७४—८२ में लिखी हैं।

पाँचवाँ अध्याय

पित्तज्वरकी चिकित्सा

पित्तकोपके कारण

गरम, खट्टे, नमकीन, खारी, चरपरे और बदहज़मी करनेवाले पदार्थोंके जियादा खाने, तेज़ धूपमें या आगके सामने रहने, अधिक मिहनत करने, क्रोध करने और कभी कम और कभी अधिक खानेसे पित्त कोप करता है। पित्तके कुपित होनेसे पित्तज्वर प्रभृति पित्तके रोग होते हैं।

पित्तज्वर कैसे होता है ?

ऊपर लिखे कोपकारक आहार-विहारोंसे दूषित हुआ पित्त, आमाशयमें जाकर, आहारके सारभूत रसको दूषित करता है। उस समय रस और पसीनोंका प्रवाह रुक जाता है तथा पित्तके पतला होनेके कारण जठराग्नि मन्दी हो जाती है और उसकी गरमी बाहर निकलने लगती है; यानी पित्त गरमीको निकालकर, अकेला मालिक बनकर पित्तज्वर उत्पन्न करता है*।

---

* कहते हैं :—

पित्तं पंगु कफः पंगुः पंगवो मलधातवः।
वायुना यत्रनीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत्॥

पित्त लूला है, कफ लूला है, मल और धातु भी लूले हैं। इसलिये वायु उनको जहाँ ले जाता है वहाँ वे बादलोंकी तरह चले जाते हैं। जब यही बात है तब सवाल पैदा होता है कि, लूला पित्त कोठेकी अग्निको बाहर कैसे ले जाता है ? बेशक पित्त लूला है, किन्तु वह वायुकी मददसे कोठेकी अग्निको बाहर ले

पित्तज्वर के पूर्वरूप

पित्तज्वरके आनेसे कुछ पहले, पहले ता थकान-सी जान पड़ती है और पीछे आँखोंमें जलन होती है।

पित्तज्वरके लक्षण

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः।
कण्ठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥
प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्च्छादाहो मदस्तृषा।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक् पैत्तिके भ्रम एवच ॥

ज्वर तेज़ हों, दस्त पतला हो,⊛ नींद कम आवे, वमन या क़य हो अथवा उबकाइयाँ आवें ❋, कण्ठ, होठ, नाक और मुँह पक जायँ, पसीना आवे, रोगी बकवाद करे, मुखका स्वाद कड़वा रहे, बेहोशी हो, पेट या सारे शरीरमें जलन हो, नशा-सा जान पड़े, प्यास ज़ियादा

जाता है, क्योंकि कोई भी रोग केवल एक दोषसे नहीं होता। कहा है:—

द्रव्यमेकरसं नास्ति न रोगऽप्येकदोषजः।
एकस्तु कुपितो दोष इतरानपि कोपयेत् ॥

संसारमें कोई चीज़ एक रसवाली नहीं है और रोग भी एक दोषसे नहीं होता। एक दोषके कुपित होनेसे दूसरे दोष भी कुपित हो जाते हैं।

⊛ पित्तज्वरमें अतिसार नहीं होता, किन्तु पित्तके पतले होनेके कारण पतला दस्त होता है। अतिसार तो ज्वरका उपद्रव है। ज्वरमें दस्तोंको फौरन ही नहीं रोकना चाहिये। अगर कई दिन होनेसे भी बन्द न हों, तो अतिसारकी तरह साधना करनी चाहिये; किन्तु ज्वर और अतिसारकी दवाएँ मिलाकर न देनी चाहियें, क्योंकि ज्वरकी दवाएँ भेदक और अतिसारकी दवाएँ स्तम्भक होती हैं। ये परस्पर रोग बढ़ानेवाली हैं।

❋ जब पित्त कफके स्थानमें जाता है, तब वमन होती है।

लगे, पाखाना, पेशाब और नेत्र पीले हों तथा भौंर या घुमेर-सी आती हों।

"चरक" में लिखा है—ज्वरका एक साथ चढ़ना और बढ़ना, शरीरमें वात-कफका प्रभाव (सर्दी वग़ैरह) न रहना, मुँहका स्वाद कड़वा होना, नाक-मुख-कण्ठ-होठका पकना यानी इनका रङ्ग वैसा ही हो जाना जैसा फोड़ा वग़ैरहके पकनेपर हो जाता है; प्यास, भ्रम, मोह, मूर्च्छा होना, पित्तकी हरी-हरी वमन होना, अतिसार होना, भोजनमें अरुचि होना, पसीने आना, ज्ञानयुक्त प्रलाप—बकवाद* करना, शरीर में लाल-लाल चकत्ते उठना; नख, नेत्र, मुख, मूत्र, मल और चमड़ेका रङ्ग पीला हल्दीका-सा या हरा-सा होना, अत्यन्त गरमी लगना, एकदमसे दाह या जलन होना और शीतल वस्तुओंकी इच्छा होना—ये लक्षण "पित्तज्वर" में होते हैं।

पित्तज्वरके कारणरूप गरम और नमकीन प्रभृति पदार्थोंसे ज्वर बढ़ता है और उनके विपरीत शीतल और मीठे प्रभृति पदार्थोंसे घटता है।

कन्टिन्यूड फीवर

जिसको वैद्यकमें पित्तज्वर और यूनानी हिकमतमें सफ़रावी तप कहते हैं, उसीको अँगरेज़ीमें कण्टिन्यूड फीवर (Continued Fever) कहते हैं। यह ज्वर दो तरहका माना गया है—(१) कामन कण्टिन्यूड (Common Continued), (२) आरडेण्ट कण्टिन्यूड (Ardent Continued)। कामन कण्टिन्यूडमें जीभ खुश्क रहती है, शरीर गरम रहता है,—पेशाब कम उतरता है और पसीना नहीं आता तथा बिना शीत लगे ज्वर चढ़ता है।

---

* पित्तके कारणसे जो प्रलाप होता है, उसमें रोगीको सब ज्ञान रहता है। वह समझता है कि, मैं वृथा आनतान बकता हूँ; किन्तु वातकफके प्रलापमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता, वह बेहोशीमें बकता है। मूर्ख वैद्य पित्तके प्रलापको भी वातकफ का समझकर गरम दवाएँ दे-देकर रोगीको मार डालते हैं। पहचान साफ़ है।

आरडेण्ट कण्टिन्यूडमें—चेहरा लाल हो जाता है, सिर घूमता है, दीपककी रोशनी और आवाज़ ये बुरे लगते हैं, शरीर बहुतही गरम होता है, नाड़ीकी चाल बहुत तेज़ होती है, हड़फूटन होती है, क़यमें पित्त निकलता है, कभी दस्तक़ब्ज़ रहता है, कभी पित्तके दस्त आते हैं, पेशाब कम उतरता है और रङ्गतमें लाल या पीला होता है, सिरमें दर्द होता हैं, जीभ पीली या लाल हो जाती है,—पर किनारोंपरसे मैली रहती है, कभी-कभी भ्रम होता है। इसमें ऊपरवाले कामन कण्टिन्यूड फीवरसे गरमी बहुत अधिक रहती है।

ये दोनों तरहके ज्वर मौसम बदलने या जियादा गरमी होने या धूपमें फिरने, अधिक मिहनत करने, बहुत नशा करने, पाख़ाना-पेशाब रोकने और रञ्ज-शोक या फ़िक्र करनेसे होते हैं।

पित्तज्वरमें नाड़ी और नेत्र प्रभृति

पित्तज्वरमें नाड़ी मेंढ़क और कव्वा प्रभृतिकी तरह फुदक-फुदक कर बड़ी तेज़ीसे जल्दी-जल्दी चलती है और कठिनाईके साथ जल्दी-जल्दी फड़कती है। पित्तका समय न होनेसे कुछ धीमी हो जाती है, किन्तु शरद् ऋतु, भोजन पचनेके समय, दोपहर और आधी रातको—पित्तके समयमें—इतनी तेज़ीसे चलती है कि, बयान नहीं कर सकते। ऐसा जान पड़ता है, मानो नाड़ी मांसको चीरकर बाहर निकल जायगी।

पित्तज्वरमें दस्त पतला और पीला होता है। पेशाब भी पीला होता है। आवाज़ साफ़ होती है। शरीर गरम और कुछ पीला होता है। जीभ लाल, कड़वी, जली हुई-सी, दाहयुक्त और काँटोंसे घिरी हुई होती है। मुखका स्वाद कड़वा या चरपरा रहता है। चेहरा लाल, पीला और गरम होता है। नेत्र पीले, नीले, लाल और गरम होते हैं तथा चिराग़की रोशनीको बर्दाश्त करनेमें असमर्थ होते हैं।

पित्तज्वरके पैदा होने और बढ़नेका समय

पित्तज्वर भोजन पचनेके समय, दोपहरके समय, आधीरातको और शरद् ऋतुमें प्रकट होता और बढ़ता है।

पित्तज्वरमें लंघन

पित्तज्वरमें रोगीका बलाबल देखकर लंघन कराने चाहियें। रोगीके बलके विरुद्ध लंघन कराना हानिकारक है। रोगीको २-३ लंघन कराकर हलका पथ्य देना चाहिये। ज्वरकी हालतमें भी रोगीको पथ्य, पर अत्यन्त हलका पथ्य, देनेकी सलाह सभी आचार्योंने दी है। पित्तज्वरमें औटाकर शीतल किया पानी रोगीको पिलाना चाहिये। लंघनमें जल देना मना नहीं है। पर हाँ, ज्वरमें थोड़ा जल पिलाना हित है। बहुत जल कफ और पित्त हो जाता है।

चतुर वैद्यको इसी भागके ८३—१०५ के पृष्ठ देखकर और बुद्धिसे विचारकर काम करना चाहिये।

पित्तज्वर पकनेकी अवधि

पित्तज्वर दस दिनमें पकता है। ग्यारहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनेका नियम है। कच्चे ज्वरमें रोगनाशक औषधि न देनी चाहिये। कच्चे ज्वरमें औषधि देनेसे ज्वर प्रचण्ड रूप धारण करता है। ज्वरके आमसहित—कच्चा होनेपर भी सातवें दिन पाचन देनेका नियम है। अगर ज्वर आमरहित यानी पका हो, तो शमन औषधि देनेका विधान है। अगर रोगी कमजोर हो या थोड़े दोषवाला हो; तो पहले ही शमन औषधि देनेका विधान है।

चिकित्सा

पित्तज्वरमें पाचन

(१) कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, पाढ़ी और कायफल—इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ेकी विधिसे काढ़ा बनाना चाहिये।

पक जानेपर मल-छान, मिश्री या चीनी मिलाकर और शीतल करके पी जाना चाहिये। "भावमिश्र" लिखते हैं,—यह "तिक्तादि काथ" पित्तज्वरपर अच्छा पाचन है।

नोट—"शार्ङ्गधर" महोदय लिखते हैं,—तेज़ पित्तज्वरके दस दिन बीतनेपर अगर यह पाचन दिया जाय, तो पित्तज्वर नाश हो जाय। "वंगसेन" भी इससे पित्तज्वरका दूर होना लिखते हैं।

यह पाचन परीक्षित है। दसवें दिनसे आरम्भ करके ३ दिन तक देना चाहिये। इससे पित्तज्वर पच जाता है।

(२) हल्दी, नीमकी छाल, गिलोय, धनिया और सोंठ—इन पाँचोंको समान-समान लेकर, काढ़ा बनाकर और उसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे पित्तज्वरमें मनुष्यको सुख होता है।

पित्तज्वर नाशक नुसखे

(१) पित्तपापड़ा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धनिया और फूलप्रियंगू—इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, चीनी मिलाकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्त सहित पित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "पर्पटादि काथ" है।

(२) दाख, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, अमलताश और पित्तपापड़ा–इन छहोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे, पित्तज्वर, मुँहका सूखना, आनतान बकना, पीड़ा, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास और रक्तपित्त ये सब शान्त होते हैं। यह काढ़ा दस्तावर है। इसका नाम "द्राक्षादि काथ" है।

नोट—यह नुसख़ा हमारा कितनी ही बारका आज़माया हुआ है। इसमें हम सुगन्धवाला और मिलाते हैं। इस तरह ये सात दवाएँ हो जाती हैं। अमलताशका गूदा, कुटकी और हरड़को तीन-तीन माशे लो और शेष चार दवाओंको छै-छै माशे लो। कुल २॥ तोले दवाएँ लेकर, काढ़ा बनाकर, दोनों समय पिलानेसे निश्चय ही लाभ होता है।

(३) पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धनिया और महुआ—इन चारोंके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद डालकर पीनेसे—पित्तज्वर, दाह और घोर

प्यास नष्ट हो जाती है। इस काढ़ेका नाम "पटोलादि काथ" है।

(४) गिलोय, आमले और पित्तपापड़ा—इन तीनोंको समान-समान लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे दाह, शोष—मुँह सूखना और भ्रम सहित पित्तज्वर नाश होता है। यह "गुडूच्यादि काथ" है।

(५) पित्तपापड़ेके काढ़ेमें पीपरका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे पित्त-ज्वर शान्त होता है।

(६) पित्तपापड़ा, लालचन्दन, ख़स और सोंठ—इन चारोंका काढ़ा भी पित्तज्वरको नाश करता है। परमोत्तम नुसखा है।

नोट—शार्ङ्गधरने "ख़स" के स्थानमें "नेत्रवाला" लेना लिखा है।

(७) केवल पित्तपापड़ेका काढ़ा पीनेसे दाह, शोष और भ्रम सहित पित्तज्वर नाश होता है। अगर पित्तपापड़ेके साथ लालचन्दन, ख़स और सुगन्धवाला भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या है!

(८) सुगन्धवाला, लालचन्दन, ख़स, नागरमोथा और पित्तपापड़ा—इनका पकाया हुआ जल अत्यन्त शीतल करके पिलानेसे प्यास, वमन, दाह और ज्वर शीघ्र ही नाश होते हैं। इसका नाम "ह्रीवेरादि क्वाथ" है।

नोट—यह काढ़ा भी आज़माया हुआ है। अगर दाह बहुत हो, तो इसे अवश्य दो। इन पाँचों दवाओंको ६-६ माशे लेकर १ पाव जलमें भिगो दो। पीछे काढ़ेकी रीतिसे औटाओ। आधा रहनेपर उतारकर और खूब शीतल करके १ तोला मिश्री मिलाकर पिलाओ। अगर दो तीन दिनमें इससे लाभ न हो, तो काढ़ा मत बनाओ। रातको इन्हीं पाँचों दवाइयोंको भिगो दो। सवेरे मल-छान कर और १ तोला मिश्री मिलाकर पिला दो। आगे नं० १५, १६ और १७ में ऐसे ही "हिम" लिखे हैं। जब औटाये हुए काढ़ेसे लाभ न हो, दाहका ज़ोर हो, "हिम" देना चाहिए।

(९) चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजौ, गिलोय, सुगंधवाला, धनिया और बेलगिरी—इनका काढ़ा बना, मल-छान शीतल कर, शहद मिलाकर पिये, तो मलभेद, श्वास, खाँसी, रक्तपित्त और पित्तज्वर नाश हो। इसका नाम "भूनिम्बादि क्वाथ" है।

(१०) दाख, लालचन्दन, कमल, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, आमले, सुगन्धवाला, ख़स, लोध, इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा, फालसे, फूलप्रियंगू, जवासा, अडूसा, मुलेठी, बेर, चिरायता और धनिया—इन २० औषधियोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे पित्तज्वर, प्यास, दाह, प्रलाप, आनतान बकना, रक्तपित्त, भ्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, वमन, शूल, मुख-शोष, अरुचि, खाँसी, श्वास और उबकाई—ये सब नाश होते हैं। इस काढ़ेका नाम "महाद्राक्षादि क्वाथ" है।

(११) रातके समय "धनिया" भिगो दो। सवेरे काढ़ा बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इससे थोड़े ही समयमें भीतरके दाह समेत पित्तज्वर नष्ट होता है। इसे "धान्याक क्वाथ" कहते हैं।

(१२) गिलोय, चिरायता, सुगन्धवाला, ख़स, मोथा, निशोथ, आमले, दाख, अडूसा और पित्तपापड़ा—इन दसोंका काढ़ा बनाकर शहदके साथ, प्रातःकालमें पीनेसे उपद्रव सहित घोर पित्तज्वर नष्ट होता है।

(१३) जवासा, अडूसा, कुटकी, पित्तपापड़ा, फूलप्रियंगू और चिरायता—इन छहोंके काढ़ेमें मिश्री या खाँड़ डालकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्त सहित पित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "दुस्पर्शादि क्वाथ" है।

नोट—यह नुसख़ा आज़माया हुआ है। इन सब दवाओंको पाँच-पाँच माशे लेकर, काढ़ा बनाकर, १ तोला मिश्री डालकर पिलाओ।

(१४) गिलोयका सत २ माशे बूरेके साथ खानेसे पित्तज्वर नाश होता है।

(१५) गिलोयको जौकुट करके, छै गुने जलमें, रातके समय, मिट्टीकी कोरी हाँड़ीमें भिगो दो; सवेरे उस जलको छानकर मिश्री मिलाकर पी जाओ। इसे "हिम" या "शीत कषाय" अथवा "ठंडा काढ़ा" कहते हैं। इससे पित्तज्वर नष्ट होता है।

(१६) अडूसेको रातके समय ६ गुने जलमें, मिट्टीकी कोरी हाँड़ीमें भिगो दो। सवेरे मल-छानकर, उसमें मिश्री या चीनी मिलाकर पिलाओ। इससे खाँसी, रक्तपित्त और पित्तज्वर नाश होता है। इसे "वासाहिम" कहते हैं।

(१७) आमले और गिलोय—इन दोनोंको, रातके समय, कोरी हाँड़ीमें, दवासे ६ गुना जल डालकर भिगो दो। सवेरे छानकर, उस पानीमें खाँड़ या शहद डालकर पिला दो। इस उपायसे पित्तज्वर, प्यास, दाह, भ्रम और मूर्च्छा प्रभृति उपद्रव शान्त होते हैं।

(१८) सफेद कमलकी पंखड़ी, मुलहटी और मिश्रीका काढ़ा पित्तज्वरको नाश करता है।

(१९) धनिया, अडूसा, आमला, काले मुनक्के और पित्त-पापड़ा—इन पाँचोंको ढाई तोले लेकर, मिट्टीकी हाँड़ीमें, पावभर जलमें रातको भिगो दो। सवेरे इसका जल छानकर रोगीको पिलाओ; इससे पित्तज्वरका दाह और प्यास दोनों आराम होते हैं।

(२०) धनिया रातके समय जलमें भिगो दो। सवेरे जलको छानकर, उसमें १ तोला मिश्री डालकर पिलाओ। इससे दाह नाश होता है।

(२१) हरड़को पीसकर, शहदमें मिलाकर रोगीको चटाओ। इस उपायसे दाह, खाँसी, ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास और वमनमें निश्चय ही लाभ होता है।

(२२) सफेद कमलकी पाँखड़ी, मुलहटी और मिश्रीका काढ़ा शीतल करके पीनेसे पित्तज्वर आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—जब २-३ दिन पित्तज्वरनाशक औटाये हुए काढ़े देनेसे लाभ न हो, दाह और प्यासका ज़ोर बना रहे, तब नं० ८ को 'हिम' की रीतिसे बिना औटाये पिलाओ अथवा नं० १५-१६-१७-१८ प्रभृतिके हिम पिलाओ।

काढ़ा बनाने की विधि

काढ़ा बनाने और पिलानेकी विधि और काढ़ेमें शहद या खाँड़

वगैरह मिलानेका नियम जानना चाहो; तो इसी भागके पृष्ठ १२५-१२६ तथा पृष्ठ १६३ में "काढ़ेकी मात्रा" शीर्षक नोट देखो।

दाहनाशक ऊपरी उपाय

"सुश्रुत उत्तरतंत्र" अध्याय ३६ में लिखा है:—

दाहाभिभूते तु विधिं कुर्याद्दाहविनाशनम्।

हर तरहके बुखारमें, दाह होनेपर, अवश्य दाहनाशक उपाय करना चाहिये।

(१) दाहवालेको अगर बहुत कष्ट हो, तो नीमके पत्तोंका जल पिलाकर वमन करा दो। इस उपायसे बड़ी जल्दी लाभ होता है। अगर रोगी ताक़तवर हो, वमन सह सकता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते बलाबल अनुसार एक या दो तोले लेकर महीन पीस लो। पीछे पाव डेढ़ पाव शीतल जलमें भाँगकी तरह छान लो। उस पानीको रोगीको पिलाकर, अँगुली डालकर, वमन करा दो। अगर ज़रूरत समझो, तो ६ माशे शहद और २ तोले शक्कर भी मिला दो। इससे वमन होते ही लाभ होगा। परीक्षित उपाय है। अगर रोगी वमनके योग्य न हो, वमनसे बहुत ही घबड़ाता हो, तो ऊपर नं० २१ में लिखा हरड़ और शहदका प्रयोग करो। हरड़का चूर्ण चार या छै माशे लेकर शहदके साथ २-३ बार चटाओ।

(२) नीमके पत्तोंका रस निकालकर और उसमें झाग उठाकर, दाहवाले के शरीरपर मलो; अवश्य दाह नाश होगा। परीक्षित है।

(३) ढाकके नर्म-नर्म पत्तोंको नीबूके रसमें पीसकर, दाहवालेके शरीरपर या जहाँ-जहाँ दाह हो, लेप कर दो।

(४) बेरके पत्तोंको नीबूके रसमें पीसकर लेप करो।

(५) नीमके पत्तोंको भी नीबूके रसमें पीसकर लगानेसे लाभ होता है। नीमके नर्म-नर्म पत्तोंके झागोंके लगानेसे हमने कई बार अपूर्व चमत्कार देखा है।

(६) सौ वारका धोया हुआ घी शरीरमें मलनेसे दाहमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(७) वेरके पत्तोंको पीसकर एक वाल्टी जलमें घोल दो। पीछे मथ-मथकर झाग उठाओ, इन झागोंको दाहवालेके शरीरपर लगाओ।

(८) उत्तम मनोहर निर्मल आकाशके समान साफ, चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल, जिसमें चन्दन और खस वग़ैरहके जलका छिड़काव होरहा हो, फव्वारे चल रहे हों—ऐसे घरमें पित्तज्वरके दाहवालेको सुलाओ।

(९) जिनके स्तनोंपर कपूर चन्दनादिका लेप हो रहा हो, नीले रेशमी कपड़े पहने हों, गलेमें फूलोंके हार पड़े हों, हीरा पन्ना प्रभृति रत्नोंके गहने जिन्होंने पहन रखे हों, जो मन्द-मन्द हँस रही हों,—ऐसी स्त्रियोंको शरीरसे लिपटाने से भयङ्कर दाह शान्त होता है; पर रोगीके मनमें मैथुनकी इच्छा होते ही, स्त्री या स्त्रियोंको फौरन अलग कर दो।

(१०) पित्तज्वर रोगीको सीधा सुलाकर, उसकी नाभिपर काँसी या ताम्बेका एक गहरा वासन रक्खो। उसमें खूब शीतल जलकी धारा ऊपरसे इस तरह ढालो कि, पानी वर्तनमें ही पड़े। इस उपायसे तत्काल दाह और ज्वर शान्त हो जाता है।

(११) काँजीमें कपड़ा भिगोकर, रोगीको उढ़ाओ। अथवा गायके माठेमें कपड़ा उबालकर और शीतल करके रोगीको उढ़ाओ। इन उपायोंसे भी दाह शान्त होता है।

(१२) भौरोंकी क़तार, वालकोंकी मीठी-मीठी तोतली वोली, तोता-मैनाका मधुर स्वर, फूलोंसे लदे हुए वृक्ष, वागकी हरियाली, यौवनके मदसे मतवाली हँसती हुई स्त्रियाँ—ये सब दाहको निश्चय नाश करते हैं।

(१३) विदारीकन्द, लोध, कैथ, विजौरा और अनार—इनमेंसे

सब या जो समयपर मिलें, उनको पीसकर तालूपर लेप करो। "हारीत" कहते हैं,--इस लेपसे दाह, बेहोशी और प्यास नाश होती है।

कवल

पित्तज्वरमें दाख और आमलोंके कल्कका कवल हितकारी है। पके अनारके कल्कका कवल अथवा केवल धनियाके कल्कका कवल भी हितकारी है।

अगर जीभ, तालू, गला, मुख, कंठ, प्यासका स्थान और मस्तकमें शोष हो—ये सूखे जाते हों, तो बिजौरे नीबूकी केशरको शहद और सैंधेनमकमें मिलाकर सेवन करो या मुखमें रक्खो। "हारीत ऋषि" कहते हैं—बिजौरे नीबूकी केशर, शहद और सैंधानोनको एकत्र पीसकर, तालूपर लेप करनेसे जीभ, तालू, गला, मुख, कंठ प्रभृतिका सूखना मिटता है और शीघ्र ही पित्तज्वर शान्त होता है।

नोट—कवलके सम्बन्धमें पीछे १६१ पृष्ठमें लिखा हुआ नोट देखिये।

गण्डूष या कुल्ले

हरड़, फूलप्रियंगू, पीपल, लोध, दारुहल्दी, हल्दी और तेजबल—इनको जलमें भिगोकर, शहद मिलाकर, बारम्बार कुल्ले करनेसे मुखका कड़वापन नाश होता है, मुँहके सारे रोग नाश होते हैं, मुँहमें निर्मलता और अन्नमें रुचि होती है।

नोट—काढ़े वग़ैरह पतले पदार्थोंको मुँहमें भरकर जैसेका तैसा रहने दो और पीछे मुखसे गिरा दो। इसीको "गण्डूष या कुल्ला" कहते हैं। अगर गण्डूषके काढ़ेमें चूर्ण मिलाना हो, तो ८ माशे मिलाना चाहिये। स्वस्थ-चित्त बैठकर, तीन, पाँच या सात कुल्ले करने चाहियें अथवा जब तक मुखमें कफ भर-भर आवे, नाक, आँखोंसे पानी वग़ैरह निकले या कपाल, गले तथा मुखमें ज़रा-ज़रा पसीने आने तक कुल्ले करने चाहियें। मुख-रोग नाश करनेमें गण्डूष परमोत्तम उपाय है।

तर्पण

दाह और कम्पसे पीड़ित, दुर्बल और निराहार तथा प्यासे ज्वर-रोगीको खीलोंके सत्तूमें मिश्री और शहद डालकर पिलाओ। खीलोंके

सत्तूका शीतल जलमें घोलकर ऊपरसे अन्दाजका शहद और मिश्री मिलाकर पिलानेसे वमन, प्यास, अतिसार, दाह, विष, बेहोशी और ज्वरका नाश होता है। (देखो पृष्ठ ८१)।

पित्तज्वरमें चीनी मिलाकर, मूंगके यूपके साथ भात खिलाना चाहिये अथवा पीछे ७६ वें सफ़ेमें लिखी पित्तज्वर नाशक पेया देनी चाहिये।

नोट—पित्तज्वरमें देने योग्य यूप, भात और औषधियोंके पानी प्रभृति पीछे लिखे हैं, वहाँ देख लो और जो समयपर उचित जँचे, वही दो।

पानी

पित्तज्वरमें भी गरम किया हुआ जल शीतल करके दो। जलको औटाकर रख दो, आप ही शीतल हो जाय तब दो; अपनी किसी चेष्टासे शीतल मत करो। गरम करनेसे पानीके सब दोप नाश हो जाते हैं। गरम किया हुआ जल जल्दी पचता है और ज्वरको नाश करता है। पित्तज्वरमें ऋतुके अनुसार औटाकर जल दो। साधारण-तया पित्तज्वरमें सेरका तीन पाव जल अच्छा होता है। ऐसा औटा हुआ जल पित्तनाशक है।

सूचना

(१) ज्वरमें हिचकी, श्वास, खाँसी, दाह प्रभृति दस उपद्रव होते हैं तथा सिरमें दर्द होता है। इनके उपाय पुस्तकान्तमें लिखे हैं। जरू-रत पड़नेसे देख लेना।

(२) पित्तज्वरके आराम होनेपर भी अगर कुछ पित्त बाक़ी रह जाय, तो उसको अवश्य शान्त कर देना चाहिये; क्योंकि ज़रा-सा रहा हुआ पित्त फिर ज्वर पैदा कर देता है। पित्तके शेप रह जानेसे अक्सर विपमज्वर हो जाते हैं। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में, ऐसे मौक़ेपर, इखका रस या शीतल शर्बतका पिलाना हितकर लिखा है। शास्त्रोक्त शर्करोदक बनानेकी विधि पृष्ठ ७२ में लिख आये हैं। गन्ना चूसने और शर्करोदक पीनेसे बाक़ी रहा हुआ पित्त निश्चय ही शान्त हो जाता है।

कफ और वायुका शेष अंश पसीने दिलाने और मालिश करानेसे आराम हो जाता है।

डाक्टरी मत से

कण्टिन्यूड फीवर या पित्तज्वरकी चिकित्सा

(१) कामन कण्टिन्यूड फीवरमें हलका जुलाब देकर "फीवर-मिक्सचर" देना चाहिये।

(२) आरडेण्ट कण्टिन्यूडमें रोगीके पास दीपक वग़ैरहकी रोशनी न रखनी चाहिये और न ज़ोरसे बोलना, चीख़ना-चिल्लाना चाहिये। केलोमेलसे कड़ा जुलाब देकर, "टारटा ऐमेटिक-मिक्सचर" देना चाहिये। पानीमें सिरका मिलाकर, उसमें कपड़ा भिगोकर, उस कपड़े से कभी-कभी शरीर पोंछना चाहिये।

हिकमतके मतसे

पित्तज्वर या सफ़रावी तपका इलाज

(१) शाहतरा (पित्तपापड़ा), लालचन्दन, नेत्रवाला और सोंठ—इन सबको चार चार माशे लेकर, इनका काढ़ा ३–४ दिन पिलानेसे तप भाग जाता है।

(२) शर्बत बजूरी या शर्बत नीलोफ़र पानीमें मिलाकर पिलाने से भी लाभ होता है। शर्बत बजूरी पित्तज्वरकी गरमी शान्त करनेमें बहुत ही उत्तम है।

(३) गिलोय, शाहतरा, धनिया, मुलहठी, काकड़ासिंगी, ख़स, लालचन्दन, नीमके पत्ते और खरबूजेकी मींगी—सबको सवा चार-चार माशे लेकर, आध सेर पानीमें औटाओ। आधा पाव पानी रहने पर, मल-छानकर पिला दो। इस तरह दोनों समय पिलाओ। यह जुशाँदा गरमी या पित्तके नये और पुराने दोनों ज्वरोंको आराम करता है।

(४) ख़मीरा ख़सके चाटनेसे भी पित्तज्वर और प्यासमें लाभ होता

है। अगर तपेदिक़में देना हो, तो दो दिन तक इसमें ४ रत्ती कपूर मिलाकर दो। अगर अतिसारमें देना हो या मलको नर्म करनेको देना हो, तो इसमें ६ माशे वंशलोचन मिला दो। यह ख़मीरा परमोत्तम चीज़ है।

(५) शर्बत बनफ़्सा देनेसे दाह, ज्वर, प्यास और खाँसी आराम होती है। शर्बत इमली दाह, प्यास और पित्तको शान्त करनेमें एक ही है। शर्बत आलू बुख़ारा कफको नाश करता है, दाह और प्यास शान्त करता है तथा पित्तको नीचेकी राहसे निकालता है। नारङ्गीका शर्बत प्यास और गरमीके सिर-दर्दमें फ़ायदा करता है। मीठे अनारका शर्बत ज्वर और प्यासको शान्त करता है। शर्बत हरड़ ज्वरको शान्त करता है और दस्त लाता है। शर्बत गुलाब पित्तको दस्तसे निकालता है। शर्बत गावज़बाँ दिलके लिये मुफ़ीद है और वातपित्त प्रकृतिवालों को अच्छा है। जवारश ज़रश्क मेदेमें ताक़त लाती है, आँतों और कलेजेको मज़बूत करती है, गरमी और प्यासको शान्त करती है तथा ख़ूनकी गरमीको शान्त करती है। सिकंजबीन बजूरी, सर्द कलेजेके रोगोंको हित है। सिकंजबीन बजूरी मुअतदिल है, तिल्ली, मसाने और कलेजेके रोगोंको मुफ़ीद है। कमोनी मुसहल मामूली दस्त लाती और पित्तको नाश करती है। सिकंजबीन सादा प्यासको नाश करती है। ये सब चीजें पित्तज्वरमें लाभदायक हैं। जैसी ज़रूरत हो, विचारके साथ देनेसे पित्तज्वरकी सब तकलीफ़ें रफ़ा होती हैं। ये सब चीजें अत्तारोंकी दूकानोंपर तैयार मिलती हैं।

(६) बबूलका गोंद, भुना हुआ वंशलोचन, जावित्री, मुलेठीका सत्त और कहरुआ—ये सब ६-६ माशे, ईसबगोल १ तोले, भुना जीरा १ तोले, भुना बाकला १ तोले—इन आठोंको कूट पीस और छानकर रख लो। ४-४ माशे चूर्ण सवेरे-शाम खानेसे ख़ून और पित्तके दस्त निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

नोट—मुलहटी छिली हुई लेनी चाहिये और ईसबगोलको कूटना न चाहिये। इसका लुआब काममें लाना चाहिये अथवा यों ही बिना कूटे काममें लाना

चाहिये। काढ़ेमें दवा २ से ४ तोले तक लेनी चाहिये। काढ़ा १६ गुने जलमें औटाना चाहिये। आधा जल रहनेपर उतार लेना चाहिये। छानकर और मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये।

(७) पपरिया कत्था ४ तोले, कपूर १ तोला—इन दोनोंको पीसकर गोंदका पानी डालकर बेरके बराबर गोलियाँ बनालो। एक गोली रोज़ खानेसे पित्तकी खाँसी शान्त होती है।

नोट—कासमर्दन बटी चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम होती है। (देखो 'स्वास्थ्यरक्षा' पृष्ठ ३३१)।



छठा अध्याय

कफज्वरकी चिकित्सा

कफ कुपित होनेके कारण

चिकने, मीठे, भारी, शीतल, लिबलिबे,, खट्टे और नमकीन पदार्थोंके सेवन करने, दिनमें सोने और परिश्रम न करने प्रभृति कारणोंसे कफ कुपित होकर कफज्वर आदि रोग उत्पन्न करता है।

कफज्वर कैसे होता है ?

कफकारी आहार-विहारोंसे कुपित होकर, कफ आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके और कोठेकी अग्निको बाहर निकालकर, आप स्वतन्त्र होकर, कफज्वर करता है।

कफज्वरके पूर्व रूप

जब कफज्वर होनेवाला होता है, उससे कुछ पहले थकान प्रभृति मालूम होती है। उसके बाद अन्नमें अरुचि हो जाती है।

कफज्वरके लक्षण

स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वम् स्तम्भस्तृप्तिरथापि च॥
गौरवं शीतमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता।
प्रतिश्यायोरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता॥

शरीर गीले कपड़ेसे ढका-सा जान पड़े, मन्दा-मन्दा ज्वर हो, आलस्य हो, मुंहका स्वाद मीठा हो, मलमूत्र सफेद हों, सारा बदन जकड़ रहा हो, पेट भरा-सा मालूम हो, खानेकी इच्छा न हो, शरीर भारी हो, जाड़ा-सा लगे, जी मिचलावे, रोएँ खड़े हो जायँ, नींद बहुत आवे, जुकाम हो, भोजनमें अरुचि हो, खाँसी आती हो और नेत्र सफेद हों—ये लक्षण कफज्वरमें होते हैं। इनके सिवाय, देहमें वेदना, मुँहसे पानी गिरना, सफेद फुन्सी होना, वमन होना, तन्द्रा होना, जाड़ा लगना, गरमी अच्छी मालूम होना, मन्दाग्नि होना और हृदय या छातीका कफसे लिहसा-सा मालूम होना प्रभृति लक्षण और भी होते हैं।

"चरक" में लिखा है,—शरीरमें वातपित्तका प्रभाव न रहे, ज्वर एकदमसे आवे और बढ़े, देह भारी हो, अरुचि हो, कफ गिरे, मुंहका स्वाद मीठा हो, नींद बहुत आवे, तन्द्रा और श्वास हो, खाँसी और जुकाम हो, नेत्र, नाखून, मुख, मल, मूत्र और चमड़ेका रङ्ग अत्यन्त सफेद हो, देहमें सफेद फुन्सियाँ हों और उनमें खुजली चले और गरमीकी इच्छा हो इत्यादि लक्षण कफज्वरमें होते हैं। चिकने, मीठे, शीतल प्रभृति गुणवाले पदार्थोंसे रोग बढ़ता है और रूखे, कड़वे, गरम प्रभृति गुणवाले पदार्थों से घटता है।

"हारीत" ने पसीने आना, कानोंके छेदोंका रुक जाना, आँखोंका आधा पीला और आधा सफेद मिला-सा रंग हो जाना, बँधा दस्त आना प्रभृति लक्षण कफज्वरके लिखे हैं।

हिकमतसे कफज्वरके लक्षण

इसे हिकमतमें बलग़मी ताप कहते हैं। इसमें ताप, सिरदर्द, शरीर भारी और ज़बान सफेद होती है। किसी-किसीके मुखसे पानी भी आता है। इस बुख़ारमें पेशाब बहुत होता है।

कफज्वरमें नाड़ी और मूत्र प्रभृति

कफज्वरमें नाड़ी हंस या हाथी या गजगामिनी स्त्रीकी तरह धीरे-

धीरे झूमती हुई चलती है। कफके समय यानी वसन्त, प्रातःकाल, सन्ध्या के बाद, भोजन करते-करते—कफकी नाड़ी उसी तरह हंसकी-सी चालसे चलती है। छूनेमें ऐसी मालूम होती है, जैसी गरम जलमें भीगी हुई रस्सी शीतल जान पड़ती है अथवा तन्तुओं के समान सूक्ष्म, मन्दी चालवाली और शीतल जान पड़ती है। उसी तरह मल या अजीर्णमें भी बहुत नहीं फड़कती।

कफज्वरमें दस्त सफेद और मिक़दारमें जियादा होता है। पेशाब जियादा, कुछ सफेद, गाढ़ा और चिकना होता है। आवाज़ भारी होती है। शरीर हलका, गरम, चिपचिपा, चिकना और पानीसे भीगा-सा होता है तथा रंगत सफेद होती है। जीभ मोटी, भारी, कफसे लिहसी हुई और खारी होती है। मुखका स्वाद मीठा होता है। चेहरा भारी और सूजा-सा जान पड़ता है। आँखोंकी ज्योति मन्दी हो जाती है, रंग सफेद होता है और उनमें जल भर-भर आता है।

कफज्वरका समय

भोजन करते ही, सवेरेके पहले पहरमें, रातके पहले पहरमें तथा वसन्त ऋतुमें कफज्वरकी उत्पत्ति और वृद्धि होती है।

कफज्वरमें लंघन

इस ज्वरमें पहले लिखे हुए नियमोंके अनुसार, ज्वर न पकने तक लंघन कराने चाहियें। गरम जल पिलाना चाहिये। खानेको दोषानुसार पेया प्रभृति देनी चाहिये। तेरहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनी चाहिये। यह साधारण नियम है। जियादा लंघन कराना, कम कराना, जल्दी या देरसे शमन औषधि देना—इसमें चिकित्सकके विचार-बुद्धिकी ज़रूरत है। लंघन-सम्बन्धी नियम पीछे पृष्ठ ८३-१०५ में लिख आये हैं।

कफज्वरके पकनेकी अवधि

कफज्वर बारह दिनोंमें पचता है। तेरहवें दिन अन्न और शमन

औषधि देनेका नियम है। आमज्वरमें शमन औषधि न देनी चाहिये। ये सब पहले लिख आये हैं। "सुश्रुत" में लिखा है,—कफज्वरमें १२ दिन बीतने पर दवा देनी चाहिये।

चिकित्सा

कफज्वरमें पाचन क्वाथ

(१) पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़ी, इन्द्रजौ, जीरा, बकायन, मूर्वा (चुरनहार), अतीस, कुटकी और वायबिड़ङ्ग— इन २१ दवाओंको मिलाकर "पिप्पल्यादिगण" कहते हैं। यह पिप्पल्यादिगणका समुदाय कफ और वातको नाश करता है; गोला, शूल और ज्वरको हरता है; अग्निको दीप्त करता और आमको पचाता है। "बङ्गसेन" और "भावमिश्र" प्रभृतिने पिप्पल्यादिगणका काढ़ा कफज्वरमें अच्छा पाचन बताया है। मतलब यह है कि, इन २१ दवाओं को बराबर-बराबर माशे-माशे डेढ़-डेढ़ माशे या जियादा, जैसा वैद्य उचित समझे, लाकर, इनका काढ़ा बनाकर, कफज्वर पचानेके लिये देना चाहिये। यह काढ़ा कफज्वरको पका देगा और अग्निको दीप्त करेगा।

(२) बिजौरे नीबूकी जड़, सोंठ, गिलोय और पीपरामूल—इन पाँचोंके काढ़ेमें "जवाखार" डालकर पीनेसे भी कफज्वरका पाचन होता है।

(३) कटेली, वासा, लोध, कूट और परवल—इनका कल्क "हारीत" ने कफज्वरमें हितकारी कहा है।

कफज्वर नाशक नुसखे

(१) नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, शतावर, कचूर, चिरायता, पोहकरमूल, पीपल और कटाई—इन ६ औषधियोंको तीन-तीन माशे

के हिसाबसे २। तोले लेकर, काढ़ा बना कर, पिलानेसे कफज्वर नष्ट होता है।

नोट—शतावरके स्थानमें देवदारु डालने और काढ़ा औट जानेपर ४ माशे शहद मिला देनेसे भी अच्छा फल होता है। यह नुसख़ा आज़माया हुआ है।

(२) नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, कटेरी, पोहकरमूल, कुटकी, कचूर, अडूसा, कायफल, पीपल और शतावर—इन ग्यारह औषधियों का काढ़ा भी कफज्वरको नाश करता है। परीक्षित योग है।

(३) कायफल, पीपल, काकड़ासिंगी और पोहकरमूल—इन चारों को बराबर-बराबर लाकर, कूट-पीसकर छान लो। शीशीमें भरकर रख लो। दो-दो माशेकी ६ मात्रा बना लो। सवेरे, दोपहर और शामको और इसी तरह रातको, चार-चार घण्टेपर, एक-एक मात्रा शहदके साथ चटाओ। इस नुसख़ेसे श्वास, खाँसी, ज्वर और कफका नाश होता है। यह नुसख़ा कफज्वरमें श्वास, खाँसीको निश्चय ही दबाता है; पर गरम है। अगर रोगीको गरमी मालूम हो, तो मात्रा कम कर देनी चाहिये।

नोट—यह नुसख़ा कफज्वरपर प्रधान नहीं है; इसलिये सवेरे शाम नं० १ या नं० २ देना चाहिये। इन नुसख़ोंके १ या २ घण्टे बाद इसको देना चाहिये। ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। ये तीनों नुसख़े, अगर कफज्वर ठीक पहचाना गया हो, तो रामबाणका काम करते हैं। अगर ये ही नुसख़े पित्तज्वरमें दे दिये जायँ, तो रोगी मर जाय। इसलिये ज्वरको खूब पहचानकर दवा देनी चाहिये। पित्तज्वर शीतल चिकित्सा चाहता है और कफज्वर गरम।

(४) अगर कफज्वरमें जाँघोंका बल क्षीण हो जाय और कानोंसे सुनाई न दे, तो निर्गुण्डी या सम्हालूके पत्तोंका काढ़ा, पीपरका चूर्ण डालकर पिलाना चाहिये। इससे निश्चय ही लाभ होता है। नं० १ की तरह २ तोले पत्तोंका काढ़ा बनाकर, ३ माशे पीपरका चूर्ण मिला कर पिला देना चाहिये। यह भी परीक्षित है।

(५) शहदमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी,

ज्वर, तिल्ली, अफारा और हिचकी,—ये आराम होते हैं। परीक्षित है। बालकोंके लिये तो रामवाण ही है।

(६) पीपल, हरड़, बहेड़ा और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। कफज्वर रोगीको यह नुसखा शहदके साथ चटाने से श्वास और खाँसीमें निश्चय ही लाभ होता है।

(७) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, अजवायन, कलौंजी, सोंठ, मिर्च और पीपल—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस और छानकर शीशीमें भर लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण अदरख के रस या शहदमें मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, हिचकी, कफ और वात—ये सब नाश होते हैं। उत्तम नुसखा है। इसका नाम "अष्टांङ्ग अवलेह" है।

(८) अजवायन, पीपल, अडूसा और पोस्तका डोड़ा—इनको बराबर-बराबर ६-६ माशे लेकर, काढ़ा बनाकर, पिलानेसे श्वास, खाँसी और कफज्वर आराम होता है। इसका नाम "यवान्यादि काथ" है।

(९) अडूसा, कटेरी और गिलोय—इन तीनोंको बराबर-बराबर आठ-आठ माशे लेकर, काढ़ा बनाकर पिलानेसे ज्वर और खाँसी आराम होती है।

(१०) कालीमिर्च, पीपरामूल, सोंठ, कलौंजी, पीपल, चीता, कायफल, कूट, सुगन्धित बच, हरड़, कटेरीकी जड़, काकड़ासिंगी, अजवायन और नीमकी छाल—इनको बराबर-बराबर दो-दो माशे लेकर काढ़ा बनाकर पिलानेसे उपद्रव सहित, कफज्वर नाश होता है।

(११) त्रिफला, निशोथ, नागरमोथा, त्रिकुटा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र, अमलतासका गूदा, कुटकी और चीता—इन ९ दवाओंको बराबर-बराबर ३-३ माशे लेकर काढ़ा बनाकर, शीतल होनेपर शहद डालकर पिलानेसे कफज्वर, खाँसी और गलेका रोग आराम होता है। यह नुसखा दस्तावर है।

(१२) त्रिफला, पटोलपत्र, अडूसा, गिलोय, कुटकी और वच— इन सबको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, शीतल होनेपर शहद डालकर पिलानेसे कफज्वर नाश होता है।

(१३) दशमूल और अडूसेके काढ़ेमें—शहद मिलाकर देनेसे कफज्वर नाश होता है।

(१४) कुटकी, नीम, अतीस, त्रिकुटा और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा पीनेसे खाँसी सहित घोर कफज्वर आराम होता है।

(१५) आमला, हरड़, पीपल, वच, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हरड़, वहेड़ा, आमला, दालचीनी, इलायची और तेजपात—इन तेरह औषधियोंका काढ़ा मलको पतला करता, कफको हरता, ज्वरको नाश करता और अग्निको जगाता है।

नोट—किसी-किसी चीज़का नाम दो-दो बार देखकर वहम न करना चाहिए।

(१६) नागरमोथा, महुएके बीज, त्रिफला, कुटकी और फालसे की छाल—इनका काढ़ा कफज्वरको नष्ट करता है।

(१७) वातज्वरमें जो "कल्पतरु रस" लिख आये हैं, वह वातकफ नाशक है, इसलिये वह कफज्वरमें भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

कवल

सैंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल और राई—इन पाँचोंको अदरखके रसमें पीसकर, इनका कवल मुख में रखना चाहिये। यह कफज्वरमें हितकारी है।

दूसरा कवल

जीरा, खाँड़ और अनारका स्वरस—इनमें शहद मिलाकर, मुखमें कवल धारण करना चाहिये। यह कवल रुचि करनेवाला है।

पानी

कफज्वरमें सेरका पावभर रक्खा हुआ पानी देना चाहिये अथवा ऋतुके अनुसार औटाकर देना चाहिये। विना औटाया कच्चा पानी हरगिज न देना चाहिये। (देखो पृष्ठ ११२-११५)।

पथ्य

कफज्वरमें मूंगके यूषके साथ पुराने चाँवलोंका भात देना चाहिये अथवा ७६ वें सफेमें लिखी कफज्वर नाशक पेया देनी चाहिये। और कोई पथ्य देना हो तो पीछे देख लेना चाहिये।

ज्वरके उपद्रव

प्रथम तो हमने यहीं खाँसी, श्वास, हिचकी प्रभृतिके परीक्षित नुसखे लिख दिये हैं। अगर किसी और उपद्रव या इन्हीं उपद्रवोंके लिए और किसी नुसखे की जरूरत हो, तो पुस्तकके अन्तमें देखना चाहिये। वहाँ हिचकी, वमन, मूर्च्छा, कोष्ठबद्धता प्रभृति दसों उपद्रवों और शिरशूल, पसलीका दर्द वग़ैरहके भी एक-से-एक बढ़कर आज़मूदा नुसखे लिखे हुए हैं।

हिकमतसे—

कफज्वरका इलाज

(१) अनीसूं, मस्तगी, गुलकन्द—इन तीनोंको चार-चार माशे लेकर दिनमें दो बार खिलानेसे ज्वर जाता रहता है।

नोट—अगर कफका कोप अधिक हो, तो वमन करानी चाहिये। अगर रोगीके भीतर बुख़ार हो तो जुलाब देना चाहिये।

(२) निर्गुण्डीका काढ़ा और बनपीपरका चूर्ण मिलाकर पीनेसे कफज्वर आराम हो जाता है।

(३) अजवायन, पीपल, वासा, ख़सख़ासका बक्कल—इनका काढ़ा पीनेसे श्वास, खाँसी और ज्वर नाश हो जाते हैं।

(४) त्रिफला और पीपल—बराबर-बराबर लेकर, पीस छानकर, शहदमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी नाश हो जाती है।

रोग-परीक्षामें सावधानी

बहुतसे वैद्य केवल नाड़ी पकड़कर दवा तजवीज कर देते हैं; रोगी से उसके दुःख-सुखका पूरा हाल भी नहीं सुनते। नाड़ी देखना बड़ा

कठिन काम है। यह अभ्यास चाहता है। जो वैद्य नाड़ी ही देखकर दवा तजवीज नहीं कर देता, उसे आजकलके लोग भौंदू वैद्य समझते हैं; इसलिये अनेक अपरिणामदर्शी वैद्य, अपनी प्रतिष्ठा भंग होनेके खयालसे, नाड़ी ही पर निर्भर रहते हैं। ऐसोंके हाथोंसे बहुतसे रोगी विना मौत मरते हैं। प्राचीन शास्त्रोंमें कहीं नाड़ीका जिक्र नहीं है। पहले लोग लक्षण देखकर ही चिकित्सा करते थे। उसमें भूल कम होती थी। अगर नाड़ी देखने आती हो, तो नाड़ी देखकर रोगका हाल जानना बुरा नहीं; पर केवल नाड़ीके ही भरोसे रहना अच्छा नहीं।

शास्त्रोंमें लिखा है:—

अति पित्त भवे व्याधौ बुद्धयतिक्रमतो यदि ।
वातकोपवशादेवमादौ ज्ञात्वा धरागतिम् ॥
प्रददेत्क्षेपजं ह्युष्णं तद्दोपविनिवृत्तये ।
तदानूनं भवेन्मृत्युः पित्तकोपेन भूयसा ॥

मान लो, किसी रोगीको पित्तका रोग हो और वैद्य, बुद्धिके भ्रमसे, वातकोपकी नाड़ीको अगले भागमें समझकर, उस रोगीके दोष दूर करनेके लिये, उसको कोई गरम दवा दे दे, तो वह रोगी निश्चय ही मर जायगा; क्योंकि अव्वल तो पित्तकी गरमी और उसके ऊपर दवा की गरमी—दोनों गरमियोंसे रोगीका करम कल्याण ही होगा। इसी तरह रोगीको वादीका रोग हो; वैद्य नाड़ीका ज्ञान ठीक न होनेके कारण, उसे पित्तका रोग समझकर शीतल उपचार करे, तो रोगी मरेगा या बचेगा ? इसलिये नाड़ीके स्थानपर ध्यान न देकर, उसकी चालपर ध्यान देना चाहिये।

जिस तरह साँप और जोंक टेढ़े तिरछे होकर चलते हैं अथवा जिस तरह विच्छू चलता है, उस तरह वातकी नाड़ी चलती है।

जिस तरह कव्वा, मेंढ़क, लवा, कुलिङ्ग और चिड़ा फुदक-फुदककर चलते हैं, उसी तरह पित्तकी नाड़ी फुदक-फुदककर चलती है।

जिस तरह बतख, मोर, कबूतर, पिंडुकिया, मुर्गा, गज और गंज-गामिनी नारी धीरे-धीरे झूमते हुए चलते हैं; उसी तरह कफकी नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती है। बस, इन तीनों चालोंपर नजर रखनी चाहिये। इस चालकी पहचानका अभ्यास होनेसे बेशक सफलता होगी।

जब मनुष्यको ज्वर चढ़ आता है, तब उसकी नाड़ी गरम और वेगवती हो जाती है। बिना पित्तके गरमी नहीं होती और बिना गरमीके ज्वर नहीं होता, इसलिये ज्वरके वेगमें नाड़ी भी गरम और वेगवती हो जाती है।

इस तरह इन बातोंको ध्यानमें धरकर अभ्यास कीजिये। जब तक पूर्ण अभ्यास न हो जाय, तब तक नाड़ी देखकर भी, अधिक विश्वास लक्षणोंपर ही कीजिये। कफज्वरका इलाज करते समय, कफज्वरकी दवा तब तक तजवीज न करो, जब तक आपकी पूरी खातिरी न हो जाय कि यह कफज्वर है। सब लक्षण अच्छी तरह मिला लीजिये। पहले लिख आये हैं, कफज्वरमें पित्तज्वरकी दवाएँ देनेसे और पित्तज्वर में कफज्वरकी दवाएँ देनेसे रोगी अवश्य मर जायगा। कफज्वरके रोगी को हर तरह गरम रखना होता है, गरम ही दवा दी जाती है, गरम ही जल दिया जाता है, हवासे बचानेको कपड़ेसे ढके रखना पड़ता है और शीतल पदार्थ खानेको नहीं दिये जाते। शीतल आहार-विहारोंसे रोगीको हर तरह बचाना होता है; क्योंकि लिख आये हैं कि, शीतल और मीठे पदार्थोंसे कफ कुपित होता है और गरम तथा कड़वे पदार्थों से शान्त होता है। पित्तज्वर गरम पदार्थों से बढ़ता है और शीतल पदार्थोंसे घटता है। नाड़ीके सम्बन्धमें अधिक देखना हो, तो हमारा "चिकित्सा-चन्द्रोदय" प्रथम भाग पृष्ठ २०६-२२६ तक देखिये।

किसी भी रोगकी परीक्षा करते समय आप नाड़ी, मूत्र, मल, शब्द,

स्पर्श, वर्ण, जीभ, मुख, चेहरा और नेत्र—इनकी परीक्षा अवश्य किया करें, फिर आपको धोखा न होगा।

"जब वैद्यको अभ्यास हो जाता है, तब वह कोई १०-१५ मिनटमें इन सबकी परीक्षा कर लेता है। जो इतनी परीक्षा बिना किये, रोगियों का इलाज हाथमें लेते हैं, हम तो उन्हें महापापी समझते हैं। मनुष्य-चोला बड़ी कठिनाईसे मिलता है। रुपया लेना और अपना १५–२० मिनिट समय भी न देना—घोर अन्याय है! आशा है, प्यारे पाठक हमारे इस लेखसे शिक्षा ग्रहण करेंगे और परीक्षामें जल्दबाज़ी न करेंगे, क्योंकि मुख्य काम "रोग-परीक्षा" ही है। निशाना बाँध लेनेपर, गोली मारनेसे गोली ठीक निशानेपर लगती है और सिपाहीके नामके आगे गुलज़री (Bull's eye) लिखी जाती है। आठों प्रकारकी रोग-परीक्षा करनेकी विधि खूब अच्छी तरह समझाकर, हमने चिकित्सा-चन्द्रोदय प्रथम भागमें—२०६-२४० पृष्ठोंमें—लिखी है।

———:o:———

सातवाँ अध्याय

द्विदोषज और सन्निपात ज्वरोंके कारण

विषम भोजन करने यानी कभी कम और कभी ज़ियादा खाने, व्रत-उपवास करने, ऋतुओंके पलटने, ऋतुओंके बिगड़ने, बदबूदार पदार्थोंके सूंघने, विषैला जल पीने, ज़हरीले पदार्थ सेवन करने, पहाड़ प्रभृतिके पास रहने, वमन-विरेचनादिके ठीक न होने, स्त्रियोंके असमयमें बालक जनने, समयपर जननेसे कुपथ्य सेवन करने अथवा पहले लिखे हुए वातज्वर, पित्तज्वर और कफज्वरके कारणोंके मिल जानेसे दो दोषोंवाले और तीन दोषोंवाले ज्वर दो और तीन दोषोंके, एक ही समयमें, कुपित होनेसे होते हैं। जो ज्वर दो दोषोंके कोपसे होते हैं, उन्हें "द्वन्द्वज" और जो तीन दोषोंके कोपसे होते हैं, उन्हें "त्रिदोषज" या "सन्निपातज" कहते हैं।

वातपित्तज्वरकी चिकित्सा

वातपित्तज्वर कैसे होता है ?

वात और पित्तको कुपित करनेवाले आहार-विहारोंसे कुपित होकर, वात और पित्त आमाशयमें जाकर, रसको दूपित करके, कोठेकी अग्निको बाहर निकालकर, वातपित्तज्वर उत्पन्न करते हैं।

वातपित्तज्वरके पूर्वरूप

जँभाइयाँ आती हैं और आँखोंमें जलन होती है। इस ज्वरमें वातज्वर और पित्तज्वर दोनोंके पूर्वरूप होते हैं।

वातपित्तज्वरके लक्षण

तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजा
कण्ठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ।
पर्वभेदश्च जृम्भा च वातपित्तज्वराकृतिः ॥

प्यास, मूर्च्छा—बेहोशी, भ्रम, दाह, नींद न आना, सिरदर्द, कंठ और मुँह सूखना, वमन, रोएँ खड़े होना, अरुचि, आँखोंके आगे अँधेरा आना, जोड़ या सन्धियोंमें पीड़ा होना और जँभाइयाँ आना,— ये "वातपित्तज्वर" के लक्षण हैं।

नोट—"चरक" में लिखा है, वातपित्तज्वरवाला शीतल पदार्थोंकी इच्छा करता है, क्योंकि वायु योगवाही है; जिसके साथ मिलता है उसीके-से काम करता है। पित्त के साथ मिलनेसे वह पित्तके-से काम करता है। इसीसे वातपित्त-ज्वरवालेको गरमी बुरी लगती है और सर्दी अच्छी लगती है। वायु जब कफके साथ मिलता है, तब कफके-से काम करता है, उस समय रोगीको गरमी अच्छी लगती है। "चरक" में ज्ञानपूर्वक या अज्ञानपूर्वक प्रलाप या आनतान बकनेका लक्षण अधिक लिखा है। "हारीत" ने मुँहका कड़वा होना, शरीरका रूखा होना और नेत्रोंका लाल होना,—ये लक्षण ज़ियादा लिखे हैं।

वातपित्तज्वरमें नाड़ी

वातपित्तकी नाड़ी चंचल, तरल, स्थूल और कठोर होती है और झूम-झूमकर चलती-सी मालूम होती है। वातपित्तके कोपसे मल बँधा हुआ, कभी बिखरा-सा या पीला-काला-सा होता है। इस ज्वरमें नाड़ी बारम्बार साँपकी चालसे टेढ़ी और मेढ़क की चालसे फुदक-फुदककर चलती है।

वातपित्तज्वरमें लंघन

पीछे (पृष्ठ ८३—१०५ में) लिखी हुई विधिसे लंघन कराने चाहियें। कच्चे ज्वरमें औषधि न देनी चाहिये। ज्वर कच्चा हो, तो दोष पकानेका यत्न करना चाहिये। दोषपाकके लक्षण दीखते ही, संशमन क्वाथ आदि जो जँचे सो देना चाहिये।

वातपित्तज्वरमें औषधि देनेका समय

वातपित्तज्वरमें पाँचवें दिन औषधि देनी चाहिये।

वातपित्तज्वरमें पाचन

हरड़, बहेड़ा, आमला, सेमलकी छाल, रास्ना और चिरायता—इनका काढ़ा वातपित्तज्वरमें पाचन है और इसका नाम "त्रिफलादि-क्वाथ" है।

वातपित्तज्वर नाशक नुसखे

(१) चिरायता, गिलोय, दाख, आमले और कचूर—इन पाँचोंके काढ़े में पुराना गुड़ मिलाकर पीनेसे, वातपित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "किरातादि क्वाथ" है।

(२) चिरायता, आमला, कचूर, दाख, कालीमिर्च, सोंठ, गिलोय, इन सातोंके काढ़ेमें, गुड़ मिलाकर देनेसे वातपित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम भी "किरातादि क्वाथ" है।

(३) गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता और सोंठ—इन पाँचोंका काढ़ा वातपित्तज्वरमें सर्वोत्तम है। इसका नाम "पंचभद्र क्वाथ" है।

नोट—यह काढ़ा सचमुच ही बड़ा अच्छा है। हमारा अनेक बारका परीक्षित है।

(४) हरड़, बहेड़ा, आमला, सेमलकी छाल, रायसन, अमलताशका गूदा और अडूसा—इन सातोंका काढ़ा वातपित्तज्वरको नाश करता है। इसका नाम भी "त्रिफलादिक्वाथ" है।

(५) सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता तथा पंचमूलकी पाँचों औषधियाँ—इन नौ औषधियोंका काढ़ा पीनेसे शीघ्र ही वातपित्त-ज्वर दूर होता है।

(६) खिरैंटी, भारङ्गी, गिलोय, अरण्डकी जड़, लाल चन्दन, खस, पित्तपापड़ा, पीपल, नागरमोथा और सुगन्धवाला—इनका काढ़ा

सन्धियोंकी पीड़ा—जोड़ोंका दर्द, सिरका काँपना और वातपित्त-ज्वरको नाश करता है।

(७) नील कमल, खस, खिरेंटी, पद्माख, कुम्भेर, मुलेठी, दाख, महुआ और फालसे—इनका काढ़ा, शीतल करके पीने से वातपित्तज्वर नाश होता है तथा प्रलाप और मोहयुक्त पित्तज्वर भी नाश होता है; यानी जिस पित्तज्वरमें रोगी आनतान बकता और बेहोश रहता है, वह पित्तज्वर भी नाश हो जाता है।

(८) अमलताशका गूदा, नागरमोथा, मुलेठी, खस, हरड़, हल्दी, दारुहल्दी, पटोलपत्र, नीमकी छाल और कुटकी—इन दसोंका काढ़ा वातपित्तज्वरमें हितकारी है।

(९) नेत्रवाला, गिलोय, अरण्डकी जड़, सुगन्धवाला, नागरमोथा, पद्मकाष्ठ, भारङ्गी, पीपल, खस और चन्दन—इन दसोंका काढ़ा पीनेसे वातपित्तज्वरका नाश होकर अग्निकी वृद्धि होती है।

नोट—यह नुसख़ा परीक्षित है। इन सब दवाओंको तीन-तीन माशे या कुल २॥ तोले लेकर, काढ़ेकी तरह औटाओ और सवेरे शाम पिलाओ; अवश्य फ़ायदा करेगा। नं० ३ "पञ्चभद्र क्वाथ" भी परीक्षित है। आजकलके मनुष्योंके लिये प्रायः दो तोला या अढ़ाई तोला काढ़ेकी सब दवाएँ मिलाकर लेना हमारी परीक्षामें निरापद और लाभदायक साबित हुआ है। इसीसे हमने दो-चार जगह काढ़ेकी मात्रा लिख दी है। इसी तरह और जगह भी समझना चाहिये। फिर भी; रोगीका बलाबल, प्रकृति और काल प्रभृतिका विचार करके, मात्राका घटाना और बढ़ाना चिकित्सकका काम है।

(१०) मुलेठी, सारिवा (गौरीसर-अनन्तमूल), दाख, महुआ, चन्दन, कमल, कुम्भेरका फल, लोध, त्रिफला, कमलकी केशर, फालसे और कमलका नाल—इन बारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, कोरी हाँड़ीमें डालकर, ऊपरसे साफ पानी डालकर, रातके समय भिगो दो। सवेरे बिना औटाये ही मल-छानकर उसी बासी जलमें,—मिश्री, शहद और खीलोंका सत्तू मिलाकर रोगीको पिलाओ। "भावप्रकाश" में लिखा है, इस हिमके

पीनेसे दाह, प्यास, मूर्च्छा, अरुचि, भ्रम और वातपित्त-ज्वर इस तरह भागते हैं, जिस तरह हवासे बादल भागते हैं। "वङ्गसेन" ने भी ऐसी ही तारीफ़ की है। "भावप्रकाश" में लिखा है, इन सब दवाओंको ८ तोले लेकर २४ तोले जलमें भिगो दो। सवेरे मिश्री और शहद तथा खीलोंका सत्तू मिलाकर पिला दो। इसका नाम "मधुकादि हिम" है।

नोट--पहले लिख आये हैं, कि "हिम" शीत कषाय या शीतल काढ़ेको कहते हैं। हिमका यही क़ायदा है कि उसकी दवाएँ काढ़ेकी तरह औटाई नहीं जातीं। रातको भिगोकर, सवेरे मल-छानकर जल निकाल लिया जाता है और वह बासी जल शहद मिश्री प्रभृति डालकर रोगीको पिलाया जाता है। हिमकी तासीर शीतल है। पित्तके कारणसे हुए तृषा और दाह वगैरहमें यह अपूर्व चमत्कार दिखाता है। जिसे गरम औटाये हुए काढ़ेसे लाभ न होता हो, मिज़ाज गरम हो, उसे "हिम" देनेसे अवश्य लाभ होता है।

पानी

वातपित्तज्वरमें औटाकर शीतल किया हुआ जल पिलाना चाहिये।

पथ्य

वातपित्तज्वरमें मूंग और आमलोंका यूप अथवा अनार, आमले और मूंगका यूप देना हितकारी है। अगर वातपित्तज्वरमें दाहका बहुत जोर हो, तो चनेका यूप देना चाहिये।

अपथ्य

वातपित्तज्वरमें मूंग और करेला प्रभृति कफवातनाशक पदार्थ न देने चाहियें। इनके देनेसे ज्वर, शूल (दर्द), क़ब्ज और अफारा होता है।

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि

इसके लिये आप इसी भागके १२५—१२८ तकके पृष्ठ और काढ़ेकी मात्राके लिये १६३—१६४ पृष्ठ देखिये।

आठवाँ अध्याय

वातकफज्वरकी चिकित्सा

वातकफज्वर कैसे होता है ?

वात और कफकारक आहार-विहारोंसे वात और कफ कुपित होकर, आमाशयमें जाकर, रसको दूपित करके और कोठेकी अग्निको बाहर निकालकर, "वातकफज्वर" करते हैं।

वातकफज्वरके पूर्वरूप

वातकफज्वरमें वातज्वर और कफज्वर दोनोंके पूर्वरूप—जँभाई आना और अन्नसे अरुचि होना—ये होते हैं।

वातकफज्वरके लक्षण

स्तैमित्यं पर्वणाम्भेदो निद्रागौरवमेव च।
शिरोग्रहः प्रतिश्यायः कासः स्वेदाप्रवर्तनम्
संन्तापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृतिः॥

शरीर गीले कपड़ेसे ढका हुआ मालूम हो, जोड़ोंमें दर्द हो, नींद आवे, देह भारी हो, सिरमें दर्द और जुकाम हो, खाँसी हो, पसीने आवें *, सन्ताप हो, और मन्दा-मन्दा ज्वर हो—ये "वात-कफज्वर" के लक्षण हैं। "हारीत" ने लिखा है,—"वातकफज्वरमें जाड़ा लगता है, शरीर काँपता है, शरीरके जोड़ टूटते हैं, शरीर लकड़ी-सा

* पसीनोंका आना तो पित्तज्वरमें लिखा है, फिर वातकफज्वरमें पसीने कैसे आते हैं ? विकृति समवायके अनुसार संयोग होनेसे विकारको प्राप्त हुआ वात और कफ इन दोनोंमें—स्वभाव न मिलनेसे—ज़ियादा पसीने आते हैं। जैसे; हल्दी और चूनेके मिलनेसे लाल रंग पैदा होता है।

हो जाता है; शूल, अरुचि, मन्दाग्नि, बन्धन, कठोरता, खाँसी ये उपद्रव होते हैं, तन्द्रा होती है, कूजन होता है, शरीरमें चंचलता होती है, शरीर गीला-सा हो जाता है, जँभाइयाँ आती हैं, पसीना आता है और मल-मूत्र रुक जाते हैं।"

नोट—इस बुखारमें सारे शरीरमें बहुत पसीने आते हैं। उन पसीनोंको ऊपरी उपायोंसे बन्द करना ज़रूरी है। भुनी हुई कुलथी या चूल्हेकी जली हुई मिट्टी पीसकर मलना अच्छा है।

वातकफज्वरमें नाड़ी आदि

वातकफज्वरमें नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती है और किसी क़दर गरम रहती है। अगर इस ज्वरमें कफका अंश कम और वायुका अंश अधिक रहता है, तो नाड़ी रूखी और बराबर तेज़ चलती है। यह नाड़ी कभी सर्पकी चालसे और कभी हंस या हाथीकी-सी चालसे चलती है। जिसकी नाड़ीमें वायुका अत्यन्त कोप होता है, उसकी नाड़ी पित्त के समान अत्यन्त टेढ़ी और अत्यन्त स्थूल होती है।

वातकफज्वरमें अन्न और दवा देनेका समय

वातकफज्वरमें, सातवें दिन, बृहत्पंचमूलके काढ़ेमें पकाया हुआ अन्न देना चाहिये। वातकफज्वरमें नवें दिन दवा देनी चाहिये।

वातकफज्वरमें पाचन

अमलतासका गूदा, कुटकी, हरड़, पीपलामूल, नागरमोथा,—इन पाँचोंका काढ़ा बनाकर, पिलानेसे वातकफज्वर और आमशूल तत्काल नाश होता है। इससे दस्त साफ़ होता है। यह दीपन और पाचन है। इसका नाम "आरग्वधादि क्वाथ" है।

नोट—निस्सन्देह यह काढ़ा बहुत उत्तम है। हरड़ बड़ी लेनी चाहियें। सब दवाओंको पाँच-पाँच या छै-छै माशे लेकर, औटाकर और छानकर पिलाना चाहिये।

वातकफज्वर नाशक नुसखे

(१) कटेरी, सोंठ, गिलोय और अरण्डकी जड़—इन चार

दवाओंको ६-६ माशे लेकर, काढ़ा बनाकर, पिलानेसे वातकफज्वर नाश होता है। खासकर जिस ज्वरमें कफ और वायुका बहुत ज़ोर हो, उसमें अधिक लाभदायक है। इससे खाँसी भी मिटती है। श्वास, खाँसी, अरुचि और पीठका दर्द—इन उपद्रवों सहित त्रिदोषज्वरको भी यह नाश करता है।

(२) पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचोंको "पंचकोल" कहते हैं। यह अग्निको दीपन करता और वातकफज्वरको नाश करता है। यह उत्तम पाचन है, दीपन है, गरम है, कफदाह-नाशक है, गोला, तिल्ली, उदर रोग, अफारा और शूलको नाश करनेवाला है, तीक्ष्ण और गरम है; इसलिये पित्तको कुपित करनेवाला है। ये पाँचों चीज़ें एक-एक कोल (तोला) लेनेसे "पञ्च कोल" कहलाता है।

नोट—इन पाँचोंके काढ़ेको "आरोग्य पंचक" भी कहते हैं। इनका काढ़ा दीपन और कफवात-नाशक है।

(३) चिरायता, सोंठ, गिलोय, कटेरी, कटाई, पीपलामूल, लहसन और सँभालू—इन आठोंका काढ़ा वातकफज्वरको नाश करता है।

(४) कटेरी, गिलोय, सोंठ और पोहकरमूल—इन चारोंका काढ़ा खाँसी, अरुचि, श्वास, अफारा और शूल समेत वातकफज्वरको नाश करता है। इसका नाम "क्षुद्रादि क्वाथ" है।

नोट—राजद्रुमादि क्वाथ (आरग्वधादि क्वाथ) और ऊपरका क्षुद्रादि क्वाथ, इस ज्वरमें बहुत अच्छे हैं। क्षुद्रादि क्वाथ श्वास, खाँसी, अरुचि, पसलियों का दर्द और त्रिदोषके ज्वरको भी नाश करता है। अगर क्षुद्रादि क्वाथकी दवाओंमें "चिरायता" और मिला दिया जाय, तब तो सोनेमें सुगन्ध ही हो जाय। कटेरी, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और चिरायता—इन पाँचोंके काढ़ेसे वातकफज्वर तो निश्चय ही आराम होता है। इसके सिवाय और सब ज्वर भी नाश हो जाते हैं।

(५) पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़,

इन्द्रजौ, जीरा, बकायन, मूर्वा, अतीस, कुटकी और वायविड़ङ्ग—इन २१ दवाओंको "पिप्पल्यादि गण" कहते हैं। इनका काढ़ा वातकफ-ज्वरमें सर्वश्रेष्ठ दवा है। इसके समान वातकफज्वर-नाशक दवा और नहीं है। इसका नाम "पिप्पल्यादि क्वाथ" है।

(६) पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, बच, अतीस, जीरा, पाढ़ी, इन्द्रजौ, रेणुका, चिरायता, मूर्वा, सरसों, कालीमिर्च, कायफल, पोहकरमूल, भारङ्गी, वायविड़ङ्ग, काकड़ासिंगी, आककी जड़, बड़ी कटेरी, रास्ना, धमासा, अजवायन, अजमोद, श्योनाक और हींग—इन २८ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे, वात-कफज्वर, वातशीत (सर्दी), पसीना, अत्यन्त कँपकँपी, प्रलाप, आन-तान बकना, अत्यन्त नींद आना, रोएँ खड़े होना, अरुचि, अपतंत्र नामक महावायु और सारे शरीरकी शून्यता—ये सब नाश हो जाते हैं। यह "पिप्पल्यादि महाक्वाथ" सब तरहके ज्वरोंमें पूजा जाता है।

(७) दशमूलके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे मुखपाक, अतिनिद्रा, अजीर्ण, पसलियोंका दर्द, श्वास और खाँसी समेत वात कफज्वर नाश होता है।

नोट—शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, कटेरी, कटाई, गोखरू, बेलगिरी, अरणी, श्योनाक, कुम्भेर और पाढ़ल—इन दशोंको "दशमूल" कहते हैं। यह नुसख़ा वातकफज्वरमें रामबाण है। इसके सेवनसे सन्निपातज्वर, प्रसूतिका रोग, श्रम और पसीने प्रभृति भी अवश्य नाश हो जाते हैं।

(८) केवल पीपलोंका काढ़ा पीनेसे वातकफज्वर नाश होता है। यह अनभिष्यन्दि, अग्निदीपक और तिल्लीको नाश करनेवाला है।

(९) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठ, गिलोय और धमासा—इन पाँचोंका काढ़ा वातकफ, अरुचि, वमन, दाह, शोष और ज्वरको नाश करता है।

(१०) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इन चारोंको

"चातुर्भद्रक" कहते हैं। यह वातकफ-नाशक हैं। इनका काढ़ा भी वातकफज्वरको नाश करता है।

(११) नीमकी छाल, गिलोय, सोंठ, देवदारु, कायफल, कुटकी और वच—इनका काढ़ा वातकफज्वर-नाशक तथा सन्धियोंकी पीड़ा, सिरका दर्द, खाँसी और अरुचिको नाश करता है।

(१२) देवदारु, पित्तपापड़ा, भारङ्गी, नागरमोथा, वच, धनिया, कायफल, हरड़, सोंठ और पूतिकरञ्ज—इनके काढ़ेमें हींग और शहद डालकर पीनेसे वातकफज्वर, हिचकी, मुंह या गला सूखना, गलग्रह, श्वास, खाँसी और प्रमेह नाश होते हैं।

नोट—यह नुसख़ा "सुश्रुत" में भी है। वहाँ "पूतीक" के स्थानमें "भूतीक" लिखा है। पूतीक "पूतिकरंज" को कहते हैं और भूतीक "चिरायते" को कहते हैं। डल्लन मिश्र "भूतीक" का अर्थ "रोहिषतृण" कहते हैं।

इस नुसख़े में शहद ६ माशे और हींग २ रत्ती मिलानी चाहिये। अगर काढ़ेकी मात्रा दो अढ़ाई तोलेसे ज़ियादा हो, तो शहद और हींग भी ज़ियादा डाले जा सकते हैं। यह नुसख़ा कण्ठकी सूजन, हृदय और पसलीके दर्द तथा कफके अधिक ज़ोरमें देनेसे भी लाभ दिखाता है।

(१३) पटोलपत्र, सोंठ, इन्द्रजौ और पीपल—इन चारोंका काढ़ा दीपन और पाचन है। अगर कफवातके रोगमें, प्यास, शूल, श्वास, खाँसी, अरुचि और दस्तकी क़ब्ज़ियत हो, तो यह नुसख़ा देना चाहिये।

(१४) शुद्ध पारा, भुना हुआ सुहागा और शुद्ध गन्धक—ये तीनों बराबर-बराबर लो। शुद्ध तुषरहित जमालगोटेके बीज पारेसे दूने लो। सैंधानोन, कालीमिर्च, इमलीका खार और खाँड़—ये सब पारेके बराबर लो। पीछे सबको एकत्र खरलमें डालकर, जँभीरी नीबूके रसमें एक दिन भर खरल करो। यही "सूर्यशेखर" रस है। इसको २ रत्ती प्रमाण गरम जलके साथ सेवन करनेसे वातकफज्वर और शीतज्वर नाश होते हैं।

नोट—पारा, गन्धक, सुहागा, जमालगोटेके बीज कभी बिना शोधे मत लेना। शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है। प्रथम तो रस किसीको देना ही नहीं। जब ऊपर लिखे १३ नुसखोंमें से किसीसे भी रोग काबूमें आता न दीखे, तब इसको ज़रूर देना चाहिये। मात्रा २ रत्ती न देकर, कम देना अच्छा होगा। औषधिकी मात्राका कोई नियम नहीं हो सकता। दोष, अग्नि, बल, अवस्था, व्याधि, औषधि और कोठेका विचार करके वैद्य मात्रा नियत करे।

पसीने बन्द करनेके उपाय

वातकफज्वर और सन्निपात ज्वरोंमें प्रायः पसीने बहुत आते हैं। उनको शीघ्र ही बन्द करना ज़रूरी है। इस तरह आये हुए पसीनोंमें पिच्छिलता बहुत होती है। इसलिये शीत आनेसे रोगी झट मर जाता है। नीचेके उपायोंसे पसीनोंका आना निश्चय ही बन्द हो जाता है—

(१) कुलथीको भुनवाकर और पीसकर, जहाँ पसीने आते हों, मालिश करो।

(२) चूल्हेकी जली हुई मिट्टी पीसकर मालिश करो।

(३) गायका पुराना गोबर और नमक रखनेका मिट्टीका बासन,—इन दोनोंको मिलाकर पीस डालो और शरीरपर मलो।

(४) चिरायता, कालाजीरा, कुटकी, बच और कायफल—इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर और कपड़छन करके शरीरपर मलो। लगातार बहता हुआ पसीना बन्द हो जावेगा।

(५) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, हरड़, लोध, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, शिवलिङ्गी और कपूरकचरी;—इन बारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, खूब महीन पीसकर, शरीरपर मलनेसे, नदीके प्रवाहकी तरह बहता हुआ पसीना भी बन्द हो जाता है।

(६) बच, अजवायन और सोंठको बराबर-बराबर लेकर और सूखे ही पीसकर शरीरपर मलनेसे ज्वर और पसीना शान्त होता है।

(७) पीपल, देवदारु, सोंठ, कुटकी और अजवायन—इनको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर, शरीरपर मलनेसे पसीने दूर होते हैं और शरीर शीतल होता है।

नोट--आयुर्वेदमें पसीना बन्द करने की क्रियाको "उद्धूलन" कहते हैं।

वालुका स्वेद

पीनस, श्वास, बहरापन, जाँघ, पसली और हड्डीके दर्द सहित वातकफज्वरमें "वालुका स्वेद" करना चाहिये। "वालुका स्वेद" शरीरके स्रोतोंको नरम करता है; यानी साफ करता है, अग्न्याशयको उसके स्थानमें स्थापित करता है, वातकफके स्तम्भको नाश करता है तथा ज्वरको हरता है।

तरकीब—एक ठीकरेमें वालू भरकर उसको खूब गरम करो और उसे रोगीके पास रक्खो। पीछे रोगीको कपड़ा उढ़ा दो और आगसे लाल हुई वालूपर काँजीके छींटे मारो। इस तरह बारम्बार करो। इससे रोगीके शरीरसे पसीने निकलेंगे और वातकफके रोग, सिरका दर्द और सारे शरीरकी पीड़ा शान्त हो जायगी।

नोट—वालूको ठीकरेमें खूब लाल करके पीछे उसे गरम ही पोटलीमें बाँधकर उस पोटलीको काँजीमें भिगोकर स्वेद देना चाहिये। इसको भी "वालुका स्वेद" कहते हैं। इसके सम्बन्धमें वातज्वरमें लिख आये हैं; क्योंकि वातज्वरमें भी वालूके स्वेदका काम पड़ता है। वालुका स्वेदका अर्थ वालूको तपाकर और उसपर काँजीके छींटे मारकर पसीने निकालना है। यह एक तरह का बफारा ही है। साधारणतया तवेको लाल करके उसपर पानीके छींटे मारते हैं और रोगी को उढ़ा देते हैं। तवेकी भापसे रोगीके शरीरसे पसीने निकलते हैं। इसी तरह "वालुका स्वेद" भी पसीने निकालनेका एक उपाय है।

कवल

बिजौरे नीबूकी केशर, सैंधानमक और कालीमिर्च—इन तीनोंको एकत्र पीसकर मुखमें रखनेसे वातकफसे हुआ मुखशोष (मुँह सूखना), मुखकी जड़ता, विरसता और अरुचि ये सब नाश होते हैं।

पानी

औटाकर शीतल कियाहुआ जल देना चाहिये। (पृष्ठ १०६-११५)।

पथ्य वातकफज्वरमें सातवें दिन, वृहत्पंचमूलके काथमें पकाया हुआ, अन्न विशेषकर पेया देनी चाहिये।

नवाँ अध्याय

पित्तकफज्वरकी चिकित्सा

—:o:—

पित्तकफज्वर कैसे होता है ?

पित्तकारक और कफकारक आहार-विहारोंके कारणसे कुपित हुए पित्त और कफ आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठेकी अग्निकी गरमीको बाहर निकालकर, पित्तकफज्वर करते हैं।

पित्तकफज्वरमें पूर्व्वरूप

पित्तकफज्वरमें पित्तज्वर और कफज्वर दोनोंके पूर्वरूप—नेत्रोंमें जलन और अन्नपर अरुचि—ये होते हैं।

पित्तकफज्वरके लक्षण

लिप्ततिक्तास्यता तंद्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा।
मुहुर्दाहो मुहुः शीतं श्लेष्मपित्तज्वराकृतिः॥

पित्तकी वजहसे मुंह कड़वा हो और कफके कारण कफसे लिहसा हो, तन्द्रा, मोह—बेहोशी, खाँसी, अरुचि और प्यास,—ये हों तथा बारम्बार गरमी लगे और बारम्बर सर्दी लगे—ये पित्तकफज्वरके लक्षण हैं।

"हारीत" ने कहा है,—नींद बहुत आवे, सन्धियों और सिरमें दर्द हों, जोड़ टूटें, आवाज़ बीचकी हो, आँखोंमें सन्ताप हो, श्वास हो, सुननेमें रुचि हो, कण्ठ सूखता हो, तन्द्रा हो, मोह हो, अरुचि हो और भ्रम हो—ये सब लक्षण हों, तो पित्तकफज्वर समझना चाहिये।

"चरक" में लिखा है,—पित्तकफज्वरमें बारम्बार दाह हो, बारम्बार जाड़ा लगे, बारम्बार पसीने आवें; स्तम्भ, मोह, खाँसी, अरुचि, प्यास ये हों तथा कफ और पित्त गिरें, मुख कफसे लिहसा हुआ और कड़वा रहे तथा तन्द्रा हो।

नोट—द्वन्द्वज ज्वरोंको डाक्टरीमें रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) कहते हैं। वातपित्त रेमिटेण्ट ज्वर सवेरे और शामको कुछ विश्राम लेता है; वातकफ दोपहर और आधीरातको विश्राम लेता है। पित्तकफज्वर दिनके तीसरे पहरमें और रातके शेषमें विश्राम लेता है। मतलब यह कि, इन-इन समयोंमें ये तीनों ज्वर कुछ हलके होते हैं।

पित्तकफज्वरमें नाड़ी प्रभृति

पित्तकफज्वरमें नाड़ी नर्म चलती है। कभी जियादा शीतल और कभी कम शीतल और पतली रहती है। पित्तकफज्वरमें नाड़ी सूक्ष्म, शीतल और मन्द वेगसे चलती है। कफपित्तके कोपसे पाखाना पीला, काला, कुछ नीला और चीकट-सा होता है।

पित्तकफज्वरमें लंघन

इस ज्वरमें पीछे पृष्ठ ८२—१०५ में लिखी हुई विधिसे लङ्घन कराने चाहियें। कच्चे या आमज्वरमें औषधि न देनी चाहिये।

पित्तकफज्वरमें औषधिका समय

"भावप्रकाश"में लिखा है,—"पित्तश्लेष्मज्वरे देयमौषधं दशमेऽहनि" यानी पित्तकफज्वरमें दसवें दिन दवा देनी चाहिये। किन्तु "वङ्गसेन" लिखते हैं,—"पित्तश्लेष्मज्वरे देयमौषधं सप्तमेऽहनि"; अर्थात् पित्तश्लेष्मज्वरमें सातवें दिन दवा देनी चाहिये।

पित्तकफज्वरमें पाचन-काढ़ा

गिलोय, नीमकी छाल, धनिया, लालचन्दन और कुटकी—इन पाँचोंका काढ़ा पाचन, अग्निदीपक, प्यास, दाह, अरुचि, वमन और पित्तकफज्वरको नाश करनेवाला है। इसका नाम 'गुडूच्यादि क्काथ' है।

पितकफज्वर नाशक नुसखे

(१) गिलोय, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, पटोलपत्र और लालचन्दन—इन आठ दवाओंका काढ़ा करके और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे पित्तकफज्वर नाश होता है तथा वमन, अरुचि, प्यास, उबाकी आना और दाह,—ये उपद्रव भी नाश हो जाते हैं। इसका नाम "अमृताष्टक" है। बङ्गसेन, शार्ङ्गधर और भावमिश्रने इसकी ख़ासी तारीफ की है। यह है भी इसी लायक़। परीक्षित है।

(२) पटोल, चन्दन, मूर्वा, कुटकी, पाढ़ और गिलोय—इन छै दवाओंका काढ़ा पीनेसे पित्तकफज्वर, वमन, दाह, खुजली और विष-बाधा—ये सब नाश होते हैं। यह "पटोलादि क्वाथ" है।

(३) परवल, मोथा, नेत्रवाला, लालचन्दन, कुटकी, पित्तपापड़ा, सोंठ, ख़स और अडूसा—इनका काढ़ा करके पीनेसे प्यास सहित कफ-पित्तज्वर नाश होता है। यह भी "पटोलादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(४) कटेरी, गिलोय, भारङ्गी, सोंठ, इन्द्रजौ, अडूसा, चिरायता, लालचन्दन, नागरमोथा, पटोलपत्र और कुटकी,—इन ग्यारह औष-धियोंका काढ़ा पीनेसे पित्तकफज्वर, दाह, तृषा, अरुचि, वमन, खाँसी और शूल (दर्द) नाश होता है। इसको "कण्टकार्यादि क्वाथ" कहते हैं।

(५) सोंठ, ख़स, बेलगिरी, नागरमोथा, धनिया, मोचरस और सुगन्धवाला—इन ७ दवाओंका काढ़ा भी पित्तकफज्वरको नाश करता है। यह मलरोधक है, यानी दस्तको बाँधता है। जिस पित्तकफज्वर रोगीको दस्त होते हों, उसे यह देना चाहिये। इसका नाम "नागरादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(६) एक तोले भर कुटकी और खाँड़ दोनोंको पीसकर कल्क बना लो और गरम जलके साथ पी जाओ। इसके पीनेसे पित्तकफ-ज्वर नाश होता है। इसका नाम "कुटकी कल्क' है।

नोट—"चरक"ने लिखा है—१ तोले कुटकी और ४ माशे खाँड़ लेनी चाहिये; पर वैद्य लोग तो दोनोंको बराबर-बराबर ६।६ माशे लेकर १ तोला करते हैं।

(७) अडूसेके पत्ते और फूल दोनों लेकर रस निकाल लो। पीछे उस रसमें शहद और मिश्री मिलाकर सेवन करो। इससे अम्लपित्त और कामला सहित पित्तकफज्वर नाश होता है। इसका नाम "वासारस" है।

नोट—अडूसेका रस २ तोला और मिश्री ३ माशा तथा शहद ३ माशा लेकर, तीनोंको मिलाकर पी जाना चाहिये। "वासारस"से कफ, पित्तज्वर, रक्त-पित्त और पिकफ—ये सब नाश होते हैं। अगर इसमें चीनी या खाँड़ न मिलाई जाय, केवल शहद मिलाया जाय, तो इस वासारस से श्वास और खाँसी भी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(८) अदरख और पटोलपत्रका काढ़ा बनाकर पीनेसे, पित्त-कफज्वर, वमन, दाह और खुजली नाश होती है। इसका नाम "शृङ्ग-वेरादि क्वाथ" है।

(९) कटेरी, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और चिरायता—इन पाँचोंका काढ़ा आठों प्रकारके ज्वरोंको नष्ट करता है। इसका नाम "पञ्चतिक्त क्वाथ" है। परीक्षित है।

(१०) इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा, धनिया, पटोलपत्र और नीमकी छाल—इन पाँचोंके काढ़ेमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे पित्त-कफज्वर नष्ट होता है।

(११) भारङ्गी, पोहकरमूल, नागरमोथा, कटेरी, गोखरू, कटाई, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी और सोंठ—इनको "भार्ङ्ग्यादिगण" कहते हैं। ये पित्तकफज्वर-नाशक तथा उबकाई, अरुचि, वमन, प्यास, दाह और विबन्ध नाशक हैं।

(१२) कुड़ेकी छाल, पद्माख, सोंठ, लालचन्दन, गिलोय, पटोल-पत्र और धनिया—इन सातोंके काढ़ेमें शहद डालकर पीनेसे कफ-पित्तज्वर, शूल और हाथ-पैरोंकी जलन आराम होती है।

पानी

पीछे पृष्ठ १०६–११५ में लिखी हुई विधिसे औटाकर शीतल किया हुआ जल देना चाहिये।

पथ्य

पटोलपत्र और धनियेके यूपसे सिद्ध किया हुआ अन्न पित्तकफ-ज्वर-नाशक है। "बङ्गसेन" ने लिखा है;—धनिया और पटोलपत्रका यूष कफपित्तज्वर-नाशक है। नीमकी छाल और पटोलपत्रका यूष भी पित्तकफज्वरमें हितकारी है। (देखो पृष्ठ ७४-८२)

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि

काढ़ा बनाने और पीनेकी तरकीबके लिये पृष्ठ १२५ देखिये और काढ़ेकी मात्राके लिये पृष्ठ १६३-१६४ देखिये।



दसवाँ अध्याय

सन्निपातज्वरकी चिकित्सा

सन्निपातज्वरके कारण

समय-विरुद्ध, संयोग-विरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध, देश-विरुद्ध, अन्न-पानके सेवन करने, अजीर्णमें भोजन करने, भोजन-पर-भोजन करने, बिना समयके खाने और अनेक प्रकारके मिश्रित पदार्थों के सेवन करनेसे सन्निपात कुपित होता है। और भी लिखा है—कभी कम और कभी ज़ियादा खाने, उपवास करने, ऋतुओंके पलटने, ऋतुओंके बिगड़ने, विषैले पदार्थ सेवन करने, दुर्गन्धित पदार्थोंके सूंघने, वमन-विरेचनादि ठीक तौरसे न होने, स्त्रियोंके बेसमय बालक जनने या ठीक समयपर जनकर अपथ्य सेवन करने प्रभृति कारणोंसे त्रिदोष कुपित होते हैं।

अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णैः कटुमधुरसुरातापसेवाकषायैः।
कामक्रोधातिरुक्षैर्गुरुतरपिशिताहारनीहारशीतैः॥
शोकव्यायामचिन्ताग्रहगणवनितात्यंतसंगप्रसंगैः।
प्रायाः कुप्यन्ति पुंसां मधुसमयशरद्धर्पणेसन्निपाताः॥

और भी लिखा है—खट्टे, चिकने, गरम, तीखे, कड़वे और मीठे रसके सेवन; शराब, सूरजकी धूप या आगके सेवन; कषैले पदार्थों के सेवन, रूखे और भारी पदार्थों के सेवन, काम, क्रोध, सर्दी, शोक, कसरत, मिहनत, चिन्ता—इन सबके बेक़ायदे या अति सेवन करनेसे, भूत-पिशाचकी बाधासे और बहुत ही स्त्री-प्रसंग करनेसे—चैत, वैशाख,

कार, कातिक और सावन-भादोंमें अक्सर, त्रिदोष कुपित होकर "सन्निपातज्वर" होता है। यह ज्वर कष्टसाध्य* होता है। अगर एक दोषको शान्त करते हैं, तो दूसरा कुपित हो जाता है।

सन्निपातज्वर कैसे होता है ?

त्रिदोषकारक आहार-विहारोंके कारणसे (जो ऊपर लिखे हैं), वात, पित्त और कफ आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठेकी अग्निकी गरमीको बाहर निकालकर, ज्वर करते हैं।

आहारके दोषसे—अपथ्य सेवन करनेसे—पहलेका इकट्ठा हुआ आमरस—कच्चा रस—शरीरकी अग्निको शान्त कर देता है। इसके बाद यानी अग्निके शान्त होनेके बाद—मनुष्य जो खाता है, वह सब कफ हो जाता है। उस कफको वायु दूषित करता है, तब वह कफ वायु या हवाके बहनेवाली नसोंमें जाकर उनको बन्दकर देता है, तब वायु—हवा पित्तको कुपित करती है। इस तरह वात, पित्त और कफ—तीनों दोष—एक दूसरेसे कुपित होकर, प्रबल सन्निपात रोग करते हैं।

सन्निपातज्वरके पूर्वरूप

सन्निपातज्वरमें वातज्वर, कफज्वर और पित्तज्वर तीनोंके पूर्वरूप—जँभाई आना, अन्नमें अरुचि होना और नेत्रोंमें जलन होना,—ये होते हैं।

क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसंधिशिरोरुजा।
सस्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने॥
सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कंठः शूकैरिवावृतः।
तन्द्रा मोहःप्रलापश्च कासःश्वासोऽरुचिर्भ्रमः॥

* "चरक" में लिखा है,—दोषोंके बढ़ जाने, जठराग्निके नष्ट होने और सारे लक्षणोंके पूरे हो जानेसे सन्निपातज्वर असाध्य हो जाता है। अगर दोष और जठराग्नि सर्वथा नष्ट न हुए हों, तो कष्टसाध्य समझना चाहिये।

परिदग्धा खरस्पर्शा जिह्वा स्रस्तांगता परम् ।
ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥
शिरसो लोठनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिरादर्शनमल्पशः ॥
कृशत्वं नातिगात्राणां सततं कण्ठकूजनम् ।
कोठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां च दर्शनम् ॥
मूकत्वं स्रोतसां पाको गुरुत्वमुदरस्य च ।
चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ॥

ज़रा-सी देरमें गरमी लगने लगे और ज़रा-सी देरमें सर्दी लगने लगे; हड्डियों, जोड़ों और सिरमें दर्द हो, आँखोंसे आँसू गिरें, आँखें काली, लाल, फटी-सी अथवा भीतरको खड्डोंमें घुसी हुई अथवा टेढ़ी-सी मालूम हों, कानोंमें दर्द हो या उनमें शब्द हो, गलेमें काँटे पड़ जायँ, तन्द्रा* हो यानी आधी आँखें खुली हों और आधी बन्द हों, बेहोशी हो, रोगी प्रलाप करे यानी आनतान बके, खाँसी हो, श्वास हो, खानेकी इच्छा न हो, शरीर घूमे, जीभ आगसे जले हुएके समान हो अथवा गायकी जीभकी तरह खरदरी हो, सारा शरीर ढीला-सा हो जाय, थूकमें सुर्खी आवे या कफ मिला हुआ रक्तपित्त थूकमें निकले, सिरमें इतने ज़ोरका दर्द हो कि, रोगी सिरको इधरसे उधर और उधर से इधर हिलावे अथवा माथेको धर-धर पटके, प्यासका ज़ोर हो, नींद न आवे, हृदय या छाती में दर्द हो, पसीना बहुत कम आवे, पाख़ाना पेशाब देर-देरमें हों और थोड़े-थोड़े हों, शरीर बहुत दुबला न हो*,

* सन्निपातज्वरमें "तन्द्रा" सबसे बुरा उपद्रव है। वैद्यको इसका पहले ख़याल रखना चाहिये। ज्वरोंमें सन्निपात बुरा है और सन्निपातज्वरके उपद्रवोंमें "तन्द्रा" बुरी है।

* सन्निपातज्वरमें शरीर अत्यन्त दुबला क्यों नहीं होता ?
उत्तर—यह व्याधिका प्रभाव है।

कंठमें बराबर आवाज़ हो, पीले लाल और गोल-गोल चकत्ते शरीरमें हो जायँ अथवा सारे शरीरमें फुन्सियाँ निकल आवें, रोगी कम बोले—धीरे बोले या बोले ही नहीं, कान नाक आदि शरीरके छेद पक जायँ, पेट फूला-सा रहे तथा वातादिक दोषोंकी उत्तम चिकित्सा होनेपर भी देरमें पाक हो अर्थात् ये बहुत समयमें पकें—ये लक्षण सन्निपात ज्वरके हैं।

"वाग्भट्ट" ने लिखा है,—दिनमें घोर नींद आती है, रातमें नींद आती ही नहीं, अथवा दिन रातमें कभी नींद नहीं आती; पसीने ज़ोर से आते हैं अथवा आते ही नहीं; रोगी नाचता, हँसता और गाता है और रोगीकी सारी चेष्टायें बदल जाती हैं, इत्यादि।

"हारीत" ने लिखा है,—रोगी रातमें जागता है, दिनमें तन्द्रा रहती है, बारम्बार थूकता है और नेत्र काले हो जाते हैं इत्यादि।

सन्निपातोंके भेद।

"सुश्रुत" और "वाग्भट्ट" के मतसे सन्निपात एक ही प्रकारका होता है; किन्तु महर्षि "चरक" ने कमज़ोर दिमाग़वालोंके सुभीतेके लिये, उल्बण आदि भेदोंसे, तेरह प्रकारके सन्निपात लिखे हैं। कोई सज्जन सन्निपातको १३ प्रकारका, कोई ३ प्रकारका और कोई ५२ प्रकारका मानते हैं। उन सबके लिखनेसे ग्रन्थके बढ़ जानेका भय है और साधारण लोगोंको वे आफत-से मालूम होंगे; इसलिये हम तेरह सुप्रसिद्ध सन्निपात ज्वरोंके नाम और लक्षण लिखते हैं। इनसे चिकित्सा-क में सारा काम निकल सकता है।

संधिकश्चांतकश्चैवरुग्दाहश्चित्तविभ्रमः।
शीतांगतन्द्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जश्चकर्णकः॥
विख्यातोभुग्ननेत्रश्चरक्तष्ठीवी प्रलापकः।
जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश॥

सन्निपात ज्वरकी किस्में

१ सन्धिक	२ अन्तक।	३ रुग्दाह।
४ चित्तविभ्रम।	५ शीताङ्ग।	६ तन्द्रिक।
७ कंठकुब्ज।	८ कर्णक।	९ भुग्ननेत्र।
१० रक्तष्ठीवी।	११ प्रलापक।	१२ जिह्वक।
	१३ अभिन्यास।	

सन्धिक सन्निपातके लक्षण

पूर्वरूपकृतशूलसम्भवं शोफवातबहुवेदनान्वितम्।
श्लेष्मतापबलहानिजागरं सन्निपातमितिसन्धिकंवदेत्॥

जिस ज्वरके पूर्वरूपमें ही शूल हो, शोफ हो, सन्धियों या जोड़ों में वादीका दर्द हो; कफ गिरना, बल-हानि—कमजोरी, सन्ताप और रातमें जागना—ये लक्षण हों, उसे "सन्धिक" सन्निपात कहते हैं।

नोट—सन्धिक सन्निपातके पूर्वरूपमें ही वात पीड़ाका ज़ोर होता है। जोड़ोंमें दर्द होना ही इसकी ख़ास पहचान है। किसी-किसीने सन्धियोंमें सूजन और अत्यन्त पीड़ा तथा खाँसी वग़ैरहका होना भी लिखा है। इस सन्निपातकी परमायु ७ दिनकी है; यानी इसका ज़ोर ७ दिन तक रहता है।

सन्धिक सन्निपातमें न तो गरम चिकित्सा करनी चाहिये न शीतल ही; यानी मातदिल इलाज करना चाहिये। इसमें हलके लंघन कराना, पसीने न आते हों, तो पसीने निकालकर शरीर हलका करना, यवागू का पथ्य देना और उत्तम परीक्षित दवा देना उचित है। किसीने इस सन्निपातको साध्य और किसीने कष्टसाध्य कहा है। सच तो यह है कि, कोई भी सन्निपात सुखसाध्य नहीं है। जो साध्य समझा जाता है, वह भी कष्टसाध्य है। अच्छा इलाज और ईश्वरकी दया होनेसे "सन्धिक" सन्निपातवाला बच सकता है।

अन्तक सन्निपातके लक्षण

दाहंकरोतिपरितापनमातनोति
मोहंददातिविदधाति शिरःप्रकंपम् ।
हिक्कां करोति कसनं च समाजुहोति
जानीहितं विबुधवर्जितमंतकाख्यम् ॥

बहुत दाह हो, सन्ताप हो, शरीर आगकी तरह जले, बेहोशी हो, सिरमें दर्द हो, कँपकँपी आवे, हिचकियाँ चलें, खाँसीका ज़ोर हो,--ये लक्षण हों तो "अन्तक" सन्निपात समझना चाहिये। बुद्धिमान इसको त्याज्य या असाध्य कहते हैं।

नोट—यह सन्निपात अपने नामके माफ़िक़ काम करता है। जिसे होता है, उसका अन्त ही कर देता है। इसीसे चतुर लोग इस सन्निपातवालेका इलाज हाथमें नहीं लेते। यह सन्निपात साक्षात् मृत्यु है। जिस ज्वरमें हिचकी और श्वास हों, उसे मौतका वारण्ट ही समझना चाहिये। इसकी अवधि दस दिनकी है। ईश्वरकी दया होनेसे कोई-कोई रोगी बच भी जाता है। इसलिये रोगीके घरवालोंसे कह-सुनकर इलाज करना चाहिये। पर सच्ची दवा तो सदा शिवका ध्यान है। इसमें 'रोटिका बन्धन' अच्छा काम देता है।

किसी-किसीने लिखा है—अन्तक सन्निपातवाला निरन्तर सिरको हिलाया करता है। सारे शरीरमें भयानक वेदना होती है। इसमें हिचकी, श्वास, खाँसी, दाह, बेहोशी, अत्यन्त सन्ताप, घबराहट और वृथा बकवाद—ये लक्षण होते हैं। इसमें शरीरका आगकी तरह जलना ख़ास लक्षण है।

रुग्दाह सन्निपातके लक्षण

प्रलापपरितापनप्रबलमोहमांद्य भ्रमः
परिभ्रमणवेदनाव्यथितकण्ठमन्याहनुः ।
निरन्तरतृषाकरःश्वसनकासहिक्काकुलः—
सकष्टतरसाधनोभवतिहन्तरुग्दाहकः ॥

रुग्दाह आनतान

बकता है, बुखारका ज़ोर होता है, बेहोशी बहुत होती है, निरन्तर प्यास लगती है, मन्दता, अनायास थकान, पीड़ा, मन्यानाड़ी—गर्दन और ठोढ़ीमें दर्द, खाँसी, श्वास और हिचकी,—ये लक्षण होते हैं।

नोट—इसकी अवधि २० दिनकी है। यह सन्निपात कष्टसाध्य है। अच्छा इलाज होनेसे रोगी बच सकता है। रुग्दाहका इलाज पित्तज्वरके समान होता है। भीतरी दाहके नाश करनेमें "षड़ङ्गपानीय" अच्छा काम करता है। शरीरके ऊपर लेप करनेके लिये नीमके झाग अच्छे हैं। बेरके पत्ते दहीमें पीसकर लगानेसे भी अच्छा चमत्कार नज़र आता है। मिश्री और शहद मिलाकर धान की खीलोंका रस या गायके दूधमें मिश्री मिला साबूदाना अच्छा पथ्य है। इस ज्वरमें रोगीका बहुत बकना ख़ास लक्षण है।

चित्तभ्रम सन्निपातके लक्षण

यदिकथमपिपुंसांजायतेकायपीडा
भ्रममदपरितापोमोहवैकल्यभावः।
विकलनयनहासोगीतनृत्यप्रलापी
ह्यभिदधतिअसाध्यंकेपिचित्तभ्रमाख्यम् ॥

जिसके शरीरमें किसी तरहकी पीड़ा हो, भ्रम (धतूरा खानेकी-सी हालत), सन्ताप, मोह—बेहोशी, विकलता—घबराहट, आँखोंमें बेकली, हँसना, गाना, नाचना, बकना—ये लक्षण हों, उसे कोई असाध्य "चित्तभ्रम" सन्निपात कहते हैं।

नोट—किसी-किसीने लिखा है,—इस सन्निपातवाला नाचता, गाता, हँसता और वृथा बकता है, बुरी तरहसे देखता है, बेहोश हो जाता है तथा दाह—जलन, तकलीफ और भयके मारे दुखी रहता है। इस ज्वरमें रोगीको होश नहीं रहता, उसके चित्तमें भ्रम हो जाता है और बुख़ारके ज़ोरके मारे मतवाला-सा हो जाता है।

इसे कोई-कोई असाध्य कहते हैं, पर अच्छा इलाज होने से रोगी आराम हो जाता है। इसमें रोगीको तसल्ली देना, उसके दिलको शान्त

रखना ज़रूरी है। इसकी अवधि २४ दिनकी है। इसमें पहले साधारण उपायोंसे बेहोशी नष्ट करनी चाहिये। नस्य, अञ्जन और धूपसे काम लेना और काढ़ा पिलाना चाहिये। इसमें रोगीका मतवाला-सा हो जाना खास लक्षण है।

शीताङ्ग सन्निपातके लक्षण

हिमसदृशशरीरोवेपथुः श्वासहिक्का
शिथिलितसकलांगः खिन्ननादोग्रतापः।
क्लमथुदनथु कासच्छर्द्यतीसारयुक्त—
स्त्वरितमरणहेतुः शीतगात्रप्रभावात् ॥

शरीर बर्फ़के समान शीतल हो, शरीर कांपे, श्वास और हिचक हों, सारे अङ्ग ढीले हों, आवाज़ धीमी हो, शरीरके भीतर उग्र सन्तापी हो, अनायास थकान हो, मनमें सन्ताप हो, खाँसी, वमन और अतिसार—पतले दस्त—हों,—ये लक्षण "शीताङ्ग" सन्निपातके हैं।

नोट—किसीने लिखा है,—इस शीताङ्ग सन्निपातमें शरीर बर्फ़के समान शीतल हो जाता है; श्वास, खाँसी, हिचकी, मोह—बेहोशी—प्रलाप—आनतान बकना और ग्लानि—ये लक्षण होते हैं; कफ बहुत गिरता है, वायुका कोप अधिक होता है, दाह होता है, क्रम होती है, सारे शरीरमें दर्द होता है और आवाज़ बैठ जाती है।

शरीरका बर्फ़की तरह ठण्डा होजाना इस सन्निपातका खास लक्षण है। अगर शरीरमें जल्दी गरमी न पहुँचाई जाय, भीतर दाह और प्यासका जोर हो, तो रोगीका बचना नामुमकिन है; क्योंकि भीतर दाह होना और ऊपर सर्दी लगना,—मौतकी निशानी है। जब शरीरके भीतर पित्त और बाहर वायु और कफ होते हैं, तब शरीर के भीतर दाह और शोष होता है तथा बाहर पसीने और शीतलता होती है। जब भीतर वातकफ और बाहर पित्तका दौरदौरा होता है, तब शरीर गरम रहता है और हाथ-पैर शीतल रहते हैं। इसकी अवधि

१५ दिनकी है; पर यह अवधि कहने-भरकी है। शरीरमें गरमी न पहुँचे, तो रोगी निश्चय ही मर जाय। इसलिये इस सन्निपातमें जैसे भी हो, खूनमें गरमी पहुँचानी चाहिये। अगर भीतर दाह और प्यास हो, तथा वाहर सर्दी हो, तो इलाज हाथमें लेकर वदनामीका ठीकरा लेना है।

तन्द्रिक सन्निपातके लक्षण

प्रभूतातंद्रार्त्तिर्ज्वरकफ पिपासाकुलतरो
भवेच्छ्यामाजिह्वापृथुलकठिनाकंटकवृता।
अतीसारः श्वासःक्लमथुपरितापः श्रुति—
रुजोभृशंकंठेजाड्यं शयनमनिशंतंद्रिकगदे॥

तन्द्रा वहुत हो, शूल, ज्वर, कफ और प्याससे रोगी घबरा रहा हो, जीभ काली हो गई हो तथा मोटी, कठोर और काँटोंसे युक्त हो, अतिसार हो, ग्लानि हो, सन्ताप हो, कानोंमें दर्द हो, कण्ठमें जड़ता हो और रात-दिन नींद आती हो—अगर ये लक्षण हों, तो "तन्द्रिक" सन्निपातज्वर समझना चाहिये।

नोट—किसीने इस सन्निपातमें श्वासकी अधिकता, खाँसी, गलेमें सूजन, खुजली और बहरापन प्रभृति लक्षण लिखे हैं। तन्द्रिककी अवधि २५ दिनकी है। अगर सद्वैद्य चिकित्सा करे, तो रोगी बच सकता है। इस सन्निपातमें ख़ास वात यह होती है कि, रोगी टकटकी लगाकर एक तरफ़ देखा करता है, उसकी आधी पलकें ढकी रहती हैं या आँखोंके सामने अँधेरा रहता है। बार-म्बार गलेमें कफ भर-भर आता है। गलेमें इतनी खुश्की रहती है कि, बोला नहीं जाता। इसमें तन्द्राका बड़ा ज़ोर रहता है; क्योंकि इसका नाम ही "तन्द्रिक" है। "तन्द्रा" सन्निपातमें सबसे बुरा उपद्रव है। नस्य देने और अञ्जन लगानेसे तन्द्रा नाश होती है। पीनेको काढ़ा देना चाहिये।

कण्ठकुब्ज सन्निपातके लक्षण

शिरोर्तिकण्ठग्रहदाहमोहकंपज्वरारक्तसमीरणार्त्तिः।
हनुग्रहस्तापविलापमूर्च्छास्यात्कण्ठकुब्जःखलुकष्टसाध्यः॥

सिरमें दर्द, गलेमें दर्द, दाह, मोह, कम्प (कँपकँपी आना), वातरक्तकी पीड़ा, ठोढ़ी जकड़ जाना, सन्ताप, प्रलाप, आनतान बकना और मूर्च्छा—ये लक्षण "कण्ठकुब्ज" सन्निपातज्वरमें होते हैं। यह निश्चय ही कष्टसाध्य है।

नोट—इस सन्निपातमें सैकड़ों धानके छिलकोंकी तरह कण्ठमें कांटे पड़ जाते हैं। इसमें गलेकी तकलीफ़ बड़े ज़ोरसे होती है। पहले ही गला रुक जाता है, इसलिये पानी पीते समय भयानक पीड़ा होती है। एक घूँट जल पीनेमें छुरियाँ-सी लगती हैं—दम-सा निकलता है। इसमें श्वासका ज़ोर बहुत रहता है। रोगी बकता भी बहुत है। सिरमें घोर वेदना, मूर्च्छा और गला रुकना, इसके खास लक्षण हैं। इसकी अवधि १३ दिन की है; पर यह बड़ी कठिनाईसे आराम होता है। सबसे पहले गला खोलनेकी तज़वीज करनी चाहिये, दोनों समय काढ़ा पिलाना चाहिये और ताक़त कम न हो, इसलिये ताक़त लानेवाला कोई यूष देना चाहिये।

कर्णक सन्निपातके लक्षण

प्रलापश्रुतिहासकंठग्रहांगव्यथाश्वासकासप्रसेकप्रभावम् ।
ज्वरं तापकर्णांतयोर्गल्लपीडाबुधाःकर्णकंकष्टसाध्यंवदन्ति ॥

आनतान बकना, बहरा हो जाना, गलेमें दर्द होना, अङ्गोंमें पीड़ा होना, श्वास, खाँसी, पसीना, लार गिरना, ज्वर, सन्ताप, कान और गालमें दर्द,—ये लक्षण जिसमें हों, वह "कर्णक" सन्निपात रोगी है। बुद्धिमान लोग इस ज्वरको कष्टसाध्य कहते हैं।

नोट—इसमें रोगीका बहरा हो जाना, कानों और गालोंमें दर्द होना और लार बहना—ख़ास लक्षण हैं। एक जगह लिखा है, दोषोंके अत्यन्त कुपित होनेसे कानकी जड़में अत्यन्त सूजन और दर्द होता है, मल रुक जाता है तथा बहरापन, प्यास और बेहोशी प्रभृति लक्षण होते हैं। इस ज्वरमें "कर्णमूल" अवश्य होता है।

सन्निपातज्वरके अन्तमें कानकी जड़में एक प्रकारकी भयानक

सूजन होती है, उसे ही "कर्णमूल" कहते हैं*। अगर वह न पकी हो, तो लेप करना चाहिये। पक गई हो, तो जोंक लगवाकर नीमके पत्ते बाँधने चाहियें अथवा नश्तर द्वारा खराब खून निकलवाकर, घावकी तरह इलाज करना चाहिये। तत्काल खून निकलवा देनेकी सभीने राय दी है। खराब खून रहकर रोगीको मार डालता है। "पंचतिक्त घृत" प्रभृति कफपित्त-नाशक घी पिलाना, कफपित्त-नाशक लेप करना, सन्निपात-नाशक नस्य देना और मुखमें कवल रखाना, ये सब उस सूजनके नाश करनेमें हितकारी हैं। ऐसे मौके पर, "दशमूलकी औषधियोंका लेप" अथवा स्वेद अथवा "प्याजका स्वेद" दर्दको जल्दी आराम करता है। दोनों समय काढ़ा पिलाना चाहिये। इस सन्निपातकी अवधि ६० दिन या ३ मासकी है।

भुग्ननेत्र सन्निपातके लक्षण

ज्वरबलापचयःस्मृतिशून्यताऽश्वसनभुग्नविलोचनमोहितः।
प्रलपनभ्रमकम्पनशोफवांस्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्नदृक् ॥

ज्वर, बल-नाश—कमजोरी, स्मृति-नाश—याद न रहना, श्वास, टेढ़ी दृष्टि, बेहोशी, आनतान बकना, भ्रम, शरीर घूमना, कँपकँपी और सूजन—ये लक्षण "भुग्ननेत्र" सन्निपातके हैं। यह रोगी जल्दी मरता है।

नोट—किसीने लिखा है—इस सन्निपातज्वरमें नेत्र अत्यन्त टेढ़े हो जाते हैं; श्वास, खाँसी, अत्यन्त प्रलाप—बकना, मद—नशा-सा रहना, शरीर काँपना और कानोंमें बहरापन तथा बेहोशी—ये होते हैं।

---

*वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषोंसे "त्रिदोष ज्वर" होता है। जब वह ज्वर रक्तमें मिल जाता है, तब उसीको "सन्निपातज्वर" कहते हैं। जब तक ज्वरका और खूनका मेल न हो, सन्निपातज्वर नहीं समझना चाहिये। "त्रिदोषज्वर" और "सन्निपातज्वर" में यही भेद है। क्वाथ और पाचनसे वातादिक तीनों दोष शान्त हो जाते हैं, पर रक्त या खून शान्त नहीं होता; इसीसे कानकी जड़ में भयङ्कर सूजन—कर्णमूल—होती है।

इस सन्निपातकी अवधि ८ दिन की है। नेत्रोंका टेढ़ा हो जाना अथवा नज़रका तिरछा हो जाना और स्मरण-शक्तिका नाश हो जाना,—इसके ख़ास लक्षण हैं। इसकी अवधि आठ दिनकी है; पर रोगी चटपट ही ख़तम होता है। अञ्जन और नस्य द्वारा दृष्टि ठीक करनी चाहिये। दोनों समय काढ़ा पिलाकर, स्मरण-शक्ति वग़ैरह दुरुस्त करनी चाहिये।

रक्तष्ठीवी सन्निपातके लक्षण

रक्तष्ठीवीज्वरवमितृपामोहशूलातिसाराः
हिक्काध्मानभ्रमणदवथुश्वाससंज्ञाप्रणाशाः।
श्यामारक्ताधिकतररसनामण्डलोत्थानरूपा
रक्तष्ठीवीनिगदितइहप्राणहन्ताप्रसिद्धः।

ख़ूनकी क़य होना, ज्वर, वमन, प्यास, मूर्च्छा—बेहोशी, शूल—दर्द, अतिसार—पतले दस्त, हिचकी, पेटपर अफारा, भौंर आना, सन्ताप, श्वास, संज्ञा-नाश, जीभ काली और लाल हो जाना, शरीरमें ख़ूनके विकारसे चकत्ते होना—ये सब लक्षण "रक्तष्ठीवी" सन्निपातज्वरके हैं। यह प्रसिद्ध प्राण-नाशक सन्निपातज्वर है।

नोट—किसीने लिखा है, इस ज्वरमें रोगी ख़ून थूकता है, शरीरमें ख़ूनके-से चकत्ते हो जाते हैं, नेत्र लाल हो जाते हैं, रोगी अचेत हो जाता है, बारम्बार गिर पड़ता है और होश नहीं रहता है, इत्यादि।

इस सन्निपातमें जीभका काला और लाल हो जाना तथा उससे ख़ून बहना और उस पर चकत्ते हो जाना ख़ास लक्षण हैं। बहुत करके थूकके साथ ख़ून आता है और वमन भी होती है। काढ़े वग़ैरहसे ख़ून बन्द करना चाहिये और नस्य देनी चाहिये। इस सन्निपातमें बहुत गरम इलाज करना ख़राब है। यह सन्निपात असाध्य है। इसकी अवधि १० दिनकी है।

प्रलापक सन्निपातके लक्षण

कम्पप्रलापपरितापनशीर्षपीडा प्रौढप्रभावपवमानपरोऽन्यचिन्ता।
प्रज्ञाप्रणाशविकलप्रचुरप्रवादः क्षिप्रंप्रयातिपितृपालपदंप्रलापी।

प्रलापकमें—कम्प, बड़बड़ाहट, सन्ताप और सिरदर्दका अधिक जोर होता है। रोगी पवित्रतामें आसक्त रहता है, दूसरोंकी चिन्ता करता है, बुद्धिका नाश हो जाता है, विकलता और बकवादकी अधिकता रहती है। "प्रलापक" सन्निपातवाला शीघ्र ही यमराजके यहाँ जाता है।

नोट—इस सन्निपातज्वरमें अत्यन्त सिरदर्द, बकना और बुद्धिका नाश होना—मुख्य लक्षण हैं। सभी दोषोंका अत्यन्त कोप होनेसे रोगी बहुत बकता है, उठ-उठकर भागता है और गिर-गिर पड़ता है। दाह और अत्यन्त बेहोशी होती है। रोगीका दिन-रात बकना, अपनी तारीफ़ करना और पराई चिन्ता करना विशेष लक्षण हैं। इसकी अवधि १४ दिनकी है, पर रोगी हर घड़ी यमालयकी राह देखता है। इस सन्निपातज्वरको धीरज देने, अञ्जन लगाने, तेज़ नस्य देने और अन्धकार सेवनसे जीतना चाहिये।

जिह्वक सन्निपातके लक्षण

श्वसनकासपरितापविह्वलः कठिनकंटकपरीतजिह्वकः।
बधिरमूकबलहानिलक्षणोभवति कष्टतरसाध्यजिह्वकः॥

श्वास, खाँसी, सन्ताप, विह्वलता, कठोर और काँटोंसे व्याप्त जीभ, बहरापन, गूंगापन और बलहानि—कमजोरी—ये "जिह्वक" सन्निपातज्वरके लक्षण हैं। यह कष्टसाध्य है।

नोट—जीभमें कांटे पड़ जाना, रोगीका गूँगा और बहरा हो जाना, भयानक सन्ताप होना—इसके ख़ास लक्षण हैं। इसकी मर्यादा १६ दिनकी है। इसमें जीभको ऊपरी इलाजसे नर्म करना चाहिये। इस ज्वरका इलाज रक्तष्ठीवीसे मिलता-जुलता है।

अभिन्यास सन्निपातके लक्षण

दोषत्रयस्निग्धमुखत्वनिद्रा वैकल्यनिश्चेष्टनकष्टवाग्मी।
बलप्रणाशःश्वसनादिनिग्रहोऽभिन्यासउक्तोनतुमृत्युकल्पः॥

त्रिदोषके कोपके समान मुँहपर चिकनाई, नींद, बेकली, चेष्टा-हीनता, तकलीफ़से बोलना, बल-नाश—कमज़ोरी, श्वास प्रभृतिका रुकना—ये सब चिह्न "अभिन्यास सन्निपात" के हैं। यह सन्निपात महा असाध्य और मृत्युतुल्य है।

नोट—किसीने लिखा है, इस ज्वरमें सभी दोष अति बलवान और तेज़ होते हैं। अत्यन्त बेहोशी, गूँगापन अधिक और मुँहपर चिकनाई होती है। रोगी बहुत ही बेचैन रहता है, दाह भी होता है, अग्नि मन्दी हो जाती है। ज़रा भी चेष्टा नहीं रहती और श्वासका ज़ोर रहता है।

अभिन्यास सन्निपातज्वरमें मुखपर चिकनाई होना, श्वासका रुक-रुककर आना और बोला न जाना ख़ास लक्षण हैं।

नोट—'सुश्रुत' में सन्निपातके विशेष लक्षण—चूँकि जगत अग्नि और सोमात्मक है, इसलिये सन्निपातके दो भेद माने हैं—(१) अभिन्यासात्मक (२) हतौजस। जिस रोगीके कफका अंश अधिक बढ़ जाता है, उसे 'अभिन्यासात्मक' सन्निपात होता है और जिसके वायु और पित्त अधिक बढ़ जाते हैं और कफके भाग—सौम्य धातुको नष्ट कर देते हैं, उसको 'हतौजस' सन्निपात होता है। जिस सन्निपातमें रोगीको नींद या तन्द्रा बहुत होती है, उसे "अभिन्यास" कहते हैं और जिसमें क्षीणता ज़ियादा होती है, उसे "हतौजस" कहते हैं। जिसमें शरीर काठकी तरह पड़ा रहता है, उसे "सन्यास" कहते हैं। जिसमें सारे लक्षण होते हैं, वह असाध्य होता है और जिसमें कम लक्षण और कम उपद्रव होते हैं, वह कष्टसाध्य होता है।

शरीर न बहुत गरम हो और न अति शीतल हो, संज्ञा कम हो जाय, रोगी भ्रममें पड़ा हुआ-सा देखे, स्वर—आवाज़ नाश होजाय, जीभ खरदरी हो जाय, कंठ सूखे, पसीना और मल मूत्र बन्द हो जायँ, भोजनसे बैर हो, कान्ति नाश हो जाय, रोगी श्वास लेता हुआ जिधर गिर पड़े उधर ही बेहोश पड़ा रहे और बेहोश पड़ा हुआ ही आनतान बके—ये लक्षण 'अभिन्यास' सन्निपातके हैं। जिसके पित्त और वायु उल्बण होते हैं, उसका 'ओज' नष्ट हो जाता है। वह अचेतन की तरह पड़ा रहता है, जागता या सोता हुआ बकता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, शरीर शिथिल हो जाता है और सन्ताप और वेदना कम होती है। उसे चतुर वैद्य 'हतौजस' कहते हैं, यानी उसमें ओजका निरोध समझते हैं।

उक्त सन्निपातोंमें साध्यासाध्य-विचार

सन्धिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्णकःकण्ठकुब्जकः ।
जिह्वकश्चित्तविभ्रंशः षट्साध्याः सप्त मारकाः ।

सन्धिक, तन्द्रिक, कर्णक, कंठकुब्ज, जिह्वक, चित्तभ्रम	ये छै सन्निपात साध्य हैं ।
अन्तक, रुग्दाह, शीताङ्ग, भुग्ननेत्र, रक्तष्ठीवी, प्रलापक और अभिन्यास	ये सात सन्निपात मारक हैं ।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

सन्धिगस्तेषु साध्यः स्यात्तन्द्रिकश्चित्तविभ्रमः ।
कर्णको जिह्वकः कंठकुब्जः पंचापि कष्टकाः ॥
रक्तष्ठीवो भुग्ननेत्रः शीतगात्रः प्रलापकाः ।
अभिन्यासोऽन्तकश्चैते षट्साध्याः प्रकीर्त्तिताः ॥

इन तेरह सन्निपातोंमें एक "सन्धिक" साध्य है । तन्त्रिक, चित्त-विभ्रम, कर्णक, जिह्वक, कंठकुब्ज और रुग्दाह कष्टसाध्य हैं । रक्तष्ठीवी, भुग्ननेत्र, शीताङ्ग, प्रलापक, अभिन्यास और अन्तक असाध्य हैं ।

नोट—सन्निपातज्वरोंकी साध्यासाध्यताके सम्बन्धमें बड़ा मतभेद है । किसी-किसीने सन्धिक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्ज, जिह्वक और चित्तविभ्रमको साध्य कहा है, पर ये कष्टसाध्य हैं । रुग्दाहको किसीने कष्टसाध्य, किसीने अति कष्टसाध्य और किसीने मारक कहा है । शेष अन्तक आदिको सभीने मारक कहा है; पर ईश्वरकी दया हो, भाग्य अच्छा हो, अच्छा वैद्य मिल जाय, रोगीकी टूटी न हो; तो असाध्य भी साध्य हो जाता है ।

असाध्य कृच्छ्रसाध्यके लक्षण

"सुश्रुत" उत्तरतन्त्रमें लिखा है:—

दोषेविवृद्धे नष्टेऽग्नौ सर्व सम्पूर्णलक्षण।
सन्निपातज्वरोऽसाध्यः कृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥

कितने ही वैद्य कष्टसाध्य सन्निपातको भी असाध्य कहते हैं। अगर वातादि दोषोंकी वृद्धि हो, जठराग्नि नष्ट हो गई हो और दाह, शीत प्रभृति सारे लक्षण हों, तो सन्निपातज्वरको असाध्य समझना चाहिये। अगर दोष पक गये हों, अग्निदीपन हो और थोड़े-थोड़े लक्षण हों, तो सन्निपातज्वरको कष्टसाध्य समझना चाहिये।

सन्निपातज्वरोंकी अवधि

सन्निपातज्वरोंकी अवधि इस भाँति है:--

सन्धिककी ७ दिनकी, अन्तककी १० दिनकी, रुग्दाहकी २० दिनकी, चित्तविभ्रमकी २४ दिनकी, शीताङ्गकी १५ दिनकी, तन्द्रिककी २५ दिनकी, कंठकुब्जकी १३ दिनकी, कर्णककी ६० दिनकी, भुग्ननेत्र की ८ दिनकी, रक्तष्ठीवीकी १० दिनकी, प्रलापककी १४ दिनकी, जिह्वककी १६ दिनकी और अभिन्यासकी १६ दिनकी अवधि होती है। अर्थात् ये सन्निपातज्वरोंकी परमायुके दिन हैं; परन्तु रोगी शीघ्र भी मर जाता है।

और भी कहा है:—

सद्यस्त्रिपंचसप्ताहाद्दशाहाद्द्वादशादपि।
एकविंशदिनैःशुद्धःसन्निपातीसुजीवति ॥

सन्निपात होनेपर तत्काल तीन, पाँच, सात, दस और बारह दिनसे २१ दिन तक सन्निपातज्वर रोगी शुद्ध होकर जीता है।

और भी कहा है:—

संप्तमी द्विगुणा यावन्नवम्येकादशी तथा ।
एषा त्रिदोषमर्यादा मोक्षाय च वधायच ॥

सन्निपातज्वर अपने आनेके दिनसे चौदहवीं, वीसवीं अथवा चौवीसवीं रातमें शान्त हो जाता है या मार देता है। यह सन्निपातज्वरकी परम मर्य्यादा है; परन्तु रोगी जल्दी भी मर जाता है, यानी इस अवधिसे पहले या तत्काल भी मर जाता है।

"सुश्रुत"में लिखा है:—

सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशोपि वा ।
पुनर्घोरतरो भूत्वा प्रशमं याति हन्ति वा ॥

वातप्रधान सन्निपात सातवें दिन, पित्तप्रधान दसवें दिन और कफप्रधान बारहवें दिन, फिर घोरतर होकर शान्त हो जाता है अथवा मनुष्यको मार देता है। मतलब यह है कि "मलपाक" होता है, तो शान्त हो जाता है और "धातुपाक"होता है, तो मार देता है। पित्तकी; कफकी और वायुकी वृद्धिसे क्रमपूर्वक १० दिन, १२ दिन और ७ दिन में जो धातु पक जाते हैं, तो सन्निपात रोगीको मार डालता है और अगर मल पक जाता है, तो शान्त हो जाता है।

नोट—शुभ कर्मोंका उदय होनेसे 'मलपाक' होता है और अशुभ कर्मोंका उदय होनेसे 'धातुपाक' होता है। धातुओंका पाक रससे लगाकर वीर्य तक होता है। सन्निपात रोगीके जीवन-मरणमें 'मलपाक' और 'धातुपाक' सच्चे कारण हैं।

धातुपाकके लक्षण

निद्रानाशो हृदि स्तंभो विष्टंभो गौरवारुची ।
अरतिर्बलहानिश्च धातूनां पाकलक्षणम् ॥

नाभेरूर्द्ध हृदोऽधस्तात्पीडिते चेद्व्यथा भवेत् ।
धातोः पाकं विजानीयादन्यथा तु मलस्य च ॥

नींदका न आना, हृदयका जकड़ जाना, मलका रुकना, शरीरका भारी रहना, अरुचि, बेचैनी और बलका नाश—ये धातुपाकके लक्षण हैं। नाभिके ऊपर और हृदयके नीचे दबाने या छूनेसे दर्द हो, तो धातुओंका पाक हुआ समझो; यदि दर्द न हो, तो मलपाक हुआ समझो। और भी कहा है,—ज्वरसे पीड़ित मनुष्यके हृदयमें, नाभिके ऊपर, पाकके कारण, दुखते हुए अङ्गोंके उँगलियोंसे दबानेसे पीड़ा हो, तो धातुपाक हुआ समझो। इसलिये अच्छे जानकार वैद्य और डाक्टर, नाभिके ऊपर, उँगलियोंसे दबा-दबाकर धातुपाक और मल-पाकको मालूम कर लेते हैं; क्योंकि सन्निपात रोगीका मरण-जीवन विशेषकर इसी उपायसे मालूम होता है।

मलपाकके लक्षण

दोषप्रकृतिवैकृत्य लघुताज्वरदेहयोः ।
इन्द्रियाणांचवैमल्यं दोषाणांपाकलक्षणम् ॥

दोषोंका स्वभाव बदल गया हो यानी वातादिक दोषोंके कारणसे होनेवाले दाह, तन्द्रा, प्यास आदि उपद्रव न हों या उनका ज़ोर घट गया हो; ज्वर और शरीर हलके हों तथा इन्द्रियोंमें निर्मलता हो, तो मलपाक समझो। और भी कहा है,—पाँचों इन्द्रियाँ निरन्तर अपना काम करती हों, जठराग्नि दीप्त हो, प्यास वगैरह शान्त हों, ज्वर हलका हो, तो दोषोंका पाक हुआ समझो। अगर हृदय और नाभिमें घोर पीड़ा हो, अधिकतर पतला दस्त हो, ज्वर ज़ोरसे हो, प्यास, मद, श्वासका बढ़ाव हो, बेचैनी और अरुचि हो, तो धातुपाक हुआ समझो। मलपाक ईश्वरकी कृपा और पुण्यफलसे होता है। जिसकी मृत्यु निश्चित होती है, उसे ही धातुपाक होता है।

सन्निपातज्वरका भयंकर उपद्रव

सन्निपातज्वरस्यान्ते कर्णमूलेसुदारुणः ।
शोथःसंजायते तेन कश्चिदेवप्रमुच्यते ॥
ज्वरस्यपूर्व ज्वरमध्यतोवा ज्वरान्ततोवा श्रुतिमूलशोथः ।
क्रमादसाध्यः खलुकष्टसाध्यः सुखेनसाध्योमुनिभिप्रदिष्टः ।

सन्निपात होनेके पीछे कानकी जड़में भयानक सूजन होती है; उस सूजनसे कोई ही रोगी बचता है। ज्वरके पहले, ज्वरके बीचमें और ज्वरके अन्तमें कानकी जड़में शोथ (सूजन) होता है, वह क्रमसे असाध्य, कष्टसाध्य और सुखसाध्य होता है।

ज्वरके अन्तमें सूजन होती है; पर ज्वरके आरम्भ और बीचमें भी होना लिखा है। ज्वरके आदिकी सूजन असाध्य, बीचकी कष्टसाध्य और अन्तकी सुखसाध्य होती है। इस सूजनको रोगीकी मृत्यु ही समझना चाहिये। असलमें, यह सूजन रोगीके प्राणनाश करनेके लिये ही पैदा होती है। जब सन्निपातज्वरोंमें वातपित्तकी गरमी बहुत बढ़ जाती है और वह उचित चिकित्सा न होनेसे शान्त नहीं होती, तब वही गरमी मस्तिष्कमें पहुँचकर, वहाँके खूनको एकदमसे गरम करके पतला कर देती है, फिर वही खून वहाँ से चलकर कानके नीचेकी नस में आकर जम जाता है; क्योंकि गाढ़ा होनेके कारण खूनका बहना बन्द हो जाता है; उससे जो सूजन पैदा हो जाती है उसे ही "कर्णमूल" कहते हैं।

इस सूजनका खून अवश्य निकलवा देना चाहिये। जौंक लगवाकर अथवा सींगी या तूम्बी लगवाकर या नश्तर लगवाकर खून निकलवाना चाहिये। "वङ्गसेन" ने लिखा है—रुधिरस्राव—खून निकालकर, दागकर, घृतपान कराकर, कफपित्त-नाशक वमन और कवल वगैरह देकर उसे जीतना चाहिये। 'चरक" में लिखा है,—सन्निपातज्वर

के अन्तमें, कर्णमूलमें दारुण सूजन पैदा होती है। इसके होनेसे कोई ही रोगी बचता है। तत्काल खून निकलवाना, कफपित्त-नाशक लेप करना और कवल धारण कराना—इस सूजनके नाशके उपाय हैं। जौंकों द्वारा खून निकलवाया जाय, तो एक दिन नीमके पत्ते बाँधकर फिर कोई लेप करना चाहिये। यही इसकी सर्वोत्तम चिकित्सा है।

सामान्य सन्निपातोंके तेरह भेद

वातोल्बण

(१) विस्फारक सन्निपात

श्वास, खाँसी, भ्रान्ति, मूर्च्छा, प्रलाप, कम्प, बेहोशी, पसलियोंमें दर्द, जँभाई आना और मुखमें कषैलापन—ये वातोल्बण सन्निपात-ज्वरके लक्षण हैं। इस दारुण सन्निपातको "विस्फारक" कहते हैं।

पित्तोल्बण

(२) आशुकारी सन्निपात

पतले दस्त, भ्रान्ति, मूर्च्छा, मुँह पकना, शरीरमें लाल-लाल बिन्दुओंका होना और अत्यन्त दाह—ये पित्तोल्बण सन्निपातके लक्षण हैं। इसको "आशुकारी" कहते हैं।

कफोल्बण

(३) कम्पन सन्निपात

जड़ता, गद्गद बोली, रातमें नींदका भी आना, नेत्रोंमें स्तब्धता और मुखमें मधुरता—ये कफोल्बण सन्निपातके लक्षण हैं। इसे ऋषि लोग "कम्पन" कहते हैं।

वातपित्तोल्बण

(४) बभ्र सन्निपात

ज्वर, मद, प्यास, मुंह सूखना, आँखोंका मिची-सी मालूम होना, अफारा, अरुचि, तन्द्रा, खाँसी, श्वास, भ्रम, श्रम, थकान—ये सब

लक्षण वातपित्तोल्बण या वात और पित्तकी अधिकतावाले "बभ्र" या "बभ्रु" सन्निपातके हैं।

वातकफोल्बण

(५) शीघ्रकारी सन्निपात

शीतज्वर, मूर्च्छा, भूख, प्यास, पसलियोंमें दर्द, शूल, पसीनोंका न आना, तन्द्रा और श्वास—ये सब लक्षण वातकफोल्बण या वातकफाधिक सन्निपातके हैं। यह सन्निपात असाध्य है। इसका नाम "शीघ्रकारी" है। इस सन्निपातवाला एक दिन भी नहीं जीता।

पित्तकफोल्बण

(६) भल्लु सन्निपात

शरीरके भीतर दाह और ऊपरसे सर्दी, प्यासका बढ़ाव, दाहनी पसलीमें दर्द, हृदय, मस्तक और कंठमें वेदना, कफ और पित्त अत्यन्त कठिनतासे थूका जाय, शरीरमें चकत्ते हो जायँ, दस्त आने लगें, श्वास, हिचकी और आँखोंका मिचा-सा जाना—ये लक्षण पित्तकफोल्बण या पित्तकफाधिक सन्निपातके हैं। इसको भल्लु या फल्गु सन्निपात कहते हैं।

वातपित्तकफोल्बण

(७) कूटपाकल सन्निपात

जब त्रिदोषोल्बण या तीनों दोषोंकी अधिकतासे सन्निपात कुपित होता है, तब उसमें तीनों दोषोंके लक्षण दिखाई देते हैं। यह सन्निपात सब बीमारियोंसे बढ़कर वज्र और शस्त्रके समान भयङ्कर है। इसमें रोगी केवल ऊँचा श्वास लेता है। सारा शरीर जकड़ जाता है, नेत्र पत्थरके समान हो जाते हैं। यह सन्निपात ३ दिनमें मनुष्योंके प्राण हर लेता है। इसको मूर्ख लोग राक्षस और भूतादिकी बाधा समझते हैं। वैद्य इसे "कूटपाकल" कहते हैं।

अधिकवात, मध्यपित्त, हीनकफ

(८) सम्मोहक सन्निपात

अधिक वात, मध्यपित्त और हीन कफके कोपसे जो सन्निपात होता है, उसमें इन्हीं दोषोंके अनुसार क्रमसे अधिक, मध्य और हीन रोग होते हैं। व्यथा—दर्द, कम्प, निद्राका न आना और क़ब्ज़ आदि ये वात-सम्बन्धी रोग होते हैं। भारीपन, अग्निकी मन्दता, खाँसी और नाक तथा मुखसे पानी गिरना आदि कफ-सम्बन्धी रोग होते हैं। इस सन्निपातमें प्रलाप, परिश्रम, बेहोशी, कम्प, मन न लगना, भ्रम और पक्षाघात यानी एक तरफके शरीरका रह जाना—ये विशेष लक्षण होते हैं।

नोट—जो लोग इन सन्निपातोंको आसानीसे समझना चाहें,—उन्हें वायु, पित्त और कफकी वृद्धि, क्षय और कोपके लक्षण कंठाग्र रखने चाहियें। जो दोषों के इन लक्षणोंको अच्छी तरह याद नहीं रखते, उनको चिकित्सामें सफलता नहीं हो सकती। उनका काम अन्धेकी तरह है। देखो, पहला भाग पृष्ठ १२७–१२९। उनके याद करनेमें जो कष्ट होगा, उससे बहुतसे कष्टोंसे बचोगे। वह असल कुञ्जी है।

दोष क्षीण होनेपर भी बीमारी करते हैं। वायुके क्षय होनेसे चेष्टा अल्प हो जाती है, आवाज़ मन्दी हो जाती है और संज्ञाका नाश हो जाता है।

पित्तके क्षय होनेसे कफ जियादा बढ़ जाता है, अग्नि मन्द हो जाती है और कान्ति नष्ट हो जाती है।

कफके क्षय होनेसे सन्धियाँ (जोड़) शिथिल हो जाती ह; बेहोशी, रूखापन और दाह उत्पन्न होता है। याद रक्खो, दोष बढ़कर भी रोग करते हैं और घटकर भी। दोषोंके समान रहनेसे ही सुख, बल और पुष्टि होती है।

मध्यवात, अधिकपित्त, हीनकफ

(९) पाकल सन्निपात

इन दोषोंके बल-अनुसार कम्प, दाह, भारीपन आदि लक्षण होते हैं तथा मोह, प्रलाप, मूर्च्छा, गर्दनका जकड़ जाना, सिरमें दर्द, खाँसी, श्वास, भ्रम, तन्द्रा, संज्ञा-नाश, हृदयमें व्यथा, इन्द्रियोंके सूराखोंसे खून गिरना, आँखोंमें सुर्खी और उनका जड़ हो जाना—ये लक्षण विशेषकर होते हैं। इस सन्निपातमें रोगी ३ दिनके भीतर मर जाता है। इसका नाम "पाकल" है।

हीनवात, अधिकपित्त, मध्यकफ

(१०) याम्य सन्निपात

इन दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि सब लक्षण होते हैं; तो भी हृदयमें दाह होता है, यकृत, कलेजा, तिल्ली, आँतें और फेफड़े पक जाते हैं, मुख और गुदासे खून और राध निकलते हैं, दाँत गिर जाते हैं और मरण होता है। ये लक्षण विशेष होते हैं। इसका नाम "याम्य" है।

अधिकवात, हीनपित्त, मध्यकफ

(११) क्रकच सन्निपात

इन दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं; तो भी बकवाद, परिश्रम, मोह, कम्प, मूर्च्छा, बेचैनी, भ्रम, मन्यानाड़ी (गर्दन) के जकड़ जानेसे मृत्यु—ये लक्षण विशेष होते हैं। इसको "क्रकच" कहते हैं।

मध्यवात, हीनपित्त, अधिककफ

(१२) कर्कटक सन्निपात

इन दोषोंके बल-अनुसार, कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं; तो भी शरीरके भीतर दाह-जलन हो, बोला न जाय, चेहरा आलसे रंगे हुए की तरह लाल हो जाय, पित्तसे खिंचा हुआ कफ

छातीके बाहर न आवे, पसलियोंमें तीर छेदनेका-सा दर्द हो, हृदयमें खोदनेकी-सी पीड़ा हो, आँखें मिची-सी हो जायँ, श्वास और हिचकी हर रोज़ बढ़ें, जीभ जली-सी काली और खरदरी हो जाय, कण्ठमें धानके तूरकी तरह काँटे पड़ जायँ, बेहोशीमें पाख़ाना-पेशाब निकल जाय, कबूतरकी तरह गलेमें कूजन हो, कंठ कफसे भरा रहे, मुख, होठ और तालू सूख जायँ, तन्द्रा और निद्रा अधिक हो, आवाज़ भारी हो जाय, कान्ति नाश हो जाय, किसी तरह कहीं चैन न पड़े, विपरीत पदार्थोंकी चाहना हो, बारम्बार खाँसनेसे थोड़ा-थोड़ा खून थूकमें आवे—ये लक्षण विशेष होते हैं। इस अत्यन्त घोर सन्निपातको "कर्कटक" कहते हैं।

हीनवात, मध्यपित्त, अधिककफ

(१३) वैदारिक सन्निपात

इन्हीं दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि होते हैं तथा अन्न शूल, कमरमें तोड़नेका-सा दर्द, छातीमें दाह, जलन और दर्द, भ्रान्ति, अत्यन्त ग्लानि; सिर, मूत्राशय, गर्दन, हृदय और बोलने में दर्द हो, आँखें मिची जायँ, श्वास, खाँसी, हिचकी, जड़ता और अत्यन्त बेहोशी ये लक्षण होते हैं। इस सन्निपातके पैदा होते ही यदि इलाज किया जाय, तो शायद आराम हो जाय। देर होनेसे आराम होनेकी आशा नहीं। इस सन्निपातके शान्त होने पर कानकी जड़में बहुत बड़ी फुड़िया होती है। इसके निकलनेपर कोई ही बचता है। इस घोर सन्निपातको "वैदारिक" कहते हैं। इसके उत्पन्न होनेपर ३ रात बीत जायँ, तो औषधिकी कल्पना करना वृथा है।

सन्निपातज्वरोंकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) बढ़े हुए दोषको घटाकर और घटे हुएको बढ़ाकर तथा कफके स्थानसे आरम्भ करके, सन्निपातकी चिकित्सा करनी चाहिये। हीनको

बढ़ाकर, बढ़े हुएको घटाकर अथवा अत्यन्त बढ़े हुएको हीन करके और हीनको बढ़ाकर सन्निपातोंमें दोषोंकी विरेचना करनी चाहिये।

(२) सन्निपातमें पहले आम और कफकी चिकित्सा करनी चाहिये। "हारीत" ने कहा है,—"सन्निपातज्वरमें पहले वात-कफको नाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये। जब कफ क्षय हो जाता है या सूख जाता है, तब वात और पित्त आप ही शान्त हो जाते हैं। त्रिदोष-ज्वर प्राण-नाशक होता है, इसलिये यशकामी वैद्यको पहले कफके सुखानेकी तदबीर करनी चाहिये—पित्तको शान्त न करना चाहिये; क्योंकि कफ और वातकी अधिकतावाले रोगीको ज्वर मार देता है। जब कफ सूख जाय, तब वातको निवारण करना चाहिये; पित्तके कोप-को समझकर पित्तको भी शान्त करना चाहिये। वात और कफको सुखाना परमावश्यक है; पर पित्तको नष्ट करना उचित नहीं है।"

तात्पर्य यह है, सन्निपात ज्वरमें पहले कफ-नाशक औषधि देनी चाहिये। उसके बाद पित्तकी शान्तिके लिए देवदारु, कायफल, त्रिफला, लालचन्दन, फालसे, कुटकी, पद्माख और खसका काढ़ा देना चाहिये। यह काढ़ा त्रिदोष, दाह और प्यासको शान्त करता तथा बहुत दिनोंके ज्वरमें अमृत-समान है।

(३) सन्निपातज्वरमें पहला काम क़ायदेसे लंघन कराना है। ज्वरमें सात दिन तक लंघन करानेका मामूली क़ायदा है; किन्तु सन्निपातमें खास नियम है। वह यह कि, जब तक आरोग्यके लक्षण न दीखें, तीन रात, पाँच रात या दस रात तक लंघन कराने चाहियें। वायु शीघ्र गतिवाला है, पित्त मध्य गतिवाला है और कफ मन्द गतिवाला है। वायु जल्दी पचता है, पित्त उससे देरमें और कफ उससे भी देरमें पचता है। इसलिए इन तीनों दोषोंकी उल्बणता या प्रधानता का ख़याल करके ३, ७ या १० लंघन कराने चाहियें; अर्थात् वातोल्बण सन्निपातमें ३ रात, पित्तोल्बणमें ७ रात और कफोल्बणमें १० रात तक लंघन कराने चाहियें। तीन रातकी अवधि ही पर न जम जाना

चाहिये। जब तक आरोग्यके लक्षण न दीखें, लंघन कराने चाहियें।

"सुश्रुत" में लिखा है,—सातवें, दसवें अथवा बारहवें दिन तक सन्निपातज्वर स्वाभाविक रीतिसे अत्यन्त घोर होकर शान्त हो जाता है या मार डालता है; पित्त, कफ और वायुकी वृद्धिसे क्रमपूर्वक दस, बारह या सात दिनमें धातुपाक होनेसे मार डालता है और मलपाक होनेसे शान्त हो जाता है। धातुपाक और मलपाकमें पूर्वजन्मके शुभाशुभ कर्म ही कारण हैं। धातुपाक और मलपाकके लक्षण पीछे २२५वें पृष्ठमें लिख आये हैं।

कुपथ्यके कारण, ज्वर बिगड़नेसे सन्निपातज्वर हुआ हो तो लंघन न कराने चाहियें, बल्कि हल्का पथ्य देना चाहिये और बढ़े हुए दोषोंको मृदु चिकित्सासे शान्त करना चाहिये। अगर आरम्भसे सन्निपातज्वर हुआ हो, तो तीन, पाँच या दस दिन तक पहले लङ्घन कराने चाहियें। मतलब यह है, दस दिनके अन्दर फायदा दीखे, तो पथ्य दे देना चाहिये; क्योंकि लङ्घनोंसे कमजोरी और बेहोशी होती है और बेहोशीसे मनुष्य मर जाता है। ज्वरके आदिमें बलकी रक्षा करनी चाहिये। बल-विरोधी लङ्घन हरगिज़ न कराने चाहियें। यद्यपि त्रिदोषज्वरमें लङ्घन हितकर हैं, तो भी रोगी और रोगके बलाबलको विचारकर लंघन कराने चाहियें। "बङ्गसेन" ने कहा है,— "तीन, पाँच, सात या दस रात तक लङ्घन कराने चाहियें। कफ और पित्त पतले होनेके कारण बहुत लङ्घन सह सकते हैं। आमके क्षय होनेपर केवल वात रह जाता है। वह एक क्षण भी लङ्घन नहीं सह सकता।"

सन्निपातज्वरमें जो वैद्य कफसे भरे हुए रोगीको पथ्य देता है, वह रोगीका शत्रु है। इसलिए कफके सूखे बिना पथ्य और औषधि न देनी चाहिये, किन्तु लङ्घन कराने चाहियें।

(४) सन्निपातज्वरमें उत्तम लंघन करानेवाले रोगीको पहले कवल देना चाहिये।

(५) जो नराधम सन्निपात-रोगीको भूखके समय मांस और भात खानेको देता है, वह वैद्य नहीं है। जो सन्निपातमें बकते हुए रोगीको घी पिलाता है या भोजनमें घी देता है, वह रोगीको मार डालता है।

(६) सन्निपात-रोगीके दोषोंके शान्त करनेके लिये, बल और जठराग्निको बढ़ानेवाला जवासा, गोखरू और कटेरीके का`से सिद्ध किया हुआ आहार देना चाहिये।

कोई-कोई वैद्य कहते हैं, सन्निपातज्वरवालेको खीलोंका सत्तू सेंधानमक डालकर देना चाहिये। अगर सत्तू निर्विघ्न पच जाय, तो समझना चाहिये कि, रोगी जीवेगा; परन्तु खीलोंका सत्तू रक्तपित्त, प्यास और दाहज्वरमें हितकारी होनेकी वजहसे शीतल है और शीतल पदार्थ सन्निपातमें हानिकारक हैं; इसलिए सन्निपातज्वरमें सत्तू न देना चाहिये।

सन्निपातज्वरमें दशमूल आदि औषधियोंके द्वारा बनाया हुआ माँड़ देना चाहिये; क्योंकि यह माँड़ गरम है, दीपन और पाचन है तथा पसीने लानेवाला है।

पञ्चमुष्टिक यूषमें गोखरू डालकर वही त्रिदोष शमन करनेको देना चाहिये। (देखो पृष्ठ ८१)। अथवा सप्तमुष्टिक यूष देना चाहिये। यह यूष वातकफ-नाशक है तथा सन्निपातज्वर, कफ, वात और आम दोष को नष्ट करता एवं कण्ठ, हृदय और मुखको शोधता है।

नोट—जौ, बेर, कुलथी, मूँग, आमले, धनिया और सोंठ,—इन सातोंके यूषको "सप्तमुष्टिक यूष" कहते हैं।

(७) सेंधानोन, सोंठ, गोलमिर्च और पीपल—इन चारोंके चूर्णको अदरखके रसमें मिलाकर मुखमें रखना चाहिये और जो कफ आवे, उसे बारम्बार थूकना चाहिये। इस उपायसे हृदय, गर्दन, पसली, सिर और गलेमें लिहसा हुआ कफ बाहर निकल आता है। इससे सन्धियोंका दर्द, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गलरोग, मुह और आँखोंका भारीपन, शरीरकी जड़ता और उबकाई ये सब आराम हो

जाते हैं। दोषोंका बलाबल विचारकर २, ३ या ४ बार ऐसा करना चाहिये। सन्निपातज्वर-रोगियोंके लिये यह परमोत्तम परीक्षित उपाय है।

बड़े नीबूका रस, अदरखका रस, सेंधानोन, कालानोन और संचरनोन—इन सबको मिलाकर बारम्बार नस्य लेनेसे भी कफ पतला होकर निकल जाता है।

(८) शहद, घी और दाख—इन तीनोंको एकत्र पीसकर, जीभपर लेप करना चाहिये। इस उपायसे जीभ नर्म और ठीक हो जाती है।

जीभकी कठोरता नाश करनेके लिये यह उपाय परीक्षित है। जब वात और कफ कम हो जाते हैं, तब खुश्की होती है। उस समय जीभ खरदरी और फटी-सी हो जाती है, उसी समय यह उपाय करना चाहिये। अगर जीभ जड़ हो जाय, तो सेंधानोन और त्रिकुटेके चूर्णको अम्लवेद मिलाकर जीभपर घिसना चाहिये।

(६) सन्निपातज्वर-रोगीको बिना औटाया कच्चा जल हरगिज़ न देना चाहिये। सन्निपात-रोगीको प्यास लगने, तालू सूखने और पसली के दर्द होनेकी हालतमें जो कच्चा—बिना औटाया जल देता है, वह तो रोगीको मारना चाहता है।

(१०) सन्निपातज्वरवालेको दाहसे पीड़ित देखकर, जो उसपर शीतल-जल सींचता या सिरपर बर्फ रखता है, वह रोगीको मारता है। ज्वरमें गरमी प्रधान होती है। उस गरमीसे और मस्तिष्कसे सम्बन्ध है। उस गरमीको शीतल जल या बर्फसे शान्त करना भूल है।

नोट—रुग्दाह सन्निपातमें शीतल जलसे सींचनेकी मनाही नहीं है।

(११) सन्निपात-रोगीके होश-हवास दुरुस्त हों, तो थोड़ी-थोड़ी देरमें उसका भीतरी हाल पूछ लेना चाहिये। अगर रोगी बेहोशीके मारे या गला बन्द होनेके कारण न बोल सकता हो, तो पहले बेहोशी और गलेका इलाज करना चाहिये। गला खुलनेसे रोगी अपना हाल कह सकेगा और हाल मालूम होनेसे वैद्य ठीक इलाज कर सकेगा।

(१२) ध्यान रखना चाहिये, सिरमें ज़ियादा गरमी पहुँचनेसे ही

रोगी बेहोश होता है और उसका गला रुकता है। पहले मामूली उपायोंसे बेहोशी दूर करनी चाहिये। आरम्भमें ही रसोंसे काम न लेना चाहिये। रोगी बकता हो, बेहोश हो, काँपता हो, तो पहले 'पुराने घी' की मालिश कराना अथवा बलादि, रास्नादि या गुडूच्यादि तेलकी मालिश कराना और अग्नि-अनुसार बटेर, लवा, ख़रगोश, चिड़ा प्रभृतिका मांस देना हितकर है। लाभ न दीखे तो साधारण अञ्जन या नस्यसे रोगीको होश कराना चाहिये। जब साधारण अञ्जन या नस्यसे काम न हो, तब "उन्मत्त रस" या "सूचिकाभिरण रस" प्रभृति रसोंका प्रयोग करना चाहिये। गर्मी, सोज़ाक, बवासीर, प्रमेह, उन्माद या गरम मिज़ाजवालोंको इन रसोंसे उपकारके बदले अपकार होता है। जब नर्म और मातदिल उपायोंसे काम न हो, तब निराशताकी दशामें इन रसोंको काममें लाना ज़रूरी है। बाज़-बाज़ वक्त ये रस मरे हुए को भी होशमें ले आते हैं।

कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, धमासा और अजमोदका चूर्ण—शहदमें मिलाकर चटानेसे भयङ्कर सन्निपात, हिचकी, श्वास, खाँसी और कण्ठ-रोग मिटता है।

समन्दरफल पानीमें घिसकर आँजनेसे बड़ा उपकार होता है।

चिरायता, कुटकी, कूट, अजवायन, इन्द्रजौ और कचूर—इनका चूर्ण शरीरपर मलने और खासकर जोड़ोंपर मलनेसे, कफके कारणसे रुका हुआ गला खुल जाता है।

मैनसिल और वचको लहसनके रसमें पीसकर आँजनेसे होश हो जाता है।

(१३) सन्निपातज्वर-रोगीको साफ़ हवादार मकानमें रखना चाहिये। रोगीके पास भीड़ न रहनी चाहिये। बाहरी हवासे बचनेको पर्दे लगा देने चाहियें। बिस्तरे साफ़ होने चाहियें। गन्दी हवाके निकलने और ताज़ी हवाके आनेको राह अवश्य रखनी चाहिये।

(१४) कह चुके हैं कि, सन्निपातमें पहले कफको जीतना चाहिये। त्रिदोषज्वरमें दो दोषोंकी उल्बणता रहती है। जो दोष बलवान हो, पहले उसीको जीतना चाहिये। अगर वैद्य दोषोंके अंशांशको न जान सके, तो साधारण चिकित्सा करनी चाहिये। सन्निपातज्वरमें पहले लंघन, बालुका स्वेद, नस्य, निष्ठीवन, अवलेह और अञ्जनसे काम लेना चाहिये।

(क) लङ्घनोंके सम्बन्धमें पहले लिख आये हैं।

(ख) कालीमिर्च, मुलहठी, सेंधानोन, खस, कायफल और पीपल—इनको गरम जलमें पीसकर, मृदु नस्य देनेसे त्रिदोष नाश होता है। यही "नस्य" है।

(ग) बिजौरे नीबूकी केशर, अदरख, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल—इनको मिलाकर मुखमें रखने और इसीसे दाँत, जीभ, मुख और तालूको घिसने और बारम्बर थूकनेसे कंठ और जीभ साफ होते तथा कफ दूर होकर श्वास और खाँसी नाश होती है। यही "निष्ठीवन" है।

(घ) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिङ्गी, सोंठ, मिर्च, पीपलामूल, जवासा और कलौंजी—इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे महादारुण सन्निपात, हिचकी, श्वास और कण्ठरोग आराम होते हैं। यही "अवलेह" है।

(ङ) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, बच, सोनापाठाके बीज और सेंधानोन—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे सारे दुष्ट सन्निपात भाग जाते हैं। यही "अञ्जन" है।

(च) बालुका स्वेदके लिये पृष्ठ १६० और २०२ देखिये।

(१५) वात और कफकी अधिकतावाले ज्वरमें रूखे पदार्थोंका स्वेद देना चाहिये। वातज्वरके सिवा और सभी ज्वरोंमें चिकने पदार्थों का स्वेद देना चाहिये।

(१६) एक समयमें ही एक-सी दो क्रियायें न करनी चाहियें;

किन्तु अलग-अलग करनेमें हर्ज नहीं। एक समयमें जो एक-सी दो क्रियाएँ की जाती हैं, उसे "संकर क्रिया" कहते हैं।

(१७) दृढ़ सन्निपातज्वरमें, आमाशयमें कफके संचित होनेसे, सन्निपातके शान्त होनेपर, तन्द्रा उत्पन्न होती है। तन्द्रावालेकी आँखें आधी वन्द और टेढ़ी-सी मालूम होती हैं, तारे इधर-उधर फिरते हैं, पलक स्थिर हो जाते हैं, नेत्र गिरे हुए-से मालूम होते हैं, होठ ऊपरको सिमट आते हैं और दाँत बाहरको दीखते हैं, रोगी बार-बार सीधा सोता है, गाढ़े-गाढ़े कफके अण्ठे मुंहमें लाता है। उस कफसे रोगीका गला रुक जाता है। इस तरहके अनेक विकार होते हैं। यह तन्द्रा तीन दिन तक साध्य समझी जाती है और इसके बाद असाध्य।

पतले रस और दूध प्रभृति पतले पदार्थोंके सेवन तथा दिनमें सोनेसे दुर्वल और अल्पायु मनुष्योंका कफ कुपित होकर, वायुकी राहोंको रोककर, धमनियोंमें घुसकर, घोर तन्द्रा उत्पन्न करता है। सेंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इनको एकत्र पीसकर नास लेनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१८) सन्निपातज्वरमें पसीना बहुत आता हो, तो उसे शीघ्र ही बन्द करना चाहिये। ऐसे पसीनेमें पिच्छिलता बहुत होती है, इसलिये शीत आनेका भय रहता है और शीत आनेसे रोगी झट मर जाता है।

भुनी हुई कुलथीका चूर्ण पीसकर शरीरपर मलनेसे पसीना आना बन्द हो जाता है। और उपाय पृष्ठ २०१—२०२ में देखिये।

(१९) सन्निपातज्वरके अन्तमें कानकी जड़में सूजन उठती है। इस सूजनसे कोई ही भाग्यवान बचता है। उसपर लेप लगाकर उसे बैठाना चाहिये अथवा पकाकर फोड़ना और घाव भरना चाहिये। अलसीकी पुल्टिसमें घी डालकर, दिनमें ५-६ दफा गरम-गरम बाँधनेसे सूजन पक जाती है। पीछे पकनेपर या तो किसी तेज दवासे फोड़ देना चाहिये या चीरा देकर मवाद निकाल देना चाहिये। सर्वोत्तम

उपाय "जौंक" लगवाकर खून निकलवाना है। जौंक लगवाकर, पहले नीमके पत्ते बाँधने चाहिये; पीछे कोई लेप लगाना चाहिये।

(२०) जिस तरह अथाह जलमें गिरे हुए बर्तनको तलीमें पहुँचनेसे पहले ही पकड़ लेना चाहिये, उसी तरह "अभिन्यास सन्निपात रोगी" का यत्न भी शीघ्र ही करना चाहिये। इसमें नींद आनेपर रोगी तत्काल हतवीर्य हो जाता है। इस सन्निपातमें सात, दस या बारह दिनोंमें धातुपाक होनेसे रोगी मर जाता है और दोष पाक होनेसे बच जाता है। कोई-कोई कहते हैं,—धातु, दोष और धातुओंके भेदसे १४,६ या ११ दिनोंमें सन्निपात रोगीको मार देता है। अभिन्यास सन्निपातमें फँसकर कोई ही रोगी बचता है।

(२१) ज्वर-नाशक काढ़े द्वारा पुराने लाल शालि चाँवलोंका भात या यूष आदि बनाकर रोगीको देना चाहिये। अगर ये निर्विघ्न पच जायँ तो रोगी निश्चय ही बच जाय।

(२२) अगर अञ्जन और नस्य आदिसे बेहोशी नाश न हो, तो लोहेकी सलाईको आगमें तपाकर, रोगीके दोनों पाँवों और ललाटमें दाग देना चाहिये।

(२३) अगर शरीर शीतल और हाथ-पैर गरम हों, तो पीपलका चूर्ण मिलाकर "रास्नादि काथ" पिलाना चाहिये। जिसका शरीर गरम और हाथ-पैर शीतल हों, उसे गुड़ मिलाकर "द्राक्षादि क्वाथ" देना चाहिये। अगर भीतर दाह हो और बाहर पसीना तथा शीतलता हो, तो गिलोयके काढ़ेमें शहद और पीपल मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा अतीस, नेत्रवाला, सोंठ, नागरमोथा और पित्तपापड़ेका काथ पिलाना चाहिये। इस काढ़ेसे भीतरका दाह शान्त हो जाता है। अगर आधा ऊपरका शरीर शीतल हो और आधा नीचेका गरम हो, तो गरमागरम "रास्नादि काथ" पिलाना चाहिये। अगर ऊपरका शरीर गरम और नीचेका शीतल हो, तो "शुण्ठ्यादि काथ" पिलाना चाहिये;

(२४) जिसके सिरपर शीतल पसीना आता हो, सारा शरीर

शीतल हो, रोगी शीतसे घबरा रहा हो, कफका जोर हो, कण्ठ तक पसीना आता हो, पर छातीपर पसीना न आता हो, वह रोगी निश्चय ही मर जाता है।

सन्निपातज्वर-नाशक नुसखे

सर्व सन्निपातज्वर-नाशक

(१) दशमूल-काथ*। बेल, श्योनाक, कुम्भेर (खँभारी), पाढ़ल, अरणी, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेरी, कटेरी और गोखरू,—इन दसोंको "दशमूल" कहते हैं। यह दशमूलका काढ़ा सन्निपातज्वरों पर परमोत्तम औषधि है।

१—दशमूलके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे हृदय और कण्ठका अवरोध (गला रुकना), तन्द्रा, वातकफके रोग, श्वास, पसलियोंका दर्द और खाँसी समेत सन्निपातज्वर आराम होता है।

यह नुसखा तन्द्रा और मोह सहित सन्निपातज्वर नाश करनेमें निश्चय ही रामबाण है।

२—दशमूलके काढ़ेमें "पोहकरमूल और पीपरका चूर्ण" डालकर पीनेसे श्वास, खाँसी और प्यास समेत सन्निपातज्वर आराम होता है। इन्हीं १२ दवाओंको "द्वादशाङ्ग काथ" कहते हैं।

३—दशमूलका काढ़ा करके, उसमें उतना ही अदरखका रस और कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपर, जवासा और

---

* बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढल और अरणी (अगेथ) इन पाँचोंको "बृहत्पंचमूल" कहते हैं। ये पित्त-नाशक और वातकफको हरनेवाली हैं।

शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेरी, कटेरी और गोखरू,—इन पाँचोंको "लघुपंचमूल" कहते हैं। ये वात और पित्त-नाशक हैं।

बृहत्पंचमूलकी ५ और लघुपंचमूलकी ५—दसों दवाओंको "दशमूल" कहते हैं। दशमूलकी औषधियोंमें जिनकी बड़ी जड़ें होती हैं, यानी जो छालसे लिपटी हुई रहती हैं, उनकी "जड़की छाल" लेनी चाहिये और जिनकी छोटी जड़ें होती हैं वे सारी ही लेनी चाहियें।

अजवायनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे मृत्युतुल्य सन्निपातज्वर भी नाश होता है।

४—दशमूलके काढ़ेमें "गिलोय" मिलाकर पीनेसे तेरहों प्रकारके सन्निपात आराम हो जाते हैं।

नोट—ये चारों नुसखे सब तरहके सन्निपातोंको नाश करते हैं। परीक्षित हैं।

(२) चतुर्दशाङ्ग क्वाथ। दशमूलकी दसों औषधियाँ तथा चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ*—इन १४ दवाओंके काढ़ेको "चतुर्दशाङ्ग क्वाथ" कहते हैं। इस काढ़ेसे पुराना ज्वर, वातकफोल्बणज्वर अथवा त्रिदोषज्वर आराम होता है। अगर दस्त करानेकी इच्छा हो, तो इसमें "निशोथका चूर्ण" मिला देना चाहिये।

(३) अष्टादशाङ्ग क्वाथ। दशमूलकी दसों औषधियाँ तथा कचूर, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, धमासा, भारङ्गी, कुड़ेके बीज, पटोलपत्र और कुटकी—इन १८ दवाओंको "अष्टादशाङ्ग" कहते हैं। इन १८ दवाओंके काढ़ेसे सन्निपातज्वर नाश हो जाता है तथा साथ ही खाँसी, हृदयका रुकना, पसलियोंका दर्द, श्वास, हिचकी और वमन—ये भी नाश हो जाते हैं।

(४) दूसरा अष्टादशाङ्ग क्वाथ—दशमूलकी दसों औषधियाँ, चिरायता, देवदारु, सोंठ, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, धनिया और गजपीपल—इन १८ को भी "अष्टादशाङ्ग" कहते हैं। यह अष्टादशाङ्ग क्वाथ तन्द्रा, प्रलाप, खाँसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास और त्रिदोषज्वरको नाश करता है। "बङ्गसेन" ने कहा है, यह काढ़ा मृत्यु-समान ज्वरको भी हरता है।

नोट—यह काढ़ा भी परीक्षित है।

(५) ग्रन्थ्यादिक्वाथ। पीपरामूल, इन्द्रजौ, देवदारु, बायबिड़ङ्ग, भारङ्गी, भाँगरा, चित्रक, सोंठ, मिर्च, पीपल, कायफल, पोहकरमूल,

* चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इन चारोंको "किराततिक्तादि गण" कहते हैं और "चातुर्भद्रक" भी कहते हैं।

हरड़ जंगी, चिरायता, बड़ी कटेरी, जटामासी, रास्ना, वच, चव्य, अजवायन, पहाड़मूल (पाठा) और गूगल—इन २३ दवाओंका काढ़ा सब तरहके सन्निपात, भ्रम, श्वास, शीत, प्रलाप, अफारा, शूल, प्रसूतिका रोग, अनेक प्रकारके विद्रधि, गोला, सूजन तथा कफवातके रोग नाश करता है।

महाकवि "लोलिम्बराज" महोदय भी कहते हैं,—इन २३ दवाओं का काढ़ा उन सन्निपातोंको नाश करता है, जिनमें मोह, पसीना, शीत, प्रलाप—बकना, शूल, अफारा, विद्रधि (हृदयका फोड़ा) और कफवात हों। इसी तरह यह काढ़ा वातव्याधि और प्रसूतिके रोगको भी नाश करता है।

नोट—यह काढ़ा सन्निपातज्वर नाश करनेमें रामवाण है। कितनी ही बार सफलता हुई है।

(६) आककी जड़, जवासा, चिरायता, देवदारु, रास्ना, सँभालू, वच, अरणी, सहँजना, पीपरामूल, पीपल, चव्य, चीता, सोंठ, अतीस, और भाँगरा—इन १६ औषधियोंका काढ़ा ऐसे भयङ्कर सन्निपातको आराम करता है, जिसमें देह धनुषकी तरह नव जाती है, दाँती भिच जाती है; तथा शीत, श्वास और खाँसीका जोर होता है। यह काढ़ा प्रसूति स्त्रियोंकी वातव्याधिको भी आराम करता है। यह नुसखा वैद्यवर "लोलिम्बराज" ने लिखा है।

नोट—परीक्षित है।

(७) कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, कचूर, रास्ना, (जैत के बीज), पीपल, पोहकरमूल, त्रायमाण, भटकटैया, देवदारु, सोंठ, हरड़, जवासा और भारङ्गी—इन पन्द्रह औषधियोंका काढ़ा दिनमें सोना, रातको जागना, प्यास, मुँह सूखना, शरीरका दाह, खाँसी और पाँचों प्रकारके श्वासोंको नष्ट करता है।

नोट—जिस सन्निपातज्वरमें दिनमें सोना, रातको जागना, श्वास, खाँसी

प्रभृति उपद्रव हों, उसको यह काढ़ा आराम करता है। यह भी महाकवि "लोलिम्बराज" ने कहा है।

(८) बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल और अरणी—इन पाँचोंको "वृहत्पञ्चमूल" कहते हैं। पित्ताधिक्य सन्निपातमें इसके काढ़ेको "शहद" के साथ पीना चाहिये। कफाधिक्यमें पीपलके साथ पीना चाहिये। वातोल्बण या वाताधिक्य सन्निपातमें इसे बहुत गरम या थोड़ा गरम, दोषोंका बलाबल विचारकर, पीना चाहिये।

(९) बड़ी कटेरी, कटेरी, पोहकरमूल, भारङ्गी, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी—इन औषधियोंको, "वृहत्या-दिगण" कहते हैं। ये सन्निपातज्वर-नाशक हैं तथा श्वास आदि सब उपद्रव सहित त्रिदोषज्वरमें हितकारी हैं।

नोट—यह काढ़ा "चिरायता" मिलानेसे खाँसी आदि उपद्रव सहित सन्नि-पातज्वर, शूल और तन्द्राके नाशमें श्रेष्ठ है। कफाधिक्य सन्निपातमें यह काढ़ा बहुत उत्तम है।

(१०) कचूर, पोहकरमूल, कटेरी, काकड़ासिंगी, धमासा, गिलोय, सोंठ, पाढ़, चिरायता और कुटकी—इन सब औषधियोंके समूहको "शठ्यादिवर्ग" कहते हैं। यह वर्ग सन्निपातज्वर-नाशक है। यह श्वास, खाँसी, हृदयरोग, पसलियोंकी पीड़ा और तन्द्राको भी नाश करता है।

नोट—यह काढ़ा पित्ताधिक्य सन्निपात में बहुत उत्तम है।

(११) कायफल, नागरमोथा, बच, पाढ़, पोहकरमूल, जीरा, पित्तपापड़ा, देवदारु, हरड़, काकड़ासिंगी, पीपल, चिरायता, सोंठ, भारङ्गी, इन्द्रजौ, कुटकी, कचूर, सुगन्धवाला और धनिया—इन १९ दवाओंको समान भाग लेकर, काढ़ा बनाकर, हींग और अदरखका रस मिलाकर पीनेसे कर्णमूलसे पैदा हुई सूजन, गलेकी सूजन, कफ-वातज्वर, खाँसी, श्वास, हिचकी और हनुस्तम्भ (ठोढ़ी रह जाना), गलगण्ड, गण्डमाला, कफका स्वरभेद तथा संज्ञा-नाश आदि रोग नाश होते हैं।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। इसमें अगर "दशमूलका काढ़ा" मिलाकर पिया जावे, तो सब तरहके सन्निपातज्वर और अभिन्यासज्वर नाश हो जायँ।

(१२) गिलोय, लालचन्दन, पद्माख, सोंठ, इन्द्रजौ, अडूसा, हरड़, अमलतास, खस, पाढ़, धनिया, नागरमोथा और कुटकी—इन १३ दवाओंके काढ़ेमें "पीपलका चूर्ण" डालकर पीनेसे—तन्द्रा, खाँसी, ज्वर, श्वास, प्यास, दाह, त्रिदोषके कुपित होनेसे मलमूत्र और वायुकी रुकावट ये सब दूर होते हैं। ये "गुडूच्यादिगण" पाचन और दीपन हैं।

(१३) त्रिकुटा, दशमूल, सोंठ, भारङ्गी और गिलोय—इनका काढ़ा पीनेसे शीघ्र ही सन्निपातज्वर दूर होता है।

(१४) दशमूल, वच, सोंठ, बैर और झड़बैर (किसीके मतसे कौआठाड़ी और मकोय)—इन १४ औषधियोंका काढ़ा सन्निपातज्वर को नष्ट करता है।

(१५) अडूसा, पित्तपापड़ा, नीम, मुलेठी, धनिया, सोंठ, देवदारु, वच, इन्द्रजौ, गोखरू और पीपलामूल—इन ११ दवाओंका काढ़ा पीनेसे सन्निपातज्वर, श्वास, अतिसार, खाँसी, शूल और अरुचि दूर होती है।

(१६) कायफल, त्रिफला, देवदारु, लालचन्दन, फालसा, त्रिकुटा, पद्माख और खस—इन ८ दवाओंका काढ़ा पीनेसे सन्निपातज्वर और उसका दाह और प्यास नाश होते हैं।

नोट—बहुत दिनोंके ज्वर-रोगीको यह काढ़ा अमृत है। यह काढ़ा परीक्षित है।

(१७) पञ्चमूल और नागरमोथा—इनका काढ़ा, दोषोंके बलाबलको विचारकर, जियादा गरम या सुहाता गरम, वातोत्तर-सन्निपात में देना चाहिये।

(१८) त्रिकुटा, त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, इन्द्रजौ, चिरायता, गिलोय और पाढ़—इनका काढ़ा त्रिदोषके ज्वरको नाश करता है।

(१९) बेलगिरी, निशोथ, दन्ती और अमलताश—इन चारोंके काढ़ेमें नीलीका चूर्ण और घी मिलाकर पीनेसे, सन्निपात-रोगीको अच्छी तरहसे विरेचन हो जाता है।

(२०) सोंठ, धनिया, भारङ्गी, पद्माख, लालचन्दन, पटोलपत्र, नीमकी छाल, त्रिफला, मुलेठी, खिरेंटी, मिश्री, कुटकी, नागरमोथा, गजपीपल, अमलताश, चिरायता, गिलोय, दशमूल और कटेरी–इनका काढ़ा त्रिदोपोल्बण सन्निपातको नष्ट करता है तथा सन्निपातकी मृत्युको भी जीतता है। इसका नाम "योगराज क्काथ" है।

(२१) कुटकी, पित्तपापड़ा, पोहकरमूल, गिलोय, त्रायमाण, कटेरी, रास्ना, चिरायता, कचूर, सोंठ, हरड़, भारङ्गी और जवासा—इन १३ दवाओंका काढ़ा त्रिदोप, भ्रम, प्यास, श्वास, हृद्रोग, दाह, अरोचक, गलरोग और सब तरहकी खाँसीको दूर करता है। इसका नाम "तिक्तादि क्काथ" है।

(२२) भारङ्गी, रास्ना, पटोलपत्र, देवदारु, हल्दी, सोंठ, मिर्च, पीपल, अडूसा, इन्द्रवारुणी, ब्राह्मी, चिरायता, नीम, नेत्रवाला, कुटकी, बच, पाठा, सोनापाठा, दारुहल्दी, कटेरी, गिलोय, निशोथ, हपुषा, पोहकरमूल, त्रायमाण, नागरमोथा, जवासा, इन्द्रजौ, त्रिफला और कचूर—इन ३२ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे खाँसी, गलरोग, श्वास, सन्धिकी हड्डियोंमें दर्द, हिचकी और अफारा आदि उपद्रवों समेत सब तरहके सन्निपात आराम होते हैं।

नोट—यह बत्तीसा काढ़ा प्रसिद्ध है। अनेक बारका आज़माया हुआ है।

(२३) आक, सोंठ, मिर्च, पीपल, चीता, चव्य, देवदारु, पीला सहँजना, कुटकी, भाँगरा, अतीस, रास्ना, जवासा, निर्गुण्डी, बच, और अरणी—इन १७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे सब तरहके सन्निपात शीत, श्वास, सूतिका रोग और वातरोग सब निश्चय ही नाश होते हैं। इस काढ़ेका नाम "अर्कादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

पित्ताधिक्य सन्निपात-नाशक क्वाथ

(२४) कचूर, पोहकरमूल, गिलोय, सोंठ, गोखरू, त्रायमाण, पीपल, धमासा, कटेरी, पित्तपापड़ा, रायसन, हरड़, कुटकी, देवदारु, वच और भारङ्गी—इन १६ औषधियोंके समुदायको "बृहच्छट्यादि-वर्ग" कहते हैं। यह वर्ग सन्निपातज्वर, खाँसी, श्वास, दिनमें सोना, रातमें जागना, मुखशोष, प्यास, दाह और त्रिदोषको नष्ट करता है।

नोट—पित्ताधिक्य सन्निपातमें यह काढ़ा परीक्षित है।

कफाधिक्य सन्निपातज्वर-नाशक क्वाथ

(२५) बड़ी कटेरी, कटेरी, पोहकरमूल, भारङ्गी, कचूर, काकड़ा-सिंगी, धमासा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी तथा दशमूलकी दश औषधियाँ तथा फालसे, त्रिफला, देवदारु और कायफल—इन २४ औषधियोंका काढ़ा कफाधिक्य सन्निपातमें देना चाहिये। यह श्वासादि उपद्रव सहित सन्निपातका नाश करता है।

पित्ताधिक्य सन्निपातज्वर-नाशक क्वाथ

(२६) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, देवदारु, सोंठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, धमासा, नीली, कबीला, निशोथ, चिरायता, पाढ़, खिरेंटी, कुटकी, मुलेठी और पीपरामूल—इन १८ औषधियोंके समूहको "मुस्ताद्यगण" कहते हैं। इनका काढ़ा सन्निपातज्वरको नाश करता है। विशेषकर यह पित्तोल्वण या पित्ताधिक्य सन्निपातमें हितकारी है तथा मन्यस्तम्भ, ऊरुघात, हनुस्तम्भ और शिरोरोगमें अत्यन्त हितकारी है।

पित्तोल्वण सन्निपात-नाशक क्वाथ

(२७) फालसे, हरड़, बहेड़े, आमले, देवदारु, कायफल, लाल चन्दन, पद्माख, कुटकी और पृश्निपर्णी (पिथवन)—इन दसोंका काढ़ा बनाकर, बासी करके शीतल होनेपर, पीनेसे पित्तोल्वण सन्निपात नष्ट हो जाता है।

(२८) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, सुगन्धवाला और कमलकी नाल—इन ७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे पित्तोल्बण सन्निपात नाश होता है।

वातपित्तोल्बण सन्निपात-नाशक क्वाथ

(२९) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इनको "चातुर्भद्रक" कहते हैं। इन चारोंका काढ़ा "वातपित्तोल्बण" सन्निपात में हितकारी है।

पित्तकफोल्बण सन्निपातज्वर-नाशक क्वाथ

(३०) पित्तपापड़ा, कायफल, कूट, खस, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, सोंठ, नागरमोथा, काकड़ासिंगी और पीपल—इन दसोंका काढ़ा पित्तकफोल्बण सन्निपातमें हितकारी है। यह प्यास, दाह और मन्दाग्निको नष्ट करता है। इसको "पर्पटादि क्वाथ" कहते हैं।

नोट—यहाँ वातकफोल्बण सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा इस वास्ते नहीं लिखी कि, वह शीघ्र ही असाध्य हो जाता है।

पञ्चवक्त्र रस

(३१) शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, शुद्ध सुहागा, कालीमिर्च और शुद्ध बच्छनाग विष—इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, धतूरेके रसमें एक दिनभर खरल करके सुखा लो। यही "पञ्चवक्त्र रस" है। इस रसकी १ रत्तीकी मात्रा, अदरखके रसमें, देनेसे घोर सन्निपातज्वर भी नष्ट हो जाता है।

नोट—कोई-कोई इसमें पीपल भी मिलाते हैं और धतूरेके बीजोंके रसमें खरल करते हैं। यह शहदमें मिलाकर भी दिया जाता है। परीक्षित है। इसपर पथ्य दही और भात है।

अमृतवटी

(३२) शुद्ध मीठा विष २ भाग, कौड़ीकी भस्म पाँच भाग और कालीमिर्च ६ भाग—इन सबको एकत्र खरल करके, मूंगके बराबर

गोलियाँ बना लो। यह "अमृतवटी" कफ, त्रिदोष और मन्दाग्निको नाश करती है।

सन्निपातज्वरोंकी चिकित्सामें क्या-क्या करना चाहिये ?

सन्निपाते त्विदं सर्वं कुर्यादामकफापहम्।
अवलेहोऽञ्जनं नस्यं गण्डूषं चायसक्रियाः॥
पादयोर्हस्तयोर्मूले कंठकूपेचशंखयोः।
स्वेदो भ्रष्टकुलत्थानां कणानां चूर्णघर्षणम्॥

सन्निपातज्वरमें—तरुणज्वरमें कही हुई सब क्रियाएँ करनी चाहियें तथा आम और कफको नाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये एवं अवलेह, अञ्जन, नस्य, गण्डूष—कुल्ले और दागनेका काम करना चाहिये। हाथ-पाँवोंकी जड़, कंठकूप और कनपटीमें पसीना आता हो, तो भुनी हुई कुलथीके चूर्णकी मालिश करनी चाहिये।

सच तो यह है, यह श्लोक सन्निपात-चिकित्साकी कुञ्जी है। सन्निपातज्वरोंके इलाजमें अवलेह, नस्य, अञ्जन, दागना, गण्डूष,—कुल्ले कराना, कवल धारण कराना, निष्ठीवन कर्म कराना, उद्धूलन कर्म करना, दागना और एकदम नाउम्मेदीकी हालतमें काले सर्पसे कटाना—इन उपायोंको चतुराईके साथ करनेसे खासी कामयाबी होती है। जो वैद्य सन्निपातोंको ठीक पहचानकर, आगे लिखी रीतिसे काम करेंगे, उन्हें जगदीशकी दयासे अवश्य सफलता होगी।

सन्निपातज्वर-नाशक नस्य

(१) वच, महुएके पेड़का सार, सेंधानमक, मिर्च और पीपल—इनको पानीमें महीन पीसकर नस्य देनेसे होश होता है तथा तन्द्रा नाश होकर संज्ञा आ जाती है। इसका नाम "मधूकसारादि नस्य" है।

(२) पारा और गन्धक समान-समान लेकर, धतूरेके फलके रसमें, एक दिन खरल करने और इस कजलीके वजनके बराबर सोंठ, मिर्च

और पीपलका चूर्ण मिलानेसे "उन्मत्त रस" तैयार होता है। इसकी नस्य देनेसे त्रिदोष दूर हो जाता है। परीक्षित है।

(३) काली मिर्च, मुलेठी, सेंधानोन, खस, कायफल और पीपल—इनको गरम पानीमें पीसकर मृदु नस्य देनेसे त्रिदोष नाश होता है।

(४) सेंधानमक, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर नास देनेसे तन्द्रा नष्ट हो जाती है।

(५) बिजौरे नीबू और अदरखके रसको जरा गरम करके, उसमें सेंधानोन, बिरियासञ्चरनोन और कचियानमक—तीनों नमक मिलाकर, जरा गरम करके, नास देनेसे कफ कटकर और पतला होकर मुख और नाकके द्वारा बाहर निकल जाता है तथा मस्तक, हृदय, कंठ, मुख और पसलियोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(६) 'कल्पतरु रसकी नास देनेसे कफसम्बन्धी रोग, वात-सम्बन्धी सिरका दर्द, प्रलाप, मोह, छींकोंका रुकना—ये सब आराम होते हैं। मोहरूपी रोगसे मनुष्यको जगानेके लिये जैसा "कल्पतरु रस" उत्तम है, वैसी और कोई दवा नहीं है। देखो पृष्ठ १५६।

(७) मिर्च, सुगन्धवाला, दारुहल्दी, बच, कुट, वायबिड़ङ्ग, सोंठ, हल्दी और इन्द्रायन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तान्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

(८) असगन्ध, सेंधानोन, बच, महुएका सार, कालीमिर्च, पीपल, सोंठ और लहसन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नस्य देनेसे "भुग्ननेत्र" सन्निपात नाश होता है।

(९) गुड़, सोंठ और पीपल—इन तीनोंके चूर्णको अगस्तियाके कल्कके रसमें मिलाकर, नास देनेसे "चित्तविभ्रम" सन्निपात नाश होता है।

(१०) मिर्च, पीपल, जीरा और सेंधानोन—इनको गरम जलमें पीसकर, तत्काल नस्य देनेसे "कर्णक" की पीड़ा शान्त होती है।

(११) दूबके रसकी नास देनेसे खून आना बन्द हो जाता है। अनारके फूलके रसकी नास देनेसे खून आना बन्द हो जाता है। त्रिफलेका काढ़ा और दूबका रस मिलाकर नास देनेसे खून बन्द हो जाता है। रक्तष्ठीवी सन्निपातमें जो मुँहसे खून गिरता है, उसमें इन तीनों नस्योंमेंसे किसी न किसी नस्यसे अवश्य लाभ होता है।

(१२) महुएका सार, सोंठ, वच, मिर्च और सेंधानोन—इनको गोमूत्र या गरम पानीमें पीसकर नाकमें चढ़ानेसे बेहोश मनुष्य जाग उठता है।

(१३) सहँजनेकी जड़के रसमें कालीमिर्चोंका चूर्ण मिलाकर नाकमें चढ़ानेसे संज्ञारहित मनुष्यको शीघ्र ही ज्ञान हो जाता है।

(१४) रोगी बेहोश हो तो पीपलामूल, सेंधानोन, पीपल और महुएके फूल—इन चारोंको ६-६ माशे लेकर पीस लो। पीछे उस पिसे चूर्णमें २ तोला कालीमिर्चका चूर्ण मिला लो। इस चूर्णमेंसे ज़रा-सा चूर्ण गरम जलमें मिलाकर नास दो। इससे रोगीको होश हो जायगा।

(१५) मालकाँगनीका तेज़ और पिंडारकी जड़,—दोनोंको एकत्र पीसकर, नस्य देनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१६) सेंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इनको एकत्र बकरेके मूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे तन्द्रा दूर होती है।

नोट—कोई-कोई सहँजनेके बीजोंकी जगह सफेद मिर्च लेते हैं।

(१७) चमेलीके फूल, मूंगा, कालीमिर्च, कुटकी, वच और सेंधानोन—इन सबको एकत्र बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१८) कालीमिर्चको अदरखके रसमें पीसकर सूंघनेसे होश हो जाता है।

(१९) पारा और गन्धककी कजली करके, उसे लहसनके रसमें मिलाकर, नास देनेसे होश हो जाता है। अगर रोगीको तन्द्रा हो

और वह बकवाद करता हो, तो उसी कजलीको मिर्चके साथ मिलाकर नास देनी चाहिये। इसका नाम "सन्निपातज्वरारि रस" है।

(२०) शुद्ध पारा, सीसा-भस्म, ताम्रभस्म, मैनसिल, शुद्ध नीला-थोथा—इनको बराबर-बराबर लेकर, खरलमें डालकर, इन्द्रायनके रस के साथ खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो और सुखा-कर शीशीमें रख लो। इस गोलीको पानीमें घिसकर सुँघानेसे ही सन्निपात भाग जाता है। इसका नाम "कुलवधू रस" है।

(२१) बड़ी कटेरीका १ सूखा फल, पीपल और सोंठ—इनको महीन पीसकर, काग़ज़की नली द्वारा नाकमें फूँकनेसे छींक आती हैं और मूर्च्छा नाश हो जाती है। समयपर काम लेने योग्य परीक्षित नुसखा है।

नाना प्रकारके रोगोंपर नस्य

(२२) १. वातविकारवालेको गुड़ और सोंठ मिलाकर नास दो। २. पित्तविकारमें मिश्री, घी और मुलेठीको मिलाकर नास दो। ३. कफके विकारमें तुलसीके और अडूसेके रसको मिलाकर नास दो। ४. अगर सिरमें कीड़ा हो तो वायबिडङ्ग, हींग और पीपलको मिलाकर नास दो। ५. अगर खून भर जानेसे सिर भारी हो, तो खाँड़ और केशरको घीमें भूनकर नास दो। ६. षड्बिन्दुतेलकी नास देनेसे सिर के सभी रोग आराम होते हैं; परीक्षित है। ७. दूबके रस और अनार के फूलके रसकी नास देनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। ८. स्त्रीके दूध, महावरका रस या मक्खीकी विष्ठाकी नास देनेसे हिचकी दूर हो जाती है। ९. दूबके रसमें आमकी गुठली पीसकर मिलाने और नास देनेसे बहती हुई नकसीर आराम हो जाती है। ये सभी नुसखे परीक्षित हैं; कभी फेल होनेवाले नहीं। विचार-पूर्वक, जहाँ जिसकी ज़रूरत हो, काममें लानेसे सिद्धि होगी।

नस्य लेने की विधि

जिसे नस्य देनी हो, उसे सीधा सुलाओ। माथा ऊँचा रखो, सिर लम्बा कर दो और हाथ-पैर फैला दो। रोगीकी आँखोंपर कपड़ा ढक दो। पीछे नाक ऊँची करके नस्य दो। नस्य लेनेवाला नस्य लेनेके समय सिरको न हिलावे, न क्रोध करे, न हँसे और न किसीसे बोले। पीछे उठकर छींक ले। नाक और मुँहसे पानी गिरेगा। नस्य लेनेवाले को चाहिये कि दाहिने-बायें थूके, सामने न थूके।

नस्यका समय

कफ नाश करनेको सवेरेके समय नस्य दो। पित्त नाश करनेको दोपहरके समय नस्य दो। वायु नाश करनेको साँझके समय नस्य दो। अगर रोगका जोर हो तो रातको नस्य दो।

नस्यके भेद

इसके दो भेद हैं: (१) रेचन (२) स्नेहन। रेचन नस्य वातादि दोषों को निकाल देता है और स्नेहन धातु बढ़ाता है। रेचन नस्य भी दो तरहकी होती है: (१) अवपीड़न (२) प्रधमन। सोंठ, मिर्च, वच प्रभृति तीक्ष्ण दवाओंको पानीके साथ पीसकर लुगदी-सी बनाकर, उसको कपड़ेमें रख और निचोड़कर रस निकाल लेते हैं। उसकी ४.६ या ८ बूंद नाकके दोनों छेदोंमें टपकाते हैं। इसे "अवपीड़न नस्य" कहते है। अवपीड़न नस्य गलेके रोग, सन्निपात, अत्यन्त नींद, विषमज्वर, मनके विकार और कृमिरोगमें देनी चाहिये। दूसरी प्रधमन नस्यका यह क़ायदा है कि एक ६ अंगुल लम्बी नली ऐसी बनानी चाहिये, जिसके दो मुँह हों। उस नलीमें सोंठ, मिर्च आदि जिस दवाकी नस्य देनी हो, भर लो और उसका एक सिरा रोगीकी नाकमें लगाकर दूसरा अपनी ओर रख कर फूंक मारो। आजकल कागजकी नली ही बना लेते हैं और उससे काम निकल जाता है। बहुत ही उत्कट दोषोंमें

यह प्रधमन नस्य देनी चाहिये। बेहोशी, मूर्च्छा, संज्ञानाश तथा मृगी वग़ैरहमें ऐसी नस्य देते हैं।

सन्निपातज्वरोंमें इन्हीं नस्योंसे काम पड़ता है। धातु बढ़ानेवाली नस्य—मस्तक-रोग, नाकके रोग, नेत्ररोग, आधाशीशी, मुखशोष, कर्णनाद, पलितरोग (असमयमें बाल पकना) प्रभृति रोगोंमें देते हैं। इनमें घी वग़ैरह चिकने और खाँड़ वग़ैरह मीठे पदार्थोंसे नस्य देते हैं; जैसे, घीमें केशर मिलाकर नस्य देनेसे अथवा दूधमें खाँड़ डालकर नस्य देनेसे वातरक्तकी पीड़ा शान्त होती है। नारायण तेल या माषादि तेल वग़ैरहकी नस्य देनेसे भौं, कनपटी, मस्तक और आँख प्रभृतिके रोग नाश होते हैं।

सन्निपात-नाशक अञ्जन

(१) लोहका चूर्ण, सफेद लोध, अञ्जन, कालीमिर्च और गोरोचन—इन सबको एकत्र पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा दूर होती है।

(२) सिरसके बीज, पीपल, कालीमिर्च और कालानोन—इन सबको एकत्र गोमूत्रमें पीसकर अञ्जन बना लो। इस अञ्जनके आँखोंमें आँजनेसे चैतन्यता होती है।

नोट—कोई सेंधानोन लेते हैं, कोई बीजों की जगह सिरसकी छाल लेते हैं।

(३) लहसन, मैनसिल और वचको महीन पीसकर छान लो। इसका अञ्जन नेत्रोंमें लगानेसे होश होता है। अथवा मैनसिल और घोड़ाबचको लहसनके रसमें घिसकर आँजना चाहिये। ये उपाय परीक्षित हैं।

(४) सिरसके बीज और कालीमिर्च—इन दोनोंको बकरेके पेशाब में पीसकर आँखोंमें आँजनेसे संज्ञा उत्पन्न होती है।

(५) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, बच, सोनापाठाके बीज और सेंधानमक—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे समस्त दुष्ट सन्निपात भाग जाते हैं। परीक्षित है।

(६) पीपल, मिर्च, वच, सेंधानोन, करञ्जके बीज, हल्दी, आमले, हरड़, बहेड़ा, सरसों, हींग और सोंठ—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर गोली बना लो और छायामें सुखा लो। इस गोलीको जलमें घोटकर आँखोंमें आँजनेसे चेतना उत्पन्न होती है; इसीसे इसको "प्रचेतना" कहते हैं। इस गोलीसे चित्तभ्रम, स्मृति-नाश—याद न रहना, भूतबाधा, सर्दीका सिरदर्द, आँखका दर्द और भ्रम नाश होता है। यह गोली "चित्तभ्रम" सन्निपातमें अच्छा काम देती है। परीक्षित है।

(७) सेंधानमक, कपूर, मैनसिल और छोटी पीपर—इन चारोंको घोड़ेकी लार और शहदमें महीन घोटकर, नेत्रोंमें आँजनेसे "तन्द्रिक" सन्निपातका नाश होता है। परीक्षित है।

(८) सोंठ, मिर्च, पीपल, करञ्जके बीज, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, सेंधानोन और तुलसी—इनको पानीमें पीसकर बत्तीसी बना लो। इस बत्तीको आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(९) सेंधानोन और छोटी पीपर पानीमें खूब महीन पीसकर आँजनेसे "भुग्ननेत्र" सन्निपातमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(१०) शहद, सेंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च—इन सबको एकत्र पीसकर आँखोंमें आँजनेसे अत्यन्त बेहोशी नाश हो जाती है। यह अञ्जन "दण्डपाणि" ने कहा है।

(११) गन्धक और विड़ लवणके चूर्णको शहदमें मिलाकर, काँसीके बर्तनमें घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रोगीको होश हो जाता है और तन्द्रा नाश हो जाती है।

(१२) समन्दरफल पानीमें घिसकर आँजनेसे सन्निपातमें लाभ होता है।

(१३) शुद्ध जमालगोटेकी मींगी ४० माशे, कालीमिर्च ४ माशे और पीपलामूल ४ माशे—इन सबको पीसकर, पीछे खरलमें डाल-कर, जँभीरी नीबूके रसकी भावना सात दिन तक देकर गोलियाँ बना

लो। इस रसके आँखोंमें आँजनेसे सन्निपात नाश हो जाता है। इसको "दन्तबीजादि अञ्जन" कहते हैं। परीक्षित है।

सन्निपात-नाशक अवलेह

(१) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, जवासा और कलौंजी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस लो। पीछे शहदमें मिलाकर चाटो। इसका नाम "अष्टाङ्ग अवलेह" है। इस अवलेहसे महादारुण सन्निपात, हिचकी, श्वास, खाँसी और कण्ठरोग आराम होते हैं।

नोट--(१) अगर कफकी उल्बणता हो यानी कफका ज़ोर ज़ियादा हो, तो इन दवाओंके चूर्णको अदरखके रसमें चाटना चाहिये। ग्रन्थोंमें लिखा है,--इस अष्टांग चूर्णको शहद या अदरखके साथ चाटनेसे तन्द्रा और खाँसी सहित दारुण मोह नाश हो जाता है। अष्टांग अवलेह कंठके ऊपरके रोगोंको नाश करता है; इसलिये इसे सन्ध्याके समय सेवन कराना चाहिये। जो अवलेह कंठसे नीचे के रोग नाश करनेवाला हो, उसे भोजनके पहले सेवन कराना चाहिये।

नोट--(२) कितने ही वैद्य "जवासे" के स्थानमें "अजवायन" डालते हैं। बङ्गसेनमें "काकड़ासिंगी" की जगह "भारङ्गी" लिखी है।

(२) उसीजे हुए आमलोंको पीसकर, उनमें दाख और सोंठका चूर्ण मिलाकर, शहदके साथ चाटनेसे श्वास, खाँसी, मूर्च्छा और अरुचि नष्ट हो जाती है।

(३) बेलकी जड़, कूट, शहद और शंखाहुली (कौड़िल्ला)—इनके साथ ब्राह्मीका सेवन करनेसे जीभ शुद्ध होती है। इसका नाम "शालूरपर्ण्यादि अवलेह" है। "जिह्वक सन्निपात" में इसे देते हैं।

(४) तेलके साथ या घीके साथ अथवा शहदके साथ हरड़को चाटनेसे दाह नाश होता है। इसका नाम "पथ्यावलेह" है। "रुग्दाह" का दाह नाश करनेको इसे अक्सर देते हैं।

(५) तुलसीका स्वरस, शहद, राल, त्रिकुटा और सेंधानोन—इन सबको एकत्र मिलाकर चाटनेसे बढ़ा हुआ कफ नष्ट हो जाता है और चैतन्यता होती है।

सन्निपातपर कवल

(१) अदरखके रसमें सेंधानमक और त्रिकुटेका चूर्ण मिलाकर मुखमें रखनेसे चैतन्यता होती है। इनकी गोली बनाकर मुखमें रखनेसे भी यही लाभ होता है। इस गोलीसे कण्ठमें रुका हुआ कफ बाहर निकलकर शरीरको हलकाकर देता है तथा ज्वर, मूर्च्छा, श्वास, गलरोग और मुँहसे जल गिरना,—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) चिरायता, अकरकरा, कुलींजन, कचूर, पीपल और सरसों का तेल,—इनको एकत्र पीसकर कवल बनावे और इसमें बिजौरे नीबू का रस डालकर मुखमें रखे, तो "जिह्वक सन्निपात" के दोष इस कवल के धारण करनेसे उसी तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह स्तुति करनेसे जन्मजन्मान्तरके दोषोंको दशरथनन्दन रामचन्द्रजी दूर कर देते हैं।

(३) बिजौरे नीबूकी केशर, सेंधानोन और कालीमिर्च—इनको मिलाकर मुँहमें रखनेसे जड़ता, मुँह सूखना और अरुचि नाश हो जाती है।

सन्निपात नाशक

उद्धूलन

(१) त्रिकुटा, हरड़, लोध, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, अजवायन और कायफल—इनको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस-कर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इसको शरीरमें मलनेसे अधिक पसीनोंका आना, कण्ठरोध—गला रुकना और सन्धियोंकी पीड़ा शान्त होती है।

(२) भुनी हुई कुलथीको महीन पीसकर शरीरमें मलनेसे बहुत पसीनोंका आना बन्द हो जाता है।

(३) कायफल, कालाजीरा, लोध, पुराने आरने उपले, कुटकी, हरड़, नमक और अञ्जन—इन सबको महीन पीसकर शरीरमें मलने से बहुत पसीना आना बन्द हो जाता है।

(४) चिरायता, कालाजीरा, कुटकी, वच और कायफल,—इन सबको बारीक पीसकर, शरीरमें उद्धूलन करने यानी मलनेसे त्रिदोष-ज़्वर और अभिष्यन्दिज्वरमें हित होता है।

(५) ककोड़े (खेखसा) की जड़का चूर्ण, कुलथी, पीपल, बच, कायफल, कालाज़ीरा, चिरायता, चीता, कायफलका पानी और हरड़—इनको पीसकर शरीरमें मलनेसे "शीतांग सन्निपात" दूर होता है।

(६) पारा १ भाग, वत्सनाभ विप १ भाग, कालीमिर्च ४ भाग और धतूरेके फलोंकी भस्म ८ भाग—सबको एकत्र करके, देहमें मलनेसे, अत्यन्त ज़ोरसे पसीना निकलना और शीतका वेग दूर हो जाता है।

(७) पीपल, कायफल, काकड़ासिंगी, बच, कूट, अजवायन, पोहकरमूल, सोंठ, कुटकी, पीपलामूल, देवदारु, मूंगका आटा, उड़दका आटा, पुरानी गचका चूना, पुरानी ईंटका कूकुआ (ईंटका घिसा हुआ चूर्ण), तूम्बेका चूर्ण, बच्छनाभ विप और सिरसकी राख,—इन १८ चीज़ोंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर खूब महीन कर लो। पीछे एक गाढ़े कपड़ेमें तीन-चार दफा छानो और शीशीमें रख लो। इस चूर्णको शरीरपर मलनेसे शीतांग सन्निपात दूर हो जाता है। यह उद्धूलन बड़ा अच्छा है।

नोट—मकानके फर्शमें जो चूना लगा रहता है, उसीको गचका चूना कहते हैं। ऐसे फर्शका चूना लेना चाहिये, जो ज़ियादा-से-ज़ियादा सालोंका बना हुआ हो। ईंटको पत्थरपर घिसनेसे जो लाल-लाल सफूफ—चूर्ण तैयार होता है, उसे ही कूकुआ कहते हैं। ईंट भी पुरानी-से-पुरानी खोजकर लेनी चाहिये।

(८) चिरायता, अजमोद, कुटकी, पीपल, कायफल और बच—इनको पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इस उद्धूलन या धुरेसे उस सन्निपातमें काम लेना चाहिये, जिसमें बहुत ही पसीने आते हों। परीक्षित है।

सन्निपात नाशक

निष्ठीवन

(१) दाखको शहदमें पीसकर, घीमें मिलाकर, जीभपर मलनेसे जीभ रसीली और नरम हो जाती है। जब जीभ, तालू, गला और प्यास लगनेका स्थान वात और पित्तसे दूषित हो जाते हैं, तब शोष और जीभमें विरसता होती है तथा जीभ फटने लगती है। उसी विरसता और जीभका फटना दूर करनेके लिये इस दाखके निष्ठीवनसे काम लेते हैं। परीक्षित है।

(२) अदरखके रसमें सेंधानोन, सोंठ, मिर्च और पीपलको मिलाकर, मुँहमें कंठ तक भर लो और बराबर थूको। इससे मुख, तालू, कोठा, कन्धे, गर्दन, मस्तक, पसली और गला—इनमेंसे छिपा हुआ भी कफ निकलकर चला आता है। शरीर हलका हो जाता है तथा सन्धियोंका टूटना, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गलेकी पीड़ा, मुख और नेत्रोंका भारीपन, जड़ता और कफका उत्क्लेश ये सब दूर हो जाते हैं। दोषोंका बलाबल विचारकर, इसको एक बार, दो बार, तीन और चार बार भी करना चाहिये। विद्वान् कहते हैं, सन्निपात-रोगियों के लिये यह परमोत्तम औषधि है।

(३) बिजौरेकी केशर, अदरख, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च और पीपल को मिलाकर मुखमें रखनेसे तथा जरा देर बाद दाँत, जीभ, मुख और तालूको घिसने और बारम्बार थूकते जानेसे कंठ और जीभ साफ होते हैं और कफ दूर होता है तथा रुचि होती है एवं खाँसी और श्वास शान्त होते हैं।

(४) सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य, हरड़ और सेंधानमक—इनके चूर्णसे दाँत, जीभ और तालूको घिसनेसे गला साफ होता है, रुचि होती है, कफ नाश होता है, थुकथुकी दूर होती है और मुँहका स्वाद सुन्दर होता है।

सन्निपातपर दागना

शंखयोश्च भ्रुवोर्मध्ये दशमद्वार एव च ।
ग्रीवायां दाहयेच्छीघ्रम् प्रलापे सन्निपातके ॥
धनुर्वाते मृगीवाते अन्तके चित्तविभ्रमे ।
अभिन्यासे च उन्मादे निश्चैतन्येतथावमौ ॥
एतेषां चैव रोगाणां तप्तलोहशलाकया ॥
भ्रवौशंखौ च पादौ च कृकाटी मूलरंध्रयोः ॥

प्रलापक सन्निपातमें कनपटियों, भौंओं, दशम द्वार—ब्रह्मरंध्र और गर्दनमें कहीं दाग देना चाहिये; धनुर्वात, मृगी, अन्तक, चित्त-भ्रम, अभिन्यास, उन्माद, बेहोशी और वमनमें—लोहेकी शलाकासे—भौं, कनपटी, पैर, ठोड़ी और गुदा—इनमेंसे कहीं दाग देना चाहिये। एक जगह लिखा है :—

एवं विधेऽस्मिन् विहिते विधाने न याति संज्ञां यदियश्चजन्तुः ।
तंपादमूले भृकुटी ललाटे शलाकया लोहजया दहेत्तु ॥

अञ्जन और नस्यादिसे भी अगर सन्निपातज्वरवालेको होश न हो, तो उसकी पगथली, भौं या ललाटको लोहेकी गरम की हुई शलाकासे दाग देना चाहिये। यह बात सभी सन्निपातोंके लिये कही गई है।

ज्वरोंमें औषधियोंके जल

(१) **कटफलादि पान**—कायफल, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, चन्दन, फालसे, कुटकी, पद्माख और खस—इन दसोंको १ तोला लेकर ६४ तोला जलमें पकाओ। आधा जल रह जानेपर उतार लो। यह जल त्रिदोष, दाह और प्यासको नाश करता है। यह पान सब पानोंमें उत्तम है और बहुत दिनोंके ज्वरवालोंके लिये अमृत है।

(२) षड़ङ्गपान—खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला, दाख, आमले और पित्तपापड़ा—इन छहोंको १ तोला लेकर, ६४ तोले जलमें पकाकर, आधा जल रहनेपर उतार लो। शीतल करके इसके पिलानेसे दाह, प्यास और ज्वर शान्त होता है। इसको "षड़ङ्गपान" कहते हैं। इसको "रुग्दाह" सन्निपातमें देनेसे बड़ा लाभ होता है।

(३) षड़ङ्गपान—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, सोंठ, खस और लालचन्दन—इन छहोंको एक तोला लेकर ६४ तोले जलमें औटाओ। आधा जल रहनेपर, उतारकर खूब शीतल कर लो। इस जलसे दाह, प्यास और ज्वर शान्त होता है। इसको भी "षड़ङ्गपान" कहते हैं। पित्तदोष, मद्य-विकार और विषसे पीड़ितोंके लिये, यह जल औटाकर और खूब शीतल करके देनेसे बड़ा हित होता है।

(४) कुम्भेरके फल, चन्दन, खस, महुएके फूल, फालसे, सारिवा और मिश्री,—इनसे बनाया हुआ पान पित्तज्वरको नष्ट करता है।

सन्निपात-नाशक लेप प्रभृति

मूर्च्छानाशक लेप

(१) पारा, वत्सनाभ, कालीमिर्च, नीलाथोथा और नौसादर—इन पाँचोंको एकत्र धतूरेके रसमें और लहसनके रसमें खरल करो। पीछे सिरके बीचके भागके बाल सफाचट कराकर, वहाँ इसका लेप करो। इससे सन्निपातज्वरकी बेहोशी नाश होती है। अगर कहीं हड्डी में दर्द हो, तो वहाँ भी इसका इसी तरह लेप करना चाहिये।

लघुसूचिकाभरण रस

(२) वच्छनाग विष ४ तोले और शुद्ध पारा ४ माशे—इन दोनों को मिलाकर खरल कर लो। पीछे रेहसे पुते हुए दो मिट्टीके शकोरे लेकर, एकमें इस खरल किये चूर्ण को रख दो और ऊपरसे दूसरा शकोरा ढक दो। इसके बाद उनका मुँह मिलाकर, कपड़मिट्टी कर दो।

कपड़मिट्टीकी पाँच-छः तह करो, ताकि साँस न रहे। पीछे उनको धूप में सुखाकर, किसी ऐसे स्थानमें, जहाँ हवा न हो, चूल्हेपर चढ़ाकर, मन्दी-मन्दी आग ६ घण्टे तक बराबर लगाओ; पीछे उनको नीचे उतार लो और मुँह खोल लो। यह काम बहुत ही आहिस्ते और हलके हाथसे करना चाहिये। ऊपरके शकोरेमें जो पारा लगा हो, उसे अचक-अचक उतारकर शीशीमें रख लो और फौरन कागसे मुँह बन्द कर दो; हवा न लगने पावे। यही "सूचिकाभरण रस" है।

नोट—आजकल सौदागरोंकी दूकानोंपर काँचकी रकाबियाँ मिलती हैं, उनमें भी यह रस तैयार किया जाता है।

अगर सन्निपात रोगी बेहोश हो, पुराने घीकी मालिश कराने अथवा और-और उपाय करनेसे होशमें न आता हो, तो आप सन्निपात रोगीके सिरके बाल, तालुएके स्थानपर, उस्तरेसे मुँड़वा दो और किसी तेज़ पैनी चीज़से या बारीक नश्तरसे उस जगहकी खाल छील-कर घाव कर दो। जब खून निकलने लगे, तब आप उस शीशीमेंसे सुईके अग्र भागमें जितना रस लगे उतना रस निकालकर उस घावमें भर दो और अँगुलीसे तब तक मलते रहो, जब तक कि वह रस खून में न मिल जाय। जब वह रस खूनमें मिल जायगा, तब जमे हुए खून और कफको दुरुस्त कर देगा और उसी समय बेहोश रोगीकी मूर्च्छा नाश हो जायगी। इसी तरकीबसे साँपके काटनेसे बेहोश हुआ आदमी भी होशमें आ जाता है। शेषमें मस्तकको ज़रासे दूधसे धो डालना चाहिये। इस रससे बेहोश तो होशमें आ जाता है; पर दाह पैदा हो जाता है, इसलिये उस समय गुलकन्द या दाख प्रभृति मीठे पदार्थ उसे देने चाहियें।

रोटिका बन्धन

लहसन, राई और सहँजना—इन तीनोंको गोमूत्रमें पीसकर रोटी बना लो। तवेपर रोटी सेकेनेसे पहले, ज़रा-सा घी तवेपर लगा देनेसे

रोटी आसानीसे सिक जायगी। रोटी सिक जानेपर ब्रह्मरन्ध्र या मस्तकके तालुएको चाकू वग़ैरहसे खुरचकर, सींगिया विष मलो और उसके बाद वह सिकी हुई रोटी गरम-गरम रोगीके सिरपर बाँध दो। उस रोटीको सिरपर उस समय तक रक्खो, जब तक रोगीको होश न हो जाय। अगर एक बार रोटी रखनेसे २-३ घण्टोंमें चेत न हो, रोटी सूख जाय, तो दूसरी रोटी वैसी ही बनाकर बाँध दो। इस रोटीसे भी होश न हो, तो समझ लो कि, रोगी मौतके पञ्जेमें है। होश हो जानेपर, अगर रोगी रोटीको न सह सके, तो फौरन रोटीको खोल लो।

भयानक सन्निपातमें जब किसी तरह होश नहीं होता, तब साँप और बिच्छुओंसे रोगीको कटाते हैं। कहा है—"दंशनैवृंश्चिकैः सर्प्पैः सन्निपाते सुदारुणे" इत्यादि।

सन्धिक सन्निपातज्वरकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) कचूर, देवदारु, हरड़, बहेड़ा, आमला, विधारा, रास्ना, सोंठ, गिलोय और शतावर—इन दसों दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, मन्दी-मन्दी आगसे काढ़ा बनाकर, और "गूगल" डालकर पिलानेसे सन्धिक "सन्निपात" की पीड़ा दूर हो जाती है। शीतल पदार्थोंका सेवन न करना चाहिये।

(२) वच, पित्तपापड़ा, जवासा, कटसरैया, गिलोय, अतीस, देवदारु, नागरमोथा, सोंठ, विधारा, रास्ना, गूगल, बृहद्दन्ती (अभावमें दन्ती) और शतावर—इन १४ दवाओंका काढ़ा सन्धिक सन्निपातकी पीड़ा, जाँघोंकी जड़ता, ग्लानि, भ्रम और पक्षाघात (एक तरफ़का अङ्ग मारा जाना) को नष्ट करता है।

नोट—घोड़ावच, धमासा, गिलोय, भारङ्गीकी जड़, कटसरैया, देवदारु, नागरमोथा, सोंठ, विधारा, रास्ना, गूगल, असगन्ध, अरण्डकी जड़ और शतावर—इनका काढ़ा सन्धिक सन्निपात, जड़ता, ग्लानि, भ्रम और पक्षाघातको

नाश करता है। परीक्षित है। इसमें और ऊपरके नुसखेमें ३-४ दवाओंका भेद है। हमने इस तरह कई दफ़ा आज़माया है।

(३) देवदारु, कचूर, दूनी गिलोय, रास्ना और सोंठ—इन पाँचों के काढ़ेमें गूगल मिलाकर पीनेसे सन्धिक सन्निपात और सन्धिगत वायु नाश होती है। परीक्षित है।

(४) नागरमोथा, अरण्डीकी जड़, हरड़, काले फूलका पियाबाँसा, देवदारु, गिलोय, रास्ना, शतावर, कचूर, कुटकी, अडूसा, सोंठ, पञ्चमूलकी पाँचों दवाएँ और असगन्ध—इन १८ दवाओंका काढ़ा गले की नसोंका जकड़ना और सन्धियोंकी पीड़ाको दूर करता है।

(५) रास्ना, हरड़, गिलोय, कुटण्टक (सहचर कटसरैया), नागरमोथा, शतावर, सोंठ, देवदारु, कुटकी, कचूर, अडूसा, अरण्डकी जड़ और दशमूल—इन २२ दवाओंका काढ़ा सन्धिक सन्निपात, मन्यास्तम्भ (गर्दन जकड़ना), अन्त्रवृद्धि, सब तरहके ज्वर, अरुचि और सन्धियोंकी सब तरहकी पीड़ाको दूर करता है। परीक्षित है।

(६) रास्ना, देवदारु, कचूर, वृद्धदारू, सोंठ, गिलोय, त्रिफला और शतावर,—इनका काढ़ा "गूगल" डालकर पीनेसे सन्धिक सन्निपात नाश होती है। परीक्षित है।

(७) नागरमोथा, गिलोय, रास्ना, देवदारु और शतावर—ये पाँचों एक-एक तोला, अरण्डीकी जड़की छाल, कचूर, कुटकी, रूसेके पत्ते और सोंठ—ये पाँचों सात-सात माशे; दशोंका वज़न कुल आठ तोले; कुल वज़न आठ तोलेके चार भाग करके, दो-दो तोलेकी चार खुराक बना लो। पीछे कोई डेढ़ पाव जलमें एक मात्रा औटाओ; चौथाई पानी रहनेपर उतार लो। पीछे मल-छानकर शीतल कर लो और ३ माशे शहद मिलाकर पिला दो। इस तरह दोनों समय इस काढ़ेके पिलानेसे सन्धिक सन्निपात आराम हो जाता है। यह नुसख़ा परीक्षित है।

(८) गिलोय, अरण्डकी जड़, सोंठ, देवदारु, रास्ना और हरड़का काढ़ा, सवेरेके समय, देनेसे सन्धिक सन्निपात और सब तरहके वात-रोग नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस सन्निपातमें लंघन बहुत हलका कराना चाहिये। सन्निपात-नाशक धूप देनी चाहिये। औटाकर शीतल किया हुआ जल पिलाना चाहिये। पसीने न आते हों, तो पसीने निकालने चाहियें। सन्निपात-नाशक पेया देनी चाहिये। बालुका स्वेद वात और कफके रोगोंको मा-मस्तकके शूलको और शरीरके टूटने आदिको दूर करता है, शरीरके छेदोंको नरम करता है, जठराग्निको आमाशयमें स्थापित करता है और वातकफके स्तम्भको तोड़कर ज्वरको नाश करता है।

बालुका स्वेद

एक ठीकरेमें बालू भरकर उसे खूब गरम कर लो। उस ठीकरेको रोगीके सामने या नीचे इस तरह रखो कि, उसकी भाफ रोगीको लगे। रोगीको कपड़ा उढ़ा दो और गरम बालूपर काँजीके छींटे दो,इस तरह बारम्बार करनेसे रोगीके शरीरसे पसीना निकलेगा। बालुका स्वेदकी और तरकीब वातज्वर और वातकफज्वरकी चिकित्सामें (पृष्ठ १६० और २०२ में) लिख आये हैं।

धूप

गूगल, राई, कड़वे नीमकी पत्ती और राल—इनकी धूप सन्धिक सन्निपातको नाश करती है।

अन्तक सन्निपातकी चिकित्सा

इसकी चिकित्सा नहीं है। इसीसे अनेक वैद्यों ने इसकी कोई दवा ही नहीं लिखी है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—अन्तक सन्निपातमें—ज्वरमें लंघन आदि नियमोंको, ज्वर-नाशक काथोंको और रोग-नाशक यूप आदिको छोड़कर, ज्वरको हरनेवाले और प्राणोंके रक्षक मृत्युञ्जय सदाशिवका ध्यान करना चाहिये। कहा है:—

भिषग्भिरिति निर्णीते सन्निपातेऽन्तकाभिधे ।
पजं जाह्नवीनीरं वैद्योगोविन्द एवहि ॥

अन्तक सन्निपातमें गङ्गाजल तो दवा है और विष्णु भगवान ही वैद्य हैं, ऐसा वैद्योंने निश्चय किया है।

वैद्योंने इस सन्निपातज्वर-रोगीकी चिकित्सा न करनेकी राय दी है; क्योंकि इस सन्निपातवाला रोगी बचता नहीं।

रुग्दाह सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, सोंठ, खस और लाल-चन्दन—इन छै औषधियोंको चार-चार माशे लेकर काढ़ेकी रीतिसे औटाओ, किन्तु आधा जल रहनेपर उतार लो। शीतल होनेपर, मल-छानकर, ३ माशे मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इसी तरह सवेरे-शाम दोनों समय पिलानेसे यह काढ़ा "रुग्दाह सन्निपात" को नाश करता है। इसके पीनेसे पित्तज्वर, दाह, प्यास और वमन ये सब नाश होते हैं। यह नुसखा पित्तज्वर और रुग्दाह दोनोंमें लाभदायक है। परीक्षित है।

नोट—ये षड्ङ्गपानीयकी औषधियाँ हैं। इसमें कोई सोंठ लेते हैं और कोई धनिया लेते हैं। यहाँ सोंठ लेना ही ठीक है। "चरक" के चिकित्सास्थान में लिखा है,—सब तरहके ज्वरोंमें, विशेषकर पैत्तिक और मद्यपानजन्य ज्वरोंमें, प्यास और ज्वर शान्त करनेके लिए—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, लाल-चन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ इनके साथ सिद्ध किया हुआ जल शीतल करके पीनेको देना चाहिये। जिस तरह वातकफात्मक ज्वरमें रोगीको तृषा लगने पर गरम जल देना चाहिये। उसी तरह पैत्तिक और मद्यपानजनित ज्वरमें तिक्त औषधियोंके साथ सिद्ध किया हुआ जल देना चाहिये। गरम जल और यह षड्ङ्गपानीय दोनों ही जल ज्वरनाशक स्रोतोंको शोधनेवाले, बलकारी, रुचि करनेवाले, पसीना लानेवाले और मंगल करनेवाले हैं। जब यह षड्ङ्गपानीय जलकी तरह पीनेको देना हो, तब एक तोला सब दवाएँ लेकर ६४ तोले जलमें

औटानी चाहियें और आधा जल रहनेपर उतार लेनी चाहियें। अगर रोगीके भीतर दाह ज़ियादा हो, तो नीचेका नुसख़ा पिलाना चाहिये।

(२) ख़स, लालचन्दन, सुगन्धवाला, दाख (बीज निकालकर), सूखे आमले और पित्तपापड़ा—इन छहों दवाओंको २ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। ख़ूब शीतल हो जानेपर, ३ माशे मिश्री मिलाकर पिलाओ। इस काढ़ेके दोनों समय पिलानेसे—दाह, प्यास और रुग्दाहका ज्वर शान्त हो जाता है।

नोट—इस नुसख़ेकी दवा १ तोले लेकर ६४ तोला जलमें पकाकर, आधा जल रहने पर उतार लो और इस जलको पिलाओ। इस षड़ङ्गपानीयसे दाह, तृषा और ज्वर शान्त होते हैं।

(३) धनियेके चाँवलोंको, रातके समय, कोरी हाँड़ीमें भिगो दो। सवेरे जलको छानकर मिश्री मिलाकर, पीनेसे भीतरका दाह और पित्तज्वर थोड़े ही समयमें शान्त हो जाता है। धनिया भिगोकर, सवेरे चीनी मिलाकर पीनेसे पित्तज्वरका पुराना दाह भी आराम हो जाता है।

(४) हरड़, पित्तपापड़ा, कुटकी, देवदारु, अमलताश, दाख और नागरमोथा—इन सातोंको बराबर-बराबर चार-चार माशे लेकर काढ़ा बनाकर, सवेरे-शाम पिलानेसे रुग्दाहका महानज्वर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) नागरमोथा, कुटकी, घोड़ावच, अमलताशका गूदा, त्रिफला, कड़वा नीम, कड़वी तोरई, दशमूल और चिरायता—इनका काढ़ा सब तरहकी वातव्याधि और रुग्दाह सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

दाह-नाशक उपाय

पथ्यावलेह

दाहके नष्ट करनेके लिये घी या शहदके साथ "हरड़" को चाटना

चाहिये। इससे दाह, ज्वर, खाँसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास और वमन ये सब नाश होते हैं। परीक्षित है।

लेप

बेरके पत्तोंको दहीमें पीसकर शरीरपर लेप करनेसे शरीरकी जलन या दाह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कपूर, सफेद चन्दन और नीमके पत्ते दहीमें पीसकर लेप करनेसे दाह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सारे शरीरमें दाह न हो, हाथ-पैरोंमें ही दाह हो; तो जहाँ दाह हो वहीं लेप करना चाहिये।

जलधारा

रुग्दाह सन्निपातज्वर-रोगीको सीधा सुलाकर, उसकी नाभिपर एक ताम्बे या काँसेका गहरा बासन रखो। पीछे उसमें अत्यन्त शीतल जलकी धारा छोड़ो। इस उपायसे तत्काल दाह शान्त हो जायगा।

अवगुण्ठन

कपड़ेको काँजीमें भिगोकर, रोगीके शरीरपर डालनेसे दाह नाश हो जाता है।

तर्पण

दाह और वमनसे पीड़ित, दुबले, निराहार रहनेवाले प्यासे मनुष्य को मिश्री और शहद मिलाकर खीलोंका सत्तू खिलाओ।

दाह-नाशक और उपाय

चन्दन आदिका लेप किये हुए, मोतियोंकी माला पहने हुए, जवान स्त्रीको रोगीकी छातीसे लगाओ; पर मैथुन न करने दो। फव्वारेवाले मकान या बागमें रोगीको रखो। और दाह-नाशक उपाय पृष्ठ १७३-१७५ में देखिये।

धूप

काली अगर, कपूर, कुदरूँका वृक्ष, नखद्रव्य, तगर, खस, सफ़ेद

चन्दन और राल,—इन सबकी धूप देनेसे रुग्दाह सन्निपात नाश होता है। परीक्षित है।

चित्तभ्रमकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) दाख, देवदारु, कुटकी, नागरमोथा, आमले, हरड़, अमलतास, चिरायता, पित्तपापड़ा और पटोलपत्र—इन दसों दवाओंको बराबर-बराबर अढ़ाई-अढ़ाई माशे लेकर, काढ़ेकी रीतिसे काढ़ा बनाकर, दोनों समय, पिलानेसे,—"चित्तभ्रम सन्निपात" आराम होता है। यह नुसखा "भावप्रकाश" का है; पर हमारा परीक्षित है।

नोट—कभी-कभी "कुटकी" के स्थानमें "गिलोय" भी लेते हैं।

(२) ब्राह्मी, पाढ़, पटोलपत्र, सुगन्धवाला, हरड़, पित्तपापड़ा, अमलतास, कुटकी और शंखाहुली—इन ९ दवाओंको इसी तरह बराबर-बराबर तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा बनाकर पीनेसे चित्तभ्रम सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—अगर रोगीको दस्त होते हों, तो हरड़ और अमलतासका गूदा निकाल लेना चाहिये।

(३) ब्राह्मी, वच, शतावरी, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुटकी, नागबला, आरग्वध, चिरायता, नीम, नागरमोथा, कोशातकी, दाख और दशमूल—इन २४ दवाओंको एक-एक माशे लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे चित्तभ्रम और रुग्दाह दोनों सन्निपातज्वर आराम होते हैं।

(४) हरड़, पित्तपापड़ा, कुटकी, दाख, दारुहल्दी, नागरमोथा, चिरायता, ब्राह्मी और पटोलपत्र—इन ९ दवाओंका काढ़ा भी चित्तविभ्रम सन्निपातको आराम करता है। परीक्षित है।

अञ्जन

(५) पीपल, घोड़ावच, कालीमिर्च, सेंधानमक, करञ्जके बीज, हल्दी, आमले, हरड़, बहेड़ा, सरसों, हींग और सोंठ—इन १२ दवाओं

को बकरेके मूत्रमें पीसकर, गोली बनाकर और छायामें सुखाकर, नेत्रों में आँजनेसे चेतना उत्पन्न होती है; इसीसे इस गोलीको "प्रचेतना" कहते हैं। इस गोलीसे चित्तका भ्रम, स्मरण न रहना, भूतबाधा, सिरका दर्द, आँखका दर्द और भ्रम नाश होता है। परीक्षित है।

नस्य

(६) गुड़, सोंठ और पीपल—इनको पीसकर, अगस्तियाके रसमें मिलाकर नास देने से चित्तभ्रम दूर होता है। परीक्षित है।

धूप

(७) कपूरकचरी, सुगन्धवाला, नागरमोथा, महुआ, चन्दन, देव-दारु, शहद, गूगल और नखद्रव्य—इन ९ दवाओंका चूर्ण तथा अगर, लामज्जक (अभावमें खस) और इलायची—मिलाकर इन १२ की धूप बनाकर देनेसे "चित्तभ्रम" नाश होता है, ग्रहदोष दूर होता है, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और सौभाग्यकी वृद्धि होती है। परीक्षित है।

शीताङ्ग सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) आककी जड़, जीरा, कालीमिर्च, पीपल, भारङ्गी, कटेरी, दूनी सोंठ और पोहकरमूल—इनको गोमूत्रमें पकाकर सेवन करनेसे तत्काल ही शीताङ्ग सन्निपातकी पीड़ा, मोह—बेहोशी, श्वास, कफकी अधिकता और खाँसी नाश हो जाती है।

नोट—इस नुसख़े में "काकड़ासिंगी" भी कोई-कोई मिलाते हैं, और अवश्य मिलानी चाहिये। इसकी प्रत्येक दवा तीन-तीन माशे लेकर, काढ़ेकी रीतिसे काढ़ा बनाकर, दोनों समय पिलानेसे शीताङ्ग सन्निपात आराम होता है। आककी और भारङ्गीकी जड़की छाल लेनी चाहिये तथा कटेरीका पञ्चाङ्ग लेना चाहिये। परीक्षित है।

उद्धूलन

(२) ककोड़ा (खेखसा) की जड़का चूर्ण, कुलथी, पीपल, वच,

कायफल, कालाज़ीरा, चिरायता, चीता, कायफलका पानी और हरड़- इन दसोंको एकत्र पीसकर मलनेसे शीताङ्ग सन्निपात दूर होता है।

कड़वी तूम्बीके बीज, कुलथी, चीता, चिरायता, हरड़, पीपल, घोड़ावच, कायफल, कालाजीरा और पित्तपापड़ा—इन दसोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूटकर, कपड़ेमें छानकर शरीरमें मलनेसे, शीताङ्ग सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

पारा १ भाग, वत्सनाभ विष १ भाग, कालीमिर्च ४ भाग और धतूरेके फलकी भस्म ८ भाग—इन सबको एकत्र खरल करके देहमें मलनेसे अत्यन्त पसीना आना और शीतका वेग दूर हो जाता है।

नोट—और उद्धूलन पृष्ठ २०१ में लिखे हैं।

(३) मस्तकमें टोप बाँधना—कलौंजी, पोहकरमूल, कूट, असगन्ध, वच, एलुआ और खुरासानी अजवायन—इन सातोंको महीन पीस, गेहूँकी रोटीमें रखकर और गरम करके, मस्तक पर बाँधनेसे शीत नाश हो जाता है। जब जी घबराय, शीत नाश हो जाय, रोटीको खोल लेना चाहिये।

तन्द्रिक सन्निपातकी चिकित्सा

काढ़े

(१) कटेरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ और हरड़—इन पाँचोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

(२) भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, भटकटैयाका पञ्चाङ्ग, हरड़, पोहकरमूल और सोंठ—इन सातोंका काढ़ा पीनेसे, ३ दिनमें, घोर तन्द्रिक सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

(३) नीमकी ताजा गिलोय १ तोला, परवलके डाल-पत्ते ६ माशे और रूसेके पत्ती ३ माशे—इन तीनोंका काढ़ा पिलानेसे भी तन्द्रिक सन्निपात आराम होता है। यह नुसखा उस दशामें देना चाहिये,

जब कि नं० १ और नं० २ के नुसख़ोंसे रोगीको ज़ियादा गरमी मालूम हो।

नोट—कभी-कभी ज़रूरत होनेसे इसमें त्रिकुटा भी मिला लेते हैं।

नस्य

(४) कालीमिर्च, सुगन्धवाला, दारुहल्दी, बच, कूट, बायबिड़ङ्ग, सोंठ, हल्दी आर इन्द्रायन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

अञ्जन

सेंधानोन, कपूर, मैनसिल और पीपल—इन चारोंको घोड़ेकी लार और शहदमें पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रिक सन्निपात नाश हो जाता है।

नोट—ये सब नुसख़े परीक्षित हैं। अगर और भी नस्य या अञ्जनकी ज़रूरत हो, तो पीछे पृष्ठ २५३-२५५ में देखिये।

कण्ठकुब्ज सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) हरड़, बहेड़ा, सोंठ, आमला, मिर्च, पीपर, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, अड़ूसा और हल्दी—इन ११ दवाओंका काढ़ा कण्ठ-कुब्जको इस तरह नाश करता है, जिस तरह सिंह हाथीको नाश करता है।

नोट—त्रिकुटा, त्रिफला, कुटकी, इन्द्रजौ, हल्दी और दारुहल्दी—इनका काढ़ा भी कंठकुब्जको नाश करता है। यह और ऊपरवाला काढ़ा दोनों ही परीक्षित हैं।

(२) चिरायता, कुटकी, पीपल, इन्द्रजौ, कटेरी, कचूर, बहेड़ा, हरड़, देवदारु, मिर्च, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आमला, पोह-करमूल, चीता, काकड़ासिंगी, अड़ूसा और सोंठ—इन १९ दवाओंका काढ़ा कण्ठकुब्ज सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

(३) काकड़ासिंगी, चीता, हरड़, अडूसा, कचूर, चिरायता, भारङ्गी, हल्दी, बड़ी कटेरी, पोहकरमूल, मोथा, इन्द्रजौ, कुटकी और कालीमिर्च—इन १४ दवाओंका काढ़ा दाह, मोह, अरुचि, श्वास, गलग्रह (गला-रुकना), अग्निमांद्य, अफारा, अभिन्यास, सन्निपात और खाँसी—इनसे युक्त कण्ठकुब्ज सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—नुसख़ोंमें अडूसेकी पत्ती, हरड़का बक्कल और कटेरीका पञ्चाङ्ग लेना चाहिये। रोगीको ताक़तवर यूष देते रहना चाहिये, जिससे ताक़त न घटे और गला न सूखे।

नस्य

(४) चिरचिरेका बिना जल डाले निकाला हुआ रस और पीपर का चूर्ण—इन दोनोंको एकत्र करके इसकी नास देनेसे कण्ठकुब्ज सन्निपातमें खूब फायदा होता है। और नस्योंके लिये पृष्ठ २४८—२५३ देखिये।

कर्णक सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) भारङ्गी, अरणी, पोहकरमूल, कटेरी, सोंठ, मिर्च, पीपल, वच, नागरमोथा, गिलोय, काकड़ासिंगी, कुटकी और रास्ना—इन १३ दवाओंका काढ़ा पीनेसे अन्तककी पीड़ा शान्त होती है।

(२) दशमूल, कुटकी, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, चिरायता और मिर्च—इन ९ दवाओंका काढ़ा पीनेसे कर्णक सन्निपातकी तकलीफ़ जबर्दस्ती दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(३) रास्ना, असगन्ध, नागरमोथा, कटेरी, भारङ्गी, वच, पोहकरमूल, कुटकी, काकड़ासिंगी और हरड़—इन दसोंका काढ़ा पीनेसे कर्णक सन्निपात निस्सन्देह आराम हो जाता है। यह नुसखा भी परीक्षित है।

लेप

(४) अगर सूजन हलकी या भारी हो, पर वह न पकी हो तो उसको नीचे लिखे हुए लेपोंसे नष्ट करो। अगर पक गई हो, तो नश्तर से चिरवाकर उसकी राध निकलवा दो। पीछे घावका इलाज घावकी तरह करो।

हल्दी, इन्द्रायण, कूट, सेंधानोन, देवदारु और हिंगोटकी जड़,—इन छहोंको आकके दूधमें पीसकर लेप करने से कर्णक नाश हो जाता है। इन सब दवाओं या इनमें से कम दवाओंके लेपसे भी कर्णक नष्ट हो जाता है।

कुलथी, कायफल, सोंठ और काला जीरा—इन सबको समान भाग लेकर, जलमें पीसकर, सुहाता-सुहाता गरम करके बारम्बार कानकी जड़में लेप करनेसे कर्णक नष्ट हो जाता है।

गेरू, खड़िया, सोंठ, कायफल और अमलतास—इन सबको काँजीमें पीसकर, गरम करके, लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजन नाश हो जाती है।

सहँजना और राई—इनको जलमें पीसकर, कानकी जड़में लेप करनेसे कानकी जड़की सूजन शान्त हो जाती है।

बिजौरेकी जड़ और अरनी—इन दोनोंको जलमें पीसकर लेप करनेसे कर्णमूल नाश हो जाता है।

गेरू, धूल, सोंठ, बच और कायफल—इन सबको एकत्र काँजीमें पीसकर और गरम करके कानकी जड़में लगानेसे कर्णशोथ—कानकी सूजन आराम हो जाती है।

हल्दी, गोंदी, सेंधानोन, देवदारु, कूट, दारुहल्दी और इन्द्र-वारुणी—इन सातोंको आकके दूधमें पीसकर, कानकी जड़की सूजनपर लेप करनेसे अवश्य लाभ होता है; पर जौंक लगवाना सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

गेरू, पांगानोन, सोंठ, वच और राई—बराबर-बराबर लेकर, काँजीमें पीसकर, लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजन नाश हो जाती है। लोलिम्बराज महाशय कहते हैं:—

यः शोथः श्रुतिमूलजः सुकठिनः शान्ते त्रिदोपज्वरे
रक्तं तत्र जलौकया परिहरेत्सर्पिः पिवेच्चातुरः।
रास्नानागरलुङ्गहुतभुग्दार्व्यग्निमन्यैः समैर्लेपः
स्यादरविंदवंघनयने शोथव्यथाध्वंसनः ॥

सन्निपातज्वरके नाश होनेपर, कानकी जड़में जो कड़ी सूजन होती है, जौंक लगवाकर उसका खून निकलवा देना चाहिये और रोगीको घी पिलाना चाहिये। हे कमलको भी लज्जित करनेवाले नेत्रोंवाली! रास्ना, सोंठ, विजौरेकी जड़, चीतेकी जड़, दारुहल्दी और अरणी—इन सबको समान-समान लेकर और जलमें पीसकर, लेप करनेसे कानकी जड़की सूजन नाश हो जाती है।

नस्य

(५) गोलमिर्च, पीपल, जीरा और सेंधानोन—इनको गरम जलमें पीसकर, तत्काल, नस्य देनेसे कर्णकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

सेंधानोन और छोटी पीपर गरम पानीमें पीसकर सुंघानेसे भी लाभ होता है।

स्वेद

(६) दशमूलका लेप करने या स्वेद देनेसे अथवा प्याजका स्वेद या बफारा देनेसे तत्काल पीड़ा शान्त हो जाती है।

जौंक लगवाना

(७) अगर २-३ लेप करनेसे फायदा न दीखे, तो जौंक लगवाकर तत्काल खून निकलवा देना सर्वश्रेष्ठ ऊपाय है। जौंक लगवानेके

बाद एक दिन नीमके पत्ते बाँधकर "हारीत" मुनिका कहा हुआ प्रसिद्ध लेप लगाना चाहिये। वह लेप यह है,—घरका धूआँ, हल्दी, सोंठ, पीली सरसों, सेंधानोन और बच—इन छहोंको दूधमें पीसकर लेप करनेसे खूनका विकार, सूजन और घाव शान्त हो जाते हैं। गलेमें सूजन हो, तो वह भी इस लेपसे आराम हो जाती है।

पकाना और चीरना

(८) अगर किसी कारणवश सूजन पकानी हो, तो दिनमें ५-६ बार बदल-बदलकर "अलसी" के आटेकी पुल्टिश* "घी" मिलाकर बाँधनी चाहिये। अगर पुल्टिशसे ही फोड़ना हो, तो पुल्टिशमें जंगली कबूतरकी बीट मिलानी चाहिये। गिद्ध, कबूतर और सफेद चीलकी विष्ठाएँ इस कामके लिये प्रसिद्ध हैं। सज्जीखार और जवाखारका लेप करनेसे भी फोड़ा फूट जाता है। चीरनेका प्रबन्ध हो, तो सबसे अच्छा। रोगीको जल्दी चैन मिलता है। चीरने या दवासे फूटनेके बाद—घाव भरनेवाली कोई औषधि लगानी चाहिये।

घाव भरनेके उपाय

अगर सूजन पक गई हो, तो धवकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और कदमकी छाल—इन तीनोंको पीसकर लेप करनेसे घाव भर जाता है।

अथवा

नीमकी छाल, अमलतासकी छाल और हल्दी—इन तीनोंका लेप, राध और दुर्गन्धको नाश करके, घावपर अंकुर ले आता है।

---

* अलसीकी पुल्टिश शीतल जलसे अच्छी नहीं बनती। अलसीके आटेमें खूब उबलता हुआ पानी डालकर हिलानेसे अच्छी पुल्टिश बनती है। अथवा अलसीके आटेमें गरम दूध या पानी डालकर और ज़रा-सी हल्दी मिलाकर अच्छी तरह पकानेसे उम्दा पुल्टिश बन जाती है। यह सुहाती-सुहाती गरम बाँधनी चाहिये।

अथवा

नीमके पत्ते, तिल और मुलेठीको पीसकर, शहद और घीमें मिलाकर लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाता और भर जाता है। मवाद निकल जानेके बाद लगानेसे, यह लेप बड़ा फ़ायदा करता है।

अथवा

मवाद निकल जानेके बाद, हमारी "स्वास्थ्य-रक्षा" के पृष्ठ ३२३ में लिखी "क्षतारि मलहम" लगानेसे घाव बहुत ही जल्दी भर जाता है। वह मलहम घाव भरनेके लिए रामबाण है। कम-से-कम हज़ार बार आज़माई गई है। उससे हर तरहके घाव आराम हो जाते हैं। हम उस मलहमको काममें लाने की जोरसे सिफारिश करते हैं। उसके बनानेकी तरकीब यह है:—

सफेद कत्था २ तोले, कपूर १ तोला, सिन्दूर आधा तोला और गायका घी १०० बारका धुला हुआ आधा पाव। ये सब चीजें तैयार कर लो। पहले कत्था और कपूरको अलग-अलग पीसकर महीन कपड़ेमें छान लो। पीछे घीको १०० बार काँसीकी थालीमें धो लो। फिर उसी घीमें कत्था, कपूर और सिन्दूर मिलाकर खूब फेट लो, जिससे दवा और घी एकदिल हो जायँ। बस, यही तरकीब है। इस मलहमसे और भी कितने ही रोग आराम होते हैं। उनके लिए "स्वास्थ्यरक्षा" मँगाकर रखिये। मूल्य ५)

अपथ्य

कर्णमूलवालेको दिनमें सोना, बहुत जल पीना, शीतल जल सेवन करना, रातमें जागना, मिहनत करना, चिन्ता करना, उड़द, जौ, गेहूँ, तिल, मसूर, मटर और तेल खाना, स्त्री-प्रसङ्ग करना—ये सब अपथ्य हैं। कर्णमूलवालेको एक मास तक मैथुन न करना चाहिये और १५ दिन तक जियादा न खाना चाहिये।

भुग्ननेत्र सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) दारुहल्दी, परवल, नागरमोथा, कटेरी, कुटकी, हल्दी, नीम और त्रिफला—इन आठों दवाओंका काढ़ा प्रबल भुग्ननेत्रमें चैतन्यता करानेके लिये देना चाहिये। परीक्षित है।

(२) पीपल, कड़वे परवल, नागरमोथा, कुटकी, कटेरीका पञ्चांग, नीम और देवदारुका काढ़ा पित्तज्वर और उग्र सन्निपातज्वरको नाश करता है।

अवलेह

(३) चिरायता, शहद, बच, पीपल, मिर्च, लहसन और राइ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस और छानकर रख लो। भुग्ननेत्रवालेको, दिनमें ३-४ दफा, छै-छै रत्ती इस चूर्णको शहदमें मिलाकर चटाओ। इससे बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

नस्य

(४) असगन्ध, सेंधानमक, बच, महुए का सार, मिर्च, पीपल, सोंठ और लहसन—इन आठोंको बकरेके पेशाबमें पीसकर, नास देनेसे भुग्ननेत्र शान्त होता है।

बच, मिर्च, हींग और मुलेठी—इन चारोंको मीठे अनारके रसमें महीन घोटकर, नास देनेसे भुग्ननेत्रमें बड़ा लाभ होता है।

अंजन

(५) सेंधानोन और छोटी पीपल, इनको पानीमें खूब महीन पीसकर अञ्जनकी तरह कर लो और रोगीकी आँखोंमें आँजो। इससे दृष्टि में बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

रक्तष्ठीवी सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) रोहिषतृण (घास), धमासा, अडूसा, पित्तपापड़ा, फूल-प्रियंगू

और कुटकी—इन ६ दवाओंके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपात नष्ट हो जाता है।

(२) रोहित घास, पित्तपापड़ा और जवासा—इन तीनोंके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी रक्तष्ठीवी आराम हो जाता है; पर इससे ऊपरका नुसखा उत्तम है। यह भी परीक्षित है और वह भी।

(३) पद्माख, लालचन्दन, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चमेलीकी पत्ती, जीवक, सफेद चन्दन, सुगन्धवाला, मुलेठी और नीमकी छाल—इन दसों दवाओंका काढ़ा करके पीनेसे रक्तष्ठीवीका खून आना बन्द हो जाता है।

(४) नागरमोथा, पद्माख, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, मुलेठी, नेत्रवाला, शतावर, मलयचन्दन, मालतीके पत्ते और कमल—इन दसोंके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे—रक्तष्ठीवीमें मुँहसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(५) मुलेठी, महुआ, फालसेकी छाल, सुगन्धवाला, लालचन्दन, तेजपात, देवदारु और कुम्भेरके फल—इन आठों दवाओंका काढ़ा बनाकर, अत्यन्त शीतल करके, मिश्री मिलाकर पीनेसे,—रक्तष्ठीवीमें मुँहसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—नं० १, २, ३ और ४ के काढ़ोंकी दवाओंका वज़न २ तोले होना मामूली बात है। नं० ३ के काढ़ेको पकाकर खूब शीतल कर लेना; पीछे २ माशे शहद मिलाकर पिला देना। नं० ४ की भी यही विधि है। जब नं०३ या ४ से भी लाभ न दीखे, खून आना बन्द न हो; तब नं० ५ का नुसख़ा देना चाहिये। इसके बनानेकी विधिमें ज़रा फर्क़ है। जो विधि ऊपर लिखी है वह ठीक है। हमने जिस विधिसे आज़माया है, वह भी लिखे देते हैं। मुलेठी, महुआ आदि आठों दवाओंको ६-६ माशेके हिसाबसे चार तोले लेना। चार तोले दवा को आध सेर जलमें पकाना। जब डेढ़ पाव जल रह जाय, सिर्फ़ आध पाव जले, उतार लेना। पीछे मल-छानकर, दो तोले मिश्री मिलाकर, पत्थर या काठके ढक्कनदार बर्तनमें रख लेना और एक-एक छटाँक जल अन्दाज़से दो-दो घण्टेमें उसी बर्तनसे निकाल-निकालकर रोगीको पिलाना। इन सभी नुसख़ोंमें अधिक जल मत जलाना और सभीको शीतल करके पिलाना। पाँचों नुसख़े आज़माये

हुए हैं। रक्तष्ठीवी सन्निपातपर पर ये कभी फेल नहीं होते हैं। हाँ, कभी-कभी एक नुसख़ा काम नहीं देता, तो दूसरा अवश्य देता है।

नस्य

(६) रोगीको दूबका रस निकालकर नास देनी चाहिये। इससे मुखसे खून आना बन्द हो जाता है।

अनारके फूलोंके रसकी नास देनेसे भी खून बन्द हो जाता है। त्रिफलेका काढ़ा और दूबका रस मिलाकर नास देनेसे भी खून बन्द हो जाता है। खाली त्रिफलेके काढ़ेकी नस्यसे भी फायदा होता है।

शीतलचीनीके चूर्णकी नास देनेसे भी इस सन्निपातमें बड़ा लाभ होता है।

नोट—ये सब नस्य परीक्षित हैं।

प्रलापक सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) तगर, पित्तपापड़ा, अमलताश, नागरमोथा, कुटकी, लामज्जक (न मिलनेपर "ख़स") असगन्ध, ब्राह्मी, दाख, लालचन्दन, दशमूल और शंखाहुली (कौड़िल्ला)—इन २२ दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे बहुत जल्दी प्रलापक सन्निपात आराम हो जाते हैं।

(२) नागरमोथा, नेत्रवाला, दशमूल, सोंठ, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, धवकी छाल और अडूसा—इन १७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे प्रलापक सन्निपात आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) नागरमोथा, नेत्रवाला, पित्तपापड़ा, लालचन्दन और धवकी छाल,—इन पाँचोंके काढ़ेसे भी प्रलापक सन्निपात आराम हो जाता है।

नोट—तीनों नुसख़े परीक्षित हैं। दोषोंको विचारकर जो उचित समझो वही देना। प्रत्येक नुसख़ा दोनों समय पिलाना चाहिये और रोगीको धीरज, अञ्जन, तेज़ नस्यसे तथा अन्धकार सेवन कराकर आरोग्य करना चाहिये। नस्य और अञ्जन पीछे पृष्ठ २४८–२५४ में लिख आये हैं। इस सन्निपातमें किसी तरह आराम न दीखनेपर दागते भी हैं। देखो पृष्ठ २५९।

जिह्वक सन्निपातकी चिकित्सा

काढ़े

(१) कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, गिलोय, ब्राह्मी, बच, गन्धपलाशी, भारङ्गी, अडूसा, जवासा, सुगन्धबाला और तुलसी—इन १३ दवाओं का काढ़ा "जिह्वक" सन्निपातको नाश करता है।

(२) सोंठ, पित्तपापड़ा, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, नागरमोथा, कटेरी, नीम, पटोलपत्र, पोहकरमूल, बालछड़, कूट और देवदारु,—इन १६ दवाओंका काढ़ा जिह्वकको नाश करता है।

(३) बच, कटेरी, जवासा, रास्ना, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, ब्राह्मी, भारङ्गी, चिरायता, अडूसा और कचूर—इनका काढ़ा जिह्वक सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

(४) कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, कुटकी, रास्ना, गिलोय, भारङ्गी की जड़, काकड़ासिंगी, कचूर, धमासा, बाँसा, नागरमोथा, ब्राह्मी, घोड़ावच और चिरायता—इन १५ दवाओंका काढ़ा "जिह्वक सन्निपात"को अवश्य आराम करता है। परीक्षित है।

नोट—इस जिह्वककी चिकित्सा प्रायः रक्तष्ठीवीके समान की जाती है। ऊपरी इलाजोंसे जीभको नर्म करना परमावश्यक है।

अवलेह

(५) बेलकी जड़, कूट, शहद और शंखाहुली (कौड़िल्ला)—इन चारके साथ ब्राह्मीको चाटनेसे वाणीकी शुद्धि होती है; यानी जीभ नर्म हो जाती है। शहद, घी और दाखको पीसकर जीभपर लेप करनेसे भी जीभ नर्म हो जाती है। परीक्षित है।

कवल

(६) चिरायता, अकरकरा, कुलीञ्जन, कचूर, पीपल और सरसों का तेल—इनको एक जगह पीसकर कवल बनाओ। पीछे बिजौरे

आदिका रस मिलाकर मुँहमें रखो। इस कवलसे जिह्वक सन्निपातके दोष उसी तरह नाश होते हैं, जिस तरह रामचन्द्रजीकी स्तुतिसे जन्मजन्मान्तरके पाप नाश होते हैं। इसका नाम "किरातादि कवल" है।

अभिन्यास सन्निपातकी चिकित्सा

क्वाथ

(१) काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हरड़, जीरा, पीपल, चिरायता, पित्तपापड़ा, देवदारु, घोड़ावच, कूट, जवासा, कायफल, सोंठ, नागरमोथा, धनिया, कुटकी, इन्द्रजौ, पाढ़, रेणुका, गजपीपल, चिरचिरा, पीपलामूल, चीता, कड़वी इन्द्रायन, अमलताश, नीम, कचूर, बावचीके बीज, बायबिड़ङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, अजवायन और अजमोद—इन ३३ दवाओंका काढ़ा बनाकर उसमें हींग और अदरखका रस मिलाकर पीनेसे तत्काल भयङ्कर अभिन्यास सन्निपातज्वर, तन्द्रा, प्रमेह, कानकी पीड़ा, तेरह प्रकारके सन्निपात, हिचकी, श्वास, खाँसी और सब तरहके उपद्रव शान्त होते हैं। परीक्षित है।

(२) कटेरी, धमासा, भारंगीकी जड़, कचूर, काकड़ासिंगी और पोहकरमूलका काढ़ा अभिन्यास सन्निपातमें लाभदायक है। इससे कफ और पेटका दर्द भी मिटता है।

(३) त्रिफला, कुटकी और अमलताशके गूदेका काढ़ा "जवाखार" मिलाकर पिलानेसे बड़ा लाभ होता है। यह अभिन्यास प्रभृति सब ज्वरोंका नाशक और रोचक है। परीक्षित है।

नोट—अभिन्यास सन्निपात मृत्युतुल्य है। इस सन्निपातपर यह नुसख़ा परमोत्तम है। ३२ दवाइयोंवाला भारंग्यादि क्वाथ भी इसपर उत्तम योग है। देखो इसी भागका पृष्ठ–२४५ नं० २२।

तेरहों सन्निपातोंपर कुछ हिदायतें

पथ्य

धमासा, गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे सिद्ध किया आहार सब

तरहके सन्निपातोंमें दिया जा सकता है। इससे दोषोंकी शान्ति होकर बल और अग्निकी वृद्धि होती है। देखो पृष्ठ ८० और ७४-८२ तक।

जल

मामूली तौरसे औटाया हुआ जल शीतल करके पिलाना चाहिये; कच्चा जल न पिलाना चाहिए। दोष और ऋतुका ध्यान रखकर जल औटाना अच्छा है। देखो पृष्ठ १०६–११५ तक।

लंघन

लंघन किस सन्निपातज्वर-रोगीको कराने और कितने कराने, कब दवा देनी और कब पथ्य देना—ये सब जाननेके लिये पृष्ठ ८३-१०५ तक देखिये।

नस्य

नस्य किस तरह देनी, कब देनी, कब न देनी—इन बातोंके जानने के लिये पृष्ठ २५२–२५३ देखिये।

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि

काढ़ेके सम्बन्धमें अगर जानना हो, तो पृष्ठ १२५–१२८ तथा १६३ देखिये।

सूचना

अगर इन तेरहों सन्निपातोंमें लिखे हुए अञ्जन, नस्य और निष्ठीवन या कवल वगैरहसे काम न चले (यद्यपि प्रायः सभी परीक्षित योग लिखे हैं), तो पीछेके पृष्ठ २४८ से २६२ तक देखिये। अगर हिचकी, श्वास आदि उपद्रवोंके नाशके लिए और नुसखे देखने हों, तो पुस्तकके अन्तमें देखिये। अगर सन्निपातकी क़िस्म समझमें न आवे, तो ऐसा काढ़ा दीजिये, जो तेरहों प्रकारके सन्निपातोंपर मुफ़ीद हो। देखो पृष्ठ २४०–२४५।



ग्यारहवाँ अध्याय

आगन्तुक ज्वरोंके लक्षण और चिकित्सा

अभिघाताभिचाराभ्यामभिषंगाभिशापतः ।
आगन्तुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेत् ॥

शस्त्र, मुक्का, घूसा, लाठी आदि अथवा तलवार, तीर आदिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होते हैं, उन्हें "अभिघातज" कहते हैं। विपरीत मन्त्र जपने या मूठ वग़ैरह चलानेसे जो ज्वर होते हैं, उन्हें "अभिचारज" कहते हैं। काम, शोक, भय, क्रोध और भूतादिकोंके आवेशसे होनेवाले ज्वरोंको "अभिषंगज" कहते हैं। वृद्ध, गुरु, सिद्ध, महात्मा प्रभृतिके शापसे हुए ज्वरको "अभिशापज" ज्वर कहते हैं। इस तरह चार प्रकारके आगन्तुक ज्वर होते हैं।

नोट—(१) कोई-कोई लिखते हैं—विषैले वृक्षकी पवन लगनेसे अथवा किसी और विषैली वस्तुके संसर्गसे भी अभिषंगजज्वर होता है। जैसे:—शीतला-ज्वर और मलेरिया ज्वर। ऐसे स्थल में विषनाशक चिकित्सासे लाभ होता है।

नोट—(२) दोष आगन्तुक ज्वरको उत्पन्न नहीं करते; किन्तु आगन्तुक ज्वरके पैदा हो जानेके बाद उसके सहायक हो जाते हैं। आगन्तुक ज्वर पहले व्यथासे उत्पन्न होता है, पीछे अपने-अपने दोषोंसे उसका सम्बन्ध हो जाता है। ज्वर होनेके पहले किसी दोषका प्रकाश नहीं होता। जैसे;—काम, शोक और भयसे वायु कुपित होता है। साफ़ तौरसे यह मतलब है कि; आगन्तुक ज्वर स्वयं पैदा होता है। इसके बाद उससे वात, पित्त और कफका मेल होता है। जो ज्वर चोट लगनेसे होता है, उसमें वायु—दूषित रुधिरका आश्रय करके मिल जाता है, यानी चोट लगते ही पहले ज्वर होता है, पीछे वात और रुधिर दूषित हो जाते हैं। काम, शोक, भय और क्रोध आदिसे होनेवाले अभिषंगज ज्वरोंमें वात पित्तकी सहायता होती है। अभिचारज और अभिशापज ज्वरोंमें वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंका अनुबन्ध रहता है अर्थात् ये सन्निपातसे होते हैं।

विष-ज्वर

स्थावर जंगम विष खानेसे जो ज्वर होता है, उससे मुख श्याम वर्ण हो जाता है, दाह होता है, दस्त होते हैं, अन्नमें अरुचि हो जाती है, प्यास लगती है, सूई चुभानेकी-सी पीड़ा और मूर्च्छा—ये लक्षण होते हैं।

औषधिगन्ध ज्वर

तेज़ दवाके सूंघनेसे जो ज्वर होता है, उसमें मूर्च्छा, सिर-दर्द, वमन और छींक—ये लक्षण होते हैं। किसी-किसीने छींकके बजाय हिचकीका चलना लिखा है। असलमें यह ज्वर दुर्गन्धित पदार्थोंकी गन्धसे होता है। इसके लक्षण अँगरेजीके टाइफाइड (Typhoid Fever) फीवरसे मिलते हैं; क्योंकि उसकी और इसकी उत्पत्ति बदबूदार पदार्थोंकी गन्धसे है। डाक्टरीमें लिखा है,—टाइफाइड ज्वर जानवरोंकी सड़ाँदसे पैदा हुए जहरसे होता है, जो नाक या श्वास द्वारा हवामें मिलकर शरीरमें पहुँचता है। उसके लक्षण डाक्टरीमें इस प्रकार लिखे हैं—टाइफाइड ज्वर शुरूमें बहुधा सर्दी लगकर चढ़ता है। चेहरा फीका और सुकड़ा-सा हो जाता है। रातको गरमी, घबराहट और प्यास बढ़ जाती है। नाड़ीकी चाल ६० से १२० तक हो जाती है। तिल्ली और यकृत बढ़ जाते हैं। कभी-कभी लाल चकत्ते हो जाते हैं। रोगी बकवाद करता है। कभी-कभी वमन, हिचकी और खूनके दस्त भी होते हैं। इस ज्वरमें २० से ३० दिन तक भय रहता है। डाक्टरी में पहले "रेंड़ीके तेल" का जुलाब देते हैं। वैद्यकके मतसे "सर्वगन्धका काढ़ा" पिलाना और "अष्टगन्धकी धूनी" देना लाभदायक है।

कामज्वर

किसी सुन्दरीके देखनेसे मनुष्यके मनमें घोर कामकी बाधा हो, उससे हुए ज्वरमें ये लक्षण होते हैं—चित्तकी अस्थिरता, तन्द्रा,

आलस्य, अरुचि, हृदयमें दर्द और शरीर सूखना। "चरक" में लिखा है,—"इस ज्वरमें जिस चीज़ पर ध्यान लग जाय, उसीपर लगा रहे और श्वास अधिक चले।"

भयज्वर

इस ज्वरमें डर बहुत लगता है और रोगी आनतान बकता है।

क्रोधज्वर

क्रोधज्वरमें क्रोध बहुत आता है और शरीर काँपता है।

भूतज्वर

इस ज्वरमें मनुष्य अमानुषी कर्म करता है; यानी ऐसे काम करता है, जिनको मनुष्य नहीं कर सकता। चित्तमें उद्वेग, रोदन और कम्पन ये लक्षण होते हैं। कोई लिखते हैं,—भूतज्वरमें भूत लगनेके-से लक्षण होते हैं। चित्तका उचाट, हँसना, रोना और काँपना प्रभृति लक्षण होते हैं।

अभिचार और अभिघात ज्वर

उल्टे मन्त्र जपने, मूठ चलाने या लकड़ी, तलवार प्रभृतिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होता है, उसमें बेहोशी और प्यास—ये लक्षण होते हैं। "चरक" में लिखा है,—चोट लगनेसे उत्पन्न हुई वायु—रक्तको दूषित करके—सूजन, विवर्णता और वेदनायुक्त ज्वर पैदा करती है।

चिकित्सा-विधि

"सुश्रुत"में लिखा है—श्रम, क्षम तथा अभिघात—चोटसे हुए ज्वरोंमें, उनकी मूल व्याधिका यत्न करो। जैसे;—श्रमज्वरमें श्रम-निवारक, क्षतमें क्षतनाशक और चोट लगनेसे हुए ज्वरमें चोटका उपाय करो। असमयमें बच्चा जननेवाली स्त्रीके ज्वरमें अथवा स्तनोंमें दूध भर जाने और बालक के न पीनेके कारण से हुए ज्वरमें* दोषोंके अनुसार शमन-यत्न

* प्रसूति-ज्वर और दूधज्वरके कारण और लक्षण तथा चिकित्सा इसी भागमें आगे लिखी है।

करो। भूतज्वरको भूतविद्या या ताड़ना प्रभृतिसे शान्त करो। मानस-ज्वरको नसीहत और उपदेशोंसे शान्त करो। थकानसे हुए ज्वरमें तेलकी मालिश कराओ और मांसरस तथा भात खिलाओ। अभि-शापज और अभिचारज ज्वरोंको हवन और जप आदिसे शान्त करो। उत्पात और ग्रहपीड़ाके ज्वरको दान, स्वस्तिवाचन और आतिथ्यसे जीतो। घावसे हुए ज्वरमें घावका इलाज करो। चोटसे हुए ज्वरमें चोट के स्थान पर सेंक आदि करो तथा दोषानुसार कषैली, मधुर और चिकनी क्रिया करो। विषैले गन्ध या विषसे हुए ज्वरमें विषशामक और पित्तशामक क्रियायें करो।

काम, शोक और भय से उत्पन्न हुए ज्वरमें वायु कुपित होती है। क्रोधसे हुए ज्वरमें पित्त कुपित होता है। भूतज्वरमें तीनों दोष कुपित होते हैं, क्रोधज्वरमें पित्त कुपित होता है। "विदेह" कहते हैं,—"क्रोध और शोकसे वातपित्त और रुधिर कोप करते हैं।"

क्रोधज्वरमें पित्तशामक क्रिया करनी चाहिये। कामज्वरमें सुगन्ध-वाला, कमल, चन्दन, खस, दालचीनी और बालछड़का काढ़ा पिलाना चाहिये। कामसे क्रोधज्वरका नाश होता है और क्रोधसे कामज्वरका नाश होता है। काम और क्रोध दोनोंको मनमें रोकनेसे कामज्वर और क्रोधज्वर दोनोंका नाश होता है।

भूतज्वरको भूतविद्या और ताड़ना आदिसे जीतना चाहिये। सह-देईकी जड़को विधिपूर्व्वक कण्ठमें बाँधनेसे एक, दो, तीन या चार दिन में भूतज्वर नाश हो जाता है। हुरहुजकी जड़ कानमें रखनेसे भी भूत-ज्वर नाश हो जाता है। पुष्य संक्रान्तिमें सफेद काकमाचीकी जड़ लाकर, लाल डोरेमें लपेटकर, बाजूपर बाँधनेसे अथवा गले या सिरमें बाँधनेसे भूतज्वर भाग जाता है। भाँगके पेड़को रातमें न्यौतकर, सवेरे उसकी जड़ लाकर सिरमें बाँधनेसे भी भूतज्वर दूर हो जाता है। तुलसीकी आठ पत्तियाँ लेकर, उसके रसमें सोंठ, कालीमिर्च और पीपरका चूर्ण मिलाकर नाकमें सुँघानेसे भी भूतज्वर भाग जाता है।

शोधी हुई गन्धक और आमलोंका चूर्ण "घी" में मिलाकर देनेसे भी भूतज्वर नाश हो जाता है। औषधिकी गन्ध या विषसे हुए ज्वरमें विष और पित्तको शमन करनेवाला नीचे लिखा "सर्वगन्धका काढ़ा" पिलाना चाहिये—तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कपूर, शीतलचीनी, अगर, केशर और लौंग—६ सर्वगन्ध हैं। इनका काढ़ा पिलानेसे औषधिकी गन्ध और विषसे हुआ ज्वर नाश हो जाता है। औषधिगन्धज्वरमें बेहोशी होती है। बेहोशीके लिये हितपदार्थ सेवन कराने चाहियें।

नोट—औषधिगन्ध-ज्वरके लक्षण और कारण अँगरेज़ी टाइफाइड ज्वरसे मिलते हैं। इसमें अष्टगन्धकी धूनी देना हित है। टाइफाइड ज्वरके लक्षण आगे विस्तारसे लिखे हैं।

मार्ग चलनेसे हुए ज्वरमें तेलकी मालिश कराना और दिनमें सुलाना अच्छा है। शोरवा या दूध पीनेको देना चाहिये।

मारने, बाँधने, बहुत मिहनत करने और पेड़से गिरनेसे हुए ज्वरमें भी शोरवा और दूध हित है। साथ ही मूल व्याधिका उपाय करना भी ज़रूरी है। चोटसे हुए ज्वरमें गरमी रहित क्रिया करनी चाहिये। कषैले, मीठे और चिकने पदार्थ देने चाहियें तथा दोषानुसार क्रिया करनी चाहिये। घी पिलाने, घी मलने, खून निकालने और मांसरस तथा भात खिलानेसे चोटका ज्वर नाश होता है।

आगन्तुक ज्वरोंमें लङ्घन नहीं कराने चाहियें। "वाग्भट्ट" ने लिखा है,—"शुद्ध वातज्वर, क्षयज्वर, आगन्तुकज्वर और जीर्णज्वरमें लङ्घन नहीं कराने चाहिये।" और भी लिखा है,—कामसे, शोकसे, भयसे, चिन्तासे, चोटसे, भूतावेशसे, श्रमसे, क्रोधसे और लङ्घनोंसे उत्पन्न हुए ज्वरोंमें उपवास नहीं कराने चाहियें।

आगन्तुकज्वर, शुद्ध वातज्वर, क्षयज्वर, जीर्णज्वर, कामज्वर, शोकज्वर, क्रोधज्वर और भयज्वर प्रभृतिमें मांसोदन (मांसरस और भात) देना हित है।

बारहवाँ अध्याय

विषमज्वरोंकी चिकित्सा

विषमज्वर कैसे होता है ?

दोषोऽल्पोहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः।
धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ॥

ज्वरमुक्त मनुष्यके बाकी रहे हुए थोड़ेसे दोष भी अहितकारक आहार-विहार करनेसे, सम्पूर्ण होकर, रस-रक्त आदि किसी धातुको दूषित करके, पीछेसे, विषमज्वर पैदा करते हैं।

खुलासा—मान लो, किसीको पहले वातज्वर या पित्तज्वर आदिमें से कोई ज्वर आया। उसने औषधि सेवन की। ऐसा करनेसे ज़ाहिरा बुखार चला गया; परन्तु कुपथ्य करनेसे अथवा समूल नाश हुए बिना दवा छोड़ देनेसे कुछ दोष रह गये। रोगीको ऊपरसे मालूम हुआ, ज्वर चला गया। रोगीने अपने तईं ज्वरमुक्त समझकर, इच्छानुसार अहितकारी आहार-विहार सेवन करना आरम्भ कर दिया। कुपथ्यके कारणसे थोड़ेसे दोष या दोषोंने अपना पूरा रूप धारण कर लिया; यानी वे बलवान् हो गये। उन्होंने रस रक्त आदि किसी धातुको दूषित करके ज्वर कर दिया; यानी फिर ज्वर चढ़ आया। ऐसे ज्वरको "विषम ज्वर" कहते हैं।

ऐसे ज्वरोंमें पहले ज्वर छूटा हुआ जान पड़ता है; पर वास्तवमें थोड़े बहुत दोष रह जाते हैं। उनसे शरीरमें ज़रा-ज़रा हरारत रहती है। मनुष्य उस हरारतका ख़याल नहीं रखता; मनमें आता है सो खाता-पीता है। उन बाक़ी रहे हुए दोषोंको जब कुपितकारक आहार-

विहार मिल जाते हैं, तब वह हल्की-हल्की हरारत तेज़ हो जाती है; यानी जोरसे बुखार चढ़ने लगता है; किन्तु इस लौटकर आये हुए ज्वरका रूप विषम होता है। कभी बुखार किसी समय चढ़ता है और कभी किसी समय; कोई नियम नहीं रहता। इसमें सर्दी और गरमी दोनों रहती है। बुख़ार कभी तेज़ हो जाता है और कभी कम; इसी लिये इसे "विषमज्वर" कहते हैं।

किसीने लिखा है कि,—मनुष्यको पहले किसी तरहका ज्वर आवे और वह दवासे छूट जाय। इसके बाद २१ दिन बीतनेपर या जीर्ण अवस्था होनेपर अपथ्य सेवन करनेसे, वातादिक दोष फिर कुपित होकर, रस-रक्त आदि धातुओंमेंसे किसीमें प्राप्त होकर और उनको दूपित करके ज्वर उत्पन्न कर दें; यानी इकतरा, तिजारी और चौथेया प्रभृति पैदा कर दें, तो उसे "विषमज्वर" कहते हैं। अगर दोष कमज़ोर होते हैं, तो कालान्तरमें ज्वर करते हैं और अगर दोष जोरावर होते हैं तो रोज़ ज्वर करते हैं।

"भालुकी आचार्य" लिखते हैं—"अनियत समयमें—यानी कभी किसी समय और कभी किसी समय, सर्दी गरमी लगकर, कम और जियादा जोरके साथ जो ज्वर आता है, उसे "विषमज्वर" कहते हैं।" कोई कहते हैं,—जो ज्वर चला जाय और फिर लौटकर आ जाय, उसे "विषमज्वर" कहते हैं।

नोट—किसीने लिखा है, विषमज्वर आरम्भसे भी होता है, यानी बिना किसी ज्वरके हुए पहलेसे ही विषमज्वर होता है। जो विषमज्वर आरम्भसे ही होता है, वह मनुष्यको मार डालता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—मनुष्यको जब ज्वर छोड़ देता है, तब वह शीघ्र ही मिथ्या आहार-विहार करता है; तब कमज़ोर आदमीका ज़रा-सा भी रहा हुआ दोष बढ़ कर और वायुसे प्रेरित होकर, कफके पाँचों स्थानों—आमाशय, हृदय, कंठ, सिर और सन्धियों—में घुसकर सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक नामके विषमज्वर

पैदा कर देता है; यानी आमाशयमें जाकर सततज्वर, हृदयमें जाकर अन्येद्युः, कंठमें जाकर तृतीयक, सिरमें जाकर चातुर्थिक और सन्धियों में जाकर प्रलेपक ज्वर करता है। जब दोष अपने स्थानों—सिर, कंठ आदिसे आमाशयमें पहुँचते हैं, तब ज्वर जोरोंसे चढ़ता है। आमाशय से दोष जितनी दूर होता है, उतने ही समयका अन्तर ज्वरके चढ़नेमें पड़ता है। दोष ज़ोरदार होता है, तो ज्वर ज़ोरसे चढ़ता है; दोष कमज़ोर होता है, तो ज्वर भी हलका चढ़ता है।

आमाशयमें रहनेवाले दोषको अधिक राह तय नहीं करनी होती; इसलिये वह दो बार ज़ोर करता है, इसीसे दिन-रातमें दो बार चढ़ने वाला "सततज्वर" होता है। हृदयमें ठहरा हुआ दोष चलकर एक दिन में आमाशय तक पहुँचता है, इसीसे रोज़ आनेवाला 'अन्येद्युः' ज्वर होता है। कंठवाला दोष दो दिन में आमाशयमें पहुँचता है, इसीसे तीसरे दिन चढ़नेवाला "तृतीयक" ज्वर या "तिजारी" होता है। सिरमें गया हुआ दोष तीन दिनमें आमाशय तक पहुँचता है इसीसे चौथे दिन आनेवाला "चातुर्थिक" या "चौथैया" ज्वर होता है। सारे शरीरकी सन्धियोंमें प्राप्त हुआ दोष, सदा, धीरे-धीरे आमाशयकी ओर जाता रहता है; इसीसे मन्दा-मन्दा बना रहनेवाला "प्रलेपक ज्वर" होता है। जब दूषित दोषके परमाणु आमाशयमें पहुँचते हैं; तब वहाँ वे गरम भाफ के रूपमें बदलकर, रस और पसीना बहानेवाली शिराओं द्वारा, चमड़ेकी ओर चलते हैं। उस समय ज्वर चढ़ता है। जब तक दूषित दोषके परमाणु आमाशय में नहीं पहुँचते, अपने सजातीय दूषित परमाणुओंको अपने स्थान में जमा करते रहते हैं, तब तक ज्वर नहीं होता।

इन्हीं ऊपर कहे हुए कफ-स्थानोंमें बीजरूपसे रहा हुआ दोष उपरोक्त ज्वरोंके "विपर्य्यय ज्वर" भी उत्पन्न करता है। जब कफ-स्थानोंमें दूषित दोषका बीज कम होता है, तब वह अपने सजातीय दूषित परमाणुओंको कम जमा करता है; इसलिये थोड़ी देर ठहरनेवाले सतत,

अन्येद्युः, तृतीयक प्रभृति ज्वर करता है; किन्तु जब कफ स्थानोंमें दूषित दोषका बीज ज़ियादा और जोरावर होता है, तब वह अपने सजातीय दूषित परमाणु ज़ियादा इकट्ठे करता है और बहुत समय तक रहनेवाले और थोड़ी देरको पीछा छोड़नेवाले विपर्य्यय विषमज्वर पैदा करता है। मामूली चौथैया चौथे दिन आता है, तीन दिन रोगी आराम करता है। किन्तु उसका विपर्य्यय—उल्टा केवल चौथा दिन छोड़कर तीन दिन बना रहता है; केवल एक दिन रोगी आराम पाता है। तृतीयक या तिजारीका विपर्यय तीसरे दिन थोड़ी देरको उतर जाता है। अन्येद्युः का विपर्य्यय ज़रा-सी देर छोड़कर हर समय बना रहता है। सततका विपर्य्यय दिन-रातमें दो बार ज़रा-ज़रा देरको छोड़कर हर समय बना रहता है। किसीने लिखा है,—चौथैयाका विपर्य्यय—उल्टा—विषम-ज्वर वह है, जो पहला और अन्तका दिन छोड़कर, बीचके दो दिन आवे। तिजारीका उल्टा वह है, जो बीचके एक दिन ज्वर आवे; आदि अन्तके दिन न आवे। इकतराका उल्टा वह है, जो एक समय छोड़कर रात-दिन बना रहे। इन ज्वरोंके सम्बन्धमें बहुत मतभेद है।

कफके स्थान-विभागके अनुसार, दोष अनुक्रमसे सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक ज्वर करते हैं। दोष एक दिन-रात में एक स्थानसे दूसरे स्थानमे पहुँचता है; तो अपने अनुक्रमसे आमाशयमें पहुँचकर विषमज्वर करता है। आमाशय, हृदय, कंठ, मस्तक और सन्धि—ये पाँच कफके स्थान हैं। इनमें ठहरे हुए दोष अनुक्रमसे सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक ज्वर करते हैं।

आमाशयमें रहनेवाला दोष सतत ज्वर करता है, क्योंकि एक दिन-रातमें उस दोषका दो बार कोप होता है। हृदयमें रहनेवाला दोष आमाशयमें प्राप्त होकर अन्येद्युः करता है। कण्ठमें ठहरा हुआ दोष १ दिन-रातमें हृदयमें पहुँचता है, वहाँसे दूसरे दिन-रातमें आमा-शय में पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर, अपने कोपके समयमें ही, तृती-

यक ज्वर करता है। इसी तरह मस्तकमें रहनेवाला दोप एक दिन-रातमें मस्तकसे कण्ठ तक आता है; दूसरे दिन-रातमें कण्ठसे हृदय तक पहुँचता है और तीसरे दिन-रातमें हृदयसे आमाशय तक पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर, अपने कोपके समय, चातुर्थिक ज्वर करता है। ये दोप यद्यपि आमाशयमें १ दिन-रात रहते हैं; तथापि अपने कोपके समयोंमें दो वार ज्वर नहीं करते—एक ही वार करते हैं, यह उनका स्वभाव है। एक वात और भी है कि, दोपोंको मस्तकसे आमाशय तक आनेमें ३ दिन, कण्ठसे आमाशय तक आनेमें २ दिन और हृदयसे आमाशय तक आनेमें १ दिन लगता है; किन्तु अपने स्थान तक वापिस जानेमें इतना समय नहीं लगता। वजह यह है कि, ज्वर चढ़नेके दिन दोपोंमें बड़ा ज़ोर रहता है, इसलिये उस दिन वे शीघ्र ही अपने स्थान पर पहुँच जाते हैं। अगर ऐसा न होता, तो चौथैया ज्वर होनेके वाद, ३ दिनमें दोप मस्तकमें पहुँचता और ३ ही दिनमें आता, तो ६ दिन लग जाते। ६ दिन वीचमें देकर चौथैया ज्वर चढ़ता। प्रलेपकके सम्बन्धमें लिख आये हैं कि, सन्धियोंमें ठहरा हुआ दोप प्रलेपक ज्वर करता है; सन्धियाँ आमाशयमें हैं, इसलिये उनमें ठहरे हुए दोप सदा "प्रलेपक ज्वर" करते हैं।

विपमज्वरके सामान्य लक्षण

जो ज्वर अनियमित समयमें यानी वेसमय होता है, जो सर्दी लगकर या गरमी लगकर चढ़ता है और जिसका वेग भी विपम होता है, यानी कभी जियादा ज़ोरसे चढ़ता है और कभी कम ज़ोरसे चढ़ता है, उसे "विपमज्वर" कहते हैं।

जिस तरह वातज्वर ७ दिन तक, पित्तज्वर १० दिन तक और कफ ज्वर १२ दिन तक रहता है और अगर दोपोंका ज़ोर ज़ियादा होता है, तो वातज्वर १४ दिन तक, पित्तज्वर २० दिन तक रहता है और कफ ज्वर २४ दिन रहता है; उस तरह विपमज्वर नियमित काल तक नहीं रहता। इस ज्वरमें गरमी और सर्दी भी नियमित समय तक

नहीं रहतीं और इस ज्वरका वेग भी विषम होता है—कभी बहुत तेज़ और कभी शान्त होता है। "हारीत" ने कहा है,—"देहकी धातुओंमें ज्वर घर कर ले, तो विषमज्वर समझना चाहिये।"

विषमज्वरोंका धातुओंसे सम्बन्ध

जब कुपित हुए दोष मनुष्योंकी रस धातुमें प्राप्त होते हैं, तब "सन्तत" ज्वर करते हैं; जब रक्तमें स्थित होते हैं, तब "सतत" ज्वर करते हैं; जब मांसमें स्थित होते हैं, "अन्येद्यु:" ज्वर करते हैं; जब मेद में स्थित होते हैं, "तृतीयक" ज्वर करते हैं;जब हड्डी और मज्जामें स्थित होते हैं, तब घोर कालके समान प्राणनाशक रोगोंके समूह "चातुर्थिक" ज्वरको करते हैं।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है,—रस और रक्तमें ठहरा हुआ दोष "सतत" ज्वर करता है।

विषमज्वरोंके भेद

विषमज्वरोंके पाँच भेद हैं:—

(१) सन्ततज्वर, (२) सतत ज्वर, (३) अन्येद्यु: ज्वर, (४) तृतीयक ज्वर, (५) चातुर्थिक ज्वर।

सन्तत ज्वरके लक्षण

जो ज्वर ७ दिन, १० दिन अथवा १२ दिन, निरन्तर एक-सा बना रहता है—उतरता नहीं, उसे "सन्तत ज्वर" कहते हैं। यह ज्वर त्रिदोषसे होता है। वातप्रधान सन्ततज्वर सात दिन, पित्तप्रधान सन्तत ज्वर दस दिन और कफप्रधान सन्तत ज्वर बारह दिन तक रहता है। इस ज्वरमें बारह चीज़ोंका साथ होता है,—३ दोष + ७ धातु + १ मल + १ मूत्र = १२; यानी वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र इन सात धातुओं तथा मल और मूत्रको ग्रसकर "सन्तत ज्वर" करते हैं।

ही रहता है, इसलिये यह विपमज्वर नहीं है। "खरनाद" पाँच विषम-ज्वरोंमेंसे सततको छोड़कर, शेप चारको विषमज्वर मानते हैं। "सुश्रुत" ने भी सन्तत ज्वरको विपमज्वरोंसे अलग लिखा है। क्योंकि "भावमिश्र" ने लिखा है,—"जो ज्वर छोड़-छोड़कर नियत समयपर आवे, उसे विपमज्वर कहते हैं।" "चरक" ऋपि कहते हैं,—"सन्तत-ज्वर बारहवें दिन अच्छी तरहसे उतरकर फिर चढ़ आता है और बहुत समय तक रहता है, इसलिये इसे विपमज्वर कह सकते हैं।"

नोट—इस ज्वरको अङ्गरेज़ीमें रेमिटेण्ट फीवर कहते हैं। "चरक" ने इसके सम्बन्धमें लिखा है कि, यह ज्वर १२, १० या ७ दिन तक रहता है। या तो यह शीघ्र ही उतर जाता है या रोगीको मार डालता है। अष्टाङ्गहृदय—"वाग्भट्ट" के निदान-स्थानमें लिखा है—

वातपित्तकफैः सप्तदश द्वादश वासरान्।
प्रायोऽनुयाति मर्यादा मोक्षाय च वधाय च॥
इत्यग्निवेशस्य मतं हारीतस्य पुनः स्मृतिः॥
द्विगुणा सप्तमी यावन्नवम्येकादशी तथा।
एपा त्रिदोप मर्यादा मोक्षाय च वधाय च॥

वातपित्त और कफके कारणसे सन्ततज्वर ७, १० या १२ दिन तक रहता है। इस अवधिमें रोगीको छोड़ जाता है या मार डालता है। यह "अग्निवेश" का मत है। "हारीत" मुनिको ऐसी याद है कि सन्ततज्वर १४, १८ या २२ दिनों तक रहता है। इस बीचमें छोड़ जाता है या मार डालता है। यही त्रिदोपकी मर्यादा है।

यह दुःसह ज्वर है। बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें देता है—शीघ्रकारी होनेकी वजहसे शीघ्र उतर जाता है या मार डालता है। धातुओं और मलोंकी शुद्धि होनेसे यह सात दिनमें नष्ट हो जाता है और अशुद्धि रहनेसे मार डालता है। कोई-कोई सन्ततज्वर बारह दिन बराबर रहकर, गुप्त रूपसे बहुत समय तक बना रहता है। यह ज्वर कष्टसाध्य है। चिकित्सक इन बातोंको विचारकर इसकी चिकित्सा करें। प्रायः लंघन द्वारा इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। यह ज्वर त्रिदोपज होता है, पर जिस दोपकी प्रधानता होती है, उसी दोपका उल्लेख होता है।

डाक्टरीसे सन्तत ज्वरके लक्षण

इस ज्वरके लक्षण अङ्गरेजीके रेमिटेण्ट फीवरसे मिलते हैं। रेमिटेण्ट फीवर उसे कहते हैं, जो उतरता नहीं। यह बुख़ार जब चढ़ता है, तब ज़रा सी सगसगी-सी लगती है, रोएँ खड़े हो जाते हैं। इसमें ज़ियादा गरमी या सर्दी नहीं लगती। यह कई दिनों तक बराबर बना रहता है। इसमें जीभ मैली हो जाती है, कभी दस्त लग जाते हैं, कभी क़य होती है, बेहोशी हो जाती है, कभी-कभी हाथ-पाँव ऐंठने और शरीर अकड़ने लगता है और कभी-कभी रोगी बकवाद करने लगता है।

इसमें भी मलेरिया होता है और वारीसे आनेवाले ज्वरोंकी अपेक्षा अधिक होता है। इसीसे यह बुख़ार बहुत दिनों तक शरीरमें रहता है और कठिनाईसे आराम होता है। इसके इलाजमें अनुभवी डाक्टर या वैद्य हकीमकी ज़रूरत है।

हिकमतसे सन्ततज्वरके लक्षण

इस बुख़ारको दायमी तप कहते हैं। जब यह आता है, तब थोड़ी-थोड़ी सर्दी लगती है, जी मिचलाता है, क़यमें पित्त निकलता है, सिर और कमरमें दर्द होता है, जीभ सफ़ेद हो जाती है, चमड़ा गर्म और खुश्क हो जाता है। इसमें १०६ डिग्री तक ताप हो जाता है। ६ घण्टे ज़ोर करके ज्वर धीमा हो जाता है और पसीने आकर फिर चढ़ने लगता है। यह दस-बारह दिन तक रहता है। मस्तिष्क और हृदयमें क़भी-क़भी वरम या सूजन हो जाती है। किसी-किसीको मूर्च्छा भी होती है। इसमें सन्निपात होनेका भय रहता है और किसी-किसीको हो भी जाता है।

सतत ज्वरके लक्षण

जो ज्वर दिन-रातमें दो बार आता है, उसे "सततज्वर" कहते हैं। मतलब यह कि, सतत ज्वर दिन-रातमें दो बार चढ़ता और दो बार

उतरता है। "ईशानदेव" कहते हैं, यह ज्वर दिनमें दो वार या रातमें दो वार अथवा दिनमें एक वार और रातको एक वार आता है। अमुक समय ज्वर आवेगा, यह नियम नहीं है।

नोट—यह ज्वर भी प्रायः त्रिदोषज होता है। अङ्गरेजीमें इसे "डबल क्यूटीडन" कहते हैं। दिन-रातमें प्रत्येक दोषके कोप करनेका समय होता है, इसीलिये यह दिन-रातमें दो वार आता है। "वाग्भट्ट" ने लिखा है,—"दिनके अन्तमें वायु, मध्यमें पित्त और आदिमें कफ प्रबल होता है, इसी तरह रातके अन्तमें वायु, मध्यमें पित्त और आदिमें कफ प्रबल होता है।" "चरक" में लिखा है,—"दोष प्रायः रक्त धातुके आश्रयसे सततज्वर करते हैं। यह सतत-ज्वर काल, प्रकृति और दूष्यके बलसे दिन-रातमें दो वार आता है।"

अन्येद्युः ज्वर

यह ज्वर दिन-रातमें एक वार रोज़ आता है। मांसमें ठहरा हुआ दोष इसे पैदा करता है। दोष दोषवहा नाड़ियोंको रोककर इसे उत्पन्न करता है। यह आता रोज़ है; किन्तु अपने चढ़नेके पहले समयको छोड़कर दूसरे समय में आता है; क्योंकि पहले समयमें दोषकी स्थिति हृदयमें होती है।

नोट—"चरक" ने सभी विषमज्वरोंमें प्रायः त्रिदोषका होना लिखा है, किन्तु "सुश्रुत" ने अन्येद्युः और सततज्वरका होना "पित्त" से लिखा है। "हारीत" ने लिखा है:—जिसमें पहले जाड़ा लगे और पीछे गरमी आवे, वह साध्य होता है—वह झट आराम हो जाता है। जो भयंकर रूपसे होता है और जिसमें पीछे दाह होता है, वह शीघ्र नहीं जाता—वह धातुओंको क्षय करता है।

तृतीयक ज्वर

अगर तृतीयक ज्वरमें कफ-पित्तका ज़ोर होता है, तो वह त्रिक्-स्थान—कमरमें दर्द करके चढ़ता है। अगर वात-कफका ज़ोर होता है, तो वह पीठमें दर्द करके चढ़ता है; अगर वात-पित्तका ज़ोर होता है, तो वह सिरमें पीड़ा करके चढ़ता है। इसको इस तरह भी समझिये,—अगर कमरके पीछे जहाँ तीन हड्डी हैं, वहाँ दर्द होकर यह बुखार चढ़े, तो इसे कफ-पित्तसे समझो अथवा कफपित्तोल्वण समझो।

अगर पीठमें दर्द या जकड़न होकर चढ़े, तो इसे वात-कफसे समझो अथवा वातकफोल्बण समझो। अगर सिरमें दर्द होकर बुखार फैल जाय, तो इसे वातपित्तसे समझो अथवा वातपित्तोल्बण समझो। जब तिजारीमें वातपित्त प्रधान होते हैं, तब पहले माथेमें दर्द होता है, और पीछे ज्वर चढ़ आता है। इसी तरह जब वातकफ प्रधान होते हैं, तब पहले पीठमें दर्द होता है या पीठ जकड़ जाती है; इसके बाद ज्वर चढ़ आता है। इसी तरह जब कफपित्त प्रधान होते हैं, तब त्रिकस्थान—जहाँ तीन हाड़ पीठके नीचे मिले हैं—में दर्द या जकड़न-सी होती है और ज्वर चढ़ आता है। इस तरह; एक-तृतीयक ज्वर तीन तरहका होता है। उसमें किन-किन दोषोंकी प्रधानता है, यह जान लेनेसे इलाजमें सुभीता होता है।

त्रिक् वातका स्थान है। कफपित्त पराये स्थानमें यानी बादीके स्थानमें जानेसे कमजोर हो जाते हैं; इसलिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं। अगर कफपित्त अपने स्थानमें रहते हैं, तो सन्ततज्वर करते हैं। इसी तरह मस्तक कफका स्थान है और पीठ पित्तका स्थान है। वातपित्त कफके स्थान—मस्तक—में पहुँचकर और वातकफ पित्तके स्थान—पीठमें—पहुँचकर कमजोर हो जाते हैं और इसीलिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं।

शङ्का—त्रिक् वातका स्थान है, वहाँ कफपित्त कैसे जा सकते हैं ?

समाधान—यह स्थानका नियम प्रकृतिस्थ दोषोंका है; कुपित दोषोंका नहीं। कुपित दोष चाहे जहाँ जा सकते हैं।

चातुर्थिक ज्वर

चौथैया ज्वर चौथे दिन आता है; यानी बीचके दो दिन छोड़कर आता है। दोष अस्थि या मज्जामें स्थित होकर इस ज्वरको करता है। चौथैया दो तरहका होता है,—(१) कफाधिक्य (२) वाताधिक्य। कफप्रधान चौथैया दोनों जाँघों (पिण्डरियों) में पीड़ा करके चढ़ता है और वातप्रधान चौथैया सिरमें दर्द करके चढ़ता है। अथवा यों

समझिये,—जिसमें कफकी अधिकता होती है, वह पहले जाँघोंमें व्याप्त होकर, पीछे सारी देहमें व्याप्त होता है और जिसमें वातकी अधिकता होती है, वह पहले मस्तकमें व्याप्त होकर सारी देहमें व्याप्त होता है।

नोट—"चरक" के मतसे पाँचों विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं। "हारीत" कहते हैं,—चौथैया ज्वरमें पित्त प्रधान होता है।" "सुश्रुत" में कहा है, कोई-कोई वैद्य कहते हैं, कि तिजारी और चौथैया वायुकी प्रधानतासे होते हैं।

प्रलेपक ज्वर

तथा प्रलेपको ज्ञेयः शोषिणां प्राणनाशनः।
दुश्चिकित्स्यतमो मन्दः सुकष्टो धातुशोषकृत्॥

प्रलेपक ज्वर मन्दा-मन्दा बना ही रहता है। यह कष्टसाध्य और कठिनतासे चिकित्सा-योग्य है। यह सब धातुओंको सुखाता है और जिनकी धातुएँ सूख जाती हैं, उनके प्राण नाश करता है। "माधव-निदान" में लिखा है,—"जिस ज्वरमें पसीनोंसे और सूरजकी धूपसे अथवा शरीरके भारीपनसे शरीरकी चमड़ी लिप्त-सी मालूम हो, इसी कारणसे मन्दा-मन्दा ज्वर हो, जाड़ा लगे, वह ज्वर "प्रलेपक" है। यह ज्वर कफपित्तसे होता है। कोई-कोई इसे त्रिदोषजनित कहते हैं। यह ज्वर राजयक्ष्मा रोगमें होता है। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र" में लिखा है,—"प्रलेपक और वातबलासक ज्वर कफकी प्रधानतासे होते हैं।"

नोट—यद्यपि सभी विषमज्वर शोषवाले मनुष्योंको अत्यन्त दुःख देते हैं, किन्तु प्रलेपक तो उनके प्राणनाश ही कर डालता है, इसीसे "सुश्रुत" ने प्रलेपकको विषमज्वर माना है।

नोट—जिसको यूनानी हकीम तपेदिक़ कहते हैं, उससे इसके लक्षण मिलते हैं। तपेदिक़में थोड़ी-सी सर्दी लगकर ज्वर चढ़ता है, हथेली और तलवे ज़ियादा गरम रहते हैं, ज्वर धीमा-धीमा बना रहता है, भूख बहुत कम लगती है, जीभ मैली रहती है। दिनमें कभी पसीने बहुत आते हैं, कभी दस्त बहुत लग जाते हैं।

जब किसी अङ्गमें पीप पैदा होती है, तब तपेदिक होता है। पर कहते हैं कि कभी-कभी बिना पीप पैदा हुए भी तपेदिक हो जाती है। जहाँ पीप होती है, वहाँ कुलमुलाहट-सी होती है तथा थकान और दर्द भी रहता है। कमज़ोरी,

क्षीणता, क्षयी, धातुक्षीणता, प्रमेह, मन्दाग्नि और अधिक मैथुन आदि इसके कारण हैं।

डाक्टरी मतसे धीरे-धीरे बल बढ़ाना और ताक़तवर दवा जैसे,--कुनैन, या कारबोनेट आव् आयर्न देना अच्छा समझते हैं। दूध देना भी अच्छा समझा जाता है। वैद्यकमें ऐसे ज्वरमें "वर्द्धमान पिप्पली" या "सितोपलादि चूर्ण" देना हितकर है। दूधकी मनाही वैद्यकमें भी नहीं है, क्योंकि यह पुराना हो जाता है और पुराने ज्वरमें दूध देना परम हितकर है।

वातबलासक ज्वरके लक्षण

नित्यं मंदज्वरो रुक्षः शूनः कृच्छ्रेण सिद्ध्यति।
स्तब्धांगः श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी॥

रोज़ मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहे, शरीर रूखा (सफेद) हो जाय, सूजन आ जाय, शरीर रुका हुआ-सा रहे और कफकी अधिकता हो— ये लक्षण "वातबलासक" ज्वरके हैं। यह कष्टसाध्य है।

नरसिंहज्वर या अर्द्धनारीश्वर

आहारसे उत्पन्न हुआ रस दुष्ट होता है, तब शरीरमें कफ और पित्त दुष्ट होकर रहते हैं। इस कारण आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है; यानी जिस तरह अर्द्धनारीश्वरके शरीरका एक भाग स्त्रीका और एक भाग पुरुषका होता है; उसी तरह इस रसज्वरवाले का आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है। इसलिये इस ज्वर को "अर्द्धनारीश्वर" कहते हैं। जिस तरह नरसिंहके शरीरका एक भाग मनुष्यका और एक भाग सिंहका होता है; उसी तरह इस ज्वर-वाले का एक भाग शीतल और एक भाग गरम रहता है; इसीसे इसे "नरसिंह ज्वर" भी कहते हैं।

जब दूपित पित्त कोठेमें रहता है और दूषित कफ हाथ-पैरोंमें रहता है; तब शरीर गरम रहता है और हाथ-पाँव शीतल रहते हैं। जब दूषित कफ कोठेमें रहता है और दूषित पित्त हाथ-पाँवोंमें रहता है, तब शरीर शीतल और हाथ-पाँव गरम रहते हैं।

रात्रिज्वरके लक्षण

जिस मनुष्यके वात और कफ समान होते हैं तथा पित्त क्षीण होता है, उसको विशेषकरके रातमें ज्वर होता है। जिसके वात पित्त समान होते हैं और कफ क्षीण होता है, उसको विशेषकर दिनमें ज्वर होता है।

विषमज्वरोंमें सर्दी और गरमीका कारण

"सुश्रुत" में लिखा है,—जब चमड़ेमें कफ और वायु स्थित होते हैं, तब ज्वरके आरम्भमें जाड़ा लगता है; यानी जाड़ा लगकर बुखार चढ़ता है, लेकिन जब कफ और वायुका वेग शान्त हो जाता है, तब पित्त बलवान होकर दाह—गरमी—पैदा करता है। इस तरह बुखार में पहले ठण्ड लगती है और पीछे गरमी लगती है। उसी तरह चमड़े में रहनेवाला पित्त पहले अत्यन्त दाह—गरमी करता है; पीछे जब पित्तका वेग शान्त हो जाता है, तब वात और कफ बलवान होकर हाथ-पाँव आदिमें शीत करते हैं।

खुलासा यह है कि, जब वायु कफके साथ मिलकर रगोंमें बहती है, तब ज्वरके आदिमें जाड़ा लगता है। जब पीछे वायु कफसे अलग हो जाती है, तब कफ शान्त हो जाता है; उस समय वायु पित्तके साथ रगोंमें बहने लगती है; तब पित्तके कारणसे दाह पैदा हो जाता है; इसीसे जाड़ेके बुखारके अन्तमें प्यास बहुत लगती है। इसी तरह जब वायु पित्तके साथ रगोंमें बहती है, तब ज्वरके आदिमें दाह होता है; और पीछे पित्तके शान्त होनेपर, वायु कफके साथ नसोंमें बहने लगती है, तब कफ अपने स्वभावज गुणसे शीत पैदा करता है।

शीतपूर्वक और दाहपूर्वक दोनों प्रकारके ज्वर संसर्गज होते हैं यानी त्रिदोष या सन्निपातसे होते हैं। कफ, वायु या पित्तका जैसा संसर्ग होता है वैसे ही होते हैं। जिस ज्वरके आदिमें दाह होता है, वह कष्टसाध्य होता है और जिसके आदिमें जाड़ा लगता है, वह सुखसाध्य होता है।

जिस तरह वायुके झकोरोंसे समुद्रमें झालें उठती हैं और फैल जाती हैं, उसी तरह वायुके कारणसे दोष ज्वरकी करते हैं। जिस तरह समुद्रके उथल-पुथल होनेसे जल किनारोंके ऊपर तक छा जाता है और उभारके उतर जानेपर वह जल उसीमें फिर लीन हो जाता है; उसी तरह दोषोंके वेगके समय ज्वर प्रचण्ड हो जाता है और दोषोंके शान्त होते ही ज्वर भी शान्त हो जाता है। ज्वर आदि सब रोगोंका असल कारण "वायु" ही है; यानी वायुसे ही ज्वर आदि सब रोग होते हैं।

विषमज्वर शरीरमें हर समय रहते हैं

स चापि विषमो देहं न कदाचिद्विमुञ्चति ।
ग्लानिगौरवकार्श्येभ्यः स यस्मान्न प्रमुच्यते ॥
वेगेतु समतिक्रान्ते गतोयमिति लक्ष्यते ।
धात्वंतरस्थो लीनत्वान्न सौक्ष्म्यादुपलभ्यते ।
अल्पदोषेन्धनः क्षीणः क्षीणेन्धन इवानलः ॥

मामूली तौर पर देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि, ज्वर उतर गया, अब अपने समयपर आवेगा; पर असलमें विषमज्वर शरीरको नहीं छोड़ता। जब हम उसे शरीरसे गया हुआ समझते हैं, तब भी वह शरीरमें होता है। "सुश्रुत" में लिखा है, विषमज्वर कभी शरीरको नहीं छोड़ता, कुछ न कुछ शरीरमें बना ही रहता है, क्योंकि विषम-ज्वरवाला ग्लानि, भारीपन और कृशतासे शून्य नहीं रहता। हाँ, ज्वर का वेग शान्त हो जानेपर ज्वर चला गया, ऐसा मालूम होता है, परन्तु वह जाता नहीं। वह और धातुओंमें गुप्त रूपसे छिपकर रह जाता है। अत्यन्त सूक्ष्म होनेकी वजहसे मालूम नहीं होता। मालूम भले ही न हो, पर उसके अंशांश शरीरमें बने ही रहते हैं। थोड़े दोषों के कारण ज्वर उसी तरह दबा रहता है, जिस तरह ईंधनके कम होने से आग मन्दी हो जाती है, उसकी वह तेजी नहीं रहती, राखसे ढकी हुई मालूम तक नहीं होती; अथवा जिस तरह बीज जमीनमें पड़ा

रहता है, समयपर उगता है; उसी तरह दोष धातुओंमें बने रहते हैं और समयपर जोर करते हैं।

चातुर्थिक विपर्य्यय आदिके कारण

दोषोंका स्वभाव ही कारण रूप होनेसे, कफस्थानोंके विभागकी अपेक्षा रक्खे विना भी, चातुर्थिक विपर्य्यय आदि अन्य विषमज्वर अपने-अपने समयमें प्रकट होते हैं। जिस तरह बीज पृथ्वीमें पड़े रहते हैं और अपने नियत समयके आनेपर उगते हैं; उसी तरह दोष धातुओंमें रहते हैं और अपना ठीक समय आनेपर ही कुपित होते हैं। 'सुश्रुत' में लिखा है :—

परो हेतुः स्वभावो वा विषमे कैश्चिदीरितः।
आगन्तुश्चानुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे ॥

कोई आचार्य विषमज्वरका हेतु स्वभाव ही कहते हैं;यानी वे अपने स्वभावसे ही नियत समयपर आ जाते हैं। कोई इसमें प्राय: आगन्तुकको कारण मानते हैं। ध्यान रखना चाहिये, यह बात चातुर्थिक विपर्य्यय आदि अन्य ज्वरोंके सम्बन्धमें कही है।

विषमज्वरोंकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) "वङ्गसेन" ने कहा है,—सभी विषमज्वर सन्निपातसे उत्पन्न होते हैं। उनमें जो दोष अधिक हों, उन्हीं दोषोंकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(२) वाताधिक्य विषमज्वरको घृतपान और अनुवासन वस्ति तथा स्निग्ध और उष्ण अनुपानोंसे शान्त करना चाहिये; यानी वात-प्रधान विषमज्वरको घी पिलाकर, अनुवासन वस्ति करके तथा चिकने और गरम पदार्थ सेवन कराकर जय करना चाहिये।

(३) पित्ताधिक्य विषमज्वरमें गरम दूध-घी मिलाकर विरेचन—दस्त करानेके लिये देना चाहिये तथा तिक्त और शीतल पदार्थोंसे नष्ट करना चाहिये।

(४) कफाधिक्य विषमज्वरमें वमन, पाचन, रूखे अन्न-पान, लंघन और गरम दवाओंके काढ़े—ये सब हितकारी हैं।

(५) वातोल्वण विषमज्वरको नष्ट करनेके लिये, काढ़ेमें "मधु" सोलहवाँ भाग डालना चाहिये; पित्तोल्वण विषमज्वरके नष्ट करनेके लिए काढ़ेमें "शहद" आठवाँ भाग डालना चाहिये। कफोल्वण विषम-ज्वरको नष्ट करनेके लिए "शहद" चार भाग डालना चाहिये और मिश्री इससे विपरीत डालनी चाहिये।

(६) वमन और विरेचन द्वारा शुद्ध करनेसे विषमज्वर दूर होता है। निशोथ, पीपल या हरड़—इनमेंसे किसी एकको शहदके साथ चाटनेसे विषमज्वर दूर होते हैं। सब तरहके विषमज्वरोंमें वमन या विरेचन कराना चाहिये। निशोथके चूर्णमें शहद मिलाकर चाटनेसे विषमज्वर निश्चय ही नाश हो जाते हैं। "लोलिम्बराज" महाशय अपनी स्त्रीसे कहते हैं,—

यो भजेत्समधुश्यामां हे हेमकलशस्तनि ।
विषमेषु व्यथास्तस्य न भवन्ति कदाचन ॥

हे सोनेके घड़ोंके समान स्तनोंवाली ! जो शहदके साथ निशोथ या पीपलके चूर्णको चाटता है अथवा जो कामी पुरुष शराब और सोलह वर्षकी स्त्रीका सेवन करता है, उसे विषमज्वरकी तकलीफ कभी नहीं होती।

(७) विषमज्वरमें रोगीके पीनेको सुरा (शराब) और माँड़ देना चाहिये। भोजनके लिये मुर्गा, तीतर और मोरका मांस देना चाहिये। ये पदार्थ हित हैं। छाछके साथ मांस, दूधके साथ मांस, दहीके साथ मांस अथवा उड़दके साथ मांस खानेसे विषमज्वर नष्ट होता है।

(८) क्षीण मनुष्यके बहुत दिनोंका सतत या विषमज्वर बढ़ जाय, तो उसको ज्वर-नाशक पथ्य या भोजनसे जीतना चाहिये। रूखे मनुष्यका ज्वर अगर वमन, लंघन और हलके पदार्थोंसे शान्त न हो,

तो उसे घी (दवाओंका बना घी) पिलाकर जीतना चाहिये। जैसे चन्दनादिघृत, कल्याणघृत, महाकल्याणघृत, पट्पलघृत और अमृत-पट्पलघृत इत्यादि।

(९) अगर रोगीको शीतके कारण तकलीफ हो, तो शीत-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। यदि दाहसे पीड़ा हो, तो दाह-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(१०) प्रलेपक ज्वरोंमें सब क्रियायें कफ-नाशक करनी चाहियें।

(११) शीतज्वरों, मलेरिया ज्वरों, इकतरा और तिजारी-चौथैया प्रभृति पारीसे आनेवाले ज्वरोंमें जो दवाएँ बिना ज्वरकी हालतमें दी जाती हैं, उन्हें ज्वर चढ़नेकी हालतमें न देना चाहिये। इन ज्वरोंमें अक्सर दवाएँ ज्वर रोकनेके लिये, ज्वर चढ़नेसे पहले ही दी जाती हैं और ज्वर चढ़ आनेपर बन्द कर दी जाती हैं; फिर दूसरे दिन या पारीके दिन, ज्वर चढ़नेसे पहले, फिर दी जाती हैं। हाँ, लोबान या आककी छाल प्रभृतिके चूर्ण ज्वर उतारनेके लिये दिये जा सकते हैं।

(१२) बहुत दिनोंके सततज्वर और विषमज्वरोंमें हितकारक भोजन देना चाहिये। सतत और विपर्य्यय आदि ज्वरोंका इलाज भी सतत और सन्तत आदि ज्वरोंकी तरह ही करना चाहिये।

(१३) तिजारी और चौथैया ज्वरमें वमन विरेचन साधारण कर्म करके चिकित्सा करनेसे जल्दी सिद्धि होती है।

(१४) तिजारी और चौथैयामें साधारण चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि विषमज्वरोंमें प्रायः ही आगन्तुकका अनुबन्ध होता है; अतः ये ज्वर बलि, हवन, टोने, टोटके, जन्त्र-मन्त्र और दवा दोनोंसे आराम होते हैं। इनकी चिकित्सा उन्माद रोगकी चिकित्सासे बहुत मिलती है। विषमज्वरोंमें उन्माद और मृगीकी तरह धूप, धूनी और अञ्जन तथा नस्यका प्रयोग करना अच्छा है।

(१५) अगर विषमज्वर रोगी बहुत दुबला हो, तो वाताधिक्य विषमज्वर अनुमान करना चाहिये। ऐसी दशामें घृत और आस्थापन तथा अनुवासनसे इलाज करना चाहिये।

अगर रोगीकी आँखें, नाखून प्रभृति हल्दीकी तरह पीले हो गये हों, तो पित्त-प्रधान ज्वर समझना चाहिये। ऐसी हालतमें विरेचन—जुलाब, दूध, दवाओंके बने घी तथा कड़वे और शीतल नुसख़ोंसे इलाज करना चाहिये।

अगर कफप्रधान विषमज्वर हो, तो वमन, पाचन, रुक्ष अनुपान, विशेषकरके लङ्घन (हल्के भोजन) तथा काढ़े और गरम योगों—नुसख़ोंसे इलाज करना चाहिये।

(१६) विषमज्वरमें घीकी प्रधान मात्रा देकर या खूब खिला-पिलाकर वमन करा देनी चाहिये।

(१७) रसस्थ ज्वरमें यानी उस ज्वरमें जो खानेके बाद आता हो, वमन और लङ्घन हितकारी हैं।

विषमज्वरोंकी सामान्य चिकित्सा

पाचन क्वाथ

(१) सोनामक्खी, छोटी हरड़, काले दाख और जीरा—इनका पाचन काढ़ा विषमज्वरोंमें देना चाहिये। परीक्षित है।

विषमज्वर-नाशक नुसखे

(१) इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी (२) पटोलपत्र, सारिवा (गौरीसर), नागरमोथा, पाढ़ और कुटकी (३) नीम, पटोलपत्र, त्रिफला, दाख, नागरमोथा और इन्द्रजौ (४) चिरायता, गिलोय, लाल चन्दन और सोंठ (५) गिलोय, आमले और नागरमोथा—ये पाँचों प्रकारके काढ़े पाँचों प्रकारके विषमज्वरोंको तत्काल शान्त करते हैं।

"लोलिम्बराज" महोदय कहते हैं :—

अवले कमलातनुरक्तकले चलदृक्कमले धृतकामकले।
अमृताब्दशिवं मधुमद्विपमे विषमे विषमेषुविलासरते॥

हे अवले ! हे लक्ष्मीके समान शरीरकी कलावाली ! हे कमलके समान चञ्चल दृष्टिवाली ! कामदेवकी इच्छासे मधुर ध्वनिवाली !

कामकलामें प्रवीण ! गिलोय, नागरमोथा और आमलेका काढ़ा शीतल करके और शहद मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—गिलोय गीली लेनी चाहिये, पर दूनी न लेनी चाहिये।

(२) कंघीकी जड़ और सोंठका काढ़ा बनाकर सेवन करनेसे शीत-कम्प और दाहयुक्त विषमज्वर मात्र दो तीन दिनमें नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) नागरमोथा, आमले, गिलोय, सोंठ और कटेरी—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं :—

वाङ्माधुर्यजितामृतेऽमृतलता लक्ष्मीशिवाभे शिवा।
विश्वं विश्ववरे घनो घनकुचे सिंही च सिंहोदरि॥
एभिः पंचभिरौषधैर्मधुकणामिश्रः कषायः कृतः
पीतश्चेद्विषमज्वरः किमु तदा तन्वंगि न क्षीयते॥

हे अपनी मीठी बोलीसे अमृतको जीतनेवाली ! हे लक्ष्मी और पार्वतीके समान कान्तिवाली ! हे सारी स्त्रियोंमें श्रेष्ठ ! हे सघन कुचों-वाली और सिंहके समान उदरवाली ! गिलोय, आमला, सोंठ, नागर-मोथा और कटेहली—इन पाँचोंके काढ़ेमें शहद और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे, हे नाजुक बदन ! क्या विषमज्वर नष्ट नहीं होता ? अवश्य होता है।

(४) लहसनके कल्कको * तिलके तेल और नमकके साथ मिला-कर, सवेरेके समय, सेवन करनेसे विषमज्वर और वात-सम्बन्धी सब रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—यद्यपि "भावमिश्र" ने इस योगको सामान्यतया विषमज्वर-नाशक लिखा है, पर इससे वायु और वायुसे उत्पन्न घोर विषमज्वर निश्चय ही नाश

* कल्ककी परिभाषा पृष्ठ १४२ के फुटनोटमें देखिये।

होता है। "वंगसेन" ने लिखा है, इसके सेवनसे बहुत दिनका पुराना घोर विषमज्वर और वातरोग नाश होता है। "सुश्रुत" ने सवेरेके समय घी और लहसनके सेवन करनेसे विषमज्वरका जाना लिखा है।

"लोलिम्बराज" महोदय भी कहते हैं :—

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि परन्तु कान्ते न रसोनकल्कात्।
तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो महासमीरे विषमज्वरेऽपि ॥

हे सर्वाङ्गसुन्दरी! क्या और सब दवाएँ मान करने योग्य नहीं हैं? अवश्य ही मान करने योग्य हैं। परन्तु महान् वातरोग और विषमज्वरमें तेल मिले हुए लहसनके कल्कसे बढ़कर दूसरा नुसख़ा नहीं है।

"वाग्भट्ट" महोदयने भी कहा है—"प्रातः सतैलं लशुनं प्राग्भुक्तम् वा तथा घृतम्·····विषमज्वर जित्परम्।" सवेरेके समय तेलके साथ लहसन या पुराना घी सेवन करनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है। लहसनके कल्ककी सभी शास्त्रकारोंने भरपूर तारीफ़ की है।

(५) एक तोले कलौंजीको आगमें भूनकर, पीछे उसमें तोला भर गुड़ मिलाकर खानेसे विषमज्वर नाश होता है।

(६) तुलसीके पत्तोंके रसमें कालीमिर्चका चूर्ण डालकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है।

(७) द्रोणपुष्पी (गूमा) के रसमें काली मिर्चोंका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है।

(८) कालाजीरा और गुड़ समान भाग लेकर, उसमें ज़रासा कालीमिर्चका चूर्ण मिलाकर खानेसे विषमज्वर अवश्य नष्ट हो जाता है।

नोट—ज़ीरेको गुड़में मिलाकर खानेसे विषमज्वर, वातरोग और मन्दाग्नि,—ये नाश हो जाते हैं। गुड़, घी, शहद, बायबिड़ङ्ग और चाँवल सदा पुराने लेने चाहिये।

(९) सोंठ, ज़ीरा और गुड़—इनको एक जगह पीसकर, गरम जलके साथ पीनेसे अथवा पुरानी शराबके साथ पीनेसे अथवा माठेके साथ पीनेसे तत्काल शीतज्वर नाश होता है।

(१०) परवल, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, चिरायता, मुलेठी और गिलोय,—इन सातोंका काढ़ा सम्पूर्ण विषमज्वरोंपर उत्तम है। इससे खाँसी और अरुचिका भी नाश होता है।

(११) द्रोणपुस्पीके रसमें मिश्री और जीरा मिलाकर, चार तोले रस पीनेसे प्रबल विषमज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) चिरायता, हरड़, नागरमोथा, कटेरी, त्रायमाण, सोंठ, जवासा, कुटकी, वाट्याल (चिकणा), वला, कचूर, पीपल, परवल, कटेरी, नेत्रवाला, पीपलामूल और पित्तपापड़ा—इन सबको कूट-पीसकर चूर्ण कर लो। इसका नाम "षोड़षांङ्ग चूर्ण" है। यह सब तरहके विषमज्वरोंको नाश करता है। परीक्षित है।

(१३) चिरायता, कुटकी, निशोथ, नेत्रवाला, पीपल, बायविड़ङ्ग, सोंठ, कड़वी तूम्बी और हरड़—इनका काढ़ा सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है और जठराग्निको वढ़ाता है। परीक्षित है।

(१४) कचूर, सोंठ, पित्तपापड़ा, देवदारु, जवासा, भटकटैया, मोथा, कुटकी और चिरायता—इन ९ दवाओंके काढ़ेको, शहद और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सन्निपात, विषमज्वर और जीर्णज्वर भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) चौलाईकी जड़ सिरमें बाँधनेसे विषमज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

क्षणमपि चलतां जहीहि मुग्धे शृणु वचनं मम तन्वि सावधाना।
वसति शिरसि मेघनादमूले व्रजतितरां विषमो विलासदृष्टे ॥६९॥

हे यौवनावस्थामें कदम रखनेवाली नाज़नी! उछल-कूद छोड़कर मेरी बात ध्यान लगाकर सुन! चौलाईकी जड़ सिरमें बाँधनेसे विषमज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

(१६) उत्तम गिलोयका कपड़ेमें छना हुआ चूर्ण १०० तोले, गुड़ १६ तोले, शहद १६ तोले, घी १६ तोले—इन सबको एक जगह मिला-

कर लड्डू बना लो। अपनी अग्निके बलाबलका विचार करके इसको खाओ। हितकारी और हलका तथा परिमित भोजन करो। इसके सेवन करनेवालेको कोई रोग नहीं होता, न बुढ़ापा आता है, न बाल सफ़ेद होते हैं। इसके खानेवालेको विषमज्वर, मोह, वातरक्त और नेत्र-रोग कभी नहीं होते। यह परमोत्तम रसायन, मेधाजनक और त्रिदोष-नाशक है। इसका सेवन करनेवाला सौ बरससे अधिक जीता है और देवके समान बली रहता है। इसका नाम "गुड़ूची मोदक" है। इसके सेवन करनेसे पाँचों प्रकारके विषमज्वर नाश होते हैं।

नोट—हमारी रायमें घी २० तोले लेना अच्छा होगा। इसको "अमृत रस" भी कहते हैं। यह नुसख़ा परमोत्तम है। इसके सेवनसे विषमज्वर, प्रमेह, वातरक्त और नेत्ररोगमें निश्चय ही लाभ होता है। वास्तवमें यह अमृत ही है।

(१७) गिलोय, कुटकी, नीमकी छाल, धनिया, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, सनाय, और बड़ी हरड़—इन सब दवाओंको चार-चार माशे लेकर, सबको एकत्र कूटकर, आधा सेर जलमें पकाओ। जब आधा-पाव जल-रह जाय, उतारकर छान लो। इस काढ़ेको निवाया-निवाया, दो-दो घण्टेमें, ३ बार, सेवन करनेसे सब तरहके विषमज्वर नाश होजाते हैं।

नोट—अगर पित्तका ज़ोर ज़ियादा हो, तो इस काढ़े में ४ माशे लाल-चन्दन मिला देना। अगर खाँसी हो, तो ४ माशे कटेरी मिला देना। अगर कब्ज़ हो, तो हरड़ और भी बढ़ा देना। छोटे बालकोंको अवस्थानुसार कम मात्रा देना। यह नुसख़ा एक वैद्यराजने परीक्षा करके लिखा है।

(१८) पीपल, मिश्री, शहद, औटा हुआ दूध और नौनी घी—इन सबको कलछीसे मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है।

नोट—दूधके शीतल होनेपर शहद मिलाना चाहिये, गरममें न मिलाना चाहिये तथा घी और शहद बराबर न लेना चाहिये।

(१९) घी, दूध, मिश्री, पीपल और शहद—इनको एकमें मिला-कर सेवन करनेसे विषमज्वर दूर हो जाता है। इस नुसख़ेका नाम "पंचसार" है। इससे क्षतक्षीण, क्षय, खाँसी और हृदय-रोगमें बहुत लाभ होता है। पुराने ज्वरमें यह अच्छा काम करता है। परीक्षित है।

नोट—शहद १ भाग, घी २ भाग, पीपल ४ भाग, मिश्री ८ भाग और दूध ३२ भाग—इस हिसाबसे इन दोनों (नं० १८ और १९) नुसख़ोंमें ये सब पदार्थ लेने चाहिये। जिनको कच्चा दूध माफ़िक़ न हो, उन्हें दूध औटा लेना चाहिये; परन्तु औटते या गरम दूधमें शहद न मिलाना चाहिये। कच्चा दूध सदा "धारोष्ण" यानी थनोंसे निकलते ही, तत्काल, बिना हवा लगे पीना चाहिये। धारोष्ण दूध बलकारक, हलका, शीतल, अमृतके समान, अग्नि-दीपक और त्रिदोष-नाशक है। अगर दूध दुहनेके बाद शीतल हो गया हो, तो उसे आग पर गरम करके काममें लाना चाहिये। गायका दूध धारोष्ण और भैंसका दूध दुहकर शीतल हो जाय, तब काममें लाना चाहिये। गाय और भैंसके दूधके सिवाय और सब दूध कच्चे नुक़सानमन्द होते हैं। गरम किया हुआ दूध कफ तथा वात-नाशक होता है और गरम करके शीतल किया हुआ पित्त-नाशक होता है। दूधमें आधा जल डालकर औटाया हुआ और पानी-पानी जल जाने पर शेष रहा दूध कच्चे दूधसे भी अधिक हलका होता है।

(२०) "सुश्रुत" में लिखा है,—घी, दूध, मिश्री और शहदके साथ यथाबल, पीपल सेवन करनेसे विषमज्वर जाते हैं। अथवा दशमूलके के काढ़ेमें पीपल मिलाकर पीनेसे भी विषमज्वर नाश होते हैं। मुर्ग़ेके मांसके साथ उत्तम मदिरा (शराब) पीनेसे भी विषमज्वर जाते हैं। वर्द्धमान पीपलोंका सेवन करने और दूध शोरवा खानेसे भी विषमज्वर जाते हैं।

"लोलिम्बराज" महाशय कहते हैं:—

भवति विषमहन्त्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता
भवति विषमहन्त्री पिप्पलीवर्द्धमाना ॥
विषमरुजमजाजी हन्ति युक्ता गुडेन
प्रशमयति तथोग्रा सेव्यमाना गुडेन ॥

शहदमें "हरड़का चूर्ण" मिलाकर चाटनेसे अथवा "वर्द्धमान-पिप्पली" सेवन करनेसे अथवा हरड़, जीरा और अजवायनका चूर्ण सेवन करने से विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—हमने वर्द्धमान पीपलको जीर्णज्वरपर रामवाणके समान फलदायी

देखा है। वर्द्धमान पीपल सेवन करनेकी विधि हमने आगे जीर्णज्वरकी चिकित्सा में लिखी है, वहीं देख लेनी चाहिये।

(२१) धनिया, लौंग, निशोथ और सोंठ—इनका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेमे अग्निमान्द्य, श्वास, अजीर्ण और विषमज्वर नाश हो जाते हैं। उत्तम नुसखा है।

(२२) हरी चाय, सोंठ और मिश्रीका काढ़ा बनाओ। आठवाँ भाग जल रहनेपर उतार लो। मल-छानकर पी जाओ और ओढ़कर सो जाओ। इसके पीनेसे पसीने आकर सर्दी निकल जाती है और शरीरमें फुरती आ जाती है। यह काढ़ा गरम है। अगर मातदिल करना हो, तो इसमें दूध मिला देना चाहिये।

(२३) छुहारेकी गुठली और औंगेकी जड़को शीतल जलमें चन्दनकी तरह घिस लो। पीछे खानेके पानमें—इसमेंसे ४ रत्ती लगाकर ऊपरसे लौंग, सुपारी, इलायची और कत्था वगैरह रखकर ऐसे ही तीन पान तैयार करो। ज्वर आनेके टाइमसे डेढ़ घण्टे पहले—आधे-आधे घण्टेके अन्तरसे—एक-एक करके तीनों पान खा जाओ। इस तरह ३ दिन तक, हर रोज़ तीन-तीन पान खानेसे इकतरा आदि शीतज्वर भाग जाते हैं।

(२४) कड़वे नीमके पत्ते ४० तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, हरड़ ४ तोले, बहेड़ा ४ तोले, आमले ४ तोले, सैंधानोन ४ तोले, विरियानोन ४ तोले, बिड़नोन ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जीखार ४ तोले और अजवायन २० तोले—इनका चूर्ण बनाकर, रोज़ सबेरे सेवन करनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—सफेद कनेरकी जड़ रविवारको कानपर बाँधनेसे सभी विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(२५) पटोलपत्र, इन्द्रजौ, देवदारु, त्रिफला, नागरमोथा, दाख, मुलेठी, गिलोय और वासा—इनका काढ़ा बनाकर और शीतल होने

पर शहद मिलाकर पीनेसे नवीनज्वर, विषमज्वर प्रभृति सब तरके ज्वर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह काढ़ा सभी तरहके ज्वरोंको आराम करता है, विशेषकर सब तरहके विषमज्वरोंपर तो रामवाण ही है। परीक्षित है।

विषमज्वर-नाशक

धूप, नस्य, यन्त्र-मन्त्र और टोटके प्रभृति

(१) सैंधानोन, पीपलके चावल और मैनसिल—इनको एकत्र तेल पीसकर आँजनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(२) नीमके पत्ते, वच, कूट, हरड़, सफेद सरसों और गूगल—इन सबको एकत्र पीसकर, घीमें मिलाकर धूप देनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(३) विलावकी विष्ठाकी धूनी देनेसे विषमज्वरमें काँपना दूर हो जाता है।

(४) सहदेई, वच, अपराजिता और नाई—इनकी शरीरमें धूप देनेसे अथवा इनका उबटन करनेसे सब तरहके ज्वर शान्त हो जाते हैं।

(५) मोरकी पूंछके चँदोवेकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर और ग्रहबाधा दूर होती है।

(६) गूगल, वच, कूट, नीमके पत्ते, जौ, घी, हरड़ और सफेद सरसों—इनकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं।

(७) गूगल, रोहिषतृण, वच, राल, नीमके पत्ते, आकके पत्ते, अगर और देवदारु—इनकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर आराम होते हैं। इसका नाम "अपराजिता" धूप है।

(८) इन्द्रजटा, गायका सींग, विलावकी विष्ठा, साँपकी काँचली, मैनसिल, भूतकेशी, बाँसकी छाल, शिवका निर्माल्य, घी, जौ, मोरकी-चाँद, बकरेके रोम, सरसों, वच, हींग गोरोचन और कालीमिर्च—

इनको बराबर-बराबर लेकर, बकरेके मूत्रमें पीसकर, विधि सहित धूप देनेसे सब तरहके ज्वर, डाकिनी, पिशाच, प्रेत आदि बाधा दूर होती हैं। इसको "महेश्वर धूप" कहते हैं।

(९) नीमके पत्ते, आमला, वच, इन्द्रजौ, घी और लाख— इनकी धूप ज्वरको हरती है।

अयि कुशाग्रसमानमते मते मतिमतामतिमन्मथमंथरे ॥
ज्वरहरं रुगरिष्टशिवावचायवहविर्जतुसर्षपधूपनम् ॥७२॥

हे कुशाग्र बुद्धिवाली ! हे पण्डितोंसे मान पाने योग्य ! हे कामदेव के जोरके मारे धीरे-धीरे चलनेवाली ! कड़वे नीमके पत्ते, आमला, वच, इन्द्रजौ, घी, लाख और सफेद सरसों—इन सबको एकत्र करके, इनकी धूप देनेसे ज्वर भाग जाते हैं।

(१०) वच, हरड़ और घी,--इन तीनोंको आगपर डालकर, धूआँ देनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(११) "सुश्रुत" में लिखा है,—बकरी और भेड़का चमड़ा और उनके रोएँ, वच, कूट, लाख या गूगल तथा नीमके पत्ते—इनमें शहद मिलाकर रोगीको धूनी देनेसे विषमज्वर और जीर्णज्वर नाश हो जाते हैं। अगर कम्प भी हो, तो बिलावकी बिष्ठाकी धूनी देनी चाहिये।

(१२) पीपल, सेंधानोन, तेल और मैनसिल—इनको घिसकर आँखोंमें आँजनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(१३) जिस समय ज्वर चढ़ने वाला हो, उस समय रोगीको विषरहित साँपोंसे या पालतू हाथियोंसे या बनावटी तस्करोंसे डराना चाहिये और उस दिन खानेको न देना चाहिये।—"सुश्रुत"।

किन्तु घोर सन्निपातमें, जब किसी तरह आराम होनेकी उम्मीद न रहे, रोगीको साँपसे कटवानेकी विधि है। कहा है :—

कालीयके गदंद्यादंशयोश्च प्रकोष्टयोः।
ब्रह्मस्थाने शंखयोश्च सन्निपात निवृत्तये ॥

सन्निपातकी निवृत्तिके लिये साँपसे कटाना चाहिये तथा कलाई,

कनपटी और बीच मस्तकमें दाग देना चाहिये।

(१४) हीरा, पन्ना आदि रत्न, मंगलीक द्रव्य; सींगिया विष प्रभृति धारण करनेसे भी विषमज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(१५) एक मक्खी, आधी कालीमिर्च और जरा-सी हींग—इन तीनोंको पानीमें पीसकर आँखमें आँज दो, जूड़ीज्वर भाग जायगा। जादू है।

(१६) उल्लूका पंख और गूगल, काले कपड़ेमें लपेटकर यानी बत्ती-सी बनाकर, घीमें तर कर लो और उसे जलाकर काजल पाड़ लो। इस काजलके आँखोंमें लगानेसे चौथैया ज्वर भाग जाता है। इसका अजीब असर होता है। सच पूछो तो जादू है।

(१७) सफेद धतूरा, रविवारको उखाड़कर, दाहिने हाथमें बाँधो। एक ही दिनमें पारीका शीतज्वर भाग जायगा।

(१८) करंजुवेकी गिरी पानीमें पीसकर, नाकमें टपकानेसे जूड़ी-ज्वरसे छुटकारा हो जाता है। करंजुवेकी ३ कोंपल और २ काली-मिर्च जलमें पीसकर पिलानेसे भी लाभ होता है।

(१९) आककी जड़ २ तोले और कालीमिर्च १ तोले—इनको बकरीके दूधमें पीसकर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। ज्वरकी पारी से पहले १ गोली खिलाओ। इससे भी जाड़ेका ज्वर काफूर हो जाता है।

(२०) आकके पीले-पीले पत्ते लाकर, उनको कोयलोंकी आगपर रखकर, उनकी राख कर लो। उस राखमेंसे ४ रत्ती राख शहदमें मिलाकर, सवेरे चाटो। इस उपायसे भी जाड़ेका ज्वर चला जाता है।

विषमज्वर-नाशक मंत्र

(२१) ओं ह्रां ह्रीं क्लीं सुग्रीवाय महाबल पराक्रमाय सूर्य्यपुत्र-यामिततेजसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर भयज्वर क्रोधज्वर वेलाज्वर प्रभृति ज्वराणां दह दह पच पच अवत अवत वानरराज ज्वराणां बन्धबन्ध ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा। नास्तिज्वरः।

ज्वरापगमनसमर्थ ज्वरस्त्रास्यतें ॥ इस मन्त्रसे विषमज्वर दूर होता है
—"हारीत"

खड़ियासे बन्दरकी शकल बनाकर, गन्ध, पुष्प और चावलोंसे वैद्यवर पूजा करते है। सुग्रीव नामक बन्दरोंके राजाका दिव्य मुख देखनेसे घोर एकाहिक ज्वर नष्ट हो जाता हैं।

(२२) पार्वती, नन्दी आदि गण और मातृगण सहित श्रीसदाशिवका पूजन करनेसे विपमज्वर नाश होते हैं। महाभारतके तेरहवें—अनुशासन पर्व्वमें कही—विष्णु भगवानकी स्तोत्रसे स्तुति करनेसे सब तरहके ज्वर नष्ट होते हैं। माता पिता गुरु आदिके पूजन, महात्माओं के दर्शन, तप, सत्य, जप, होमदान और ब्रह्मचर्य्यव्रत पालन आदिसे भी विपमज्वर चले जाते हैं।

(२३) निर्गुण्डी यानी सम्हालूके पत्तोंमें ज्वरनाश करनेकी अपूर्व शक्ति है। निर्गुण्डीके ६ माशे हरे पत्ते लेकर, हाथसे खूब मलकर, एक मलमलके कपड़ेमें बाँधकर, पोटलीसी बना लो। ज्वर चढ़नेसे चार पाँच घण्ट पहले, इसको बारम्बार सूंघो और इसके रसकी ३-४ बूंद नाकमें टपकाकर, नस्यकी तरह ऊपर चढ़ाओ। इस उपायसे आश्चर्यजनक फल होता है। इसका मलेरिया या विपसज्वरपर कुनैन के समान फल होता है। वैद्यराज पं० नाथूरामजी शर्मा "वैद्य" मुरादाबाद म लिखते हैं—यह हमारा बीसों बारका आजमाया हुआ है।

एक और वैद्य महाशय भी लिखते हैं,—"सम्हालूके पत्तोंका स्वरस, कपड़ेमें निचोड़कर, उसकी नस्य लेनेसे ज्वरका वेग रुकता है।"

(२४) ज्वरके चढ़नेसे तीन चार घण्टे पहले, हुलहुलके पत्तोंका रस सूंघनेसे और उसे हाथ-पैरके नाखूनोंपर लगानेसे ज्वरका वेग रुकता है।

(२५) ज्वरके बढ़नेके समय, ज्वरकी याद करनेसे जिसका ज्वर बढ़ता है, उसको इष्ट पदार्थोंसे या अद्भुत बातोंसे भुलाकर नष्ट कर देना चाहिये। रोगीका ध्यान बटाने, ज्वर आनेकी बात भुला

देनेसे—याद आनेसे चढ़नेवाला ज्वर, निश्चय ही, नाश हो जाता है। हमने कितनी ही बार परीक्षा की है। "चरक" में लिखा है,—हमको अमुक समय ज्वर आवेगा; इसी जगह हमारे ज्वर आनेका समय हो गया इत्यादि प्रकारसे ज्वर का समय और स्थानकी चिन्ता करनेसे जिसको ज्वर आ जाता हो, उसके चित्तको अभीष्ट चित्र-विचित्र विषयों—क़िस्से-कहानियोंमें भुलावा देकर, वक्तको निकाल देनेसे ज्वर नहीं आता।

सन्ततज्वर-नाशक नुसखे

(हर समय चढ़े रहनेवाले ज्वरके लिये)

(१) त्रायमाण, सारिवा, जवासा और कुटकी—इनका काढ़ा सन्ततज्वरमें वातादि दोषोंकी निवृत्तिके लिये हित है। परीक्षित है।

(२) त्रायमाण, कुटकी, अनन्तमूल और गौरीसर (सारिवा)—इनका काढ़ा पीनेसे सन्तत-सततादि ज्वर और वातादि रोग दूर होते हैं।

(३) पटोलपत्र, नागरमोथा, वृहद्दन्ती (अभावमें दन्ती या जमाल-गोटेकी जड़), कुटकी और सारिवा—इनका काढ़ा पीनेसे सन्तज्वर नाश होता है।

(४) कड़वे परवलके पत्तोंका रस निकालकर, कलेजेपर और सारे शरीरपर मलनेसे सन्ततज्वर और शीतज्वरमें लाभ होता है। इसी तरह, कड़वे करौंदेकी जड़ पानीमें घिसकर शरीरपर लगानेसे भी विषमज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह ज्वर बहुत ज़हरीला होता है। इसमें आरम्भमें लंघन कराने चाहियें; दवा या अन्न न देना चाहिये। इसमें सन्निपात होनेका बहुत डर रहता है; इसलिये दवा और पथ्य खूब सोच-समझकर देना चाहिये। पुराना पड़नेपर हलका जुलाब देना हित है। मुनक्केके साथ सत्त गिलोय देना अच्छा उपाय है। मुनक्के सेककर और काली मिर्च नमक लगाकर देना भी अच्छा है। भूखमें मूँगका यूष देना चाहिये।

हिकमतसे—

सन्ततज्वर या दायमी तापका इलाज

(१) मुनक्का और सत्त गिलोय मिलाकर दो।

(२) गुलक़न्द और सौंफ मिलाकर सवेरे शाम दो।

(३) गुलक़न्द, अनीसूँ, मस्तगी—तीनों ६-६ माशे मिलाकर रोगीको खिलाओ। उत्तम दवा है।

(४) शर्बत गावज़बान भी इस ज्वरमें अच्छा है।

सततज्वर-नाशक नुसखे

(दिनरातमें दो बार चढ़नेवाले ज्वरके लिये)

(१) परवल, हरड़, नीम, इन्द्रजौ, गिलोय और जवासा—इनका काढ़ा खाँसी प्रभृति युक्त सततज्वरको नाश करता है। परीक्षित है।

(२) परवल (पटोलपत्र), इन्द्रजौ, अनन्तमूल, हरड़, नीम, गिलोय और सुगन्धवाला—इनका काढ़ा पीनेसे सततज्वर नष्ट होता है।

(३) कुटकी, ख़स, खिरेंटी, धनिया, पित्तपापड़ा और नागरमोथा—इन औषधियोंका काढ़ा उस ज्वरको शीघ्र नष्ट करता है, जो एक दिनमें दो बार आता है। परीक्षित है।

(४) ज्वर उतर जानेकी हालतमें, ज्वर आनेसे पहले दो-दो घण्टोंपर "महाज्वरांकुश वटी" ताज़ा जलसे निगलवा देनेसे, एक ही पारीमें या २-३ पारीमें, यह ज्वर तथा एकाहिक, अन्येद्युः, तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर निश्चय ही चले जाते हैं। देखो पृष्ठ १४६-१५२।

अन्येद्युः ज्वर-नाशक नुसखे

(रोज़-रोज़ आनेवाले ज्वरके लिये)

(१) दाख, परवल, नीमकी छाल, नागरमोथा, इन्द्रजौ और त्रिफला,—इनका काढ़ा शीतल करके, सवेरे ही पीनेसे, अन्येद्युःज्वर (दिनरातमें एकबार चढ़नेवाला) आराम होता है। इस ज्वर के लिये

यह काढ़ा परमोत्तम है। परीक्षित है।

(२) पटोलपत्र, नीमकी छाल, दाख, अमलतास, त्रिफला और अड़ूसा, इनके काढ़ेमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे एकाहिक-ज्वर दूर होता है। परीक्षित है।

(३) पीपल, आमले, हींग, दारुहल्दी, बच, राई और लहसन—इनको एकत्र बकरीके दूधमें पीसकर, नस्य लेनेसे एकाहिक ज्वर नाश होता है।

(४) सरस्वती नदीके तीरपर जो पुत्रहीन तपस्वी मरा, उसके लिये तिलाञ्जलि देनेसे एकाहिक ज्वर दूर होता है। अथवा "योऽसौ सरस्वती तीरे" इत्यादि इस मन्त्रसे हाथमें पीपलका पत्ता लेकर तर्पण करना चाहिये।

(५) मकड़ीके जालेको जलाकर, काजल बनाकर, आँजनेसे द्व्याहिक ज्वर दूर हो जाता है।

(६) काकजंघा (चकसेनी या मसी), वरियारा, काली तुलसी, अपामार्ग या चिरचिरा, पिठवन (पृष्ठपर्णी) और भाँगरा—इनमेंसे किसी एकको, पुष्य नक्षत्रमें, पवित्र होकर उखाड़ लाओ। इनकी जड़ को लाल धागेमें लपेटकर हाथ या गले में बाँध दो। इस उपायसे एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

(७) उल्लूके दाहिनी तरफ़के परको सफ़ेद सूतमें बाँधकर, कानमें बाँधनेसे एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

(८) केंकड़ेके बिलकी मिट्टीका तिलक करनेसे भी एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर-नाशक नुसख़े

नियम—तिजारी और चौथैयामें वैद्यको पहले वमन और विरेचन साधारण कर्म कराकर, पीछे विशेष चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) ख़स, लालचन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनिया और सोंठ,—

इनके काढ़ेमें मिश्री और शहद डालकर पीनेसे प्यास और दाहयुक्त तृतीयक ज्वर (तिजारी) नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—"लोलिम्बराज" महोदय "गिलोय" के स्थानमें "पीपल" लिखते हैं।

(२) रविवारके दिन, चिरचिरेकी जड़को सात लाल धागोंमें लपेटकर, कमरमें बाँधनेसे तृतीयक ज्वर (तिजारी) नष्ट हो जाता है।

(३) शालिपर्णी, आमला, देवदारु, हरड़, अडूसा और सोंठ—इनका काढ़ा बनाकर और उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे चौथैया ज्वर नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(४) अगस्तके पत्तोंके स्वरसकी नास देनेसे चौथैया नाश हो जाता है। परीक्षित है *।

नोट—इस रसको नाकमें डालनेसे आधाशीशीका दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सिरसके फूल, हल्दी और दारुहल्दी—इनके कल्कमें घी मिलाकर नास देनेसे घोर चौथैया ज्वर नाश होना है।

(६) हींगको पुराने घीमें पीसकर नास देनेसे चौथैया नाश हो जाता है **। परीक्षित है।

(७) बेलका गूदा और मधुमाधवीके चूर्णको, सफेद और तरुण

---

* "लोलिम्बराज" महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं:—

अखण्डित शरत्काल कलानिधि समानने।
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनि द्रुमदलाम्बुना॥

हे शरत्कालके पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली! अगस्त वृक्षके पत्तोंका स्वाभाविक (बिना जल मिलाया) रस सूँघनेसे चौथैया नाश हो जाता है।

** चातुर्थिको नश्यति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य नस्यात्।
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकादिव साधुभावः॥

पुराने घीमें मिली हुई हींगके सूँघनेसे चौथैया इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह क्रीड़ा करनेवाली नवयौवना स्त्रियोंके मुख देखनेसे साधुजनोंकी सज्जनता नष्ट हो जाती है। (एक वर्षका घी पुराना होता है।)

बछड़ेवाली गायके दूधके साथ, रविवारके दिन अथवा पारीके दिन, पीनेसे बहुत दिनोंका चौथैया नष्ट हो जाता है।

(८) सहदेईकी जड़को विधिपूर्वक कण्ठमें बाँधनेसे, एकाहिक, द्वाहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वर दूर हो जाते हैं।

नोट—रविवारको हाथ या गलेमें बाँधनेसे अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(९) सफ़ेद चिरचिरेकी जड़को, दूधके साथ, पीनेसे अथवा पानमें रखकर खाने से बहुत दिनोंका चौथैया नष्ट हो जाता है।

(१०) अश्मन्तक वृक्षके एक हज़ार पत्तोंको, घीमें चुपड़कर, जल में पीसकर पीनेसे चौथैया और तिजारी नाश हो जाते हैं।

(११) कुमारीके काते हुए सूतसे, रविवारके दिन, चिरचिरेकी जड़ रोगीके हाथमें बाँधनेसे चौथैया नहीं आता। परीक्षित है।

(१२) रविवारको चिरचिरेकी पत्ती लाकर और पीसकर गुड़में मिलाकर गोली बनाओ। ज्वर चढ़नेसे पहले १ गोली खाओ। इस उपायसे एक या दो पारीमें चौथैया भाग जायगा। परीक्षित है।

(१३) वराही बेलकी टहनी या जड़, पचरंगे सूतसे भुजामें या गलेमें बाँधनेसे तिजारी चली जाती है।

(१४) गिलोय, आमले और नागरमोथेका काढ़ा पीनेसे चौथैया चला जाता है।

नोट—लगातार कुछ दिनसे पीनेसे जाता है; जल्दबाज़ीसे नहीं जाता। परीक्षित है।

(१५) कानका मैल निकालकर रुईमें लपेटकर, बत्ती बना लो। एक मिट्टीके दीपकमें काले तिलोंका तेल भरकर, उसमें उस बत्तीको रखकर, दीपकको जला लो और काजल पार लो। उस काजलके आँखों में आँजनेसे तिजारी भाग जाती है। परीक्षित है।

(१६) नौसादर ३ रत्ती और कालीमिर्च २ दाने—कूट-पीसकर, पारीके दिन खिलानेसे चौथैया चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—नौसादरको कालीमिर्चके साथ सेवन करनेसे ज्वर अवश्य रुक जाता है। यह पसीना और पेशाब लानेवाली है। दो-दो रत्ती नौसादर दिनमें दो तीन बार खानेसे तिल्ली गल जाती है। यकृतकी सूजन और दर्दमें भी यह बड़ी उत्तम है। दस्त भी खुलासा लाती है। बवासीरकी भयङ्कर पीड़ा इसके खानेसे मिट जाती है। शीतल जलमें मिलाकर, इसका लेप करनेसे जमा हुआ खून पिघलकर सूजन नाश हो जाती है। स्त्रियोंके स्तनोंकी सूजन और बालकके फोते बड़े हो जाने, लाल हो जाने और पीड़ा होनेपर, इसको शीतल जलमें घोलकर लेप करनेसे अवश्य लाभ होता है। इसकी मात्रा १०-१५ रत्ती तक है।

(१७) कलौंजी ४ माशे महीन करके, शहदमें मिलाकर खिलाने से चौथैया चला जाता है। जिस दिन पारी हो, उस दिनसे ४ दिन तक बराबर खिलानी चाहिये।

(१८) कुछ धतूरेके पत्ते, पानके पत्ते और २॥ कालीमिर्च—इनको पीसकर कालीमिर्चकी बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम जलके साथ खिलानेसे चौथैया चला जाता है।

(१६) समन्दरफलकी गिरी, कालीमिर्च और तुलसीके सूखे पत्ते—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णकी मात्रा आध माशेसे दो माशे तक है। रोगीके मिज़ाज और उम्रका खयाल करके मात्रा देनी चाहिये। चौथैया आनेके समयसे आध घण्टे पहले, एक खूराक चूर्ण जलके साथ खिला दो।

(२०) कंजेके फलोंकी मींगी और कालीमिर्च—दोनों बराबर-बराबर लेकर, महीन कूट-पीसकर चूर्ण बनालो। १ माशेसे दो माशे तक इसकी मात्रा है। इसके खिलानेसे पारीसे आनेवाले तिजारी चौथैया आराम हो जाते हैं। ज्वर छूट जानेपर ताक़त लानेके लिए, ३ रत्तीसे ६ रत्ती तक खिलाना चाहिये। गर्भवती स्त्रियोंको यह दवा न देनी चाहिये। बड़ी अच्छी दवा है। परीक्षित है।

नोट—नीबूके रसमें इस चूर्णकी गोलियाँ बनाकर खिलानेसे भी तिजारी, चौथैया आराम हो जाते हैं। पारीके दिन, ज्वर आनेसे पहले ही चूर्ण या गोली देना।

(२१) अतीस की जड़को महीन पीसकर चूर्ण कर लो। १॥-१॥ माशे या दो-दो माशे यही चूर्ण जिस दिन ज्वर आनेकी बारी न हो उस दिन, ४ बार, तीन-तीन घण्टेपर खिलानेसे तिजारी, चौथैया आदि बारीके ज्वर रुक जाते हैं। ज्वर आराम हो जानेपर, ताक़त लानेके लिये तीन या चार रत्ती यही चूर्ण रोज़ खिलाना चाहिये। गर्भवतीको यह चूर्ण भी न देना चाहिये।

कोई-कोई लिखते हैं,—और ज्वर-नाशक दवाएँ गर्भवतीको गरमी करती हैं, पर "अतीस" बुख़ारको नाश कर देता है। इससे गर्भवतीका ज्वर, अतिसार और मन्दाग्नि आदि आराम हो जाते हैं। बालकोंक तो यह दवा ही है, इसीसे इसे "शिशुभैषज्य" कहते हैं। अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी और पीपलका चूर्ण शहदमें चाटनेसे बालकोंके ज्वर, अतिसार, खाँसी और वमन अवश्य आराम हो जाते हैं। ज्वर चढ़नेके तीन चार घन्टे पहले, डेढ़ या दो माशे अतीस सेवन करनेसे ज्वर रुक जाता है। यह चढ़े ज्वरमें दे देनेसे भी कुनैनकी तरह हानि नहीं करता।

(२२) पोस्त खसखास जितनेकी ज़रूरत हो उतना लेलो। इसमें दस कालीमिर्च मिलाकर और काढ़ा बनाकर पिलानेसे कई दिनमें चौथैया चला जाता है।

(२३) काबुली हरड़का वक्कल ३ तोले, कसौतके बीज १०॥ माशे कासनीके बीज १० माशे, आलूबुख़ारा २० दाना, उन्नाव विलायती २० दाना, सौंफकी जड़की छाल ७ माशे और शाहतरा २ तोले—इन सबका काढ़ा बनाओ और चौथाई जल रहने पर उतारकर छान लो। पीछे इस काढ़ेमें अमलताशका गूदा ४ तोले ४॥ माशे और माजून बद ४ तोले ४॥ माशे मिलाकर, फिर मलकर छान लो। इस काढ़ेके कई दिन तक पीनेसे चौथैया चला जाता है। अमीरी नुसख़ा है।

(२४) फिटकरीको भूनकर और उसके बराबर मिश्री मिलाकर, आधे माशेसे दो माशे तक खिलानेसे तिजारी ज्वर चला जाता है। यह

नुसखा परीक्षित है। जिसे खाँसी हो, उसे न देना चाहिये।

(२५) अफीम १ माशे, कालीमिर्च २ माशे और बबूलका कोयला ६ माशे—इन सबको महीन पीसकर, एक माशे या कम जियादा चूर्ण ज्वर आनेसे डेढ़ दो घन्टे पहले, खिलानेसे तिजारी ज्वर भाग जाता है। खानेको दवा खानेसे ६।७ घन्टे बाद देना चाहिये। यह नुसखा परीक्षित है।

(२६) गिलोय, धनिया, लालचन्दन, कमलगट्टेकी मींगी (हरी पत्ती निकाल फेंकना) प्रत्येक पाँच-पाँच माशे लेकर तीन पाव जलमें काढ़ा करो। जब आधा पाव जल बाक़ी रहे, मल-छानकर, उसमें २ तोला शर्बत निलोफर मिलाकर पिला दो। इस यूनानी नुसख़ेके कई दिन पिलानेसे, सुखसे तिजारी ज्वर चला जाता है। परीक्षित है।

(२७) नीलोफर १ तोला और ख़ूबकला ६ माशे—डेढ़पाव जलमें औटाकर काढ़ा बनाओ। जब आधापाव पानी शेष रहे, तब मल-छानकर और मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसख़ेसे भी तिजारी चली जाती है। परीक्षित है।

(२८) पुराने बोरेकी राख शहदमें या घीमें मिलाकर चटानेसे इकतरा, तिजारी और चौथैया तथा दिनमें दो बार आनेवाले ज्वर भाग जाते हैं। परीक्षित है।

(२९) सफेद चम्पेकी कली डण्ठल समेत पानमें रखकर, ज्वर आनेसे पहले, आध-आध घन्टेमें ३ बार खानेसे इकतरा, तिजारी और चौथैया ज्वर नाश हो जाते हैं।

(३०) भाँग और गुड़की बेरके बारबर गोली बनाकर ज्वर चढ़नेसे दो घण्टे पहले खानेसे चौथैया नष्ट हो जाता है।

शीतज्वर-नाशक नुसखे

(१) इन्द्रजौ, पँवारके बीज, अडूसा, गिलोय, सम्हालू, भृङ्गराज, सोंठ, भटकटैया और अजवायन—इन ९ औषधियोंका काढ़ा

शीतज्वर रूपी वनके लिये अग्निके तुल्य है; यानी यह शीतज्वरको नष्ट करता है।

(२) हरताल और सीपका चूर्ण नौ-नौ भाग और नीलाथोथा १ भाग लेकर, तीनोंको खरलमें डालकर, घीग्वारके रसमें खरल करो। जब सूख जाय, तब आरने उपलोंके गजपुटमें रखकर पकाओ। पकनेके बाद जब खूब शीतल हो जाय, पीसकर, चूर्ण कर लो। इस चूर्णका नाम "भूतभैरव चूर्ण" है। इसमेंसे आधी रत्ती चूर्ण सफेद खाँड़के साथ मिलाकर, सवेरेके समय, सेवन करनेसे शीतज्वर नाश हो जाता है। इस रसके खानेसे किसी मनुष्यको वमन होती है और किसीको नहीं भी होती है। यह रस एक दिनमें ही शीतज्वरको अवश्य नष्ट करता है। इसके ऊपर दोपहरके समय शिखरन और भातका पथ्य देना चाहिये।

नोट— इसीको "शीतभञ्जीरस" भी कहते हैं। हरताल प्रभृतिको शोध लेना।

(३) शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ३ माशे, शुद्ध विष ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ६ माशे और चूक ३६ माशे—सबको महीन घोटकर, मोटी सरसोंके बराबर गोलियाँ बना लो। अगर चूक सूखा हो, तो जँभीरी नीबूके रसमें गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंका नाम "महाज्वरांकुश वटी" है। ज्वर आनेके समयसे ६ घण्टे पहले, या १२ घण्टे पहले, दो-दो घण्टेपर एक-एक गोली शीतल जलके साथ निगलनेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया प्रभृति सब तरहके जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर निश्चय ही आराम हो जाते हैं। चढ़े बुखारमें तथा जिन बुखारोंमें जाड़ा न लगता हो- उनमें ये गोलियाँ न देनी चाहियें। शीतपूर्वक ज्वरोंके लिये ये गोलियाँ काल हैं। इनके सम्बन्ध में हमने अनेक बातें पीछे पृष्ठ १४६—१५२ में लिखी हैं। यह हमारा सैकड़ों बारका परीक्षित नुसखा है; कभी फेल नहीं होता। पारीके दिन, ज्वर आनेसे पहले, ६ गोलियाँ पेटमें पहुँच जानेसे निश्चय ही एक ही पारी में शीतज्वर भाग जाता है। अगर ज्वरमें जहर जियादा होता है, तो

दो पारीमें ज्वर उड़ ही जाता है।

(४) पाढ़की जड़का काढ़ा कालीमिर्च मिलाकर, पिलानेसे शीत-ज्वर नाश हो जाता है।

(५) शतावर और जीरा—इन दोनोंको ६-६ माशे लेकर पीस कर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको छटाँक भर जलमें घोलकर पीनेसे जाड़े का बुख़ार चला जाता है।

(६) तीन माशे खुरासानी अजवायन और ६ माशे मुलेठीका काढ़ा पिलानेसे पारीका ज्वर चला जाता है।

(७) शोधा हुआ कुचला ३ भाग और लौंग १ भाग—इनको अदरखके रसमें घोटकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। हर बार एक गोली शहदमें मिलाकर देनेसे शीतज्वर, आम-मरोड़ी और संग्रहणीमें लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—ज्वर चढ़नेसे पहले १।१ गोली तीन-तीन घण्टेपर देनेसे अच्छा फल होगा। १ दिनमें दो गोलीसे ज़ियादा न देनी चाहिये।

(८) कुचलेके शोधे हुए बीजोंका चूर्ण १ रत्ती या २ रत्ती, शहदमें मिलाकर चटानेसे शीतज्वर और प्रसूतिका रोगमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(९) अफीम १ रत्ती और नीमके पत्ते अढ़ाई—इन दोनोंको खूब पीसकर, गुड़में मिलाकर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। जूड़ी आनेसे तीन घड़ी या सवा घण्टे पहले १ गोली निगलवा दीजिये। ज्वर शुरू होनेको हो; उससे ज़रा पहले १ गोली फिर निगलवा दें। परमात्मा चाहेगा, तो तीसरी गोलीकी ज़रूरत ही न होगी और जूड़ी आराम हो जायगी।

(१०) हुलहुलके पत्ते, दाहिने हाथकी कलाईके जोड़पर, बाहरकी ओर रखकर, उसपर ज़रा-सी फिटकरीकी डली रखकर मज़बूत बाँध दो। वहाँ एक फफोला पैदा होगा और बारीके दिन जूड़ी ज्वर न आवेगा।

(११) भुनी फिटकरी और मिश्री दोनों पीसकर रोगीको खिला दो। इससे जाड़ेका ज्वर आराम होता है। इसकी मात्रा ४ रत्तीसे २ माशे तक है। रोगीका बलाबल विचारकर मात्रा नियत करना। यह नुसखा जाड़ेका बुख़ार आराम करनेमें अच्छा है; पर छातीमें घाव या खाँसी हो, उसे न देना चाहिये।

(१२) तुलसीके पत्ते ६ माशे, कालीमिर्च ४ दाने और पीपल १ दाना—इन सबको पीसकर और एक तोला मिश्री मिलाकर पीनेसे जाड़ेका ज्वर बन्द हो जाता है। ४-५ दिन पीना चाहिये।

(१३) अफ़ीम १ माशे, कालीमिर्च २ माशे और किकरकी लकड़ी का कोयला ३ माशे—सबको पीसकर एकदिल कर लो। रोगीके बला-बल और मिजाजको देखकर, एक माशे या कम ज़ियादा ज्वर आने के समयसे दो घण्टे पहले खिला दो। किन्तु निहार मुँह इस दवाको न देना; यानी कुछ हलका-सा खाना खिलाकर देना। अगर कोरे कलेजे दोगे तो क्षय हो जायगी। दवा खानेके ६-७ घण्टे बाद या ज़ियादा देर बाद खानेको देना, इससे पहले न देना। परमात्मा चहेगा, तो एक ही मात्रामें काम हो जायगा; दूसरी खूराक न खिलानी पड़ेगी और ज्वर न आवेगा।

(१४) कुछ धतूरेके बीज एक कुल्हड़ेमें भरकर, उसके मुँहपर एक मिट्टीका ढकना देकर बन्द कर दो। पीछे उसपर कपड़ा चढ़ा-चढ़ा कर मुलतानी मिट्टी लगा दो—ऐसा बन्द कर दो कि साँस न रहे। इसके बाद, उस कुल्हड़ेको तन्दूर या तेज़ भाड़में रख दो। कुछ देर बाद, कुल्हड़ेके लाल हो जानेपर निकाल लो। शीतल हो जानेपर उसे खोल डालो। भीतर जो राख-सी निकले, उसमेंसे चार माशे या २ माशे राख पूरे जवानको खिला दो। बालकको २ या ४ रत्ती देना। इस उपायसे जाड़ेका ज्वर चला जाता है।

(१५) मकड़ीका एक सफ़ेद जाला साफ़ करके, गुड़में लपेटकर,

बारीसे पहले निकल जानेसे जाड़ा नहीं चढ़ता और ज्वर दूर हो जाता है; पर ३ दिन तक खाना चाहिये।

(१६) आककी कली, जो खिली न हो, गुड़में लपेटकर और गोली बनाकर निगल जानेसे तीन दिनमें जूड़ी ज्वर चला जाता है।

(१७) धतूरा ४ तोले, रेवन्दचीनी २ तोले ८ माशे, सोंठ १६ माशे और बबूलका गोंद १६ माशे—इन सबको कूट-छानकर चने-बराबर गोलियाँ बना लो। जाड़ा बुखार चढ़नेके पहले, बलाबल अनुसार १ या २ गोली खिलानेसे शीतज्वर जाता रहता है।

(१८) ज्वरोंकी बारी रोकनेके लिये जिस तरह कंजेका चूर्ण उत्तम है; उसी तरह रसौत भी उत्तम है। ज्वरकी बारी रोकनेके लिये २ माशे रसौत जलमें घोलकर, जिस दिन ज्वरकी बारी न हो उस दिन पिलाओ। इसी तरह दो-दो माशे रसौत घोल-घोलकर दिनमें तीन चार बार पिलानी चाहिये। इस तरह २-३ दिन पिलानेसे ज्वर नाश हो जाता है। इसके पीनेसे आमाशयमें गरमी मालूम होती है, भूख बढ़ती है और अजीर्ण नाश हो जाता है। यह नुसखा उत्तम है।

(१६) खस, लालचन्दन, धनिया, नरकचूर, सोंठ और गिलोय हरी—ये सब बीस-बीस माशे लो। सबको अधकचरा करके ३ पुड़िया बना लो। एक पुड़ियाको आधसेर जलमें औटाओ; जब डेढ़ छटाँक जल रह जाय, मल-छानकर पिला दो। इस काढ़ेसे जाड़ेका ज्वर आराम हो जाता है।

(२०) ककड़ी खाकर, ऊपरसे खट्टी छाछ पीने और बिछौना बिछाकर धूपमें जा बैठनेसे या सेक करनेसे या बफ़ारा लेनेसे शरीरसे पसीना निकलेगा और शीतज्वर भाग जायगा। जब धूप न हो, तब सेक करनेकी जरूरत है, नहीं तो धूपमें बैठनेसे ही काम हो जायगा।

(२१) करेलेके पत्तोंके रसमें जीरा मिलाकर देनेसे, शीतपूर्वक कफपित्तज्वर आराम हो जाता है।

ज्वरहर वटी

आयुर्वेदमें अनेक रामवाण औषधियाँ वर्णित हैं, उनमें यह "ज्वरहर वटी" भी एक तत्काल फलप्रद महौषध है। पुराने ढँगके वैद्य इसको अधिकतासे व्यवहार करते हैं। इसमें ज्वर-नाशक शक्ति तीव्र है, विशेषकर पालीके ज्वर और शीतज्वरोंमें यह अक्सीरका काम करती है। यद्यपि यह विपाक्त-जहरीली औषधि है; परन्तु कुनैनके समान उतनी हानिकारक नहीं है। इसके प्रस्तुत करनेकी विधि इस प्रकार है :—

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध गोदन्ती हरताल और सोमल खार (संखिया),—इन चारों औषधियोंको समान भाग लेकर, पहले पारे और गन्धक दोनोंको एकत्र खरल करके कज्जली बनाले; फिर उसमें गोदन्ती हरताल और सोमल डालकर एक पहर तक खरल करके धूप में सूखा दे। फिर दूसरे दिन इसी प्रकार अदरखके रसमें खरल करके धूपमें सूखा दे। इस प्रकार सात दिन तक बराबर अदरखके रसमें खरल करे और धूपमें सुखावे। फिर उसकी सरसोंके समान गोलियाँ बनाले।

यह ज्वरकी उत्कृष्ट औषधि है। नवीन ज्वर और साम ज्वर एवं निराम ज्वरमें यह बहुत अच्छा फल करती है। कुनैनके समान इसमें इमली आदि खट्टे पदार्थोंको सेवन करनेसे किसी प्रकारकी हानि नहीं होती। इसके द्वारा ज्वरके बन्द होनेपर रोगी यथेच्छ आहार कर सकता है; किन्तु कुनैन को सेवन करने पर रोगी यथारुचि भोजन नहीं कर सकता।

इस औषधिकी मात्रा रोगीके बल और अवस्थानुसार १ से ४ गोली तक है, किन्तु यह अत्यन्त उग्र है; इस कारण छोटे-छोटे बालकोंको, पित्तकी प्रकृतिवाले और अति दुर्बल मनुष्योंको एवं गर्भवती स्त्रियोंको यह नहीं देनी चाहिए। एक माशे या दो माशे मिश्रीके साथ यह औषधि पीसकर, थोड़े शीतल जलके साथ सेवन करनी चाहिये। कोई कोई वैद्य इसको अदरखके रसके साथ सेवन कराते हैं, किन्तु अदरख

के रसके साथ इसके और भी तीक्ष्ण और गरम हो जानेकी सम्भावना है; यदि ज्वरमें कफकी अधिकता हो, तो दूसरी बात है। परन्तु तो भी खूब सावधानीके साथ ही इसे व्यवहार करना चाहिये।

औषधि सेवनके अन्तमें, रोगीके शिरपर बढ़िया चमेलीका तेल या मगजकद्दूका तेल मलना चाहिए और रोगीको खानेके लिए अनार, अंगूर, शन्तरा, ईखका रस, नारङ्गी का शर्बत आदि पदार्थ देने चाहियें। जो ज्वर बराबर एकसा ही चढ़ा रहता है, कभी विच्छेद नहीं होता यानी कभी नहीं उतरता, उसमें यह औषधि नहीं देनी चाहिये। किन्तु सविराम (जो घटता बढ़ता है) नवीन मलेरियादि ज्वरोंमें दो तीन दिनमें ही यह अपना विलक्षण गुण दिखाती है। एक दिनमें यह दो बार सेवन करानी चाहिये।

यदि भूलसे यह औषधि अधिक मात्रामें सेवन की जाय, तो नीचे लिखे लक्षण होते हैं:—जैसे नाड़ीकी गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है, शरीरमें रोमाञ्च हो आते हैं, बार-बार जम्हाई आती है और बारम्बार वमन होने लगती हैं। और भी बहुतसे हानिकारक लक्षण होते हैं। इसलिये इसको उपयुक्त मात्रासे ही व्यवहार कराना चाहिये। इसको अधिक मात्रासे सेवन करानेपर, रोगीके शरीरपर शीतल उपचार करने चाहिए। रोगीके सिरपर माखन या कच्चा दूध मलना चाहिये और उसको बरफ़ मिलाकर दूध या मलाईकी बरफ, अनार, शन्तरा आदि पदार्थ खानेको देने चाहिये। इस औषधिमें सोमल—संखिया अत्यन्त तीक्ष्ण विष है। यह बहुत थोड़ी ही मात्रासे मनुष्योंको मार देता है। उसी प्रकार गोदन्ती हरताल भी एक तीक्ष्ण पदार्थ है; किन्तु यह दोनों पदार्थ पारे और गन्धककी कज्जलीके साथ मिलकर और अदरखके रसके साथ खरल होनेसे—रासायनिक प्रक्रिया द्वारा—एक और ही नवीन प्रभाव उत्पन्न करते हैं। उस प्रभाव या उस शक्तिके द्वारा

औषधि शीघ्र ही अनेक उपद्रवों सहित नवीन ज्वरको दूर कर देती है। ※ कृष्णलाल वैद्य।

शीत-नाशक उपाय

(जाड़ेके ज्वरोंके लिये)

(१) शीतसे पीड़ित ज्वररोगीको भारी कम्बल उढ़ाओ और तोशक, लिहाफ, गरम ऊनी कपड़ोंसे जाड़ा दूर करो। पुष्ट जाँघोंवाली और बड़े-बड़े नितम्बोंवाली तथा कठोर कुचोंवाली स्त्रीसे आलिङ्गन कराओ। इन उपायोंसे जाड़ा नाश हो जाता है। आलिङ्गन करनेसे जब जाड़ा लगना बन्द हो जाय और रोगीका कामदेव चैतन्य हो, तब स्त्रीको रोगीके पाससे हटा लो। पीछे जब दाह पैदा हो, तब दाह-नाशक उपाय करो।

(२) हरड़, नाई, कुटकी, गिलोय, गूगल, भटेऊ (अभावमें गठिवन), सहदेई, वच और कूट—इन सब दवाओंकी धूप बनाकर देनेसे अथवा इन सबको पीसकर, इनका शरीरपर लेप करनेसे शीतका नाश होता है। अथवा हरड़ आदि नौ दवाओंको पीसकर,—उसमें लवण, जवाखार और नीबूका रस मिलाकर तेल पकानेसे और उस तेलकी मालिश करनेसे भी शीत (जाड़ा लगना) नाश हो जाता है। इस लेपका नाम "कायस्थादि लेप" धूपका नाम "कायस्थादि धूप" और तेलका नाम "कायस्थादि तेल" है। (तेल पकानेकी विधि पुस्तकके अन्तमें देखिये)।

"सुश्रुत" में भी लिखा है, कफवातजनित ज्वरमें शीत-पीड़ित मनुष्यको उष्णवर्गकी औषधियों (जैसे कटफलादि) के लेपसे या और

※ यह नुसख़ा हमने मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिकपत्रसे लोकोपकारार्थ लिया है। "वैद्य" प्रत्येक आयुर्वेद-प्रेमीके देखने लायक पत्र है। उसमें वैद्यक सम्बन्धी अनेक उत्तमोत्तम लेख और अनुभूत योग छपते हैं। मँगानेका पता—मैनेजर "वैद्य" मुरादाबाद, यू० पी०।

गरम उपाय करनेसे शीत शान्त हो जाता है। "आरग्वधादिगण" का काढ़ा करके पिलानेसे भी लाभ होता है।

(३) "लोलिम्बराज" महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं—शीतज्वर से दुखी मनुष्यको अगर अधिक जाड़ा लगे, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहियें:—

१—सोंठ, मिर्च और पीपल मिलाकर माठा या छाछ पिलाओ।

२—शराब पीनेसे परहेज़ न हो, तो शराब पिलाओ।

३—जिसमें धूआँ न हो, ऐसी आगकी भरी अँगीठीसे रोगीको तपाओ।

४—कम्बल या नैपाली कम्बल अथवा रुईकी सौड़ उढ़ाओ।

५—जिस मृगनयनीकी देहमें यौवनके मदका आलस्य हो और जिसकी बड़ी-बड़ी कुचोंपर केशर और अगरका लेप हो रहा हो, उसका खूब आलिङ्गन कराओ।

(४) "वंगसेन" ने लिखा है,—शीतपूर्वक ज्वरवाले रोगीकी वातनाशक चिकित्सा करो। उसे सुखोष्ण (निवाये) जलमें डुबाकर स्नान कराओ और रेशमी तथा ऊनी गरम कपड़े पहनाओ-उढ़ाओ और हवा न हो, ऐसे स्थानमें बैठाकर "काली अगर" की धूप दो अथवा पीछे लिखी हुई "कायस्थादि धूप" दो।

(५) तुलसी, बनतुलसी और सहँजनेके पत्तोंको दहीके तोड़ और गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे भी शीतज्वर नाश हो जाता है।

दाह-नाशक उपाय

(जाड़ेके ज्वरोंके लिये)

(१) शीत मिटते ही जब दाह होने लगे, तब अरण्डके शीतल पत्ते धारण करनेसे दाह शान्त हो जाता है। लिपी हुई ज़मीनपर अरण्डके पत्तोंको बिछा दो। पीछे दाहज्वरवालेके शरीरपर, उन पत्तोंको धारण करो; तो दाह और ज्वर दोनों शान्त हो जायँगे।

(२) मृगनयनी; कठोर कुचों और मोटे-मोटे नितम्बोंवाली,

यौवनके मदसे माती युवतीके स्तनोंपर चन्दन, कपूर और केसर लगाकर दाहवालेसे आलिङ्गन कराओ। जब दाह शान्त हो जाय और रोगी की इच्छा मैथुन करनेकी हो, स्त्रीको हटा लो।

(३) नीमके पत्तोंके काढ़ेमें शहद और राब मिलाकर, दाहवाले को कंठ तक पिला दो और पीछे उँगली डालकर वमन कराओ। इस उपायसे दाह अवश्य नाश हो जाता है।

(४) दाहवालेको चित्त सुलाकर, उसकी नाभिपर काँसी या ताम्बेका औंडा बासन रखकर; उसमें ऊपरसे अत्यन्त शीतल जलकी धारा छोड़ो। इस उपायसे दाह अवश्य नाश हो जाता है।

(५) जिन बागों या मकानोंमें फव्वारे लग रहे हों, उनमें रोगी को रखनेसे, स्त्रियोंका आलिङ्गन करानेसे और खसके पंखेकी हवा करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(६) नीचे लिखे उपायोंमें से कोईसा उपाय करनेसे दाह अवश्य नाश हो जाता है:—

१—सौ बार या हज़ार बार धुले घीकी मालिश कराओ।❀

२—जौके सत्तूको जलमें सानकर लेप करो।

३—बेर और आमलोंके पत्तोंको काँजी या दहीमें पीसकर लेप करो।

४—बेरके पत्तोंको पीसकर और झाग बनाकर लेप करो।

५—नीमके पत्तोंके झागोंका लेप करो ×।

❀ "लोलिम्बराज" महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं:—

सहस्रधौतेन घृतेन जाताभ्यङ्गसदौपः कृशतां बिभर्ति।
अन्यांगनासंगम सादरस्य स्त्रीयेषु दारेषु यथाभिलाषः॥

हज़ार बार धोये हुए घीसे दाह इस तरह नाश हो जाता है; जिस तरह परायी स्त्रीको चाहनेवाले पुरुषकी अभिलाषा अपनी स्त्रीमें नष्ट हो जाती है।

× "लोलिम्बराज" महोदय कहते हैं:—

तृड्दाहमोहाः प्रशमं प्रयान्ति निम्बप्रवालोत्थितफेनलेपात्।
यथा नराणां धनिनां धनानि समागमाद्वारविलासिनीनाम्॥

६—अनारकी छाल; बेरकी छाल, लोध, कैथ और बिजौरा,—इनको जलमें पीसकर और घीमें मिलाकर, सिरपर लेप करो। इससे प्यास और दाह दोनों शान्त हो जायँगे।

(७) कलम्बक, बेरीकी छाल, अनन्तमूल, मुलेठी और चन्दन—इनको काँजीमें पीसकर, घीमें मिलाकर, सिरपर लेप करनेसे प्यास और दाह शान्त हो जाते हैं।

(८) बिजौरे नीबूके स्वरसको, शहद और घीमें मिलाकर सेवन करनेसे तालुशोष (तालवा सूखना) दूर होता है। अगर सिरमें दाह हो, तो इन्हीं चीज़ोंमें सेंधानोन और मिलाकर सिरपर लेप करो।

(९) प्याससे व्याकुल मनुष्यको, शीतल जलमें शहद मिलाकर कंठ तक पिलाओ और फिर वमन करा दो। इसी तरह कई बार कंठ तक पिलाकर वमन करानेसे प्यास शान्त हो जाती है।

पट्तक्र तैल

(१०) पट्तक्र तैल भी दाह सहित ज्वरको नाश करता है; यह परीक्षित है।

सज्जी, सोंठ, कूट, मूर्वा, लाख, हल्दी, सफेद चन्दन और मजीठ, इन सबको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर लुगदी बना लो अथवा काढ़ा बनाकर, इनके बराबर तेल और तेलसे छः गुनी छाछमें तेल पकालो। यही "पट्तक्र तैल" है।

बनानेकी विधि—सज्जी आदि आठों दवाओंको आध-आध पाव ले लो। पीछे इनको जौकुट करलो। रातके समय इन दवाओंको १६ सेर जलमें भिगो दो। सवेरे काढ़ा पकाओ। जब चार सेर जल रह जाय, उतारकर मल-छान लो। पीछे इस काढ़ेको तथा १ सेर काले तिलोंके तेलको तथा ६ सेर गायके माठेको मिलाकर, क़लईदार

नीमके पत्तोंके झागोंके लगानेसे प्यास, दाह और मोह इस तरह नाश हो जाते हैं; जिस तरह वेश्याओंके सङ्गसे धनवानोंके धन नाश हो जाते हैं।

कड़ाहीमें आगपर चढ़ा दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। तेलमात्र रहनेपर उतार लो, पर तेल ज़रा भी जलने न पावे। पाव आधपाव पानी रह जाय, तो हर्ज नहीं। शीतल होनेपर तेलको नितारकर बोतलमें भर लो। इस तेलसे दाह और शीत दोनोंमें लाभ होता है। विषमज्वरी और जीर्णज्वरीके दाह नाश करनेमें यह तेल अक्सीर है। परीक्षित है।

महापट्तक्र तैल

(११) रायसन, सोंठ, कूट, चन्दन, हल्दी, मुलेठी, पीपल, खिरेंटी, लाख, सेंधानमक, सारिवा, मूर्वा, देवदारु, बहेड़ा; खस, समन्दरफेन, सुगन्धित तृण और सुगन्धबाला—इन औषधियोंके साथ ६ गुने तक यानी माठेमें सिद्ध किया हुआ तेल, दाहपूर्व्वक और शीतपूर्व्वक घोर ज्वरको नष्ट करता है। यह "महापट्तक्र तेल" है।

नोट—इन १८ दवाओंको एक-एक छटाँक लेकर, रातको १८ सेर जलमें भिगो दो, सवेरे काढ़ा बना लो और ४॥ सेर पानी रहनेपर उतार लो। पीछे काले तिलोंके १ सेर तेल, ६ सेर माठा और इस काढ़ेको कलईदार कड़ाहीमें *पकाकर तेल बना लो।*

लाक्षादि तेल

(१२) लाक्षादि तेल ज्वर नाश करनेमें मशहूर है। इस तेलसे विषमज्वर और जीर्णज्वरमें बहुत लाभ होता है।

(क) लाखका रस ४ सेर, साफ काले तिलोंका तेल १ सेर और माठा ४ सेर—इन तीनोंको अलग-अलग तैयार रक्खो।

(ख) शतावरी, हल्दी, मुलेठी, रास्ना, असगन्ध; कुटकी, मरोड़फली, रेणुका बीज, चन्दन, नागरमोथा, देवदारु और कूट—इन बारह दवाओंको एक-एक तोला लेकर, पानीमें सिलपर भाँगकी तरह पीसकर लुगदी बनालो।

(ग) चूल्हेके नीचे मन्दी-मन्दी आग जलाओ। ऊपर क़लईदार कड़ाही चढ़ाकर उसमें लुगदी, रखा हुआ १ सेर तेल, लाखका रस ४ सेर और माठा ४ सेर सबको डाल दो और धीरे-धीरे पकाओ। जब

तेलमात्र रह जाय, माठा और लाखका रस जल जाय, उतार लो। शीतल होनेपर, छानकर बोतलोंमें भर लो।

यह "लाक्षादि तेल" सब तरहके विषमज्वरोंको, जीर्णज्वरको तथा पीठ, त्रिकस्थान और देहकी हड़फूटन तथा पीड़ाको शान्त करता है। इनके सिवाय दुर्गन्ध, खुजली, भ्रम तथा वातरोगोंको नाश करता है।

लाखका रस बनानेकी विधि

पहले लाखका रस तैयार कर लेना चाहिये, तब तेल पकानेकी तैयारी करनी चाहिये।

जितनी लाख लो, उसका दसवाँ भाग लोध लो, और लोधका दसवाँ भाग सज्जी लो तथा थोड़ी-सी बेरकी पत्तियाँ लो। पहले लाख को धोकर साफ कर लो। रातके समय लाखको उसके वजनसे १६ गुने जलमें भिगो दो। सवेरे उसे कड़ाहीमें चढ़ाकर ऊपरसे लोध, सज्जी और बेरकी पत्तियाँ डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब चार सेर जल रह जाय, उतार लो। बस, यही "लाखका रस" है। इसे तेल बनाते समय काममें लाओ।

नोट—वज़न इस तरह रखना ठीक होगा। लाख १ सेर लो, लोध ८ तोले लो, सज्जी १० माशे लो और बेरकी पत्तियाँ आध पाव ले लो। १ सेर लाखको १६ सेर जलमें भिगो दो। चौथाई पानी रहनेपर उतार लो। आपको ४ सेर लाखका रस चाहिये और इस हिसाबसे उतना ही रह जायगा।

प्रलेपक ज्वरकी चिकित्सा

(१) इस ज्वरमें "स्वर्ण मालती वसन्त" २ रत्ती, गिलोयका सत्त २ माशे, छोटी पीपर २ रत्ती और छोटी इलायची १ रत्ती—इन सबको शहदमें मिलाकर चटानेसे इस ज्वरमें लाभ होता है। यह नुसखा ताक़त भी बढ़ाता है और जीर्णज्वरको भी नाश करता है। मात्रा कम या ज़ियादा रोग और रोगीका बलाबल विचारकर देनी चाहिये।

(२) "सितोपलादि चूर्ण" के सेवन करनेसे भी यह ज्वर नाश

हो जाता है। इस चूर्णसे मेद बढ़ती है और जीर्णज्वर तथा क्षय आदि नाश होते हैं। इसे शहदमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(३) "वर्द्धमान पिप्पली" के सेवन करनेसे भी यह ज्वर नाश हो जाता है। यह जीर्णज्वर और विषमज्वरपर अमृत है।

नोट—इन तीनों नुसख़ोंके बनाने और सेवन करनेकी विधि, आगे जीर्ण-ज्वरकी चिकित्सामें लिखी है।

(४) पाव भर गायके दूधमें ६ माशे शहद, ८ माशे घी, १५-२० कालीमिर्च और तोले भर मिश्री मिलाकर पिलानेसे खून बढ़ता है। आरम्भमें इतना ही देना चाहिये; पच जानेपर इसी निस्वतसे बढ़ाकर देना चाहिये।

निरोग गायका दूध जल मिलाकर औटाना चाहिये। औटते समय ही मिश्री और घी मिला देना चाहिये। दूध मात्र रह जानेपर उतार-कर शीतल कर लेना चाहिये। शीतल होनेपर, शहद और कालीमिर्च मिलाकर पी जाना चाहिये।

नोट—ये चारों नुसख़े परीक्षित हैं। और उपाय जीर्णज्वरमें लिखे हैं। ध्यान रखना चाहिये, यह ज्वर प्रायः राजयक्ष्मामें ही होता है।

मलेरिया ज्वर

(विषम शीतज्वर)

सब तरहके पुराने ज्वरोंमें मलेरिया ज्वर प्रधान है। इसको आयु-र्वेदमें "विषमशीतज्वर" कहते हैं। इसे डाक्टरीमें इन्टरमिटेण्ट फीवर (Intermittent fever) मार्श फीवर (Marsh fever) अथवा एग्यु (Ague) कहते हैं। यूनानी हिकमतमें इसको "तपे नौबती" कहते हैं। उर्दू पढ़े-लिखे लोग इसे "तपे लर्जा" कहते हैं। साधारण लोग जूड़ी ज्वर या जाड़ेका ज्वर कहते हैं। मारवाड़ी इसे "सिया-ताप" कहते हैं। इसका कारण मलेरिया यानी ज़हरीली हवा है, जो वृक्षोंकी पत्तियों वगैरहके सड़नेसे पैदा होती है। पोखरों या डबोकरोंमें पानी रह जाता है; पीछे उसमें पत्तियाँ और घास-फूस

पड़कर सड़ते हैं, उससे विष पैदा होता है और वही विष हवा और पानीमें मिलकर "मलेरिया ज्वर" पैदा करता है। मलेरिया इन ज्वरों का प्राकृत कारण है और सर्दी लगना, अधिक मिहनत, खराब जल पीना, दूषित या भारी भोजन करना आदि निमित्त कारण हैं। यों तो यह ज्वर सब अवस्थाओंमें आता है, पर जवानीमें विशेषकर आता है। जिस साल गरमी अधिक पड़ती है, उस साल वर्षाकालके बाद मलेरिया बहुत फैलता है। यों तो आजकल मलेरिया सारे भारतमें रहता है; पर बङ्गाल और आसाम इसके मुख्य निवास-स्थान हैं।

इन्टरमिटेन्ट फीवरके भेद

इन्टरमिन्टेन्ट फीवरका असल मतलब बारीका ताप या ज्वर है। इसे यूनानीमें "हुम्मा खिलती" भी कहते हैं। इसमें पहले जाड़ा लगकर बुखार चढ़ता है। इसके तीन भेद हैं:—

(१) कोटीडियन फीवर। इसे वैद्यकमें अन्येद्युः ज्वर, नित्त शीत-ज्वर या एकाहिक ज्वर कहते हैं। यह २४ घण्टे बाद आता है।

(२) टरशियन फीवर। इसे वैद्यकमें तृतीयक ज्वर कहते हैं। बोल चालमें तिजारी कहते हैं। यूनानीमें "हुम्मा गिब खालस" कहते हैं। यह ४८ घण्टे बाद चढ़ता है। इसे "तप्या" भी कहते हैं।

(३) कारटन फीवर। इसे वैद्यकमें चातुर्थिक ज्वर और बोलचाल में चौथैया कहते हैं। यह ७२ घण्टे बाद चढ़ता है।

नोट—२४ घण्टे बाद चढ़नेवाले ज्वरमें मलेरिया-विष बहुत होता है। ४८ घण्टे बाद चढ़नेवालेमें उससे कुछ कम, और ७२ घण्टे बाद चढ़नेवालेमें उससे भी कम मलेरिया-विष होता है।

इन्टरमिटेन्ट फीवरकी तीन अवस्थायें

इसकी तीन अवस्थायें होती हैं –(१) शीतकी अवस्था। (२) गरमी की अवस्था; (३) पसीनोंकी अवस्था। पहली अवस्थामें रोगीको जाड़ा लगता है, रोगी शीतके मारे थरथर काँपने लगता है; दाँतसे दाँत बजने लगते हैं, घरके सारे कपड़े उढ़ानेपर भी शीत नहीं दबता। जाड़ेकी

कँपकँपीके मारे खाट हिलने लगती है। यह हालत ५ मिनटसे ३ घण्टे तक रहती है। किसीको ५ मिनट तक ही जाड़ा लगता है, किसीको ३० मिनट और किसीको दो या तीन घण्टे तक। ३ घण्टेसे अधिक देर तक जाड़ा किसीको नहीं लगता। दूसरी अवस्थाके आरम्भ होते ही जाड़ा लगना बन्द हो जाता है और गरमीका जोर होता है। इस अवस्थामें प्यास बढ़ जाती है। रोगीको शुरू-शुरूमें तो जाड़ेके बाद गरमी बड़ी प्यारी लगती है; परन्तु थोड़ी देर बाद ही वह गरमीसे बेचैन हो जाता है—दाहसे विकल हो जाता है। यह अवस्था १५ मिनट से १ घण्टे तक रहती है। इसके बाद पसीने आने लगते हैं। यही तीसरी और अन्तिम अवस्था है। पहले ललाट—पेशानी और चेहरे पर पसीना आता है और थोड़ी ही देरमें सारे शरीरमें पसीना आने लगता है। इस हालतमें बाहरी हवा लगना बहुत बुरा है। पसीना आनेसे ज्वर उतर जाता है और रोगी उठ बैठता है। बहुतसे बलवान रोगी तो अपना काम करने लगते हैं, पर यह पहली हालतमें ही होता है। जब ज्वर पुराना हो जाता है, रोगी निर्बल हो जाता है; तब वह उठकर काम करने लायक़ नहीं रहता।

नोट—बहुधा यह ज्वर पसीने आकर ही उतरता है, पर किसी-किसीका ज्वर बिना पसीने आये भी उतर जाता है।

कोटीडियन फीवर

(नित्य शीतज्वर)

कोटीडियन ज्वर रोज आता है। इसे ही अन्येद्युः ज्वर कहते हैं। यह ज्वर अक्सर बहुत दिनों तक आया करता है। यह बहुधा सवेरे मालूम होता है। सावन, भादो और क्वार इसके आनेके समय हैं। यह रोज़-रोज़ आता है, लेकिन कभी-कभी तीसरे और चौथे दिन भी आने लगता है। रोज़-रोज़ आनेसे तीसरे चौथे दिन आना शीघ्र आराम होनेकी निशानी है; पर एक दिनमें दो बार चढ़ना; यानी वैद्यकका सततज्वर हो जाना ख़राबीकी निशानी है। जो ज्वर दिन-रात

में दो बार आता है, उसे वैद्यकमें सततज्वर और अङ्गरेज़ीमें "डबल कोटीडिएन" कहते हैं; जब यह रेमिटेण्ट फीवर (Remittent Fever) यानी हर समय चढ़े रहनेवाले ज्वरका रूप धारण कर लेता है; यानी "सन्ततज्वर" हो जाता है, तब और भी खराबीकी अलामत है।

इस ज्वरकी पहली अवस्थामें;—पहले पीठपर ठण्ड लगती है और ज़रा देर बाद सारे शरीरमें ठण्ड लगने लगती है। कभी-कभी एकदम से शीत चढ़ आता है, रोगी काँपने लगता है, दाँत कड़-कड़ बजने लगते हैं। उस समय जीभ तर, साफ, ठण्डी और फीकी रहती है; भूख नाश हो जाती है, प्यास लगती है, जी मिचलाता है, सिरमें दर्द होता है, तशन्नुज या बाँइटे आने लगते हैं, पेशाब बार-बार होता है। खूनकी चाल मन्दी होनेसे नाड़ीकी गति भी मन्दी रहती है। रोए खड़े हो जाते हैं, कान, होठ और गालों तथा उँगलियोंके पोरुओंमें खून अच्छी तरह नहीं पहुँचता, इससे ये नीले-से दीखने लगते हैं। खून शरीरके भीतर इकट्ठा हो जाता है। अगर सिरमें खून इकट्ठा हो जाता है, तो बोझा-सा जान पड़ता है; तन्द्रा और मूर्च्छा—बेहोशी होने लगती है। अगर खून आमाशयमें जमा हो जाता है, तो जी मिच-लाने लगता है और क़य होती हैं। आँतोंमें खूनके इकट्ठा होनेसे दस्त लग जाते हैं, पर जियादातर अजीर्ण रहता है। जाड़ा लगनेसे शरीर का ताप कम नहीं हो जाता। अनेक बार देखनेमें आया है, इस हालत में टेम्परेचर १०५ या १०६ डिग्री तक रहता है। शरीरमें खून जमा हो जानेसे चार और पाँच घण्टे तक जाड़ा लगता रहता है। ज्यों-ज्यों यह ज्वर पुराना होता जाता है, जाड़ा लगनेका समय भी घटता चला जाता है। कितनी ही बार ज्वर आ लेनेपर, पांच सात मिनट जाड़ा लगने पर ही गरमी आ जाती है।

दूसरी अवस्थामें, जाड़ा धीरे-धीरे कम होता जाता है और गरमी बढ़ती जाती है। गरमी बढ़नेसे खूनकी चाल तेज़ हो जाती है और नाड़ी भी शीघ्रगामिनी हो जाती है, चेहरा तमतमा आता है, कनपटी

की नसें फड़कने लगती हैं, सिरमें दर्द बढ़ जाता है, रोगी प्रलाप या बकवाद करने लगता है। चमड़ा रूखा, लाल और गरम हो जाता है। प्यासकी डाकी लग जाती है। रोगी क्षण-क्षणमें जल मांगता है। गिलासको होठोंसे अलग करना नहीं चाहता। इस समय ओकियाँ आती हैं, वमन होती हैं, घबराहट बढ़ जाती है। सर्दीकी हालतमें पेशाब हलका और जियादा होता है; किन्तु इस समय लाल, भारी और कम होने लगता है।

तीसरी अवस्थामें, पहले ललाट और चेहरेपर पसीने आने लगते हैं और फिर सारे शरीरमें पसीने आते हैं। पसीने ज्यों-ज्यों आते हैं, बुखार त्यों-त्यों कम होता जाता है। बुखार बड़ी जल्दी-जल्दी उतरने लगता है। बहुधा १५ मिनटमें २ दरजे ज्वर घट जाता है। जब रोगी आराम होनेवाला होता है, तब किसीको जाड़ा लगता है; पर गरमी नहीं लगती अथवा पसीना नहीं आता—बिना पसीना आये ही ज्वर उतर जाता है।

टरशियन फीवर

(तिजारी)

यह ज्वर तीसरे दिन ४८ घण्टेके अन्तरसे आता है। यूनानीमें इसे "हुम्मागिब स्वालस" कहते हैं और वैद्यकमें "तृतीयक ज्वर" कहते हैं। बोलचालकी भाषामें इसे तिजारी और तय्या कहते हैं। इस ज्वरमें गरमी ज्यादा रहती है। इसका जोर ४ घण्टे तक रहता है। अङ्गरेजी मतानुसार यह २३ घण्टों तक चढ़ा रहता है।

इसका दौरा प्राय: दोपहरके समय, शीतकालमें, होता है। जिनकी तिल्ली बढ़ जाती है, उनको भी यह ज्वर दोपहरके समय जाड़ेके मौसम में सताता है। यह ज्वर भी रूप बदलता रहता है। अगर नित्य आने लग जाय, तो रोगकी वृद्धि समझनी चाहिये और अगर चौथे दिन आने लग जाय, तो रोगकी घटती समझनी चाहिये। कभी-कभी इसकी बारी एक दिनमें दो बार आने लगती है। एक बार सवेरे ज्वर चढ़ता

है; दूसरी बार शामको चढ़ता है। दूसरे दिन ज्वर बिल्कुल नहीं आता। फिर तीसरे दिन उसी तरह दिनमें दो बार चढ़ता है। इस हालतमें इसको डुप्लीकेटेड टरशियन फीवर (Duplicated Tertian Fever) कहते हैं।

क्वारटन फीवर

(चातुर्थिक ज्वर)

इस ज्वरको वैद्यकमें चातुर्थिक ज्वर, बोलचालकी भाषामें चौथैया और अङ्गरेजीमें "क्वारटन फीवर" कहते हैं। यह बुखार एक दिन आकर दो दिन बीचमें नहीं आता; यानी चौथे दिन आता है। यह ७२ घण्टेके विरामके बाद आता है और तीसरे पहरके समय; यानी कोई दो तीन बजेके समय चढ़ा करता है। कभी-कभी इसकी दो बारी बराबर आती हैं। तीसरे दिन ज्वर नहीं आता; चौथे-पाँचवें दिन फिर आता है। इसको डबल क्वारटन फीवर कहते हैं। कभी-कभी हर चौथे दिन यह दिन-भरमें दो बार चढ़ता है; बीचके दो दिन ज्वर नहीं आता; उस दशामें इसे डबल क्वारटन फीवर (Double Quartan Fever) कहते हैं। इस ज्वरमें जाड़ा बहुत देर तक रहता है और गरमी थोड़ी देर रहती है। यह ज्वर पाँच घण्टे तक ज़ोर करता है। यह बड़ा ख़राब ज्वर है। कभी-कभी बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता और बड़ी मुश्किलसे आराम होता है।

रोगकी घटती-बढ़तीकी पहचान

अगर ये ज्वर अपने आनेके समयको बदलने लगें, अपने समयको छोड़कर दूसरे समय आने लगें, तब रोगकी कमी समझनी चाहिये। अगर बुख़ार अपने समयसे पहले बढ़ने लगे, तो रोगकी बढ़ती समझनी चाहिये। जब दवासे फ़ायदा होने लगता है, तब यह पहले समय बदलता है और पीछे एकदम बन्द हो जाता है।

ख़राबीके लक्षण

अगर इन ज्वरोंका सम्बन्ध रस रक्त मांस मेद आदि धातुओंसे हो

जाय; यानी ज्वरका प्रवेश धातुओंमें हो जाय, तो खराबी समझनी चाहिये। ऐसा ज्वर धातुसे अलग करनेसे ही जाता है। जब तक यह प्रबन्ध नहीं किया जाता, गरम-सर्द अनेक तरहकी उत्तमोत्तम औषधियोंसे कोई लाभ नहीं होता।

नोट—हमारे यहाँ सन्ततज्वरको विषमज्वरोंमें माना है, पर असलमें उसके लक्षण विषमज्वरसे मिलते नहीं। इसलिये हमारे यहाँ भी कितने ही आचार्य सन्ततज्वरको विषमज्वर नहीं मानते। डाक्टर लोग इसको रेमिटेण्ट-फीवर (Remittent Fever) कहते हैं। यूनानीवाले इसे दायमी ताप कहते हैं। यह ज्वर बराबर चढ़ा रहता है। सात, दस या बारह दिनमें उतरता है। जब यह आता है, तब ज़रा सर्दी लगती है, जी मिचलाता है और किसी-किसीको पित्तकी क़य होती है। इसमें टेम्परेचर १०६ डिग्री तक होता है। यह बुखार ६ घण्टे तक ज़ोर करके हलका हो जाता है। पीछे पसीने आनेके बाद फिर चढ़ने लगता है। यह ज्वर बिना १२ दिन पीछा नहीं छोड़ता। इसमें मस्तिष्क और दिलमें सूजन आ जाती है, तब बेहोशी होने लगती है। इस ज्वरमें सन्निपात का बड़ा डर रहता है। चिकित्सामें गड़बड़ होनेसे किसी-किसीको सन्निपात भी हो जाता है।

चिकित्सा-विधि

इन शीतज्वरोंमें दो तरहसे चिकित्सा होती है:—(१) जिस दिन ज्वरकी बारी होती है; यानी ज्वरकी हालतमें (२) जिस दिन ज्वर नहीं चढ़ता—रोगी ज्वरसे ख़ाली रहता है।

ज्वर होनेकी हालतमें

अगर खाना खानेके बाद बुखार आ जाय और जी मिचलाता हो, तो किसी वमनकारक औषधिको पिलाकर वमन करा देनी चाहिये। पीछे शीतके समय गरम कपड़े उढ़ा देने चाहियें, शीत-नाशक लेप करना चाहिये, गरम-गरम चाय पिलानी चाहिये, गरम पानी बोतलमें भरकर उसपर कपड़ा लपेटकर सेक करना चाहिये और बफ़ारा देना चाहिये।

जब जाड़ा लगना बन्द हो जाय, तब प्यासका और दाहका इलाज करना चाहिये। प्यास और दाह-नाशक उपाय हमने, ज्वरके उपद्रवों

में, पुस्तकके अन्तमें लिखे हैं। समयपर जो मुनासिब जँचे, वही उपाय करना चाहिये। पसीने निकालने या दस्त करानेकी चेष्टा करनी चाहिये। इस अवस्थामें अरण्डीका तेल पिलाना या कालेदानेकी १-२ मात्रा देना हितकर है।

पसीना आने लगे, तब किसी प्रकारके इलाजकी जरूरत नहीं। इस समय रोगीको हवासे बचाना चाहिये बाहरी हवाके पसीनोंमें लगनेसे रोगीके प्राणान्तकी सम्भावना है।

पसीना लानेकी विधि

गरम-गरम चाय पिलाने या गरम-गरम (निवाया) जल पिलानेसे पसीना आने लगता है। बफारा देनेसे भी पसीना आता है। एन्टी-फेब्रिनकी दो एक खूराक देनेसे वा लोबान अथवा आककी जड़की छालका चूर्ण गुड़में मिलाकर (आगे लिखी हुई विधिसे) २-३ बार देनेसे भी पसीना आकर ज्वर उतर जाता है।

दस्त करानेका उपाय

इस अवस्थामें अरण्डीका तेल (क़ाष्टर आयल Castor Oil) दो तीन तोले पिलानेसे दस्त साफ हो जाता है। अरण्डीका तेल योंही या पाव डेढ़पाव गरम दूधमें या त्रिफलेके काढ़ेमें मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा ६ या ६ माशे कालादाना (हब्बुलनील) घीमें भूँजकर ४ या ६ माशे सोंठका सफूफ या चूर्ण मिलाकर, रोगीको फँका देनेसे और ऊपरसे थोड़ा गरम जल पिलानेसे ४-५ दस्त साफ आ जाते हैं। इस जुलावसे बहुत जल्दी दस्त आते हैं। यह कालेदानेका जुलाब जैलप या जमालगोटेसे कम नहीं है। इतनी विशेषता है कि, इसमें जमालगोटेके अवगुण नहीं हैं। अगर कोठा नर्म हो और दस्त कम कराने हों, तो ६-माशे कालादाना घीमें भूँज और पीसकर फँका देना चाहिये और ऊपरसे गरम जल पिलाना चाहिये; पर सोंठ न मिलानी चाहिये। मात्रा कम और ज़ियादा करना वैद्यका काम है; रोगीकी ताक़त देखकर मात्रा देनी चाहिये। ६ या ८ अथवा दश माशे

काली निसोत शहदमें मिलाकर चटानेसे भी बड़ा उपकार होता है; दस्त हो जाते हैं; बल्कि इस उपायसे ज्वर ही चला जाता है।

इन ज्वरोंमें निसोत और शहद चटाना सर्वोत्तम और सुखदायी उपाय है। इसी तरह कास्टर आयल या रेण्डीके तेलका जुलाब भी नरम है, गर्भवतीको देनेसे भी हानि या खतरा नहीं है। ताक़तवर रोगीको कालेदानेका ६ माशे तक जुलाब देना चाहिये। इस तरह जुलाब देनेसे कोठा साफ होकर ज्वर टूट जाता है। ये जुलाबकी बात हम शीतज्वरोंके लिये ही लिख रहे हैं। जुलाब कमज़ोर रोगीको न देना चाहिये। अगर सख्त जरूरत हो, तो हलका देना चाहिये।

प्यास रोकनेके उपाय

ज्वरकी अवस्थामें प्यास रोकनेके नुसखे ज्वरके उपद्रवमें आगे लिखेंगे, वहां देखकर जो जंचे सो करना चाहिये। अङ्गरेजी क़ायदेसे सोडावाटर पिलाते हैं और बर्फके छोटे-छोटे टुकड़े मुँहमें रखाते हैं। हकीम लोग मुखमें अकरकरा या आलूबुखारा रखाते हैं।

ज्वर उतर जानेकी हालतमें

इन ज्वरोंमें जियादातर दवाएँ, ज्वर उतर जानेकी हालतमें ज्वरकी बारी रोकनेको देते हैं। डाक्टरीमें बारी रोकनेकी सबसे अच्छी दवा कुनैन (Quinine) या सिनकोना फेब्रीफ्यूज (Cincona febrifuge) है। दस्त हो जानेके बाद, टेम्परेचर ९८॥ या ९९ डिग्री होनेपर, सल्फेट आव कुनैन १ या २ रत्तीकी मात्रासे, तीन-तीन घण्टेमें, दूसरी बारी आने तक देना चाहिये। १५-२० ग्रेन या १० रत्ती कुनैन ज्वर चढ़नेसे पहले पेटमें पहुँच जानेसे अच्छा असर होता है। जवानोंको इसकी दो या अढ़ाई रत्तीकी मात्रा है; कमजोरोंको १ रत्ती देनी चाहिये कभी जल्दी आराम करनेकी इच्छासे अधिक कुनैन न खिलानी चाहिये। जियादा कुनैन खानेसे बड़ी गड़बड़ होती है। सबसे अच्छी रीति यही है कि, ज्वरके समयसे पहले ३-४ खूराक कुनैन, तीन-तीन घण्टेमें खिलाकर, जलकी घूँट पिला देनी चाहिये और एक खूराक ज्वर आने

के समयसे १ या १॥ घण्टे पहले अवश्य देनी चाहिये। अगर शीत बहुत लगता हो, तो कुनैनकी मात्रा या कुनैनकी गोली केवल ताज़ा जलमें खिलानी चाहिये। अगर सर्दी कम लगती हो, तो कुनैनकी गोली खिलाकर ऊपरसे थोड़ा-सा शर्बत बनफ़शा अथवा मिश्रीका शर्बत पिला देना चाहिये।

अगर ज्वर आनेके समयका पता न हो, तो सवेरेसे दो-दो घण्टों पर कई मात्रा या गोलियाँ खिलवा देनी चाहिये। अगर कुनैन देते-देते ज्वर चढ़ आवे, तो कुनैन देना बन्द कर देना चाहिये। ज्वर उतर जाने पर, फिर ऊपरकी विधिमे कुनैनका सफूफ या गोलियाँ देनी चाहिये। जिस दिन ज्वरकी वारी न हो; उस दिन भी २ या १ मात्रा कुनैनकी देनी चाहिये। २४ घण्टेके अन्दर १०-१२ ग्रेन या ५-६ रत्ती कुनैन देनी चाहिये। अगर ज्वर पुराना हो, तो कुनैनकी मात्रा अधिक देनी चाहिये। चौथैया बुखारमें अधिक कुनैन देनी चाहिये, किन्तु अन्धाधुन्ध न देनी चाहिये। कमज़ोर रोगीको ज़ियादा कुनैन देनेसे शीत आ जाता है। पहले कुनैनकी अधिक मात्रा देनी चाहिये, पीछे रोगका बल ज्यों-ज्यों घटता जाय, कुनैनकी मात्रा भी कमती करनी चाहिये। एक ही वारीमें भी कुनैनसे ज्वर चला जाता है। अगर विष की अधिकतासे १ पारीमें नहीं भी जाता, तो उसका बल तो घट ही जाता है। २-३ वारीमें तो प्राय: ज्वर छूट ही जाता है। कुनैन निहार मुँह देनेसे अच्छा लाभ करती है।

कुनैनसे हानि

कुनैन वारीके ज्वरोंमें परमोत्तम दवा है। तिल्लीके बढ़ जानेकी दशामें भी इससे बड़ा उपकार होता है; यह ताक़त भी लाती है; मगर ज़ियादा कुनैन सेवन करनेसे सिरमें दर्द होने लगता है, सिर घूमने लगता है, चक्कर आते हैं, आँखोंके आगे पतंगे-से उड़ते हैं, कानोंमें सनसनाहट होती हैं, ओकारियाँ आती हैं, ज़ी घबराता है। अगर

कुनैन देते-देते ऐसे लक्षण नज़र आवें तो कुनैनका देना बन्द कर देना चाहिये।

कुनैनके अभावमें

"सिनकोना" देना चाहिये। इसमें भी कुनैनके समान ही गुण हैं। यह भी ज्वरोंका नाश करता है। इसकी गोलियाँ शहद या गुड़में मिलाकर दी जाती हैं। इसकी मात्रा भी १ या २ रत्तीकी है।

सिनकोनेकी गोलियाँ

सिनकोना फेब्रीफ्यूज ६० ग्रेन, नीबूका रस १ फ्लूइड ड्राम—दोनोंको मिलाकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इनको भी कुनैनकी तरह दो-दो या तीन-तीन घण्टेमें देना चाहिये।

कुनैनकी गोलियाँ

सल्फेट आव् कुनैन २ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट आव् कलमिया १ ग्रेन—दोनोंको मिलाकर १ गोली बनानी चाहिये। इसी तरह चाहे जितनी गोलियाँ बना ली जा सकती हैं। सल्फेट आव् कुनैन ६० ग्रेन (३० रत्ती) और एक्स्ट्रेक्ट आव् कलमिया ३० ग्रेन (१५ रत्ती)—इन दोनोंको मिलानेसे ३० गोलियाँ तैयार होंगी। बलाबल देखकर पूरी या आधी गोली देनी चाहिये। कुनैनकी गोली देनेकी विधि ऊपर लिख आये हैं। कुनैनकी गोलियोंपर चाँदीके वरक चढ़ा देनेसे रोगी कुनैन समझकर घृणा नहीं कर सकता।

कुनैन मिक्सचर

सल्फेट आव् कुनैन ४ ग्रेन, डिल्यूटेड सलफ्यूरिक एसिड १० बूंद, सीरप आव् ऑरेंज १ ड्राम—पानी १ औंस,—इन सबको मिलाकर रोगीको पिलाना चाहिये। यह १ खूराक है। इस तरह तीन-तीन घण्टेके अन्तरसे, ज्वर न होनेकी हालतमें इस मिक्सचरके देनेसे ज्वरमें लाभ होता है। ज्वरकी बारी रुक जाती है।

नोट—कुनैन सलफ्यूरिक ऐसिड यानी गन्धकके तेज़ाबके साथ अच्छा फायदा करती है। पर यह तेज़ाब १० बूँदसे ज़ियादा न देना चाहिये, सीरप ऑव्

ऑरेंज—नारङ्गीका शर्बत मिला देनेसे स्वाद अच्छा हो जाता है। अगर यह नहीं होता, तो सीरप ऑव् लेमन—नीबूका शर्बत भी मिलाकर देते हैं। हमने ऊपर १ खूराक कुनैन मिक्सचरका नुसख़ा लिखा है। अगर ३ खूराक दरकार हों, तो सब चीज़ोंको तिगुना कर लेना चाहिये। अगर चार खूराक दरकार हों, तो चौगुना कर लेना चाहिये। कमज़ोर या बालकोंको मात्रा कम करके देना।

कुनैन और सिनकोनाके अभावमें

आगे लिखी रीतिसे भुनी फिटकरी ४-५ रत्ती मिश्री मिलाकर देनी चाहिये। इससे भी ज्वरकी वारी रुक जाती है। खाँसीवालोंको फिटकरी न देनी चाहिये। जिन्हें फिटकरी न देनी हो, उन्हें तुलसीके पत्ते और कालीमिर्चोंकी गोलियाँ बनाकर खिलानी चाहियें। ये गोलियाँ कुनैनसे कम नहीं हैं। इन गोलियोंसे फौरन वारी रुक जाती है। अगर गरमीका जोर ज़ियादा हो, तो कुनैन न देकर गिलोयका सत्त २ माशे देना चाहिये; अथवा शीतज्वर-नाशक अनेक नुसखे लिखे हैं, उनमेंसे कोई नुसख़ा विचारपूर्वक देना चाहिये।

मलेरियाज्वर-नाशक नुसखे

(१) पित्तपापड़ा, करञ्जके पत्ते, गिलोय, कुड़ेकी छाल, घीग्वारकी जड़, कालीमिर्च, सनाय, नीमकी निबौली, तुलसीके पत्ते, चिरायता, हरड़, पीपल, शुद्ध सिंगरफ,—इन १३ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। पीछे ३ दिन तक नीबूके रसमें खरल करो। खरल हो जाने पर, जब गोलियाँ बनाने लायक हो जाय, माशे-माशे भरकी गोलियाँ बना लो। बुख़ार चढ़नेसे पहिले, दो-दो घण्टेपर, एक-एक गोली सेवन करो। एक दिनमें ३ गोली सेवन करो। इन गोलियोंसे सब तरहके मौसमी या मलेरिया ज्वर आराम हो जाते हैं।

नोट—चढ़े बुख़ारमें मत देना। यह नुसख़ा पं० बंशीधरजी, आयुर्वेद विशारद, बलेटो प्रागपुर जिला काँगड़ाने परीक्षा करके मुरादाबादके 'वैद्य' नामक मासिक-पत्रमें लिखा था।

(२) निगुण्डीके पत्ते ४ तोले, द्रोणपुष्पी या गूमाके पत्ते ४ तोले, गिलोय ४ तोले और अडूसा ४ तोले—इनको मिट्टीके बासनमें डालकर,

ऊपरसे १ सेर जल मिलाकर, आगपर पकाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार लो और साफ कपड़ेमें छान लो। पीछे इस पानीको फिर हाँडीमें डालकर, इसमें हरड़का चूर्ण ४ तोला, पीपरोंका चूर्ण दो तोला और मिला दो और फिर मन्दी-मन्दी आगपर पकाओ। जब खूब गाढ़ा हो जाय, यानी खोए-सा हो जाय, तब उसको उतारकर तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। तीन-तीन घण्टेमें एक-एक गोली शहद के साथ पीसकर खिलाओ। इस दवासे सब तरहका मलेरिया ज्वर, यकृत और प्लीहा ज्वर, पुराना ज्वर, बार बार आनेवाला मन्दज्वर, खाँसी, श्वास आदि निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

नोट—यह नुसख़ा भी किसी वैद्य सज्जनका आज़माया हुआ है। हमने "वैद्य" मुरादाबादसे ही लिया है।

(३) मंडूरकी भस्म, नौसादर और पीपल—इनको बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीसकर रख लो। इस चूर्णको ४ रत्ती सबेरे और ४ रत्ती शामको, गरम जलके साथ खानेसे यकृत सहित मलेरिया-ज्वर चला जाता है।

(४) जवाखार ३ रत्ती और पीपलका चूर्ण ३ रत्ती—दोनोंको ६ माशे पुराने गुड़में मिलाकर, दिनमें दो बार रोज़ खानेसे यकृत और प्लीहा सहित मलेरिया ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—मलेरिया ज्वरमें, यकृतकी सूजन या यकृतमें दर्द होनेपर, अलसीकी पुल्टिश बनाकर गरमागरम बाँधो। जब पहली पुल्टिश शीतल हो जाय, तब दूसरी पुल्टिश बनाकर गरमागरम बाँधो। इस तरह दिनमें दो तीन बार करना चाहिये।

तिल या सरसोंकी खलीको पानीमें पीसकर, उसकी पोटली बनाकर और उसे गरम करके, उससे बारम्बार यकृतको सेंको। इससे भी लाभ बहुत होता है।

अगर पेटमें क़ब्ज़ हो और यकृतमें भारीपन हो, तो "त्रिफलेके काढ़े" में पुराना गुड़ मिलाकर पिलाओ, इससे लाभ होगा।

अगर मलेरिया ज्वरमें प्लीहा या तिल्ली हो, तो यकृतकी तरह तिल्लीपर भी वही अलसीकी पुल्टिस बाँधो अथवा खलीकी पोटलीको गरम करके सेक करो। याद रखो, यकृत दाहिनी ओर होता है और तिल्ली बाँई तरफ होती है।

(५) सोडा और सफेदा काशगरीको एकत्र पीसकर, चार-चार रत्तीकी मात्रासे, बताशेमें रखकर बुखार चढ़नेसे पहले, दो-दो घण्टेमें ३ बार एक दिनमें खिलाओ। इससे इकतरा, तिजारी चौथैया आदि सब तरहके पारीसे आनेवाले ज्वर नाश हो जाते हैं।

(६) दूध ३ तोले, दही ३ तोले, शहद १ तोले, तुलसीके पत्तों का रस ४ माशे और कालीमिर्चका चूर्ण २ रत्ती—सबको मिलाकर ज्वर चढ़नेसे पहले, दो बार चटानेसे शीतज्वरका दौरा रुक जाता है; यानी जाड़ा लगकर आनेवाला ज्वर नहीं आता।

(७) करंजवेकी मींगी ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे और सम्हालू के हरे पत्ते ३ माशे,—इन सबको एकत्र पीसकर ८-१० गोलियाँ बना लो। ज्वरके चढ़नेसे आठ दश घण्टे पहले, एक-एक घण्टेमें एक-एक गोली ताजा पानीके साथ निगलवाओ। बालकको चार या पाँच गोलियाँ दो। पूरी उम्रवालेको ८-१० गोली दो। इनसे मलेरियार ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर पेटमें दर्द हो तो यह गोली न देनी चाहिये।

(८) नीमकी छाल, करंजुवेके पत्ते, नारंगीका छिलका, प्रत्येक औषधि छै-छै माशे लेकर, पाव भर जलमें पकाओ। जब १ छटाँक या चौथाई जल रह जाय, उतारकर मल-छान लो और १ तोला मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसखेको ज्वर चढ़नेसे पहले, चार-चार घण्टेपर, दिनमें दो बार पिलाओ। इससे मलेरिया ज्वर आराम हो जाता है।

(९) गिलोय, नीमकी छाल, पित्तपापड़ा, कुटकी, नागरमोथा, धनिया, खस, निर्गुण्डी और चिरायता—इन ९ दवाओंको समान भाग लेकर, भभकेमें अर्क खिंचवा लो। इस अर्ककी मात्रा जवानके लिये ५ तोलेकी है। १ मात्रामें १ तोला शहद मिलाकर ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, दो-दो घण्टेमें ३ मात्रा पिलाओ। इस नुसखेसे

सब तरहके पारीसे आनेवाले इकतरा, तिजारी, चौथैया वग़ैरह ज्वर आराम हो जाते हैं।

नोट— ये नं० ७, ८ और ६ के नुसख़े पं० नाथूरामजी वैद्यने आज़माकर मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिक पत्रमें लिखे हैं।

(१०) अभ्रक भस्म १ माशे, लोह भस्म १ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष १ माशे, पीपल २ माशे और करंजुवेएकी मींगी २ माशे—इन सबको एकत्र नीबूके रसमें खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो-दो घण्टेमें, एक-एक गोली गरम जलके साथ खिलाओ। इन गोलियोंसे सब तरहके विषमज्वर इकतरा, तिजारी और चौथैया नाश हो जाते हैं।

(११) वंसलोचन ४ माशे, छोटी इलायचीके दाने ४ माशे, गिलोय का सत्त ४ माशे, पीपल ४ माशे और अभ्रक भस्म ४ माशे—इन पाँचोंको अर्क़ गुलाबमें खरल करो और तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वरके चढ़नेसे पहले, हर दो-दो घण्टेमें, एक-एक गोली शहदमें मिलाकर खिलाओ। इन गोलियोंसे मलेरिया, विषमज्वर, विशेषकर पित्तप्रधान विषमज्वर शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(१२) कुनैन १ तोला, वंसलोचन १ तोला; छोटी इलायची १ तोला, मूँगेकी भस्म १ तोला और टार्टरिक एसिड (इमलीका सत्त) १ तोला—इन पाँचोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे गुलाबका अर्क़ दे-देकर खूब खरल करो। पीछे दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ३ घण्टे पहले, एक-एक घण्टेमें एक-एक गोली अर्क़ गावज़वाँ या जलके साथ खिलाओ। अगर गोली देते-देते ज्वर चढ़ आवे, तो गोली देना बन्द करो। दूसरी पारीके दिन ज्वर न होनेकी हालतमें; फिर इसी तरह गोली दो। वैद्यराज पं० रघुनाथजी शर्म्मा, जम्बू काश्मीरसे मुरादाबादके "वैद्य" में लिखते हैं, इन गोलियोंसे फसली ज्वर आना बन्द हो जाता है।

नोट—यद्यपि हमने इस नुसख़ेको आज़माया नहीं है, तथापि हम कई

सकते हैं कि, यह नुसख़ा शीतज्वर या पारीसे आनेवाले ज्वरोंमें अच्छा होगा। इसी तरह हमने भी एक कुनैनका नुसख़ा आज़माया है, उसे नीचे लिखते हैं:—

(१३) कुनैन २ रत्ती, इमलीका सत्त या टार्टरिक एसिड १० रत्ती और मिश्री आधी छटाँक—इन तीनोंको डेढ़ छटाँक जलमें घोलकर, ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो-दो घण्टेमें ३ बार पिलानेसे, हर तरहका शीतज्वर, फसली बुखार, मलेरिया बुखार, पारीसे आनेवाले इकतरा, तिजारी, चौथैया वग़ैरह नाश हो जाते हैं। पहले मिश्रीको सिल पर पीसकर पानीमें घोल लो। जब मिश्री और जल एक दिल हो जायँ, तब उस शर्बतमें कुनैन २ रत्ती और इमलीका सत्त १० रत्ती मिला दो और पिला दो। अगर दवा पिलाते-पिलाते ज्वर चढ़ आवे, तो फिर दूसरी पारीके दिन इसी तरह दो बार और ज़ियादा-से-जियादा तीन बार इसे पिलाओ। ज्वर चढ़ आनेकी हालत में यह दवा हरगिज़ न देना। अगर रोगीका जी घबराये या प्यास लगे, तो मिश्री खिलाकर जल पिलाना या मीठा नीबू चूसनेको देना। ज्वरका समय टल जानेपर, साबूदाना और मिश्री दूधमें या जलमें पकाकर खिलाना। महाज्वरांकुश वटियों और इस नुसख़ेसे हमने शीतज्वर (जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर) के अनेक रोगी शर्तिया आराम किये हैं।

(१४) नीमकी छाल, चिरायता, पटोलपत्र, हरड़, नागरमोथा, करञ्जके पत्ते, लालचन्दन और कुटकी—इन आठ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर अठगुने जलमें रातके समय भिगो दो; सबेरे भभकेसे अर्क़ निकालो। ज्वर चढ़नेसे पहले दो-दो तोला अर्क़, तीन-तीन घण्टेके बाद, तीन बार रोगीको पिलाओ। इस अर्क़से एकही पारीमें फसली बुख़ार आराम हो जाता है। यह मलेरियाके नाश करनेमें कुनैनसे विशेष गुणदायक है। चढ़े हुए ज्वरमें देनेसे ज्वरका वेग तत्काल कम हो जाता है। अगर ज्वरका वेग अत्यन्त तीव्र हो और दिमाग की तरफ ज्वरकी गरमी जियादा बढ़ गई हो, तो लोबानको बारीक पीसकर, दो-दो रत्तीकी मात्रासे, २।३ वार जलके साथ

खिलाओ। इससे चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है। ज्वरकी गरमी तत्काल कम हो जाती है और रोगीको चैन आ जाता है। लेकिन जब बुख़ार ६६ या ६८॥ डिग्री रह जाय, तब यह लोबानकी मात्रा भूलकर भी मत देना। इस दवा में यह विशेषगुण है कि, यह एन्टी-फेबरिनकी तरह शीत नहीं लाती और रोगीको कमजोर नहीं करती।

नोट—यह नुसख़ा लाला घनश्यामलाल वैश्यने "वैद्य" में आज़माकर लिखा है। लाला बाँकेलाल अग्रवाल, बिसौलीवाले चढ़े ज्वरको उतारनेका एक और उपाय लिखते हैं। आपका कहना है, पहले १ छटाँक सौंफको लेकर घीके साथ कड़ाहीमें भून लो। पीछे दूनी चीनी मिलाकर, किसी मोटे कपड़ेमें बाँधकर, ऊपरसे मिट्टीका लेप करके और धूपमें सुखाकर, भाड़की गरम बालूमें दाब दो। दो घण्टे बाद निकालकर और खोलकर, बारीक पीस लो। इसमेंसे तोले-तोले भर चूर्ण गरम जलके साथ एक एक घण्टेमें २।३ बार देनेसे चढ़ा हुआ ज्वर तत्काल कम हो जाता है।

आककी छालको सुखाकर, पीस-कूटकर चूर्ण कर लेने और दो-दो रत्ती चूर्ण गुड़के साथ खानेसे भी चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है; परन्तु ऐसे उपाय, हमारी समझमें मलेरिया ज्वरोंमें जो जाड़ा लगकर चढ़ते हैं करने चाहिये। जो ज्वर स्वभावसे अपनी अवधि तक बने रहते हैं, उनको ज़बरदस्ती इस तरह उतारना ठीक नहीं है। प्रथम तो वे इन दवाओंका असर मिटते ही फिर उसी तरह चढ़ आते हैं; दूसरे और भी ख़तरोंकी सम्भावना रहती है। पर जाड़ेके ज्वरोंमें, जो आप ही अपने समयपर उतरते हैं, समयसे पहले उतारनेमें हानि नहीं। इस तरह ज्वर उतारनेसे रोगीको सुख होता है। हमने इस तरह सैकड़ों बार ज्वर उतारे हैं और पीछे रोकनेकी दवाएँ देकर ज्वर आराम कर दिये हैं। इस तरह पर उतारा हुआ ज्वर फिर अपने समयपर आता है, इन दवाओंसे रुकता नहीं। रुकता है—रोकनेकी दवासे। ऐसी दवाओंसे यही फ़ायदा है, कि रोगीकी पीड़ा कम हो जाती है, उसे विशेष कष्ट नहीं भोगना होता। यही हाल एन्टी-फेबरिनका है।

(१५) शुद्ध वत्सनाभ विष ५ माशे, रससिन्दूर, २ माशे, करञ्जके

की गिरी ६ माशे और सत्त गिलोय १ तोला—इन सबको एकत्र खरल में डालकर, नीबूके रसमें घोटकर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो-दो घण्टेमें, एक-एक गोली शहदमें पीसकर खानेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब प्रकारके पुराने ज्वर दूर हो जाते हैं। यह नुसखा लाला शालग्राम वैश्यका आज़माया हुआ है। हमने "वैद्य" मुरादाबादसे लिया है।

(१६) घीग्वारका कन्द १० माशे, जरा गरम जलमें पीसकर पिलानेसे वमन होकर कफ सूख जाता है और विषमज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) नीमकी छालके काढ़ेमें, धनिया और सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वर या मलेरिया ज्वरमें कुनैनसे अधिक लाभ होता है। परीक्षित है।

(१८) काली तुलसीके ४ पत्ते, बबूलके ४ पत्ते और अजवायन १ माशे—इन सबको जलमें पका और शीतल करके, ज्वर चढ़नेसे पहले बालकको पिलानेसे बालकोंका मलेरिया ज्वर चला जाता है।

(१९) कालाजीरा, एलुआ, सोंठ, कालीमिर्च, बकायनकी निबौली और करञ्जवेकी मींगी—इन सबको जलमें पीसकर चने बराबर गोलियाँ बना लो। तीन-तीन घण्टेके अन्तरसे दिन भरमें ३ गोली खाने से आनेवाला ज्वर रुकता है और चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है।

नोट—यह नुसख़ा परीक्षित है। इसे केवल मलेरिया ज्वरोंमें ही इस्तेमाल करना चाहिये।

(२०) गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, पद्मकाष्ठ और लालचन्दन—इनका काढ़ा पीनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होकर ज्वर नाश होता है। दाह, मुँहसे लार गिरना, प्यास, वमन और अरुचि ये सब विकार इससे नाश होते हैं। इसको "अमृतादि क्वाथ" कहते हैं। यह सब तरहके बुखारोंको नाश करता है। परीक्षित है। अगर इसका भभकेसे

अर्क़ खींच लिया जाय, तब तो कहना ही क्या ? हमने अर्क़से बहुत लाभ उठाया है।

(२१) छिली मुलेठी ६ माशे और खुरासानी अजवायन ३ माशे—इनका काढ़ा, ज्वरकी पारी आनेसे पहले, पीनेसे पारीका ज्वर निश्चय ही आराम हो जाता है।

(२२) शतावर ६ माशे और जीरा ६ माशे—इनका चूर्ण १ छटाँक जलमें घोलकर पीनेसे, कई दिनमें, जाड़ेका ज्वर ज़रूर चला जाता है। उत्तम नुसख़ा है।

प्लीहा-नाशक नुसखे

बुख़ारके बहुत दिन शरीरमें रहनेसे, मलेरियाके बुख़ारमें या मलेरियाकी जगहमें रहनेसे अथवा मीठे और चिकने प्रभृति पदार्थोंसे खून बढ़कर प्लीहा होती है। पेटमें बाईं तरफ ऊपरकी ओर प्लीहा या तिल्ली होती है। जब उसमें कुछ विकार नहीं होता, तब वह हाथसे मालूम नहीं होती; पर बड़ी होनेसे कोखके बाईं ओर हाथ लगते ही मालूम होती है। इस रोगमें सदा मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है, या रोज किसी न किसी समय ज्वर आया करता है। बहुधा शीतज्वर होता है। उस समय तिल्लीकी जगहमें दर्द होता है, दस्त साफ नहीं होता, शरीर दुर्बल हो जाता है, प्यास लगती है, वमन होती है, मुँहका जायका ख़राब हो जाता है, आँखोंके सामने अँधेरी आती है, आँख और उँगलियाँ पीली-पीली-सी हो जाती हैं, पेशाब कम और लाल होता है, भूख मारी जाती है, बढ़ जानेपर बेहोशी प्रभृतिके भी लक्षण होते हैं। इसमें ज्वर और तिल्लीकी दवा मिलाकर देनी चाहिये। अगर ज्वरका जोर हो, तो तिल्लीकी दवा बन्द करके ज्वरका इलाज करना चाहिये। पीछे ज्वर जानेपर तिल्लीका इलाज करना चाहिये।

(१) नागफनीके पत्तोंको चाक़ूसे अच्छी तरह छीलकर, छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। एक तोला टुकड़ा सवेरे और एक तोला शामको

नमकके साथ खाओ। इस उपायसे प्लीहा शीघ्र ही कम हो जाती है। एक परमहंस बाबा कहते हैं कि, आसाममें मलेरियाके सबबसे हमारी तिल्ली बढ़ गई, अनेक उपाय किये, पर लाभ न हुआ। इस उपायसे ५-७ दिनमें हमें बिल्कुल आराम हो गया।

(२) आकके पत्तोंमें नमक मिलाकर राख कर लो। पीछे उस राखको बलाबल अनुसार शहदके साथ सेवन करो। इससे घोर तिल्ली भी घटकर ठीक हो जाती है।

(३) शहदमें पीपलका चूर्ण मिलाकर कुछ दिन लगातार खानेसे ताप-तिल्ली, हिचकी, श्वास, खाँसी और ज्वर निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) अगर गरमी या रक्तकोपसे तिल्ली हो, तो "इस्लीम" नामकी नसका बाईं ओरसे खून निकलवा दो, आराम हो जायगा।

(५) दो तोला अञ्जीर सिरकेमें डुबोकर, सवेरे-शाम लगातार कुछ दिन खाने से तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है।

(६) हमारा "अकबरी चूर्ण" ७, १४ या २१ दिन खानेसे तिल्ली निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) दो रत्ती नौसादर रोज़-रोज खानेसे तिल्ली गल जाती है। परीक्षित है।

(८) जामुनका सिरका पिलानेसे भी तिल्ली नष्ट हो जाती है।

(९) अगर तिल्लीवाले रोगीके बदनमें खून बहुत ही कम हो, तो पावभर गायका दूध औटाकर, नीचे उतारकर, उसमें ६ माशे घी, १० माशे शहद, २ तोले मिश्री, १ रत्ती पीपल और ५ कालीमिर्च—सबको मिलाकर पिलानेसे खून भी बढ़ेगा और तिल्ली भी आराम होगी। परीक्षित है।

तेरहवाँ अध्याय

धातुगतज्वरोंके लक्षण *

रसगतज्वरके लक्षण

गुरुता हृदयोत्क्लेशः सदनंछर्द्यरोचकौ ।
रसस्थे तुज्वरोलिंगंदैन्यं चास्योपजायते ॥

शरीरमें भारीपन, हृदयमें रहनेवाले दोषके बढ़नेसे जी मिचलाना, गिरा-सा रहना, उबकाई, अरुचि और दीनता ये रसगत ज्वरके लक्षण हैं। "चरक" में—शीत, उद्वेग, शरीरका रह जाना, अँगड़ाई और जम्हाइ आदि लक्षण लिखे हैं।

नोट—इस धातुमें ज्वर हो तो लंघन कराना हित है।—"सुश्रुत"।

रक्तगतज्वरके लक्षण

रक्तनिष्ठीवनं दाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ ।
प्रलापःपिडिका तृष्णारक्तं प्राप्तेज्वरे नृणाम् ॥

खून थूकना, दाह होना, बेहोशी, वमन, भ्रम, प्रलाप, शरीरमें फुन्सी वग़ैरह होना और प्यास जियादा लगना—ये रक्तगत ज्वरके लक्षण हैं। "चरक" में वारम्बार फुन्सियोंका होना और देहका रङ्ग लाल होना अधिक लिखा है।

---

* "भावप्रकाश" में लिखा है,—यद्यपि रस नामक धातुमें रहनेवाला ज्वर पहले कहा हुआ सन्ततज्वर ही है और इसी तरह अन्य धातुओंमें रहनेवाले ज्वर भी विषमज्वरोंमें कहे गये हैं, तथापि उन धातुओंमें रहनेवाले ज्वरोंके लक्षण और चिकित्साको अनुक्रमसे कहनेके लिये यहाँ लिखते हैं।

नोट—रक्तगतज्वरमें सेचन, शमन, लेपन तथा खून निकलवाना हित है—"सुश्रुत"। "चरक" में लिखा है, ज्वर रक्तस्थ होनेसे (रक्तपित्तज्वरमें) शीतल परिषेक, लेप और संशमन औषधि हितकर हैं।

मांसगतज्वरके लक्षण

पिंडिकोद्वेष्टनं तृष्णा सृष्टमूत्रपुरीषता।
ऊष्मांतर्दाहविक्षेपौ ग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे॥

पिंडलियोंमें दण्ड वग़ैरह लगनेकी-सी पीड़ा होना, प्यास लगना, मल-मूत्र ज़ियादा उतरना, शरीरके भीतर गरमी और दाहका होना, हाथ-पाँव इधर-उधर फेंकना और ग्लानि,—ये मांसगतज्वरके लक्षण हैं। "चरक" में अत्यन्त अन्तर्दाह, मलकी रुकावट और दुर्गन्ध मारना ये लक्षण अधिक लिखे हैं।

नोट—"सुश्रुत" ने मांसगतज्वरमें तीक्ष्ण विरेचन—तेज़ जुलाब देनेकी राय दी है। "चरक" ने लिखा है,—ज्वर मांसस्थ हो और मेदस्थ हो (पिड़िका-जनित ज्वर हो) तो विरेचन देना और उपवास कराना चाहिये।

मेदोगतज्वरके लक्षण

भृशंस्वेदस्तृषामूर्च्छाप्रलापश्छर्दिरेवच।
दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदःस्थेचासहिष्णुता॥

अत्यन्त पसीने आना, अधिक प्यास लगना, मूर्च्छा, प्रलाप, वमन, देहमें बदबू आना, ग्लानि, अन्नमें अरुचि, सहन-शक्तिका अभाव,—ये लक्षण मेदोगतज्वरके हैं।

नोट—मेदोगतज्वरमें पसीने इसलिए ज़ियादा आते हैं कि पसीना मेदका मैल है। दुर्गन्ध ऐसी ख़राब आती है, जो स्वयं अपने तईं बुरी मालूम होती है। "सुश्रुत" में कहा है,—इसमें मेद-नाशक यानी शोषण उपाय हितकर हैं।

अस्थिगतज्वरके लक्षण

भेदोऽस्थ्नांकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दिरेवच।
विक्षेपणंचगात्राणामेतदस्थिगतेज्वरे॥

हड्डियोंमें भेदनेकी-सी पीड़ा, कण्ठमें गरमी, पेट बोलना, श्वास, दस्त, वमन, हाथ-पैर इधर-उधर पटकना—ये लक्षण अस्थिगत ज्वरके हैं।

नोट—"सुश्रुत" ने कहा है—अस्थिगतज्वरोंमें वात-नाशक विधि, तेलकी मालिश, पसीने दिलाना और मर्दन वग़ैरह करना चाहिये। "चरक" ने कहा है,—अस्थि और मज्जागत ज्वरोंमें (धनुस्तंभ पक्षाघात प्रभृति वातसंसृष्ट ज्वरों में) निरूह और अनुवासन वस्तिका प्रयोग करना चाहिये।

मज्जागतज्वरके लक्षण

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा।
अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे॥

अंधेरी आना, हिचकी, खाँसी, जाड़ा लगना, वमन, भीतर दाह का होना, महाश्वास और मर्मस्थानोंमें फोड़नेकी-सी पीड़ा—ये लक्षण मज्जागतज्वरोंके हैं।

नोट—यह ज्वर असाध्य या अचिकित्स्य—लाइलाज है। इसमें बाहर शीत और भीतर दाह रहता है। इस रोगवाला रोगी नहीं बचता। अगर किसी तरह बच भी जाता है, तो शेषमें पक्षाघात रोगसे मर जाता है। "सुश्रुत" ने कहा है,—मज्जा और शुक्रगत ज्वरवालेका इलाज न करना चाहिये।

शुक्रगतज्वरके लक्षण

मरणंप्राप्नुयात्तत्र शुक्रस्थानगतेज्वरे।
शेफसःस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यचविशेषतः॥

रसादि धातुगत ज्वरके शुक्र-स्थानमें पहुँचनेसे रोगीकी मृत्यु होती है*। इस ज्वरमें लिंग जकड़ जाता है या जड़ हो जाता है और वीर्य अधिकतासे वहता है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है,—रक्त आदि पदार्थोंका थोड़ा-थोड़ा स्राव होता है।

---

* वीर्यके स्थानमें ज्वरके जानेसे मृत्यु होती है, यह बात ठीक नहीं है; क्योंकि वीर्य तो सारे शरीरमें रहता है। वीर्यके रहनेके मुख्य स्थानोंमें जो वीर्य है, उसमें ज्वरके जानेसे मृत्यु होती है, यह मतलब है।

साध्यासाध्यता

"चरक" में लिखा है,—ज्वर—रस और रक्तके आश्रय होनेसे साध्य होता है। मेद, मांस, अस्थि और मज्जागत होनेसे कृच्छ्रसाध्य होता है। शुक्रमें होनेसे असाध्य होता है।

चिकित्सकके ध्यान देने योग्य विषय

"चरक" में लिखा है,—शीतल, उष्ण, स्निग्ध और रुक्ष आदि क्रिया करनेसे अगर ज्वर न छूटे, तो जानना चाहिये कि, यह ज्वर केवल दोषाश्रित ही नहीं है, शाखाश्रित भी है; अर्थात् इसका सम्बन्ध रक्त आदि धातुओंसे भी है। इस प्रकारका ज्वर फ़स्द खुलानेसे जाता है।

जब आप गरम और सर्द, चिकना और रूखा प्रभृति सब तरह का इलाज कर हारें, पर ज्वर न जाय; तब तो कम-से-कम आपको इस बात पर नज़र दौड़ानी चाहिये कि, कहीं ज्वरका सम्बन्ध धातुओं से तो नहीं हो गया है; क्योंकि किसी धातुसे पूरा सम्बन्ध किये बिना ज्वर बहुत दिनों तक नहीं रह सकता। जिस धातुमें ज्वर हो, उस धातुसे उसका सम्बन्ध अलग करनेसे ही वह भाग जायगा।

चिकित्सा

सप्तधातुगतज्वर-नाशक नुसखे

(१) आमला, जीरा, पीपल, चीतेकी जड़, कौंचके बीज और हरड़—इन सबको एक-एक तोले लेकर कूट-पीसकर छान लो। पीछे इस चूर्ण में गिलोयका सत्त १ तोला मिलाकर शीशीमें रख दो। इस चूर्णको शहद में मिलाकर चटाने और ऊपरसे गायका दूध पिलानेसे सब तरह के धातुगतज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—एक सालके पुराने गुड़में चूर्ण मिलाकर गोलियाँ बना लेने और गोली खिलाकर, ऊपरसे गायका दूध पिलानेसे भी लाभ होता है।

(२) शहद ३ माशे, घी ६ माशे, पीपल १ तोले, चीनी २ तोले और दूध ८ तोले, दालचीनी ६ रत्ती, तेजपात ६ रत्ती, छोटी इलायची ६

रत्ती और नागकेशर ६ रत्ती—इनमेंसे शहदको अलग रखकर, बाक़ी सबको मिला और पकाकर खोआ-सा कर लो। खोआ हो जानेपर उतारकर, उसमें शहद मिलाकर लड्डू बना लो। अपने बलके अनुसार हर दिन एक लड्डू खानेसे वीर्यगतज्वर, दमा, खाँसी, पीलिया, वीर्यक्षय और अग्निकी मन्दता—ये आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—वीर्यगतज्वर आराम नहीं होता, पर इस नुसख़ेके कुछ दिन पच जानेसे कई रोगी आराम होते देखे गये हैं।



चौदहवाँ अध्याय

जीर्णज्वरके लक्षण

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

योो द्वादशभ्यो दिवसेभ्य ऊर्ध्व दोषत्रयेभ्यो द्विगुणेभ्य ऊर्ध्वम् ।
नृणां तनौ तिष्ठति मन्दवेगो भिषग्भिरुक्तो ज्वर एष जीर्णः ॥

जो ज्वर बारह दिनके बाद और तीनों दोषोंकी अवधिके दूने दिनोंके उपरान्त मनुष्योंके शरीरमें मन्दा-मन्दा रहता है, उसे वैद्य "जीर्णज्वर" कहते हैं।

खुलासा—यह है,—जो ज्वर बारह दिनके उपरान्त रहे, वातज्वर चौदह दिनके बाद रहे, पित्तज्वर २० दिनके बाद रहे और कफज्वर २८ दिनके बाद रहे और ज्वरका वेग मन्दा हो, तो वह "जीर्ण-ज्वर" है।

"वङ्गसेन" में लिखा है:—

न शाम्यति ज्वरो यश्च पक्षादूर्ध्वं शरीरिणाम् ।
मन्दवेगानुचारी च स ज्ञेयो जीर्णतां गतः ॥

जो ज्वर पन्द्रह दिनके पीछे भी शान्त नहीं होता और मन्द वेगसे बना रहता है, वह पुराना हो जाता है; यानी पन्द्रह दिनोंके बाद ज्वर जीर्ण हो जाता है।

"वैद्यविनोद" में लिखा है:—

सप्तत्रय दिनादूर्ध्वं तनुतां प्राप्य तिष्ठति ।
प्लीहाग्निमांद्यं तनुते स जीर्णज्वर उच्यते ॥

जो ज्वर २१ दिनके बाद सूक्ष्म होकर शरीरमें रहता है और सीहा तथा मन्दाग्निको बढ़ाता है, वह "जीर्णज्वर" कहलाता है।

जो ज्वर रोज़ मन्दा-मन्दा बना रहता है, जिसमें रूखापन, सूजन, शरीरकी जकड़न और अत्यन्त कफ होता है, उसे "वातबलासक जीर्ण-ज्वर" कहते हैं। यह ज्वर कष्टसाध्य होता है।

नोट—जीर्णज्वर रोगीको कभी भी लंघन न कराने चाहियें, क्योंकि लंघन या उपवाससे रोगी कमज़ोर हो जाता है और ज्वर बलवान हो जाता है। हाँ, अगर जीर्णज्वरमें कुपथ्य सेवन करनेसे दोष फिर कुपित हो जायँ, तो पहले लंघन कराकर, फिर पूर्वोक्त ज्वरकी चिकित्सा करनी चाहिये। ऐसे मौके पर भी ज़ियादा लंघन न कराने चाहियें। कहा है—

जीर्णज्वरी नरः कुर्य्यान्नोपवासं कदाचन।
ज्वरक्षीणस्य नहितं वमनं न विरेचनं।
कामंतु पायसंतस्य, निरूहैर्वाहरेन्मलान् ॥

जीर्णज्वर-रोगीको उपवास न कराना चाहिये। ज्वरसे क्षीण हुए रोगीको वमन और विरेचन भी हितकारी नहीं हैं। उसे इच्छानुसार दूध पिलाना चाहिये और निरूह वस्ति (पिचकारी या एनीमा) से मलको निकाल देना चाहिये।

धातुगत और जीर्णज्वरकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) रसगतज्वरमें वमन और लंघन कराने चाहिये। रक्तगत-ज्वरमें जलसे सींचना, संशमन औषधि, लेप और रक्तमोक्षण यानी फ़स्द आदिसे खून निकलवाना हित है। मांसगतज्वरमें तीक्ष्ण विरेचन कराना चाहिये। मेदगतज्वरमें मेद-नाशक चिकित्सा करानी चाहिये। अस्थिगतज्वरमें वात-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये तथा वस्ति कर्म अभ्यङ्ग—तैल मर्दनादि एवं उद्वर्तन—ये सब करने चाहिये। मज्जा और शुक्रगतज्वररोगियोंकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये। ये रोगी मर जाते हैं। रस, रक्त, मांस और मेदगत ज्वर साध्य हैं; अस्थिगत और मज्जागत कष्टसाध्य हैं; शुक्रगतज्वर असाध्य है। जब शुक्रके स्थान

में ज्वर पहुँच जाता है, तब प्राय: रोगी मर ही जाता है।

(२) जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन करने यानी नास देनेसे सिरका भारीपन और सिरका दर्द नाश हो जाता है, इन्द्रियोंमें चैतन्यता और रुचि होती है; इसलिये जीर्णज्वरमें शहद या तेलके द्वारा नस्य अवश्य देनी चाहिये। जैसे:—हींग और सेंधानोनको पुराने घीमें मिलाकर नास लेनेसे जीर्णज्वरीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(३) नस्य, लंघन, चिन्ता, मैथुन, भय, शोक और क्रोध प्रभृति कारणोंसे तथा कफके अत्यन्त क्षय हो जानेसे निद्रा नाश हो जाती है। जीर्णज्वरमें रोगीका कफ क्षय हो जाता है, रूखेपनके मारे वायु कुपित रहता है, इसलिए रोगीकी नींद मारी जाती है। उस दशामें रोगीको नींद लानेके लिये ऊपरी उपायोंसे काम लेना चाहिये। नींद लानेवाले अनेक परीक्षित उपाय हम पहले पृष्ठ ११६—१२१ में लिख आये हैं।

(४) क्षीणकफवाले, जीर्णज्वरवाले, अल्पदोषवाले, प्यास और दाहसे पीड़ितको दूध पिलाना अत्यन्त हितकारी है, परन्तु वही दूध नवीन ज्वरमें विष है। जीर्णज्वरमें ज्वरकी गरमी और शरीरके रूखे-पनके कारण वायु कुपित हो जाता है, उसके शान्त करनेके लिये उसी तरह घृत पिलाना चाहिये, जिस तरह जलते हुए घरकी आग बुझाने को जल सींचते हैं।

(५) ज्वरसे क्षीण मनुष्यको न वमन हित है न विरेचन हित है। ऐसे रोगीको इच्छानुसार दूध पिलाना चाहिये अथवा निरूह वस्ति द्वारा मल निकालना चाहिये। ज्वरके शान्त हो जानेपर भी यदि अरुचि, अङ्गग्लानि और विवर्णता हो तथा अङ्गमें मलादिक जम गये हों, तो अनुबन्धके भयसे वमन विरेचन द्वारा सफाई कर देनी चाहिये।

(६) सब तरहके जीर्णज्वरोंमें जब वातादि दोष पक्वाशयमें प्राप्त हो जायँ, तब स्नेह वस्तिका प्रयोग करना चाहिये।

(७) चन्दनादि तैल, नारायण तैल और लाक्षादि तैल ये तीनों

तैल जीर्णज्वरमें अच्छे हैं। इनकी मालिशसे बहुत फायदा होता है। "चन्दनादि तैल" शोषमें बड़ा लाभदायक है। "नारायण तैल" वादी के रोग नाश करनेमें रामबाण है। "लाक्षादि तैल" विषमज्वरोंपर अच्छा है। हमने लाक्षादि तैलको जीर्णज्वर रोगियोंके मलवाकर बहुत लाभ उठाया है। जीर्णज्वरी रोगीके इनमेंसे विचारकर, किसी तेलकी मालिश अवश्य करानी चाहिये।

(८) आप पहले जो क्रिया करें उससे लाभ न दीखे, तो सिरपर हाथ रखकर न बैठे रहें, दूसरी क्रिया करें; परन्तु जब पहली क्रियाका वेग शान्त हो जाय, तब दूसरी क्रिया करें; क्योंकि संकर या मिली हुई क्रिया रोगीके हक़में हानिकारक होती है।

(६) जीर्णज्वरमें कुपथ्य सेवन करनेसे अगर वातादिक दोष फिर बढ़ जावें, तो पहले लंघन कराकर ज्वरका इलाज करना चाहिये; पर जीर्णज्वरसे क्षीण हुए रोगीके बलका ध्यान अवश्य रखना चाहिये।

(१०) अगर रोगी बलवान हो, दोष थोड़े हों और उपद्रव न हों; तो ज्वरको साध्य समझकर इलाज करना चाहिये। ऐसा रोगी बिना कष्टके आराम हो जाता है।

शरीरके बाहर अत्यन्त सन्ताप हो और प्यास वग़ैरह उपद्रव कम हों, तो बहिर्वेग ज्वरके लक्षण समझने चाहियें। यह ज्वर सुखसाध्य है।

अगर शरीरके भीतर दाह हो, प्यास बहुत ही हो, रोगी व्यर्थ बकता हो, श्वास हो, भ्रम हो, सन्धियों और हड्डियोंमें दर्द हो, पसीने न आते हों, वायु अच्छी तरह न सरती हो और मल न उतरता हो, तो अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण समझने चाहियें।

(११) जिस तरह कालके कारणसे दोषोंकी प्रवृत्ति और वृद्धि होती है; उसी तरह उपशय और अनुपशयको भी समझना चाहिये। जिन आहार-विहारादिसे दोष नष्ट हो, वह उपशय है और जिन आहार-विहारादिसे दोष बढ़े वह अनुपशय है। उपशय और अनुपशय का खयाल रखनेसे चिकित्सकको बड़ा भारी सुभीता होता है। रोगीको

किस वस्तुसे लाभ होता है, किससे हानि होती है, इसपर नज़र र से रोग-नाशकी चाबी मिल जाती है,—भूल-सुधार हो जाता है।

(१२) ज्वरमें ऋतुके अनुसार दूष्यता और प्रमेहमें दोषोंके समा दूष्यता और रक्तगुल्ममें पुरानापन—ये सुखसाध्यताके चिह्न हैं।

(१३) जीर्णज्वरवालेको दाह हो, तो "षट्तक्र तैल" की मालिश करानी चाहिये; इससे दाह और शीत दोनों नाश हो जाते हैं। "प्रह्लादन तैल" भी दाह नाश करनेमें उत्तम है। ये दोनों तेल दाहपर आज़माये हुए हैं। सिरमें दर्द हो, तो नस्य या लेप करना चाहिये। अगर दस्त होते हों, तो ज्वरातिसारके नुसखेसे काम लेना चाहिये, न कि अतिसार-नाशकसे। हिचकी, खाँसी, श्वास प्रभृति उपद्रव हों, तो उनका यथोचित उपाय करना चाहिये। ज्वरके दशों उपद्रवोंके नाश करनेके उपाय हम पुस्तकके अन्तमें लिखेंगे। अपनी बुद्धिसे विचारकर, जहाँ जो उचित हो, वहाँ वही नुसखा काममें लाना चाहिये। हमने जीर्णज्वरके छोटे-बड़े जितने नुसख़े लिखे हैं, प्रायः सभी परीक्षित हैं; पर किस रोगीको कौनसा नुसखा देना चाहिये, यहाँ थोड़ी अक़्लकी जरूरत है।

(१४) जो जीर्णज्वरी रोगी काढ़े तथा वमन विरेचनसे आराम न हो, उसे औषधियोंके बने घी पिलाकर आराम करना चाहिये और "लाक्षादि तैल" की मालिश करानी चाहिये। अगर जीर्णज्वरवाला दाहसे दुखी हो, हाथ-पैरके तलवे जले जाते हों, तो उसके बदनमें या जहाँ-जहाँ दाह हो, "षट्तक्र तेल" की मालिश करानी चाहिये। "षट्तक्र तैल" में तेलसे तक्र छै गुना गिरता है, इसीसे उसे "षट्तक्र तैल" कहते हैं। षट्तक्र तैल जीर्णज्वरवालेके दाह और शीत दोनोंको आराम करता है। उसके बनानेकी विधि पीछे लिख आये हैं।

(१५) ज्वर किसी धातुसे अपना पूरा सम्बन्ध किये बिना बहुत दिनों तक नहीं रह सकता है। इसलिये जब देखो कि, गरम-सर्द उत्तमोत्तम औषधियाँ देनेसे भी ज्वर नहीं जाता, तब पता लगाओ कि,

ज्वरका सम्बन्ध रस, रक्त, मांस, मेद आदि किस धातुसे है। पता लगनेपर ऐसी चिकित्सा करो, जिससे ज्वरका सम्बन्ध धातुसे छूट जाय। धातुसे सम्बन्ध छूटते ही ज्वर आराम हो जायगा।

जीर्णज्वरकी चिकित्सा

वर्द्धमानपिप्पली

(१) पहली विधि—गायके दूधमें पाँच पीपल डालकर, क़लईदार बर्तनमें पकाओ। जब दूध औट जाय, तब पीपल खाकर ऊपरसे दूध पी जाओ अथवा पीपल न खाकर खाली दूध पी जाओ। दूसरे दिन ३ पीपल बढ़ाओ यानी ८ पीपल डालकर दूध औटाओ और दूधको पी जाओ। तीसरे दिन ११ पीपल, चौथे दिन १४ पीपल, पाँचवें दिन १७ पीपल, छठे दिन २० और सातवें दिन २३ पीपल औटाकर पीओ। पीछे आठवें दिनसे तीन-तीन पीपल घटाकर दूधमें डालो; यानी पहले दिन २० पीपल, दूसरे दिन १७, तीसरे दिन १४, चौथे दिन ११, पाँचवें दिन ८, छठे दिन ५ और सातवें दिन ३ पर आ जाओ। सात दिन ५ से आरम्भ करके, तीन-तीन पीपल रोज़ बढ़ाकर दूधमें डालो और २३ तक पहुँचनेपर फिर तीन-तीन पीपल रोज़ घटाकर दूधमें डालो। यही "वर्द्धमान पिप्पली" है। इसके सेवनसे जीर्णज्वर, खाँसी, पीलिया, गुल्म, बवासीर, प्रमेह, अग्निमान्द्य और वातरोग—ये रोग दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

दूसरी विधि—पहले दिन १० पीपल दूधमें औटाकर दूध पीओ। दूसरे दिन २०, तीसरे दिन ३०, चौथे दिन ४०, पाँचवें दिन ५०, छठे दिन ६०, सातवें दिन ७०, आठवें दिन ८०, नवें दिन ९० और दसवें दिन १०० पीपल औटाओ। इसके बाद घटा-घटाकर पीओ। पहले दिन ९०, दूसरे दिन ८०, तीसरे दिन ७०, चौथे दिन ६०, पाँचवें दिन ५०, छठे दिन ४०, सातवें दिन ३०, आठवें दिन २० और नवें दिन १० पीपल डालकर दूध औटाकर पीओ। यह प्रयोग सबसे उत्तम है।

६-६ पीपल बढ़ाना मध्यम है और तीन-तीन बढ़ाना कनिष्ट है; पर आज-कलके लोगोंको तीन-तीनका योग ही जियादा हितकर है।

नोट—वर्द्धमान पीपलका योग पाण्डुरोगपर है, पर यह जीर्णज्वरको, जिसमें कफ प्रधान हो, अवश्य आराम करता है। अगर रोगीका मिज़ाज गरम हो; तो एक-एक पीपल रोज़ बढ़ाकर भी दे सकते हो, पर तीन-तीन बढ़ाना साधारण तौरसे अच्छा है। यह बात रोगीके मिज़ाज और ताक़तपर मुनहसिर है। अगर रोगीको इस नुसख़ेसे गरमी या जलन मालूम होने लगे, तो बन्द कर देना चाहिये।

तीसरी विधि—गायका दूध ४ तोला, जल १६ तोला और पीपल तीन तोला—सबको क़लईदार बर्तनमें डालकर औटाओ। जब सब पानी जलकर दूधमात्र रह जाय, उतार लो। पीपल चबाकर खा जाओ और ऊपरसे दूध पी जाओ।

पञ्चमूली क्षीरपाक

(२) सरवन, पिथवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और बड़ा गोखरू—इन पाँचोंकी जड़ोंको २॥ तोला लेकर, जरा कुचल लो। पीछे एक मिट्टी के बर्तनमें अठगुना दूध और दूधसे चौगुना पानी डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब पानी जलकर दूधमात्र रह जाय, उतारकर छान लो और रोगीको पिला दो। यह दूध सब तरहके जीर्णज्वरोंपर उत्तम है। इससे श्वास, खाँसी, सिरका दर्द, पसलीकी पीड़ा और जुकाम—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

सितादि क्षीर

(३) चीनी, घी, सोंठ, छुहारे और काली दाख—इन सबको अढ़ाई तोला लेकर पाव-भर दूध और एक सेर जलमें मिलाकर औटाओ। जब पानी जलकर दूधमात्र रह जाय, उतारकर मल-छान लो और शीतल करके, ३-४ माशे शहद डालकर, रोगीको पिलाओ। इस नुसख़े से प्यास, दाह और जीर्णज्वर शान्त होता है और इससे दस्त भी साफ़ हो जाता है। परीक्षित है।

वासादि घृत

(४) (क) अडूसेके पत्ते, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण और धमासा—इन पाँचोंको पाँच-पाँच तोले लेकर, रातको मिट्टीके वर्तनमें डालकर, ऊपरसे ५ सेर जल डालकर भिगो दो। सवेरे आगपर रखकर पकाओ, जब सेर सवा सेर जल रह जाय, उतारकर रख लो। शीतल होनेपर मल-छानकर इस काढ़ेको एक साफ़ मिट्टीके वर्तनमें पास रख लो।

(ख) पीपल, नागरमोथा, मुनका-दाख, लालचन्दन, कमलगट्टे की गिरी और सोंठ—इन छहोंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ भाँगकी तरह पीसकर लुगदी-सी बना लो।

(ग) गायका दूध २॥ सेर और घी १। सेर तैयार रखो।

(घ) क़लईदार कड़ाहीमें दूध, घी, काढ़ा और लुगदी चारोंको चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल जायँ, केवल घी रह जाय, उतारकर शीतल कर लो। पीछे घीको किसी अच्छे मिट्टीके या चीनीके वर्तनमें निकालकर रख दो। यही "वासादि घृत" है।

"वङ्गसेन" में लिखा है, इस घृतसे जीर्णज्वर नाश होता है। जिस जीर्णज्वर-रोगीको ज्वरके साथ खाँसी हो और शरीर दिन-दिन क्षीण होता जाता हो, उसे यह घृत पिलानेसे अवश्य फायदा होता है।

इस घीकी मात्रा बलाबलपर निर्भर है। फिर भी कमज़ोर रोगीके लिये कम से-कम ८-६ माशे घी खिलाकर देखना चाहिये। अगर पच जाय, तो धीरे-धीरे बढ़ाकर आधी छटाँक तक ले जाना चाहिये। अगर घी पीनेसे जी खराब होने लगे, तो पान इलायची खिलाना चाहिये। घी पिलाकर, जल कभी न पिलाना चाहिये; अन्यथा खाँसी बढ़ जायगी। आध घण्टा बाद जल पिलानेमें हर्ज नहीं है।

नोट—इसके साथ-साथ खाँसीकी गोलियाँ भी चूसनेको दी जायँ तो अच्छा हो। यदि घी पीनेसे ज़रा खाँसी बढ़ने भी लगे, तो घबड़ाना मत। गोलियाँ

चूसनेको देते रहना। कुछ दिन बाद खाँसी बिल्कुल जाती रहेगी। यह नुसख़ा भी परीक्षित है।

पिप्पल्यादि घृत

(५) (क) पीपल, लालचन्दन, नागरमोथा, ख़स, कुटकी, इन्द्रजौ, आमले, सारिवा, अतीस, शालिपर्णी, दाख, इमलीके बीज, त्रायमाण और कटेरी—इन १४ दवाओंको दो-दो तोले लेकर कुचलकर, रातको मिट्टीके बर्तनमें पाँच सेर जलमें भिगो दो और सवेरे काढ़ा बना लो। चौथाई जल रहनेपर मल-छानकर रख लो।

(ख) इन्हीं १४ दवाओंको और लेकर पानीमें पीसकर लुगदी बना लो।

(ग) गायका दूध १२॥ सेर और गायका घी ।१ सेर लेकर रख लो।

(घ) काढ़ा, लुगदी और दूध तथा घीको क़लईदार कड़ाहीमें चढ़ाकर मन्द-मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जलकर घृतमात्र रह जाय उतारकर शीतल कर लो। पीछे घीको निकालकर अमृतबान या चीनीके बर्तनमें रख लो।

"वङ्गसेन" ने लिखा है,—यह घृत तत्काल ही जीर्णज्वरको नाश करता है। इसको भी ४ या ६ अथवा ८ माशे रोगीको प्रतिदिन सवेरे पिलाना चाहिये और ऊपरसे जल न पिलाना चाहिये। यह भी परीक्षित है। जीर्णज्वर और पुरानी खाँसीमें अवश्य लाभदायक है।

नोट—परन्तु बहुत ही कमज़ोर रोगियोंको, जिनमें ज़रा भी दम न हो, घी दूध आदि न पिलाने चाहियें। जिन्हें कुछ भी न पचता हो, उन्हें "दुग्धफेन" खिलाने चाहियें। जीर्णज्वर और अतिसारमें दुग्धफेन बहुत फ़ायदेमन्द है।

दुग्धफेन

(६) गायका या बकरीका दूध दुहाकर तत्काल दो लोटोंमें लेकर, ऊँचेसे एक दूसरेमें उड़ेलो। इस तरह जो झाग आते जायँ, उन्हें निकाल-निकालकर रखते जाओ। जब झाग आने बन्द हो जायँ, तब दूधको अलग रख दो। उन झागोंमें ज़रा-सी मिश्री मिलाकर रोगीको

सवेरे-शाम खिलाओ। इन झागोंको अग्निमांद्य, जीर्णज्वर और अति-सारमें अवश्य खिलाना चाहिये।

(७) ९६ तोले गायका दूध मीठी आगसे अधऔटा करो। शीतल होने पर उसमें चीनी और शहद दो-दो तोले, घी १॥ तोले और पीपलका चूर्ण एक तोले मिलाकर पीनेसे हृद्रोग, जीर्णज्वर, खाँसी और क्षय ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) शहद, घी, दूध, पीपल और चीनी—इन पाँचोंको एकत्र मथ-कर पिलानेसे विषमज्वर, हृद्रोग, खाँसी, दमा और क्षय नाश हो जाते हैं। इसे "पंचसार" कहते हैं। परीक्षित है।

(९) घीग्वारका लुआब हर दिन ४ माशेसे १ तोले तक निकाल-कर, उसमें ४ रत्ती जीरा और कालीमिर्च पीसकर मिला लो और खाओ। इससे शरीरमें भिनी हुई गरमी, प्रमेह और जीर्णज्वर आराम हो जाते हैं। इस नुसखेके सेवन करनेसे कच्ची धातु भी निकल जाती है। परीक्षित है।

(१०) गिलोयके काढ़ेमें चौथाई शहद या ३ माशे पीपलका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जीर्णज्वर चला जाता है। अथवा गिलोय को रातके समय कुचलकर जलमें भिगो देने और सवेरे छानकर पी लेनेसे जीर्णज्वर आराम हो जाता है।

(११) कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा और गिलोय—इन पाँचोंका काढ़ा, विश्वास रखकर, लगातार सेवन करनेसे असाध्य जीर्णज्वर भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—जीर्णज्वरके सिवाय अन्य ज्वरोंमें भी यह नुसख़ा अनेक बार अच्छा सावित हुआ है।

(१२) नागरमोथा, कुटकी, कचूर, कायफल, काकड़ासिंगी, पोह-करमूल और कूट—इनका चूर्ण बनाकर, अदरखके रसमें या शहदमें सेवन करनेसे जीर्णज्वर, खाँसी, दमा, अरुचि, शूल, क्षय होना, क्षय और वायु—ये सब अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—जिस जीर्णज्वरीको ज्वरके साथ श्वास और खाँसी वग़ैरह उपरोक्त शिकायतें हों, उसे यह चूर्ण अवश्य सेवन करना चाहिये।

(१३) तालीसपत्र १ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले, बंसलोचन ५ तोले, इलायचीके बीज ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, बंगभस्म ८ तोले, ताम्बेकी भस्म ८ तोले और मिश्री ३२ तोले—पहलेकी दवाओंको कूट-पीस और छानकर चूर्ण बना लेना चाहिये। पीछे, बङ्गभस्म और ताम्रभस्म तथा मिश्री मिलानी चाहिये। इसका नाम "तालीस चूर्ण" है। यह चूर्ण रोचक और पाचक है। इससे श्वास, खाँसी, जीर्णज्वर, वमन, अतिसार, शोष, अफारा, तिल्ली, संग्रहणी और पीलिया ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

इस चूर्णकी मात्रा ज़ियादा-से-ज़ियादा एक माशेकी समझनी चाहिये। एक माशेमें प्राय: २ रत्ती बङ्गभस्म और ताम्बेकी भस्म आ जाती है; इसलिये ज़ियादा मात्रा न देनी चाहिये। बनाते समय यही ज़रूरी नहीं है कि, इतनी ही चीज़ ली जायँ; कमकी ज़रूरत हो तो कम बनाना चाहिये। अगर आठवाँ भाग बनाना हो, तो सबका ही आठवाँ भाग कर लेना चाहिये। जैसे:—तालीसपत्र १॥ माशा, सोंठ ४॥ माशे, पीपल ६ माशे, बंसलोचन ७॥ माशे, इलायची ६ रत्ती, दालचीनी ६ रत्ती, बंगभस्म १ तोले, ताम्रभस्म १ तोले और मिश्री ४ तोले।

(१४) गिलोयके रस (स्वरस) में पीपल और शहद डालकर पीनेसे जीर्णज्वर, कफ, तिल्ली, खाँसी और अरुचि ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) गिलोयका सत्त २ माशे पावभर गायके दूधमें पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है; घी और मिश्रीके साथ लेनेसे जीर्णज्वर जाता रहता है; शहद और पीपलके साथ अथवा गुड़ और काले जीरेके साथ लेनेसे भी जीर्णज्वर नाश होता है; जीरे और मिश्रीके साथ लेनेसे दाह नाश होता है। परीक्षित है।

(१६) पीपलके चूर्णमें दूना गुड़ मिलाकर देनेसे अरुचि, हृद्रोग, दमा, खाँसी, क्षय, अग्निमान्द्य, पीलिया, कृमिरोग, मिरगी और जीर्ण-ज्वर ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) पीपलका चूर्ण शहदमें मिलाकर देनेसे मद, कफ, श्वास, खाँसी, हिचकी, जीर्णज्वर, पीलिया, उदररोग, तिल्ली और नवीन ज्वर ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) गिलोयके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर और कफ नाश होता है। परीक्षित है।

(१९) पञ्चमूलके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर जाता है।

(२०) गिलोयके काढ़ेको शीतल करके, उसमें चौथाई भाग शहद डालकर पीनेसे जीर्णज्वर जाता है। परीक्षित है।

(२१) आमले, चीता, हरड़, पीपल और सेंधानमक—इन सबका चूर्ण करके सेवन करनेसे सब तरहके ज्वर नष्ट हो जाते हैं। यह नुसखा दस्तावर, रुचिकारक, कफनाशक और दीपन तथा पाचन है। यह नुसखा जीर्णज्वर और विषमज्वरपर बहुत उत्तम है।

(२२) दाख, गिलोय, कचूर, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, लाल-चन्दन, सोंठ, कुटकी, पाढ़, चिरायता, धमासा, खस, धनिया, कमल, सुगन्धवाला, कटेरी, पोहकरमूल और नीमकी छाल—इन सब दवाओं को समान भाग लेकर काढ़ा बनाकर सेवन करनेसे जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खाँसी और सूजन ये नाश हो जाते हैं। इसका नाम "द्राक्षादि क्वाथ" है।

(२३) पीपल, मुलेठी, दाख, खिरेंटी, चन्दन और सारिवा—इनके काढ़ेमें दूध मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है।

(२४) सुफेद जैतीकी जड़को चोटीमें बाँधनेसे जीर्णज्वर उस तरह नाश होता है, जिस तरह दुर्जन अपने आत्माको नष्ट करता है।

(२५) कुटकी, पित्तपापड़ा, चिरायता, नागरमोथा और गिलोय—

इनका काढ़ा नित्य पीनेसे असाध्य जीर्णज्वरी भी आराम हो जाता है।

(२६) जीरेकाका चूर्ण पुराने गुड़में मिलाकर देनेसे जीर्णज्वरमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(२७) जीर्णज्वरमें—दूधमें ५-७ पीपल डालकर और औटाकर लगातार पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है। जीर्णज्वरमें पीपल डालकर औटाया हुआ दूध पीना अमृत है।

(२८) तुलसीका रस, कालीमिर्च और शहद—इन तीनोंको मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२९) दाख, गिलोय और सोंट—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण डालकर पीनेसे जीर्णज्वर, श्वास, शूल और प्यास तथा अग्निकी मन्दता—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३०) कटेरी, गिलोय और सोंट—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण डालकर पीनेसे जीर्णज्वर, अरुचि, खाँसी, शूल, श्वास, मन्दाग्नि, अर्दित और पीनस रोग नष्ट होते हैं। अगर ऊर्ध्वगत रोगोंको नष्ट करना हो, तो इसे सन्ध्या समय पीना चाहिये।

नोट—यह नुसख़ा परीक्षित और उत्तम है। यह काढ़ा बहुधा कंठके ऊपर के रोगोंको हरता है। इसलिए शामके समय ही पिलाना ठीक है। अगर रातको ज्वर आता हो, तो काढ़ा शामको न पिलाकर, सवेरे पिलाना चाहिए। अगर ज्वरमें पित्तका ज़ोर हो, तो पीपलका चूर्ण मत मिलाना; उसके बदलेमें शहद मिलाना।

(३१) अनन्तमूल, नागरमोथा, सुगन्धवाला, सोंठ और कुटकी,—इनका काढ़ा बनाकर ज़रा गरम-गरम पीनेसे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं तथा अग्नि दीपन होती है।

(३२) कचूर, पित्तपापड़ा, सोंठ, देवदारु, रास्ना, नागरमोथा, कुटकी, कटेरी और चिरायता—इनके काढ़ेमें पीपल और शहद डाल-कर पीनेसे जीर्णज्वर और विषमज्वर आराम हो जाते हैं।

(३३) एक भाग भुने हुए जीरेका चूर्ण और दो भाग पुराना गुड़—इनको बलानुसार सेवन करनेसे विषमज्वर, मन्दाग्नि और वातरोग ये नाश हो जाते हैं। पुराने ज्वरमें परीक्षित है।

(३४) पुनर्नवेके तेलकी मालिशसे कामला, पीलिया, हलीमक, श्वास, तिल्ली, जीर्णज्वर और मलरोग आदि आराम होते हैं। यह तेल परीक्षित है। बनानेकी तरकीब—पहला काम यह है कि, पुनर्नवेकी ५ सेर जड़ लाकर, उसे २५ सेर साढ़े नौ छटाँक जलमें औटाओ। चौथाई जल रहने पर उतार कर रख लो। दूसरा काम यह है कि सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, काकड़ासिंगी, धनिया, कायफल, कचूर, देवदारु, प्रियंगू, रेणुका, कूट, विपखपरा, अजवायन, कालाजीरा, इलायची, दालचीनी, पद्माख, तमालपत्र और नागकेशर—इन २० दवाओंको एक-एक तोले लाकर पानीमें पीसकर लुगदी कर लो। तीसरा काम यह है कि, क़लईदार कड़ाहीमें लुगदी रखकर, तेल एक सेर डाल दो और काढ़ेको, जो कि बना हुआ तैयार रखा है, मिला दो। पीछे चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आगसे तेल पका लो। जल छीज जाने पर, तेलको उतारकर नीचे रख लो और शीतल हो जानेपर नितारकर बोतलमें भर लो।

(३५) कौरैयाकी जड़की छाल और गिलोय—इनके काढ़ेसे जीर्णज्वर आराम होता है।

(३६) ३ माशे चिरायता, २ तोले जलमें रातको भिगो दो। सवेरे उसे मल-छानकर, उसमें २ रत्ती कपूर और २ रत्ती शुद्ध शिलाजीत और ६ माशे शहद मिलाकर ७ दिन पीओ। इससे जीर्णज्वरमें अवश्य लाभ होता है। यह नुसखा नहीं चूकता। इससे रोग नाश होकर ताकत भी आती है। यह नुसखा आज़मूदा है।

(३७) छुहारा, दाख, सोंठ, मिश्री और घी—इनको दूधमें डालकर और औटाकर पीनेसे जीर्णज्वरमें लाभ होता है। बलाबल देखकर मात्रा देनी चाहिये।

स्वर्णमालती वसन्त

(३८) सोनेके वरक १ माशे, अबीध मोती (बूका) २ माशे, शुद्ध सिंगरफ (हिंगलू) ३ माशे, साफ कालीमिर्च ४ माशा, शोधा हुआ

सूरती खपरिया ८ माशे और चाँदीके वरक ८ माशे—इन सबको तैयार रखो। पहले सबको महीन पीस लो; पीछे पिसी हुई दवाओंको खरल में डालकर, ऊपरसे इतना मक्खन डालो, जो दवाओंमें समा जाय। (प्राय: १ तोला मक्खन काफी होगा)। इसके बाद ३-४ घण्टे तक खरल करो। जब मक्खन बराय नाम रह जाय, तब नीबूका रस डाल-डालकर खरल करो। जब मक्खनकी चिकनाई बिलकुल न रहे, तब खरल करना बन्द कर दो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इसको "वसन्तमालती रस" या "स्वर्णमालती वसन्त" कहते हैं। कम-से-कम इसकी मात्रा १ रत्तीकी है। अगर रोगी बलवान हो, तो २ या ३ रत्ती भी दे सकते हो। इसके खानेसे ताक़त आती है तथा विषमज्वर और जीर्णज्वर निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

सेवन-विधि—२ माशे गिलोयका सत्त, २ रत्ती छोटी पीपल तथा २ रत्ती छोटी इलायचीका चूर्ण और १ रत्ती वसन्त-मालती—इन सब को मिलाकर ४ माशे शहदमें चटानेसे जीर्णज्वर निश्चय ही आराम हो जाता है। सवेरे-शाम दोनों समय चटाना चाहिये। परीक्षित है।

दूसरी सेवन विधि—१ रत्ती वसन्तमालती, २ पीपलका चूर्ण और २ माशे शहदको मिलाकर चटानेसे भी लाभ होता है।

नोट—खपरियाको गोमूत्रमें दोलायन्त्रसे शोध लेना चाहिये। सिंगरफ मकसूदाबादी शोधकर काममें लाना चाहिये। खपरिया सूरती लेना चाहिये।

सितोपलादि चूर्ण

(३६) मिश्री १६ तोले, वंसलोचन ८ तोले, पीपर ४ तोले, छोटी इलायचीके दाने २ तोले और तज १ तोले—इन सबको कूट-पीस और छानकर एक शीशीमें रख लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे श्वास, खाँसी, हाथ-पाँवोंकी जलन, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, जीभका सूखना, पसलीका दर्द, अरुचि, पित्तविकार आदि रोग अवश्य आराम होते हैं। जीर्णज्वर और उसके साथ मन्दाग्नि, खाँसी और दाहपर यह चूर्ण अनेक बार परीक्षा किया हुआ है।

नोट—वंसलोचन वह लेना जो भीतरसे नील-नीला हो। पीपलोंको २४ घण्टे तक गायके दूधमें भिगो रखना; पीछे दूधसे निकालकर छायामें सुखा लेना। सूखनेपर सब दवाओंके साथ कूटकर चूर्ण बना लेना।

सेवन-विधि—इस चूर्णकी मात्रा जवानके लिए ३ माशेकी है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा चूर्ण शहदमें मिलाकर चटाना और ऊपरसे आधा पाव धारोष्ण दूध पिलाना। इस तरह करनेसे धीरे-धीरे जीर्ण-ज्वर अवश्य आराम हो जायगा। अगर रोगीको पतले दस्त लगते हों, तो इस चूर्णको शर्बत अनारके साथ चटाना और ऊपरसे दूध मत पिलाना। साथ ही "लाक्षादि तैल" की मालिश करना। अगर खाँसी हो, तो "स्वास्थ्यरक्षा" के पृष्ठ ३३१ में लिखी "कासमर्दन बटी" चुसाना। अगर ये तीनों काम लगातार कुछ दिनों तक पथ्यके साथ कीजियेगा, तो जीर्णज्वर या तपेदिक रोगी अवश्य आराम हो जायगा। अगर रोगीको पतले दस्त लगते हों, तो वृद्ध या लघु "गङ्गाधर चूर्ण" बीच-बीचमें देते रहना; दस्तोंके बन्द न करनेसे रोगी मर जायगा। अगर क़ब्ज़ रहता हो, तो हलकी-सी दस्तावर दवा दे-देकर बीच-बीच में दस्त करा देना अथवा एनीमा* से संचित मल निकाल देना। यह जीर्णज्वरकी परीक्षित चिकित्सा है।

* एनीमा—एक तरहकी विलायती पिचकारी होती है। इसके द्वारा गुदा से मल निकाला जाता है।

पन्द्रहवाँ अध्याय

दुर्जलजनित-ज्वरकी चिकित्सा

—:o:—

(१) छोटी हरड़, नीमके पत्ते, सोंठ, सेंधानोन और चीता—इनका चूर्ण बनाकर, चार-चार या छै-छै माशे चूर्ण, सवेरे-शाम दोनों समय, रोज़ खानेसे ख़राब जलके कारणसे हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—कोई-कोई सोंठके स्थानमें पीपल लेते हैं। परीक्षित है।

(२) सोंठके ४ तोले काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे अरुचि, मन्दाग्नि, पीनस, श्वास, बवासीर, पेटके रोग और जलसे होनेवाले सब विकार नाश हो जाते हैं। शरीरमें कान्ति होती है तथा चित्त और आँखोंको सुख होता है। परीक्षित है।

(३) शुद्ध वत्सनाभ विष २ भाग, कौड़ीकी भस्म ५ भाग, काली मिर्च ५ भाग और सोंठ ५ भाग—इन सबको एकत्र पीसकर और अदरखके रसमें खरल करके मूंगके बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली जलके साथ खानेसे आमज्वर, दूषित जलसे हुआ ज्वर, अजीर्ण, अफारा, मलबन्ध, शूल, श्वास और खाँसी ये सब आराम होते हैं। इन रोगोंमें यह "दुर्जलजेता रस" अवश्य देना चाहिये।

(४) पटोलपत्र, नागरमोथा, गिलोय, अडूसा, सोंठ, धनिया और चिरायता,—इनको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, शीतल होने पर, शहद मिलाकर, पीनेसे दुष्ट जलसे उत्पन्न हुए सब रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५) चिरायता, निशोथ, सुगन्धवाला, पीपल, बायविड़ङ्ग, सोंठ और कुटकी—इनको कूट-पीसकर चूर्ण बना लो। रोज़ शहद मिलाकर, इस चूर्णके चाटनेसे ख़राब जलसे उत्पन्न हुआ दुस्तर ज्वर बहुत जल्दी आराम हो जाता है। इन दवाओंको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर छान लो। इसमेंसे दो-दो माशे चूर्ण, दिनमें ४ दफा,

शहदके साथ चाटो। इससे दूषित जलजनित ज्वर निश्चय ही आराम होगा। परीक्षित है।

(६) सोंठ, जीरा और हरड़,—इन तीनोंका कल्क, भोजन करने के पहले, रोज़ सेवन करनेसे अनेक देशोंका जल पीनेसे पैदा हुआ ज्वर नाश हो जाता है। इन तीनोंको दो-दो माशे लेकर, सिलपर जलसे पीस लो। इस लुगदीको भोजनसे पहले खाकर ज़रा-सा जल पी लिया करो। इसको तन्दुरुस्तीकी हालतमें रोज़ परदेशमें खानेसे कोई रोग नहीं हो सकता। परीक्षित है।

(७) अदरख और जवाखारका कल्क बनाकर, ज़रा गरम करके जलके साथ पीनेसे, अनेक देशोंके जल पीनेसे हुए रोग शान्त हो जाते हैं। अथवा २ माशे सोंठ और १ माशे जवाखारको गरम जलके साथ सवेरे और इसी तरह शामको पीनेसे भी लाभ होता है। अगर यह नुसख़ा तन्दुरुस्तीकी हालतमें रोज़ सवेरे-शाम सफ़रमें सेवन किया जाय, तो रोग ही न हो। परीक्षित है।

(८) हल्दी और जवाखारका चूर्ण—गरम जलके साथ सेवन करनेसे दुर्जल जलसे हुआ ज्वर आराम हो जाता है।

दूषित वायुजनित-ज्वरकी चिकित्सा

(१) पित्तपापड़ा, ब्राह्मी और हंसराज—इन तीनोंके काढ़ेसे दूषित हवासे हुआ ज्वर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

शोथ-ज्वरकी चिकित्सा

(१) दशमूलकी दसों दवाओंको २॥ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। चौथाई पानी रहनेपर मल-छान लो और ज़रा-सा शहद मिलाकर रोज़ सवेरे पिलाओ। इस नुसख़ेसे सूजन सहित ज्वर नाश हो जाता है। शोथज्वरके सिवा, इस काढ़ेसे अनेक तरहके वातरोग, प्रसूत रोग और सब तरहके सन्निपातज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अगर रोगीको खाँसी हो, तो काढ़ेमें ३ रत्ती पीपलका चूर्ण डाल-

कर देना चाहिये। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़ेका चूर्ण और ६ माशे शहद मिलाकर काढ़ा पिलाना चाहिये। अगर सूजनपर लेप लगानेकी जरूरत हो, तो पुनर्नवा और मकोयको एकत्र पीसकर और गरम करके सूजनके स्थानोंपर लेप करना चाहिये। काढ़ा पिलाने और लेप करनेसे सूजन जल्दी नाश होगी। अगर पानीके बजाय मकोय का अर्क़ पिलाया जाय तो उत्तम हो।

शोथ-रोगमें औटाकर या लोहा बुझाकर जल देना चाहिये। सूजन के रोगमें बहुत जल पीना हानिकारक है। नमक भी न देना चाहिये।

(२) दशमूल और सोंठके काढ़ेके पीनेसे भी ज्वर, सूजन, अतिसार, संग्रहणी, अरुचि, कंठरोग और हृदय रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

अजीर्ण-ज्वरकी चिकित्सा

(१) पित्तपापड़ा और कटेहलीके काढ़ेसे अजीर्णज्वर नाश होता है।

(२) अजमोद, हरड़, कचूर और संचल नमक—इनका चूर्ण खानेसे अजीर्णज्वर नाश होता है।

(३) नागरमोथा और सोंठके काढ़ेसे अजीर्णज्वर नाश होता है।

(४) आमला, चीता, छोटी हरड़, पीपल और सेंधानोन—इनका चूर्ण गरम जलके साथ सेवन करनेसे अजीर्णज्वर आराम हो जाता है। अन्यान्य ज्वरोंमें भी यह चूर्ण लाभदायक सिद्ध हुआ है।

(५) गिलोय, सोंठ, नागरमोथा, पीपल और चिरायता—इनका काढ़ा अजीर्ण ज्वरको नाश करता है।

जाकर फिर आनेवाले ज्वरोंकी चिकित्सा

(१) कुटकी, खस और नागरमोथा—इनका काढ़ा पिलानेसे जाकर आया हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—रोगीमें ताक़त हो, तो २-२ लङ्घन करा देना अच्छा है; कमज़ोरको लङ्घन न कराने चाहियें।

(२) नागरमोथा, पीपल, कुटकी, अमलतासका गूदा और छोटी हरड़—इनके काढ़ेसे भी जाकर फिर आया हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

(३) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, गिलोय और कुटकी,—इन चारों के काढ़ेसे भी जाकर आया हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

सोलहवाँ अध्याय

मोतीज्वरेका वर्णन

वैद्यकमें मौक्तिकज्वर या मोतीज्वरेका कहीं जिक्र नहीं पाया जाता। इसके बहुतसे लक्षण "मसूरिका" से मिलते हैं। हमारी समझमें तो यह मसूरिकाका ही भेद है। लक्षणोंसे तो यही जान पड़ता है कि खूनमें गरमी पहुँचनेसे यह रोग होता है। बहुत लोग आजकल इसे रक्तगत पित्तज्वर भी मानते हैं। केवल "योग-चिन्तामणि" में जो "मधूरक ज्वर" के लक्षण लिखे हैं, वे मोतीज्वरेके लक्षणोंसे बेशक मिलते हैं।

ज्वरो दाहो भ्रमो मोहो अतीसारो वमिस्तृषा।
अनिद्रा च मुखं रक्तं तालु जिह्वाच शुष्यति॥
ग्रीवामध्येच दृश्यन्ते स्फोटका सर्षपोपमा।
एतच्चिह्नम् भवेद्यस्य समधूरक उच्यते॥

ज्वर, दाह, भौंर, मोह, अतिसार, वमन, प्यास, निद्रानाश,—ये हों तथा चेहरा लाल हो, तालू और जीभ सूखते हों, गर्दनमें सरसोंके दाने जैसी फुन्सियाँ हों, उसे मधूरक या मधूरा ज्वर कहते हैं। क़रीब-क़रीब यही लक्षण "मन्थर ज्वर" के हैं।

डाक्टरी मतसे

मोतीज्वरा या पानीज्वराके लक्षण

सामान्य लक्षण—इसमें ज्वर बड़े जोरसे चढ़ता है और वह उतरता नहीं। गरमीका बड़ा जोर रहता है, प्यास बहुत लगती है, मुँह आ जाता है, छाती, गले और सारे शरीरपर महीन-महीन बहुतही छोटे मोतियोंके समान दाने-से दीखते हैं। पहले सवा दो रोज़ बुखार चढ़ा रहता है; पीछे आई ग्लाससे देखनेपर गलेमें बाहरकी ओर सफ़ेद

मोती-से चमकते हैं। यह दाने बहुत छोटे होते हैं, इसलिये किसी-किसीको विना आई ग्लास (Eye-glass) के नहीं दीखते। गलेपर दीखनेके बाद छातीपर, इसके बाद जाँघों और पैरोंपर दाने दीखते हैं। अगर छातीपर दाने नहीं होते हैं या बग़लाऊ होते हैं, तो रोगीको कष्ट कम होता है। अगर छातीपर बीचमें होते हैं, तो प्यास और दाहका जोर रहता है।

मोतीज्वरेके भेद

डाक्टरीमें इसके चार भेद माने हैं:—

(१) समपकसल (२) इनजाइनोजा (३) मैलिगना (४) लेटिएट।

समपकसलके लक्षण

इसमें बुख़ार रहता है, मुँह आ जाता है और हलकी सूजन रहती है। यह सुखसाध्य है।

इनजाइनोजाके लक्षण

इसमें ज्वर, गलेका सूजना, कव्वा धसकना, नाक और कानोंसे पीव बहना—ये लक्षण होते हैं। यह ख़राव है।

मैलिगनाके लक्षण

इसमें ज्वर रहता है, मुख और गलेमें घाव हो जाते हैं। इसका नतीजा बुरा है।

लेटिन्टके लक्षण

इसमें ज्वर रहता है, नाक-कानमें घाव हो जाते हैं, हाथ-पैर फूल जाते हैं और सन्धियोंमें पीड़ा होती है। यह भी बुरा है।

उत्पत्तिका कारण

यह भी उसी क़िस्मके ज़हरसे पैदा होता है, जिस क़िस्मके ज़हरसे चेचक या शीतला निकलती है। गरमीकी ज़ियादती तथा मल और खूनका जोश या उफान भी इसके हेतु हैं।

चिकित्सा-विधि

डाक्टरी मतसे १ बोतल पानीमें अर्क़ सिलफोरस मिलाकर रोगीको कुल्ले कराने चाहियें।

मोतीज्वरा-नाशक नुसखे

"योगचिन्तामणि" में ही लिखा है:—

(१) सहस्रवेधी पाषाण, कछुएका कपाल, बड़ी इलायची, तुलसी के पत्ते, नारियलकी नयी जटा और खसखसके दाने—इन सबको गोबरके रसमें पीसकर देनेसे मधूरक-ज्वर शान्त हो जाता है।

नोट—आजकल तो इस रोगके होते ही दवा बन्द कर दी जाती है। केवल लौंगें ११ से लेकर १०१ तक घोट-घोटकर और गरम करके पिलाई जाती हैं। सेरका आध पाव जल दिया जाता है। सत्ताईस-सत्ताईस दिनतक अन्न दिखाया भी नहीं जाता। यह मारवाड़ियोंके घरू इलाजकी बात है। जिनकी टूटी नहीं होती है, वे उठ भी खड़े होते हैं। अब कुछ लोग डाक्टरोंको बुलाने लगे हैं।

(२) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलेठी और काली दाखोंका काढ़ा, शहद मिलाकर पीनेसे मोतीज्वरा आराम होता है। परीक्षित है।

(३) बड़के वृक्षकी कोंपल और बाजरेका काढ़ा पीनेसे मोतीज्वरा नाश होता है। परीक्षित है।

(४) पोदीनेके पत्ते, तुलसी और काली तुलसी—इनको बिना ज़ल मिलाये पीसकर, कपड़ेमें रस निकाल लेना चाहिये और उस रस को मिश्री मिलाकर पीना चाहिये। परीक्षित है।

(५) अजमोदको पीसकर और शहदमें मिलाकर चाटनेसे मोती-ज्वरा नाश होता है।

(६) गिलोयके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे मोतीज्वरा नाश होता है। परीक्षित है।

(७) मुनक्का—दाख, वासा और हरड़के काढ़ेमें शहद और मिश्री डालकर पीनेसे रक्तपित्त-ज्वर, दमा, खाँसी और मोतीज्वरा—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(८) गलेमें मोतियोंकी माला पहननेसे मोतीज्वरेमें होनेवाली गलेकी और छातीकी फुन्सियोंमें बड़ा लाभ होता है।

———:०:———

सत्रहवाँ अध्याय

गर्भिणीके ज्वरकी चिकित्सा



गर्भकी हालतमें औरतोंको ज्वर, सूजन, अतिसार, वमन, सिर घूमना, खून गिरना, गर्भकी पीड़ा प्रभृति अनेक प्रकारके रोग होते हैं। और सब रोगियोंकी तरह गर्भवतीकी चिकित्सा करनेसे लाभ नहीं होता, बल्कि अनेक स्थलोंमें हानिकी सम्भावना रहती है। गर्भवतीको कष्ट होनेसे गर्भगत शिशुको भी कष्ट हो सकता है। यहाँ हम गर्भवती के ज्वर नाश करनेवाले चन्द उपाय लिखेंगे, जिससे कोइ अज्ञानतावश गर्भिणीके ज्वरमें सब रोगियोंको दी जानेवाली दवाएँ न दे दे।

गर्भिणीके ज्वरको नाश करनेवाले नुसखे

(१) "भावप्रकाश" में लिखा है,—मुलेठी, लालचन्दन, ख़सकी जड़, सारिवा (अनन्तमूल) और कमलके पत्ते—इन पाँचोंका काढ़ा बनाकर, शीतल होनेपर, शहद और खाँड़ मिलाकर, पिलानेसे गर्भिणी का ज्वर आराम हो जाता ह।

(२) लालचन्दन, सारिवा (अनन्तमूल), लाध आर दाख—इन चारोंके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर देनेसे ज्वर निश्चय ही शान्त होता है।

(३) अरण्डकी जड़, गिलोय, मँजीठ, लालचन्दन, देवदारु और पद्माख,—इन छहोंका काढ़ा गर्भवतीके ज्वरको नाश करता है।

नोट—ये तीनों नुसख़े गर्भवतीके ज्वरमें परमोत्तम हैं। नं० २ और ३ तो कितनी ही बार के परीक्षित हैं। पहलेवाला भी परीक्षित ही है।

(४) बकरीके दूधके साथ सोंठ पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंका विषम-ज्वर आराम हो जाता है।

(५) धनिया, नागरमोथा, खस, सुगन्धवाला, श्योनाक, गिलोय, अतीस, वरियारा, पित्तपापड़ा, जवासा और लालचन्दन—इन ग्यारह दवाओंका काढ़ा गर्भिणी और प्रसूताके रुधिर-विकार, रक्तातिसार (खूनके दस्त), आमातिसार (आँव और मरोड़ीके दस्त) और ज्वर इन सबको आराम करता है। इस नुसखेकी उत्तमताके लिये "लोलिम्ब-राज" महोदयका नाम ही काफी है।

गर्भिणीके अतिसार आदिको नाश करनेवाले नुसखे

(६) सोंठ और बेलगिरीके काढ़ेमें जौका सत्तू मिलाकर पिलाने से, वमन और अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसखा गर्भिणीके दस्तोंपर उत्तम पाया गया है।

(७) सुगन्धवाला, अतीस, नागरमोथा, मोचरस और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा पीनेसे गर्भिणीका गिरता हुआ गर्भ, अतिसार, प्रदर, और पेटका दर्द ये सब शान्त हो जाते हैं।

(८) पिठवन, बरियारा और अडूसेका काढ़ा रक्तपित्तको आराम करता है और साथ ही गर्भिणीके कामला (पीलियेका भेद), सूजन श्वास और ज्वरको आराम करता है।

(९) आम और जामुनकी छालके काढ़ेमें खीलोंका सत्तू मिला कर खानेसे गर्भिणीका ग्रहणी रोग तत्काल शान्त होता है।

(१०) सुगन्धवाला, अरलू, लालचन्दन, खिरेंटी, धनिया, गिलोय, खस, नागरमोथा, जवासा, पित्तपापड़ा और अतीस—इनका काढ़ा पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंके अनेक रोग, पीड़ा, अतिसार, रुधिरस्राव और गर्भस्रावकी पीड़ा भी दूर होती हैं।

नोट—मैथुन करने, राह चलने, मिहनत करने, ज्वर चढ़ने, उपवास करने, कूदने, गिरने, दौड़ने, विषम आसनपर बैठने और डरने प्रभृति कारणोंसे गर्भ-स्राव या गर्भपात होता है। जब गर्भस्राव या गर्भपात होनेवाला होता है, तब शूल या दर्द होता है और खून निकलता है। चौथे मास तक जो गर्भ गिरता है, उसे गर्भस्राव कहते हैं; इसके बाद गर्भपात कहते हैं। गर्भपात वगैरहका इलाज हम चौथे भागमें लिखेंगे।

गर्भिणी की वमन, श्वास और खाँसी-नाशक नुसखे

(११) चाँवलके धोवनमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे गर्भिणीकी वमन बन्द हो जाती है। धनियाका चूर्ण खाकर मिश्री मिला हुआ चाँवलोंका पानी पीनेसे निश्चय ही गर्भवतीकी क़य बन्द हो जाती है।

(१२) भारङ्गी, सोंठ और पीपल—इनका चूर्ण गुड़के साथ खिलानेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(१३) सोंठ का काढ़ा शीतल करके पिलानेसे गर्भिणीका वातरोग आराम हो जाता है।

(१४) शालि धानोंकी जड़, डाभकी जड़, काँसकी जड़ और सरपते की जड़—इन सबकी जड़ें बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ पीस-कर लुगदी-सी बना लो। पीछे उस लुगदीको दूधमें डालकर दूधको औटाओ और उस दूधको गर्भवतीको पिलाओ। उस दूधसे रुका हुआ पेशाब खुल जाता है तथा प्यास, दाह और रक्तपित्त भी आराम होता है। गर्भवतीका पेशाब रुक जाय, तो यह नुसखा देना चाहिये।



अठारहवाँ अध्याय

प्रसूत-ज्वर का वर्णन

धन्वन्तरिके मतसे बालक जननेके डेढ़ मास बाद या रजोदर्शन होनेके बाद, स्त्रीका "प्रसूता" नाम नहीं रहता। इसके पहले, बच्चा जननेके बाद, उसे "प्रसूता" कहते हैं।

ज्वर, खाँसी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार ये रोग विशेष करके प्रसूताको होते हैं। जब ये प्रसूताको होते हैं, तब इन्हें "प्रसूति रोग" कहते हैं। अत्यन्त वातकारक स्थान, अयोग्य आचरण, विषम भोजन और अजीर्ण प्रभृति,—ये प्रसूत-रोगोंके कारण हैं।

"वङ्गसेन" में लिखा है—प्रसूत-रोगमें ज्वर, अतिसार, सूजन, शूल, अफारा, बल-नाश, तन्द्रा, अरुचि, मुँहसे जल गिरना प्रभृति कफ और वातसे पैदा होनेवाले अनेक रोग होते हैं। ये सब मांस और बलकी क्षीणतासे होते हैं। इन सबको "सूतिका रोग" कहते हैं। इनमेंसे कोई एक रोग मुख्य होता है; शेष सब उसके उपद्रव कहलाते हैं।

सूतिका-रोग नाश करनेके लिये वात-नाशक क्वाथ देने चाहियें और सभी काम वात-नाशक करने चाहियें। वात-नाशक स्वेद, उपानह, मालिश और अवगाहन (स्नान) इसमें हितकारी हैं।

प्रसूत-ज्वरके लक्षण

बालक पैदा होनेके प्रायः दूसरे-तीसरे दिन यह ज्वर चढ़ता है। इस ज्वरमें ताप या टेम्परेचर १०२ डिग्रीसे १०६ डिग्री तक हो जाता है। गर्भाशय में कम या जियादा पीड़ा होती है। पीछे वह वेदना सारे शरीरमें फैल जाती है। रोगिणी प्रलाप करती है, आँखें भीतर घुस

जाती हैं, भ्रम होता है, पतले दस्त लगते हैं, कमजोरी आ जाती है, क्षय होती है, जीभ मैली रहती है, छातियोंका दूध नष्ट हो जाता है। अच्छा इलाज न होनेसे रोगिणी शीत आकर मर जाती है। मरनेके समय जीभ रूखी और काली हो जाती है।

इस ज्वरमें गर्भाशयमें सूजन आ जाती है। वह सुकड़ जाता है या उसकी दीवार ढीली हो जाती है। अगर बालकके बाहर आते समय योनि बालकके सिरसे छिल जाती है, तो वहाँ पीप पैदा हो जाती है। अच्छा इलाज न होनेसे १५ दिन बाद जगह-जगह पीप पड़ जाती है, बार-बार जाड़ा लगता है, जोड़ोंमें सूजन आकर उनमें भी पीप पैदा हो जाती है, यहाँ तक कि आँखोंमें भी पीप पैदा हो जाती है। ऐसा होनेसे प्रसूता अन्धी हो जाती है।

असल बात यह है कि, बालक पैदा होने समय अगर बालकके सिरसे कोई रसौली छिल जाती है, या जेर-नाल भीतर रह जाता है अथवा मैला खून या और कोई पदार्थ, जिसका गर्भाशयसे निकलना जरूरी है, गर्भाशयमें रह जाता है, तो गर्भाशयमें एक तरहका विष पैदा हो जाता है और समयपर इलाज न होने या ठीक इलाज न होनेसे वह जहर सारे शरीरमें फैलकर ज्वर आदि भयानक रोग करता है। इस रोगमें गर्भाशय, फेंफड़े और जिगर प्रभृति कई स्थानोंमें सूजन पैदा हो जाती है।

डाक्टरीमें इस ज्वरको "प्योर पर्ल फीवर" कहते हैं। डाक्टर लोग इसका उपाय गन्दे या मैले खूनको सुखाना कहते हैं। वे लोग प्रसूताको गरम कपड़े पहनाना-उढ़ाना, ज्वर-नाशक दवा देना और शरीरपर गरम जलकी बोतल फेरकर पसीने निकालना अच्छा समझते हैं। वैद्य लोग भी गर्भाशयका मल सुखानेके लिये "दशमूलका काढ़ा" देते हैं और रोगिणीको गरम रखनेकी सलाह देते हैं। इसीसे भारतमें जच्चा-घरके द्वारोंपर और शीत कालमें भीतर भी आगकी अङ्गीठियाँ रखते हैं और हवाकी राहें बन्द करा देते हैं। इसमें हिन्दुस्तानी बड़ी भूल भी करते

हैं। हवाको इतना रोक देते हैं कि, प्रसूताके घरमें बदबू मारने लगती है और उसकी साँस घुटने लगती है। कभी-कभी इस बेहूदगीकी वजह से भी प्रसूतायें बेमौत मर जाती हैं।

प्रसूतज्वर-नाशक नुसखे

(१) दशमूलके गरमागरम काढ़ेमें घी मिलाकर पिलानेसे ज्वर प्रभृति सूतिका-रोग नाश हो जाते हैं।

(२) दशमूलकी दसों दवाओंको दूधमें पकाकर और मिश्री मिला कर पिलानेसे प्रसूताके सब रोग नाश हो जाते हैं।

(३) दशमूलके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पिलानेसे सूतिका-ज्वर और सूजन तथा वातरोग नाश हो जाते हैं। अगर खाँसी भी हो, तो ३ रत्ती पीपलोंका चूर्ण मिला देना चाहिये। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़ेका चूर्ण और ६ माशे शहद मिलाकर, काढ़ा पिलाना चाहिये।

(४) देवदारु, बच, कूट, पीपल, सोंठ, चिरायता, कायफल, कुटकी, धनिया, हरड़, गजपीपल, कटेरी, गोखरू, जवासा, कटाई, अतीस, गिलोय, काकड़ासिंगी और कालाजीरा—इन १६ दवाओंको बराबर-बराबर डढ़-डढ़ माशे लेकर, काढ़ा बनाओ। जब आठवाँ भाग पानी रह जाय, उतारकर छान लो। पीछे उसमें भुनी हींग और सेंधानोन मिलाकर प्रसूताको पिलाओ। इस काढ़ेसे ज्वर, खाँसी, शूल—दर्द, बेहोशी, कँपकँपी, सिरदर्द, आनतान बकना, प्यास, दाह—जलन, तन्द्रा, पतले दस्त, क़य, वग़ैरह वात और कफसे हुए प्रसूताके सब रोग नाश हो जाते हैं। यह "दार्वादि" क्वाथ प्रसूताके लिये परीक्षित दवा है।

(५) गिलोय, सोंठ, पियाबाँसा, गन्धप्रसारिणी, पंचमूलकी पाँचों दवाएँ, नागरमोथा और सुगन्धवाला—इन ११ दवाओंका काढ़ा भी प्रसूताके ज्वर आदि रोगोंको अवश्य नाश करता है।

(६) पियाबाँसा, कुल्थी, पोहकरमूल, कटेरी, देवदारु और बेंत—इनके काढ़ेमें भुनी हींग और सेंधानोन डालकर पीनेसे सूतिकाका शूल और ज्वर नाश हो जाता हैं।

(७) पियावाँसा, नागरमोथा, गिलोय, गन्धप्रसारिणी, सोंठ और सुगन्धवाला—इनके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद डालकर पीनेसे प्रसूताका ज्वर तत्काल नाश होता है।

(८) तपाया हुआ लोहा मूंगके यूषमें बुझाकर, वही पिलानेसे सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(९) गिलोय, सोंठ, सहचर, आककी जड़, वृहत्पंचमूल और नागरमोथा—इन दसोंके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पीनेसे सूतिका रोगकी शान्ति होती है।

पसीना निकालनेकी विधि

नीमकी अन्तरछाल लाकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। पीछे उन्हें तीन हाँडियोंमें डालकर, ऊपरसे पानी भरकर, उन्हें अलग-अलग तीन चूल्होंपर चढ़ा दो। ऊपरसे ढकना भी लगा दो। जब पानी खूब खौल जाय, पहले एक घड़ेको चूल्हेसे उतार लो।

प्रसूताको एक खरहरी (बिना बिस्तरकी) खाटपर लिटा दो। उस आगसे उतारे हुए घड़ेको ढकना खोलकर प्रसूताके सिरके नीचे रख दो, ताकि भाफ सिर वग़ैरहको लगे और पसीना निकले। जब उस घड़ेकी भाफ कम हो जाय, तब उसे कमरके नीचे सरका दो और दूसरा घड़ा चूल्हेसे उतारकर, ढकना उतारकर, फिर प्रसूताके सिरके नीचे रख दो। जब इस दूसरे घड़ेकी भी भाफ कम हो जाय, तब इसे कमरके नीचे सरका दो और कमरके नीचेके घड़ेको पैरोंके नीचे सरका दो और तीसरे घड़ेको चूल्हेसे उतार कर सिरके नीचे रख दो। जब इसकी भी भाफ कम हो जाय, तब इसे कमरके नीचे सरका दो और कमरके नीचेवालेको पैरोंके नीचे सरका दो। शेषमें आखिरी घड़ेको सरकाते हुए पैरों तक ले जाओ।

इस तरह ३ दिन तक करनेसे प्रसूताके शरीरका सारा रोग पसीनों द्वारा निकलकर नाश हो जाता है, पर यह काम ऐसी जगहमें करना चाहिये, जहाँ हवा न आती हो। उस समय हवा लगना हानिकर है। इस वफारेका काम हो जानेपर, पसीने पोंछ डालने चाहियें। पसीनोंके सूख जानेपर, मन्दी-मन्दी पंखेकी हवा लगे तो हर्ज नहीं। यह परीक्षित उपाय है। ज़रूरत के समय काम लेना चाहिये।

पथ्यापथ्य

कम-से-कम एक मास तक, ख़राब ख़ून निकल चुकनेपर, प्रसूताको चिकना, अग्निदीपक, वातकफ-नाशक, हितकारी और हलका भोजन करना चाहिये। जैसे पुराने चाँवलका भात, परवल, कच्चा केला, मसूर, बैंगन और अनार प्रभृति; नित्य पसीना लेना चाहिये; तेलकी मालिश करानी चाहिये; दस दिन तक वातकफ नाशक दवाओंके साथ औटाया दूध पीना चाहिये; दस दिन मांसरसके साथ भात खाना चाहिए और सिरसकी लकड़ीसे दाँतुन करनी चाहिये। यह तो मामूली हालत के पथ्यापथ्य हैं। ज्वरकी हालतमें या अन्य रोगकी हालतमें जैसा रोग हो वैसा ही पथ्य देना चाहिये और अग्नि, मिहनत, शीतल आहार और मैथुन प्रभृतिसे परहेज़ करना चाहिये।

नोट—"पंचजीरक पाक" और "सौभाग्य शुण्ठीपाक" प्रसूताओंके लिए अमृत हैं। उन्हें हम तीसरे भागमें लिखेंगे।

दूधज्वरके लक्षण

अक्सर नाज़ुक-बदन औरतोंको, बालक जननेके कुछ दिन बाद, सर्दी लग जाने, अपथ्य आहार-विहार करने, चूचियोंमें दूध रुक जाने अथवा घरके लड़ाई झगड़ोंके कारण चिन्ता-फिक्र और रंज करने अथवा कच्ची अवस्थामें ही जच्चाके चलने-फिरने और परिश्रम करने वग़ैरह कारणोंसे यह ज्वर होता है; पर इसका असल कारण दूधका छातियोंमें रुकना है। पहले-पहल बालक जननेवाली स्त्रीके स्तनोंमें दूध देरसे आता है। अगर बिना दूध आये ही बच्चा स्तनोंसे लगा

दिया जाता है, तो दूध आनेके सूराख़ बन्द हो जाते हैं। बहुतसी औरतोंके इतना दूध आया करता है कि, कभी-कभी अपने-आप धाराएँ छूट पड़ती हैं। बालक अगर इतना दूध नहीं पी सकता, तो स्तन भारी हो जाते हैं। स्तनोंके भारी होनेसे औरतोंको बड़ी तकलीफ होती है। अनेक औरतें तो अपने हाथोंसे बीठनी भींच-भींचकर दूध निकाल फेंकती हैं। जो ऐसा नहीं कर सकतीं, वे बड़ी पीड़ा भोगती हैं। बाज़-बाज़ स्त्रियोंके स्तन बहुत ही कठोर और बीठनियाँ मोटी होती हैं। कमज़ोर बालक उन बीठनियोंको मुखमें दबाकर दूध नहीं पी सकता। उस हालतमें दूध स्तनोंमें भर जाता है। दूध रुकनेके कारणोंसे अथवा और किसी वजहसे या सर्दी-गर्मीसे खूनका बहना बन्द हो जानेसे स्तनोंपर सूजन आ जाती है; उससे स्त्रियोंको कँपकँपी लगकर जाड़ेका बुख़ार आ जाता है। इस ज्वरको बोलचालमें दूधका ज्वर और अंग्रेज़ीमें मिल्क फीवर (Milk fever) कहते हैं।

इस ज्वरवाली स्त्री उदास हो जाती है, हाथ-पाँव-सिर और पीठमें वेदना होती है, स्तनोंमें भी पीड़ा होती है। वे पके फोड़ेकी तरह दुखते हैं और तनकर लाल हो जाते हैं। जाड़ेके बुख़ारोंकी तरह इस ज्वरमें पहले जाड़ा लगता है, पीछे गरमी आती है। प्यासकी अधिकता होती है। शेषमें पसीने आकर ज्वर उतर जाता है। इसमें औरतें प्रलाप भी करती हैं। बदहज़मी और जी मिचलाना आदि लक्षण भी देखे जाते हैं।

स्तनपीड़ा-नाशक नुसखे

(१) अगर गर्मी-सर्दीसे खूनकी चाल बन्द हो जानेके कारण छातियोंपर सूजन आगई हो, उनमें मीठा-मीठा दर्द होता हो, तो गीदड़ दाखके पत्ते दो तोले और बाकला दो तोले—इनको खूब महीन पीसकर और सिकंजबीनमें मिलाकर, छातियोंपर लेप करनेसे पीड़ा शान्त होगी। जब तक वरम—सूजन न उतर जाय, तीन-चार बार लेप करना चाहिये।

(२) अगर बालकके दूध पीते-पीते माथेकी चोट मारनेसे सूजन आ गई हो, तो स्त्रीको चाहिये कि कंगीको ऊपरसे नीचे धीरे-धीरे स्तन पर फेरती जाय और ऊपरसे दूसरी औरत सुहाता-सुहाता गरम जल स्तनपर ढालती जाय। कंगी नीचेसे ऊपर न लानी चाहिये, बार-बार ऊपरसे नीचेको फेरनी चाहिये और ऊपरसे गरम जल पड़ना चाहिये। तीन दिनमें निश्चय ही आराम हो जायगा।

(३) अगर खुश्की और गरमीके कारण स्तनोंमें दूध जम गया हो, तो मूँग और साँठी चावल दोनोंको पीसकर कुछ गरम जलमें लगाना चाहिये।

(४) अगर कुचोंपर सूजन हो, तो मकोय, गुलखैरू, गोखरू, निर्विषी, अफ़ीम और गेरू—इन छहोंको एक-एक माशे लेकर, जलमें पीस लो और कुछ गरम करके सुहाता-सुहाता लेप कर दो।

(५) शीशमकी पत्तियोंको एक हाँड़ीमें डालकर, ऊपरसे गरम जल भरकर औटाओ। जब पौन या आधा पानी रह जाय, उतारकर उस पानीसे स्तनोंकी सूजनको धोओ।

(६) इन्द्रायणकी जड़का लेप करनेसे स्तन-रोग नष्ट हो जाता है।

(७) हल्दी और धतूरेके पत्ते—इनका लेप करनेसे स्तनकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(८) तपाये हुए लोहेको जलमें बुझाकर, वह पानी पिलानेसे स्तन-रोग नाश हो जाता है।

(९) बाँझ-ककोड़ेकी जड़का लेप करनेसे भी स्तन-पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१०) मुलेठी, नीम, हल्दी, सम्हालू और धायके फूल—इन सब को महीन पीस-छानकर, स्तनके घावोंपर बुरकनेसे घाव भर जाते हैं।

(११) प्रसूति अवस्थामें अक्सर पहले-पहल दूध आते समय दर्द होने लगता है तथा सूजन आ जाती है। उस समय ८ माशे नौसादर को आधे छटाँक जलमें घोलकर एकदिल कर लेना चाहिये और उसे

स्तनों पर लगा देना चाहिये। इसके लेपसे स्तनोंमें पड़ी हुई गाँठ शीघ्र ही नर्म हो जाती है। गाँठके पिघलाने और सूजन नाश करनेमें यह लेप बड़ा ही उपकारी है। अगर पैरमें मुरड़ आ जाय या वादीसे सूजन आ जाय, तो यही लेप करनेसे अवश्य फ़ायदा होता है। स्तनोंकी पीड़ा और सूजन मिटानेमें यह उपाय सबसे उत्तम है।

नोट—अगर स्तन पक जायँ, तो नश्तर लगाकर या किसी दवासे पीप वग़ैरह मवाद निकालकर,घाव भरनेके लिये मरहम प्रभृतिसे काम लेना चाहिए।

(१२) अगर दूध स्तनोंमें बहुत ही आता हो और बालक उतना न पी सकता हो और इस वजहसे स्त्रीको कष्ट रहता हो, तो काहूके बीज, मसूर और जीरा—इनको सिरकेमें पीसकर स्तनों पर लेप करो, दूध कम हो जायगा।

नोट—(१) अगर दूध सूख गया हो, तो वच, मोथा, अतीस, देवदारु, सोंठ, शतावर और अनन्तमूल—इन सबका काढ़ा पिलाना चाहिये।

(२) "भावप्रकाश" में लिखा है,—स्तनरोगोंमें पित्त-नाशक शीतल पदार्थोंका प्रयोग करना चाहिये। जौंक लगवाकर ख़ून निकलवा देना चाहिये; किन्तु स्तनोंपर सेंक वग़ैरह करके पसीना कभी न निकालना चाहिये। स्तनकी पीड़ा मिटते ही ज्वर नाश हो जाता है। अगर ज़रूरत हो, तो ज्वर-नाशक दवा देनी चाहिये। अगर प्रसूतावस्था हो, तो वैसा ही नुसख़ा देना चाहिये और सूतिका-रोगका ही पथ्यापथ्य प्रतिपालन करना चाहिये। अगर प्रसूतावस्था न हो, तो वैसा ज्वर-नाशक नुसख़ा देना चाहिये। पर मुख्य उपाय कारणको मिटाना है, जिससे कि ज्वर हुआ हो।

चिकित्सा

स्तन-पीड़ाके शान्त होनेसे ही दूध-ज्वर या स्तन-पीड़ा से हुआ ज्वर आराम हो जायगा। अगर ज़रूरत हो, तो ज्वर-नाशक औषधि भी दी जा सकती है।



उन्नीसवाँ अध्याय

शीतला-ज्वरका वर्णन

मसूरिका

वैद्यकके मतसे शीतला या चेचक मसूरिकाका भेद है। "माधवाचार्य" ने माता, शीतला, ओरी आदिका मसूरिकाके नामसे अलग ही निदान किया है। "वाग्भट्ट" प्रभृति प्राचीन आचार्योंने इसका विस्फोटक रोगके अन्तर्गत समावेश किया है। विस्फोटकका कारण बाहरकी विषैली हवा है, इसलिये विस्फोटक नाम लिखा है। इसमें ज्वर होने के कारण, अङ्गरेज़ डाक्टरोंने मसूरिका (चेचक) की गणना संक्रामक ज्वरोंमें की है।

यूनानी हकीमोंने भी इसे ज्वरों में लिखा है और इसका नाम "हुम्मा जदरी" लिखा है। हमारे यहाँ यह रोग ज्वरसे अलग लिखा है; तथापि हम इसे ज्वरके साथ ही लिखना मुनासिब समझते हैं। इसलिये इसके निदान, लक्षण और चिकित्सा यहीं लिखते हैं।

मसूरिकाके पूर्वरूप

माता निकलनेके पहले ज्वर होता है, खुजली चलती है, देहमें फूटनी होती है, भूख बन्द हो जाती है, चमड़ेमें सूजन होती है, शरीर का रंग बदल जाता है; और आँखें लाल हो जाती हैं।

वातज मसूरिकाके लक्षण

वादीकी मसूरिका (माता) के फोड़े काले, लाल और सूखे तथा कड़े होते हैं और उनमें तीव्र वेदना होती है। ये जल्दी नहीं पकते। उनके कारणसे जोड़ों, हड्डियों और पोरुओंमें फोड़नेकी-सी पीड़ा होती है, खाँसी आती है, शरीरमें कँपकँपी आती है, चित्त स्थिर नहीं रहता;

बिना मिहनत थकान मालूम होती है। तालू, होठ और जीभमें खुश्की होती है एवं प्यास और अरुचि होती है।

पित्तज मसूरिकाके लक्षण

पित्तकी मसूरिकाका मुख लाल, पीला और सफ़ेद होता है। उसमें दाह और पीड़ा बहुत होती है, परन्तु यह माता जल्दी पकती है। इस चेचकमें दस्त पतला होता है, शरीर टूटता है, दाह और प्यासका जोर होता है। अरुचि, नेत्रपाक और मुखपाक ये लक्षण भी होते हैं तथा ज्वर बहुत तेज होता है।

रक्तज मसूरिकाके लक्षण

इसके सब लक्षण पित्तज मसूरिकाके-से होते हैं।

कफज मसूरिकाके लक्षण

इसमें मुँहसे कफ निकलता है, शरीर गीला-सा और भारी रहता है, सिरमें दर्द होता है, वमन-सी आती है; अरुचि, निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, ये लक्षण होते हैं। इसके फोड़े सफ़ेद, चिकने और बहुत मोटे होते हैं। उनमें खुजली बहुत चलती है, पीड़ मन्दी-मन्दी होती है और वे देरमें पकते हैं।

त्रिदोष मसूरिकाके लक्षण

इसके फोड़े नीले, चपटे और बीचमेंसे दबे हुए-से होते हैं। उनमें दर्द बहुत होता है और वे बहुत दिनों में पकते हैं। उनसे बदबूदार चेप निकलता है। त्रिदोषके फोड़े बहुत होते हैं।

चर्मपिड़िकाके लक्षण

इसके फोड़ोंके होनेसे कंठ रुक जाता है, अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप और चैन न पड़ना ये लक्षण होते हैं। इनकी चिकित्सा नहीं हो सकती।

रोमान्तिकाके लक्षण

पित्तसे बालोंके छेदोंके समान बारीक और लाल मसूरिकायें होती

हैं। खाँसी और अरुचि होती है। सबसे पहले ज्वर होता है। इनको "रोमान्तिका" या "कसुमी माता" कहते हैं।

धातुगत मसूरिकाके लक्षण

१—रसगत मसूरिका पानीके बुलबुलेके समान होनी हैं। इनके फूटनेसे पानी-सा बहता है। यह चमड़े में होती हैं, क्योंकि इनमें स्वल्प दोष होता है। इसको लोकमें "दुलारी माता" कहते हैं।

२—रक्तगत मसूरिका ताम्बेके रंगकी होती हैं। ये जल्दी पकती हैं। इनके ऊपरकी चमड़ी पतली होती है। इनके फूटनेसे इनमेंसे खून निकलता है। यह अत्यन्त दूषित होनेसे साध्य नहीं होतीं।

३—मांसगत मसूरिका कड़ी और चिकनी होती हैं। ये बहुत दिनों में पकती हैं। इनकी चमड़ी पतली होती है। शरीरमेंमें दर्द और बेचैनी होती है, खाज चलती है; मूर्च्छा, दाह—जलन और प्यास ये लक्षण होते हैं।

४—मेदोगत मसूरिका गोल, नरम, जरा ऊँची-ऊँची, मोटी और काली होती हैं। इनके होने पर भयङ्कर ज्वर, पीड़ा, इन्द्रियों और मनको मोह, चित्तकी चंचलता और सन्ताप ये लक्षण होते हैं। यह कष्टसाध्य हैं। इनसे कोई ही भाग्यवान बचता है।

५-६—अस्थिमज्जागत मसूरिका बहुत छोटी, रूखी, चपटी और जरा ऊँची होती हैं। इनके होनेसे अत्यन्त चित्तभ्रम, वेदना और बेचैनी होती है। यह मर्मस्थानोंको भेदकर शीघ्र प्राण हरण करती हैं। सारी हड्डियोंमें भौंराके काटनेकी-सी पीड़ा होती है।

७—शुक्रगत मसूरिका पके हुए के समान चिकनी और अलग-अलग होती हैं। इनमें अत्यन्त पीड़ा होती है। गीलापन, बेचैनी, मोह, दाह, उन्माद ये उपद्रव साथ होते हैं। यह असाध्य होती हैं। कोई नहीं बचता।

साध्य मसूरिका

रसगत, रक्तगत, पित्तज और कफज और पित्तकफज मसूरिकाय साध्य होती हैं। ये विना किसी दवाके आराम हो जाती हैं।

कष्टसाध्य मसूरिका

वातज, वातपित्तज, वातकफज मसूरिकायें कष्टसाध्य होती हैं। इनकी चिकित्सा चतुराईसे करनी चाहिये।

असाध्य मसूरिका

सन्निपातज मसूरिका असाध्य होती हैं। कोई मूंगेके समान लाल होती हैं, कोई जामुनके समान, कोई लोहजालके समान और कोई अलसीके दानेके जैसी होती हैं। दोषोंके भेदसे ये अनेक रङ्गकी होती हैं।

सब मसूरिकाओंके अवस्था विशेषके लक्षण

खाँसी, हिचकी, बेहोशी, तेज ज्वर, बकवाद, असन्तोष, मोह, प्यास, दाह, नेत्रोंका टेढ़ा-तिरछा और बाँकापन तथा फटे-से हो जाना ये लक्षण होते हैं। मुंह, नाक और आँखोंसे खून गिरता है, कण्ठमें घुर-घुर शब्द होता है, रोगी भयङ्कर श्वास लेता है। जो मसूरिका-रोगी केवल नाकसे श्वास लेता है, वह वायु और प्याससे तत्काल मर जाता है।

मसूरिकाके अन्तमें कठिनाई

मसूरिका—शीतलाके अन्तमें कोहनी, पहुँचे और कन्धोंमें सूजन होती है। इसका इलाज कठिनाईसे होता है।

मसूरिकाके कारण

चरपरे, खट्टे, खारी और परस्पर विरुद्ध पदार्थोंके खाने, अधिक खाने, लोबिया, उड़द तथा खट्टे सागोंके खाने, विषैले फूलोंके संसर्गसे दूषित हुई हवा और जलके योगसे, देशमें राहु तथा शनैश्चर आदि क्रूर ग्रहोंकी दृष्टि पड़नेसे वातादि दोष कुपित होकर रुधिरके साथ मिलकर मसूरके समान फुन्सियाँ उत्पन्न करते हैं, उनको "मसूरिका" कहते हैं।

मसूरिकाका भेद

शीतला

"भावप्रकाश" में लिखा है,—जो मसूरिकामें ही शीतला देवी का आवेश होजाय, तो उसे "शीतला" कहते हैं। जिस प्रकार भौतिक विषमज्वर होता है, उसी तरह इस शीतलामें ज्वर होता है।

शीतलाके सात भेद

बड़ी माता

अगर ज्वर आनेके बा द, शरीरमें बड़ी-बड़ी फुन्सियाँ पैदा हो जायँ, तो उसे बड़ी शीतला कहते हैं। वह शीतला पहले सप्ताहमें निकलती है, दूसरे सप्ताह (सात दिन) में भर जाती है और तीसरे सप्ताहमें सूख जाती है। इस तरह २१ दिनमें बड़ी शीतला शान्त हो जाती है।

एक जगह लिखा है:—

अग्निदग्धानिभास्फोटाः सज्वररक्त पित्तजाः।
क्वचित सर्वत्र वा देहे विस्फोटा इति ते स्मृताः॥

रक्त और पित्तके दोपसे ज्वर होता है और एक स्थानमें अथवा सारी देहमें जो आगसे जले हुए फफोलेकी तरह वहुत से फफोले हो जाते हैं, उसे "बड़ी माता" कहते हैं।

वाताधिक्यमें सिरमें दर्द, कालापन, ज्वर, प्यास और जोड़ोंमें वेदना होती है। पित्ताधिक्यमें ज्वर,दाह, शरीरमें पीड़ा और प्यास, ये लक्षण होते हैं। फफोले जल्दी ही पक कर बहने लगते हैं और रङ्गमें पीले या लाल होते हैं। कफाधिक्यमें वमन, अरुचि और फफोलोंमें खुजली चलती है। फफोलोंका रंग पीला होता है। उनमें दर्द नहीं होता, पर वे वहुत दिनोंमें पकते हैं।

दूसरा भेद

कोद्रवा माता

वात और कफसे जो शीतला निकलती है और कोदोंके समान होती है, उसे "कोद्रवा" कहते हैं। अनजान मनुष्य इसको पकनेवाली कहते हैं, पर वास्तवमें यह पकती नहीं; पर बिना पके पकी-सी मालूम होती है। यह शीतला, विशेष करके, जलके शूक नामक कीड़ेकी तरह अङ्गोंको बाँधती है। यह सातसे लगाकर बारह दिनके भीतर, बिना किसी दवा-दारूके, आप ही शान्त हो जाती है।

नोट—अगर किसी वजहसे इस कोद्रवा शीतलामें दवा देनेकी ज़रूरत हो जाय, तो "खदिराष्टक" क्वाथ देना चाहिये।

तीसरा भेद

पाणिसहा माता

जो शीतला गरमीके कारणसे राईके दानों-जैसी निकले, जिसमें खाज चले, जिसपर हाथ फेरना अच्छा मालूम हो, उसे "पाणिसहा" कहते हैं। यह शीतला सात दिनमें अपने-आप सूख जाती है।

नोट—कदाचित् यही पानीज्वरा हो। उसमें भी छोटी-छोटी अलाइयाँ होतीं और ज्वर होता है और इसमें भी ज्वर और अलाई-सी होती हैं।

चौथा भेद

सर्षपिका माता या खसरा

जो शीतला सरसोंके दानोंके आकारकी हो और उसका रङ्ग पीली सरसों जैसा हो, उसे "सर्षपिका" कहते हैं। इस शीतलामें अभ्यङ्ग-तेलकी मालिश आदि न करनी चाहिये। साधारण लोग इसे "खसरा" कहते हैं।

पाँचवाँ भेद

दुःखकोद्रवा माता

जो शीतला गरमीकी वजहसे बालकोंके मुँहपर राईके समान

निकलती है, उसे लोकमें "दुःखकोद्रवा" कहते हैं। वह भी अपने-आप सूख जाती है।

छठा भेद

हाम माता

पहले ज्वर आता है, पीछे उर्दकी तरह लाल और ऊँचे मण्डल-वाली शीतला निकलती है; यानी लाल उभरे हुए चकत्ते-से हो जाते हैं और उनमें पीड़ा होती है। उसे बिहार या मगधमें "हाम" कहते हैं। इस शीतला का ज्वर ३ दिन तक रहता है।

सातवाँ भेद

चमरगोटी माता

इसमें बहुत-सी फुन्सियाँ एकमें मिली रहती हैं; यानी छत्ता-सा हो जाता है और यह रङ्गमें काली होती है। इसे चर्मजा या चमर-गोटी कहते हैं।

शीतलाकी साध्यासाध्यता

कितनी ही शीतलाएँ तो बिना इलाजके सहजमें मिट जाती हैं। कितनी ही अत्यन्त कष्टसाध्य होती हैं, कितनी ही समयपर आराम होती हैं, कितनी ही समयपर भी आराम नहीं होतीं और कितनी ही अच्छे-से-अच्छे उपाय करनेपर भी आराम नहीं होतीं।

यूनानी मतसे माताके सम्बन्धमें दो-चार बात

माताकी बीमारी बालकोंको तो होती ही है, पर जवानोंको भी होती है। इस बीमारीमें शरीरपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकल आती हैं। इसमें बुखार होता है, खाँसी होती है तथा गला बैठ जाता है। अगर माताके दाने सब्ज रंगके और काले रंगके हों, तो रोगीके बचनेकी उम्मीद न समझनी चाहिये। अगर दाने गोल हों, उनमें शीघ्र ही पानी भर जाय और वे फैल जायँ, तो आराम हो जाने की सूरत समझनी चाहिये।

माता या चेचक कई तरहकी होती हैं। एक छोटी चेचक होती है, उसे "खसरा" कहते हैं। यूनानीमें उसे "हुसबाह" कहते हैं। इस रोग में बारीक-बारीक दाने सारे शरीरमें निकलते हैं, बुख़ार रहता है, सिर में दर्द और पीठमें वेदना होती है। अगर हरे, काले या पीले रंगके दाने हों, तो रोगीके हक़में बुराई समझनी चाहिये। अगर इसमें बेहोशी और दस्तोंका फितूर हो तो रोगीके बचनेकी कम उम्मीद रखनी चाहिये। हाँ, अगर गोल-गोल और लाल रंगके दाने निकलें तथा बेहोशी और दस्त न होते हों, तो कोई बुराई नहीं, रोगी आराम हो जायगा। मातामें दस्तोंका होना ख़राब समझा जाता है। अगर दाने बड़े-बड़े और अच्छे हों, तो उसे "मोतिया" कहते हैं।

डाक्टरीसे शीतलाका वर्णन

व्यरेला (खसरा)

इसमें भी जुकाम होकर ज्वर चढ़ता है। छोटे-छोटे दाने निकलते हैं, आँखें दुखती हैं, नाक बहती है, साँस लेनेमें तकलीफ होती है, प्यास बहुत लगती है, क़य होती है और रोगी बहुत सुस्त हो जाता है। इसमें भीतरका गुब्बार कम निकलता है, इससे दाने कम निकलते हैं और गरमीका ज़ोर रहता है। इसकी उत्पत्तिका कारण एक प्रकारका विष है।

चिकन पाक्स

(दूसरा खसरा)

इसमें भी पहले बुख़ार चढ़ता है और पीछे छोटी-छोटी मरोड़ी जैसी फुन्सियाँ पीठपर निकलती हैं। ये चौथे-पाँचवें दिन आप ही मुरझा जाती हैं। इनकी उत्पत्तिका कारण भी वही ज़हर है।

स्माल पाक्स

(मसूरिका-शीतला)

पहले बुख़ार चढ़ता है, पीछे सारे शरीरमें मसूर जैसी फुन्सियाँ निकलती हैं। कभी फुन्सियाँ छोटी-छोटी होती हैं और कभी बड़ी-बड़ी

होती हैं। दूर-दूरपर और सफ़ेद रङ्गकी फुन्सियाँ अच्छी होती हैं; लेकिन गहरी, चपटी, काली, लाल या ऊदे रङ्गकी फुन्सियाँ अच्छी नहीं होतीं।

इसकी पैदायश एक क़िस्मके ज़हरसे होती है, जो मादेमें होता है। इसके सिवाय यह रोग छुतहा भी है। एकसे दूसरेके उड़कर लगता है। इसलिये औरतें अपने बालकोंको चेचकवाले बालकोंसे अलग रखती हैं।

चिकित्सा

डाक्टरी मतानुसार इस रोगका उत्तम इलाज टीका लगवाना है। इसीसे आजकल अङ्गरेज सरकारने गाँव-गाँवमें वैक्सीनेटर (टीका लगानेवाले) मुक़र्रर कर दिये हैं। लोगोंको अपने बालकोंके जबर्दस्ती टीका लगवाना होता है। कहते हैं, टीका लगानेसे चेचक नहीं निकलती; अगर निकलती है, तो बहुत हल्की। पर आजकल अमेरिका आदि देशोंके डाक्टर टीकेको हानिकारक बताते हैं। परमात्मा जाने, कौन-सी बात ठीक है। इतना तो हमने भी देखा है, कि टीका लगानेपर भी चेचक निकलती ही है।

मसूरिका और शीतलाकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) कुष्ठ रोगमें जो लेप आदि चिकित्सा की जाती है, वही मसूरिकामें भी हित है।

(२) अगर मसूरिका पहले बाहर निकलकर, पीछे भीतर समा जाय, तो कचनारकी छालका काढ़ा बनाकर उसमें सोनामक्खी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिये अथवा और किसी उपायसे उसे बाहर निकालना चाहिये।

(३) अगर आँखोंमें मसूरिकाकी पीड़ा हो, तो लिसोढ़ेकी छालको पीसकर, उसका लेप आँखों पर करना चाहिये अथवा और कोई लेप

करना चाहिये अथवा दवाओंके काढ़ेसे आँखोंको धोना चाहिये।

(४) माताके रोगमें रूक्ष क्रिया या शीतल क्रियाका अधिक प्रयोग हानिकर है। अधिक रूखी क्रिया करनेसे माता अच्छी तरह नहीं निकलती और कष्ट बढ़ जाता है; इसी तरह अधिक शीतल चिकित्सा से भी खाँसी वगैरह रोग होते हैं, तो वे और भी बढ़ जाते हैं। माता निकल आनेपर गरम और शीतल चीजें देना यूनानी हिकमतसे भी मना है।

(५) अगर माता पकती न हो, तो माताके उपयुक्त उपायोंसे माता को पकाना चाहिये। अगर दाह बहुत हो, तो उसका उपाय करना चाहिये। अगर पीव बहता हो तो उसपर कोई दवाका सफ़ूफ़ वग़ैरह लगाकर उसे सुखाना चाहिये। पकी माताके जल्दी सूखनेसे ज्वर भी जल्दी उतर जाता है।

(६) मातामें अगर कीड़े पड़ जायँ, तो आगे लिखी हुई धूप देनी चाहिये।

(७) रोगीके रहनेका कमरा साफ़, लम्बा-चौड़ा और बिस्तरे साफ़-सुथरे रखने चाहियें। अच्छा हो, अगर रोज़ चादर बदलकर धोबीको दे दी जाया करे। रोगीको साफ और मोटा कपड़ा पहनाना चाहिये।

(८) रोगीको तेलकी मालिश, मछली, मांस, गरम पदार्थ, भारी पदार्थ और हवासे बचाना चाहिये। रोगीके कमरेमें भीड़-भाड़ न रखनी चाहिये। रोगीका पिया जल या बर्तन या कपड़ा दूसरेको काममें न लाना चाहिये। रोगीसे भरसक दूर रहना चाहिये। कम-से-कम अन्य बच्चोंको रोगीके पास न आने देना चाहिये; क्योंकि यह रोग एकसे उड़कर दूसरेको लगता है।

(९) अगर रोगीकी सेवा-सुश्रूषा करनेवाला, इस रोगके हमलेसे बेख़ौफ़ रहना चाहे, तो हरड़के बीजको हाथमें बाँध ले। पुरुष दाहिने हाथमें बाँधे और स्त्री बाँये हाथमें बाँधे। इसके सिवाय आगे लिखे हुए उपायोंसे भी अपनी रक्षा करे।

(१०) भारतमें बहुधा चैतमें माताका कोप होता है। इस समय वैद्यको दूध पीनेवाले बच्चेकी माँको पहलेसे ही खून साफ करनेवाली दवाएँ पिलानी चाहियें। जौंक लगवाकर खून निकलवाना चाहिये। चिकनाई, मांस और मिठाईके त्याग देनेकी सलाह देनी चाहिये।

(११) अगर चेचक निकलनेका सन्देह हो और बच्चा दूध पीनेवाला हो, तो ऐसा उपाय करना चाहिए कि, चेचक ज़ोर न करे; क्योंकि, छोटे बालक तड़फड़ा जाते हैं। अगर ज़ोर कम करना हो, तो बालककी माँको चार तोले खोपरा रोज़ खिलाना चाहिये। अगर बालक दो सालका हो, तो दो तोले रोज़ खिलाना चाहिए और अगर तीन सालका हो, तो तीन तोले रोज़ खिलाना चाहिए। अगर चार सालका हो, तो चार तोले रोज़ खिलाना चाहिए। परमात्माकी दयासे चेचक बिल्कुल ज़ोर न करेगी। बड़ा बालक हो, तो उसे भी कोई ऐसी दवा देनी चाहिए कि जिसके सेवनसे उसपर चेचकका ज़ोर न हो। ये काम उस मौसममें करने चाहियें, जब कि चेचकका दौरदौरा हो।

(१२) चेचक निकल चुकने और सूख जानेके बाद—रोगीको ऐसी कोई दवा लगाने या मुँह धोनेको देनी चाहिये, जिससे उसका रङ्ग निखर आवे और बेचारेकी खूबसूरती न मारी जाय। ऐसे-ऐसे उपाय बताना वैद्यका काम है। गृहस्थ बेचारे, जिन्होंने चिकित्सा-शास्त्र नहीं देखा, क्या जानें?

(१३) वैद्यको चाहिए कि, रोगीसे माताकी हालतमें शोच-फिक्र या रंज करने अथवा स्त्री-प्रसङ्ग करनेकी मनाही कर दे। बहुतसे मूर्ख इन बातोंको नहीं समझते।

(१४) मातावालेको सबसे अलग रखना चाहिए। उसके पास स्त्रियों तथा नीच मनुष्योंको न आने देना चाहिए। मकान शीतल रखना चाहिए। दर्द होनेसे मालिश या तैल-मर्दन हरगिज़ न करना चाहिए और पसीने भी न निकालने चाहियें।

(१६) अगर रोगीका मुँह आ जाय, छाले हो जायँ अथवा गलेमें

घाव हो जायँ, तो कुल्लोंकी दवासे कुल्ले कराकर उन्हें आराम करना चाहिए। अगर प्यास और अतिसार आदि उपद्रव हों, तो उन्हें भी शान्त करना चाहिए।

(१६) मातावालेके घरमें जगह-जगह नीमके ताज़ा पत्ते मँगाकर रख देने चाहियें। हर दरवाजेपर नीमकी ताजा पत्तियोंकी घनी बन्दनवार-सी बाँध देनी चाहिये। रोगीके ऊपर नीमके पत्तोंका बङ्गला-सा रोज़ छा रखना चाहिए। हर रोज़ नए पत्ते मँगाकर पुराने फेंक देने चाहियें। रोगी और रोगीके परिचारकको नीमकी टहनी हाथमें लेकर उसीसे मक्खियाँ भगानी चाहियें। नीमकी पत्तियोंकी हवासे माता में बहुत कुछ शान्ति होगी।

(१७) जिस घरमें मातावाला हो, उस घरमें जूठे पदार्थ वग़ैरह न ले जाने चाहियें। शीतलामें, ज्वर होनेपर भी, शीतल जल देना चाहिए। गरम किया हुआ जल ज्वरोंमें हितकर है, पर शीतलाके ज्वरमें अहित यानी नुक़सानमन्द है। शीतलावालेका कमरा एकान्त, शान्त और रमणीक होना चाहिए—शोरगुल और बहुत आदमियोंकी भीड़-भाड़का होना ख़राब है। रजस्वला स्त्री अथवा और अपवित्र मनुष्य जैसे कोढ़ी, उपदंश रोगी अथवा खून-फिसादवालोंको रोगीके पास न जाने देना चाहिए।

(१८) हमारे यहाँ शीतलामें जो कुछ क्रियाएँ की जाती हैं, वे गरम ही की जाती हैं। निकलनेके समय और भरनेके समय गुड़ प्रभृति गरम पदार्थ दिये जाते हैं, क्योंकि शीतल पदार्थोंसे उसके ठिठरा जाने का ख़तरा रहता है; परन्तु "भावप्रकाश" में लिखा है:—

शीतलासु क्रिया कार्या शीतला रक्षयासह।
बध्नीयात् निम्बपत्राणि परतो भवनान्तरे॥

शीतलाके रोगमें सम्पूर्ण शीतल क्रिया करनी चाहिये। मन्त्र वग़ैरहसे भूतादिको दूर करके, रोगीकी रक्षा करनी चाहिए। चारों ओर नीमके पत्ते बाँधने चाहिये।

एक यूनानी हकीम महाशय लिखते हैं,—"हिन्दुस्तानमें जब बालकोंके चेचक निकलती है, तब लोग उनको गरम चीज़ें देते हैं। भोजनके लिए गुड़ और चने देते हैं। परमात्मा ऐसे उपायोंसे रक्षा करे। चेचकमें केवल खिचड़ी या मूँगकी दाल खिलानी चाहिए। मसूर की दाल भी गुणकारी है।"

हमारी समझमें गरम और अधिक शीतल दोनों ही क्रियाएँ हानि-कारक हैं। ऊपरी कामोंके शीतल होनेमें ज़रा भी हानि नहीं। जैसे घरको हर तरह शीतल रखना, माताकी फुन्सियोंके भर जानेपर,—उनमें पानी भर जानेपर, लालचन्दन या सफेद चन्दन पीस-पीसकर लगाना और नीमकी भरमार रखना वग़ैरह-वग़ैरह। बहुत लोग डरते हैं, पर हमने माताकी भरी हुई फुन्सियों पर चन्दनका लेप कराकर बड़ा फायदा उठाया है। बालककी तकलीफ एकदम मिट जाती है, शान्ति आ जाती है और फुन्सियाँ बहुत ही जल्दी बैठ जाती हैं; पर चन्दन भूलकर भी निकलती मातापर न लगाना चाहिए। जब वे भरकर मोती-सी हो जायँ, तभी लगाना चाहिये।

(१६) "भावप्रकाश"में लिखा है,—मातावालेको नमकीन और चरपरे पदार्थ न देने चाहियें। अगर नमक दिये बिना न सरे, तो सेंधा-नोन देना चाहिए और वह भी कम। अगर पेटमें दर्द या अफारा हो अथवा वायुका कोप हो, तो जङ्गली जानवरोंका माँसरस—शोरबा ज़रा-सा सेंधानोन मिलाकर देनेकी सलाह "वंगसेन" भी देते हैं।

(२०) माताकी तीन अवस्थायें होती हैं—(१) निकलनेकी, (२) भरनेकी, (३) ढलनेकी। कभी माता तीन दिनमें निकल आती है, तीन दिनोंमें भर जाती है और तीन ही दिनमें ढल जाती है। कभी ये तीनों काम पाँच-पाँच या सात-सात दिनोंमें होते हैं; पर अक्सर २१ दिनसे ज़ियादा नहीं लगते। पहली और दूसरी अवस्थामें घी, तेल आदि कभी न देने चाहिएँ।

(२१) शीतलाकी शान्तिके लिए शीतला-स्तोत्रका पाठ करना

चाहिए। "शीतला-स्तोत्र" में आठ श्लोक हैं। आजकल लोग पाठ तो प्राय: नहीं कराते, पर औरतोंने अपने गानोंमें स्तोत्र बना लिये हैं। वे माताके दिनोंमें रोगीके पास बैठकर गाया करती हैं। जप, होम, दान-पुण्य, गौ, ब्राह्मण और महादेव-पार्वतीका पूजन करना चाहिये। विष-नाशक कोई औषधि और हीरा-पन्ना आदि रत्नोंमेंसे जो रत्न इसमें शान्तिकारक हो, रोगीको धारण करना चाहिये।

(२२) "वङ्गसेन" ने लिखा है, मसूरिकामें यदि दुष्ट व्रण हो जायँ, तो जौंक लगवाकर ख़राब ख़ून निकलवा देना चाहिये। अगर सख़्त ज़रूरत हो, तो इस कामको शेषमें करना चाहिये।

अगर ख़ून-फ़िसाद हो, तो शरद और वसन्त कालमें अवश्य ख़ून निकलवा देना चाहिये। जौंक, सींगी, तूम्बी, फ़स्द और नश्तर इनसे ख़ून निकाला जाता है। जौंक हाथ भरका ख़ून खींचती है, फ़स्द सारे शरीरका ख़ून निकालती है, सींगी दश अंगुलका और तूम्बी बारह अंगुलका ख़ून निकालती है।

फोड़ा, फुन्सी, गाँठ, किसी ख़ास स्थानकी सूजन, दाह, शरीरका कहींसे लाल हो जाना अथवा पके फोड़ेकी तरह हो जाना, वातरक्त, कोढ़, सिरदर्द, तिल्ली, उपदंश, रक्तपित्त और स्तनरोग वग़ैरहमें ख़ून निकलवानेसे बहुत जल्दी फ़ायदा होता है। दुष्ट वात भी जब क़ाबूमें नहीं आता, ख़ून निकालकर आराम करते हैं। हिकमतमें फ़स्द खोलनेकी चाल बहुत है। कमज़ोर, गर्भवती, प्रसूता, नपुन्सक, बालक, बूढ़े, अति मैथुन करनेवाले और डरपोंक प्रभृति मनुष्योंका ख़ून फ़स्द द्वारा न निकलवाना चाहिये। अगर सख़्त ज़रूरत हो, तो जौंक लगवाकर ख़ून निकलवा देना चाहिये। जौंक लगवानेमें ख़तरा नहीं रहता, पर ज़हरी जौंक न होनी चाहिये।

अगर फ़स्द वग़ैरहसे ख़ून इतना बहने लगे, जो बन्द न हो, तो जौका आटा, गेहूँका आटा, साँपकी काँचली, रेशमी कपड़ेकी राख, इनको पीसकर ज़ख़्म या फोड़ेके मुँहपर दबा देने और बाँध देनेसे ख़ून

बन्द हो जाता है। पीछे चन्दन वग़ैरहका शीतल लेप करना चाहिये। इन उपायोंसे खून बन्द हो जाता है। अगर इन उपायोंसे खून बन्द न हो, तो व्रणके मुखपर सुहागे आदि खारोंका लेप करना चाहिये अथवा वहाँ दाग देना चाहिये।

(२३)आजकल माता-रोगमें चिकित्साका नाम लेना ही बुरा समझा जाता है। मूर्ख लोग समझते हैं, कि अगर इसमें दवा कराई तो रोगी नहीं बचनेका, क्योंकि माता कुपित हो जायगी। यह उनकी भूल है। बेशक ऐसी कई माता होती हैं, जिनमें ज़रा भी दवाकी दरकार नहीं; वे बिना किसी दवाके अपने-आप शान्त हो जाती हैं। पर कितनी ही अवस्थाओंमें बिना इलाजके रोगी बिना मौत मर जाता है। मूर्खोंका शीतलाष्टकके इस मन्त्रपर विश्वास जमा हुआ है:—

न मन्त्रो नौषधं किंचित् पाप रोगस्य विद्यते।
त्वमेका शीतले धात्री नान्यां पश्यामि देवताम् ॥

हे शीतले ! इस पापरोग (मसूरिका-चेचक) की न कोई दवा है और न कोई मन्त्र है। इससे बचाने वाली तू ही एक है; इससे बचानेवाला और कोई देवता मेरी नजर में नहीं आता।

यह मूर्खोंका ख़याल है और उन्होंने इसे भारतके घर-घरमें फैला दिया है, जिससे लाखों जानें वृथा जाती हैं। आयुर्वेदके रचनेवाले महर्षियों ने शीतलाके प्रत्येक उपद्रव की शान्तिके उपाय लिखे हैं। जान खोनेकी अपेक्षा उनसे काम लेनेमें ही भलाई है। बंगालमें इस रोगके इलाज करनेवाले, जिन्हें सन्त चिकित्सक कहते हैं, बहुतायतसे हैं। उनको इसी चिकित्साके करते रहनेसे अच्छा अनुभव रहता है। लोग यदि इलाज नहीं भी कराते हैं, तो उनको बुलाकर रोगी को दिखाते हैं और उनसे सलाह किया करते हैं। माताके ढल जानेके बाद, कितने ही रोगी तो एकदम चंगे हो जाते हैं और कितनों ही को भयंकर ज्वर, श्वास, खाँसी और तृषा तथा अतिसार रोग पीड़ित करते हैं। अगर उस दशामें इलाज नहीं कराया जाता है, तो रोगी कलेजेमें सूजन

आकर निश्चय ही मर जाता है । अगर माताके मौसममें पहले ही कोई दवा दे दी जाय, तो माता नहीं निकलती और निकलती है तो ज़रा भी कष्ट नहीं होता । इसलिये जहाँ तक हो, पहले रोकनेका उपाय करना चाहिये । कहा है,—"Prevention is better than cure." अर्थात् इलाज करनेसे पहले ही रोकना भला है । अगर पहले रोक न की जाय तो समय पर तो जीवन-रक्षा और रोगनाशका उपाय करना ही चाहिये । अगर मातामें कोई उपद्रव न हो, तो इलाजकी जरूरत नहीं ।

(२४) माताके ज्वरमें ज्वर की तरह ही रोगीको अपथ्योंसे बचाना चाहिये । इसमें भी शीतल हवा, परिश्रम, तेलकी मालिश, चन्दनादिका लेप, स्नान, चिकनाई, खाना-पीना, क्रोध करना, भारी भोजन करना, मैथुन करना, चिन्ता-फिक्र करना, वमन, विरेचन आदि सब अपथ्य हैं । इनसे रोगीको बचाना चाहिये ।

नोट—हमने जो चन्दनके लेपकी बात पहले लिखी है, वह माताके भर जानेके बाद ढलते समयकी लिखी है । चन्दनका लेप सारे शरीरमें न कराना चाहिये । जो फुन्सियाँ पक कर भयानक रूप धारण करलें, उनमें अँगुलीमें चन्दन भरकर टिपकियाँ लगा देनी चाहियें । ज्वरमें शीतल जल मना है, पर माताके ज्वरमें शीतल जल हितकर है । वमन-विरेचन की जरूरत होनेसे अवस्था विशेष में कराया जाता है और उससे माता जल्दी सूख जाती है; पर सभी अवस्थाओं में नहीं ।

(२५) अगर बालकके शरीरमें माताके समय खुजली चल जाय, तो उसके हाथोंमें कपड़ा लपेट देना चाहिये और पोस्तके डोड़ों को रातको भिगोकर और सबेरे मल-छानकर (औटाना मत) उसमें मिश्री मिलाकर दोनों समय पिलाना चाहिये अथवा और उपाय करना चाहिये । हम अनेक परीक्षित उपाय आगे लिखेंगे । अगर हाथ-पैरोंके तलवोंमें माताके बनोंके मारे दाह यानी जलन होती हो, तो चाँवलोंको भिगोकर और उनका पानी नितार या छानकर उसे हाथ-पैरोंके तलवों पर ढालना चाहिये; इससे जलन कम हो जाती है । इसी तरह आब-दस्तके लिये दवाका जल बना देना चाहिये । आँखोंको भी कोई जल

बना देना चाहिये, जिससे आँखोंके नष्ट होनेका भय मिट जाय; क्योंकि माता शरीरके हर हिस्सेमें निकलती है। इसमें अनेक आदमी लँगड़े, लूले, अन्धे या बहरे हो जाते हैं। हम ऊपर लिख आये हैं कि जिस मातामें उपद्रव न हों, उसमें भूलकर भी दवा-दारू न करनी चाहिये; क्योंकि वैसी माता स्वयं, बिना किसी प्रकारके कष्टके, ढल जाती है। ये सब उपाय उपद्रवयुक्त मातामें करने चाहियें।

(२६) "वैद्यविनोद" में लिखा है,—सातवें दिन गोबरकी रज सिरपर डालकर, हल्दी और चाँवलोंके चूर्ण का लेप करना चाहिये। घटोत्कचकी प्रतिमा बनाकर और पूजकर, पाँवमें कौड़ी बाँध देनी चाहिये। ऐसा करनेसे रोगीका मंगल होता है। माताके शान्त होने पर भी यदि दाह, ताप और ज्वरकी शान्ति न हो, तो गिलोय, धनिया, पद्माख, नीम, नेत्रवाला आदि कफपित्त-नाशक औषधियोंका शीघ्र प्रयोग करना चाहिये। मसूरिकाके आरम्भमें केवल मांसरस न पिलाना चाहिये। व्रणकी सूजन दूर करनेवाले और वातरोग-नाशक उपचार करने चाहियें। अगर घाव दूषित हो जायँ, तो जौंक लगवाकर खून निकलवा देना चाहिये।

शीतलाकी चिकित्सा

शीतलाके रोकने या उसके ज़ोर कम करनेवाले उपाय

(१) चैतके महीनेमें दूध पीनेवाले बच्चोंकी माताओंको और दाँत-वाले बालकोंको खून साफ करनेवाली औषधियाँ पिलानी चाहियें। पहलेसे ही ऐसी औषधियोंका सेवन करनेसे माता ज़ोर नहीं करती। शाहतरेका अर्क़, सरफोंकेका अर्क़, खूबकला और सादे उन्नाबोंका शर्बत, काहूके बीजोंका हलवा—ये सब चीज़ इस कामके लिये उत्तम हैं। शाहतरे या पित्तपापड़ेका अर्क़ ही बड़ी उत्तम चीज़ है। इसका या सरफोंकेका अर्क़ भभकेसे खिंचवा लेना चाहिये। तेल, घी, मांस, मिठाई से परहेज़ रखना चाहिये।

रसो निम्बस्य मंजर्या पीतश्चैत्रे हितावहः।
हन्ति रक्तविकाशंश्च वातपित्तं कफं तथा ॥

चैत मासमें नीमकी नरम-नरम कोंपलें पानीमें घोट-छानकर पीनेसे रक्त-विकार (खून फिसाद) तथा वात, पित्त और कफके रोग नाश हो जाते हैं। इस नुसख़ेकी सचाईमें ज़रा भी सन्देह नहीं। नीम हमारे देशमें सच्चा अमृत है। इससे अनन्त रोग नाश होते हैं। हम इसके चन्द परीक्षित प्रयोग पाठकोंके उपकारार्थ लिखते हैं—(१) नीमके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाकर सात दिन पीनेसे भयंकर गरमी भी शान्त हो जाती है। (२) नीमके पत्तोंका रस ३ मास तक लगातार पीनेसे, नीमके वृक्षकी छायामें सोनेसे और नीमके पत्ते डालकर औटाये हुए जलसे रोज़ स्नान करनेसे भयंकर रक्तपित्त और कोढ़ रोग नाश हो जाता है। परहेजसे रहना शर्त्त है। (३) नीमके पत्तोंके झाग दाह-स्थानपर मलनेसे दाह—जलन नाश हो जाती है। (४) नीमकी छालके काढ़ेमें धनिया और सोंठ का चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जाड़ेके ज्वरोंमें कुनैनसे ज्यादा फ़ायदा होता है। (५) पंचनिम्बके चूर्णसे कोढ़ तो नाश हो ही जाता है पर और भी अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं। (६) जो शख्स सदा सवेरे-की-सवेरे कड़वे नीमके पत्ते खाता रहता है, उसका सर्प कुछ नहीं कर सकता। (७) कड़वे नीमके पत्ते पीसकर और उसमें शहद मिलाकर लगानेसे, भयंकर बहता हुआ घाव आराम हो जाता है। (८) पुराने नीमकी लकड़ी घिस घिसकर लगानेसे खुजली नाश हो जाती है। छालको घिस-घिसकर लगानेसे पकी हुई या भरी हुई फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं और जलन मिट जाती है। (९) गरमीके मौसममें दस्त होते हों, तो नीमके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे दस्त बन्द हो जाते हैं और जलन मिटकर शान्ति हो जाती है। नीमके सैकड़ों प्रयोग हैं। हम उन्हें किसी अगले खण्डमें लिखेंगे। उपरोक्त सभी प्रयोग परीक्षित हैं।

(२) अगर बालक दूध पीता हो और चेचकका मौसम हो तथा चेचक निकलनेका शुभा हो, तो बालककी माँको हर रोज़ चार तोले खोपरा—नारियलकी गिरी खानेकी सलाह दो। इस उपायसे माता या तो निकलेगी ही नहीं; अगर निकलेगी तो जोर नहीं करेगी। परमात्मा की दयासे यह उपाय अच्छा काम देता है।

(३) चेचकके मौसममें बालकोंको घोड़ीका दूध पिलाना, ३-४ सेमलके बीज निगलवा देना अथवा छिली हुई मुलेठी ६ माशे और

अनारदाने ६ माशे दोनोंको औटाकर और मल-छानकर पिलाना और ऊपरसे शाहतरेका एक तोले अर्क़ पिलाना—बहुत मुफीद है। इनमेंसे कोई न कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। मुलेठी आदिका काढ़ा शाहतरेके अर्क़के साथ पिलाना सबसे अच्छा परीक्षित उपाय है।

(४) नीमके बीज, बहेड़ेके बीज और हल्दीको बराबर-बराबर लेकर शीतल जलमें पीस-छानकर, कुछ दिन पीनेवालेको शीतलाका भय नहीं रहता। रोटी खानेवाले बालकोंको इस नुसखेको हर मौसममें महीने दो महीने या जितने दिन हो सके अवश्य पिलाना चाहिये। बहुत ही उत्तम नुसखा है। इसके पीनेसे या तो माता नहीं निकलती या कम निकलती है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं; पर और भी शिकायतें नहीं होतीं।

(५) स्त्रीके बायें और पुरुषके दाहिने हाथमें हरड़का बीज बाँध देनेसे माताका भय बहुत कम रहता है।

(६) शीतलाका ज़ोर कम करनेके लिए बनकेलेके बीज भैंसके दूधमें पीस-छानकर पिलाने चाहियें।

शीतलाके पूर्व रूपकी चिकित्सा

(१) शीतलाके पूर्वरूपमें ज्वर आवे, तो अडूसेके रसके साथ शहद पिलानेसे शीतलाका विकार नष्ट हो जाता है।

(२) मसूरिकाके आरम्भमें हुलहुलके रसमें सफेद चन्दनका कल्क डालकर पीनेसे या केवल नीमका रस पीनेसे मसूरिका या माताका डर जाता रहता है। मसूरिकाके निकलते ही, केवल हुलहुलका स्वरस पीनेसे भी बड़ा लाभ होता है।

(३) बाँसकी छाल, तुलसी, लाख, बिनौले, मसूर, जौका आटा, अतीस, घी, बच और ब्राह्मी—इन सबको या इनमेंसे जो-जो मिले उनकी धूप बनाकर, मसूरिकाके आरम्भमें, धूप देनेसे मसूरिका (माता) शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

शीतलाकी शान्तिके उपाय

(१) लघुपञ्चमूल, वृहत्पञ्चमूल, रास्ना, आमले, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा—इनको जलमें पीसकर पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(२) पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाढ़, कुटकी, खैर, नीम, खिरेंटी, आमले और कटाई—इनका काढ़ा पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(३) दशमूल, रायसन, आमले, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा,—इनका काढ़ा पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(४) गिलोय, मुलेठी, रास्ना, लघुपञ्चमूल, लालचन्दन, कुम्भेरके फल, खिरेंटीकी जड़ और कटाई—इनका काढ़ा वातजनित मसूरिका में, पकने या भरनेके समय, पीना अच्छा है।

(५) पित्तकी मसूरिकामें पहले नीम, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, चन्दन, लालचन्दन, अडूसा, धमासा, आमले, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) और कुटकी—इनके काढ़ेको शीतल करके, उसमें मिश्री-शहद मिलाकर पीना लाभप्रद है।

(६) पित्तकी मसूरिकामें दाह, ज्वर, विसर्प, व्रण और पित्तकी अधिकता हो; तो दाख, कुम्भेरके फल, खजूर, पटोलपत्र, नीम, अडूसा, खीलें, आमले और धमासा—इनके काढ़ेमें मिश्री डालकर पीना हित है।

(७) अनन्तमूल, पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, चन्दन, लालचन्दन, मूली, आमले, कुटकी, अडूसा, खस और जवासा—इनका काढ़ा पीने से पित्तकी मसूरिका, दाह समेत, नष्ट हो जाती है।

(८) क्षीरमोरट और कुम्भेरके फल—इनका काढ़ा बनाकर, शीतल करके, मिश्री और खीलोंका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तकी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(९) धमासा, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र और कुटकीका काढ़ा—कफज

और पित्तज मसूरिकामें पीना चाहिये।

(१०) पित्तकी मसूरिकामें, पहले पटोलकी जड़का काढ़ा अथवा पटोलपत्रका काढ़ा, ईखकी जड़के स्वरसके साथ पीना हितकारी है।

(११) नीम, पित्तपापड़ा, पाढ़, परवल, सफेदचन्दन, लालचन्दन, ख़स, कुटकी, आमले, अडूसा और धमासा—इनको एकत्र पीसकर, खाँड़ मिलाकर, इस शीतल पानकको पीनेसे पित्तकी मसूरिका नष्ट हो जाती है। इसके सिवा दाह, पित्तज्वर, पित्तव्रण और पित्तविसर्पपर यह पानक हितकारी है।

नोट—वास्तवमें यह पानक इन रोगोंपर परम हितकर है।

(१२) अडूसा, नागरमोथा, चिरायता, हरड़, बहेड़ा, आमला, इन्द्रजौ, जवासा, कड़वे परवल और नीम—इनका काढ़ा पीनेसे कफकी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(१३) अडूसेके स्वरसमें शहद मिलाकर पीनेसे कफज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(१४) नीम, पित्तपापड़ा, पाढ़, कड़वे परवल, कुटकी, सफेदचन्दन, लालचन्दन, ख़स, आमले, अडूसा, और लाल धमासा—इनका काढ़ा बनाकर और खाँड़ या मिश्री मिलाकर पीनेसे सब दोषोंसे पैदा हुई तथा ज्वर और विसर्पवाली मसूरिका भी नष्ट हो जाती है।

(१५) पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तपापड़ा—इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे अपक (बिना पकी) मसूरिका नष्ट हो जाती है और पकी मसूरिका शुद्ध होती है। इससे अच्छी दवा विस्फोटक ज्वरको शान्त करनेवाली और नहीं है।

(१६) पटोलपत्र, नागरमोथा, श्योनाक और चौलाई—इनके काढ़ेमें हल्दी और आमलोंका कल्क डालकर पीनेसे मसूरिका, विस्फोटक, विसर्प, रोमान्तिका, वमन और ज्वर—ये सब नाश हो जाते हैं।

(१७) करेलेके पत्तोंके स्वरसमें, हल्दी का चूर्ण डालकर पीनेसे

रोमान्तिका, ज्वर, विसर्प और मसूरिका रोग नाश होते हैं।

(१८) चिरायता, नागरमोथा, अडूसा, त्रिफला, इन्द्रजौ, जवासा, नीमकी छाल और पटोलपत्र--इनका काढ़ा बनाकर और शहद डालकर पीनेसे मसूरिका रोग शमन होता है।

(१९) धमासा, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र और कुटकी—इनका काढ़ा कफ-पैत्तिक मसूरिकामें पीना चाहिये।

(२०) दुर्गन्ध करञ्जके रस और आमलोंके रसमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे सूजन और कफपैत्तिक मसूरिका नाश हो जाती है।

(२१) अमृतादिक्काथ पीनेसे पित्तकफजनित मसूरिका नाश हो जाती है।

नोट—रक्तज मसूरिका रक्तमोक्षण—खून निकलवानेसे शान्त होती है।

मसूरिका-नाशक लेप

(२२) मजीठकी छाल, बड़की छाल, पिलखनकी छाल, सिरसकी छाल और गूलरकी छाल—इनको एकत्र पीसकर, चारों ओर लेप करनेसे वातज मसूरिका नष्ट होती है।

(२३) सिरसकी छाल, गूलरकी छाल, खैरके पत्ते और नीमके पत्ते,—इनका लेप करनेसे कफ-सम्बन्धी और पित्त-सम्बन्धी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(२४) सिरसकी छाल, पीपरके पेड़की छाल, लसोढ़ेके पेड़की छाल और गूलरके पेड़की छाल—इनको कूट-पीस और छानकर, गायके घी में मिलाकर, चेचकके दानोंपर लगाना चाहिये। अगर चेचकके दानोंमें दाह या जलन हो, तो अवश्य ही लगाना चाहिये। इससे दाह निश्चय ही शान्त हो जाता है।

(२५) सिरसकी छाल, गूलर, पीपल, पीलू और बड़की छाल—इन सब दरख्तोंकी छालोंको लाकर, खूब महीन पीसकर, घीमें मिलाकर, लेप करनेसे शीघ्र ही व्रण, विसर्प और दाह नष्ट हो जाता है।

(२६) जिस मसूरिकामें पीव बहता हो, जो चारों ओर फैली हुई

हो, उसपर दशाङ्ग चूर्णको बुरकना चाहिये अथवा उसका लेप करना चाहिये।

(२७) आरने ऊपलोंकी राख चेपपर छिड़कनेसे लाभ होता है। इसको सब स्त्रियाँ जानती हैं। मसूरिकामें, क्लेदकी अवस्थामें यह बड़ी लाभदायक है। सूखे गोबरका चूर्ण छिड़कनेकी बात लोग कहते हैं, पर इसका हाल हमें ज़रा भी नहीं मालूम। "भावप्रकाश" में भी लिखा है, शीतलाकी फुन्सियोंमें दाह हो, तो सूखे गोबरकी राख हितकारी है। इस राखसे फुन्सियाँ सूख जाती हैं और पकती भी नहीं।

(२८) मसूरिकामें क्लेद और स्राव हो यानी वह बहती हो, तो उसपर पञ्च वल्कल (छाल) का चूर्ण यानी बड़, गूलर, पीपल, पाकर और मौलसरीकी छालको पीसकर घावोंपर बुरकना चाहिये; अथवा दशाङ्ग लेपकी दवाओंका चूर्ण बुरकना चाहिये।

(२९) मसूरिकामें कीड़ा वग़ैरह पड़नेका डर हो या पैदा हो जायँ, तो सरल आदि औषधियोंकी धूप देनी चाहिये। धूना, चन्दन, अगर, गूगल और देवदारु प्रभृतिकी धूनी देनी चाहिये।

(३०) हल्दी, दारुहल्दी, ख़स, सिरस, नागरमोथा, लोध, चन्दन और नागकेशर,—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे स्वेद, विस्फोटक, विसर्प, कोढ़, दुर्गन्ध और रोमान्तिका मसूरिका नाश हो जाती हैं।

(३१) मुलेठी, बहेड़ा, आमला, मूर्वा, दारुहल्दीकी छाल, नील कमल, ख़स, लोध और मजीठ—इन सबको पीसकर, इनका लेप आँखोंपर करनेसे या इनको आँखोंके अन्दर लगानेसे मसूरिका नष्ट हो जाती है और फिर कभी नहीं होती।

(३२) आँखोंमें मसूरिकाकी पीड़ा हो, तो लिसोढ़ेकी छालको पीसकर आँखों पर उसका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३३) गवेधु धान्य और मुलेठी—इनका जल आँखोंमें सींचनेसे मसूरिकासे दूषित हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(३४) मुलेठी और गदापूर्नाको पीसकर और उसे जलमें घोलकर, उसी पानीसे रोज़ आँखोंके सींचनेसे आँखोंको किसी तरहकी हानि पहुँचनेका खटका नहीं रहता । यह उपाय मातावालोंको अवश्य करना चाहिये; क्योंकि उपाय न करने या रामभरोसे बैठे रहनेसे अनेक बालक मातामें नेत्रहीन हो जाते हैं। यह उपाय आज़मूदा है ।

(३५) खैर और विजयसारकी लकड़ीको लेकर, दो-अढ़ाई सेर जलमें औटाकर, शीतल करलो; पीछे छानकर १ मिट्टीकी साफ कोरी हाँड़ीमें पानी भरकर रोज़ रख दिया करो । रोगीको यही जल शीतल करके पीनेको दिया करो ।

(३६) खैर और लिसोढ़ेकी छालको जलमें औटाकर और छानकर, एक हाँड़ीमें भरकर रख दिया करो । माता-रोगी पाखाने जाय, तो इसी शीतल जलसे आबदस्त लिवाया करो । शौचकर्मके लिये यह जल बड़ा उपकारी है । किसी समय यह जल न हो, तो ऊपरके नं० ३५ जलसे भी आबदस्तका काम लिया जा सकता है ।

(३७) पैरोंकी फुन्सियोंमें बहुत दाह हुआ करता है, इसके लिये चाँवलोंका पानी तैयार करके, उसी पानीसे पाँवोंकी फुन्सियोंको बार-म्बार सींचना चाहिये । आधा पाव चाँवल, पानीमें भिगो दिया करो । सवेरे उस ज़लको छानकर काममें लाया करो । २-३ घण्टे चाँवल भीगनेसे भी चाँवलोंका जल तैयार हो जाता है ।

(३८) चमेलीके पत्ते, मजीठ, दारुहल्दी, सुपारी, आमले, मुलेठी और छोंकरेकी छाल (शमी),—इन सबको समान भाग लेकर, सोलह गुने जलमें डालकर औटा लो । पीछे मल-छानकर, उस काढ़ेमें शीतल होने पर शहद मिलाकर, इसके कुल्ले कराओ । इससे मुँहके छाले और गले की तकलीफ़ रफ़ा हो जाती है । आमले और मुलेठीके काढ़ेके कुल्ले करानेसे भी गलेके घावोंमें फायदा होता है । काढ़ेमें शहद अवश्य मिला लेना चाहिये ।

(३९) अगर माताके स्राव (चेप यां पीव) को धोनेकी ज़रूरत

हो, तो नीम, बबूल, अशोक, कन्दूरी और बेंतकी छाल—इनको समान-समान लेकर, काढ़ा बना और शीतल करके, इसीसे जख़्म और चेप आदिको धोओ।

निकली हुई माता रुक जाय—

उसके निकालनेके उपाय

(१) चना भूनकर खिलानेसे या तूम्बरीका जल औटाकर पिलानेसे माता बाहर निकल पड़ती है और मद तथा ज्वर आदि शान्त हो जाते हैं।

(२) तुलसीके पत्तोंके रसके साथ अजवायन पीसकर लगानेसें भी माता निकल आती है।

(३) नीम, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र, कुटकी, अड़ूसा, धमासा, आमले, खस, चन्दन और लालचन्दन—इनका काढ़ा बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे सब शरीरगत मसूरिका रोग, ज्वर और विसर्प आराम हो जाते हैं तथा निकलकर भीतर चली गई हुई मसूरिका बाहर निकल आती है। इसका नाम निम्बादि क्वाथ है। यह बड़ा उत्तम काढ़ा है।

(४) ज़रा-ज़रासी जावित्री कई दफा खिलानेसे भी माता निकल आती है।

(५) अगर मसूरिका (शीतला) बाहर निकलकर फिर भीतर समा जाय, तो कचनारकी छालका काढ़ा बनाकर और उसमें सोनामक्खी का चूर्ण डालकर पिलाओ; माता फिर बाहर निकल आवेगी।

मसूरिका (माता) के पकानेके उपाय

(१) बेरोंका चूर्ण गुड़के साथ खानेसे वात, पित्त और कफ सब तरहकी मसूरिका पक जाती हैं। यह नुसख़ा परीक्षित है। तत्काल माता पकती है।

(२) बादामके दो दाने पानीमें भिगोकर और छीलकर, पीछे

पीसकर और जलमें घोलकर पिलानेसे अथवा यों ही एक बादाम खिलानेसे माता भर आती है।

(३) पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तपापड़ा, इनका काढ़ा पिलानेसे माता अवश्य पक जाती है। यह नुसखा इस कामके लिये निश्चय ही उत्तम है। इससे पकी हुई माता भी शीघ्र ही सूख जाती है।

(४) गिलोय, मुलेठी, मुनक्का, ईखकी जड़ और मीठे अनारका छिलका—इनको एकत्र पीसकर और गुड़ डालकर पीनेसे, वायुका कोप नहीं होता और माता पक जाती है। यह परीक्षित उपाय है।

नोट—इन सबमेंसे ईखकी जड़ छोड़कर शेष सबको दूधमें डालकर औटाने और पीछे उस दूधमें ज़रासी नमककी डली डालकर फाड़ लेनेसे जो पानी-सा रह जाता है, उस पानीके पिलानेसे भी माता जल्दी पकती है। पर यह सब पकते समय ही देने चाहियें।

(५) गिलोय, मुलेठी, रास्ना, लघुपञ्चमूल, लालचन्दन, कुम्भेरके फल, खिरेंटीकी जड़ और कटाई,—इनका काढ़ा भी वातज मसूरिका में, पाक-कालमें (पकनेके समय) सेवन करना चाहिये।

(६) "बंगसेन" में लिखा है, कफजनित और विशेषकर कठिन मसूरिकाओंमें दही और सत्तूको मिलाकर लेप करना चाहिये।

नोट—पकनेके समय सब तरहकी माताओंको वायु सुखा देता है, इसलिए पाक-कालमें (पकते समय) बृंहण—पुष्टिकर पथ्य देना चाहिये, शोषण—सुखानेवाला पथ्य न देना चाहिये।

माताको सुखानेके उपाय

(१) आरने कंडोंकी राख या गोबरका महीन चूर्ण पीप निवारण करनेके लिये बुरकना चाहिये; अथवा पञ्च वल्कलका चूर्ण बुरकना चाहिये अथवा दशांग चूर्ण बुरकना चाहिये। देखो पृष्ठ ४१६ के नं० २७-२८ प्रभृति।

माताका दाह नाश करनेके उपाय

(१) पीछे पृष्ठ ४१५ में लिखा नं० २४ सिरस, पीपल, लिसोढ़े आदिका लेप करना चाहिये। यह लेप बड़ा अच्छा है। नं० २५ का लेप भी अच्छा है।

(२) पाँवोंके तलवोंकी फुन्सियोंमें जलन हो, तो चाँवलोंका पानी बनाकर उनपर सींचना चाहिये।

नोट—आँखोंमें सींचनेके जल, लेप तथा शौचकर्मके लिए जल अथवा माताके उपद्रवोंके उपाय हम पीछे लिख आये हैं।

माता-रोगीको पथ्य

मातावालेको अरुचि हो, तो अनार और अम्लरससे युक्त यूष बनाकर देना चाहिये। यूष बनानेकी विधि पहले लिख आये हैं। इस यूषसे अरुचि नाश हो जाती है।

आजकल दूधका साबूदाना, पानीका साबूदाना या दूध बारली, चाँवलोंकी खील और कूट्टूकी खीलें भी दी जाती हैं। बेदाना, अनार, किशमिश और परवल तथा कच्चे केलेकी तरकारी देना भी पथ्य है।

जल शीतल ही पिलाना चाहिये। अगर खैर और विजयसार के साथ औटाया जल शीतल करके दिया जाय, तो सर्वोत्तम हो।

माताके बाद

कहते हैं, फौजकी अगाड़ी और माताकी पिछाड़ी भारी होती है; इसलिये माता ढल जानेपर भी, रोगीके पथ्यापथ्यका खयाल रखना चाहिये। ज्वर शान्त हुए बिना स्नान न करना चाहिये। जो ज्वरकी चिकित्सामें विधि कही गई है, उसी तरह इस रोगमें भी करना चाहिये।

अगर शीतलाका ज्वर रह जाय और माता ढल जाय (ऐसा बहुत कम होता है) तो लालचन्दन, अडूसा, गिलोय, नागरमोथा और दाखका काढ़ा पिलाना चाहिये। इससे माताका ज्वर नष्ट हो जाता है।

माताके बिल्कुल शान्त हो जानेपर,—आमाहल्दी, सरकण्डेकी जड़ और जलाई हुई कौड़ी—इन तीनोंको कूट-छानकर, भैंसके दूधमें मिलाकर, रातको चेहरेपर लगाकर सो जाना चाहिये। भूसी पानीमें भिगो देनी चाहिये और सवेरे उसीसे मुख धोना चाहिये। इससे चेहरेके दाग़ मिट जाते हैं।

छिले मसूर और खरबूज़ेकी गिरी—दोनोंको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर इनका उबटन करना चाहिये तथा नागरमोथेको औटाकर उसके जलसे मुख धोना चाहिये। यह नुसख़ा सुन्दर बनानेमें बहुत अच्छा है।

अगर शरीरमें शीतलाकी गरमी हो; तो उसके निकालनेके लिए, धनिया और जीरा बराबर-बराबर लेकर, रातको चौगुने पानीमें भिगो देना चाहिए और सवेरे पीस-छानकर मिश्री मिलाकर रोगीको देना चाहिए। परन्तु जब तक माता अच्छी तरह न निकल जाय, रोगी खाने-पीने न लगे, स्नान वग़ैरह न कर ले, तब तक यह नुसखा कभी न देना चाहिये। अगर माताके कुछ भी अंश रहनेकी हालतमें दिया जायगा, तो भयानक उपद्रव खड़े कर देगा। अगर माता अच्छी हो जानेके कुछ दिन बाद दिया जायगा, तो गरमीके निकालनेमें अमृतका काम करेगा। यह नुसखा परीक्षित है।



बीसवाँ अध्याय

बालरोग-चिकित्सा

——:—:——

बालकोंकी क़िस्में

बालक तीन तरहके होते हैं:—(१) दूध पीनेवाले।
(२) दूध और अन्न दोनों खानेवाले।
(३) अन्न खानेवाले।

बालकोंके रोग होनेके कारण

दूध और अन्नके दूपित न होनेसे बालक निरोग रहते हैं और इनके दूपित होनेसे बालक रोगी हो जाते हैं।

भारी, विषम तथा दोषोंको बढ़ानेवाले भोजनोंसे माताके शरीरमें दोप कुपित होते हैं। उन दोपोंसे दूध खराब हो जाता है और दूषित दूधके पीनेसे बालक बीमार हो जाते हैं।

वातसे दूपित दूध पीनेसे बालकको वात-सम्बन्धी रोग हो जाते हैं, स्वर क्षीण हो जाता है—आवाज़ बैठ जाती है, शरीर दुबला हो जाता है, मल-मूत्र और वायु रुक जाते हैं। अगर बालकको यही रोग हों तो जान लेना चाहिये कि, दूध वायुसे दूषित है।

पित्तसे दूपित दूध पीनेसे बालकके शरीरमें पसीने आते हैं, पतले दस्त लगते हैं, कामला रोग होता है, प्यास लगती है, सारे शरीरमें गरमी लगती है तथा पित्तकी और भी तकलीफें होती हैं।

कफसे दूपित दूध पीनेसे बालकके मुँहसे लार जियादा गिरती है, नींद बहुत आती है, शरीर भारी रहता है, सूजन होती है, नेत्र टेढ़े होते हैं और वह वमन करता है।

क्या बालकोंको भी बड़ोंकी तरह ही रोग होते हैं ?

ज्वर वग़ैरह जो रोग बड़ोंको होते हैं, वही बालकोंको भी होते हैं, किन्तु चन्द रोग ऐसे हैं, जो बालकोंको ही होते हैं और बड़ोंको नहीं होते।

बालकोंके रोगोंके नाम

(१) तालुकण्टक, (२) महापद्मक, (३) कुकूणक, (४) तुण्डी, (५) गुदपाक, (६) अहिपूतन, (७) अजगल्ली, (८) पारिगर्भिक, (९) दन्तोद्भेदक,—ये रोग बालकोंको अधिक होते हैं। इनके सिवाय ज्वर, खाँसी आदि रोग जो बड़ोंको होते हैं, सो बालकोंको भी होते हैं।

तालुकण्टकके लक्षण

कुपित हुआ कफ तालूके मासमें तालुकण्टक रोग पैदा करता है। इस रोगमें तालुआ नीचेको लटक जाता है। इस कारण बालक माँका दूध नहीं पी सकता; अगर पीता है, तो ज़रा-ज़रा पीता है। दस्त पतले होते हैं; प्यास लगती है; आँखोंमें, गलेमें और मुँहमें पीड़ा होती है; बच्चा गर्दनको गिरा देता है और वमन करता है।

नोट—इस रोगमें ज्वर आता है, कानकी जड़ और नाक नरम तथा ढीली हो जाती है, मलद्वारसे बारम्बार पानी गिरता और प्यास बहुत लगती है।

महापद्मकके लक्षण

बालकके मस्तक और मूत्राशयमें, तीनों दोषोंके कोपसे, लाल रंगका प्राण-नाशक विसर्प रोग होता है। इसको "महापद्मक', कहते हैं। मस्तकमें पैदा हुआ विसर्प कनपटियोंमें होकर हृदयमें जाता है और हृदयसे गुदामें जाता है; उसी तरह मूत्राशयमें उत्पन्न हुआ विसर्प गुदामें जाता है; गुदासे हृदयमें और हृदयसे मस्तकमें जाता है।

नोट—विसर्प रोग रक्त, मांस और चमड़े प्रभृतिके दूषित होनेसे आठ तरह का होता है। किसीमें लाल-लाल लम्बी, मोटी और खरदरी गाँठोंकी क़तार पैदा होती है, किसीमें जहाँ यह होता है वहाँ शरीर नीला, लाल या बुझे हुए

अङ्गार-सा हो जाता है। आगसे फूँकनेके समान फफोले हो जाते हैं। यह जल्दी फैलता है। इसमें रोगीकी संज्ञा नाश हो जाती है, उसे कहीं चैन नहीं पड़ता। किसीमें पीली-पीली, लाल और सफेद फुन्सियाँ और सूजन होती है; किसीमें कुलथीके दानों जैसी फुन्सियाँ और सूजन वग़ैरह होती है। इसके साथ ज्वर, अतिसार, वमन, चमड़ेका फटना, मांसका फटना, पकना, ग्लानि और अरुचि आदि उपद्रव होते हैं।

कुकूणकके लक्षण

दूधके दोषसे, बालकोंकी आँखोंके पलकोंमें, कुकूणक रोग होता है, जिससे नेत्रोंमें व्यथा—पीड़ा, खुजली और अत्यन्त जल-स्राव होता है। इस रोगके कारण बालक अपने मस्तक, आँखोंके हिस्सों तथा नाकको रगड़ता है, सूर्यकी रोशनीको देख नहीं सकता और आँखोंको बन्द रखता है।

तुण्डीके लक्षण

वायुसे नाभि फूल जाती है। उसमें व्यथा—पीड़ा होती है। इसीको "तुण्डी" कहते हैं।

गुदपाकके लक्षण

पित्तसे बालककी गुदा पक जाती है। इसीको "गुदपाक" कहते हैं।

अहिपूतनके लक्षण

मलमूत्रसे लिहसी हुई गुदाके न धोनेसे अथवा पसीनोंके न पोंछनेसे वे वहाँ जम जाते हैं; फिर खून और कफके कोपसे खुजली पैदा होती है। खुजानेसे तत्काल फोड़े होते हैं और उनसे मवाद बहने लगता है। इस तरह घोर व्रण हो जाता है, उसीको "अहिपूतन" कहते हैं।

अजगल्लीके लक्षण

बालकके शरीरमें कफ और वायुके कोपसे, चिकनी-चिकनी, शरीरके रंगकी, गुँथी-सी, पीड़ारहित मूंगके समान फुन्सी होती है, उसको "अजगल्लिका" कहते हैं।

पारिगर्भिकके लक्षण

बालक गर्भवती माता या धायका दूध अधिक पीता है, तो उसके विशेषकर खाँसी, मन्दाग्नि, वमन, तन्द्रा, दुर्बलता, अरुचि, भ्रम और पेटका बढ़ना—ये होते हैं। इसीको "पारिगर्भिक" और "परिभव" कहते हैं। इस रोगमें अग्निको दीपन करनेवाले उपाय करने चाहियें।

दन्तोद्भेदकके लक्षण

बालकके दाँत निकलते समय सब रोग आ मौजूद होते हैं; यानी दाँत निकलनेके कारण अनेक रोग हो जाते हैं। इस समय विशेषकर ज्वर, दस्त होना, खाँसी, वमन, सिर-दर्द, आँख दुखना, पोथकी रोग (पलकोंका एक रोग) और विसर्प ये रोग होते हैं।

दूध डालना

बालक दूध पीकर उल्टी कर देते हैं; पर जब वे बहुत ही दूध डालते हैं, तब वह दूध डालनेका रोग समझा जाता है। पहले-पहल तो फटा हुआ दूध या दही-सा निकला करता है, उसमें खट्टी-खट्टी बदबू आया करती है। पीछे कुछ दिनों बाद पानीकी तरह पतली-पतली वमन होती है। बालक जो खाता या पीता है, वही निकल जाता है, पेट फूल जाता है और उसमें गों-गों आवाज़ होती है। कभी दस्त क़ब्ज़से होता है, कभी ज़ियादा दस्त लगता है, शरीर कमज़ोर और उसका रंग पीला हो जाता है, चमड़ा रूखा और शीतल रहता है और बालक ज़िद्दी स्वभावका हो जाता है।

बालकोंकी चिकित्सा-विधि

बड़े आदमियोंके लिए ज्वर आदि रोगोंमें जो दवाएँ दी जाती हैं, वही बालकोंको देनी चाहियें; परन्तु दागना, क्षौर कर्म करना, वमन, विरेचन और फ़स्द खोलना प्रभृति काम न करने चाहियें। अगर बालकको सख़्त तकलीफ़ हो, तो वमन-विरेचन आदि भी कराना उचित है; क्योंकि "सुश्रुत" महाशय कहते हैं कि, प्राण-नाशक सङ्कट

उत्पन्न हुए विना, बालकोंको वमन, विरेचन और वस्ति,—ये नहीं कराने चाहियें।

बालकोंके लिये मात्रा

बालकोंको दोष और दूष्य तथा ज्वर वग़ैरह रोग बड़े आदमियोंके समान ही होते हैं; इसलिए जिस रोगमें बड़ोंके लिए जो दवाएँ लिखी हैं, वही बालकोंको दी जा सकती हैं; पर मात्रा थोड़ी होनी चाहिए।

"विश्वामित्र" कहते हैं,—बालकको उसके जन्म-दिनसे १ महीने तक बायविड़ङ्गके दानेके बराबर दवा देनी चाहिये। फिर आगे दूसरे महीनेमें दो दाने बायविड़ङ्गके बराबर और तीसरे महीनेमें ३ दाने बायविड़ङ्गके बराबर देनी चाहिये। इसी तरह हर महीने दवा बढ़ानी चाहिये। पहले महीनेमें १ बायविड़ङ्गके दानेके बराबर दवा लेकर उसका चूर्ण बनाकर अथवा कल्क या अवलेह बनाकर देना चाहिए।

"वंगसेन" कहते हैं,—१ वर्ष तक तो बायविड़ङ्गके दानोंके हिसाबसे मात्रा देनी चाहिये; किन्तु १ साल बाद झाड़ीबेर (छोटा लाल बेर) की गुठलीके समान मात्रा देनी चाहिये। जब तक बच्चा दूध पीवे, तब तक यही मात्रा रखनी चाहिए। जब बच्चा दूध भी पीवे और अन्न भी खाय, तब झाड़ी बेरके समान मात्रा देनी चाहिये। जब दूधको छोड़कर केवल अन्न खाने लगे, तब बेरके समान मात्रा कर देनी चाहिये।

और जगह लिखा है,—बालकको पहले महीनेमें एक रत्ती दवा देनी चाहिए और वह शहद या माँके दूध या घीमें मिलाकर चटनीकी तरह चटानी चाहिये। फिर दूसरे महीनेमें दो रत्ती देनी चाहिए और तीसरे महीनेमें ३ रत्ती देनी चाहिए। इसी तरह १२ महीनों तक एक-एक रत्ती बढ़ानी चाहिए। पहला वर्ष पूरा होनेपर, सोलह सालकी उम्र तक, हर साल पाँच-पाँच रत्ती बढ़ानी चाहिए। सोलहसे सत्तर साल तक एक मात्रा स्थिर हो जाती है। सत्तर सालके बाद बालकोंकी तरह मात्रा धीरे-धीरे घटानी चाहिए।

एक रत्तीकी मात्रा चूर्ण, कल्क और अवलेहकी कही गई है; यानी चूर्ण देना हो या कोई दवा पीसकर लुगदीकी तरह बनाकर देनी हो या शहद वग़ैरहमें चटानी हो; तो उसे पहले मासमें १ रत्ती, दूसरे मासमें २ रत्ती, तीसरेमें ३ रत्ती और १२ वें महीनेमें १२ रत्ती देनी चाहिये। काढ़ा देना हो, तो इन मात्राओंसे चौगुना देना चाहिये। जिस बालकको पहले मासमें १ रत्ती चूर्ण दिया जाय, उसे काढ़ा चार रत्ती देना चाहिये।

जो बालक माँका दूध पीता हो, उसे माँ के दूध या घीमें मिलाकर दवा देनी चाहिये। अगर माँ को दवा खिलानी हो, तो दूध और घीमें मिलाकर नहीं देनी चाहिये; जिस विधिसे देनेको कहा हो, उसी विधिसे देनी चाहिये। जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, उसको भी दूध या घीमें दवा मिलाकर देनी चाहिये।

"सुश्रुत" महाराज और ही तरकीब बताते हैं,—वे कहते हैं, जो दवा जिस रोगमें देनी हो, उसका कल्क बनाकर उसे माँ के स्तनोंसे लगा देना चाहिये; यानी जो दवा बालकको देनी हो, उसे गीली पीस-कर, उसकी माँके स्तनोंमें उसका लेप कर देना चाहिये। बच्चा दूध पियेगा; तब वह दवा उसके पेटमें चली जायगी।

"बङ्गसेन" कहते हैं,—दूध पीनेवाले बच्चोंकी धायको दवा देनी चाहिये, किन्तु बालकको न देनी चाहिये। जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, उसकी धायको दवा देनी चाहिये और उस बच्चे को भी दवा देनी चाहिये। जो बालक केवल अन्न खाता हो, धायका दूध न पीता हो, अगर उसे रोग हो जाय; तो उसे ही दवा देनी चाहिये, उसको दूध पिलानेवाली धाय या माँको दवा देनेकी ज़रूरत नहीं।

अगर बालकको लङ्घन करानेकी ज़रूरत हो, तो उसकी धायको लङ्घन कराने चाहियें—हल्का, जल्दी पचनेवाला, थोड़ा, पथ्य भोजन देना चाहिये—साफ निराहार न रखना चाहिये। बालकको कभी भी लङ्घन न कराने चाहियें। बालककी सारी चीजें बन्द कर दें, पर उसका

दूध हरगिज़ न बन्द करना चाहिये। अगर माँ के दूध न आता हो या लक्षणोंकी वजहसे न आवे; तो बालकको बकरीका दूध पिलाना चाहिए; क्योंकि बकरीका दूध परमोत्तम होता है। हाँ, अगर बकरीका दूध न मिले, तो बकरीके-से गुणवाली गायका दूध देना चाहिये।

मुँहसे कहकर न बता सकनेवाले छोटे बालकोंके भीतरी रोगोंके पहचाननेकी तरकीबें

(१) अगर बालकके किसी अङ्ग-प्रत्यङ्गमें वेदना होती है, तो वह अपने हाथसे उस जगहको बारम्बार छूता है। अगर कोई दूसरा आदमी वहाँ हाथ लगाता है, तो बालक रोने लगता है।

(२) अगर बालकके सिरमें दर्द होता है, तो बालक अपनी आँखें बन्द रखता है। इसके सिवा वह अपने मस्तकको खड़ा नहीं रखता, गर्दनको गिराये रखता है तथा सिरको धुनता और टकराता भी है। सिर में दर्द होनेसे सिरका चमड़ा सिकुड़ जाता है। बालक बार-बार सिरमें हाथ लगाता और कान खींचता है।

(३) अगर बालकके मूत्राशयमें पीड़ा होती है, तो बालक पेशाब रुकनेसे दुखी रहता है और खाता-पीता नहीं।

(४) अगर बालकके मल और मूत्र दोनों रुक गये हों, विह्वलता और पेटपर अफारा हो, आँतें बोलती हों; तो समझना चाहिये कि बालकके पेटमें रोग है।

(५) अगर बालक हर समय रोता ही रोता हो, तो उसके सब शरीरमें रोग समझना चाहिये।

(६) बालकके कम या जियादा रोनेसे तकलीफकी कमी और जियादती समझनी चाहिये। अगर बालक कम रोवे या धीरे-धीरे रोवे, तो कम तकलीफ समझनी चाहिये। अगर जियादा रोवे और जोर-जोरसे चिल्लाकर रोवे, तो अधिक पीड़ा समझनी चाहिये।

(७) अगर बालक अपने होठ और जीभको डसे तथा मुट्ठियोंको भींचे, तो उसके हृदयमें पीड़ा समझनी चाहिये।

(८) अगर बालकका पाखाना-पेशाब बन्द हो तथा वह उद्वेगसे दिशाओंको देखे, तो उसकी वस्ति (पेडू) और गुदामें पीड़ा समझनी चाहिये।

(६) अगर बालकको पेशाब न हो, प्यास अधिक लगे और मूर्च्छा हो, तो बालकके पेडू में पीड़ा समझनी चाहिये।

(१०) अगर तन्दुरुस्त बालक रह-रहकर बार-बार रो उठे, तो उसके पेटमें दर्द समझना चाहिये।

(११) अगर दूध पीनेवाले बालकको प्यास लगती है, तो वह अपनी जीभ बाहर निकालता है।

(१२) अगर बालकको ज़ुकाम हो जाता है, उसकी नाक बन्द हो जाती है, तो वह मुँहसे साँस लेनेके लिये, बारम्बार स्तनको छोड़ देता है और साँस लेकर फिर दूध पीने लगता है।

(१३) अगर साँस लेते समय बालककी नाकका छेद बड़ा हो जाय और नाक हिले, तो समझना चाहिये, कि बालकको साँस लेनेमें बड़ा कष्ट होता है और उसको खाँसीसे बड़ी तकलीफ है।

(१४) अगर बालकके ज्वरकी परीक्षा करनी हो, तो थर्मामीटर लगाना चाहिये। बालककी नाड़ी स्वभावसे ही बहुत तेज़ चला करती है, इसलिये धोखा होनेका डर रहता है। जो अनुभवी वैद्य होते हैं, वे तो धोखा नहीं खाते, पर नौसिखिये धोखा खा सकते हैं। थर्मामीटरसे किसी तरहका धोखा नहीं हो सकता।

(१५) बालकोंका पेट स्वभावसे ही कुछ बड़ा होता है। अगर हद्दसे ज़ियादा मोटा हो, तो समझना चाहिये कि यकृत या सीहाका विकार है अथवा अजीर्ण है। जो हो, उसका निश्चय करके चिकित्सा करनी चाहिये।

बाल-चिकित्सा

ज्वर-नाशक नुसखे

(१) भद्रमोथा, हरड़, नीम, कड़वे परवल और मुलेठी—इन

पाँचोंका काढ़ा पीनेसे सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। परन्तु यह काढ़ा सुहाता-सुहाता पिलाना चाहिये। इसको "भद्रमुस्तादिकाथ" कहते हैं। यह नुसख़ा परीक्षित है।

(२) नागरमोथा, पीपल, अतीस* और काकड़ासिंगी—इन चारोंको महीन कूट-पीस और छानकर रख लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंका ज्वरातिसार, खाँसी, वमन और श्वास ये सब आराम होते हैं। असलमें यह "चतुर्भद्रिका चूर्ण" ज्वरातिसार (ज्वर और अतिसार) नाश करनेवाला है। अगर ज्वरातिसारके साथ खाँसी, श्वास और वमन ये उपद्रव भी हों, तो वे भी इसीसे नाश हो जाते हैं। यह नुसखा बालकोंके लिए अमृत है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसख़ेको पेटेण्ट दवा समझिये। इसमें प्रधान दवा "अतीस" है। इसका दूसरा नाम "शिशु भैषज्य" यानी बच्चोंकी दवा है। अतीस अकेला ही ज्वरमें बड़ा काम करता है। यह चढ़े हुए ज्वरमें देनेसे भी हानि नहीं करता। अतीसको तुलसीके रसके साथ देनेसे मलेरिया ज्वर नाश हो जाता है। बालकोंको मलेरिया ज्वर हो, तो यह अवश्य देना चाहिये। अगर ज्वर चले जानेपर हलका ज्वर या हरारत रह जाय, तो अतीस, नीमकी छाल और गिलोयका काढ़ा उचित मात्रासे पिलानेसे शेष रहा हुआ ज्वर नष्ट हो जाता है और बदनमें ताक़त आती है तथा भूख लगती है। अतीस पुष्टिकारक भी है। गर्भवती स्त्रियोंको जबकि ज्वर-नाशक और दवाएँ गरमी करती हैं, यह ज्वरको नाश करता है तथा गर्भको किसी तरहकी हानि नहीं करता।

(३) हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, कटेरी और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा बनाकर सेवन करनेसे बालकोंका ज्वरातिसार, श्वास, खाँसी और वमन ये नाश हो जाते हैं।

(४) धायके फूल, बेलगिरी, धनिया, लोध, इन्द्रजौ और सुगन्धवाला,—इन सबको महीन पीस, शहदमें मिलाकर, अवलेहकी तरह,

---

*नोट—नं. २ नुसख़ेसे बालकोंके ज्वर, अतिसार और खाँसी निश्चय ही आराम हो जाते हैं। अगर खाँसीका ही ज़ोर हो और आराम न होता दीखे, तो इसीमें "जवासा" मिला देना चाहिये। अगर दस्तोंका ज़ोर हो तो "नागरमोथा" निकालकर "धनिया" मिला देना चाहिये।

चटानेसे बालकोंका ज्वरातिसार और वात-विकार नाश हो जाता है।

(५) लोध, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, सुगन्धवाला और नागरमोथा—इनको महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर, चटानेसे ज्वरातिसार नाश हो जाता है।

(६) कुटकीका चूर्ण बनाकर, उसे मिश्री और शहदके साथ चटानेसे बालकोंका ज्वर नाश हो जाता है। यह अवलेह परीक्षित है।

(७) कुटकीको जलमें पीसकर, बालकोंके शरीरपर उसका लेप करनेसे बालकोंका ज्वर शान्त हो जाता है।

(८) नागरमोथा, काकड़ासिंगी और अतीस—इन तीनोंको महीन पीस-छानकर, शहदमें मिलाकर, चटानेसे दूध पीनेवाले बालकोंके ज्वर, खाँसी और वमन निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

बाल अतिसार-नाशक नुसखे

(१) मँजीठ, धायके फूल, सिरवाली (सारिवा) और पठानी लोध—इन चारोंका काढ़ा, शीतल करके, शहद मिलाकर, पिलानेसे बालकोंका अतिसार (दस्तोंका रोग) आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) धायके फूल, लोध, बेलगिरी, नागरमोथा, मँजीठ और नेत्रवाला—इनका काढ़ा बनाकर पिलानेसे अथवा इन सबको पीस-कूट-छानकर, इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चटनीकी तरह चटानेसे बालकोंका अतिसार निश्चय ही आराम हो जाता है। यह नुसख़ा बालकोंके दस्त आराम करनेमें रामबाण है। बहुत बारका परीक्षित है।

(३) बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध और गजपीपल—इनका काढ़ा, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर, पिलानेसे बालकोंका अतिसार अवश्य आराम हो जाता है। इन दवाओंको कूट-पीसकर, शहदमें मिलाकर, अवलेहकी तरह चटानेसे भी बालकोंका अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है। अव्वल दरजेका नुसख़ा है।

(४) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धवाला और इन्द्रजौ—

इनका काढ़ा बनाकर, सवेरे ही, पिलानेसे बालकोंके सब तरहके दस्त बन्द हो जाते हैं। इसको "नागरादि काथ" कहते हैं। बालकोंके अतिसारपर अव्यर्थ है। परीक्षित है।

(५) लजालू, धायके फूल, लोध और सारिवा—इनके काढ़ेमें शीतल होने पर, शहद मिलाकर पिलानेसे, दुर्धर अतिसार भी आराम हो जाता है। कई बारका परीक्षित है।

नोट—लजालू या लज्जावतीकी जड़ लेनी चाहिये। यह नुसख़ा भी प्रथम श्रेणीका है। कैसे ही दस्त लगते हों बन्द हो जाते हैं।

(६) वायबिड़ङ्ग, अजमोद और पीपलके चाँवल या दाने—इन तीनोंका चूर्ण निवाये जलके साथ पिलानेसे बालकोंका आमातिसार (आँव मरोड़ीके दस्त) आराम हो जाता है।

(७) मोचरस, लज्जावतीकी जड़ और कमलकी केशर—इनको मिलाकर सवा तोले और चाँवल भी सवा तोले लो। पीछे ग्यारह तोले जलमें इन सबको मिलाकर, यवागूके क़ायदेसे, यवागू बनाकर बालकको खिलाओ। इससे रक्तातिसार या खूनके दस्त आराम हो जायँगे। इसको "मोचरसादि यवागू" कहते हैं। यह यवागू अन्न खानेवाले बड़े बालकको दी जाती है।

(८) धानकी खील, मुलेठी, खाँड़ और शहद—इनको एकत्र मिलाकर, चाँवलोंके पानीके साथ पीनेसे, बालकोंका प्रवाहिका रोग आराम हो जाता है।

(९) धनिया, अतीस, काकड़ासिंगी और गजपीपल—इनका चूर्ण बनाकर, शहदके साथ मिलाकर, चटानेसे बालकोंका अतिसार और वमन नाश हो जाती है।

(१०) सुगन्धवाला, मिश्री और शहद—इन तीनोंको एकत्र मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ पिलानेसे बालकोंके सब तरहके अतिसार, प्यास, वमन और ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(११) सफेद कमलकी केशरको पीसकर, उसमें मिश्री और शहद

मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ, सेवन करानेसे बालकोंका प्रवाहिका रोग आराम हो जाता है।

(१२) बेलकी जड़का काढ़ा बनाकर, उसमें खीलोंका चूर्ण और मिश्री डालकर सेवन करानेसे, बालकोंकी वमन और अतिसार,—ये आराम हो जाते हैं।

(१३) कुलींजनको छाछमें घिसकर और थोड़ी-सी हींग डालकर कढ़ी बना लो और वही खिलाओ। इससे बालकोंका अतिसार नाश हो जाता है।

(१४) काकड़ासिंगीका माशे या डेढ़ माशे चूर्ण शहदके साथ चटानेसे बालकोंका अतिसार आराम हो जाता है।

(१५) जरासे प्याजके रसमें बाजरे-बराबर अफीम घोलकर देनेसे दस्त बन्द हो जाते हैं।

बालकोंकी हिचकी पर नुसखा

(१) जामुन, तेंदूके फल और फूल—इन तीनोंको पीसकर घी और शहदमें चटानेसे बालकोंकी हिचकी नाश हो जाती है।

नोट—जहाँ घी और शहद एक साथ लेने हों; वहाँ इनको बराबर-बराबर मत लेना। एक कम और एक ज़ियादा लेना। जैसे, घी १ माशे और शहद २ माशे।

(२) पीपल और मुलेठी—इनको महीन पीसकर, शहद और मिश्रीके साथ मिलाकर, बिजौरे नींबूके रसके साथ सेवन करनेसे हिचकी और वमन दूर होती हैं।।

(३) कुटकीके चूर्णको शहदमें मिलाकर चटानेसे हिचकी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४) हींग, काकड़ासिंगी, गेरू, मुलेठी, सोंठ और नागरमोथा—इनका चूर्ण बनाकर, शहद में चटानेसे हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं। यह अवलेह परीक्षित है।

बालकोंकी प्यास पर नुसखा

(१) प्रियंगू, रसौत और नागरमोथा—इनको महीन पीसकर,

शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी बढ़ी हुई प्यास, वमन और दस्त तीनों आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) अगर खाली प्यासका रोग हो, तो अनारके दाने, जीरा और नागकेशर—इन तीनोंको महीन पीसकर, इनका चूर्ण मिश्री और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी प्यास कम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) सफेद प्याजको भूंजकर खूब महीन पीस लो; पीछे उसमें घी डालकर गोली बना लो और उसे भेजेपर लगा दो। ऊपरसे अरण्ड का ताजा पत्ता रखकर कपड़ेसे बाँध दो। रोज शामको वह गोली निकाल फेंको और सिरको खूब धोकर तालुवेपर गायका घी लगा दो। साथ ही सफेद प्याजका रस, थोड़ी-सी मिश्री और जीरा मिलाकर पिलाओ। इस तरह करनेसे बालकोंका प्यास-रोग अवश्य मिट जाता है।

बालकोंकी खाँसी आराम करनेवाले नुसखे

(१) काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीस—इन तीनोंका चूर्ण बनाकर और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर और वमन,—ये नाश हो जाते हैं। अथवा अकेले अतीसके चूर्णको ही शहद में मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर और वमन आदि आराम हो जाते हैं। खाँसीपर तो यह रामबाण ही है। साथमें ज्वर आदि हों, तो उन्हें भी यह आराम करता है। परीक्षित है।

(२) नागरमोथा, अतीस, जवासा, पीपल और काकड़ासिंगी—इनका चूर्ण बनाकर, शहदमें मिलाकर चटानेसे, बालकोंकी पाँचों प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३) धनिया और मिश्री—इनको पीसकर, चाँवलोंके जलके साथ पीनेसे बालकोंकी खाँसी और श्वास दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) दाख, अडूसा, हरड़ और पीपल—इनका चूर्ण करके

शहद में मिलाकर, तीन या पाँच दिन तक चटानेसे, बालकोंका श्वास, खाँसी और तमक श्वास आराम हो जाता है

(५) अगर दूध पीनेवाले बालकका भयानक सूखी खाँसी हो, तो उसकी दूध पिलानेवालीको पीपल और घीसे भुना हुआ उड़दोंका यूष पिलाओ ।

(६) दाख, पीपल और सोंठ—इनका चूर्ण बनाकर, शहद और घीमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी पाँचों तरहकी खाँसी आराम हो जाती है।

(७) कटेरीके फूलोंकी केशरको पीसकर, उसे शहदमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी बहुत दिनोंकी पुरानी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है ।

(८) सोंठ, कालीमिर्च, सैंधानोन और गुड़—इनका काढ़ा सुहाता-सुहाता गरम-गरम पिलानेसे बालककी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है । परीक्षित है ।

बालकोंकी वमन नाश करनेवाले नुसखे

(१) दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेशर—इनको महीन कूट-पीस और छानकर, गायके गोबरके रस और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी वमन (क़य) नाश हो जाती है ।

(२) कुटकीको महीन पीस-छानकर, शहदमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी बहुत पुरानी वमन और हिचकी आराम हो जाती हैं ।

नोट—कुटकीका चूर्ण, मिश्री और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंका ज्वर आराम हो जाता है । केवल शहदमें मिलाकर चटानेसे क़य और हिचकी अवश्य आराम हो जाती हैं । यह "कटुक रोहिणी अवलेह" वास्तवमें इन तीनों रोगोंमें बच्चोंके लिए मुफ़ीद है ।

(३) आमकी गुठली, धानकी खील और सेंधानमक—इन तीनोंका चूर्ण बनाकर, शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी दूध की वमन आराम हो जाती है; यानी बच्चोंका दूध गेरना बन्द हो जाता है ।

(४) कटेरीके फलोंका स्वरस, बड़ी कटेरीके फलोंका स्वरस, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन सबको एकत्र मिलाकर चटानेसे, बालकका दूध डालना अवश्य आराम हो जाता है।

(५) बेरके पत्ते, चाँगेरीके पत्ते, मकोयके पत्ते और कैथके पत्ते—इनको एकत्र पीसकर, इनकी लुगदीका बालकके सिरपर लेप करनेसे बालकके वमन और अतिसार (दस्त लगना) आराम हो जाते हैं।

(६) मुलेठी और पीपलको पीसकर, बिजौरे नीबूके रसमें मिलाकर चटानेसे या पिलानेसे बालकोंकी वमन आराम हो जाती है।

(७) पीले गेरूको महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे बालकोंकी वमन आराम हो जाती है। इससे बच्चेको अवश्य सुख होता है।

नोट—इसे सोनागेरू भी कहते हैं। इस नुसखेसे खाँसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

विसर्प महापद्मक-नाशक नुसखे

(१) सारिवा, लालकमल, नीलकमल, नागरमोथा, उशीर (ख़स), सफेद चन्दन, कमल, मँजीठ, मुलेठी और सरसों—इन सबको महीन पीसकर विसर्पपर लेप करनेसे विसर्प आराम होती है। परीक्षित है।

(२) वड़, गूलर, पीपल, पाखर, वेत और जामुनकी छाल, मुलेठी, मँजीठ, चन्दन, ख़स और पद्माख, इनको महीन पीसकर लेप करनेसे बालकोंके व्रणकी जलन, लाली, विस्फोटक, पीड़ा और व्रण—ये आराम हो जाते हैं।

(३) घरका धूआँ, हल्दी, कूट, राल और इन्द्रजौ—इनको पीसकर लेप करनेसे बालकोंका विसर्प-रोग शमन होता है।

(४) कड़वे परवल, हरड़, बहेड़े, आमले, नीम और हल्दी,—इनका काढ़ा पीनेसे क्षत, विसर्प, विस्फोटक तथा ज्वर नाश हो जाते हैं।

बालकोंका अफारा और वातशूल-नाशक नुसखे

(१) सेंधानोन; सोंठ, हींग और भारंगी—इनका चूर्ण बनाकर,

घीके साथ मिलाकर, खानेसे बालकोंके पेटका अफारा और बादीका दर्द मिट जाता है।

बालकोंके मूत्राघातपर नुसखा

(१) पीपल, सोंठ, मिश्री, शहद, छोटी इलायची और सेंधानोन—इन सबको पीसकर और चटनी-सी बनाकर चटानेसे बालकोंके पेशाब की जलन वग़ैरह सब तकलीफें आराम होती हैं।

बालकोंकी खुजली प्रभृति नाशक नुसखे

(१) घरका धूआँ, हल्दी, कूट, राई और इन्द्रजौ इनको छाछ या माठेमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म, पामा तथा विचर्चिका नामक कोढ़ दूर होता है।

(२) चन्दन, खस, पद्माख—इनको पीसकर लेप करनेसे भी सिध्म, पामा और विचर्चिका ये आराम होते हैं।

(३) बच, कूट और वायविड़ङ्गका काढ़ा बनाकर, उसमें कन्धों पर्यन्त बालकको स्नान करानेसे कष्टसाध्य विचर्चिका, खुजली और दाद आराम हो जाते हैं।

(४) तिल और चाँवलोंको एक जगह पीसकर नाभिपर लेप करनेसे अथवा भारंगी और मुलेठीको पीसकर नाभिपर लेप करनेसे बालकोंके सारे रोग नाश हो जाते हैं।

बालकोंका भय और रोदन बन्द करनेवाले उपाय

(१) अगर बालक बहुत ही रोता हो, तो पीपल और त्रिफलेका चूर्ण करके, उसे घी और शहदमें मिलाकर बालकको चटाओ। इससे बालकका बहुत रोना और डरना आराम हो जायगा।

(२) छछून्दरकी लैंड़ी, उड़द, हल्दी, बेलके पत्ते, इन्द्रजौ और सिरसके पत्ते—इन सबकी आगपर धूनी देनेसे बालकोंका रातको रोना और डरना मिट जाता है।

बालकोंके मुख-स्रावपर नुसखा

(१) सारिवा, तिल, लोध और मुलेठी—इनका काढ़ा बनाकर, रोज़ मुँहमें लगानेसे या मुँह धोनेसे स्राव आराम हो जाता है। परीक्षित है।

बालकोंके मुखपाकपर नुसखे

(१) आमकी मींगी, लोह चूर्ण, सोनागेरू और रसौत—इन सब को पीसकर और शहदमें मिलाकर लेप करनेसे बच्चोंका मुख-पाक आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पीपलकी छाल और पीपलके पत्तोंको पीसकर और शहदमें मिलाकर लेप करनेसे बालकोंका मुख-पाक रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

तालुकंटक-नाशक नुसखे

(१) हरड़, वच और कूट—इनको जलमें पीसकर, लुगदी-सी बनाकर और उसे शहदमें मिलाकर, माताके दूधके साथ पिलानेसे तालुकण्टक रोग—यानी वह रोग जिसमें तालुआ नीचे लटक जाता है और सिरमें गड्ढा पड़ जाता है तथा जिस रोगके मारे बालक दूध नहीं पीता—अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—इस कल्कको माँके दूधके साथ भी देते हैं और चाँवलोंके जलके साथ भी देते हैं। परीक्षित है।

कुकूणक-नाशक नुसखे

(१) हरड़, बहेड़ा, आमला, लोध, पुनर्नवा (साँठ), अदरख, कटेरी और कटाई—इनको जलमें पीसकर, कुछ-कुछ गरम करके, सुहाता-सुहाता पलकोंपर लेप करनेसे कुकूणक-रोग नाश हो जाता है।

नोट—यह रोग पलकोंपर होता है। नेत्रोंमें अत्यन्त पीड़ा, स्राव और खुजली होती है। बालक अपने माथे और नाक-आँखोंको घिसता है, सूरजकी चमक बुरी लगती है और आँखें बन्द रखता है।

नाभिकी सूजन और पाक-आराम करनेवाले नुसखे

(१) मिट्टीके ढेलेको आगमें गरम करके और पीछे दूधमें बुझाकर, उससे नाभिपर सुहाता-सुहाता सेक करनेसे नाभि (सूंडी) की सूजन नाश हो जाती है।

(२) हल्दी, लोध, फूल प्रियंगू और मुलेठी—इनको जलमें पीसकर, लुगदी-सी बना लो और पीछे क़लईदार बर्तनमें काले तिलका तेल और लुगदी मिलाकर तेल पका लो। इस तेलको नाभिपर आहिस्ते-आहिस्ते लगाने और इन्हीं चारों दवाओंको महीन पीसकर बुरकनेसे नाभि-पाक (सूंडीका पकना) आराम हो जाता है।

(३) चन्दनका महीन बुरादा नाभिपर बुरकनेसे भी नाभिका पकाव आराम हो जाता है।

(४) बकरीकी मैंगनी जलाकर, उसकी राख नाभिपर लगानेसे भी नाभिका पकना मिट जाता है। परीक्षित है।

(५) अगर नाभि उथल गई हो, तो हरा धनिया पीसकर लगाना चाहिये।

गुदपाक-नाशक नुसखे

(१) बालकोंकी गुदाके पकावमें पित्त-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। विशेष करके रसौत पिलाने और रसौतका लेप करनेसे गुद-पाक आराम होता है।

(२) शंख, मुलेठी और रसौत—इन औषधियोंको पानीमें पीसकर लेप करनेसे गुदपाक आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—उत्कट गुदपाक रोगमें जौंक लगवाकर खून निकलवाना हितकारी है।

अहिपूतन-नाशक नुसखे

(१) गुदाके मल-मूत्रको अच्छी तरह साफ न करनेसे खुजली और घाव हो जाते हैं तथा मवाद बहने लगता है,—उस रोगमें शङ्ख, सफेद

मा और मुलेठी—इनको पानीमें महीन पीसकर लेप करनेसे आराम होता है। परीक्षित है।

पारिगर्भिककी चिकित्सा

इस रोगमें बालकको अग्निदीपन करनेवाली दवाएँ देनी चाहिये।

व्रणपश्चातककी चिकित्सा

इस रोगमें पित्तके कुपित होनेसे, जौंकके पेटके समान, गुदामें लाल रङ्गका दाह, ज्वर और खाँसीयुक्त व्रण उत्पन्न होता है। इसमें मलका रङ्ग पीला होता है तथा मलस्तम्भ—क़ब्ज़ होता है। इसको व्रणपश्चातक रोग कहते हैं। यह अत्यन्त दारुण रोग है।

इस रोगमें चतुराईसे जौंक लगानी चाहिये और पञ्चक्षीर वृक्षोंके सुहाते-सुहाते गरम काढ़ेसे गुदाको धोना चाहिये।

(१) मुलेठीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे यह रोग आराम होता है।

(२) चन्दन, दोनों सारिवा और शङ्खनाभि,—इनको पानीमें पीसकर इनका लेप करनेसे तथा इन्हीं दवाओंको सूखी पीसकर शहदमें मिलाकर चटानेसे व्रणपश्चातक आराम हो जाता है।

(३) विजयसारके फूलोंको महीन पीसकर, भातके माँड़में गोली बनाकर सेवन करनेसे व्रणपश्चातक-रोग आराम हो जाता है।

बालकोंकी सूजन पर नुसखे

(१) नागरमोथा, पेठेके बीज, देवदारु और इन्द्रजौ—इनको जलमें पीसकर पीनेसे बालकोंकी सूजन दूर हो जाती है।

(२) कालीमिर्चको नौनी घीमें मिलाकर सेवन करनेसे बालकोंकी सूजन दूर हो जाती है।

बालकोंके सूखापाई रोग-नाशक नुसखे

(१) जो बालक अच्छा खाने और जठराग्नि दीपन होनेपर भी

सूखता चला जाय अथवा जो बालक दुर्बल हो, पर जठराग्नि अत्यन्त तेज़ हो, निरन्तर भूखा ही भूखा चिल्लाता हो, उसको बिदारीकन्द, गेहूँ और जौका आटा—इन तीनोंको घीमें मिलाकर खिलाना चाहिये और ऊपरसे शहद और मिश्रीके साथ दूध पिलाना चाहिये।

नोट—अगर दूध कच्चा माफ़िक हो तो शहद और मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये। अगर कच्चा नुक़सान करे, तो दूध गरम करके, शीतल होनेपर, उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये।

(२) सेंधानमक, त्रिकुटा, बड़ी करञ्ज, पाढ़ और पहाड़ी करञ्ज—इनको एकत्र पीसकर, शहद और घीमें मिलाकर, सेवन करनेसे बालकोंका सूखना बन्द हो जाता है।

दाँतोंका इलाज

(१) चूना और शहद मिलाकर दन्तपालीमें लगानेसे दाँत सहजमें जम जाते हैं।

(२) धायके फूल, पीपल और आमलोंका रस—इनको एकत्र मिलाकर लगानेसे भी दाँत सहजमें जम जाते हैं।

(३) काकड़ासिंगी और सागोन द्वारा दूध पकाकर, उस दूधको पाँवोंके तलवोंमें लेप करनेसे, शीघ्र ही, बालकोंका सोते समय दाँत चबाना बन्द हो जाता है।

(४) केलेके फूलोंसे जो महीन-महीन तन्तु-से गिरते रहते हैं, उनको इकट्ठे करके रस निकाल लेना चाहिये। पीछे उस रसमें मिश्री और ज़ीरा मिलाकर, रोज़ एक वार, ४ या ६ माशे बालकोंको पिलाना चाहिये और यही रस दिनमें १५-२० दफ़ा मसूढ़ोंपर लगाना चाहिये। इस उपायसे बालकका दाँत निकलनेका रोग मिट जाता है और बुखार वग़ैरह भी आराम हो जाते हैं।

(५) बालकके गलेमें सीप लटकानेसे भी दाँत जल्दी निकल आते हैं।

बालकोंके अन्यान्य रोग-नाशक नुसखे

घावका इलाज

(१) कड़वे नीमके पत्ते, दारुहल्दी, मुलेठी और घी—इनको पीस-कूट घीमें मिलाकर मरहम बना लो। इस मरहमके लगानेसे घाव भीतर से भर जाता है। अगर घावमें खराबी हो, बहुत दवाओंसे आराम न हुआ हो, तो नीमके पत्ते डालकर, पानी औटा लेना और उससे घाव धोकर, ऊपरकी मरहम लगानी चाहिये। कैसा ही घाव, फोड़ा, नासूर आदि हो, लगातार कुछ दिन यह मरहम लगाने और धोनेसे आराम हो जायगा। अगर फोड़ा फूटकर बहता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते पीस कर और शहदमें मिलाकर लगाने चाहियें। ये सब उपाय परीक्षित हैं।

होठ फटना

अक्सर बालकोंके और बड़े लोगोंके होठ खुश्कीकी वजहसे फट जाते हैं। उनके लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहियें:—

(१) घीमें नमक मिलाकर, हर रोज़ दिनमें तीन दफा, नाभिपर मलना चाहिये।

(२) तरबूज़की मींगी पानीमें पीसकर होठों या जीभपर मलनेसे होठ और जीभका फटना आराम हो जाता है।

पसलीका रोग

इस रोगमें बुखार और खाँसी होती है और पसली दब जाती है। यह रोग दो तरहका होता है:—(१) वह जो मलकी गरमीसे होता है। इसमें ज्वर भी होता है। यह चिन्ताजनक नहीं है। इसमें भीतरके जोड़ छीलनेवाली चीज़ जैसे,—तूतिया या जमालगोटे वग़ैरह न देने चाहियें; बल्कि अमलतासका गूदा, उन्नाव, दाख या बनफ़शा प्रभृतिसे शीघ्र ही मल निकालना चाहिये। (२) वह होता है, जिसमें कफका ज़ोर होता है। यही भयदायक है। इसमें ज्वर और उर्द्ध्वश्वास होता है। इसीको डब्बेका रोग भी कहते हैं।

(१) कमीला आठ माशे और हींग एक माशे—इनको पीसकर और दहीके तोड़में खरल करके, गोलमिर्च-प्रमान गोली बनाकर, दूध पीनेवाले बालकको एक गोली गरम जलके साथ देनी चाहिये और बड़े बालकको अन्दाजसे जियादा देनी चाहिये। इससे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(२) बालकके पेटपर रेंडीका तेल मलकर, उसपर बकायनकी पत्ती गरम करके सुहाती-सुहाती बाँधनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(३) सम्मग़ अरबी १ तोला और एलुआ ६ माशे—इनको कूट-छानकर, घीग्वारके रसमें मिलाकर, पेटपर लगानेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(४) करेलेके पत्ते, अडूसेके पत्ते, पके नागरपान और जामुनकी छाल—इन सबका रस निकालकर और एकत्र करके, उस रसमें "बच" घिसकर, सात दिन तक पिलानेसे और पथ्य रखनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

सिरमें जूं

अगर लड़की या लड़केके सिरमें जूं पड़ जाय, तो कड़वे नीमके बीज पानीमें पीसकर सिरमें लगाओ या दाबो।

कानमें कीड़ा

अगर बालकके कानमें कीड़ा या मच्छर घुस जाय, तो मकोयके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ ; अथवा कसौंदीके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ। अगर कानमें कनखजूरा घुस गया हो, तो मरोड़फलीकी जड़को रेंड़ीके तेलमें घिसकर, १०-१५ बूँद कानमें टपकाओ। इससे जानवर मरकर और फूलकर ऊपर आ जायगा।

बिच्छू प्रभृतिका इलाज

अगर डाँस काट खावे, तो काटे स्थानपर प्याज़का रस लगा दो।

अगर बिच्छू काट खाय, तो प्याज़के दो टुकड़े करके लगाओ ; अथवा सफेद कनेरको घिसकर; डङ्कपर लगाओ अथवा कनेरकी जड़ घिसकर पिलाओ। इसके लगाने और पिलानेसे साँप और बिच्छू दोनोंका ज़हर उतर जाता है। हुरहुजके पत्तोंका रस नाकमें टपकाने और उसी रसको डंकपर लगानेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। सेंधानोन घीमें मिलाकर बारबार लगाने अथवा तिलके तेलका तरड़ा देनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। सत्यानाशीकी जड़की छाल, पानमें रखकर खानेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। घीमें सेंधानोन मिलाकर पीनेसे बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। जीरेको जलमें पीसकर, लुगदी-सी बनाकर, उसमें घी और सेंधानोन मिलाकर गरम करो और शेषमें शहद मिलाकर बिच्छूके काटेपर लेप करो, तो ज़हर उतर जायगा।

साँप काट खाय, तो सिरसके पत्तोंके रसमें सात दिन तक भावना दी हुई सफेद मिर्चोंकी नस्य दो या आँखोंमें आँजो; अवश्य लाभ होगा। घरका धूआँ, हल्दी, दारुहल्दी और जड़ समेत चौलाई—इन सबको दहीमें पीसकर और घी मिलाकर पिलाओ।

बड़का अंकुर, मँजीठ, जीवक, ऋषभक, बला, गंभारी और मुलेठी को महीन पीसकर पीनेसे सब तरहका ज़हर उतर जाता है।

सफेद चिरमिटीकी जड़ घिसकर पिलानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

नीमके पत्ते और नमक अथवा नीमके पत्ते और कालीमिर्च चबानेसे भी साँपका ज़हर उतर जाता है। जब तक ज़हर न उतर जाय, इनका चबाना बन्द न करना चाहिये। जब ज़हर उतर जायगा, तब ये कड़वे लगने लगेंगे।

सफेद कनेरके सूखे फूल और कड़ी तमाखू बराबर-बराबर लेकर और थोड़ा-सा इलायचीका चूर्ण मिलाकर, पीस-छानकर सुँघानेसे साँप का ज़हर उतर जाता है।

पिठवनके पत्तोंका रस पिलानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

सिरसकी जड़ बकरेके मूत्रमें पीसकर लेप करने या पिलानेसे चूहे का जहर उतर जाता है।

इन्द्रायणकी जड़, अङ्कोलकी जड़, तिलकी जड़ और मिश्री, इनको पीसकर और शहद तथा घीमें मिलाकर पीनेसे भयानक चूहेका विष भी उतर जाता है।

हल्दी, दारुहल्दी, समंगा, पतंग और नागकेशर—इनको जलमें पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका जहर उतर जाता है।

हल्दी, दारुहल्दी और गेरूको जलमें पीसकर लेप करनेसे नाखून और दाँतोंका जहर उतर जाता है। आदमीको उस स्थानपर पेशाब कराने से भी लाभ होता है।

नहरू या बाला

अगर नहरू या बाला निकल आवे, तो कड़वे नीमके पत्ते पीसकर उसका लेप करनेसे नहरू आराम हो जाता है।

बाल न आना

अगर कहीं बाल न आते हों, तो कड़वे परवलके पत्तोंका रस उस जगह लगाओ।

अगर सिरमें गञ्ज हो, तो अरीठेके पत्तोंसे सिर धोओ और करञ्जे का तेल, नीबूका रस और कड़वे कैथके बीजोंका तेज मिलाकर लगाओ।

हाथीदाँतकी राख और रसौत लगानेसे फौरन बाल आ जाते हैं।

लू या आगकी लपक लगना

अगर बालकको लूसे बचाना हो, तो एक प्याजका गट्टा हर समय उसके पास रक्खो।

अगर लू या आगकी लपक लग जाय, तो एक प्याजको भूँज लो और एकको कच्चा रखो; पीछे उनको सिलपर पीसकर और साथ ही दो माशे जीरा और दो तोले मिश्री मिलाकर खिलाओ।

धनिया जलमें पीसकर और मिश्री मिलाकर पिलानेसे न लू लगती है और न आम खानेसे गरमी होती है।

अगर आगकी लपक लग जावे, तो खरबूजेके बीज पीसकर सिर पर लगाओ और रस शरीरपर मलो।

पेटका रोग

अगर बालकके पेटमें कीड़े हों या बदहज़मीका रोग हो, तो प्याज़ का रस निकालकर पिलाओ।

अगर बालकके पेटमें दर्द हो, तो करेलेके पत्तोंका रस एक पैसे भर ज़रा-सी हल्दी मिलाकर पिला दो; क़य और दस्त होकर पेट साफ़ हो जायगा।

अगर अजीर्ण हो, तो नीबूके रसमें केशर घिसकर चटा दो। अगर पेटमें मल रुक रहा हो, तो नीबूके रसमें जायफल घिसकर चटा दो।

अगर बालकके पेटमें कीड़े हों, तो केशर और कपूर एक-एक चाँवल भर या कम-ज़ियादा खिलाकर दूध पिला दो।

अगर पेटपर अफारा हो, तो गधेकी लीद गरम करके पेटपर बाँधो अथवा सरसोंकी खल गरम करके बाँधो अथवा आकके पत्ते घीसे चुपड़कर और सेककर बाँध दो अथवा हींगको जलमें पीसकर और गरम करके सूंडीके आसपास और सूंडीपर लेप कर दो।

बालकके पेटमेंसे मिट्टी निकालना

अगर बालकके पेटमें मिट्टी हो, तो पका केला शहदमें मिलाकर खिलाओ।

केशर, मुलेठी, पीपल और निशोथ—इनका काढ़ा बनाकर, चिकनी मिट्टीको काढ़ेमें डुबाकर सुखा दो। इस तरह चार बार डुबाओ और सुखाओ; पीछे उसी मिट्टीको बालकको खिलाओ। उसके खानेसे खाई हुई मिट्टी निकल आवेगी।

बालककी आँखमें रोग

अगर बालककी आँखमें मातासे फूला पड़ जाय, तो दूधमें चिर-मिटी घिसकर आँजो।

अगर बालककी आँखमें गरमी हो, तो प्याज़के रसमें मिश्री मिला कर आँजो; अथवा लालचन्दन घिसकर आँखके ऊपर लगाओ।

अगर बालककी आँख दुखती हो, तो प्याज़का रस आँखमें डालो।

धनियाको एक कपड़ेकी पोटलीमें बाँधकर पानीमें भिगो दो। पीछे उसे बारम्बार दुखती आँखपर लगाओ। इससे सुख मालूम होगा।

अगर आँखोंमें जलन हो, तो गुलाब-जलके छींटे आँखोंमें मारो अथवा केशरको घोटकर शहद्में आँजो।

लोध १ माशे, भुनी फिटकरी १ माशे, अफीम आधा माशे और इमलीकी पत्तियाँ ४ माशे—सबको पीसकर पोटली बना लो और पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरो। इससे आँखोंकी पीड़ा निश्चय ही कम हो जाती है। इमलीकी पत्तियाँ, सिरसकी पत्तियाँ, हल्दी और फिटकरी,—सबको बराबर-बराबर सवा दो-दो माशे लेकर, महीन कूटकर, पोटली बनाकर और पानीमें भिगोकर आँखोंपर फेरनेसे और कुछ आँखोंमें टपकानेसे आँखोंकी पीड़ा और समस्त वायु आराम हो जाती है।

कपूर ३ माशे और पठानी लोध १ माशे—दोनोंको पीसकर पोटली बाँधकर और १ घण्टे पानीमें भिगोकर, आँखोंपर फेरनेसे और भीतर टपकानेसे दुखती आँखमें लाभ होता है।

फिटकरी १ माशे और अलसी दो माशे—बिना पीसे पोटलीमें बाँधकर, पानीमें भिगोकर, आँखोंपर फेरनेसे आँखोंकी ललाई जाती रहती है।

जिस दिन आँख दुखनी आवे, उसी दिन धतूरेकी पत्तियोंका रस निकालकर और कुछ गरम करके कानमें टपकाओ। अगर बाईं आँखमें पीड़ा हो, तो दाहने कानमें टपकाओ और अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो, तो बायें कानमें टपकाओ।

नीमकी कोपलें पीसकर रस निकाल लो और ज़रा गरम करलो। अगर दोनों आँखोंमें दर्द हो, तो दोनों कानों में टपकाओ। अगर

दाहिनी आँखमें दर्द हो, तो बायें कानमें टपकाओ। अगर बाईं आँखमें दर्द हो, तो दाहने कानमें टपकाओ। दुखती आँखमें लाभ होगा।

बड़का दूध आँखमें लगानेसे नेत्र-पीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

कटाईके पत्तोंका रस आँखमें टपकाने और कटाईके पत्ते पीसकर आँखों पर बाँधनेसे दुखती आँखमें अवश्य लाभ होता है, पर लगता बहुत है।

अगर रतौंधी हो, तो प्याज़का रस आँखोंमें लगाओ अथवा समन्दर-फलका गूदा बकरीके मूत्रमें पीसकर आँजो अथवा लाहौरी नमककी सलाई आँखोंमें फेरो अथवा दहीके पानीमें थूक मिलाकर आँजो अथवा अदरखका रस आँखोंमें टपकाओ और हुक्केके नेचेकी कीट आँखोंमें आँजो अथवा कालीमिर्च थूकमें मिलाकर आँजो।

बालकके तुतलानेका इलाज

अगर बालक तुतलाता हो, तो "लघु ब्राह्मी" के ताज़ा पत्ते कुछ रोज लगातार पिलाओ। इनसे जीभ नर्म और पतली हो जायगी।

बालकको जल्दी बढ़ानेका उपाय

अगर बालकको जल्दी बढ़ाना हो, तो प्याज और गुड़ मिलाकर कुछ दिन खिलाओ। अगर बालककी चैतन्यता बढ़ानी हो, तो मक्खन और छुहारे खिलाओ।

बहरापन का इलाज

अगर किसी कारणसे कानसे कम सुनाई देता हो, तो सफेद कत्था कपड़ेमें छानकर, गरम पानीमें मिलाकर, पिचकारी द्वारा कानमें पहुँचाना चाहिये और पीछे कानको धोकर साफ कर लेना चाहिये। अगर किसी जख्म वगैरहके कारणसे बहरापन होगा या माताके पीछे बहरापन हो गया होगा, तो आराम हो जायगा।

सुत्रारकी रोगका इलाज

अगर बालकके पेटमें मलकी गाँठ बँध गई हो, पेट फूल रहा हो,

पसली दुखती हो, गालोंपर सूजन हो, पेशाब पीला हो, कमज़ोरी हो; तो समझ लेना चाहिये कि "मुबारकी" रोग है। अगर मुबारकी रोग हो, तो खैरकी अन्तरछाल ३ माशे और गौरोचन आधे उड़दके बराबर—गायके दूधमें घिसकर, रोज़ सवेरे, ३ दिन तक, सेवन करानेसे अवश्य लाभ होगा।

मुखके घावोंका इलाज

अगर बड़े बालकके मुँहमें घाव हों, तो सफेद चिरमिटीके पत्ते, शीतलचीनी और मिश्री मुँहमें रखकर चूसनी चाहिये; अथवा चिरमिटीकी जड़ चबानी चाहिये; अथवा शहद और शीतल जल मिलाकर गरगरे करने चाहियें।

पेटके दर्दका इलाज

अगर पेटमें दर्द हो, तो एलुआ, हल्दी, फिटकरी, नौसादर और सुहागा—इनको गोमूत्रमें पीसकर पेटपर गरम-गरम लेप करो।

बड़े पेटके घटानेका उपाय

अगर पेट बहुत बढ़ गया हो और उसे छोटा करना हो, तो शहदमें शीतल जल मिलाकर रोज़ सवेरे पिलाओ।

पैर फटना

अगर पैर फट गये हों, तो औरतका दूध, गुड़, घी, शहद और गेरू बराबर-बराबर लेकर और मिलाकर लेप करो, पैर कमल जैसे हो जायँगे।

फुन्सियोंका इलाज

अगर बालकके शरीरपर फुन्सियाँ हों, तो रेवन्दचीनीकी लकड़ी पानीमें घिसकर लेप करो। अगर फोड़ा हो, तो आमलेकी राख घीमें मिलाकर लेप करो। अगर फोड़े-फुन्सी बहुत हों, तो आमलोंको दहीमें भिगोकर लगाओ या नीमकी छाल जलमें घिसकर लगाओ।

बालकको दस्त करानेका सहज उपाय

अगर बालक को दस्त कराने हों, तो रातको छुहारा पानीमें भिगो दो। सवेरे उसे उसी पानीमें मसलकर निचोड़ लो और छुहारेको फेंक दो। पीछे वही पानी पिलाओ, दस्त होंगे; अथवा थोड़ेसे गुलाबके फूल और चीनी खिलाकर ऊपरसे पानी पिला दो, दस्त होंगे। रेवन्दचीनीकी जड़ या शीरा बालकके बल-माफिक दूधमें घिसकर पिला दो, दस्त होंगे। बड़े आदमीको, डेढ़ माशे शीरा चीनी या शहदमें मिलाकर चाटने से, दस्त होंगे। दो भाग दाख और एक भाग हरड़को कूट-पीसकर, ८ माशे रोज़ खानेसे क़ब्ज़ मिट जाता है। यह जवानकी मात्रा है।

कमज़ोर बालकको ताक़तवर बनानेका उपाय

अगर बालक कमज़ोर हो, तो बलाबल अनुसार ६ माशेसे ३ तोले तक छुहारे लेकर, पानीमें धोकर साफ़ कर लो और गुठली निकालकर दूधमें भिगो दो। थोड़ी देर बाद छुहारोंको निकालकर, सिलपर पीस लो और कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ लो। इस तरह दिनमें ३ बार, हर बार ताज़ा रस निकालकर, बालकको पिलाओ। बालकमें ख़ूब ताक़त आ जायगी। एक महीनेसे कम उम्रके बालकको यह रस न पिलाना चाहिये।



इक्कीसवाँ अध्याय

ज्वरके उपद्रव और उनकी चिकित्सा

सभी ग्रन्थकारोंने ज्वर रोगके उपद्रव और उनके उपाय ज्वरकी चिकित्साके शेषमें लिखे हैं। हम भी उसी तरह उनका लिखना यहीं मुनासिब समझते हैं; यद्यपि ज्वरकी सामान्य चिकित्सा करते समय और विशेप चिकित्सा करते समय—दोनों ही समय इसकी ज़रूरत होती है। ज्वरके दश उपद्रव ये हैं—

श्वासोमूर्च्छाऽरुचिच्छर्दिस्तृष्णातीसार विड्ग्रहाः।
हिक्काकासांगदाहश्च ज्वरस्योपद्रवादश ॥

श्वास, बेहोशी, अरुचि, क़य होना, प्यास लगना, पतले दस्त होना, दस्तक़ब्ज़, हिचकी, खाँसी और दाह✱—ये ज्वरके दश उपद्रव हैं। इनमेंसे दो-एक उपद्रव तो प्रायः ज्वरमें होते ही हैं। उपद्रवोंका न होना सबसे अच्छा है, कम होना कम कष्टकर है और बहुत होना बहुत बुरा है। बढ़े हुए उपद्रव बड़ी तकलीफ देते हैं; इसलिए उपद्रवोंका शान्त करना आवश्यक है। उपद्रवोंके शान्त करनेसे रोगीको आराम मिलता है। उपद्रवोंके शान्त करनेकी चेष्टा करनी चाहिये; परन्तु कोई भी क्रिया ज्वर-विरोधी न करनी चाहिये। उपद्रवोंपर कम नज़र

✱ कहीं-कहीं ऐसा भी लिखा है,—

तृष्णा मूर्च्छारुचिः श्वासछर्द्यतीसार विड्ग्रहा।
कासोहिक्कांगभेदश्च ज्वरस्योपद्रवा दश ॥

और तो वे ही नौ उपद्रव लिखे हैं। यहाँ शरीरमें दाह होनेकी जगह शरीरमें फटनी होना लिखा है। ज्वरमें दाह भी होता है और शरीरमें फटनी भी होती है।

रखना और मूल रोगपर ही नज़र रखना नादानी है। मूल रोगसे उपद्रव ज़ियादा ख़राब होते हैं। इनसे वहुत जल्दी प्राण नाश होते हैं। इसलिये उपद्रवोंको तत्काल नाश करना जरूरी है। "भावमिश्र" लिखते हैं,—"अनेक वैद्य कहते हैं कि, रोगके शान्त होनेसे उपद्रव आप ही शान्त हो जाते हैं, इसलिये पहले असल रोगको जीतना चाहिये; परन्तु हमारी रायमें पहले उपद्रवोंको जीतना चाहिये और उपद्रवोंमें भी जो ज़ियादा तकलीफ देनेवाला हो, उसे सबसे पहले जीतना चाहिये। अगर मूल रोग बलवान हो और उपद्रव बलहीन हों, तो पहले मूल रोगको ही जीतना चाहिये। उपद्रव और रोगकी विरोधी न हो, ऐसी चिकित्सा एक ही समय करनी चाहिये; अर्थात् उपद्रव और रोग दोनोंका इलाज साथ-ही-साथ करना चाहिये, पर विरोधी चिकित्सा कभी न करनी चाहिये। जैसे;—सन्निपात-ज्वरकी ठीक चिकित्सा करते-करते, दाहका ज़ोर देखकर, रोगीको शीतल जलमें गोते लगवा देना; इससे रोगी मर जायगा।"

श्वास

ऊपरके उपद्रवोंमें पहले श्वास लिखा है। ज्वरमें यह उपद्रव बड़ा ख़राब है। ज्वरमें हिचकी और श्वासका होना बहुत बुरा है। जिन कारणोंसे हिचकी रोग होता है, उन्हीं कारणोंसे श्वास होता है। वायु कफके साथ मिलकर प्राण, जल और अन्नके वहनेवाली राहोंको रोक देता है; तब कफके मारे उसकी आपकी राह भी रुक जाती है; तब वह श्वास पैदा करता है। श्वासमें वायुका कुपित होना ही मुख्य कारण है। श्वास पाँच प्रकारके होते हैं। उनके लक्षण और चिकित्सा हम किसी अगले भागमें लिखेंगे। यहाँ हम इस ज्वरमें यदि श्वासका उपद्रव हो, तो उसके दबानेके चन्द उपाय लिखते हैं; क्योंकि यह ऐसा उपद्रव है कि, शीघ्र ही उपाय न करनेसे फौरन प्राण नाश करता है। यह बहुधा छाती पर कफके सूखनेसे होता है। कफको पतला करना और हवाके आने-जानेकी राह साफ करना ही इसका उत्तम उपाय है।

श्वास-नाशक उपाय

(१) छोटी पीपल, कायफल और काकड़ासिंगी—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इनका ४, ६ या ८ रत्ती चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटनेसे श्वास दब जाता है। यह चूर्ण सुबह-शाम दो बार चाटना चाहिये और कम-से-कम दो रोज़ देखना चाहिये। यह हमारा आज़मूदा नुसख़ा है। अवश्य फायदा करता है। अगर दो रोज़में फायदा न करे या दवा चटानेपर भी रोग बढ़े ही बढ़े—घटे नहीं, तो दूसरा उपाय करना चाहिए।

(२) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे श्वास, खाँसी और जुकाममें अवश्य लाभ होता है। जुकामके कारणसे हुए श्वास खाँसीमें तो निश्चय ही यह फायदा करता है। अनेक बार आज़मा चुके हैं।

(३) सोंठका काढ़ा बनाकर, उसमें शहद मिलाकर पिलानेसे भी श्वासमें लाभ होता है।

(४) काकड़ासिङ्गी, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल), त्रिफला, कटरी, भारङ्गी, पोहकरमूल और पाँचों नमक—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको १, २ या ३ माशे, रोगीके बलाबल अनुसार, गरम जलके साथ खिलानेसे अवश्य लाभ होता है। यह चूर्ण हिचकी, श्वास, उर्ध्ववात, खाँसी, अरुचि और पीनसमें बड़ा गुण करता है।

(५) अगर गलेमें कफका घरघराहट बहुत हो, यानी कफका ज़ोर हो, तो अदरखका रस निकालकर, उसमें २ चाँवल या ४ चाँवल या १ ही चाँवल-भर कस्तूरी घोटकर पिलानेसे बहुत लाभ होता है। जब तक श्वास न दबे तब तक, हलकी मात्रा कस्तूरीकी दिन-रातमें ३-४ बार अदरखके रसमें पिलानी चाहिये। परीक्षित है।

(६) सोंठको तवेपर अधभूँजी करके और उसको महीन पीसकर छातीपर मलनेसे श्वासमें बहुत जल्द लाभ नज़र आता है। परीक्षित है।

(७) कुलथी, काकड़ासिङ्गी, अडूसा और सोंठ—इनका काढ़ा करके उसमें पोहकरमूलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे श्वास, खाँसी, हिचकी और अरुचि शीघ्र ही आराम होते हैं।

(८) दशमूलके काढ़ेमें पोहकरमूलका चूर्ण (अथवा अरण्डकी जड़) मिलाकर पीनेसे श्वासमें अवश्य लाभ होता है, खाँसी और पसलीके दर्दमें भी फायदा होता है। श्वासवालेको यह परमोत्तम उपाय है। परीक्षित है।

(९) बिना धूएँकी आगमें की हुई मोरपंखकी राख २ रत्ती और पीपलका चूर्ण २ रत्ती—इनको शहदमें मिलाकर चटानेसे भी श्वासमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(१०) हल्दी, कालीमिर्च, दाख, गुड़, रास्ना, पीपल और कचूर—इनको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर चूर्ण करके १, २ या ६ माशे चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे श्वास नाश होता है।

(११) साहस करने, भयङ्कर पदार्थ दिखाने, अति हर्ष, अति क्रोध या डरानेसे जिस तरह हिचकीमें लाभ होता है, उसी तरह श्वासमें भी अनेक बार लाभ होते देखा गया है।

(१२) दोनों पसवाड़ोंमें तथा हाथोंकी बीचकी उगलियोंमें गरम लोहेसे दागनेसे घोर श्वास भी दब जाता है। किसी-किसीने कंठ-कूप को भी गरम लोहेसे दागना अच्छा लिखा है।

(१३) आरने ऊपलोंकी आगमें दराँतको गरम करके, उसकी नोक से हड्डी पञ्जर—पसवाड़ेमें दाग देनेसे श्वास रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) धतूरेकी जड़की छालको छायामें सुखा लो। पीछे कोई चार आने-भरके अन्दाजसे चिलममें रखकर, रोगीको तमाखूकी तरह पिलाओ। इससे भी श्वास दब जाता है; पर यह भी गरम ही उपाय है। अगर रोगी चिलम न पी सके, तो न पिलाना चाहिये।

(१५) हिचकी और श्वासमें पोहकरमूल, जवाखार और कालीमिर्च—इनका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे बड़ा फायदा होता है।

वमन-नाशक उपाय

(१) पित्तपापड़ेके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलानेसे ज्वर समेत वमन नाश हो जाती है। पित्तपापड़ा २ तोले लेकर, आध सेर जलमें औटाना चाहिये और चौथाई जल रहनेपर उतार लेना चाहिये।

(२) छोटी हरड़के चूर्णको शहदमें मिलाकर चटानेसे अनेक तरहकी वमन या क्रय नाश हो जाती हैं। इस उपायसे दोष नीचे जाता है, इसीसे वमन झट आराम हो जाती है।

(३) गिलोय, नीम, परवल और त्रिफला—बराबर-बराबर छै-छै माशे लेकर काढ़ा बनाने और उसमें शहद मिलाकर पिलानेसे पित्त-प्रधान त्रिदोषजन्य दुर्जय वमन तथा अम्लपित्त भी आराम हो जाता है।

(४) चन्दन उबालकर, उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तकी वमन आराम हो जाती है।

(५) मक्खीका गू शहदमें मिलाकर चटानेसे पित्तकी वमन आराम हो जाती है। अगर शहद न हो, तो चीनीके साथ भी चटा सकते हो।

(६) पानीमें पुराने चाँवल भिगो दो। पीछे कोई घण्टेभर बाद मलकर पानी निकाल लो। उसमें ज़रा-सी मिश्री मिलाकर पिलाओ। इससे भी वमन आराम होती है।

(७) गिलोयके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलानेसे वमन आराम होती है; परन्तु काढ़ेको शीतल करके शहद मिलाना चाहिये।

(८) पीपलकी छालको जलाकर राख कर लो और उसी समय पानीमें भिगो दो। उसी पानीको थोड़ा-थोड़ा रोगीको पिलाओ। इस उपायसे कठिन-से-कठिन वमन शान्त होगी। परीक्षित है।

(९) बरफ़का टुकड़ा मुँहमें रखनेसे वमन और हिचकी तथा प्यासमें लाभ होता है।

(१०) वायबिड़ङ्ग, हरड़, बहेड़ा, आमला और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णमेंसे माशे-माशेभर चूर्ण शहद मिलाकर चटानेसे कफकी वमन आराम हो जाती है।

(११) इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरका गूदा, धानकी खीलें, फूल प्रियंगू, मोथा, चन्दन और पीपल—इनको बराबर-बराबर लाकर, कूट-पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इसको "एलादि चूर्ण" कहते हैं। इसको शहद और खाँड़ मिलाकर चटानेसे कफ, वायु तथा पित्तसे उत्पन्न हुई वमन निश्चय ही नाश हो जाती हैं। वमन बन्द करनेको रामवाण है। ज्वरमें दिया जा सकता है।

(१२) मिश्री, चन्दन और शहद—इनको एकत्र करके, उसमें मक्खीकी विष्ठा मिलाकर सेवन करनेसे उपद्रवयुक्त पित्तकी वमन नाश हो जाती है।

(१३) वमनके साथ प्यास और दाह हो, तो दाखके रसमें शहद मिलाकर पिलाओ।

(१४) पीपलके पेड़की सूखी छाल जलाकर जलमें बुझा दो और उस जलको वमनवालेको पिलाओ। इस उपायसे मुश्किलसे आराम होने योग्य वमन भी तत्काल आराम होती है। परीक्षित है।

(१५) कमलगट्टे लाकर छिलका उतार डालो और साथ ही भीतर की पत्ती भी निकाल डालो। पीछे १ तोले गुली लेकर डेढ़ पाव जलमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, मल-छानकर निकाल लो और उसमें ८ माशे मिश्री मिला दो। जिस रोगीको उल्टियाँ होती हों या सूखी ओकारियाँ आती हों, उसे एक-एक चम्मच आध-आध घण्टेमें पिलाओ; निश्चय ही आराम होगा। परीक्षित है।

(१६) अगर ज्वरवालेको पतले दस्त भी हों और वमन भी होती हो, तो आमकी गुठली और बेलगिरी दोनों ६-६ माशे लाकर काढ़ा बनाओ। शीतल होनेपर क़ायदेसे शहद और खाँड़ मिला दो। इसके पीनेसे वमन और पतले दस्त दोनों इस तरह आराम हो जाते हैं, जिस

तरह आहुति अग्निसे नाश हो जाती है।

(१७) गाँठवाले पीपलामूलको लाकर कूट-पीसकर महीन छान लो। फिर उसमें बराबरका सोंठका पीसा-छना चूर्ण मिला दो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण ६ माशे शहदके साथ चटाओ। इससे वमनमें बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

(१८) चाँवलके धोवनमें ज़रा-सा जायफल घिसकर पिलानेसे क़य बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) मक्खियोंके गूको और चन्दनको शहद या मिश्रीके साथ चाटनेसे ज्वरकी वमन मिट जाती है। परीक्षित है।

(२०) गिलोयका काढ़ा बनाकर, शीतल करके, शहद मिलाकर पीनेसे वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) पीपलका चूर्ण और मोरके पङ्ख (चन्दोये) की राख शहदमें मिलाकर, बारम्बार चाटनेसे वमन, खाँसी, दमा और हिचकी ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२२) चाँवलोंके धोवनमें जायफल घिसकर पिलानेसे हिचकी और वमन निश्चय ही नाश हो जाती हैं। खाली जायफलका टुकड़ा सुपारीकी तरह मुखमें रखनेसे प्यास नाश हो जाती है।

तृष्णा या प्यास-नाशक उपाय

पित्त और वातके, ऊपर आकर, तालुएको दूषित करनेसे प्यास पैदा होती है। तृष्णा-रोग सात प्रकारका होता है। उसके अलग-अलग लक्षण और चिकित्सा हम अगले भागमें लिखेंगे। यहाँ ज्वरमें जो प्यासका उपद्रव होता है, उसीके चन्द उपाय लिखते हैं। जब प्यासका ज़ोर होता है, तब गला, होंठ, मुँह और तालू ये सूखने लगते हैं और इससे मोह, भ्रम, दाह, सन्ताप और बकवाद ये लक्षण बहुधा होते हैं। सभी लक्षण हमेशा नहीं होते; कभी कम और कभी सभी लक्षण होते हैं।

(१) बड़की जटा, महुआ, धानकी खील, कूट और कमलगट्टेकी गिरी—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। पीछे छानकर शहद में गोली बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे प्यास शान्त होती है। कोई-कोई महुएकी जगह "आमला" लेते हैं। प्यास नाश करनेके लिये यह नुसख़ा उत्तम और परीक्षित है।

(२) बिजौरा, कैथ, अनार, लोध और बेर—इनको बराबर-बराबर लेकर और जलमें पीसकर, मस्तक पर लेप करनेसे दाह और शोष सहित प्यास आराम होती है।

(३) जीभ, तालू और कण्ठ सूखते हों और प्यास बहुत ही हो तो बिजौरे नीबूके रसको घी और सेंधे नमकके साथ पीसकर, मस्तक-पर लगानेसे तत्काल शान्ति होगी।

(४) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, धनिया, खस और सफेद चन्दन—इनको बराबर लेकर हाँड़ीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार लो। पीछे छानकर शीतल कर लो। इस "षड़ङ्ग पानीय" के पीनेसे प्यास, दाह और ज्वर शान्त हो जाते हैं।

नोट—इस नुसख़ेमें कुछ आमले भी डाल दो, तो और भी उत्तम हो।

(५) अगर प्यास बहुत ही बढ़ी हो और पहले लिखे ज्वरमें वमन-विरेचनके नियमोंके अनुसार गड़बड़ी न होती हो, रोगी इस लायक़ हो; तो पीपलका काढ़ा पिलाकर अथवा शीतल जलमें शहद मिलाकर, गले तक पिलाकर और उँगली डालकर क़य करा दो। कफ की प्यासमें नीमका काढ़ा पिलाकर वमन करा देना अच्छा है। तत्काल फ़ायदा होगा।

नोट—जब प्यासका ज़ोर तो घटे नहीं और पानी पीते-पीते पेट फूल जाय—अफारा हो जाय, तब इन उपायोंसे काम लेना चाहिये।

(६) आमले, कमल, कूट, धानकी खीलें और बड़के अंकुर—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और एक जगह पीसकर, शहदमें गोली बनाकर मुंहमें रखनेसे महा उग्र प्यास और दारुण शोष फौरन आराम होती है।

(७) सोने, चाँदी या मिट्टीके ढेलेको आगमें लाल करके, पानीमें बुझा देनेसे और वही पानी रोगीको पिलाते रहनेसे बादीकी प्यास शान्त हो जाती है। इस जलको सुहाता-सुहाता पिलानेसे बहुत लाभ देखा गया है।

(८) कुम्भेर, चन्दन, खस, धनिया, दाख और मुलेठी—इनके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तकी प्यास दूर होती है।

(९) चाँवलोंको साफ करके जलमें भिगो दो। १ घण्टे बाद मल-कर पानी निकाल लो। इस चाँवलोंके जलमें शहद मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलानेसे पित्तकी प्यास नाश होती है। परीक्षित है।

(१०) शहदको मुँहमें कुछ देर रखने और कुल्ला कर देनेसे प्यास और दाह शान्त हो जाते तथा मुँहके छाले भी मिट जाते हैं।

(११) औटाकर शीतल किये हुए जलमें, कपड़ेकी पोटलीमें सौंफ बाँधकर छोड़ दो और वही जल रोगीको पिलाओ। अथवा सौंफ और पोदीनेका अर्क थोड़ा-थोड़ा दो। अथवा पानीमें भिगोई हुई सौंफकी पोटली बारम्बार रोगीको चुसाओ।

(१२) कुछ शीतल मिर्च कूटकर रख लो। उसमेंसे ज़रा-ज़रासा चूर्ण रोगीको खिलाकर पानी पिला दो। इससे प्यास निश्चय ही कम हो जाती है। हमने इसे प्लेग-ज्वर तक में देकर लाभ उठाया है।

(१३) धानकी खील २ तोले, बड़की जटा १ तोला और कमल-गट्टेकी गिरी आधे तोला—इनको रोगीके पानीमें पोटलीमें रखकर डाल दो। प्यास लगनेपर यही जल पिलाओ, प्यास कम हो जायगी।

(१४) आलू बुखारा चूसनेको दो, इससे भी प्यास कम हो जाती है।

(१५) बिजौरा नीबू, जम्भीरी नीबू, अनार, बेर और चूका—इनको एकत्र पीसकर मुखपर लगानेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) मुखके भीतर रूपेकी गोली रखनेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१७) शीतल दूधमें शहद मिलाकर गले तक पी लो; फिर उङ्गली डालकर वमन कर दो। इस तरह कई दफा करनेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) शहद, बड़का अग्रभाग और खील—इनको पीसकर और गोली-सी बनाकर मुँहमें रखनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(१६) पोदीना १ तोला, बड़ी इलायचीके दाने ६ माशे, लौंग ५ दाने और कालीमिर्च ६ दाने—सबको अढ़ाई पाव जलमें पकाकर शीतल कर लो और छानकर रख लो। रोगीको थोड़ा-थोड़ा जल इसमेंसे पिलाओ। इससे वमन बन्द हो जाती है और प्यासमें भी तस्कीन होती है।

अरुचि-नाशक नुसखे

अरुचि रोग पाँच प्रकारका होता है। उसके लक्षण और चिकित्सा हम किसी अगले भागमें लिखेंगे; तो भी इतना जान लेनेमें हर्ज नहीं, कि वातकी अरुचिमें दाँत खट्टे और मुह कषैला होता है। पित्तकी अरुचिमें मुँह कड़वा, गरम, वदबूदार और नमकीन होता है। कफकी अरुचिमें मुंह मीठा, लिबलिबा, भारी, शीतल, बँधा हुआ-सा और कफसे लिहसा-सा होता है। शोक, भय, क्रोध, अति लोभ आदिसे मन विगड़ने पर जो अरुचि होती है, उसमें मुखका स्वाद स्वाभाविक होता है और त्रिदोपजमें मुखका स्वाद अनेक तरह का होता है। जो मनुष्य मुंहमें दिये हुए अन्नको नहीं खाता अथवा मुंहमें देनेपर भी अन्न आगे नहीं जाता, उसे अरुचि कहते हैं।

(१) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे खाँसी, श्वास, अरुचि, जुकाम और कफ—इनका नाश होता है। कफकी अरुचि, कफकी खाँसी और सर्दीके जुकाममें यह नुसखा रामवाण है। सैकड़ों वारका आजमाया हुआ है।

(२) अदरखके रसमें जरासा सैंधानोन मिलाकर चटानेसे भी अरुचिमें बहुत बार लाभ देखा है।

(३) काग़ज़ी नीबूकी फाँक करके उसमें ज़रा-सा कालानोन और कालीमिर्च पीसकर बुरक दो और उसे आगपर खद्काकर चूसनेको दो। इससे तबियत खुश हो जाती है और ज़बानका ज़ायका सुधर जाता है; पर खाँसीका ज़ोर हो, तो इसे न देना चाहिये।

(४) भोजनसे पहले अदरखके टुकड़ोंमें सैंधानोन लगाकर खानेसे अरुचि नाश होती ह और भूख लगती है। यह बिना रोगके अगर सदा खाया जाय तो क्या कहना। यह सदा पथ्य है, जीभ और कंठको शोधता है, अग्निको दीपन करता है और हृदयको हितकारी है।

(५) वायबिड़ङ्गको पीसकर, शहदमें मिलाकर, ऊपरसे अनारका रस डालकर, मुँहमें कवलकी तरह रखनेसे असाध्य अरुचि भी नाश हो जाती है।

(६) आमलों और मुनक्कोंको पीसकर मुँहमें रखनेसे भी अरुचि चली जाती है।

नोट—जब तक ज्वर नहीं जाता, अरुचि नहीं जाती; ज्वर जानेपर अरुचि नहीं रहती। इसलिये ज्वर चला गया हो अथवा कुछ अंश हो और मुख बहुत ही ख़राब हो रहा हो, अन्न पर मन न चलता हो या स्वाद न मालूम होता हो; तो इन नुसख़ोंसे काम लो। ये सभी परीक्षित नुसख़े हैं।

(७) अगर ज्वर ज़ाहिरा चला गया हो, पर कुछ अरुचि रहनेसे ज्वरांशके रहनेका वहम हो; तो सवेरे-शाम एक या आधा माशा "गिलोयका सत" शहदके साथ चटाओ। इससे ज्वर चला जायगा और इसी गिलोयके सतकी एक या आधे माशेकी मात्रा अनारके रसके साथ दो, तो अरुचि नाश हो जायगी। आज़मूदा नुसख़ा है। अगर पित्त शेष हो, तो गिलोय का सत आधा माशा बूरेके साथ देना अच्छा है।

(८) अदरखके रसको गरम करके, उसमें सैंधानमक डालकर,

उसका कवल बनाकर मुखमें रखो। इससे अवश्य अरुचि-नाश होगी। परीक्षित है।

(६) बिजौरे नीबूकी केसर, सैंधानमक डालकर मुखमें रखनेसे अरुचि अवश्य नाश हो जाती है। परीक्षित है।

हिचकी-नाशक उपाय

हिचकी बड़ा भयङ्कर रोग है। हिचकी-रोग पाँच प्रकारका होता है। उसके लक्षण और चिकित्सा किसी अगले भागमें लिखेंगे। ज्वरमें हिचकी चलना, मौतका वारण्ट समझना चाहिये। श्वास और हिचकी मनुष्यके प्राण बड़ी जल्दी नाश करते हैं। कहा है—

कामंप्राणहरारोगा बहवो न तु ते तथा।
यथाश्वासश्च हिक्का च हरतःप्राणमाशुवै ॥

ज्वर प्रभृति रोग प्राय: प्राणोंको हरनेवाले हैं, परन्तु श्वास और हिचकीके समान तत्काल प्राणोंको नाश करनेवाला कोई भी रोग नहीं है। और भी कहा है—

यथाग्निरिक्षोः पवनानुवृद्धो वज्रम् यथा वा सुरराजमुक्तम्।
रोगास्तथैते खलु दुर्निवाराः श्वासः सहिक्काचविलम्बिकाच ॥

जिस तरह हवासे बढ़ी हुई ईखकी आग और इन्द्रके हाथसे छूटा हुआ वज्र दुर्निवार है; उसी तरह श्वास, हिचकी और विलम्बिका ये रोग दुर्निवार हैं- इसलिए इन रोगोंके होते ही ग़फ़लत छोड़कर शीघ्र ही उपाय करना ज़रूरी है।

(१) बकरीके दूधमें ६ माशे सोंठ डालकर औटाओ; पीछे उस दूध को रोगीको पिलाओ। इस उपायसे हिचकी शान्त हो जाती है।

(२) मुलेठीको शहदमें मिलाकर सुँघाओ। पीपलके चूर्णको चीनीमें मिलाकर सुँघाओ। सोंठको गुड़में मिलाकर नास दो। ज़रासे पानीमें ज़रा-सा सेंधानोन घोटकर नास दो। नाकमें हींगकी धूनी दो। इनमें से किसी न किसी उपायसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(३) समयपर बकरीका दूध न मिले, तो आधा पाव पानीमें ६ माशे सोंठ औटाकर, मल-छानकर, ऊपरसे एक तोला मिश्री मिलाकर पन्द्रह-पन्द्रह मिनिटमें, ज़रा-ज़रासा पानी पिलाओ। इस उपाय से और साथ ही नास भी देनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(४) मक्खीके गूको दूधमें पीसकर, उसकी नास दो अथवा चन्दनको दूधमें पीसकर उसकी नास दो अथवा पीपल और मिश्री पीसकर उसकी नास दो। इनमेंसे किसी न किसी उपायसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(५) हींग और उर्दोको पीसकर, विना धूयेंके अङ्गारे या लाल कोयलोंपर डालकर धूनी देनेसे, निश्चय ही, पाँचों तरहकी हिचकियाँ आराम हो जाती हैं।

(६) हिचकी शान्त करनेके लिये चिलममें तमाखूकी तरह रखकर "मैनसिलका धूआँ" पीना चाहिये। इससे लाभ न हो, तो "गायके सींगका धूआँ" पीना चाहिये। कूट, राल अथवा कुशा इनमें से किसी एकका धूआँ पीनेसे भी हिचकी आराम होती है।

(७) अनेक बार खाली शहद चटानेसे हिचकी आराम होती देखी गई है।

(८) शहद और कालानोन मिलाकर बिजौरेका रस पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(९) सोंठ, धायके फूल और पीपल—इन तीनोंका चूर्ण चार-चार रत्ती लेकर शहदमें मिलाकर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१०) पीपल, आमले, मिश्री और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। पीछे आध-आध माशे चूर्ण शहदमें मिलाकर चटाओ। जरूरत होनेसे पाव-पाव या आध-आध घण्टेमें चटाओ। इस योगसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(११) उड़दोंका बारीक चूर्ण लेकर, विना धूएंके अङ्गारोंपर डाल-

कर, चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(१२) पीपलके काढ़ेमें हींग डालकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१३) स्त्रीके दूधकी नास लेने अथवा उसके पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है। स्त्रीके दूधमें मक्खीकी विष्ठा पीसकर नास लेनेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(१४) मैनसिल, बबूर, कूट, राल, कुशा और अडूसा—इनको एक जगह पीसकर और घीमें मिलाकर, चिलममें रखकर, धूआँ पीनेसे हिचकी आराम होती है।

(१५) अगर सन्निपात रोगमें श्वास और हिचकीका जोर हो, तो "दशमूलका काढ़ा" बनाकर,उसमें जवाखार और सेंधानमक मिलाकर दो। अगर बेहोशी और तन्द्रा हो, तो पीपलका चूर्ण मिला दो। ये नुसखे परीक्षित हैं। अगर हिचकी और श्वासमें प्यास भी हो, तो "दशमूलका काढ़ा" ही देना चाहिए।

(१६) हिचकी रोगमें सोंठ, पीपल और आमले,—इनको कूट-पीसकर शहदमें चाटनेसे निश्चय ही लाभ होता है।

(१७) स्त्रीके दूध या लाखके रसमें मक्खीका गू उबालकर सुँघाओ; अथवा सोंठको उबालकर, उसमें गुड़ मिलाकर नस्य दो। अवश्य लाभ होगा।

(१८) काँसकी जड़का चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटनेसे भयंकर हिचकी आराम हो जाती है।

(१९) मोरके पंखको जलाकर उसकी राख कर लो। पीछे २-३ रत्ती राख शहदमें मिलाकर चाटो। इससे हिचकी अवश्य नाश होती है।

(२०) बिजौरेके रसमें सेंधानोन मिलाकर चाटनेसे भी हिचकी आराम होती है।

(२१) ग्वारपाठेके रसमें सोंठका चूर्ण मिलाकर पीते ही हिचकी बन्द हो जाती है।

(२२) पोहकरमूल, जंवाखार और कालीमिर्च—इनका चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई हिचकी भी आराम हो जाती है।

(२३) बिना धूएँके अङ्गारे पर हल्दी और उड़दका चूर्ण डालकर, धूआँ पीनेसे अति भयङ्कर हिचकी शान्त हो जाती है।

(२४) सेंधेनमकको अत्यन्त बारीक पीस-छानकर, पानी मिलाकर, नास देनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२५) खाँड़में सोंठ मिलाकर नास देनेसे हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(२६) हींगकी धूनी देनेसे हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) उड़दोंको चिलममें रखकर, ऊपरसे आग रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२८) दो माशे गिलोयका सत्त शहदके साथ चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२९) सोंठको गुड़में मिलाकर खानेसे अथवा दो माशे सोंठ छै माशे गुड़में मिलाकर नास देनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(३०) घोड़ेकी सूखी लीदका धूआँ लेनेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(३१) पीपलके वृक्षकी सूखी छाल जलाकर, तत्काल पानीमें बुझा दो। उसी बुझे हुए पानीको रोगीको पिलाओ। इससे हिचकी, वमन और प्यास तीनोंमें निश्चय ही लाभ होता है। परीक्षित है।

(३२) पेटके ऊपर मामूली तेल लगाकर, गरम पानीसे सेंक करो या "नारायण तैल" पेटपर धीरे-धीरे मलकर, बोतलमें गरम पानी भरकर, काग बन्द करके, ऊपरसे कपड़ा लपेटकर, उससे सेक करो। इन उपायोंसे अक्सर लाभ होता है।

नोट—जो चीज कफ और वात-नाशक हैं, गरम और वातको अनुलोम करनेवाली हैं—वे हिचकी और श्वासमें हितकारी हैं।

(३३) ज्वर न हो और यों ही हिचकी रोग खड़ा हो गया हो, तो आप पुराने चाँवलोंका भात बनवाकर, उसमें गरम करके घी मिला दें और उस भातको रोगीको खिलावें; फौरन हिचकी बन्द होगी। पर "ज्वरकी अवस्थामें" यह उपाय न करना चाहिये। हाँ, ज्वरकी अवस्थामें दशमूलके काढ़ेसे सिद्ध की हुई पेयाका देना अच्छा है। इस पेयासे खाँसी, श्वास और हिचकी तीनोंमें फायदा होता है।

(३४) साधारणतया हिचकी प्राणायाम करने, यानी प्राण-वायुको रोकने, ताड़ना करने, विस्मयजनक बात कहने, भयभीत करनेवाली बात कहने, विचित्र कहानी कहने, मनपर घोर सदमा या चोट लगनेवाली बात कहने, शरीरपर शीतल जल छिड़कने, सहसा डराने, भुलाने, गुस्सा दिलाने, अत्यन्त हर्षकी बात कहने, जली हुई गरम मिट्टीके सुंघाने, नाभिपर सहता-सहता दबाने, पैरोंसे दो अंगुल ऊपर या नाभिसे दो अंगुल ऊपर दागने अथवा दीपकपर हल्दीकी गाँठ जलाकर, उससे दागनेसे हिचकीमें निश्चय ही लाभ होता है। इन उपायोंसे हमने अनेक बार लाभ उठाया है।

खाँसी-नाशक उपाय

(१) पीपल, कचूर, पोहकरमूल, हरड़, सोंठ और नागरमोथा—इनको बारीक पीसकर और गुड़में मिलाकर गोली बना लो। इन गोलियोंकी सेवन करनेसे भयानक श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं। इन गोलियोंको "कणादि घुटी" कहते हैं।

(२) बहेड़े और पीपलका चूर्ण, शहदमें मिलाकर चाटनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(३) कटेरीका काढ़ा पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सब प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(४) काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, पोहकरमूल, हरड़, बहेड़ा, आमला, कटेरी, भारंगी और पाँचों नमक—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ फाँकनेसे खाँसी, श्वास, अरुचि और पीनस—ये रोग आराम होते हैं। इस चूर्णको "शृंग्यादि चूर्ण" कहते हैं।

(५) गिलोय, सोंठ, भारङ्गी और शालिपर्णी—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण डालकर सेवन करनेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(६) अदरखके रसमें शहद डालकर पीनेसे श्वास, खाँसी, जुकाम और कफका नाश होता है।

(७) अकेले बहेड़ेको मुँहमें रखनेसे सब तरहकी खाँसी और श्वासमें लाभ होता है।

(८) हरड़, सोंठ, नागरमोथा और गुड़—इनकी गोली मुखमें रखनेसे सब तरह की खाँसी और श्वासमें फायदा होता है।

(९) मैनसिलको पानीके साथ पीसकर, बेरीके पत्तोंपर लेप करके धूपमें सुखा लो। पीछे चिलममें रखकर, ऊपरसे विना धूएँकी आग रखकर पीओ। इससे भयानक खाँसी आराम हो जाती है; परन्तु ऊपरसे दूध पीना जरूरी है। यह नुसखा परीक्षित है। सब तरहकी खाँसियोंपर दे सकते हो।

(१०) निशोथ, धतूरेकी जड़, त्रिकुटा और मैनसिल—सबको एकत्र पीसकर कपड़ेपर लेप कर दो; सूखने पर चिलममें रखकर इसका धूआँ पीओ। इस उपायसे ३ दिनमें खाँसी जाती रहती है।

(११) कालीमिर्च १ तोला, पीपल २ तोला, अनारके छिलके ४ तोला, गुड़ ८ तोला और जवाखार आधा तोला—इन सबको एक जगह पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे वह खाँसी भी

आराम हो जाती है, जो सैकड़ों दवाओंसे आराम न हुई हो, जो वैद्योंने असाध्य कहकर छोड़ दी हो अथवा जिसमें थूकते समय राध निकलती हो। इन गोलियोंको "मरिचादि बटी" कहते हैं। परीक्षित है।

(१२) खैरसार १ भाग, छायामें सुखाये हुए अडूसेके पत्ते दो भाग, पीपल और त्रिकुटा ३ भाग—इन सबको पीस-कूट और छानकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको शहदके साथ चाटनेसे सब तरहकी खाँसी आराम होती हैं।

(१३) पीपल, पीपलामूल, इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा और सोंठ—इन सबको समान भाग लेकर, कूट-पीसकर चूर्ण कर लो। पीछे ३-४ माशे चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटो। इससे ज्वरकी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१४) पोहकरमूल, त्रिकुटा, सोंठ, मिर्च, पीपल, काकड़ासिंगी, कायफल, जवासा और कलौंजी—इनको बराबर-बराबर लेकर, चूर्ण करके, शहदके साथ चाटनेसे खाँसी और कफ-सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) गिलोयका सत्त २ माशे, सोंठ, कालीमिर्च और पीपलका चूर्ण दो माशे—सबको मिलाकर शहदके साथ चाटनेसे खाँसी और श्वासमें अवश्य लाभ होता है।। परीक्षित है।

(१६) गठौना, पीपरामूल, सोंठ और बहेड़ेका बक्कल—इन तीनोंके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी बहुत ही जल्दी आराम होती है। परीक्षित है।

(१७) अगर खाँसी पुरानी हो, यकृत या लिवरमें सूजन या मवाद आ गया हो, ज्वर बना रहता हो, यानी तपेदिक हो, रोगीको दाहिनी करवट लेनेसे कष्ट होता हो या खाँसी बढ़ जाती हो, वो नीचे के उपायोंसे काम लेना चाहिये। लिवरसे सम्बन्ध रखनेवाली खाँसी बड़ी कठिनतासे आराम होती है।

तुख्म खतमी	४ माशे
तुख्म खुब्बाज़ी	४ माशे
तुख्म पालक	४ माशे
सरे बनफ़शा	३ माशे
छिली मुलेठी	४ माशे
ख़ाकसीर	३ माशे
गुलेसुर्ख़	६ माशे

इन सब दवाओंको १ पाव जलमें सवेरे ही भिगो दो। शामको आगपर चढ़ाकर जोश दो। जब आध पाव जल रह जाय, मल-छानकर उतार लो और शीतल करके पिला दो। इस तरह ये दवायें रातको भिगोकर, सवेरे जोश देकर पिला दो। इसके साथ ही आगेका नुसख़ा नं० १८ अलसी और बिहीदानेवाला भी बीच-बीचमें रोगीको पिलाते रहो।

(१८) अगर छातीमें बलग़म—कफ जम गया हो या फेंफड़े सूज गये हों, तो अलसीको पीसकर चूर्ण-सा कर लो और उसे तवेपर भून लो। उससे गरमागरम रहते हुए सेक करो अथवा अलसीके सफूफ—चूर्णकी पुल्टिश बनाकर, गरमागरम रहते उससे सेक करो। इन उपायोंसे जमा हुआ बलग़म छूट जायगा और फेंफड़ोंकी सूजन नष्ट हो जायगी। परीक्षित है।

अलसी	४ माशे
बिहीदाना	४ माशे

इन दोनोंको १ पाव जलमें पका लो। जब आधा पाव पानी रह जाय, चूल्हेसे उतारते ही १ तोला मिश्री मिला दो। पीछे कपड़ेमें छानकर इसका लुआब-सा निकाल लो। इस लुआबका एक-एक चमचा घण्टेमें ३-४ बार देते रहो। सवेरेका बनाया शाम तक पिलाओ और शामको तैयार करके रातको पिलाओ। इन दोनों नुसख़ोंसे यकृतकी अथवा बलग़म जमी हुई पुरानी खाँसीमें बड़ा लाभ होता है। आज़-माया हुआ नुसख़ा है। जब जीर्णज्वरी रोगीको या केवल खाँसीवालेको खुश्की बहुत पहुँच जाती है, तब कण्ठ सूखने लगता है और गलेमें काँटे-से पड़ जाते हैं। उस हालतमें भी यह नुसख़ा रामबाण है। छाती पर जमा हुआ बलग़म बिना साफ़ हुए खाँसी आराम नहीं होती और

जमे हुए बलग़म को छातीसे छुड़ानेमें अलसी और विहीदानेका लुआव अक्सीर है। इसे ऊपरके नं० १७ के साथ बीच-बीचमें दो।

गुलबनफ़शा	...	४ माशे
छिली मुलेठी	...	३ ,,
ख़तमीके बीज	...	३ ,,
अलसी (कुचली हुई)		३ ,,
विहीदाना	...	३ ,,
उन्नाव	...	४ दाने

इन सब दवाओंको १ पाव जलमें पकाओ। जब पानी आधा पाव रह जाय, मल-छानकर गजीके कपड़ेसे लुआव निकाल लो। चूल्हेसे उतारते ही १ तोला मिश्री मिला दो। इसको सवेरे-शाम पिलानेसे पुरानी खाँसी और ज्वर दोनोंमें लाभ होता है। खाँसी तो अवश्य ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

जिस रोगीको पुरानी खुश्क खाँसी हो, बुख़ारकी हरारत हो, सिरमें दर्द हो और खाँसते-खाँसते वमन या क़य हो जाती हों, उसे ऊपरका नुसख़ा बहुत ही लाभदायक है।

नोट—छातीपर बलग़म जमा हो, तो ऊपरवाला अलसी और विहीदानेका लुआव भी थोड़ी-थोड़ी देरमें देना चाहिये। सोडाबाईकार्ब ३ माशे और मिश्री ३ माशे दोनोंको फँकाकर, ऊपर से जल पिला देनेसे भी ३-४ दिनमें छातीका बलग़म छूट जाता है।

(१९) अगर कव्वा बैठ जानेसे खाँसी हो, तो कव्वा उठवा देना चाहिये। अगर दवा देते-देते खाँसी आराम न हो, हर समय खसखस लगी रहती हो; तो वैद्यको कव्वेका खयाल जरूर करना चाहिये। कास्टिकसे दाग देनेसे कव्वा ठीक-ठिकाने आ जाता है और ऐसी खाँसी फ़ौरन आराम हो जाती है।

(२०) सूखी खाँसीमें, जो पुरानी हो, जिसमें बलग़म आता ही न हो, रातको सोते समय मलाई-मिश्री खाना अच्छा है। इससे बलग़म तर हो जाता है। पर इसपर जल भूलकर भी न पीना चाहिये। पुराने ज्वरकी सूखी खाँसीमें हमने इससे लाभ उठाया है। नये ज्वरकी

सूखी खाँसीमें इसे न देना चाहिये।

(२१) बड़ी इन्द्रायणकी छालको चिलममें रखकर पीनेसे कफ पतला हो जाता है और वमन होकर कण्ठ साफ़ हो जाता है। यह नुसख़ा परीक्षित है; पर कुछ ताक़तवालेको देना चाहिये।

(२२) बहेड़ेको घीसे चुपड़ लो; पीछे उसे गोबरके भीतर रखकर गोला-सा बना लो। उस गोबरके गोलेको कण्डोंकी आगमें रखकर पका लो। पीछे उस गोलेसे बहेड़ा निकालकर ज़रासा टुकड़ा मुखमें रक्खो, इससे निश्चय ही खाँसी आराम हो जाती है। बहुत ही उत्तम उपाय है। अनेक बारका परीक्षित है।

(२३) अडूसेके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे भी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

दस्तक़ब्ज़ मिटानेके उपाय

ज्वरोंमें—खासकर वातज्वर और वातप्रधान ज्वरोंमें, बहुत ही क़ब्ज़ रहता है, मल सूखकर गाँठ-सी हो जाती हैं। उस समय रोगी को बड़ा कष्ट होता है, और पाख़ाना हुए बिना ज्वर हलका नहीं पड़ता। उस दशामें एकाध दस्त करा देना बहुत ज़रूरी है।

(१) बलाबल देखकर, ३-४ माशे काली निशोथका चूर्ण ६ माशे शहदमें मिलाकर चटा दो। अगर दस्त न होता दीखे—कोठा कड़ा हो, तो ६ या ८ माशे निशोथका चूर्ण भी शहदमें मिलाकर दे सकते हो। ज्वरोंमें दस्त करानेके लिये निशोथ सर्वोत्तम है। निशोथकी मात्रा अधिक है, पर ज़ियादा देना अच्छा नहीं और ख़ासकर ज्वररोगीको। अनेक बार निशोथके चूर्ण और शहदके चाटनेसे विषमज्वर आराम ही हो जाता है; इसलिये विषम-ज्वरमें, क़ब्ज़ होनेपर, इस नुसख़ेको काममें लाना बहुत ही हितकर है।

(२) अरण्डीके तेल या साफ़ कास्टर आयलसे भी दस्त साफ़ हो जाते हैं। यह जुलाब बड़ा हलका है। गर्भवती स्त्री तकको इसे दे सकते

हैं। इसको चार-पाँच तोले तक पिला सकते हैं। पर ज्वरकी हालतमें अगर दस्त कराना हो, तो दो तोला अरण्डीका तेल १ पाव गरम दूध में मिलाकर पिला दो। इससे ज़ियादा न देना।

(३) हरी सनाय, सोंठ, सौंफ, बड़ी हरड़ और कालानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस और छानकर रख लो। इस चूर्ण में से ४ या ६ माशे चूर्ण, रातको सोते समय, फँकाकर, निवाया पानी पिला दो। इससे एक या दो दस्त निश्चय ही साफ़ हो जायँगे। अगर मिज़ाज गरम हो, तो २ तोला गुलक़न्द गुलाब, १०-१५ दाना मुनक्का (बीज निकालकर) और ६ माशे ऊपरका चूर्ण, सबको एक मिट्टीकी छोटी हाँड़ीमें डालकर, ऊपरसे डेढ़ पाव जल डालकर, आगपर पकाओ। आधपाव जल रह जानेपर, मल-छानकर रोगीको पिला दो। इससे अवश्य दस्त होगा और गरमी भी कम करेगा।

(४) अगर रोगीका कोठा नर्म हो, पर दस्त न होता हो; तो मुरब्बेकी बड़ी हरड़ (गुठली निकालकर) एक या दो खिलाकर, ऊपरसे पावभर गरमागरम दूध पिला दो। नाज़ुक-मिज़ाजको एक हरड़से ही ३-४ दस्त हो जाते हैं।

(५) अगर २-३ दस्त कराने हों, तो चार तोले त्रिफलेको अध-कचरा करके, आधसेर जलमें रातको भिगो दो; सवेरे मिट्टीकी हाँड़ीमें औटाओ। चौथाई पानी रहनेपर उतार लो और शीतल होनेपर मल-छानकर १ तोला गुलक़न्द गुलाब मिलाकर पी जाओ। भरोसा है, २-३ दस्त होंगे।

(६) अमलतासका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और जङ्गी हरड़—इन पाँचोंको ६-६ माशे लेकर, आधसेर जलमें औटाकर, चौथाई जल रहनेपर उतार लो। नवीन ज्वरमें यह "आरग्वधादि क्काथ" पिलाना अच्छा है। इससे वातकफज्वर और आमशूल नाश होता है तथा दस्त साफ़ होकर अग्नि दीप्त होती है। इसे "आरोग्य पञ्चक" भी कहते हैं।

नोट—हमने ऊपर दस्त करानेके लिये ६ नुसख़े लिखे हैं। सभी नुसख़े हमारे परीक्षित हैं। बलाबल देखकर, मात्रा घटा-बढ़ा लेना—लेने या देनेवाले का काम है।

नोट—अगर मल और अधोवायु रुक गये हों और दस्त कराना मुनासिब न हो, तो नीचे लिखी बत्ती या पहले पृष्ठ ८१ में लिखी हुई बत्तियों से काम लेना चाहिए।

(७) समन्दरनोन, अदरख, सरसों और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर महीन कर लो। पीछे जलके साथ पीसकर, मोटी अंगुलीके समान कपड़ेकी बत्ती बनाकर, उसपर इसका लेप कर दो। शेषमें उस बत्तीपर ज़रासा घी लगाकर, या गुदामें भी घी चुपड़कर बत्तीको गुदामें प्रवेश करो। इससे दस्त साफ होकर हवा खुलेगी।

(८) अगर अजीर्ण ज्वरमें क़ब्ज़ हो तो हरड़, अमलताश, कुटकी, निशोथ और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर और काढ़ा बनाकर पिलाओ। इससे तत्काल मलबन्ध—दस्तका क़ब्ज़ शान्त होगा।

(९) रेवन्दचीनीका शीरा १ माशे पीसकर गुड़, चीनी या शहद इनमेंसे किसी एकमें मिलाकर चटानेसे दस्त होंगे। जब दस्त बन्द करने हों, घी और भात खिला दो। यह नुसखा परीक्षित और उत्तम है; पर ज्वरकी सब हालतोंमें देने योग्य नहीं है। रोगी अगर बलवान हो, ज्वर पुराना हो, घी और चाँवल खानेमें हर्ज न हो; तब इससे काम लेना चाहिये। हमने तो जाड़ेके ज्वरवालोंको, खासकर ताक़तवर रोगियोंको, देकर इससे बहुत फायदा उठाया है। जब महीना-महीना भर ज्वर आता है और नहीं छोड़ता, तब इससे एक दिन दस्त कराकर, "महाज्वरांकुश बटी" खिलानेसे ज्वर फौरन छोड़ जाता है। कमज़ोरको ४ या ६ रत्ती रेवन्दचीनीका शीरा बहुत है। बलवान १॥ माशे तक ले सकता है।

ज्वरातिसार-नाशक नुसखे

(पतले दस्त)

ज्वरमें दस्त भी होने लगते हैं। चटपट ही उनको रोकना ठीक नहीं है। अगर बहुत दिनों तक बन्द न हों, दस्त होते ही रहें; तो अतिसार की तरह चिकित्सा करनी चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है:—

च्यवमानं ज्वरोत्क्लिष्टमुपेक्षेत मलं सदा।
अतिप्रवर्त्तमानं च साधयेदतिसारवत्॥

ज्वरके वेगसे चलायमान मलको कुछ समय तक बन्द न करना चाहिये। अगर बहुत ज़ोर हो या कई दिन तक दस्त बन्द न हों, तो अतिसारकी तरह साधना करनी चाहिये।

नोट—बलवान ज्वरमें अगर अतिसार हो, तो लंघनके सिवाय और दवा नहीं है; क्योंकि लंघन बढ़े हुए दोषोंको शमन और पाचन करता है। अगर ज़रूरत हो, तो नीचेके नुसख़ोंसे काम लें।

(१) गिलोय, इन्द्रजौ, नागरमोथा, चिरायता, नीम, अतीस और सोंठ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर, इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे ज्वरातिसार आराम होता है।

(२) सोंठ, गिलोय, इन्द्रजौ और नागरमोथा—इनको समान भाग लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे, ज्वरमें पैदा हुआ अतिसार आराम होता है।

(३) पाढ़, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता और इन्द्रजौ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे, ज्वरमें उत्पन्न हुआ घोर अतिसार भी अवश्य आराम हो जाता है।

(४) धनिया, सोंठ, कच्ची बेलगिरी, ख़स और नागरमोथा—इन पाँचोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे, शूल (मरोड़ी) समेत आमातिसार आराम होता है। यह काढ़ा ज्वरमें हितकारी तथा दीपन और पाचन है।

(५) गिलोय, पाठा, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, सोंठ, पद्माख, लालचन्दन, कुड़ेकी छाल, धनिया, चिरायता और अतीस— इन १३ दवाओंको समान-समान लेकर, काढ़ा बनाकर और शीतल करके पीनेसे, ज्वर, प्यास, अरुचि, ग्लानि, दाह, उबकाई, मरोड़ी और शोष समेत अतिसार आराम हो जाता है।

(६) पीपल, गजपीपल और खील—इनके काढ़ेमें शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे ज्वरातिसार, वमन और प्यास नाश होते हैं।

(७) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय और इन्द्रजौ-इनको समान भाग लेकर, काढ़ा बनाकर पीनेसे सब तरहके अतिसार और सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। मतलब यह है, किसी प्रकारके ज्वरमें अतिसार होनेसे इस काढ़ेको देनेसे लाभ होगा; केवल ज्वर आराम करनेके लिये इसे नहीं देना चाहिये।

नोट—ज्वर-नाशक औषधियाँ प्रायः भेदक होती हैं और अतिसार-नाशक औषधियाँ मलस्तम्भक यानी मलको रोकनेवाली होती हैं। इसलिये दोनों परस्पर रोग बढ़ानेवाली हैं। अतः ज्वरमें अतिसार होनेपर, ज्वरातिसारमें ख़ास तौरपर लिखी औषधियोंसे काम लेना चाहिये। ज्वर और अतिसारमें लिखी अलग-अलग दवाओंको मिलाकर हरगिज़ न देना चाहिये।

(८) धायके फूलका काढ़ा, सोंठका चूर्ण और अनारका रस— इनसे सिद्ध की हुई पेया ज्वरातिसार और शूलको नाश करती है।

(९) दशमूलके काढ़ेके साथ सोंठके चूर्णको सेवन करनेसे ज्वर, अतिसार, सूजन और संग्रहिणी आराम हो जाते हैं। "बङ्गसेन" में दो तोले सोंठका चूर्ण लिखा है। बलाबल देखकर मात्रा नियत करनी चाहिये।

मूर्च्छा-नाशक उपाय

क्षीण मनुष्योंके बहुत दोषोंके संचित होनेसे, विरुद्ध आहार-विहार करनेसे, मलमूत्र आदि वेगोंके रोकनेसे, लकड़ी प्रभृतिकी चोट लगनेसे और सतोगुणके नष्ट होनेसे, मनके बहनेवाली ज्ञानेन्द्रियों

और कर्मेन्द्रियोंमें जब वातादिक दोष प्रवेश करते हैं, तब मनुष्यको मूर्च्छा आती है। उस समय सतोगुणके कम होनेसे तमोगुण पैदा होता है। इससे सुख-दु:खका ज्ञान नहीं रहता। सुख-दु:खका ज्ञान न रहनेसे मनुष्य लकड़ी-सा मालूम होता है। उस अवस्थाको मूर्च्छा या मोह कहते हैं। यह मूर्च्छा रोग वात, पित्त, कफ, रक्त, मद्य और विष—इन भेदोंसे ६ तरहका होता है; परन्तु इन छहों तरहकी मूर्च्छाओंमें पित्तकी प्रधानता रहती है। कहा भी है:—"मूर्च्छा पित्ततमः प्रायेति।" अर्थात् मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिकतासे होते हैं। मूर्च्छा, भ्रम, तन्द्रा और निन्द्रामें जो भेद है, वह भी ज़रूर ही समझ लेना चाहिये। मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक रहते हैं। भ्रम—रजोगुण, पित्त और वायुसे होता है। तन्द्रा—तमोगुण, कफ और वायुसे होती है। निन्द्रा—कफ और तमोगुणसे होती है।

भ्रम—जिस तरह घूमते हुए चाकपर सब पदार्थ घूमते हुए दीखते हैं, उसी तरह भ्रमवालेको अपना शरीर और सब चीजें घूमती नजर आती हैं।

तन्द्रा—नींदसे घिरे हुए की तरह जिसमें विषयोंका ज्ञान नाश हो जाय, शरीरमें भारीपन, जँभाई, ग्लानि या बिना मिहनत थकान मालूम हो, उसे "तन्द्रा" कहते हैं। तन्द्रामें आधे नेत्र खुले रहते हैं। निद्रासे जागनेपर क्लम या थकान नहीं रहती, किन्तु तन्द्रामें तो जागनेपर भी थकान बनी रहती है। निद्रामें इन्द्रियों और मनमें मोह होता है; किन्तु तन्द्रामें केवल इन्द्रियोंको मोह होता है, मनको मोह नहीं होता। तन्द्रा और निद्रामें यही भेद है।

यों तो रोगोंके बढ़ जानेसे मूर्च्छा कितने ही रोगोंमें होती है; किन्तु ज्वरका तो यह उपद्रव ही है। ज़ियादातर मूर्च्छा या बेहोशी सन्निपात-ज्वरोंमें होती है। ज्वरके वेगके कारण मस्तिष्कका खून गरम हो जाता है और वह श्लेष्मा या कफके साथ मिलकर जम जाता है। ऐसा अक्सर सन्निपात-ज्वरोंमें होता है। इस दशामें डाक्टरोंकी तरह सिर

पर बर्फ या शीतल जलका कपड़ा रखना या सिरपर पानी डालना—रोगीको मारना है। इस दशामें जमे हुए खून और कफको अलग करना चाहिये।

दूसरी मूर्च्छा यों ही वात-पित्तकी गरमीके सिरमें पहुँच जानेसे हो जाती है। ऐसी मूर्च्छा होनेसे कहते हैं कि, सिरपर गरमी चढ़ गई है। इसमें वातपित्तको शान्त करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये।

मामूली तौरसे, रोगीके शरीरपर पानी छिड़कना, जलमें घुसकर स्नान करना, मोती हीरे पन्ने प्रभृतिके हार पहनना, चन्दनादिका लेप करना, शीतल पंखेकी हवा करना, गुलाब-केवड़ा प्रभृति शीतल और सुगन्धित अर्क़ोंका पीना, मीठे पदार्थों के साथ औटाया हुआ दूध, अनारके रसके साथ जंगली जीवोंका मांस, जौ, लाल चाँवल, मटर और मूँग—ये सब मूर्च्छामें हितकारी हैं।

अगर मलमूत्रके रुकने और उनमें गरमी पहुँचनेसे वेहोशी हो, तो एनीमा पिचकारी द्वारा या जैसे भी उचित समझो दस्त करा देना अच्छा है; क्योंकि मलमूत्रमें गरमी पहुँचनेसे भी सन्निपात, वेहोशी और आनतान बकना आदि उपद्रव उठ खड़े होते हैं। अगर हिचकी आते-आते मूर्च्छा हो जाय, तो तत्काल क़य करा देना अच्छा है। "वंगसेन" में लिखा है—"मूर्च्छा प्रशस्तांबु शिरो त्रिरेकैर्जयेदभीक्ष्ण वमनैश्च तीक्ष्णैः।" बहुत तेज़ नस्य देने और तीक्ष्ण वमन करानेसे मूर्च्छा नाश होती है।

रुधिरके देखने और उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा हो जाती है। रुधिर की मूर्च्छामें शरीर जकड़ जाता और गूढ़ श्वास हो जाता है। रुधिर की मूर्च्छामें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। मद्यकी मूर्च्छामें फिर शराब पीना और सुखसे सोना हितकारी है। विषकी मूर्च्छामें विष-नाशक औषधियाँ देना हितकारी है।

(१) पीपलका चूर्ण ८ या १० रत्ती शहदमें मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(२) सिरसके बीज, छोटी पीपल, कालीमिर्च और सैंधानोन—४-४ चाँवल भर, मैनसिल ४ चाँवल भर और लहसन २ चाँवलभर और वच ४ चाँवलभर या इन सबको बराबर-बराबर लेकर, गोमूत्रमें पीसकर, अञ्जनकी तरह आँखोंमें आँजनेसे रोगीको होश हो जाता है।

(३) कमलका क़न्द, कमलकी नाल, पीपल और हरड़—इनको पीसकर शहदके साथ चाटनेसे भी बेहोशी नाश हो जाती है।

(४) नाक और मुखका साँस रोकनेसे भी होश हो जाता है।

(५) नागकेशर, छुहारा, कमलगट्टेकी गिरी (हरी-हरी पत्ती निकाल देना), मुनक्का और खस—इन सबको अढ़ाई तोले लेकर, काढ़ा बनाने और मिश्री डालकर पीनेसे भी बेहोशी चली जाती है।

(६) स्त्रीका दूध अथवा अनारका रस पिलानेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(७) उसीजे हुए आमले, दाख और सोंठ—इनको एक जगह पीसकर, शहद मिलाकर, चाटनेसे मूर्च्छा, श्वास और खाँसी,—ये सब रोग आराम हो जाते हैं।

(८) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, वच, सोनापाठाके बीज और सैंधानोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर; गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे, सब सन्निपातोंमें होश हो जाता है।

(९) मिर्च, मुलेठी, सैंधानोन, खस, कायफल और पीपल—इनको गरम पानीमें पीसकर, मृदु नस्य देनेसे सन्निपातमें लाभ होता है।

(१०) अगर अच्छे-अच्छे उपाय करनेसे भी सन्निपात-रोगीको होश न हो, तो उसकी पसली, भौं या ललाटपर लोहेकी कोई चीज़ गरम करके उससे दाग देना चाहिये।

(११) लहसन, मैनसिल और वच—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छानकर, आँखोंमें आँजनेसे बेहोशी दूर होती है।

(१२) सिरसके बीज, पीपल, कालीमिर्च और कालानोन—इन

सबको समान भाग लेकर, गोमूत्रमें एकत्र पीसकर, आँखोंमें अंजनकी तरह आँजनेसे चैतन्यता होती है।

(१३) सिरसके बीज और कालीमिर्च—इन दोनोंको बराबर-बराबर लेकर, एक जगह बकरेके मूत्रमें पीसकर, आँजनेसे होश हो जाता है।

(१४) बिजौरेके रसमें हींग और सोंठ मिलाकर मुंहमें रखने और तेज़ तथा चरपरी और कड़वी दवाओंको नाक, कान और नेत्रोंमें फूंकनेसे भी होश हो जाता है।

नोट—मूर्च्छामें पित्तकी प्रधानता रहती है। इसलिये बेहोशीकी दशामें गरम-ही-गरम दवायें देनेसे रोगी मर जाते हैं। आजकल लोगोंमें कमज़ोरी बहुत होती है, इसलिये मामूली मातदिल उपायोंसे बेहोशी दूर करनी चाहिये। जब किसी उपायसे होश न हो, तब जो उपाय उचित जँचे उसीसे काम लेना उचित है।

(१५) रोगीको अदरखके रसकी नास दो; मूर्च्छा दूर हो जायगी।

(१६) शहद, सेंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्चको पीसकर, अंजन-सा बनाकर, आँखोंमें आँजनेसे मूर्च्छा नाश होती है।

नं० १५,१६ और १७ तीनोंके उपाय मूर्च्छामें कई बार परीक्षा किये गये हैं।

(१७) शीतल जल आँखोंमें सींचनेसे, सुगन्धित धूप देनेसे, सुगन्धित फूल सुँघानेसे, नर्म ताड़के पंखेकी मन्दी-मन्दी हवा करनेसे और कोमल केलेके पत्ते छुलानेसे मूर्च्छामें लाभ होता है।

(१८) नीले कमलके फूलोंकी कोंपलोंके पत्तोंको या विष्णुकान्ताको पत्थरपर पीसकर, कपड़ेमें रस निचोड़कर, पिचकारी द्वारा नाकमें पहुँचानेसे मूर्च्छित मनुष्य तत्काल होशमें आ जाता है। परीक्षित है।

(१९) छायामें सुखाये हुए कनेरके पत्ते ६ माशे, चार कालीमिर्च और बादाम—इन सबको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस नस्यसे घोर मूर्च्छित भी जाग उठता है। परीक्षित है।

(२०) मूर्च्छा या बेहोशी बहुत बार दिलकी कमजोरी या गरमीसे

होती है। उस दशामें साधारण दवासे मूर्च्छा नाश करनी चाहिये। मूर्च्छाका उपाय करते समय इस बातको अवश्य मालूम कर लेना चाहिये, कि रोगीकी बेहोशी गरमीसे है, खूनसे है, सर्दीसे है या दिल की कमज़ोरीसे है। अगर गरमीसे गश आ गया हो, तो सिर और आँखोंपर गुलाबजलके छींटे मारने चाहियें तथा सिरका, धनिया और गुलाबजल इनको एक शीशेमें भरकर रोगीको बारम्बार सुंघना चाहिये और पैरोंमें मक्खन मलना चाहिये। इस उपायसे दिलकी कमज़ोरी और गरमीसे होनेवाली साधारण बेहोशी अवश्य आराम हो जाती है।

(२१) केवड़ेका अर्क़ १ शीशीमें भरकर, उसमें मलयागिर-चन्दन घिसकर मिला दो और ऊपरसे ज़ालीका या पतली मलमलका कपड़ा बाँधकर रोगीको बारम्बार सुँघाओ अथवा खीरा काटकर सुंघाओ। इन उपायोंसे कमज़ोरी-दिल और गरमीकी बेहोशी मिट जाती है और सिरमें तरावट आकर सिरका दर्द भी मिट जाता है।

नोट—जीर्णज्वर और राजयक्ष्मावाली कितनी ही बेहोश औरतें इन्हीं उपायोंसे होशमें आ गई हैं। अगर मूर्च्छा सर्दीसे हो और कोई अनाड़ी इन नं० २०–२१ के नुसख़ों या और ऐसे ही उधर लिखे हुए नुसख़ोंसे बेहोशी दूर करना चाहेगा, तो परिणाम खोटा ही होगा; इसलिये बेहोशीका कारण जानकर यथोचित उपाय करना चाहिये।

(२२) सिरका अंगूरी खालिस १ छटाँक और काली तिलीका तेल २ छटाँक तथा पानी १ सेर—इन तीनोंको एक चीनी या काँचके बर्तनमें अथवा पत्थरकी चौड़ी कूँड़ीमें रखकर खूब मिला लो। इस जलमें बारम्बार १ कपड़ा तर करके, रोगीके सरपर रखो। जब कपड़ा सूख जाय, फिर तर करके रख दो। इस उपायसे बेहोशीमें बड़ा लाभ होता है।

(२३) कपूर और चन्दन अथवा खीरा और ककड़ी सुघानेसे होश हो ज़ाता है और गरमीकी भयानक मस्तक-पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(२४) अगर रोग कफ या सर्दीसे हो, तो लौंग, केशर और जायफल,—इनको खूब महीन पीसकर, तिलीके तेलमें मिलाकर, रोगीके सिरपर लेप करना चाहिये। साथ ही खूब गरम (जिससे पैर जल न जायँ) पानीसे रोगीके पैर धोने चाहियें। पैर धोते समय, सदा ऊपरसे नीचे हाथ ले जाना चाहिये, किन्तु नीचेसे ऊपरको नहीं; क्योंकि पाशोया करने यानी पैर धोनेसे रोग निकलकर बाहर जाता है। शेख अबू अलीने लिखा है, कि मैं सिर-पीड़ावालोंके हाथ-पाँवोंपर गरम पानीके तरड़े उस वक्त तक देता रहता था, जब तक कि यह न मालूम होता कि, कोई चीज़ सिरसे हाथ-पैरोंकी ओर उतरती है।

(२५) अगर सन्निपात-रोगीकी आँखें लाल हों और सिरमें भयानक दर्द हो, दर्दके मारे रोगीको चैन न पड़ता हो, तो, नौसादर १ तोला और कलमी शोरा १ तोला—दोनोंको पीसकर अढ़ाई सेर जलमें घोल दो। जब पानी और दवाएँ एकदिल हो जायँ, तब जलमें १ कपड़ा भिगो-भिगोकर सिर और कनपटियोंपर रखते रहो। जब कपड़ा सूख जाय, फिर तर करके रख दो। पीड़ा शान्त होनेके बाद कपड़ा मत रखना।

ये सब हकीमी उपाय आज़मूदा हैं। नाज़ुक-मिज़ाजोंकी बेहोशी और सिरका दर्द आराम करनेमें रामवाण हैं। फिर भी इनसे काम न चले, तो उग्र उपायोंसे काम लेना चाहिये। हमने इस पुस्तकमें एकसे-एक उत्तम उपाय प्रत्येक उपद्रवके लिखे हैं और खूबी यह है, कि अधिकांश परीक्षित लिखे हैं; पर कौनसा नुसखा किस रोगीपर प्रयोग करना चाहिये, इसके लिये मुआलिज या चिकित्सककी अक्लकी भी ज़रूरत है।

(२६) स्त्रीके दूधको नाकमें टपकाना या सिरपर दुहना अच्छा है। अगर स्त्रीका दूध न मिले, तो बकरीका दूध ही सिरपर डालना चाहिये।

(२७) ताजा धनियेके जल और खीरा ककड़ीके बीजोंका पानी, थोड़ेसे सिरकेमें मिलाकर, शीशीमें भरकर रोगीको सुंघाना चाहिये। इसे "लखलखा" कहते हैं।

(२८) सफेद चन्दनका बुरादा, धनिया और कपूर—तीनोंको बराबर-बराबर (छै-छै माशे या ज़ियादा) लेकर, एक कपड़ेकी पोटलीमें बाँध लो। एक चौड़े बर्तनमें थोड़ा-सा अर्क़ गुलाब रख लो। उसी अर्क़में पोटली भिगो-भिगो कर रोगीको सुँघाओ।

(२९) चन्दन और कपूर घिसकर और काहूके पत्तोंके पानीमें मिलाकर नाकमें टपकाओ।

(३०) खैरूके फूल, नीलोफरके फूल और छिला हुआ कद्दू—प्रत्येक-आध-आध पाव तथा जौकी भूसी ३ मुट्ठी—इनको जलमें औटाकर निवाये-निवाये पानीसे पाशोया करो; यानी इस पानीसे पैर धोओ। साथ ही चन्दन अथवा चन्दन और कपूर घिसकर सुँघाते रहो या नं० २८ वाली पोटली गुलाब-जलमें तर करके बारम्बार सुंघाते रहो। बुख़ारका इलाज अलग करते रहो।

तन्द्रा और अत्यन्त निद्राके उपाय

(१) घोड़ेकी लारमें सैंधा नमक, कपूर, मैनसिल, पीपल और शहद—इनको महीन पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे निद्रा-सहित तन्द्रा आराम हो जाती है।

(२) सैंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीसकर बकरेके पेशाबमें खरल करके नास लेनेसे उसी समय तन्द्राका नाश होता है।

(३) सोंठ, पीपल, वच और सेंधानमक—इनको समान भागसे लेकर, महीन पीसकर, नास लेनेसे महा घोर तन्द्राका भी विनाश होता है।

(४) कटेहरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ, भारङ्गी और हरड़—

इनको बराबर-बराबर मिलाकर, कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाकर पीनेसे तन्द्रा और निद्रा दोनों नाश होती हैं।

ज्वरमें मस्तक-शूल

वातज शिरदर्द-नाशक नुसखे

(१) मुचकुन्दके फूल पीसकर सिरपर लगानेसे बादीका सिर-दर्द आराम होता है।

(२) कूट, अरण्डकी जड़ और सोंठ इनको माठेमें पीसकर गरम-गरम सिरमें लगानेसे बादीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

नोट—वातज सिर-दर्द—अगर बिना कारण ही सिर-दर्द खड़ा हो जाय; रातमें दर्द बढ़ जाय, सिरको बाँधने या सेकनेसे दर्द कम हो जाय, तो समझ लो कि यह सिर-दर्द बादी से है।

पित्तज शिरदर्द-नाशक नुसखे

(१) चन्दन, कमल, कमलकी केशर, मृणाल, कमलकन्द और पद्माख—इनको दूधमें पीसकर सिरपर लगानेसे पित्तका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(२) चन्दन, खस, मुलेठी, खिरंटी, नखी और कमल—इनको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तका सिर दर्द आराम होता है।

(३) मुलेठी, दाख और मिश्रीको एकत्र पीसकर नास देनेसे अथवा दाल-चीनी, मिश्री और तेजपातको एकत्र चाँवलोंके पानीमें पीसकर नास देनेसे अथवा दूध और घी को मिलाकर नास देनेसे पित्त का और खूनका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(४) सौ बारका धोया घी सिरपर रखने या मलनेसे पित्तका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(५) पित्तपापड़ेका रस, करेलेके पत्तोंका रस और गायका घी—इन तीनोंको मिलाकर सिरपर मलनेसे पित्तसे भरा हुआ सिर तत्काल हलका हो जाता है।

(६) चन्दन और कपूर पीसकर सिरपर लगानेसे गरमीका सिर-दर्द फौरन आराम हो जाता है।

नोट—(१) पित्त या गरमीका सिरदर्द—अगर छूनेसे सिर ऐसा गरम मालूम हो, मानो अङ्गारोंसे तपाया गया है, आँखों और नाकसे गरम भाप निकले, रातमें सर्दी होनेसे सिरदर्द कम हो जाय; तो समझ लो कि, सिरका दर्द पित्त या गरमीसे है।

ध्यान धरो ! बादीका सिरदर्द, रातके समय, सर्दीका समय होनेसे बढ़ जाता है और पित्तका सिरदर्द रातके समय सर्दी होनेसे घट जाता है।

(२) खूनका सिरदर्द—अगर पित्तके सिरदर्दकी तरह सिर छूनेमें एकदम गरम जान पड़े, नेत्रों और नाकसे दाह निकले, रातके समय दर्द कम हो जाय तथा सिरके कोई भी चीज़ छुलानेसे सही न जाय; तो समझ लो, यह रुधिर या खूनसे सिरदर्द है।

पित्तके और रुधिरके सिरदर्दमें कोई फर्क नहीं है। केवल ज़रा-सा फर्क है और वह यह कि, रुधिरके सिरदर्दवालेका मस्तक किसी भी पदार्थके स्पर्शको सह नहीं सकता।

कफज सिरदर्द-नाशक नुसखे

(१) रेणुका, तगर, भूरिछरीला, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु, रास्ना, थुनेर और वालछड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और जलमें पीसकर तथा गरम करके लगानेसे सर्दीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(२) धूप सरल, अगर, करञ्ज, देवदारु, रोहिषतृण और सेंधा-नोन—इनको बराबर-बराबर लेकर, दूधमें पीसकर और गरम करके लगानेसे कफका सिरदर्द नाश हो जाता है।

(३) बचको पीसकर, कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, सूंघनेसे सर्दी, जुकाम और सिरका दर्द नाश हो जाता है।

नोट—कफ या सर्दीका सिरदर्द—अगर मनुष्यका सिर कफसे भरा मालूम हो, सिर भारी और जकड़ा-सा हो, छूनेसे शीतल जान पड़े, मुख और आँखोंपर सूजन हो—तो कफका सिरदर्द समझो।

मिश्रित नुसखे

(१) सोंठको जलमें पीसकर और दूधमें मिलाकर सुँघानेसे अनेक दोषोंसे हुआ सिरदर्द मिट जाता है।

(२) गुड़ और सोंठको एकत्र पीसकर नास देनेसे सब तरहका सिरदर्द मिट जाता है।

(३) पीपल और सेंधानोन पानीमें घिसकर, उसकी २-३ बून्द नाकमें टपकानेसे सिरका दर्द तत्काल मिट जाता है।

(४) जायफल दूधमें घिसकर सिरपर लगानेसे सिरका दर्द मिट जाता है। गरम करके लगानेसे जुकाम और सर्दीका दर्द जाता रहता है। कपूर सूंघनेसे भी जुकाममें लाभ होता है।

(५) अगर सर्दीसे सिरमें दर्द हो, तो कनपटियोंपर खानेका चूना लगा दो और सोंठको दूधमें पीसकर सूँघो। इस उपायसे हर तरहका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(६) केशरको घीमें भूंजकर और मिश्री मिलाकर, सूर्योदयके समय नस्य देनेसे वातरक्तका सिरदर्द, भौं, कान, आँख और सिरका दर्द, आधाशीशीका दर्द और शङ्खक ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—शङ्खक—पित्त, खून और वायुके दूषित होनेसे कनपटीमें भयानक पीड़ा और भयंकर लाल सूजन होती है। यह विषके वेगके समान बढ़कर मस्तक और गलेको पकड़ लेती है। इससे तीन ही दिनमें आदमी मर जाता और अच्छा इलाज होनेसे तीन ही दिनमें बच भी जाता है।

(७) मिश्री, केशर और दाख—इनको बराबर-बराबर लेकर और इनके वज़नसे चौथाई मक्खन लेकर, सबको मिलाकर नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त और आधे सिरका दर्द तथा वात और पित्तका सिरदर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—सूर्यावर्त्त सिर-दर्द—सूरज निकलते ही आँखों और भौंओंमें मन्दी-मन्दी पीड़ा हो, ज्यों-ज्यों सूरज चढ़े त्यों-त्यों दर्द बढ़े और ज्यों-ज्यों सूरज उतर-कर पश्चिमको जाय, दर्द घटता जाय और सूरजके अस्त होते ही बिल्कुल दर्द न

रहे, तो समझ लो कि यह "सूर्यावर्त्त" है। यह दर्द त्रिदोषके कोपसे होता है और अत्यन्त कष्टसाध्य है।

(८) हल्दी, नागरमोथा, अनारका फूल (अभावमें अम्लवेत), छरीला, इमलीकी छाल, बालछड़, तेजपात, कमलगट्टेकी गिरी, दालचीनी, व्याघ्र-नख, महुएकी अन्तरछाल और बिजौरे नीबूका छिलका—इन सबको समान-समान लेकर अंगूरके या जामुनके सिरकेमें मिलाकर, सिर या ललाटपर लगानेसे सिरदर्द, दाह, बेहोशी, वमन, उबकाई, हिचकी और कँपकँपी—ये सब नाश हो जाते हैं। सैकड़ों बारका परीक्षित है। हर तरहके ज्वरवालेके सिरदर्दमें इसके लगानेसे लाभ होता है।

(९) बच और पीपलके चूर्णकी पोटली बाँधकर सूंघनेसे सूर्यावर्त्त और आधीशीशीका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) भाँगका रस और बकरीका दूध बराबर-बराबर लेकर, दोनोंको मिलाकर और धूपमें तपाकर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त-सिरदर्द नाश हो जाता है।

(११) प्याज काटकर सूंघनेसे गरमीका सिरदर्द नाश हो जाता है।

(१२) केशरको घीमें मिलाकर सूंघनेसे आधाशीशी और जुकाम नाश हो जाते हैं।

नोट—अर्द्धावभेदक या आधाशीशी—यह सिरदर्द आधे सिरमें होता है। वातकफके कारणसे मन्यानाड़ी, भौंह, कान, आँख और ललाटमें—एक तरफ दर्द होता है। यह दर्द शस्त्र या आरीसे काटने-जैसा होता है। जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है, तब एक तरफ़के कान या नेत्रको नष्ट कर देता है।

(१३) अगर सिर बहुत भारी हो, तो कुलींजनको पीस-छानकर सूंघो; छींकें आकर सिर हलका हो जायगा।

(१४) छुहारेकी गुठली घिसकर सिरपर लगानेसे सिरदर्द मिट जाता है।

(१५) चिरमिटीकी जड़ पानीमें पीसकर सुँघानेसे आधाशीशी जाती रहती है।

(१६) तिलीके तेलमें नमक मिलाकर और गरम करके सूँघनेसे आधाशीशी जाती रहती है।

(१७) राई और खाँड़को जलमें पीसकर सूँघनेसे आधाशीशी मिट जाती है।

(१८) नाकसे दूध पीनेसे आधाशीशी वग़ैरह सब तरहके सिर-दर्द मिट जाते हैं।

(१९) सोंठ, गोलमिर्च, पीपल, करंजके बीज और सहँजनेके बीज—इनको बराबर-बराबर लेकर और बकरीके पेशाबमें पीसकर सूंघनेसे कीड़े नाश हो जाते हैं।

नोट—कृमिज सिरदर्द—अगर सिरमें सूई चुभानेका-सा दर्द हो, कीड़ोंके माथेको ख़ाली कर देनेसे माथा भीतरसे फड़के, नाकसे राध, लोहू और कीड़े गिरें; तो समझ लो कि सिरमें कीड़े पड़ गये हैं।

ज्वर छूटनेके पूर्वरूप

दाहःस्वेदोभ्रमस्तृष्णाकम्पोविड्भिदसंज्ञिता ।
कूजनं चातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे ॥

दाह, पसीना, भ्रम, प्यास, कम्प, मलका पतला होना, संज्ञाका नाश, गूँजना और देहमें अत्यन्त दुर्गन्ध—ये लक्षण ज्वर छूटनेके पहले होते हैं; यानी जब बुख़ार जानेवाला होता है तब होते हैं।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, दोषोंके नाश हुए बिना रोग नहीं जाता और जब दोष क्षीण हो जाते हैं; तब दाह आदि उपद्रव कैसे रह जाते हैं?

इसका जवाब यह है कि कोई-कोई चीज़ क्षीण होते समय अपनी शक्ति दिखाती है। जब दीपकमें तेल नहीं होता, तब वह बुझते-बुझते ज़ोरसे जल उठता और फिर बुझ जाता है। इसी तरह दोष भी शान्त होते समय, अपनी शक्ति—दाह आदिक—दिखाते हैं। बन्दर पेड़की डाल हिलाकर दूसरी डाल पर चला जाता है; फिर भी पिछली डाली

थोड़ी देर तक हिलती ही रहती है; इसी तरह ज्वरके चले जाने पर भी, उसका असर कुछ समय तक बना ही रहता है। किन्तु ये दाहादि सब लक्षण त्रिदोष ज्वरोंके शान्त होनेके समय होते हैं; मामूली ज्वरोंमें तो केवल पसीने ही आया करते हैं। कहा है:—

त्रिदोपजेज्वरे ह्येतदन्तर्वेग च धातुजे।
लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्शनम् ॥

त्रिदोपज ज्वर, अन्तर्वेगी ज्वर और धातुगत ज्वरोंके छूटते समय ये सब लक्षण होते हैं। और ज्वरोंके छूटते समय तो पसीने ही आते हैं

"चरक" में लिखा है,—ज्वरके त्यागकालमें यानी ज्वरके जानेके समय रोगीका कण्ठ गूँजता है, "वमन"होती है, रोगी अपने अङ्गोंको इधर-उधर पटकता है, श्वास छोड़ता है, देहका रंग बिगड़ जाता है, पसीने आते हैं, शरीरमें कँपकँपी आती है, बारम्बार जड़के समान हो जाता है, बकवाद करता है, हठसे सारा शरीर गरम या शीतल हो जाता है, संज्ञा नहीं रहती, रोगी कभी-कभी ज्वरके वेगसे घबरा जाता है, क्रोधीकी तरह चारों ओर देखता है और कभी आवाज़के साथ पतला पाखाना फिरता है—चतुर वैद्यको इन लक्षणोंसे जानना चाहिये कि, ज्वर जानेवाला है। डाक्टर इस अवस्थाको "कालेप्स" (Collapse) कहते हैं।

"चरक" में लिखा है,—बहुत दोपवाले नवीन ज्वरमें (संसृष्ट या सन्निपातज्वरमें) जल्दबाज़ी करनेसे, असमयमें दोषोंके पकनेसे, इस तरह दारुण भावसे ज्वर छूटता है। जो ज्वर लंघनादि द्वारा क़ायदेसे आराम किये जाते हैं, जल्दबाज़ी नहीं की जाती, वे ज्वर देरसे आराम होते हैं; पर जाते समय दारुण लक्षणवाले नहीं होते; यानी उनके जाते समय ऐसे भयङ्कर लक्षण देखनेमें नहीं आते। जल्दबाज़ीके सभी काम खराब हाते हैं; पर आजकलके रोगी, आयुर्वेदका ज्ञान न रखनेके कारण, अपनी ही हानि-लाभ नहीं समझते और बड़ी जल्दी करते हैं।

वैद्योंको मजबूर होकर वैसा ही करना होता है—ज्वर चढ़ने के दिन ही दवा देनी पड़ती है। लंघन प्रभृतिके नियमोंका उल्लङ्घन करना पड़ता है। आयुर्वेदके मतसे कम-से-कम ३ लंघन भी नहीं कराये जाते। "ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लङ्घनं च दिनत्रयं, न देयं कथितं वारि न च भैषज्य दापयेत्।" ज्वरके आते ही तीन लङ्घन कराने चाहियें। उन तीन दिनोंमें कोई काढ़ा या दवा न देनी चाहिये; इसका कोई खयाल नहीं करता। अगर चौथे दिन दवा दी जाय, तो बड़ा उपकार हो।

"हारीत संहिता" में लिखा है,—भ्रम, शीतलता, विह्वलता, कम्प, मलका पतलापन, थकान, परिश्रम और पसीना—ये सब लक्षण उस समय होते हैं, जब ज्वर छूटनेवाला होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है—

धातून्प्रक्षोभयन्दोषो मोक्षकाले बलीयते ।
तेन व्याकुलचित्तस्तु म्रियमाण इवेहते ॥

दोष, मोक्ष होनेके समय या शान्त होनेके समय, धातुओंको क्षुभित करके, अत्यन्त बलवान हो जाते हैं, जिससे घबराया हुआ रोगी मरनेवालेकी-सी चेष्टायें करने लगता है; यानी जब रोग घटने या अच्छा होने लगता है, तब वह इतना बलवान मालूम होता है कि, रोगीके बचनेकी आशा नहीं रहती; परन्तु दोषके शान्त होते ही, रोगी अच्छा हो जाता है।

ज्वरमुक्त रोगीके लक्षण

(ज्वर छूट जानेके लक्षण)

"सुश्रुत" में लिखा है:—

स्वेदोलघुत्वंशिरसःकंडूःपाकोमुखस्यच ।
क्षवथुश्चान्नाकांक्षाच ज्वरमुक्तस्य लक्षणम् ॥

पसीनोंका आना, शरीरमें हलकापन, मस्तकमें खाज, मुखपाक यानी होठोंपर पपड़ी जमना, छींक आना और भोजनकी इच्छा होना ये ज्वर-मुक्तके लक्षण हैं।

"हारीत" ने लिखा है,—पसीने आवें, खाज चले, नाड़ी पुष्ट हो जाय, मुंहमें छींक आवें, शरीर हलका हो, भूख लगे, इन्द्रियाँ प्रसन्न हों, पीड़ा और ग्लानि जाती रहे—ये लक्षण हों, तब समझो कि ज्वर उतर गया।

"चरक" में लिखा है,—ज्वरमुक्त होनेसे रोगी विगतक्लान्ति, विगत-सन्ताप, व्यथाहीन, विमलेन्द्रिय तथा पहलेकी तरह सत्ववान हो जाता है।

ज्वर लौट आनेके चिन्ह

विमुक्तस्यापि हि शिरोगुरुत्वं नैव मुञ्चति।
अविमुक्तं विजानीयाज्ज्वरः पुनरुपैतितम्॥

अगर ज्वर छूट गया हो पर सिरका भारीपन न गया हो, तो समझ लो कि, अभी कसर है—ज्वर फिर लौटकर आवेगा।

नोट—शोधन शमन आदि करनेपर भी अगर कुछ पित्त त्वचामें रह जाता है, तो ज्वर पैदा कर देता है। ऐसे स्थलमें ईखका रस या शीतल शर्बत या शर्करोदक* पिलाना और दूध भात खिलाना चाहिये। अगर कफ और वायु शेष रहे हों, तो स्वेद, अभ्यङ्ग यानी पसीने निकालने और मालिश वगैरहसे काम लेना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है—

हृतावशेषं पित्तं तु त्वक्स्थं जनयति ज्वरम्।
विवेदिक्षुरसं तत्र शीतं वा शर्करोदकम्॥
शालिषष्टिकयोरत्रमश्नीयात् क्षीरसंप्लुतम्।
कफवातोत्थयोरेव स्वेदाभ्यंगौ प्रयोजयेत्॥

नोट—ज़रूरत होनेसे पृष्ठ ३७९ के अन्तमें लिखे हुए तीनों नुसख़ोंमेंसे कोई नुसख़ा विचारपूर्वक देना चाहिये।

* शर्करोदकके लिये पृष्ठ ७२ का फुट-नोट देखिये।

ज्वरारिष्ट

(न बचनेवाले ज्वर-रोगियोंके लक्षण)

(१) जिसकी जीभ नीली, पीली और खरदरी हो, अत्यन्त गरम श्वास आवे, रोमहर्ष हो, नीले, लाल और पीले नेत्र हो जायँ और कण्ठ घर-घर करे—वह रोगी नहीं जीता।

(२) जिसके मुँहमें जल्दी-जल्दी श्वास आवे, दाँतोंकी क़तार काली हो जाय, नेत्र ठहरे-से हो जायँ और शरीरमें बल आ जाय—वह रोगी नहीं जीता।

(३) बहुत पेशाब करनेवाला, बहुत श्वास लेनेवाला, दुबला, अरुचिवाला और नष्ट इन्द्रियोंकी कान्तिवाला रोगी मर जाता है।

(४) जिसके मुखसे खून गिरे, सिरमें दर्द हो, भीतर दाह और बाहर जाड़ा लगे,—ऐसा रोगी मर जाता है।

(५) जो बेहोश हो, संज्ञारहित होकर सोता हो,—जिससे गिरकर उठा न जाय, बाहर शीत और भीतर दाहसे पीड़ित हो, वह रोगी मर जायगा।

(६) जिसके रोएँ खड़े हों, आँखें लाल हों, हृदय (छातीमें) भयानक दर्द हो और मुखसे निरन्तर ऊँचा श्वास लेता हो, वह रोगी मर जायगा।

(७) हिचकी और श्वाससे पीड़ित हो, मूढ़ हो—विशेषकर भ्रमते हुए नेत्रोंवाला हो, निरन्तर ऊँचे श्वासवाला हो और क्षीण हो,—वह ज्वर-रोगी मर जायगा।

(८) जिसकी आँखें धूएँ के-से रङ्गकी हों, जिसे बेहोशी हो, अत्यन्त तन्द्रा हो यानी आँखें मिची जाती हों—ऐसा ज्वर-रोगी मर जायगा।

(९) जिसको बहुत क़य होती हों, नेत्रोंसे जल गिरता हो, अरुचि हो, भीतर दाह और जीभ काली हो—ऐसा रोगी मर जायगा।

(१०) जिसका एक उपद्रव तो शान्त न होता हो; किन्तु और

बहुतसे उपद्रव पैदा होते हों और नये-नये रूप लाते हों—वह रोगी मर जायगा।

शास्त्रमें कहा है:—

> व्याधेरुपरि यो व्याधिः सोपद्रवः उदाहृतः।
> सोपद्रवा न जीवन्ति जीवन्ति निरुपद्रवाः ॥

रोगके ऊपर जो उपद्रव हो, वही रोगका उपद्रव है। उपद्रव सहित रोगवाले नहीं जीते; किन्तु उपद्रव रहित रोगवाले जीते हैं।

(११) जो ज्वर बहुत प्रबल कारणोंसे उत्पन्न हुआ हो और जिसमें सारे लक्षण मिलते हों, वह ज्वर प्राण-नाशक है।

(१२) जो ज्वर पैदा होते ही और चिकित्सा करते-करते इन्द्रियोंकी शक्तिको नष्ट कर दे; यानी रोगीको अन्धा, बहरा, गूंगा प्रभृति कर दे, वह असाध्य है।

(१३) जिस ज्वरमें पुरुष ज्वरसे क्षीण हो गया हो अथवा देहमें सूजन आ गई हो, वह ज्वर असाध्य है।

(१४) जो ज्वर धातुके भीतर हो अथवा अन्तर्वेगी ज्वर हो अथवा जिस ज्वरमें वातादि दोषोंका निश्चय न हो सके और बहुत दिनों तक रहनेवाला हो, वह ज्वर असाध्य है। जिस ज्वरमें रोगी अपने बालोंकी सीमन्त रचना आदि करता हो, वह भी असाध्य है।

(१५) जो ज्वर आते ही विषम हो जाय और जो ज्वर बहुत दिनों से आता रहे, वह असाध्य है।

(१६) क्षीण और अति रूखी देहवालेके गम्भीर ज्वर हो, तो मृत्यु समझनी चाहिये। भीतर दाह, प्यास, विरुद्ध दोषोंका बढ़ना, मलका रुकना, श्वास और खाँसी ये गम्भीर ज्वरके लक्षण हैं।

(१७) जिसके रोमाञ्च होते हों, हृदयमें शूल हो, अङ्गोंमें ताप हो, जो बेहोश हो, उर्द्धश्वास लेता हो, जिसके सिरपर पसीने आते हों, परन्तु छातीपर न आते हों और जिसका सारा शरीर शीतल हो, वह रोगी मर जायगा।

यमघंट-योग

वार	नक्षत्र	
रविवार	मघा	इन योगोंको "यमघंट" कहते हैं। इन योगोंमें बीमार होनेसे रोगी शायद ही जीता है। सुखकी आशा नहीं है। उदाहरण—वार रविवार हो और उस दिन नक्षत्र मघा हो, और उसी दिन रोग हुआ हो, तो समझना चाहिये कि "यमघंट" योगमें रोग हुआ। इसी तरह औरोंको समझ लीजिये।
सोमवार	विशाखा	
मंगल	आर्द्रा	
बुध	मूल	
वृहस्पति	कृत्तिका	
शुक्र	रोहिणी	
शनिवार	हस्त	

मृत्यु-योग

वार	नक्षत्र	
रविवार	अनुराधा	इन योगोंको मृत्यु-योग कहते हैं। इनमें रोग होनेसे शुभ नहीं। उदाहरण—जिस दिन रविवार हो और उसी दिन नक्षत्र अनुराधा हो, अगर ऐसे दिन रोग हो, तो रोगीके जीनेकी उम्मीद न समझनी चाहिये।
सोमवार	उत्तरा	
मंगल	मघा	
बुध	अश्विनी	
वृहस्पति	मृगशिर	
शुक्र	अश्लेषा	
शनिवार	हस्त	

मृत्यु-योग

अश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा-फाल्गुनी, भरणी, कृत्तिका और विशाखा—ये नक्षत्र पापवारोंसे युक्त हों और नवमी, षष्ठी, द्वादशी और चौथ ये तिथि भी हों; तो मरण समझना चाहिये। जैसे,—अश्लेषा नक्षत्र हो, वार पापवार हो तथ नवमी तिथि हो अथवा द्वादशी हो या छठ अथवा चौथ हो—यानी तीनोंका मेल हो अथवा पापवार और नक्षत्रका मेल हो और उस दिन किसीको रोग हो; तो वह रोगी नहीं बचेगा।

नक्षत्रोंके भागानुसार

रोगोंकी मर्यादा

(१) कृत्तिका—इस नक्षत्रमें दारुण ज्वर और पित्तकी व्याधि उत्पन्न होती है। इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग हो, तो १० दिन पीड़ा रहती है; दूसरे भागमें रोग हो, तो भी दश दिन पीड़ा रहती है और तीसरे भागमें रोग होनेसे ५ दिन पीड़ा रहती है।

(२) रोहिणी—इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग हो, तो ६ रात; दूसरे भागमें रोग हो, तो १८ दिन और तीसरे भागमें रोग हो, तो १० दिन पीड़ा रहती है।

(३) मृगशिर—पहले भागमें रोग हो तो ५ दिन; दूसरे भागमें हो तो १२ दिन पीड़ा रहती है और तीसरे भागमें रोग होनेसे १ मास तक पीड़ा रहकर मृत्यु हो जाती है।

(४) आर्द्रा—पहले भागमें रोग हो तो १५ दिन और दूसरेमें हो तो १२ दिन तक रोग रहता है। तीसरे भागमें रोग पैदा हो, तो रोगी मर जाता है।

(५) पुनर्वसु—इसके पहले भागमें आया हुआ ज्वर ४५ दिन रहता है। दूसरेमें आया हुआ ७ दिन और तीसरेमें आया हुआ २५ दिन रहता है।

(६) पुष्य—इसके पहले भागमें आया हुआ रोग ७ दिन, दूसरेमें आया हुआ २० दिन और तीसरेमें आया हुआ २१ दिन रहता है।

(७) अश्लेषा—इसके पहले भागमें ज्वर चढ़नेसे मनुष्य बड़ी मुश्किलसे जीता है, दूसरे और तीसरे भागमें ज्वर आनेसे निश्चय ही मृत्यु होती है।

(८) मघा—इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन; दूसरेमें होनेसे १० दिन रोग रहता है और तीसरे भाग में रोग होनेसे मनुष्य २० दिन तक बहुत तकलीफ पाता है।

(९) पूर्वाफाल्गुनी—इसके पहले अंशमें ज्वर होनेसे ५ रात तक रहता है, दूसरेमें होनेसे १२ दिन तक रहता है और तीसरेमें ज्वर होनेसे १ मास बाद मृत्यु हो जाती है।

(१०) उत्तराफाल्गुनी—पहले भागमें रोग होनेसे १४ दिन, दूसरेमें होनेसे सात रात और तीसरेमें होनेसे ६ दिन पीड़ा रहती है।

(११) हस्त—पहले भागमें रोग होनेसे ७ रात; दूसरेमें होनेसे ४ दिन और तीसरेमें होनेसे ५ दिन पीड़ा रहती है।

(१२) चित्रा—पहले भागमें ज्वर होनेसे मृत्यु होती है। दूसरे भागमें रोग होनेसे रोग भयङ्कर रूप धारण करके ३ महीनेमें दूर होता है और तीसरे भागमें रोग होनेसे १३ दिन पीड़ा रहती है।

(१३) स्वाती—पहले भागमें रोग होनेसे १७ दिन; दूसरे भागमें होनेसे २१ दिन पीड़ा रहती और तीसरे भागमें रोग होनेसे मृत्यु ही होती है।

(१४) विशाखा—पहले भागमें रोग होनेसे ४८ दिन पीड़ा रहती है, दूसरे और तीसरे भागमें रोग होनेसे १२-१२ दिन पीड़ा रहती है।

(१५) अनुराधा—पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन, दूसरे भागमें होनेसे १५ दिन और तीसरे भागमें होनेसे ६४ दिन पीड़ा रहती है।

(१६) ज्येष्ठा—पहले भागमें रोग होनेसे ४५ दिन और दूसरे तथा तीसरे भागमें रोग होनेसे १६ दिन पीड़ा रहती है।

(१७) सूल—पहले भागमें रोग होनेसे ६० दिन; दूसरेमें होनेसे १६ दिन और तीसरेमें होनेसे १५ दिन पीड़ा रहती है।

(१८) पूर्वाषाढ़ा—पहले और दूसरे भागमें रोग होनेसे १५ दिन पीड़ा रहती है, किन्तु तीसरे भागमें रोग होनेसे रोगी मर जाता है।

(१६) उत्तराषाढ़ा—पहले और दूसरे भागमें रोग होनेसे १२ रात और तीसरे भागमें रोग होनेसे २० दिन पीड़ा रहती है।

(२०) श्रवण—पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन; दूसरेमें होनेसे २० दिन और तीसरेमें होनेसे १६ दिन पीड़ा रहती है।

(२१) धनिष्ठा—पहले भागमें रोग होनेसे २० दिन; दूसरेमें होनेसे ६० दिन और तीसरेमें होनेसे १ मास पीड़ा रहती है।

(२२) पूर्वाभाद्रपद—पहले भागमें दारुण रोग हो तो ४५ दिन; दूसरेमें हो तो ६ मास और तीसरेमें हो, तो १६ दिन पीड़ा रहती है।

(२३) उत्तराभाद्रपद—पहले भागमें रोग हो तो १५ दिन; दूसरेमें हो तो ३० दिन और तीसरेमें हो तो २८ दिन पीड़ा रहती है।

(२४) रेवती—पहले भागमें रोग हो तो ८ दिन; दूसरेमें हो तो १६ दिन और तीसरेमें रोग हो तो ३० दिन पीड़ा रहती है।

(२५) अश्विनी—पहले भागमें रोग हो तो १ दिन; दूसरेमें रोग हो तो ५ रात और तीसरेमें हो तो ७ रात पीड़ा रहती है।

(२६) भरणी—पहले भागमें पीड़ा हो तो ७ दिन पीड़ा रहती है; दूसरे भागमें रोग हो तो मृत्यु होती है और तीसरे भागमें रोग हो, तो ६० दिन पीड़ा रहती है।

नक्षत्रोंके तीन भाग आत्रेय मुनिने किये हैं। इनका मर्म जानकर वैद्यको चिकित्सा करनी काहिये। इन नक्षत्रोंकी शान्तिके अलग अलग मन्त्र हैं। उनसे हवन करनेसे रोगकी शान्ति होती है।

नक्षत्रोंके हिसाबसे ज्वर रोगीके आरोग्य लाभ या मरणका निश्चय

(१) धनिष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिन तक रहता है।

(२) शतभिषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिनमें रोगीको मार देता है।

(३) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिन या १२ दिनमें मार देता है।

(४) उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १४ दिन बाद आराम हो जाता है।

(५) रेवती नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ४ या ८ दिन तक रहता है।

(६) अश्विनी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिनमें आराम हो जाता है।

(७) भरणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ५ दिनमें रोगीको मार देता है।

(८) कृत्तिका नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ७ या १२ दिनमें आराम हो जाता है, पीछे ३ पक्षमें संशय हो जाता है।

(९) रोहिणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ या ११ दिनमें आराम हो जाता है।

(१०) मृगशिर नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ या ९ दिन रहता है।

(११) आर्द्रा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ५ दिनमें मार देता है। इससे अधिक रहनेसे संशय हो जाता है।

(१२) पुनर्वसु नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १३ या २७ दिनमें चला जाता है।

(१३) पुष्य नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ३ या ७ दिनमें चला जाता है।

(१४) अश्लेषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर बहुत समय तक रहकर शेषमें मार देता है।

(१५) मघा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १२ दिनमें मार देता है। अगर अधिक दिन निकल जायें, तो रोगी सुखी हो जाता है।

(१६, १७) पूर्वा फाल्गुन नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ या १० दिन में तथा उत्तरा फाल्गुनमें हुआ ज्वर ८ या ६ अथवा २१ दिनमें चला जाता है या मार देता है।

(१८) हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ७ दिनमें मोक्ष कर देता है। आठ दिनसे अधिक होनेसे रोगी आराम हो जाता है।

(१६) चित्रा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिनमें मोक्ष कर देता है। अधिक रहनेसे रोगी आराम हो जाता है।

(२०) स्वाती नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिन या ३ दिनमें आराम हो जाता है।

(२१) विशाखा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर २१ दिनमें मार देता है।

(२२) अनुराधा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिन तक रहता है। इसके बाद चिकित्सा वृथा है।

(२३) ज्येष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर पाँचवें दिन मार देता है अथवा १२ दिनमें सुखी कर देता है।

(२४) मूल नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर दश या तीन सप्ताहमें आराम हो जाता है।

(२५) पूर्वाषाढ़ नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिनमें आराम हो जाता है।

(२६) उत्तराषाढ़ नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १ मास तक दुःख देता है। पीछे ८ या ६ मासमें आराम हो जाता है।

(२७) श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिन तक तकलीफ़ देता है।

नोट—२७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र मामूली तौरसे ६० घड़ी या २४ घण्टे तक रहता है। कभी-कभी ५५ घड़ी या ६५ घड़ी भी रहता है; पीछे दूसरा नक्षत्र बदल जाता है।

बाईसवाँ अध्याय

कुछ ज़रूरी बातें

औषधि-सम्बन्धी नियम *

(१) बहुत-सी दवाओंमें कुछकी तोल लिखी हो और किसीकी तोल न लिखी हो, तो जिसकी तोल न लिखी हो, उसे भी उन्हींके बराबर लेना चाहिये।

(२) अगर कहीं दवा सेवन करनेका समय न लिखा हो, तो वहाँ सवेरेके समय दवा लेनी चाहिये। दवा सेवनका समय जानना चाहो, तो पृष्ठ १२५-१२६ तक देखिये।

(३) अगर कहीं दवाके पकानेके लिए बर्तनका नाम न लिखा हो, तो मिट्टीके बासनमें दवा पकानी चाहिये।

(४) अगर कहीं पतले पदार्थका जिक्र न हो और बिना पतले पदार्थ काम न चलता दीखे, तो वहाँ पानी लेना चाहिये। जहाँ यह न लिखा हो कि, अमुक औषधिके पत्ते, छाल, फल या फूल क्या लिया जाय, वहाँ आप उस दवाकी जड़ लीजिये। जिन वृक्षोंकी जड़ें मोटी हों उनकी छाल लीजिये; जिनकी जड़ें छोटी हों, उनका सर्वाङ्ग लीजिये। जैसे बड़, नीम आदिकी छाल लीजिये; विजयसार आदिका सार; परवल और तालीसपत्र आदिके पत्ते और त्रिफला तथा अनार आदिके फल लीजिये।

---

* ये सब बातें पहले भागके २९८-३०२ पृष्ठोंमें विस्तारसे लिखी हैं, वहाँ अवश्य देख लीजिये।

कौन-कौन दवायें नई या पुरानी लेनी चाहियें ?

(५) सभी कामोंमें नये पदार्थ लीजिये; किन्तु वायबिड़ङ्ग, पीपल, गुड़, चाँवल, घी, शहद, धनिया और हींग पुरानी लीजिये। ये एक साल बाद पुराने समझे जाते हैं। अगर पुराना गुड़ न मिले, तो नये गुड़को १२ घण्टे तक धूपमें रखकर काममें लाना चाहिये।

दवाका खुलासा न लिखा हो तो क्या करना चाहिये?

(६) अगर कहीं किसी दवाका विशेष परिचय न लिखा हो—जैसे; उत्पल लिखा हो तो नीलोत्पल समझो; पुरीषरस लिखा हो तो गोवर लीजिये; चन्दन लिखा हो तो लालचन्दन लीजिये। सरसों लिखी हो तो सफ़ेद सरसों लीज़िये; नमक लिखा हो तो सेंधानमक लीजिये; मूत्र लिखा हो तो गायका मूत्र लीजिये। दूध और घी लिखा हो, तो गायका दूध और घी लीजिये।

गीली-सूखी दवाओंका विचार

(७) गिलोय, कुड़ा, अडूसा, पेठा, शतावर, असगन्ध, पियाबाँसा, सौंफ और प्रसारिणी—ये दवाएँ गीली ही लेनी चाहियें।

अडूसा, नीम, परवल, केवड़ा, खिरेंटी, पेठा, शतावर, सोंठ, कुड़ा, गन्धप्रसारिणी, गिलोय, इन्द्रवारुणी, नागबला, कटसरैया, गूगल और सौंफ़—ये गीली ली जा सकती हैं, पर दूनी लेनेकी ज़रूरत नहीं।

नोट—सभी चीज़ें प्रायः सूखी ली जाती हैं। अगर कोई चीज़ अभाववश गीली लेनी पड़े, तो दूनी लेनी चाहिये; पर उपरोक्त चीज़ें, गीली होनेपर भी, दूनी न लेनी चाहियें।

कहाँ लाल और कहाँ सफेद चन्दन लेना चाहिये?

(८) चूर्ण, अवलेह, आसव और तेलके नुसखेमें खाली "चन्दन" शब्द लिखा हो, तो "सफ़ेद चन्दन" लीजिए, किन्तु काढ़े और लेपमें लालचन्दन लीजिए।

कोई दवा न मिले तो बदल लेना चाहिये

(९) अगर आपको कोई दवा न मिले, तो उसका प्रतिनिधि या बदल ले लीजिये। किसका क्या बदल है, यह देखना हो, तो आप पहले भागके ३०३—३०७ पृष्ठ देखिए। वहाँ अनेक दवाओंके प्रतिनिधि या बदल लिखे हैं।

काढ़ेकी दवाओंका वज़न कितना होना चाहिए ?

(१०) काढ़ेमें जितनी दवाएँ हों, वे सब बराबर-बराबर मिलाकर कुल २ तोले लेनी चाहियें—जैसे; किसी नुसख़ेमें ६ दवायें हो, तो आप हरेकको चार-चार माशे लेकर दो तोले वज़न पूरा कर लीजिए। अगर नुसख़ेमें दो दवायें हों, तो प्रत्येकको एक-एक तोले लीजिए। काढ़ेको १६ गुने यानी ३२ तोले जलमें औटाइये और चौथाई यानी ८ तोले जल रहनेपर उतार लीजिए। काढ़ेमें कोई चीज़ ऊपरसे मिलानी हो, तो काढ़ा पीते समय मिलानी चाहिये। मिलानेवाली दवा प्रायः ६ माशे मिलानी चाहिये। अगर एक चीज़ मिलानी हो, तो आधे तोले मिलाइए और अगर दो चीज़ मिलानी हों, तीन-तीन माशे मिलाइए। काढ़ा रोज़ ताज़ा बनाकर पीना चाहिए, बासी काढ़ा न पीना चाहिए। औटाए हुए काढ़ेको फिर दुबारा न औटाना चाहिए। काढ़ेके सम्बन्धमें और भी उपयोगी बातें जाननी हों, तो इसी भागके पृष्ठ १२६—१२८ और १६३ देखिए।

क्वाथ प्रभृति बनानेकी विधि

क्वाथ

(११) अगर काढ़ा बनाना हो, तो २ तोले दवाओंको ३२ तोले जलमें, मिट्टीकी हाँड़ीमें, बिना ढक्कन लगाए, पकाओ और चौथाई जल रहनेपर मल-छानकर पिलाओ।

नोट—कोमल द्रव्य चौगुना पानी, कड़ा अठगुना और अति कड़ा सोलह गुना पानी डालकर औटाना चाहिये।

हिम

अगर हिम या शीत कषाय बनाना हो, तो २ तोला दवाको १२ तोले या छैगुने जलमें पहले दिन शामको भिगो दो और सवेरे मल-छानकर पिला दो। देखो पृष्ठ १७१ का नं १५।

फाँट

अगर फाँट बनाना हो, तो पहले दवासे चौगुना गरम जल तैयार कर लो। पीछे उसी पानीमें दवाको थोड़ी देर तक भिगो रखो और पीस-छानकर पिला दो।

कल्क

अगर कल्क बनाना हो, तो गीली या सूखी दवाको सिलपर डालकर जलके साथ भाँगकी तरह पीस लो, यही कल्क है। देखो पृष्ठ १६१ का दूसरा नोट।

स्वरस

अगर स्वरसकी जरूरत हो, तो कच्ची दवाको सिलपर बिना पानी मिलाये कूट-पीसकर कपड़ेमें निचोड़ लो। यही "स्वरस" है। अगर स्वरसकी गीली दवायें न मिलें, तो सूखी दवाओंको जौकुट करके अठगुने जलमें रातको भिगो दो; सवेरे आगपर औटाकर, चौथाई जल रहनेपर उतारकर काममें लाओ। अगर स्वरसमें मिश्री, शहद, गुड़, जीरा, खार, नमक, चूर्ण या तेल मिलाने हों, तो आठ-आठ माशे मिलाने चाहियें। स्वरस १ या २ तोले तक दिया जा सकता है।

नोट—काढ़ा, हिम, फाँट, कल्क और स्वरस—इनको "पञ्च कषाय" कहते हैं। स्वरससे काढ़ा, काढ़ेसे कल्क, कल्कसे हिम और हिमसे फाँट हलका होता है।

पुटपाक

पुटपाक करना हो, तो सब दवाओंको जामुन या बड़के पत्तोंमें लपेटकर, ऊपरसे मजबूत धागा बाँधकर, दो अंगुल मिट्टी चढ़ाकर सुखा लो; पीछे आगमें रख दो। जब मिट्टीका रंग लाल-सुर्ख हो जाय, दवाको पकी हुई समझो और निकाल-खोलकर काममें लाओ।

चूर्ण

अगर चूर्ण बनाना हो, तो पहले सब दवाओंको बीन-चुन और फटककर साफ़ कर लो; पीछे अच्छी तरह धूपमें सुखाकर प्रत्येक दवाको अलग-अलग कूट लो। पीछे दवायें जितनी-जितनी मिलानी हों, उतनी ही उतनी तौल-तौल कर मिला दो। इस तरह उत्तम चूर्ण बनता है। अगर चूर्णमें गुड़ मिलाना हो, तो बराबरका मिलाओ। अगर मिश्री मिलानी हो, तो दूनी मिलाओ। अगर चूर्ण पतले पदार्थमें मिलाकर पीना हो तो चौगुने पतले पदार्थ में मिलाकर पीओ। अगर किसी चूर्णमें किसी चीज़की भावना देनी हो, तो जिसकी भावना देनी हो, उसकी भावना देकर चूर्णको सुखा लो।

भावना देनेकी विधि

भावना देनेका यह क़ायदा है कि, जिस काढ़े या रस में भावना देनी हो, उस काढ़े या रसमें चूर्ण को अच्छी तरह भिगोकर दिनमें धूपमें और रातमें ओसमें रक्खो। अगर सात भावना देनी हों, तो सात दिन तक भिगो-भिगोकर रोज़ दिनको धूपमें और रातको ओसमें रख दो। प्रत्येक दिन भावनाका रस या काढ़ा ताजा तैयार करके भावना देनी चाहिये।

अनुपान

(१२) अनेक दवाओंके सेवन करनेके बाद कोई पतली चीज़ पीने का क़ायदा है। दवाके साथ जो पतली चीज़ ली जाती है, उसे ही "अनुपान" कहते हैं। आजकल शहद प्रभृतिमें मिलाकर दवा चाटते हैं और वे शहद प्रभृति ही अनुपान कहे जाते हैं। अनुपानके साथ औषधि थोड़ी देरमें ही बड़ा अद्भुत चमत्कार दिखाती है। इसलिये प्राय: दवाएँ अनुपानके साथ सेवन करनी चाहियें। औषधि जिस रोगका नाश करनेवाली हो, उसका अनुपान भी उसी रोगके नाश करनेवाला होना चाहिये।

कफज्वरमें अनुपान शहद, तुलसीके पत्ते, अदरखका रस और पानका रस है।

पित्तज्वरमें अनुपान पित्तपापड़ेका रस, परवलका रस या काढ़ा, गिलोयका रस, नीमकी छालका काढ़ा या रस है।

वातज्वरमें शहद, गिलोयका रस या चिरायते को भिगोकर बनाया जल प्रभृति अनुपान है।

विषमज्वरमें पीपलोंका चूर्ण, तुलसीके पत्तोंका रस, गोलमिर्चोंका चूर्ण, शहद और बेलके पत्तोंका रस प्रभृति अनुपान है।

खाँसी, कफप्रधान श्वास और जुकाममें अडूसेके पत्तोंका रस, तुलसीके पत्तोंका रस, पानका रस, अदरखका रस, पीपलका चूर्ण, काकड़ासिंगीका चूर्ण, वंसलोचनका चूर्ण, मुलेठी, कटेहली, कायफल और अडूसेकी छाल—इनका काढ़ा अनुपान है। वायुप्रधान श्वासमें शहद और बहेड़ेका काढ़ा प्रभृति अनुपान हैं।

नोट—रोग और रोगीकी अवस्थानुसार अनुपानके लिये काढ़ा ५ तोले, स्वरस २ तोले या एक तोले और चूर्ण एक आने या आध-आध आने भर देना चाहिये। चूर्णके अनुपानमें शहद अच्छा है। पित्ताधिक्यके सिवा और सब अवस्थाओंमें शहद दिया जा सकता है।

गोलियाँ

अगर गोलियाँ बनानी हों, तो दवाओंके चूर्णमें पतले पदार्थ विशेष की भावना देकर, खरलमें अच्छी तरह घोटकर जौ, सरसों या चिरमिटीके समान गोलियाँ बनाओ। अगर यह न लिखा हो कि, किस पतली चीजको मिलाकर गोली बनाओ, तो आप पानीके साथ चूर्ण को खरल करके गोलियाँ बनाओ। अगर यह न लिखा हो कि, इतनी बड़ी-बड़ी गोलियाँ बनाओ, तो आप प्रायः एक-एक रत्ती भरकी गोलियाँ बनावें।

नोट—गुटिका, वटी, मोदक, वटिका, पिण्डी और गुड़—ये सात गोलियों के नाम हैं।

गुड़, खाँड़ या गूगलका पाक करके, उस पाकमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर गोली बनानी चाहियें। अगर बिना पाक किये गोलियाँ बनानी हों, तो गूगलको शोधकर और पीसकर तथा चूर्णमें मिलाकर घीसे गोलियाँ बनानी चाहिएँ।

अगर जल, शहद, दूध आदि पतली चीजोंमें चूर्णको डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इनमें चूर्णको डालकर और खरल करके गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर खाँड़ या मिश्री आदि डालकर गोली बनानी हों, तो चूर्णसे चौगुनी खाँड़ या मिश्री मिलाकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गुड़ डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो चूर्णसे दूना डालकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर गूगल और शहद दोनों डालकर बनानी हों, तो इन दोनोंको चूर्णके बराबर लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर दूध या पानी वग़ैरह पतले पदार्थोंसे गोलियाँ बनानी हों, तो चूर्णसे दूने लेकर गोलियाँ बनानी चाहियें।

मुद्रा और यन्त्र प्रभृति

अनेक प्रकारकी मुद्रायें

दो शीशियों या दो हाँड़ियोंके मुंह मिलाकर, किसी चीजसे जोड़ दिये जाते हैं, जिससे भीतरकी दवा अथवा पारा प्रभृति न उड़ें अथवा धूआँ वग़ैरह न निकलें—इसीको मुद्रा कहते हैं।

कहीं तो शीशियोंका मुँह गुड़ और चूनेसे बन्द किया जाता है और कहीं शहद और चूनेको मिलाकर उनसे बन्द किया जाता है। डमरूयन्त्रकी दोनों हाँड़ियोंके मुखोंको चिकने पत्थरपर घिसकर बराबर कर लेते हैं; पीछे दोनों हाँड़ियोंके मुँह मिलाकर उनको पहले लोहेके तारोंसे कस देते हैं; इसके बाद कपड़ेके टुकड़ोंको चिकनी मिट्टी या मुल्तानी मिट्टीमें ल्हेस-ल्हेसकर, हाँड़ियोंके जोड़ोंपर चढ़ाते हैं। कभी-कभी रूई, लोहेकी कीट, मिट्टी और राखको खूब कूट-पीसकर, उससे हाँड़ियोंके मुँह बन्द कर देते हैं। अगर डमरूयन्त्र द्वारा हिंगलूसे पारा निकालते हैं, तो "वज्रमुद्रा" से दराज़ोंको बन्द करते हैं। जहाँ पारेके उड़ जानेकी सम्भावना रहती है, वहाँ वज्रमुद्रासे काम लेते हैं।

पीपलका गोंद १ तोला, लोहचूर्ण १ तोला, रूई १ तोला, सेंधा-नमक १ तोला, मुलतानी मिट्टी १ तोला और बालू २ तोला—इन सबको मिलाकर और ऊपरसे पानी डाल-डालकर मजबूत पत्थरकी सिलपर रखकर लोढ़े या हथौड़ेसे कूटते हैं। तीन दिन बराबर कूटनेसे जब सब चीज एकदम चिकनी और चिपक जाने लायक हो जाती हैं तब डमरू-यन्त्रकी—मुख घिसकर तैयार की हुई—हाँड़ियोंके मुखोंको इसी कल्कसे बन्द कर देते हैं। इसीको "वज्रमुद्रा कहते" हैं। इससे मुख जोड़ देनेसे पारा उड़कर नहीं जा सकता, परन्तु मुद्रासे मुख बन्द करके ऊपरसे कपड़-मिट्टी अवश्य कर देनी चाहिये, इससे फटनेका भय नहीं रहता।

शहद और चूनेको मिलाकर, उससे शीशी और कागकी सन्धिको बन्द करते हैं अथवा गुड़ और चूनेको जरा पानी मिलाकर खूब एक कर लेते हैं। पीछे इससे भी शीशी और कागकी दराज बन्द करते हैं। इसको 'दृढ़मुद्रा' कहते हैं। चन्द्रोदय या सिन्दूर-रसके बनानेमें दृढ़मुद्रासे काम लेते हैं।

गोबर और चिकनी मिट्टी मिलाकर अथवा केवल चिकनी मिट्टीको पानीमें सानकर अभ्रक प्रभृतिके सम्पुटपर मुद्रा देते हैं; यानी शरावों (सराइयों) या हाँड़ियोंके मुख इसीसे बन्द कर देते हैं। इसको 'साधारण मुद्रा' कहते हैं।

नोट—हर प्रकारकी मुद्रा देकर, ऊपरसे चार-पाँच कपरौटी अवश्य कर देनी चाहियें; यानी ऊपरसे कपड़ेको मिट्टीमें लहसकर ४-५ तह चढ़ा देनी चाहियें। इससे फटनेका भय नहीं रहता।

सेंधानोन, चिकनी मिट्टी और आरने कण्डोंकी राख—इनको बराबर-बराबर लेकर पानी मिलाकर एकदिल कर लेना चाहिये। इससे भी अनेक स्थानोंमें मुद्राका काम लेते हैं।

कज्जली तैयार करना

शोधी हुई गन्धक और शोधे हुए पारेको खरलमें डालकर खूब आहिस्ता-आहिस्ता खरल करो, जिससे पारा उछलने न पावे। जब

घुटते-घुटते पारा और गन्धक एक हो जाय, रङ्गत काजलकी तरह स्याह हो जाय, पारेकी चमक बिल्कुल जाती रहे; तब समझ लो कि कज्जली तैयार हो गई।

नोट—किसी औषधिमें अगर कज्जली बनानेकी बात नहीं लिखी हो, किन्तु पारा और गन्धक अलग-अलग लिखे हों, तो वहाँ भी उपरोक्त रीतिसे कज्जली बनाकर और पीछे दवाएँ मिलाकर औषधि तैयार करनी चाहिये।

कपरौटी

चिकनी मिट्टीमें ल्हेस-ल्हेसकर कपड़ेको हाँड़ी, शीशी या सराईपर चढ़ाते हैं, इसीको कपरमिट्टी या कपरौटी कहते हैं।

सम्पुट

दो मिट्टीकी सराइयों या सकोरोंके बीचमें दवा रखकर, पीछे मुद्रा से बन्द कर देते हैं। इसीको "शराव-सम्पुट" कहते हैं। शराव और सकोरा एक ही चीज के दो नाम हैं। इसी तरह दो हाँड़ियोंके बीचमें पकाई जानेवाली दवा रखकर उनके मुँह, मिलाकर मुद्रासे बन्द कर देते हैं। इसको "हण्डिका-सम्पुट" कहते हैं।

भूधरयन्त्र

एक गड्ढा खोद लो। उसमें एक हाँड़ी ऊपरको मुँह किये रखकर, उसमें पानी भर दो। दूसरी हाँड़ीके भीतर दवाको ल्हेस दो और उसे औंधी करके गड्ढेमें रखी हुई हाँड़ीपर औंधी इस तरह रक्खो कि, दोन के मुँह मिल जायँ। पीछे दोनों हाँड़ियोंकी दर्जों या सन्धियोंको मुल्तानी मिट्टी या और किसी चीजसे ऐसा बन्द कर दो कि, दर्ज न उखड़ने पावे और धुआँ प्रभृति न निकलने पावें। पीछे ऊपरवाली हाँड़ीके ऊपर आगके अङ्गार रख दो। इस तरह तपत लगनेसे ऊपरवाली हाँड़ीकी ल्हिसी हुई दवा नीचेवाली जल-भरी हाँड़ीमें गिर जायगी। पारेका अध:पतन या नीचे गिरानेकी क्रिया इसी तरह की जाती है।

विद्याधर-यन्त्र

एक हाँड़ीमें पारा रखकर, उसे ऊपर मुख किये रक्खो। उस हाँड़ी के ऊपर दूसरी हाँड़ी भी उसी तरह ऊपर मुँह करके रखो। ऊपरकी हाँड़ीमें पानी भर दो। दोनों हाँड़ियोंकी दर्जों या सन्धि-स्थलोंको मिट्टी से या किसी उत्तम मुद्रासे बन्द कर दो। पीछे दोनों हाँड़ियोंको चूल्हे पर चढ़ा दो। जब ऊपरवाली हाँड़ीका पानी गरम हो जाय, उसे निकालकर शीतल जल भर दो। इस तरह करनेसे नीचेवाली हाँड़ीमें रखा हुआ पारा ऊपरवाली हाँड़ीके पेंदेमें जा लगेगा। वही पारा काम में लाने योग्य होता है। जब पाक हो जाय, हाँड़ी ठण्डी हो जायँ, तब धीरेसे हाँड़ियोंको चूल्हेसे उतार और खोलकर पेंदीका पारा ले लेना चाहिये। यही पारेकी उर्द्धपातन या ऊपर गिरानेकी क्रिया है। इस यन्त्रको "विद्याधर-यन्त्र" कहते हैं।

नोट— पारेका उर्द्धपातन डमरूयन्त्रसे भी होता है। विद्याधर और डमरू-यन्त्र प्रायः एक ही काममें आते हैं।

डमरू-यन्त्र

दो मजबूत हाँड़ियाँ ऐसी लाओ, जो समान हों और जिनके मुँह मिल जायँ। दोनों हाँड़ियोंके मुखोंको चिकने पत्थरपर पानी डालकर धीरे-धीरे घिस लो। पीछे दोनों हाँड़ियोंपर ५ कपरौटी करके सुखा लो; इसमे हाँड़ियोंके फटनेका डर न रहेगा। पीछे एक हाँड़ीमें पारा या सिंगरफ प्रभृति पदार्थ रखकर, दूसरी खाली हाँड़ी उसके ऊपर इस तरह औंधी रखो, जिससे मुँह मिल जायँ। पीछे दोनों हाँड़ियोंके मुखोंको मजबूत मुद्रासे बन्द कर दो, जिससे पारा प्रभृति निकलकर न जा सकें। इसके बाद दोनोंके किनारे तारोंसे कसकर ऊपरसे कपड़े और मुल्तानी मिट्टीकी ४-५ तह लगा दो और पीछे धूपमें सुखा लो और सूख जानेपर आगपर चढ़ा दो। ऊपरवालीपर शीतल जलकी धारा इस तरह देते रहो कि, ऊपरकी हाँड़ी गरम न होने पावे और पानी भी

चूल्हेमें न जाने पावे, बाहरकी ओर बहकर गिरता रहे। अगर सुखसे पार पड़ना चाहो, तो ऊपरकी औंधी हाँड़ीपर रेजीके कपड़ोंकी २०-२५ तह करके और उसे पानीमें तर करके रख दो। जब कपड़ा आगकी तपतसे सूख जाय या सूखनेपर आवे, तभी उसे धीरे-धीरे जल-धारासे तर करते रहो। अगर पारेको शीतल जगह न मिलेगी, तो वह इधर-उधर भागा-भागा फिरेगा। शीतल जगह मिलनेसे वह वहीं आकर लगता रहेगा और उसमें गुण भी उत्तम रहेगा। इस तरह पाँच घण्टों तक आग लगाने और कपड़ा तर करते रहनेसे पारा उड़कर ऊपरकी हाँड़ीमें लग जायगा। यही "डमरू-यन्त्र" है।

नोट—चूल्हेमें आग इस तरह लगानी चाहिये कि हाँड़ियोंके जोड़ों पर की हुई मुद्रा और कपरौटीको जला न दे, जिससे राह पाकर पारा बाहर निकल जाय। इस ख़तरेसे बचनेके लिये भट्टीपर एक गोल छेदवाला ऐसा तवा रखना चाहिये, जिससे बँधी आग लगे और उसकी लपट कपरौटी और हाँड़ियोंकी मुखमुद्रा तक न पहुँच सके। यह बात चित्र देखनेसे अच्छी तरह समझमें आ जायगी। शिंगरफसे पारा निकालनेके लिये अथवा पारेका उर्द्धपातन करनेके लिए विद्याधर-यन्त्रकी अपेक्षा डमरूयन्त्रसे सुभीतेसे काम होता है। और बातोंमें होशियारीसे काम लेनेके सिवा, आग लगानेके लिए भट्टी और चूल्हेका काम होशियारीसे करनेसे सब काम सुखसे हो जाते हैं। जिन लोगोंको पारेके शोधनमें उर्द्धपातन और अधःपातन और तिर्य्यकपातन प्रभृति क्रियाओंमें झञ्झट जान पड़े, उन्हें शिंगरफ़से पारा निकाल लेना चाहिये। शिंगरफसे निकाले हुए पारेको और शुद्ध करनेकी ज़रूरत नहीं रहती। वह सब कामोंमें लिया जा सकता है। हिंगलूके पारेको ३ घण्टे तक नीबूके रसमें घोंटकर धो लो और फिर मोटे कपड़ेमें होकर निकाल लो। अब इसे सब कामोंमें ले सकते हो।

दोला-यन्त्र

जिस चीज़को दोलायन्त्रसे पकाना हो, उसे पहले भोजपत्रमें बाँधो; इसके बाद कपड़ेकी चार तह करके उसमें भोजपत्रमें बँधी चीज़ रख-कर, उसकी पोटली-सी बनाकर इस पोटलीको महीन डोरीसे बाँध देना चाहिये। पीछे एक हाँड़ीमें निर्दिष्ट पतले पदार्थ जैसे—गोमूत्र, काँजी प्रभृति अथवा सूखे पदार्थ जैसे नमक,—इनको भर देना चाहिये।

हाँड़ीमें जो चीज़ भरी जाय वह आधी हाँड़ीमें भरी जानी चाहिये। आधी हाँड़ी खाली रहनी चाहिये। पीछे हाँड़ीके मुँहपर एक लम्बी लकड़ी आड़ी रख देनी चाहिये और उसमें उस पोटलीकी रस्सीका एक सिरा बाँधकर पोटली हाँड़ीके बीचमें झूलेकी तरह लटका देनी चाहिये। पीछे हाँड़ीको चूल्हेपर रखकर, मन्दी-मन्दी समान आग लगानी चाहिये; तेज़ आगसे भीतरके पतले पदार्थ गोमूत्र वग़ैरहके उफनकर बाहर आनेका और निकलकर बह जानेका खटका रहता है। पोटली हाँड़ीमें भरे गीले या सूखे पदार्थोंसे अलग न रहे, इसका भी खयाल रखना चाहिये; क्योंकि पोटलीके उन पदार्थोंसे अलग यानी ऊँची रहनेसे पूरी आग नहीं लगेगी और उन पदार्थोंके गुण पोटलीकी दवामें न आवेंगे और तलीमें जा लगनेसे पारा उड़ जायगा। इसे "दोलायन्त्र" कहते हैं; क्योंकि इसमें पोटली दोले या झूलेकी तरह झूलती रहती है। अनेक पदार्थोंको स्विन्न या सिद्ध करनेके काममें यह यन्त्र लाया जाता है। मैनसिल, कौड़ी तथा जमालगोटेके बीज वग़ैरह इसी यन्त्रसे शोधे जाते हैं। इस दोलायन्त्रको "स्वेदन-यन्त्र" भी कहते हैं।

बालुका-यन्त्र

एक काले काँचकी मोटी बोतल लाओ। उसपर तीन बार कपड़-मिट्टी करो और सुखा लो। पीछे उसमें कज्जली प्रभृति भर दो। इसके बाद एक ऐसी हाँड़ी लो, जो बोतलके गले तक ऊँची हो। उसमें बोतल को रख दो और उसके चारों ओर बालू भर दो। बालू बोतलके गले तक रहनी चाहिये। बोतल जमानेसे पहले, हाँड़ीके पेंदेमें छोटी अँगुली घुसे इतना बड़ा छेद कर देना चाहिये। उस छेदपर बोतल इस तरह रखनी चाहिये, जिससे बालू न निकल सके। बहुतसे लोग छेदसे बालू न निकलने देनेके लिये अभ्रकके पत्र छेदपर जमाकर पीछे बोतल रखते हैं। यह तरकीब सबसे अच्छी है। इससे बोतलको ठीक आग लगती

है। इस तरह हाँड़ीमें बोतल जमाकर और गले तक बालू भरकर, हाँड़ीको चूल्हे पर चढ़ा देते हैं। इस यन्त्रको "बालुका-यन्त्र" कहते हैं। इस यन्त्रकी सहायतासे "रस सिन्दूर", "मकरध्वज" और "चन्द्रोदय" आदि रस तैयार किये जाते हैं।

पाताल-यन्त्र

एक हाथ गहरा गड्ढा खोदो। उसमें एक हाँड़ी जमाओ। हाँड़ीका मुख ऊपरकी ओर रक्खो। पीछे एक और हाँड़ी लो। उसीमें जिस या जिन दवाओंका तेल वग़ैरह निकालना हो, भर दो और उसके मुखपर एक ऐसा ढकना लगा दो, जिसके बीचमें एक छेद हो। छेदवाले ढकने और हाँड़ीकी सन्धिको बन्द कर दो। पीछे इस ढकने समेत हाँड़ीका मुँह गड्ढेमें रखी हुई हाँड़ीसे मिलाकर, मिट्टीसे या और किसी मुद्रासे जो उचित जँचे बन्द कर दो। पीछे मिट्टी या बालूसे गड्ढेको भर दो और ऊपरवाली हाँड़ीपर आग जलाओ। आगकी तपतसे ऊपरवाली हाँड़ीमें रक्खी हुई दवा नीचेवाली हाँड़ीमें, उस छेदमें होकर, तप-तपकर गिर जायगी। जब आग ठण्डी हो जाय तब गड्ढेसे हाँड़ीको निकालकर गिरी हुई दवाको निकाल लो। इसीको "पाताल-यन्त्र" कहते हैं।

बालुका-गर्भ पाताल यन्त्र

बाज़ारसे आतिशी शीशी ले आओ। इन शीशियोंमें यह खूबी है कि, यह तेज़ आगसे भी नहीं तड़कतीं। जिन चीज़ोंका तेल निकालना हो, उन्हें कूट-पीसकर आतिशी शीशीमें भर दो। पीछे लोहेके बारीक तारोंको हाथसे दबा-दबाकर एक गोली-सी बनालो। तारोंकी गोली ऐसी होनी चाहिये, जो शीशीके मुँहमें कागकी तरह घुस सके। उसमें इतनी साँस भी रहनी चाहिये, जिसमें होकर स्वयं शीशीकी दवा तो न निकल सके, किन्तु तेल टपक सके। शीशीमें दवा भरकर और तारोंकी गोली

मुहमें रखकर, शीशीपर तीन-चार कपरौटी करके शीशीको सुखा लेना चाहिये।

कुम्हारके यहाँसे एक डेढ़ हाथ चौड़ी और खासी गहरी नाँद ले आनी चाहिये। उसके पेंदेमें कीलसे धीरे-धीरे एक ऐसा छेद करना चाहिये,जिसमें दवा भरी हुइ आतिशी शीशीका मुंह मात्र घुस जाय और साँस न रहे। मतलब यह है कि इस छेदमें शीशीका मुंह ठीक बैठे।

उस शीशी समेत नाँद को एक अँगरेजी चूल्हेपर या मामूली ईंटोंके चूल्हेपर रख दो। शीशीके मुँहके नीचे एक चीनी या काँचका प्याला रख दो अथवा नाँदवाली शीशीके मुँहसे मुँह मिलाकर दूसरी शीशी चूल्हेमें रख दो।

ऊपरकी तरफ नाँदमें, शीशीके पेंदे तक, बालू भर दो और उस बालूपर आरने कण्डे जला दो। आगकी तपतसे तेल टपक-टपककर नीचेके रक्खे हुए बर्तनमें गिर जायगा। आग बहुत तेज़ न लगानी चाहिये। बहुत तेज़ आगसे तेलके जल जानेका भय है। हमने इस विधिसे नामर्दीके तिले प्रभृति अनेक बार निकाले हैं।

"रसायनसार" के लेखक स्वर्गीय पण्डितवर श्यामसुन्दर आचार्य वैश्य अपनी पुस्तकमें लिखते हैं—शीशीको औंधी करके उसका मुख नाँदके छेदमें घुसा दो और शीशीको इतनी बड़ी नलीसे ढक दो, जिससे शीशी और नलीके बीचमें चारों ओर तीन अंगुल जगह रहे। इस शीशी और नलीके बीचकी खाली जगहमें दाब-दाबकर बालू भर दो; जिससे शीशी बालूके अन्दर ढँकी रहे। नली इतनी ऊँची होनी चाहिए, जो शीशीसे चार अंगुल ऊँची उठी रहे। इस यन्त्रको बड़े लोहेके चूल्हेपर रक्खो या तीन-तीन नम्बरी ईंटोंको तीन तरफ रखकर उनपर रख दो। नाँद और शीशीपर ढकी हुई नलीके बीचमें जो जगह हो, उसमें कण्डे रखकर आग लगा दो। यन्त्रके नीचे, शीशीके मुँहके ठीक सामने काँच, पत्थर या चीनी प्रभृतिका प्याला रख दो। इस तरह करनेसे तेल टपक जायगा। इस यन्त्रसे तेल आसानीसे निकल

आता है; शीशी वग़ैरह फूटनेका भी भय नहीं रहता। धूआँ कम हो जानेपर, ऊपरसे एक छेदवाली लोहेकी नाँद ढक देनेकी बात भी वे लिखते हैं। उन्होंने इस यन्त्रकी बड़ी तारीफकी है; इसीलिये हमने इसे यहाँ लिख दिया है।

तेल निकालनेकी सहज तरकीब

एक चीनी या लोहे प्रभृतिके कटोरेके मुँहपर पतला झन्ना-सा कपड़ा मज़बूतीसे बाँध दो। उस कपड़ेपर लौंग प्रभृतिको, जिनका तेल निकालना हो, कूटकर फैला दो। कटोरेके किनारोंपर सफेद अभ्रकके टुकड़े जमा दो और उनपर एक थाली रख दो। उस थालीमें लकड़ीके कोयले सिलगाकर रख दो। अगर कोयले बुझने लगें, तो पंखा करते रहो। इस तरह करनेसे, एक घण्टेमें तेल निकलकर कपड़ेमें होकर कटोरेमें जा गिरेगा। एक घण्टे बाद धीरेसे थालोको उठा लो और पीछे होशियारीसे अभ्रकके टुकड़ों और कपड़ेको हटा लो।

इस तरह बहुत जल्दी तेल निकल आता है; पर आधा माल हाथ आता है और आधा रह जाता है। इस उपायसे उन्हीं चीज़ोंका तेल निकलता है, जिनमें तेलका अंश अधिक होता है। जैसे लौंग, बादाम वग़ैरह।

तिर्य्यकपातन-यन्त्र

दो लम्बी-लम्बी हाँड़ी लाकर, एकमें पारा और एकमें पानी भरकर दोनों हाँड़ियोंका मुँह टेढ़ा करके मिला दो। एक हाँड़ीको चूल्हेपर रखो और दूसरीको चौकीपर रखो, ताकि दोनोंकी ऊँचाई समान हो जाय। पीछे दोनों हांड़ियोंमें ऐसा रास्ता रक्खो, कि एककी चीज़ दूसरीमें जा सके और बाहरकी तरफसे ऐसा बन्द कर दो, कि साँस ज़रा भी न रहे। पारेवाली हाँड़ीके नीचे आग लगाओ। आग लगते ही पारा उड़-उड़कर पानीवाली हाँड़ीमें जाने लगेगा। इसीको "तिर्य्यक-पातन-यन्त्र" कहते हैं।

एक घड़ेमें पारा और दूसरे घड़ेमें पानी भरकर, दोनों घड़ोंपर ढकने रखकर, उनकी दराजोंको सख्त मुद्राओंसे बन्द कर दो और ऊपरसे खूब कपड़मिट्टी कर दो। पीछे दोनों घड़ोंके गलेमें दो छेद करके, एक बाँसकी नलीके दोनों सिरे दोनों घड़ोंके गलेके छेदोंमें घुसा दो। सन्धियों या दराजोंमें मिट्टी प्रभृति लगाकर, बन्दकर कर दो। पीछे पारेवाली हाँड़ीके नीचे आग जलाओ; बाँसकी नलीकी राहसे पारा उड़-उड़कर पानीके घड़ेमें चला जायगा।

नोट—पारा उर्द्धपातन, अधःपातन और तिर्य्यकपातन—इन तीनों तरहसे पातन करनेसे शुद्ध होता है। पारेका उर्द्धपातन विद्याधर-यन्त्र या डमरू-यन्त्रसे होता है, अधःपातन भूधरयन्त्रसे और तिर्य्यकपातन तिर्य्यकपातन-यन्त्रसे होता है। दोलायन्त्रसे पारा स्वेदित होता है।

बकयन्त्र

इस बकयन्त्रको नलीयन्त्र या भभका कहते हैं। भभकेके नामसे साधारण लोग भी इसे जानते हैं। जिस चीज़का अर्क़ निकालना होता है, इसीसे निकाला जाता है। यह यन्त्र मिट्टीका भी हो सकता है, किन्तु टूटनेके भयसे लोग इसको आजकल ताम्बेका ही बनवा लेते हैं। शहरोंमें ये यन्त्र कसेरोंकी दूकानोंपर बने बनाये भी मिलते हैं।

जितने बड़े यन्त्रकी ज़रूरत हो, उतना बड़ा बनवाकर भीतर क़लई करा लो। इसके ऊपरका ढकना ऐसा होता है, जिसमें दो औंधे-सीधे कटोरे जड़े रहते हैं। इन दोनोंके मेलसे ही एक ढकना बनता है। ढकने के नीचेके हिस्सेमें और ऊपरके हिस्सेमें आमने-सामने दो नलियाँ हाथ-हाथ-भरकी या कम-जियादा लम्बी लगी रहती हैं। एक नली तो नीचे के कटोरेमें, यानी ढकनेके नीचेके हिस्सेमें लगी रहती है। इसकी और भभकेके दवावाले वर्तनकी राह एक होती है। आग लगनेसे जो भाफ के अबख़रे उठते हैं, वह इसी नलीकी राहसे-नलीसे लगी हुई बोतल या बर्तनमें जाते हैं। दूसरी नली जो ढकनके ऊपरी हिस्सेमें होती है, उसका दवावाले वर्तनसे कोई सम्बन्ध नहीं होता। वह एक दूसरे खाली

बर्तनसे मिली रहती है ऊपरके कटोरेमें शीतल जल भरा जाता है। जब वह जल गरम हो जाता है, तब इस नलीके मुँहमें लगा हुआ कपड़ा हटा लेते हैं और गरम पानी खाली टबमें जा गिरता है। इसके बाद नलीकी मोरीकी राहमें फिर कपड़ा ठूसकर शीतल जल भर देते हैं। इस तरह जब-जब ऊपरके ढकनेका भरा हुआ पानी गरम हो जाता है, उसी नलीको खोलकर निकाल दिया जाता है। इस शीतल जलकी वजहसे ही भाफ पानीके रूपमें हो-होकर, अपनी नली द्वारा, बोतल या बर्तनमें जा-जाकर गिरती है। अगर ऊपरके ढकनेका गरम जल न बदला जाय तो अर्क़ न निकले।

अगर भभकेमें ३२ सेर पानी समाता हो, तो उसका चौथाई—आठ सेर जल भभकेमें भरना चाहिये और जलसे चौथाई दो सेर दवा डालनी चाहिये। पीछे ढकना लगाकर उसे मुल्तानी मिट्टीसे बन्द कर देना चाहिये। आग लगनेसे भभकेसे भाफ उड़कर ऊँची जायगी और वह ढकनके शीतल जलसे सर्दी पाकर, पानीके रूपमें अपनी नलीमें होकर, नलीसे लगे हुए बर्तनमें गिरती जायगी। आग समान और मन्दी लगानी चाहिये तथा ढकनेका गरम जल बारम्बार निकालकर उसकी जगह शीतल जल भर देना चाहिये।

जिस दवाका अर्क़ बनाना हो, उसे २४ घण्टे तक तिगुने या चौगुने जलमें क़लईदार या चीनीके बर्तनमें भिगो रखना चाहिये। पीछे उसी पानी और दवाको भभकेमें डालकर अर्क़ खींच लेना चाहिये। जितनी दवा हो उतना ही अर्क़ निकाला जाय, तो वह अर्क़ अव्वल दर्जेका होता है। सुदर्शन अर्क़ या गुडूच्यादि अर्क़ प्रभृति (देखो पृष्ठ १४०-१४१) इसी तरह निकालने चाहियें। अर्क़ निकालनेसे काढ़ा औटाने वगैरहकी दिक़त नहीं उठानी पड़ती और अर्क़का जायका भी उतना बुरा नहीं होता।

काँजी बनानेकी विधि

एक सेर राई, दो सेर सेंधानमक, कुलथीका काढ़ा चार सेर*, दो सेर चाँवलोंका पकाया हुआ भात और माँड़, आधसेर पिसी हल्दी, आधसेर बाँसके पत्ते, पावभर सोंठ, पावभर सफेद जीरा और दस तोले हींग,—इन सबमेंसे कूटने लायक़ चीजोंको कूटकर और शेषको यों ही एक मिट्टीके बड़े घड़ेमें भर दो। इन चीज़ोंको घड़ेमें भरनेसे पहले, घड़को सरसोंके तेलसे पोत दो। पीछे इस घड़ेमें बीस सेर पानी भर दो। यदि पानी कम जाने पड़े, तो और मिला दो। शेषमें सबको चला दो। पीछे आधसेर उड़दकी पिट्ठीके बड़े, सरसोंके तेलमें पकाकर घड़ेमें डाल दो और ढक दो। इस तरह जाड़ेमें सात दिनमें और गरमीमें चार दिनमें ही काँजी तैयार हो जाती है। जब किसी धातुके शोधनेके लिये काँजी लेनी हो, कपड़ेमें छानकर ले लो।

हिंगलूसे पारा निकालनेकी विधि

एक सेर हिङ्गलूको, नीबूके रसमें, एक पहर तक खरल करके धूपमें सुखा लो। अगर धूप न हो, तो भट्टीके पास रखकर सुखा लो। पीछे उसे एक हांड़ीमें रक्खो। उस हाँड़ीके ऊपर दूसरी हाँड़ी औंधी रक्खो। दोनों हाँड़ियोंके मुँह पहले पानीसे घिसकर समान कर लो; ताकि सन्धियाँ एकदम मिल जायँ। साथ ही दोनों हाँड़ियोंपर तीन-तीन कपरौटी करके धूपमें सुखा लो। हाँड़ियोंके मुंह मिलाकर, उनपर मुल्तानी मिट्टी या चिकनी मिट्टी और बालूसे मुद्रा दे दो। इसके बाद तीन-चार कपरौटी करके सुखा लो। पीछे चूल्हेपर रखकर आग लगाओ। ऊपरवाली हाँड़ीपर रेजीका कपड़ा २०-२५ तह करके और पानीमें तर करके रख दो। जब-जब कपड़ा सूखे, उसे शीतल जलसे तर करते रहो। इस तरह पहले पृष्ठ ५०८ में लिखी हुई डमरू-यन्त्रकी विधिसे काम करनेसे, हिंगलू

* दो सेर कुलथीको सोलह सेर जलमें पकाओ। जब चार सेर जल रह जाय उतार लो और वस्त्रमें छानकर पानीको घड़ेमें डाल दो।

का पारा ऊपरवाली हाँड़ीके पेंदेमें लग जायगा। उसे आग शीतल होने पर, धीरेसे हाँड़ी उतारकर निकाल लो। जिनसे पारेके शोधनेकी खट-खट न हो, वे इसी तरह हिंगलूसे पारा निकाल लें। हिंगलूका पारा अत्यन्त शुद्ध होता है। उसे फिर शोधनेकी जरूरत नहीं। वह इसी तरह काममें लाया जा सकता है। सिर्फ इतना काम जरूर कर लो। पारेको खरलमें डाल, ऊपरसे नीबुओंका रस डाल ६ घण्टे खरल करो। फिर जलसे खूब धोकर जल निकाल दो और पारेको सुखा लो। फिर उसे चौतहे कपड़ेमें होकर निकाल लो।

अनेक द्रव्योंके शोधनेकी विधि

सुहागा शोधना

आगपर रखकर खील कर लेनेसे ही सुहागा शुद्ध हो जाता है।

भिलावा शोधना

भिलावे वही लेने चाहियें, जो पानीमें डूब जायँ। भिलावे ईंटके चूर्णके साथ घिसनेसे शुद्ध हो जाते हैं।

धतूरेके बीज शोधना

धतूरेके बीजोंको कूटकर, १२ घण्टों तक गोमूत्रमें भिगो रखो। इस तरह वे शुद्ध हो जायँगे।

अफीम शोधना

अफीम अदरखके रसकी बारह भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है।

कुचला शोधना

घीमें भून लेनेसे कुचला शुद्ध हो जाता है।

हींग शोधना

लोहेकी कड़ाहीमें थोड़ा-सा घी डालकर गरम करो, पीछे उसमें हींगको डालकर चलाते रहो; जब हींगका रङ्ग लाल हो जाय, समझ लो कि हींग शुद्ध हो गई।

नौसादर शोधना

एक हाँड़ीमें चूनेका पानी भरकर, उसपर एक आड़ी लकड़ी रख, एक पोटलीमें नौसादर बाँधकर, उसी लकड़ीसे हाँड़ीमें लटका दो और दोलायन्त्रकी विधिसे पकाओ। नौसादर शुद्ध हो जायगी।

खपरिया शोधना

एक हाँड़ीमें गोमूत्र भरकर, उसपर आड़ी लकड़ी रखकर उस लकड़ीसे खपरियाकी पोटली हाँड़ीके भीतर झुलाकर, दोलायन्त्रकी विधिसे सात दिन तक औटानी चाहिये। गोमूत्र रोज़ बदल देना चाहिये। इस तरह करनेसे खपरिया शुद्ध हो जाता है। "स्वर्ण वसन्त-मालती" में इसकी जरूरत पड़ती है।

हिंगलू शोधना

हिङ्गलूका चूर्ण नीबूके रसमें और भेड़के दूधमें सात-सात भावना देनेसे शुद्ध हो जाता है।

गेरूमिट्टी शोधना

गायके दूधमें घिसनेसे या गायके घीमें भूननेसे गेरू शुद्ध हो जाता है।

हरताल शोधनेकी विधि

पहले सफेद कुम्हड़ेके रसमें, फिर चूनेके पानीमें और इसके बाद तेलमें एक-एक बार हरतालको, दोलायन्त्रकी विधिसे औटाओ; तब हरताल शुद्ध हो जायगी।

वंशपत्र हरताल सात दिन तक चूनेके पानीकी भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है।

या हरतालका चूर्ण करके, एक पहर तक दोलायन्त्रसे काँजीमें पचाओ; इसके बाद एक पहर तक पेठेके रसमें पकाओ, इसके बाद एक पहर तक तिलीके तेलमें पचाओ और शेषमें एक पहर तक त्रिफले के जलमें पचाओ। इस तरह चार पहर तक पचानेसे हरताल शुद्ध होती है।

गोदन्ती हरताल शोधना

गोदन्ती हरताल गोमूत्रमें दोपहर तक पकानेसे शुद्ध हो जाती है।

फिटकिरी शोधना

तवेपर या आगमें फुला देनेसे फिटकिरी शुद्ध हो जाती है।

जमालगोटा शोधना

जलालगोटेके बीजोंको ३ दिन तक भैंसके गोबरमें दबा दो। ३ दिनके बाद कड़ाहीमें डालकर, ऊपरसे गोमूत्र भरकर दोपहर तक पकाओ। इसके बाद उनको धूपमें सुखाकर, हाथसे मलकर, छिलके उतार दो। पीछे उनकी मींगियोंको गायके दूधमें चार घण्टे तक पकाओ। इसके बाद उनको चीरकर, उनकी जीभी निकाल दो। इसके भी बाद उन्हें नीबूके रसमें घोटकर, कोरी नाँदपर लीप दो। उनका तेल नाँद सोख ले और वे धूल जैसे हो जायँ, तब नाँदसे उतारकर, फिर नीबूके रसमें घोटो और दूसरी कोरी नाँदपर लीप दो। फिर उस धूल-सीको नादसे उतारकर, फिर नीबूके रसमें घोटो और तीसरी बार तीसरी नाँदपर लीप दो। इस बार सब चिकनाई निकल जायगी। इससे जो दवा बनाओगे, परमोत्तम बनेगी।

नोट—बीजोंको चीरकर, उनकी जीभ अवश्य निकाल देनी चाहिये, क्योंकि उनमें बहुत ज़हर होता है।

जमालगोटेके बीज शोधनेकी दूसरी विधि

जमालगोटेके बीज शोधने हों, तो बीजोंको चीरकर उनके बीचकी पत्ती-सी निकाल डालो। पीछे एक हाँड़ीमें दूध भरकर उसपर आड़ी लकड़ी रखकर, उसे आगपर चढ़ा दो। बीजोंको पोटलीमें बाँधकर, डोरी लगाकर, एक सिरा डोरीका हाँड़ीपर आड़ी रक्खी लकड़ीसे बाँध दो। पोटलीको हाँड़ीके बीचमें लटकने दो और आग लगाते रहो। इस तरह दोलायन्त्रकी विधिसे जमालगोटेके बीज शुद्ध हो जायँगे।

गन्धक शोधना

एक मिट्टीके बर्तनपर बहुत महीन कपड़ा बाँध दो। पहले उसमें दूध या दूध-पानी भर दो; पीछे कलछीमें घी भरकर गरम करो और उस घीके बराबर गन्धकका पिसा चूर्ण कलछीमें डालकर आगपर तपाओ। जब गन्धक पानी-सी हो जाय, कलछीको दूधके बर्तनमें उलट दो। भीतर साफ़ गन्धकके डले हो जायँगे।

सींगिया और बच्छनाभ विष शोधना

वत्सनाभ विषके पत्ते सम्हालूके पत्तों जैसे होते हैं। इसका आकार बछड़ेकी नाभि-जैसा होता है। इसके पास और वृक्ष नहीं लगते। अगर इसे शोधना हो, तो इसे ३ दिन तक गो-मूत्रमें रक्खो। रोज़-रोज़ मूत्र बदलते रहो। ३ दिन बाद गो-मूत्रसे निकालकर, लाल राईके तेलसे भीगे हुए कपड़ेमें रक्खो। इस तरह यह विष शुद्ध हो जाता है। शुद्ध करनेसे इसका ज़ोर कम हो जाता है। दवाओंमें इसे शोधकर ही डालना उचित है। यह विष प्राण-नाशक है, पर तरकीबके साथ खाया जाय, तो जीवन-दाता, रसायन, योगवाही, वात और कफको जीतनेवाला तथा सन्निपात-नाशक है।

सींगिया विष और वच्छनाभ विषके शोधनेकी एक ही विधि है।

मैनसिल शोधना

मैनसिलको शोधना हो, तो एक घड़ेमें बकरीका दूध भरो और उसपर आड़ी लकड़ी रक्खो। मैनसिलको पोटलीमें बाँधकर, लकड़ीमें पोटलीको लटका दो। पोटली दूधमें लटकती रहे। नीचे चूल्हेमें आग जलाओ। उसपर हाँड़ी रख दो। ३ दिन इस तरह आग लगाते रहो; चौथे दिन मैनसिलको निकाल खरलमें डालकर, ऊपरसे बकरीका पित्ता इतना भरो कि डूब जाय; फिर खरल करो। जब सूख जाय, फिर पित्तेमें डुबा दो और खरल करो। इस तरह ७ बार करो, तब मैनसिल शुद्ध होगा।

कौड़ी प्रभृति शोधना

कौड़ीको शोधना हो तो हाँड़ीमे काँजी भर, मुखपर लकड़ी रख, उससे कौड़ीकी पोटली लटका दो। एक पहर तक हाँड़ीके नीचे आग दो; कौड़ी शुद्ध हो जायगी। पीछे उसे मिट्टीके बर्तनमें रखकर आगमें जलाओ, भस्म हो जायगी। कौड़ी, मुर्दासंग, गेरू, शङ्ख, कशीस, सुहागा और काला सुर्मा, नीबूके रसमें, उसी तरह हाँड़ीमें पोटली लटकाकर दोलायन्त्रकी विधिसे पकानेसे भी शुद्ध होते हैं।

शंख आदिका शोधना

पाँच सेर गोमूत्र, एक सेर सेंधानोन और आधपाव नीबूका रस— इनको एक हाँड़ीमें भरकर, उसमें एक सेर शंख या सीप आदि रखकर, दो पहर तक तेज़ आग दो, पीछे उनको निकालकर धो लो। यह दूसरी विधि है।

नोट—इनकी भस्म करनी हो, तो इन्हें मिट्टीके बासनमें रखकर आगसे जला लो; बस यही भस्म है। शंख चाँदीके समान सफेद और भारी लेना चाहिये। सीप मोतीकी लेनी चाहिये, कौड़ी पीले रंगकी लेनी चाहिये, जिसमें पीठपर गाँठ हो तथा नीचे ऊपर बारह-बारह दाँत हों और तोलमें ६ माशे हो।

समन्दर-फेन शोधना

समन्दरफेन कागज़ी नीबूके रसमें पीसनेसे शुद्ध हो जाता है।

पारा शोधना

राई और लहसनको खूब पीसकर सुनारकी-सी मूस बना लो। उस मूसमें जितना पारा शोधना हो भरकर, उसके ऊपर भोजपत्र लपेटकर और ऊपरसे तीन तह कपड़ेकी लपेटकर, पोटली बाँध लो। पीछे एक हाँड़ीमें काँजी भरकर, उस हाँड़ीके मुँह पर लकड़ी रखकर, पोटलीको डोरीसे बाँधकर, उसका एक छोर उस लकड़ीसे बाँध दो और पोटलीको हाँड़ीके भीतर अधबीचमें लटका दो। चूल्हेमें आग जलाकर उसपर हाँड़ी रख दो। तीन दिन तक चूल्हेमें आग लगाते रहो; इस

तरह करनेसे पारा स्वेदित होगा। इस यन्त्रको "दोलायन्त्र" कहते हैं।

तीन दिन बाद पारेको मूसमेंसे निकालकर खरलमें डालकर, एक दिन घीग्वारके रसमें खरल करो, इसी तरह एक दिन चीतेके रसमें, एक दिन काँगनीके रसमें और शेषमें एक दिन त्रिफलेके काढ़ेमें खरल करो। खरल किये पारेको काँजीसे ऐसा धो डालो कि, उसमें पहली दवाओंका अंश न रहे।

जब धोनेसे पारा साफ हो जाय, तब पारेसे आधा सेंधानोन लेकर, दोनोंको खरलमें डालकर, नीबूका रस दे-देकर एक दिन-भर खरल करो। इसके बाद राई, लहसन और नौसादर—इन तीनोंको पारेके बराबर लेकर, इनके साथ पारा मिलाकर, खरलमें डालकर, धानके तुषोंका काढ़ा डाल-डालकर सबको खरल करो। जब खरल करते करते सूख जाय, तब गोल-गोल टिकियाँ बना लो। उन टिकियोंके चारों ओर हींगका लेप कर दो।

इन टिकियोंको एक हाँड़ीमें रखकर, उसमें नमक भर दो। पीछे इस हाँड़ीके मुँहपर एक दूसरी ज़रा बड़ी हाँड़ी उसी तरह ऊपर मुंह करके रक्खो। नीचेकी और ऊपरकी हाँड़ीकी सन्धि कपड़-मिट्टीसे ऐसी बन्द कर दो कि, साँस न रहे। पीछे धूपमें सुखा लो। चूल्हेमें आग जला, उस पर दोनों हाँड़ी इस तरह रख दो कि, नमकवाली हाँड़ीका पेंदा आगपर रहे। ऊपरवाली हाँड़ीमें पानी भर दो। जब पानी गरम हो जाय, पानी बदल दो। अगर पानी न बदलोगे, तो आपकी मिहनत बर्बाद जायगी। इस तरह नीचे आग लगाते रहो; और ऊपरकी हाँड़ीका गरम पानी निकालकर शीतल जल देते रहो। इस तरह ३ पहर आग लगानेसे, पारा उड़कर ऊपरकी हाँड़ीके पेंदेमें लग जायगा। ३ पहर बाद आग बन्द कर दो। पीछे शीतल होनेपर धीरे-धीरे हाँड़ियोंका जोड़ खोल लो और हलके हाथसे पेंदेमें लगा पारा निकाल लो। यह पारा परम शुद्ध और दोष-रहित सब कामके लायक़ होगा।

पारा शोधनेकी सहज तरकीब

लाल ईंटका चूर्ण, रसोई-घरमें लगा हुआ धूएँका काजल, हल्दी, उनकी राख और बिना बुझा पत्थरका चूना, इन पाँचोंको आध-आध पाव लो और इन सबके वज़नसे आधा यानी पाँच छटाँक पारा लो। सबको खरलमें डालकर जँभीरी नीबूके रसके साथ (अभावमें कागज़ी नीबू या बिजौरे नीबूका रस भी ले सकते हो) तीन दिन या एक दिन खरल करो। पीछे डमरू-यन्त्रकी विधिसे एक पहर या तीन घण्टे तक आग देकर हाँड़ी उतार लो। शीतल होनेपर हाँड़ीको खोल-कर पेंदीसे पारा धीरेसे निकाल लो। यह पारा परम विशुद्ध होगा। मकरध्वज और चन्द्रोदयको छोड़कर यह पारा स्वर्ण-सिन्दूर, रस-सिन्दूर प्रभृति सब कामोंमें आ सकता है।

डमरू-यन्त्रकी विधि उधर लिख चुके हैं, फिर भी ऐसे लोगोंके लिये, जो पुस्तकके पन्ने उलटकर देखनेमें भी आलस्य करते हैं, यहाँ हम पूरी विधि फिर समझाये देते हैं।

दो मज़बूत हाँड़ियाँ कुम्हारके यहाँसे ले आओ। उनके मुखोंको चिकने पत्थरपर पानी डाल-डालकर ऐसे घिस लो, कि वे बराबर हो जायँ—ऊँचे-नीचे न रहें। दोनों हाँड़ियोंके मुँह मिलाकर देख लो, कि दराज तो नहीं रहती। जब हाँड़ियोंके मुँह ठीक हो जायँ, तब उनपर तीन बार या सात बार कपड़मिट्टी कर दो और धूपमें सुखा लो। इस तरह हाँड़ियोंके फटने या फूटनेका डर न रहेगा। पीछे एक हाँड़ीमें नीबूके रस द्वारा खरल किया हुआ पारा रख दो और दूसरी हाँड़ीको उसके ऊपर औंधी रखकर बज्रमुद्राकी लुगदीसे उनकी सन्धोंको बन्दकर दो। बज्रमुद्राका मसाला इस तरह दर्जमें लगाओ कि, ज़रा भी सन्ध या दर्ज न रह जाय। इसके बाद हाँड़ियोंके किनारोंको लोहेके तारोंसे कस दो और ऊपरसे फिर वहां भी कपड़मिट्टी लगा दो और सुखा लो। इस तरह पक्का काम करनेसे पारेके उड़ जाने या हाँड़ियोंके फूट

जानेका भय न रहेगा। जब दोनों हाँड़ियाँ इस तरह सूखकर तैयार हो जायँ, तब उन्हें चूल्हेपर चढ़ा दो। ऊपरवाली औंधी हांड़ीको शीतल जलसे तर रखना परमावश्यक है; इसलिये उस हांड़ीपर रेजीके कपड़े की २० या २५ तह करके और पानीमें तर करके रख दो। जब-जब कपड़ा सूखने पर आवे, उसे शीतल जलसे तर करने रहो। इस तरह कपड़ा रख कर पानी डालनेसे ऊपरकी हाँड़ी गरम न होगी और शीतल रहनेसे नीचेकी हांड़ीसे पारा उड़-उड़कर इस हांड़ीमें आ लगेगा। इस तरह चार या पाँच घंटेमें सब पारा उपरकी हांड़ीमें आ लगेगा। पीछे शीतल होनेपर, आहिस्ते-आहिस्ते खोलकर पारेको निकाल लेना चाहिये।

अगर कपड़ेके बजाय कोई चतुर मनुष्य ऊपरकी औंधी हांड़ीपर ऐसा गोल घेरा बना दे, जिसमें पानी भर दिया जाय, तो और भी आराम रहे; पर घेरेमें गरम पानीके निकालनेको नाली भी बनानी होगी। उस नालीका मुँह खोल देनेसे गरम पानी निकल जायगा। गरम जलके निकल जानेपर नालीके मुखमें कपड़ा ठूस देना होगा और शीतल जल भर देना होगा। मतलब असलमें ऊपरकी हांड़ी शीतल रखनेसे है। बुद्धिमान आदमी इस मक़सदके पूरा करनेको अनेक नयी-नयी तरकीबोंसे भी काम ले सकते हैं। हां, चूल्हे या भट्टीपर हलवाइयों की तरह एक बड़े छेदवाला गोल तवा भी यदि रख दिया जायगा, तो आगकी लपटें हांड़ियोंकी कपरौटीको न जला सकेंगी। आग नीचेवाली हांड़ीके पेंदेमें ही लगनी चाहिये।

साधारण पारेको शोधनेकी यह सबसे आसान तरकीब है। असल में तो पारा स्वेदित करने, मूर्च्छित करने, उर्द्धपातन और अधःपतन करनेसे शुद्ध होता है; पर जिनसे वह खटपट न हो, वे इस तरह शुद्ध कर लें और अगर इतना भी न हो, तो हिङ्गलूको नीबूके रसमें या नीमके पत्तोंके रसमें ३ घण्टे तक खरल करके, इसी डमरू-यन्त्रकी विधिसे ऊपर की हाँड़ीमें चढ़ा लें। यह पारा भी शुद्ध और सब कामामें

आ सकता है। कुछ भी तकलीफ नहीं है। हिंगलूसे पारा निकालने और इस विधिसे पारा शोधनेमें कोई भेद नहीं है। 'केवल खरल करनेके मसालोंमें भेद है। हिंगलू नीबूके रसमें घोटा जाता है और साधारण पारा ईंटके चूर्ण वग़ैरह पाँचों चीज़ों और नीबूके रसके साथ घोटा जाता है। डमरू-यन्त्रकी दोनोंमें ही जरूरत पड़ती है। पारेके शोधनेकी यह तरकीब हमने स्वर्गवासी रसायन-शास्त्री पण्डितवर श्यामसुन्दर आचार्य वैश्य महाशयकी "रसायनसार" नामक पुस्तकसे ले ली है। डमरू-यन्त्रकी विधिमें भी हमने उनकी विधिका सहारा लिया है; इसलिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

कुछ अंगरेज़ी ज्वरोंका वर्णन

टाइफस फीवर

(सन्धिक सन्निपातज्वर)

निदान

यह ज्वर ज़ियादातर गन्दी और ज़हरीली हवासे पैदा होता है। रोगियोंके शरीरसे उनके श्वास और पसीनों द्वारा विष निकलकर दूसरोंके शरीरमें समा जाता है। इसके सिवा अजीर्ण और कमज़ोरी वग़ैरह भी इसकी उत्पत्तिके कारणोंमेंसे हैं। यह रोग छुतहा है यानी एकसे उड़कर दूसरेको लगता है। जहाँ मनुष्योंका ज़ियादा जमाव होता है, वहाँ यह अक्सर होता है। कहते हैं, शीतलकाल और शीतल स्थानोंमें इसकी पैदायश होती है।

पूर्वरूप

छूत लगनेके दिनसे बारह दिन तक तो छूत लगनेके आसार नज़र नहीं आते। इसके होनेके पहले किसी-किसीको जाड़ा-सा लगा करता है। शरीरमें आलस्य, थकान और ग्लानि-सी रहती, तबियत नहीं लगती, बेचैनी भी रहती है, कमरमें वेदना होने लगती है और प्यास कुछ बढ़ जाती है, जी मिचलाया करता है और सिरमें दर्द भी होता

है। इसके बाद, यह ज्वर यकायक अपने जोर-शोरसे हमला करता है और मनुष्यको जाड़ा देकर ज्वर चढ़ आता है।

पूर्णरूप

जब यह अपने पूर्णरूपसे रोगीपर चढ़ बैठता है, तब रोगीका मुख मलीन हो जाता है, चेहरेपर उदासी आ जाती है, चेहरेकी रंगत स्याह हो जाती है, सिरमें वेदना होती है, आँखें सुर्ख़ हो जाती हैं, भूख जाती रहती है, प्यास बढ़ जाती है, होठोंपर पपड़ियाँ जम जाती हैं, रोगी बल और सामर्थ्यसे हीन हो जाता है, सन्ध्या समय बेचैनी बढ़ जाती है, रातको नींद नहीं आती, रोगी आनतान बकता है। अगर नींद आ जाय, तो समझना चाहिये कि, रोगी आरोग्य लाभ करेगा। अगर नींद नहीं आती, तो रोगी बेहोश हो जाता है, रोगीका शरीर तपने लगता है और रूखापन बढ़ जाता है। उस समय टेम्परेचर—ज्वरका ताप १०५ डिग्री तक हो जाता है। कभी कभी इससे भी ज़ियादा पारा चढ़ जाता है। छठे-सातवें दिनसे शहतूतके फलकी शकलके काले-काले दाग़ या फुन्सियाँ होने लगती हैं। कभी-कभी तो ये दाग़ आपसमें मिले हुए देखे जाते हैं और कभी-कभी अलग देखे जाते हैं। पैदा होनेके दूसरे या तीसरे दिन इनका रङ्ग ईंटका-सा गुलाबी रङ्ग हो जाता है। अगर दोषोंका कोप ज़ियादा नहीं होता, रोग हलका होता है, तो यह ज्वर सात दिन तक समान रूपसे रहकर धीरे-धीरे कम होने लगता है। दसवें दिनसे ज्वरका ताप घटने लगता है और चौदहवें-पन्द्रहवें दिन रोगी आरोग्य-सा हो जाता है। तापकी घटतीके साथ वे काले-काले दाग़ भी घटने लगते हैं; नींद आती है, भूख लगती है और रोगी की जीभ भी साफ़ हो जाती है।

अगर ज्वरकी गरमी आठवें दिनके बाद वैसी ही बनी रहे, तो समझना चाहिये कि, शरीरके जोड़ोंमें शोथ या सूजन पैदा हो गई है। इस दशामें रोग जोर पकड़ता है। बारहवें दिनसे बीसवें दिन तक

ख़राब हालत रहती है। रोगीकी जीभ रूखी, भूरी और काली-सी हो जाती है। रोगी तन्द्रामें पड़ा रहता है, पर नींद नहीं आती। शरीर जकड़ जाता है, हाड़ोंमें वेदना होती है, मुखमें बदबू आती है, करवट लेनेमें कष्ट प्रतीत होता है, पेशाब होता ही नहीं या कम होता है और रङ्ग उसका लाल होता है। ज्वरके नवें-दसवें दिन तन्द्राका बड़ा ज़ोर रहता है, रोगीको होश नहीं रहता, चारपाईपर ही पाख़ाना-पेशाब फिर देता है। अन्तिम दशामें बाँइटे आने लगते हैं और रोगी परम-धामको सिधार जाता है।

यह बराबर बना रहनेवाला ताप है। यह १४ से २१ दिन तक लगातार बना रहता है। यह कभी धीरे-धीरे बढ़ता है और कभी एक-दमसे भयङ्कर रूप धारण कर लेता है। साधारण अवस्थामें भूख नष्ट हो जाती है, दस्त नहीं होता, उबकियाँ आया करती हैं, जीभ मैली हो जाती है तथा शहतूतके रङ्गके दाग़ पैदा हो जाते हैं, और यह ज्वर दूसरे हफ्तेमें धीरे-धीरे उतर जाता है। अगर यह उग्र रूपसे होता है, तो इसमें मस्तकशूल, मूर्च्छा, सन्धियोंमें वेदना, बाँइटे आना और संज्ञा न रहना तथा बेहोशीमें पाखाना-पेशाब निकल जाना प्रभृति लक्षण होते हैं।

जब पाँचवें, छठे या सातवें दिन शरीरमें शहतूतकी शकलके चकत्ते उठते हैं; तब तो रोगीकी हालत बहुत ख़राब हो जाती है। प्रलाप या बकवादका बहुत ज़ोर हो जाता है। रोगी बेहोश होकर बहरा हो जाता है, और मुँह फट जाता है। उस दशामें लोगोंको पहचानना कठिन हो जाता है, हाथ-पाँव काँपते हैं, रोगी पलङ्गके सामानको खींचता है। अगर दवा देते ही आराम मालूम होने लगे, तब तो आरामकी आशा है; नहीं तो फुस्फुसकी नलीमें खून बहकर चले जानेसे रोगी मर जाता है। अगर यह रोग कम उम्रवालेको होता है, तो बचनेकी उम्मीद रहती है। बड़ी उम्रवालेके बचनेकी आशा कम रहती है।

चिकित्सा-विधि

डाक्टरी क़ायदेसे पहले ज्वरके हेतुको दूर करना उचित है। अजीर्णसे हुआ हो, तो अजीर्ण-नाशक उपाय करना चाहिये। गन्दी हवासे हुआ हो, तो रोगीको साफ हवादार स्थानमें रखना चाहिये। रोगीको लघु पथ्य और शीघ्र-शीघ्र दवा देनी चाहिये; दवामें देर होनेसे रोगीके प्राण-नाशकी संभावना है। रोगीके कमरेके द्वारपर आग रखनी चाहिये। बल्कि रक्षाके लिये दूध और ब्राण्डी-शराब देनी चाहिये।

नोट—अनेक आयुर्वेदज्ञ चिकित्सक इसको सन्धिक सन्निपातज्वर समझते हैं और वैसी ही चिकित्सा करते हैं और कहते हैं कि, दूध न देना चाहिये। वे लोग आग रखना अच्छा बताते हैं और सन्धिक सन्निपात-ज्वरकी चिकित्सामें जो क्वाथ प्रभृति लिखे हैं उनको ही, दोषोंको समझकर, ज़रूरत होनेसे उनकी दवाएँ घटा-बढ़ाकर देनेकी राय देते हैं। अधिकांश वैद्योंकी रायमें यह सन्धिक सन्निपात-ज्वर है; कुछकी रायमें यह कर्णक है। अभी इसपर वैद्योंकी कमेटीने निश्चित राय कायम नहीं की है; इसलिये हम अपनी ओरसे कोई राय नहीं दे सकते। निस्सन्देह यह एक प्रकारका सन्निपातज्वर है और भारतमें बहुत कम होता है। सन्धियों या जोड़ोंमें सूजन होनेसे ही लोग इसे सन्धिक सन्निपातज्वर कहते हैं। हमारी रायमें, अगर रोगी मिलें, तो चतुर चिकित्सकको दोषोंकी वृद्धि, क्षय और कोपके अनुसार इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। इस तरह बिना नामवाले सभी रोगोंकी चिकित्सा की जा सकता है।

टाइफाइड ज्वर

(तन्द्रिक सन्निपातज्वर)

निदान

यह ज्वर मरे हुए जानवरों और डाँगरोंकी दुर्गन्धसे पैदा होता है। उनसे ख़राब हुई हवा नाक और श्वास द्वारा मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करती और भीतर पहुँचकर ज़हरका काम करती है। बदबूदार चीजों के खाने-पीने, गरम और खुश्क मौसम तथा ऐसे ही अन्यान्य कारणों से मनुष्योंकी आँतोंमें ज़ख़्म हो जाते हैं। आँतोंमें ख़राबी होनेसे ही विशेषकर टाइफाइड ज्वर पैदा होता है।

पहली अवस्थाके लक्षण

दससे चौदह दिनके भीतर इस ज़हरका असर मनुष्योंपर होता है। जब इसका प्रभाव देहपर पड़ता है, तब शरीरमें आलस्य और थकान-सी जान पड़ती है, काम करनेको जी नहीं चाहता, शरीर टूटने लगता है, जगह-जगह दर्द होता है, गरमीका जोर होता है, शरीर घूमता-सा मालूम होता है, पतले दस्त होते हैं; कभी गरमी और कभी जाड़ा लगता है, दिनमें तन्द्रा रहती और रातको नींद नहीं आती, अगर नींद आती भी है; तो अजीब-अजीब चौंकानेवाले सुपने दीखते हैं; प्यास बढ़ जाती है, नाकसे खून गिरता है। जीभका बिचला भाग मैला और किनारे तथा नोक सुर्ख़ रङ्गके रहते हैं, गालोंपर लाल-लाल दाग़ हो जाते हैं, नाड़ी भारी और निर्बल रहती है, श्वासमें बदबू आती है, पेट फूल जाता है, पेटको दबानेसे दर्द होता है; कभी-कभी वमन और अतिसारके लक्षण भी होते हैं। रोगीको किसी तरह चैन नहीं मालूम होता; रातको शरीर रूखा और गरम हो जाता है। रातको टैम्परेचर—१०५-१०६ डिग्री तक हो जाता है। बलकी हानि और कान्तिकी मलीनता होती है। आँखें खड्डोंमें घुस जाती हैं पेशाब या तो होता ही नहीं और यदि होता है, तो लाल और मिक़दारमें थोड़ा होता है।

दूसरी अवस्थाके लक्षण

सात दिन तक ज्वरका वेग मन्दा रहता है। दूसरे हफ्तेमें बुख़ार बढ़ने लगता है। नवें दिनसे चौदहवें दिन तक तेज़ी रहती है। शरीर तपता है, चमड़ा रूखा रहता है; साँस जल्दी-जल्दी चलता और उसमें बदबू आती है; होठ सूख जाते हैं; जीभ सफेद हो जाती और उसमें लकीर-सी हो जाती हैं एवं पेटमें दर्द होता है।

तापकी घटती-बढ़ती

सवेरे अगर १०२ डिग्री ज्वर होता है, तो उस दिनकी शामको

१०४ हो जाता है। अगले दिन सबेरे १ डिग्री कम होकर १०३ डिग्री ताप हो जाता है, शामको फिर दो डिग्री बढ़कर १०५ हो जाता है। उसके अगले सवेरे १ डिग्री घटकर १०४ हो जाता है और उस दिन शामको १०६ डिग्री हो जाता है। हर दिन शामको २ डिग्री ताप बढ़ता और अगले दिन सवेरे १ डिग्री घट जाता है। शामको और दो डिग्री फिर बढ़ जाता है। यह दशा ४-५ दिन तक रहती है।

फुन्सियाँ

बुख़ार आनेके सातवें-आठवें दिन छाती और पेटपर गुलाबी रंग की फुन्सियाँ पैदा होती हैं, जो ४-५ दिनमें मर जाती हैं। इसके बाद और जगह वैसे ही फुन्सियाँ पैदा होतीं और नाश होती रहती हैं। अगर रोग हलका होता है, तो चौदहवें-पन्द्रहवें दिन सारी फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं।

रोगकी तेज़ी

रोगकी तेज़ीमें पेट फूल जाता है, तिल्ली बढ़ जाती है; सूखी ओकी आती है; क़य होती हैं, दस्त पीले, पतले और बदबूदार होते हैं, नाड़ी की चाल और ताप बढ़ जाता है, कानोंमें सनसन शब्द होता है। कोई-कोई रोगी कानोंसे बहरा हो जाता है। प्रलाप, हिचकी, सामर्थ्य-हीनता, अरुचि, अतिसार, कृशता, संज्ञानाश, हाथ पाँव काँपना, तन्द्रा और मूर्च्छा आदि लक्षण होते हैं। ऐसी अवस्थामें रोगी चल बसता है।

रोग-नाशके पूर्वरूप

इक्कीसवें दिनसे इस ज्वरके जानेके आसार नज़र आते हैं। उस समय जीभ साफ़ होने लगती है, भूख लगती है, नाड़ीकी चाल धीमी हो जाती है; दस्त बन्द हो जाते हैं और रोगी खाटपर बैठने उठने लगता है तथा चेष्टा बदल जाती है।

नोट—(१) सभी रोगियोंमें प्रलाप, फुन्सियोंका होना, अतिसार और बल-हानि प्रभृति लक्षण नहीं देखे जाते। इस ज्वरमें २० से ३० दिन तक भय रहता है। २० वें दिनसे या तो ज्वर कम होने लगता है अथवा मृत्युका सामना होता है।

(२) इस ज्वरके लक्षण दुर्गन्धजनित ज्वरसे मिलते हैं। अष्टगन्धकी धूप या सबगन्धका क्वाथ, जो आगन्तुक ज्वरोंकी चिकित्सामें लिखा है, इस ज्वरमें हित है,—ऐसी अनेक वैद्योंकी सम्मति है। कोई-कोई कहते हैं, इस टाइफायड ज्वरके लक्षण तन्द्रिक सन्निपातसे मिलते हैं। अगर तन्द्रिकके लक्षण ही विशेष हों, तो तन्द्रिक सन्निपातज्वरकी-सी चिकित्सा करनी चाहिये। टाइफस और टाइफाइड दोनों ही सन्निपातज्वर हैं, इसमें सन्देह नहीं। डाक्टर लोग कब्ज़ होनेसे, पहले कास्टर आयलका जुलाब देकर कोठा साफ़ करते हैं; दस्त बहुत होते हैं, तो कुछ ठहरकर, दस्त बन्द करनेकी दवा देते हैं; मलमूत्रके स्थानोंकी सफ़ाई कराते हैं; आँतोंमें सूजन आ जाने और घाव हो जानेके भयसे चलने-फिरनेकी सख्त मुमानियत करते हैं; ख़राब दशा होनेसे शराब देते हैं; साबूदाना वग़ैरह हलका पथ्य देते हैं, दूध भी देते हैं और नमक या क्षार पदार्थोंका देना बुरा कहते हैं। अभी इस ज्वरके सम्बन्धमें भी वैद्योंमें मतभेद है; इसलिये हमने इसकी चिकित्सा नहीं लिखी; केवल लक्षणमात्र वैद्योंकी जानकारीके लिए लिख दिये हैं। चतुर वैद्य दोषोंके लक्षण समझकर इलाज कर सकते हैं।

टाइफाइड ज्वर और टाइफस ज्वरमें भेद

टाइफाइड ज्वरमें जाड़ा कई बार लगता है; किन्तु टाइफसमें आरम्भमें ही शीत लगकर ज्वर चढ़ता है। टाइफाइड ज्वरमें खूनके दस्त होते हैं; पर टाइफस ज्वरमें दस्त कम होते हैं और उनमें खून नहीं होता। टाइफाइड ज्वरमें आँतोंमें घाव होते हैं; पर टाइफसमें घाव नहीं होते, टाइफाइड ज्वरमें ताप अजब-ढँगसे घटता-बढ़ता है। चार-पाँच दिन तक सन्ध्याको २ डिग्री ज्वर बढ़ता है, सवेरे १ डिग्री घटता है, शामको और २ डिग्री बढ़ता है, यह क्रम चार-पाँच दिन तक जारी रहता है; किन्तु टाइफस ज्वरमें १ दिन बाद ज्वर बढ़ने लगता है और तीसरे दिन तक बढ़ता है, पीछे स्थिर हो जाता और आठवें दिनसे घटना आरम्भ हो जाता है। टाइफाइड-ज्वरमें

गुलावी रङ्गकी फुन्सियाँ निकलतीं और नष्ट होती रहती हैं, किन्तु टाइफस ज्वरमें शहतूतकी शकल और रङ्गके दाग़ पैदा होते हैं और पीछे वे ईंटके रङ्गके-से हो जाते हैं और शेष तक रहते हैं। टाइफाइड-ज्वरमें रोगी ज्वर आते ही कमज़ोर नहीं होता; किन्तु टाइफस ज्वरमें ज्वर आते ही सामर्थ्य घट जाती है। ४ दिनमें ही रोगी ऐसा हो जाता है कि, उससे खाटसे उठा नहीं जाता।

इनफेन्टाइल रेमिन्टेन्ट फीवर

यह ज्वर टाइफाइड फीवर ही है। वालकोंके टाइफाइड फीवरका नाम इनफेन्टाइल रेमिटेण्ट फीवर रख लिया गया है। इनफेन्ट वालक को कहते हैं और इनफेण्टाइल इनफेण्टका विशेषण है। यह ज्वर दो तरहका होता है:—(१) हलका, और (२) तेज़।

हलके ज्वरके लक्षण

शुरूमें वालककी भूख मन्दी हो जाती है, प्यासका ज़ोर हो जाता है और वच्चा सुस्त हो जाता है। इस अवस्थाके बाद वालक पड़ा रहता है। कोई छेड़ता है तो झुंझलाता है, क्योंकि मिज़ाज विगड़ जाता है। साँझको ग़फ़तलमें पड़ा रहता है, किन्तु सोता नहीं और रातको नींद न आनेके कारण माता-पिताको हैरान करता है। रात-भर बेचैनीमें कटती है। शरीर कभी गरम हो जाता है और कभी ठण्डा हो जाता है। नाड़ीकी चाल वेतहाशा तेज़ हो जाती है। दस्त पतला और सड़ा हुआ होता है। मुंहसे वदबू निकलती है। सवेरेके वक्त ज़रा तवियत अच्छी मालूम होती है, शामके समय गरमी वढ़ने लगती है और ज्यों-ज्यों रात होती है, तवियत विगड़ती जाती है। रातके समय ताप जियादा रहता है। यह पहले हफ्तेकी हालत है।

दूसरे हफ्तेमें वेचैनी वहुत वढ़ जाती है। वालक रातके समय चौंक-चौंककर चिल्ला उठता है। कभी-कभी तो इस तरह दाँत पीसने लगता है, जिससे मूर्ख लोग भूत-प्रेतका साया पड़ना समझ लेते हैं।

इस तरह कराहता है जिससे दया आती है। मालूम होता है—भीतर भयानक वेदना रहती है, पर बालक कह नहीं सकता या कहनेका होश नहीं रहता। ज्वर कभी दिनमें दो बार आता है और कभी एक बार। दिनमें दस बजेके बाद ज्वर चढ़ता है और फिर ३ बजेके क़रीब उतर जाता है; शामको फिर चढ़ता है और रातके पिछले पहरमें कम हो जाता है। बालककी जीभ बीचमें मैली और नोक या किनारोंपर लाल रहती है। नाक और मुँहको बालक बराबर नोंचता है; पेट भी फूल जाता है। पन्द्रहवें दिनसे बहुधा सब तकलीफें घटने लगती हैं और बच्चा धीरे-धीरे आराम होता चला जाता है।

तेज़ ज्वरके लक्षण

तेज़ ज्वर होनेसे चेहरा भारी-सा हो जाता है, सिरमें भयङ्कर वेदना होती है; भ्रम, मूर्च्छा, वमन वगैरह लक्षण भी होते हैं। छठे दिनसे पेट, पीठ और छातीपर लाल-लाल छोटी-छोटी फुन्सियाँ-सी होने लगती हैं। इस अवस्थामें बेहोशी बढ़ जाती है, क़य भी ज़ियादा होने लगती हैं, श्वास जल्दी-जल्दी चलता है, हृदयमें शूल होता है, खुश्क खाँसी होती है और मटिया रङ्गके पतले दस्त होते हैं। ये पहले हफ़्ते की बातें हैं।

दूसरे हफ़्तेमें बालक बिल्कुल लकड़ हो जाता, मांस सब सूख जाता है, उठ-बैठ नहीं सकता, बेहोश पड़ा रहता है और नाड़ी धीरे-धीरे चला करती है। ताप १०५ और १०८ डिग्री तक हो जाता है।

तीसरे हफ़्तेमें बच्चेकी कमज़ोरी बेहद बढ़ जाती है। वह बेहोश रहता है, हाथ-पैर ऐंठने लगते हैं, इस अवस्थासे कोई भाग्यवान बच्चा ही उठता है।

आराम होनेके लक्षण

यह ज्वर धीरे-धीरे जाता है। कभी पसीने आकर ज्वर उतरता है, कभी पसीने आकर और दस्त होकर ज्वर उतरता है और कभी वमन

द्वारा पित्त निकलनेसे भी ज्वर शान्त हो जाता है। इस ज्वरसे १०० में २० रोगी मरते हैं। २० दिनके बाद बहुधा मृत्यु होती है। जिनकी आँतोंमें घाव हो जाते हैं, वे रोगी कम बचते हैं। ३० दिनमें रोगी आराम हो जाते या मर जाते हैं। कोई-कोई इससे भी अधिक दिनों तक अपने कर्म-फलोंको भोगकर मरते हैं।

पाइएमिया फीवर

(रक्तविकार-ज्वर)

यह बुख़ार खूनके दोषसे होता है। यह वैद्यकका रक्तविकार-ज्वर है। किसी अङ्गमें सूजन आकर पीव पड़ जाता है। उसकी वजहसे खून ख़राब हो जाता है और बुख़ार चढ़ आता है। कभी सफेद-सफेद धब्बे पैदा हो जाते हैं और कभी सन्धियोंमें वेदना होती है। यह धूपमें रहने, अग्निके पास बहुत बैठने, तापने और रक्तके दूषित होनेसे होता है।

चिकित्सा

इस ज्वरमें पीवको सुखाना और खूनको साफ करना चाहिये। उशबेका अर्क़, चिरायतेका अर्क़ अथवा मंजिष्ठादि अर्क़ प्रभृति खून साफ करनेवाली दवाएँ देनेसे अवश्य लाभ होता है।

न्यूमोनिया

डाक्टरीमें इसके ५ भेद हैं:—(१) निमोनिया। (२) बंको निमोनिया या लव्यूलर। (३) पुराना या इन्टर स्टिश्येल निमोनिया। (४) फूसफूसकी गेंग्रीन। (५) फुसफुसमें कैन्सर (नासूर)।

निमोनियाके लक्षण

निमोनियाको फुसफुसका प्रदाह भी कहते हैं। इस रोगमें फुसफुस में दाहने-बायें बहुत जलन होती है और नीचेकी तरफ दर्द होता है। इस निमोनिया रोगके पैदा होनेसे पहले बुख़ार आता है, कम्प होता है और खाँसी चलती है। बहुत दिन पहले भूख कम हो जाती है, कम-

ज़ोरी हो जाती है, हाथ पैर और छातीमें दर्द होता है, श्वास ज़ोरसे चलता है, नाड़ी तेज़ हो जाती है, जीभ और होठ नीचे हो जाते हैं, एवं धीरेधीरे इस रोगमें रोगीकी चैतन्यताका नाश होकर मृत्यु हो जाती है।

यह रोग ६ से १० दिन तक बहुत कष्ट देता है। खाँसी और श्वास से भयानक कष्ट होता है। उठकर बैठनेसे या ज़ोरसे साँस लेनेसे खाँसी आती और उसके साथ खून आता है। जब रोगीकी मृत्यु होनेका ख़तरा होता है, तब ऊपर लिखे लक्षण या तो कम हो जाते हैं या बिल्कुल ही नहीं रहते।

इस रोगमें पहले तो बलग़म पतला-पतला आता है; पीछे दो-एक दिनमें खूब गाढ़ा आने लगता है। कभी-कभी दो-एक घण्टेमें ही आटे की तरहका आने लगता है। कफमें कुछ सुर्ख़ी-सी मिली रहती है; यानी कुछ खूनका अंश रहता है, रोगीका बुख़ार बढ़ता ही जाता है। पहले दिन ताप १०२ से १०४ डिग्री तक और तीसरे दिन १०७ से १०६ डिग्री तक देखा जाता है। १०६ डिग्रीका ताप होनेसे रोगीका बचना कठिन हो जाता है। नाड़ीकी चाल यद्यपि सर्वत्र समान नहीं होती; फिर भी तीसरे-चौथे दिन १२० से १३० तक हो जाती है। सिर में बड़ी वेदना होती है, नींद नहीं आती, बेचैनी बढ़ जाती है, पेशाबके साथ खूनकी झलक आती और उसके साथ धातु भी मिली रहती है।

(२) लब्युलर या ब्रंकोनिमोनियाके लक्षण

इसके सब लक्षण निमोनियाके-से ही होते हैं। फ़र्क़ यही होता है कि, निमोनियाकी तरह इसमें कम्प आदि लक्षण नहीं होते। ताप १०३ से १०५ डिग्री तक रहता है, कभी-कभी ज्वर बढ़ जाता है। नाड़ीकी गति तीव्र हो जाती है।

(३) पुराने निमोनियाके लक्षण

पहले लिखा हुआ निमोनिया जब पुराना हो जाता है, तब पसली

में एक ओर खिंचाव-सा होता है, श्वास और खाँसी बढ़ जानेसे कफ बड़ी कठिनतासे निकलता और उसमें बड़ी दुर्गन्ध होती है।

(४) फुसफुसके गेंग्रीनवाले निमोनियाके लक्षण

पुराना निमोनिया होकर, ज़हरीले कीड़ोंके ज़हरसे, खूनके ज़हरसे अथवा उपदंश (गरमी रोग) से भी यह रोग हो जाता है। इसमें फुस-फुसमें बड़ी तकलीफ होती है।

(५) फुसफुसमें केन्सरवाले निमोनियाके लक्षण

यह रोग बहुत कम देखनेमें आता है। इसे कोई संक्रामक या छुतहा कहते हैं और कोई वंश-परम्परासे होनेवाला कहते हैं। इसमें श्वास, खाँसी, तीर छेदनेकी-सी वेदना, दबानेसे तकलीफ बढ़ना, खाँसीके साथ कफ निकलना ये लक्षण होते हैं। कभी-कभी फुसफुससे खून भी आता है, बुखार रहता है, रातमें पसीने आते हैं और रोगी कमज़ोर हो जाता है।

निमोनियाके सामान्य लक्षण

पहले फेफड़ोंमें सूजन आ जाती है और वे सख्त हो जाते हैं तथा गलने लगते हैं। आरम्भमें जाड़ेका बुखार आता है, छाती बहुत गरम हो जाती है, मुंह और नेत्र लाल हो जाते हैं, सिरमें दर्द होता है, प्यास बहुत लगती है, जीभ मैली होती है, भूख जाती रहती है, छातीमें मन्दा-मन्दा दर्द होता है, सूखी खाँसी चलती है, कभी-कभी कफ भी आता है, बीमारीके बढ़ जानेपर मुखसे खून भी गिरने लगता है, श्वास कष्टसे आता है; थूक ल्हेसदार, चिपचिपा और बदबूदार आता है।

निमोनियाकी उत्पत्तिके कारण

सर्दी लगना, कई तरहका ज्वर, ज्वरमें बदपरहेज़ी अपथ्य गरम या शीतल जल वग़ैरह पीना या कोई शीतल पदार्थ खाना-पीना, बहुत मिहनत करना, अति स्त्री-प्रसङ्ग करना, मौसमका बदलाव या

ऋतु-परिवर्तन आदि इसके कारण हैं। विशेष करके यह रोग शीतल हवाके लगने या और किसी तरह सर्दी लगनेसे होता है।

खुलासा

असलमें निमोनिया सन्निपातज्वरकी एक अवस्थाका नाम है। सन्निपातज्वरमें साधारण लक्षणोंके सिवा और कितने ही विशेष लक्षण होते हैं। निमोनिया होनेके पहले एकदमसे कमज़ोरी आ जाती है और भूख मारी जाती है। जब निमोनिया होता ही है, तब पहले जाड़ेका बुखार आता है, सिरमें दर्द, क़य होती हैं, रोगी आनतान बकता है और हाथ-पैर पटकता है। जब रोग बढ़कर पूर्णरूपसे प्रकट हो जाता है, तब छातीके छूते ही दर्द होने लगता है, साँस लेनेमें कष्ट होता, खाँसीका बड़ा ज़ोर रहता है, मैला और गाढ़ा तथा लहसदार कफ निकलता है। वह कफ बासनमें रख दिया जाता है तो सहजमें छूटता नहीं। कभी-कभी उस कफके साथ ज़रा-ज़रा-सा खून भी आता है।

जब एक सप्ताह बीत जाता है, तब पेशाब और पसीना बहुत आता है। नाड़ीकी चाल हर मिनटमें ६० से १२० बार तक हो जाती है। टेम्परेचर १०३ से १०४ डिग्री तक हो जाता है। कोई-कोई १०७ डिग्री तक टेम्परेचर हो जानेपर भी आराम होते देखे गये हैं। असलमें इस रोगमें फुसफुस खराब होता और बहुधा सड़ भी जाता है। इस दशामें किसी क़दर लाल और मैला तथा पतला कफ निकलता है। फुसफुसके सड़ जानेपर बदबूदार और पीवके जैसा बलग़म निकलता है। फुसफुसके खराब हो जानेपर रोग कष्ट-साध्य हो जाता है। अगर फुसफुसमे दाह या जलन हो, तो भी रोगको कष्टसाध्य समझना चाहिये। अगर छोटे बालक, बूढ़े, स्त्री और ख़ासकर हामला—गर्भवती तथा शराबीको यह रोग होता है, तो कठिनतासे आराम होता है।

चिकित्सा-विधि

डाक्टर लोग इसमें अनेक दवाएँ देते हैं, परन्तु उनके यहाँ इसकी

उत्तम दवा "काडलिवर आयल" है; पर रोगके मिट जानेकी दशामें इसका देना हित है। इसे वे १ ड्रामसे लेकर १ औंस तक दूधके साथ देते हैं। इसका इलाज अनुभवी डाक्टरसे कराना चाहिये। यह भी एक प्रकारका सन्निपात है। डाक्टरी मतसे पहले-पहल चिरायतेका काढ़ा या टिञ्चर स्टील देना अच्छा है।

वैद्यकके रक्तष्ठीवी सन्निपातसे इसके बहुत लक्षण मिलते हैं। किसी-किसी ने निमोनियाको राजयक्ष्मा या सिल लिखा है। यह उन्होंने कफके साथ खून आनेकी वजहसे लिखा है। राजयक्ष्मा या सिलमें इसके-से लक्षण बहुत दिनोंमें होते हैं; परन्तु निमोनियामें सब लक्षण चटपट होते हैं; रक्तष्ठीवीमें मुखसे थूकके साथ खून आता है; निमोनियामें भी खून आता है। रक्तष्ठीवीमें ज्वर, प्यास, बेहोशी, दर्द, श्वास वगैरह लक्षण होते हैं, इसमें भी होते हैं। रक्तष्ठीवीमें नेत्र लाल हो जाते हैं, निमोनियामें भी नेत्र लाल हो जाते हैं। रक्तष्ठीवीमें जीभ काली हो जाना लिखा है; निमोनियामें नीली हो जाना लिखा है। यह कोई भेद नहीं है। रक्तष्ठीवीमें अतिसार और खूनके चकत्ते होना बेशक अधिक लिखा है।

कोई-कोई विद्वान् इसे "कर्कटक सन्निपात" भी कहते हैं। अभी तक निश्चित मत किसीने भी नहीं दिया है; फिर भी हम इसको आराम करनेवाले चन्द परीक्षित उपाय लिखते हैं। आशा है, भगवानकी दया से उनसे अनेक मौकोंपर लाभ ही होगा।

इस रोगमें सन्निपातज्वरमें लिखे हुए काढ़े, दोषोंका विचार कर देने चाहिये। इसी तरह खाँसीकी दवा भी दोषानुसार देनी चाहिये। पृष्ठ २८१ में 'अभिन्यास सन्निपात-ज्वरकी चिकित्सामें लिखा हुआ नं० १ काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हरड़ प्रभृति ३३ दवाओंका काढ़ा देनेसे निमोनियामें अवश्य लाभ होता है। विचारपूर्वक "कस्तूरी भैरव" अथवा "कफकेतु" देनेसे भी लाभ होता है। रस हमेशा विचारकर देने चाहियें, क्योंकि कभी-कभी लक्षणोंमें बहुत भेद पाया जाता है। कभी रक्त-

छीवीके-से और कभी कर्कटकके-से लक्षण मिलते हैं; पर ऊपरका काढ़ा हर हालतमें लाभदायक साबित हुआ है; बशर्ते कि रोगीकी टूटी न हो, क्योंकि टूटीकी बूटी तो कहीं भी नहीं है।

स्वल्प कस्तूरी भैरव

शुद्ध हिंगलू, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध सुहागा, जावित्री, जायफल, कालीमिर्च, पीपल और असल कस्तूरी—सबको बराबर-बराबर लेकर पानीमें खरल करके, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सन्निपात ज्वर या निमोनियामें इन गोलियोंको बलाबल-अनुसार अदरखके रसमें देना चाहिये। भयंकर अभिन्यास सन्निपात-ज्वरमें भी "कस्तूरी भैरव" अच्छा काम देता है।

कफकेतु

शङ्खभस्म, सोंठ, कालीमिर्च, शुद्ध सुहागा—प्रत्येक एक-एक माशे और शुद्ध मीठा विष ५ माशे—इन सबको अदरखके रसमें ३ दफा खरल करके, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। अदरखके रसके साथ देनेसे कफकी वजहसे रुका हुआ गला खुल जाता है। इससे भयानक सन्निपात और निमोनिया आराम हो जाता है। नवीन ज्वरमें यह "कफकेतु" अच्छा काम देता है।

ज्वरोंपर और उत्तमोत्तम रस

श्रीमृत्युञ्जय रस

शुद्ध मीठा विष १ माशे, कालीमिर्च १ माशे, पीपल १ माशे, जंगली जीरा १ माशे, शुद्ध गन्धक १ माशे, सुहागा भुना हुआ १ माशे और शुद्ध हिङ्गलू (हिंगुल) २ माशे—इन सबको मिलाकर अदरखके रसमें खरल करके, मूंग बराबर गोली बना लो। मामूली तौरसे यह रस शहदके साथ दिया जाता है। सन्निपात-ज्वरमें इसे अदरखके रसके साथ; विषमज्वरमें काले जीरेका चूर्ण और पुराने गुड़के साथ देते हैं। इसकी मात्रा जवानको चार गोली है। कमजोरको, बालकको और

वृद्धको एक-एक गोली देनी चाहिये। इससे वातपित्तका दाह भी शान्त होता है। अगर कफकी अधिकता न हो, तो इसे कच्चे नारियलके पानी और चीनीके साथ सेवन कराना चाहिये।

मृत्युञ्जयरस

शुद्ध पारा १ माशे, शुद्ध गन्धक २ माशे, भुना सुहागा ४ माशे, शुद्ध मीठा विष ८ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज १६ माशे और त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) ६४ माशे—इन सबको धतूरेके रसमें खरल करके एक-एक माशे भरकी गोलियाँ बना लो। सबसे पहले पारे और गन्धकको खरलमें घोटकर कज्जली बना लो। पीछे कज्जलीके साथ शेष चीजोंको मिलाकर, खरलमें डालकर, धतूरेके रसके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो। इस तरह अच्छा रस बनता है। इस रससे सब तरहके रोग नष्ट हो जाते हैं। अगर सन्निपात ज्वरमें यह देना हो, तो अदरखके रस के साथ दो; अगर कफज्वरमें देना हो, तो शहदके साथ दो और वात-पित्त-ज्वरमें देना हो, तो नारियलके पानी और चीनीके साथ दो।

ज्वर मुरारि

शुद्ध हिङ्गलू, शुद्ध मीठा विप, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, भुना सुहागा और हरड़—इन सबको बराबर-बराबर लो। और सबके वजनके बराबर शुद्ध जमालगोटेके बीज लो। सबको खरलमें डालकर पानीके साथ उड़दके दाने बराबर गोलियाँ बना लो। अगर ज्वर-रोगी को दस्त कराना हो, तो इसे अदरखके रसके साथ साथ दीजिये। इससे ज्वर बहुत जल्दी भाग जाता है।

ज्वरान्तक रस

शुद्ध पारा १ माशे, शुद्ध गन्धक १ माशे; शुद्ध बच्छनाभ विष १ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ३ माशे, सोंठ १ माशे, पीपल १ माशे, कालीमिर्च १ माशे और कंजेकी गिरी १ माशे—इन आठों को तैयार करके रख लो। पहले पारे और गन्धकको खरलमें घोटकर कज्जली

बना लो। पीछे बाक़ीकी छै चीज़ोंको पीस-छानकर, कज्जलीमें मिला कर खरलमें सबको डालकर नीबूके रसके साथ एक दिन-भर घोटो। घुट जानेपर ज्वारके दाने बराबर गोलियाँ बना लो।

सवेरे-शाम एक-एक गोली अदरख़के रस और शहदके साथ सेवन करनेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया प्रभृति आराम हो जाते हैं। अगर पित्तज्वर हो तो भुना हुआ ज़ीरा, बड़ी इलायची, आमले और मिश्री के साथ गोलियाँ देनी चाहियें; कफज्वरमें शहद और बहेड़ेके साथ देनी चाहियें; वातज्वरमें रेंडीके बीजोंकी मींगी और शहदके साथ देनी चाहियें; दाहज्वरमें कपूर और कत्थेके चूर्णमें मिलाकर देनी चाहियें और ऊपरसे चन्दन और गिलोयका काढ़ा देना चाहिये। सब तरहके ज्वरोंमें गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, लाल चन्दन और पद्माख— इनके काढ़ेके साथ गोलियाँ देनी चाहियें। शीतज्वर या नये बुखारमें सोंठ, मिर्च, पीपल और गिलोयके काढ़ेके साथ देनी चाहियें। अगर अनुपान न हो, तो केवल ताज़ा पानीके साथ देनी चाहियें।

अग्निकुमार रस

गोलमिर्च २ माशे, वच २ माशे, मीठा कूट २ माशे, नागरमोथा २ माशे और शुद्ध मीठा विष ८ माशे—इन सबको खरलमें डालकर अदरखके रसके साथ घोटकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो।

सन्निपातज्वरकी पहली अवस्थामें पीपलके चूर्ण और अदरखके रसके साथ दो। आमज्वरकी पहली अवस्थामें शहद और सोंठके चूर्ण के साथ दो। कफज्वरमें अदरखके रसके साथ दो। जुकाममें अदरख के रसके साथ दो। खाँसीमें कण्टकारीके रसके साथ दो। साँसमें सरसोंके तेल और पुराने गुड़के साथ दो। सूजनमें दशमूलके काढ़ेके साथ दो। अग्निमांद्यमें लौंगोंके चूर्णके साथ दो। दो गोली सेवन करने से तत्काल आराम होता है। सब तरहके रोगोंमें आम-दोपकी शान्ति के लिये यह रस दिया जाता है। इससे अग्निकी वृद्धि होती है, इसीसे इसे "अग्निकुमार रस" कहते हैं।

रस-चिकित्सा

नवीन ज्वर-नाशक रस

हिंगुलेश्वर रस

छोटी पीपल, शुद्ध हिंगलू और शुद्ध वत्सनाभ विष—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, खरलमें डालकर, पानीके साथ घोटो और आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

यह रस वातज्वरको नाश करता है। अनुपान—अदरखका रस और शहद।

शीतभंजी रस

शुद्ध हिंगुलका पारा १ तोले, शुद्ध हिंगुल १ तोले, शुद्ध गंधक १ तोले और शुद्ध जमालगोटेके बीज १ तोले—इनको दन्तीकी जड़के काढ़ेके साथ खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इसके सेवनसे नवीन ज्वर शीघ्र ही भाग जाता है। अनुपान—अदरखका रस। औषधि खानेके बाद, गन्नेका रस और मूंगकी दालका पानी देना चाहिये।

तरुण ज्वरारि रस

शुद्ध जमालगोटेके बीज, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ विष और शुद्ध पारा—इन चारोंको समान-समान लेकर, ग्वारपाठेके रसमें घोटकर, आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

यह रस ज्वरमें, पाँचवें, छठे या सातवें दिन देना चाहिये। इसके इस्तेमालसे दस्त होकर ज्वर जाता रहता है।

अनुपान—शर्बत। पथ्य—परवलके पत्ते, मूंगकी दाल और पुराने चाँवल

त्रिपुरभैरव रस

शुद्ध वत्सनाभ विष १ तोले, शुद्ध सुहागा २ तोले, शुद्ध गंधक ३ तोले, ताम्बा-भस्म ४ तोले और शुद्ध जमालगोटेके बीज ५ तोले,—इन सबको, दन्तीकी जड़के काढ़ेमें, ३ घण्टे तक घोटकर, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इसके सेवनसे नया ज्वर, अग्निमांद्य, आमवात, सूजन, आन्त्रशूल, अफारा, बवासीर और कृमिजन्य (कीड़ोंके कारणसे हुए) रोग आराम होते हैं।

अनुपान—(१) सोंठ, कालीमिर्च और पीपल, अथवा (२) अदरखका रस और चीनी। इस रसको सेवन करते हुए भात वग़ैरह पथ्य माठाके साथ खाने चाहियें।

ज्वरधूमकेतु रस

शुद्ध पारा १ तोले, समन्दरफेन १ तोले, शुद्ध हिंगुल १ तोले और शुद्ध गंधक १ तोले—इनको अदरखके रसके साथ, तीन दिन तक, घोटकर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इस रससे नवीन ज्वर जाता रहता है।

वैद्यनाथ बटी

शुद्ध गन्धक ४ माशे, शुद्ध पारा ४ माशे,—दोनोंको खरलमें डाल खूब घोटो, ताकि बिना चमककी कज्जली हो जावे। फिर इसमें कुटकीका कपड़छन किया हुआ चूर्ण २ तोले मिला दो। इसके बाद इसे करेलीके पत्तोंके रसके साथ या त्रिफलाके काढ़ेके साथ तीन दिन तक; खरल करके, दो दो रत्ती या मटर-समान गोलियाँ बना लो।

दोषके बलाबल-अनुसार एक, दो, तीन या चार गोली दिनमें एक, करेलीके रस या पानोंके रस अथवा निवाये पानीके साथ खिला दो।

इसके सेवनसे आन्त्रशूल, नया ज्वर, पाण्डु, अरुचि और सूजन

आदि रोग नष्ट होते हैं। यह मृदु विरेचक या कम दस्त लानेवाला रस है। दस्त होनेके समय दही-भात पथ्य है।

चण्डेश्वर रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध मीठा विष और ताम्बा-भस्म—इनको समान-समान लेकर, सात रोज, अदरखके रसमें खरल करो; फिर सात दिन सम्हालूके पत्तोंके रसमें खरल करो। खरल हो जानेपर आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इसकी मात्रा आधी रत्ती और अनुपान अदरखका रस है। इसको सेवन करते हुए शीतल जलसे स्नान, दूध पीना, आम और कटहल वग़ैरहका भोजन तथा चन्दन और अगर प्रभृतिका लेपन कर सकते हैं, अर्थात् इस रसके साथ ये पथ्य और सुखदायक हैं।

इस रससे वातज, पित्तज और कफजादि सभी नवीन ज्वर जल्दी शान्त होते हैं।

प्रतापमार्त्तण्ड रस

शुद्ध मीठा विष, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध जमालगोटा और शुद्ध सुहागा—इनको बराबर-बराबर लेकर खरलमें डाल, पानीके साथ घोटो और आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो। यह मलबन्ध-युक्त नवीन ज्वरमें लाभदायक है; यानी जिस ज्वरमें दस्तकी क़ब्जी हो उस ज्वरमें इसे देना अच्छा है।

श्रीरसा रस

शुद्ध गंधक १ भाग, शुद्ध पारा १ भाग, कालीमिर्च पिसी-छनी १ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ३ भाग—इन सबको दंतीकी जड़के काढ़ेके साथ, तीन घण्टे तक, घोटकर, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रससे आन्त्रशूल, विष्टम्भ—दस्तक़ब्ज़, वातज्वर और आम-ज्वर आदि नष्ट हो जाते हैं।

नवज्वरांकुश रस

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक १ भाग, शुद्ध हिंगुल ३ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ भाग—सबको दन्तीकी जड़के काढ़ेके साथ, तीन घण्टे, खरल करके, एक-एक-रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

एक गोली खाकर चीनी और जल पीने से नया ज्वर नाश हो जाता है।

रत्नगिरि रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्बा-भस्म, वज्र अभ्रक भस्म और सुवर्ण-भस्म हरेक एक-एक—भाग, लोह-भस्म आधा भाग और वैक्रान्त-भस्म चौथाई भाग—इन सबको मिलाकर भाँगरेके रसमें खरल करो; फिर पर्पटीकी तरह पका लो।

इसके बाद इसके महीन चूर्णको तीन-तीन बार नीचे के रसोंकी भावना दो:—(१) सहँजनेके पत्ते, (२) अडूसेके पत्ते, (३) सम्हालू के पत्ते, (४) बचका काढ़ा, (५) चीतेकी जड़का काढ़ा, (६) भाँगरे का रस, (७) मुण्डीका काढ़ा, (८) दाखोंका काढ़ा, (९) गिलोय का रस, (१०) जयन्तीके पत्तोंका रस, (११) अगस्तियाके पत्तोंका रस, (१२) ब्राह्मीके पत्तोंका रस, और (१३) घृतकुमारी या घीग्वार के पाठेका रस।

सब तेरहों चीज़ोंमें तीन-तीन बार यानी ३९ बार भावना दे लो, तब मूसमें भरकर, ऊपरसे दूसरी मूस ढककर, सन्धियों या जोड़ोंको बन्द कर दो।

इसके बाद इस मूसको बालू भरी हाँड़ीके बीचमें रखकर, हाँड़ीका मुंह बन्द करके, लघु पुटमें पका लो। आग ठण्डी होनेपर, हाँड़ीसे मूस निकालो और मूससे दवा निकालकर रख दो।

इसकी मात्रा १ रत्ती है। अनुपान—पीपल और धनियाका चूर्ण है। यह रस योगवाही है। इससे नया ज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

जया बटी

शुद्ध मीठा विष १ भाग, सोंठका पिसा-छना चूर्ण १ भाग, कालीमिर्च पिसी-छनी १ भाग, पीपलका छना हुआ चूर्ण १ भाग, मोथेका छना हुआ चूर्ण १ भाग, हल्दी पिसी-छनी १ भाग, नीमके सूखे पत्तोंका पिसा-छना चूर्ण १ भाग, वायबिड़ङ्गका पिसा-छना चूर्ण १ भाग और जयन्तीकी जड़का पिसा-छना चूर्ण ८ भाग—इन सबको खरलमें, बकरेके पेशाबके साथ, तीन घण्टे घोटकर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

यह गोली पित्तज्वर और रक्तपित्तसे पैदा हुए ज्वरमें बहुत ही मुफीद है।

नवज्वरेभांकुश

शुद्ध गन्धक, शुद्ध सुहागा, शुद्ध पारा और शुद्ध हरताल—इनको समान-समान लेकर, रोहित मछलीके पित्तेके साथ दो दिन खरल करके रख लो।

इस रससे नया ज्वर पसीने आकर शीघ्र ही उतर जाता है। इसकी मात्रा १ रत्ती। पथ्य—बैंगन, माठा और भात।

महाज्वरांकुश

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध विष १ तोले, शुद्ध काले धतूरेके बीज पिसे-छने ३ तोले, सोंठका छना चूर्ण ३ तोले, कालीमिर्चका छना चूर्ण ३ तोले और पीपलोंका छना हुआ चूर्ण ३ तोले—इन सबको जँभीरी नीबूके रसमें ३ घण्टे खरल करो। फिर ३ घण्टे अदरखके रसमें खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इससे सब तरहके ज्वर चले जाते हैं।

ज्वर-केशरिका

शुद्ध पारा, शुद्ध मीठा विष, सोंठका पिसा-छना चूर्ण, कालीमिर्च पिसी-छनी, पीपल पिसी-छनी, शुद्ध गन्धक, हरड़का पिसा-छना चूर्ण, बहेड़ेका पिसा-छना चूर्ण, आमलोंका पिसा-छना चूर्ण और शुद्ध जमालगोटेके बीज पिसे हुए,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, भाँगरेके रसमें ६ घण्टे खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

(१) नारियलके पानीके साथ खानेसे यह गोली सब ज्वरोंको शान्त करती है।

(२) मरिचके चूर्णके साथ देनेसे सन्निपात-ज्वर नाश होते हैं।

(३) पीपल और सफेद जीरेके चूर्णके साथ देनेसे दाह-ज्वर नाश होता है।

(४) पित्तज्वरमें चीनीके साथ देना चाहिये।

यह रस मलबन्धयुक्त विषमज्वर, भूतज्वर, तिल्ली, मन्दाग्नि, अजीर्ण, सूजन, आन्त्रशूल, गोला, कोढ़ एवं पित्तके रोगोंको नाश करता है।

बालकोंको एक सरसोंके दाने बराबर देना चाहिये। बड़ोंको एक रत्ती देना चाहिये। साधारणतः इसे गरम जलके साथ देते हैं।

चन्द्रशेखर रस

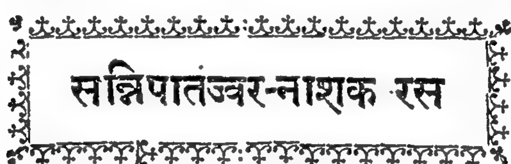
शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध सुहागेकी खील २ भाग, कालीमिर्च पिसी-छनी २ भाग और सबके बराबर ७ भाग पिसी मिश्री—लेकर, रोहित मछलीके पित्तेके साथ खरल करके, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। अनुपान—अदरखका रस और शीतल जल।

इस रससे अत्युग्र—बहुत ही तेज पित्त-कफज्वर तीन दिनमें आराम होता है।

शीतारि रस

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, सुहागेकी खील १ भाग, शुद्ध जमालगोटेके बीज २ भाग, सेंधानोन पिसा-छना १ भाग, काली-मिर्च पिसी-छनी १ भाग, इमलीकी छालकी छनी हुई राख १ भाग और शुद्ध मीठा विष १ भाग—इन सबको जँभीरी नीबुओंके रसके साथ ३।४ घण्टे खरल करके, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

यह रस वातकफज्वर और शीतज्वरकी सर्वोत्तम दवा है।



सन्निपातज्वर-नाशक रस

श्लेष्मकालानल रस

शुद्ध हिंगलूका पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्बा-भस्म, शुद्ध तूतिया-भस्म, शुद्ध मैंनसिल, शुद्ध हरताल, कायफलका चूर्ण, शुद्ध धतूरेके बीजोंका चूर्ण, शुद्ध हींग, सोनामक्खीकी भस्म, मीठे कूटका चूर्ण, निशोथका चूर्ण, दन्तीका चूर्ण, सोंठका चूर्ण, पीपलका चूर्ण, कालीमिर्चका चूर्ण, अमलताशका गूदा, बंगभस्म और सुहागेकी खीलें—ये सब समान-समान लेकर, सेंहुड़ या थूहरके दूधमें खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रससे कफज्वर, सन्निपातज्वर तथा और बहुतसे रोग नाश होते हैं।

कालानल रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, सुहागेकी खीलें, शुद्ध मैन-सिल, शुद्ध हिंगुल, काले साँपका विष, दारमुज विष और ताम्बा-भस्म—इन सबको समान-समान लेकर खूब महीन कर लो। फिर नीचेकी दवाओंकी भावना देकर, राईके दाने समान गोलियाँ बना लो। इस रससे सन्निपात ज्वरका विकार शान्त होता है:—

(१) कलिहारीकी जड़, (२) घोषालताकी जड़, (३) लाल चीतेकी जड़, (४) नरम भुंई आमले, (५) बभनेटी, (६) आककी जड़ और (७) पंचतिक्त-रस।

कालाग्नि भैरव रस

शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध गन्धक २ तोले; इनकी कज्जली करके, गोखरूके रसमें खरल करो और सुखा लो। जब सूख जावे, महीन कर लो।

इसके बाद इसमें—ताम्बा-भस्म ३ तोले, काले साँपका विष (ताम्बेका आठवाँ भाग) ४॥ माशे, शुद्ध हिंगुल १ तोले, शुद्ध धतूरेके बीज २ तोले, गोदन्ती हरताल भस्म ५ तोले, शुद्ध मैनसिल ३ तोले, खपरिया भस्म ६ तोले, शुद्ध सुहागा ३ तोले, शुद्ध जमालगोटेके बीजोंका चूर्ण १ तोले, हलाहल (स्थावर विष) ३ तोले, सोनामक्खीकी भस्म ३ तोले, लोहभस्म १ तोले और बंगभस्म १ तोले,—इन सबको खरलमें डालकर, आकके दूधके साथ, खरल करो।

इसके बाद ३ घण्टे तक दशमूलके काढ़ेके साथ खरल करो और पञ्चमूलके काढ़ेके साथ भी ३ घण्टे तक खरल करो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रससे भयानक सन्निपातज्वर भी भाग जाता है।

मात्रा—१ रत्तीसे २ रत्ती तक। पथ्य—दही-भात वगैरह।

सन्निपात भैरव

शुद्ध पारा, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध गन्धक, शुद्ध हरताल, हरड़का चूर्ण, बहेड़ेका चूर्ण, आमलोंका चूर्ण, शुद्ध जमालगोटेके बीजोंका चूर्ण, निशोथका चूर्ण, शुद्ध धतूरेके बीजोंका चूर्ण, ताम्बा-भस्म, अभ्रक-भस्म, लोह-भस्म, आकका दूध, कलिहारीकी जड़ और सोनामक्खीकी भस्म—इन सबको समान-समान लेकर खरलमें डालो। ये १६ चीजें हैं। इन सोलहकी मिली तोलके बराबर नीचेकी १८ चीजें लो; यानी

ऊपरकी १६ चीजें १६ तोले हों, तो नीचेकी १८ चीजें भी १६ तोले हों। सबको मिलाकर, चौगुने जलमें पकाओ; जब चौथाई पानी रहे उतारकर छान लो। मान लो, सबका वजन १६ तोले हो, तो ६४ तोले जल में पकाओ और १६ तोले जल रहनेपर छान लो। ऊपरकी दवाओंमें इस काढ़ेकी तीस भावनायें दो। सूखनेपर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

भावनाकी चीजें

आककी जड़, मुण्डी, सूरजमुखी, कालाजीरा, काकजंघा, श्योनाक की छाल, मीठा कूट, कालीमिर्च, सोंठ, पीपल, कंटाई, लाल सूर्यमणि का फूल, चन्द्रकान्त, सम्हालूके पत्ते, रुद्रजटा, धतूरेके पत्ते, दन्तीकी जड़ और पीपलीमूल ये १८ चीजें हैं।

सेवन-विधि

अनुपान—अदरखका रस। दस्त हो जानेपर सोंठ और जीरा वग़ैरह डालकर भातका माँड़ पिलाओ। अगर एक गोली देनेसे दस्त न हो, तो दूसरी गोली दो।

सूचना

अगर इस रसके सेवन करते-करते ज्वर चला जावे, लेकिन वात-पीड़ा उठ खड़ी हो; तो उस समय वात-रोगका इलाज करो।

रोग-नाश

इस रससे सन्निपातज्वर, जीर्णज्वर, विषमज्वर, इकतरा, तिजारी, चौथैया और ख़राब जलसे हुए ज्वर नाश हो जाते हैं।

दूसरा सन्निपात भैरव रस

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, शुद्ध हरताल १ भाग, शुद्ध मीठा विष ३ भाग, शुद्ध संखिया १ भाग, काले साँपका विष १ भाग और शुद्ध हिंगुल ८ भाग—इन सबको पानीके साथ घोटकर, सरसोंके समान गोलियाँ बना लो।

सन्निपातज्वरमें एक गोली, अदरखके रसके साथ, देनेसे अवश्य लाभ होता है।

प्राणेश्वर रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म और शुद्ध मीठा विष—इन चारोंको समान-समान लेकर, तालमूलीके रसमें तीन दिन खरल कर के, धूपमें सुखा लो। फिर कुप्पीमें भरकर उसका मुँह बन्द कर दो और और उसपर सात कपड़मिट्टी भी करके धूपमें सुखा लो। पीछे कुण्डमें रखकर पुट दे दो। स्वांग शीतल होनेपर, कुप्पीको निकाल लो। फिर उसका मुँह खोलकर दवा निकाल लो और १२ घण्टे तक खरल करो।

दूसरा काम

काला जीरा, सफेद जीरा, हींग, सज्जीखार, सुहागेकी खील, स्फटिकी, शुद्ध गूगल, पाँचों नमक मिले हुए, जवाखार, अजवाइन, कालीमिर्च और पीपल—इन १२ को अलग-अलग पारेके बराबर ले लो। (जितना पारा लिया हो, उतना ही उतना एक-एकको पीस-कूट कर ले लो)। इनको चौगुने जलमें पकाओ, जब चौथाई पानी रहे उतारकर छान लो। ऊपरकी खरल की हुई दवामें इस काढ़ेकी सात भावना दो। बस, अब प्राणेश्वर रस तैयार है। मात्रा—२ रत्ती, पान में रखकर सेवन कराओ। अनुपान—गरम जल। विचारपूर्वक मन-चाहा खाना दो। शरीरपर चन्दनका लेप करो।

इस रससे अत्युच्च तापांश कम होता तथा शरीर शीघ्र ही स्वस्थ और सबल होता है। इससे तेज नवीन ज्वर, सन्निपात ज्वर, शीत-पूर्वक ज्वर (पहले जाड़ा और पीछे गरमी लगनेवाले ज्वर), दाहपूर्वक विषम ज्वर (पहले ही जलनके साथ चढ़नेवाले ज्वर), गुल्म और त्रिदोषज शूल आदि रोग नाश होते हैं।

शम्भूनाथ रस

शुद्ध पारा ८ माशे; शुद्ध मीठा विष ७ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे,

शुद्ध हरताल ६ माशे, शुद्ध धतूरेके बीजोंका चूर्ण ४ माशे, सोंठका चूर्ण ४ माशे, पीपरोंका चूर्ण ४ माशे, कालीमिर्चोंका चूर्ण ४ माशे, हरड़का चूर्ण ४ माशे, बहेड़ेका चूर्ण ४ माशे, आमलोंका चूर्ण ४ माशे, शुद्ध संखिया ८ माशे,—इन सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे चीतेकी जड़का काढ़ा डाल-डालकर, सात भावना दो। गोली बनाने योग्य होनेपर, सरसोंके दाने-समान गोलियाँ बना लो। यह रस सन्निपात-ज्वरमें बहुत ही हितकर है।

बृहत् कस्तूरीभैरव रस

कस्तूरी, कपूर, धायके फूल, ताम्बा-भस्म, कौंचके बीजोंकी गिरी, चाँदी भस्म, सोना भस्म, मोती भस्म, मूंगा भस्म, लोहा भस्म, आककी जड़, बायबिड़ङ्ग, नागरमोथा, सोंठ, बाला, शुद्ध हरताल, अभ्रक भस्म और आमले—इन १८ को बराबर-बराबर लेकर, आकके पत्तोंके रसके साथ खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इस रससे सब तरहके ज्वर, खासकर सन्निपातज्वर तथा और भी कई तरहके रोग नाश होते हैं।

मात्रा जवानको एक गोली और अनुपान ज्वरमें अदरखका रस है। आमातिसार, ग्रहणी, ज्वरातिसार आदिमें बेलकी गिरी, सफेद जीरा और मधुके साथ सेवन करना उचित है। इससे खाँसी, प्रमेह और हलीमक आदि रोगभी नाश होते हैं।

नोट—संखिया मिलाना इच्छापर निर्भर है। अगर संखिया न डालो, तो एक-एक रत्तीकी गोली बना सकते हो। यही मात्रा उचित है।

बेताल रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष, कालीमिर्चका चूर्ण और शुद्ध हरताल—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ खरल करो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इस रससे साध्यासाध्य १३ प्रकारके सन्निपातज्वर और उनके कारणसे पैदा हुई मूर्च्छा आदि उपद्रव

शान्त होते हैं। ज्वरमें जब दाँती भिच जाय, टेढ़ी दृष्टि हो जावे, ज्ञानेन्द्रियाँ अपना-अपना काम न करें और बेहोशी हो तथा कफसे मुँह भरा हो, तब इसे प्रयोग करो।

चक्री या चाक्री

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष, शुद्ध धतूरेके बीज, कौलीमिर्चोंका चूर्ण, शुद्ध हरताल और सोनामक्खीकी भस्म समान-समान लेकर, दन्तीकी जड़के काढ़ेकी भावना देकर, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इससे साध्यासाध्य १३ सन्निपात नाश होते हैं।

घोर नृसिंह रस

ताम्बा भस्म १ भाग, बंग भस्म १ भाग, लोहा भस्म २ भाग, अभ्रक भस्म ४ भाग, सोनामक्खीकी भस्म १ भाग, शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक १ भाग, शुद्ध मैनसिल १ भाग, काले सर्पका विष ४ भाग, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) ४ भाग, शुद्ध कुचला १२ भाग और कालकूट विष ८८ भाग—इन सबको खरलमें डालो। फिर रोहित मछली, भैंस, मोर और सूअरके पित्तके साथ तीन-तीन घण्टे तक खरल करो। इसके बाद चीतेकी जड़के काढ़ेमें तीन-तीन घंटे खरल करो और सरसों-समान गोलियाँ बना, धूपमें सुखा लो। इससे १३ प्रकारके सन्निपात, हैजा और अतिसार नाश होते हैं।

एक गोली नारियलके जलके साथ देनी चाहिये। प्यास लगनेपर भी नारियलका जल ही पिलाओ।

नोट—कोई-कोई हरताल नहीं डालते और मात्रा आधी रत्ती कहते हैं।

दही, भात और भुँजी मछली खानेको दो। तिल और चन्दन पीसकर शरीर पर लेप करो। रोगी जो चाहे विचार करके दो।

ब्रह्मरन्ध्र रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, शुद्ध हरताल, शुद्ध हिंगुल, काली मिर्च, सुहागेकी खील और सैंधानोन पिसा-छना—सब समान

समान लो। सबके वजनके बराबर शुद्ध विष लो। फिर जितना सबका वजन हो उसका चौथाई भाग भैंसका पित्ता लो और खरल करो।

ब्रह्मरन्ध्रपर उस्तरेसे छीलकर उस जगह इसे लगा दो। अगर इससे गरमी जान पड़े तो स्नान कराओ; चन्दनादिका लेप करो; गन्नेका रस, मूंगकी दाल, माठा और भात दो—ये उस समय पथ्य हैं।

इस रसके तालुपर घाव करके लगानेसे सन्निपात-ज्वरवालेकी अज्ञानता दूर होती और होश होता है।

आनन्द भैरवा बटिका

शुद्ध मीठा विष, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, शुद्ध गन्धक, सुहागेकी खीलें, ताम्बा भस्म, धतूरेके बीज और शुद्ध हिंगुल—इन नौ चीजोंको समान-समान लेकर, भाँगके रसमें दिन-भर घोटो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस बटिकासे सन्निपात-रोगीको लाभ होता है। अनुपान—आककी जड़का काढ़ा और त्रिकुटेका चूर्ण दो रत्ती।

नोट—आककी जड़ एक माशे लेकर ३२ तोले जलमें पकाओ जब ८ तोले जल रह जाय, उतारकर छान लो।

मृतोत्थापनो रस

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध मैनसिल १ भाग, शुद्ध मीठा विष १ भाग, शुद्ध शिंगरफ १ भाग, कान्तपाषाण या चुम्बक-पत्थरकी भस्म १ भाग, अभ्रक भस्म १ भाग, ताम्बा भस्म १ भाग, लोह-भस्म १ भाग, शुद्ध हरताल १ भाग और सोनामक्खीकी भस्म १ भाग, इन ग्यारह को (१) अम्लवेत, (२) जँभीरी नीबू, (३) चूका (तिपतिया), (४) सम्हालूके पत्तों, और (५) हस्ति-शुण्डीके स्वरसके साथ तीन-तीन दिन, अलग-अलग खरल करो। फिर इस मसालेको भूधर-यन्त्रमें पाक करो। इसके बाद चीतेके काढ़ेमें ६ घण्टे खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

अनुपान—हींग, त्रिकुटा, कपूर और अदरखका रस। इसे सन्नि-पातज्वरमें तब दो जबकि रोगीका अन्त समय दीखता हो।

कुलबधू

शुद्ध पारा, शीशा भस्म-, ताम्बा भस्म, शुद्ध मैनसिल तथा शुद्ध नीलाथोथा—बराबर-बराबर लेकर इन्द्रवारुणी या इन्द्रायणके रसके साथ १२ घण्टे तक खूब खरल करो और चने समान गोलियाँ बना लो।

इसको जलमें घिसकर नस्य देनेसे सन्निपातज्वर-रोगीकी बेहोशी दूर होती है।

सौभाग्य बट

सुहागेकी खीलें, शुद्ध मीठा विष, सफेद जीरेका चूर्ण, सैंधानोन पिसा हुआ, समन्दरनोन पिसा हुआ, साँभरनोन पिसा हुआ, बिड़नोन पिसा हुआ, कालानोन पिसा हुआ, सोंठका चूर्ण, कालीमिर्चका चूर्ण, पीपलोंका चूर्ण, हरड़का चूर्ण, बहेड़ेका चूर्ण, आँवलोंका चूर्ण, अभ्रक-भस्म, शुद्ध गन्धक, और शुद्ध पारा, इन सबको खरलमें डालो। फिर सफेद और नीले फूलवाले सम्हालूके पत्तों, भाँगरा, अड़ूसा और चिर-चिरेके पत्तोंके रसमें, अलग-अलग, सात-सात, भावना दो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंसे त्रिदोषके कारण हुए रोग नष्ट होते हैं। जिन्हें बहुत ही शीत एवं दाह हो, पसीने आते हों, घोर नींद आती हो, इन्द्रियाँ विकल हों और मन मुग्ध हो—उन्हें इसे दो। इससे शूल, श्वास, खाँसी, मूर्च्छा, अरुचि, घोर प्यास और ज्वरादि नाश होते हैं।

मृत सञ्जीवन रस

शुद्ध पारा १ भाग और शुद्ध गन्धक २ भाग, इनकी कज्जली करके अभ्रक भस्म १ भाग, लोह भस्म १ भाग, ताम्बा भस्म १ भाग, शुद्ध मीठा विष १ भाग, शुद्ध हरताल १ भाग पीली कौड़ीकी भस्म १ भाग,

शुद्ध मैनसिल १ भाग, शुद्ध शिङ्गरफ १ भाग, चीतेका चूर्ण १ भाग, हस्तिशुण्डीका चूर्ण १ भाग, अतीसका चूर्ण १ भाग, सोंठका चूर्ण १ भाग, पीपरोंका चूर्ण १ भाग, कालीमिर्चका चूर्ण १ भाग, सोना-मक्खीकी भस्म १ भाग—इन सबको तीन-तीन दिन, अलग-अलग, क्रमसे, (१) अदरखके रस, (२) सम्हालूके पत्तोंके रस, तथा (३) भाँगके रसमें खरल करके धूपमें सुखा लो। इसके बाद बोतलमें भरकर, बोतल पर सात कपरौटी करके, ६ घंटे तक, बालुका-यन्त्र द्वारा पकाओ।

मात्रा १ से २ रत्ती। अदरखके रसके साथ घोटकर सन्निपात-ज्वरमें देनेसे मरता हुआ रोगी जी जाता है।

नोट—बालुका-यन्त्रमें पकानेसे पहले नीचेके अघोर मन्त्र द्वारा इसकी रक्षा और पूजा कर लो

ॐ अघोरेभ्यश्च अघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च।
सर्वतः सर्वेभ्यो नमोऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

सूचिकाभरण रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शीशा भस्म, शुद्ध मीठा विष और काले सर्पका विष—इन पाँचोंको समान-समान लेकर क्रमशः (१) रोहित मछली, (२) सूअर, (३) मोर, और (४) बकरीके पित्तेके साथ, अलग-अलग सात-सात भावना दो।

जब रोगीकी अन्त अवस्था दीखे, तब सूईके अग्र भाग-भर रोगीके मुखमें दो। अगर रोगी मुखसे सेवन न कर सके तो ब्रह्मरन्ध्र—तालुमें—उस्तरेसे चीरकर, उसी घावमें, सूईके अगले भागमें इसे भर-कर लगा दो और और मल दो। गरमी जान पड़े तो शीतल उपचार करो।

दूसरा सूचिकाभरण रस

शुद्ध मीठा विष ८ तोले और शुद्ध पारा ४ माशे—इनको मिलाकर

तब तक घोटो जब तक कि पारेकी चमक न चली जाय। पीछे काच लिप्त सराइयोंमें बन्द कर कपड़मिट्टी करो और सुखा लो। फिर चूल्हे या ईंटोंपर रखकर, अंगूठे जितनी मोटी आगकी लौपर, ६ घण्टे, पकाओ। इसके बाद धीरेसे सराई उतारकर खोलो। ऊपरकी सराईमें जो धूआँ-सा मिले, उसे एक Stoppard शीशीमें रख दो, ताकि उसमें हवाका अंश न घुसे।

उस्तरेसे सिरपर छीलकर, उस घावमें उतनी ही यह दवा भरो जितनी कि सूईकी अगली नोकमें लगे। फिर उस जगह उँगलीसे घिसो। थोड़ी देरमें सन्निपातज्वर-रोगी या साँपका काटा रोगी होशमें आ जावेगा। अगर शरीरमें ताप हो आवे, तो गन्नेका रस वगैरह मधुर पदार्थ दो।

तीसरा सूचिकाभरण रस

शुद्ध मीठा विष १ माशे, सर्प विष १ माशे, शुद्ध संखिया १ माशे और शुद्ध हिंगुल ३ माशे, इनको मिलाकर—एक-एक दिन, अलग-अलग, रोहित मछली, भैंस, मोर और बकरीके पित्तेके साथ खरल करो और सरसों-समान गोलियाँ बना लो।

अनुपान—अदरखका रस। इसके सेवन करते समय तिलीका तेल मालिश कराओ। खानेको दही-भात, तिल, नारियलका जल आदि शीतल पदार्थ दो। अगर इसके सेवनसे बहुत ही गरमी हो यानी आँखें लाल हो जावें, तो शीतल जलसे स्नान भी करा सकते हो और माथे पर शीतल जलसे भीगा कपड़ा भी रख सकते हो।

मृगमदासव

मृतसंजीवनी सुरा २०० तोले, शहद १०० तोले, पानी १०० तोले, कस्तूरी १६ तोले, कालीमिर्च ८ तोले, नमक सैंधा ८ तोले, जायफल ८ तोले, पीपल ८ तोले और दालचीनी ८ तोले—इन सबको एक मिट्टी या चीनीके वर्तनमें रखकर मुँह बन्द कर दो और एक महीने तक

रखा रहने दो; फिर छानकर निकाल लो और काँचके भाँड़में रख दो।

इसको १० से ३० बूंद तक देनेसे हैजा, हिचकी और सन्निपात ज्वरमें लाभ होता है।

दूसरा मृगमदासव

मृतसंजीवनी सुरा २०० तोले, कस्तूरी १६ तोले, कालीमिर्च ८ तोले, लौंग ८ तोले, जायफल ८ तोले, पीपल ८ तोले तथा दालचीनी ८ तोले—इन सबको एक मिट्टीके वर्तनमें भरकर मुँह बन्द कर दो और सात दिन तक रक्खा रहने दो। आठवें दिन कपड़ेमें छान लो। मात्रा १० से ३० बूंद तक। इससे भी हैजा, हिचकी और सन्निपात-ज्वर आराम होते हैं।

नोट—अगर समयपर मृतसञ्जीवनी सुरा न हो, तो कोई तेज़ शराब उसके बदले में ले सकते हो।

मृत संजीवनी सुरा

दो सालका पुराना गुड़ ३२ सेर, कुटी हुई बबूलकी छाल ८० तोले, अनारकी छाल, अड़ूसेकी छाल, मोचरस, बराहक्रांता, अतीस, असगन्ध, देवदारु, बेलकी छाल, श्योनाककी छाल, पाटलाकी छाल, सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेर, बड़े खीरेकी जड़, चीतेकी जड़, आलकुशी बीज और पुनर्नवा—इन २० चीजोंको दो-दो तोले लो। फिर इन सबको कूटकर, १५६ सेर (चार सेर कम चार मन) पानीमें मिलाकर, मिट्टीकी पक्की गोलोंमें भरकर, मुँह बन्द करके रख दो। १६ दिन मत छेड़ो।

इसके बाद, कुटी हुई सुपारी ४ सेर, धतूरेकी जड़, लौंग, पद्माख, खसकी जड़, लाल चन्दन, सोवा, अजवायन, गोलमिर्च, सफेद जीरा, काला जीरा, शठी, जटामाँसी, दालचीनी, इलायची, जायफल, मोथा, गठिवन, सोंठ, मेथी, मेढ़ासींगी और सफेद चन्दन—इन २१ दवाओं को आठ-आठ तोले लेकर, कूटकर, सत्रहवें दिन गोलोंका मुँह खोलकर

उन्हींमें भर दो और मुँह बन्द कर दो। फिर ४ दिन मत छेड़ो। पाँचवें दिन बकयन्त्र द्वारा चुआ कर, शराब बना लो।

इससे घोर सन्निपात ज्वर और हैजा आदि नाश होते तथा शरीर-पर रौनक आती, मजबूती और पुष्टि होती है। बल, अग्नि और उम्रके माफिक इसकी मात्रा नियत करनी चाहिये।

जीर्ण और विषमज्वर-नाशक रस

पञ्चानन रस

शुद्ध बच्छनाभ विष पिसा-छना दो तोले, काली मिर्च पिसी-छनी चार तोले, शुद्ध गन्धक पिसी हुई तीन तोले, शुद्ध हिंगुल एक तोले और ताम्बा भस्म दो तोले—इन पाँचोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे आककी हरी जड़का रस डालो और खरल करके एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रससे तेज़ और जबर्दस्त बुखार भी जाता रहता है। इसे रोगीको खिलाकर शीतल क्रियायें करनी चाहियें। इसपर सेंधानोन, हरीतकी, शहद, दही-भात, सुगन्धित चीज़ोंका लेपन, शीतल जल दूध और अनार पथ्य हैं।

ज्वराशनि रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सेंधानोन, शुद्ध मीठा विष और ताम्बा-भस्म—ये सब बराबर-बराबर एक-एक तोले लो और इन सबके बराबर पाँच तोले लोहा-भस्म और पाँच तोले अभ्रक-भस्म लेकर मिला लो। फिर इन दवाओंके चूर्णको लोहेके खरलमें डाल ऊपरसे सँभालूके पत्तोंका रस डालो और लोहेकी मूसलीसे खरल करो। फिर पारेके वज़नके बराबर (एक तोले) कालीमिर्चोंका पिसा-छना चूर्ण डालकर घोटो और घुट जाने पर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रसके देनेसे जीर्णज्वर—बहुत दिनोंका पुराना बुखार—तपेकोन:, विषमज्वर, धातुगत प्रबल ज्वर, दाह ज्वर, श्वास, खाँसी, धातुस्थ दाह, यकृत रोग—लिवरकी खराबी, तिल्ली, गोला, पेटका रोग और शोथ—सूजन आदि रोग नाश होते हैं।

श्री जयमङ्गल रस

हिंगुलका निकाला पारा १॥ माशे, शुद्ध गन्धक १॥ माशे, सुहागेकी खीलें १॥ माशे, ताम्बा-भस्म १॥ माशे, बंग-भस्म १॥ माशे, सोना-मक्खीकी भस्म १॥ माशे, पिसा-छना सैंधानोन १॥ माशे, पिसी-छनी कालीमिर्च १॥ माशे, सुवर्ण-भस्म ३ माशे, कान्त लोहाभस्म १॥ माशे और चाँदी भस्म १॥ माशे—इन ग्यारह चीजोंको एक जगह खरलमें डाल (१) धतूरेके पत्तोंके रसमे ३ दिन खरल करो, (२) हार-सिंगारके पत्तोंके रसमें ३ दिन खरल करो, (३) दशमूलके काढ़ेमें तीन दिन खरल करो, और (४) चिरायतेके काढ़ेमे ३ दिन खरल करो। अन्तमे दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इसका अनुपान जीरेका चूर्ण और शहद है। यह रस सब तरहके ज्वरोंको निश्चय ही नाश करता है। कैसा ही ज्वर हो इससे ठहर नहीं सकता। जीर्ण ज्वर, आठों तरहके ज्वर, साध्यज्वर, असाध्य ज्वर, विषम ज्वर और धातुगत ज्वर, आदि समस्त ज्वरसंज्ञक रोगोंको यह नाश करता है।

ज्वर कुञ्जर पारीन्द्र रस

रससिन्दूर दो तोले, अभ्रक भस्म एक तोले, चाँदी भस्म चार तोले, सोनामक्खीकी भस्म चार तोले, रसौत चार तोले, खपरिया भस्म चार तोले, ताम्बा भस्म चार तोले, मोती भस्म चार तोले, मूंगा भस्म चार तोले, लोहा भस्म चार तोले, शुद्ध शिलाजित चार तोले, सोनागेरू चार तोले, शुद्ध मैनसिल चार तोले, शुद्ध गंधक चार तोले और सुवर्ण भस्म चार तोले—इन पन्द्रह चीजोंको खरलमें डालकर, नीचे लिखी हुई

दवाओंके रसोंमें तीन-तीन भावना देकर तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

भावनाकी चीजें

मदार, तुलसी, पुनर्नवा, गणियारी—अरनी, भुंइ आमले, घोषा-लता, चिरायता, सुदर्शना, कलिहारी, मालकाँगनी, मुँगवन और प्रसा-रिणी—इन बारहके रसोंमें तीन-तीन भावना देकर गोलियाँ बना लो।

यह रस अग्निदीपक तथा तरह-तरहके रोग-नाशक है। सन्तत, सतत, अन्येद्युः, तिजारी, चौथैया समस्त ज्वर और खाँसी, श्वास, प्रमेह, सूजन, पाण्डु, कामला, ग्रहणी और क्षय प्रभृति रोगोंको नाश करता है।

सर्वज्वरांकुश बटी

शुद्ध पारा १ तोला और शुद्ध गन्धक १ तोला, पहले इनकी निश्चन्द्र कज्जली कर लो। पीछे कज्जलीमें—कालीमिर्च, सोंठ, पीपल, दालचीनी, शुद्ध जमालगोटा, मीठा कूट, चिरायता और नागरमोथा—प्रत्येकका पिसा-छना चूर्ण एक-एक तोले मिला दो। फिर खरलमें डालकर एक भावना सम्हालूके पत्तोंके रसकी और एक भावना अद-रखके रसकी दो। पीछे दो-दो रत्तीकी गोलियां बना लो।

गोली खिलाकर रोगीको कपड़े उढ़ा दो। इस सर्वज्वरांकुश बटीसे सब तरहके ज्वर नाश होते हैं। वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर, सब तरहके विषमज्वर, प्रकृतज्वर, वैकृतज्वर, वातकफज्वर, अन्तर्गतज्वर, बहिस्तज्वर, निरामज्वर, सामज्वर आदि सभी ज्वर इन गोलियोंसे इस तरह नाश होते हैं, जिस तरह बिजलीसे पेड़ नाश होते हैं।

सर्वज्वरहर लोह

चीतेकी जड़, हरड़के छिलके, बहेड़ेके छिलके, आमले गुठली निकाले हुए, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, वायबिडङ्ग, नागरमोथा, गज-पीपर, पीपलामूल, खसकी जड़, देवदारु, चिरायता, गन्धबाला, कुटकी,

छोटी कटेरी, सहँजनेके बीज, परवलके पत्ते, मुलेठी और इन्द्रजौ—ये सब एक-एक तोले लो और लोह भस्म सबके बराबर २१ तोले लो। फिर खरलमें डाल, पानीके साथ खरल करो और एक-एक रत्तीकी गोली बना लो। इस रससे सब तरहके ज्वर, तिल्ली, अग्रमांस और यकृत रोग नष्ट होते हैं।

बृहत् सर्वज्वरहर लौह

शुद्ध पारा २ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, ताम्बा-भस्म २ तोले, अभ्रक-भस्म २ तोले, सोनामक्खीकी भस्म २ तोले, सुवर्ण भस्म २ तोले, चाँदीकी भस्म २ तोले, शुद्ध हरताल २ तोले और कान्त लौह भस्म ८ तोले—इन नौ चीज़ोंको खरलमें डालकर (१) करेलीके पत्ते, (२) दशमूल, (३) पित्तपापड़ा, (४) त्रिफला; (५) गिलोय, (६) पान, (७) काकमाची, (८) सम्हालूके पत्ते, (६) पुनर्नवा, और (१०) अदरख—इन दसोंके रस या काढ़ोंकी अलग-अलग सात-सात भावना देकर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रसके सेवन करनेसे आठों तरहके ज्वर, दुर्जल ज्वर, सतत, सन्तत, अन्येद्युः, तिजारी, चौथैया वग़ैरह विषमज्वर, क्षय ज्वर, धातुगत ज्वर, काम-ज्वर, शोकज्वर, भूताविशेष ज्वर, नक्षत्र-दोषसे पैदा हुआ ज्वर, अभिघात ज्वर, अभिचार ज्वर, अभिन्यास ज्वर, सन्निपात ज्वर, शीत ज्वर, दाह ज्वर, प्रलेपक ज्वर, अर्द्धनारीश्वर ज्वर, प्लीहा-ज्वर, चातुर्थिक विपर्यय, पाण्डु, कास और मन्दाग्नि रोग नाश होते हैं।

पथ्य—भात, माठा और पक्षियोंका मांस।

अपथ्य—पेठा और स्त्री-भोग वग़ैरह मना है। जब तक रोगी निरोग होकर बलवान न हो जावे; ऐसा काम यानी मैथुन वग़ैरह न करना चाहिये।

अनुपान—पुराना गुड़ और पीपलोंका चूर्ण है। किसी तरहका भी ज्वर इस रससे सात दिनमें भाग जाता है।

विषमज्वरान्तक लोह

शुद्ध पारा २ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, ताम्बा भस्म १ तोले, सोनामक्खीकी भस्म १ तोले और लोहा भस्म ६ तोले—इन सबको खरलमें मिलाकर (१) जयन्तीके पत्तोंके रसमें, (२) तालमखानेके रस में, (३) अडूसेके पत्तोंके रसमें, (४) अदरखके रसमें, और (५) पानोंके रसमें अलग-अलग हरेककी पाँच-पाँच भावना देकर, मटर-समान या दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इस रससे विषमज्वर, तिल्ली और गोला नाश होता है। बहुत करके यह रस अग्निवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकर तथा हृदय और नेत्रोंको सुखदायी है।

पुटपक्व विषमज्वरान्तक लौह

हिंगलूका पारा १ तोले और शुद्ध गन्धक १ तोले—इन दोनोंको खरल करके कज्जली कर लो। फिर इस कज्जलीको पर्पटीकी तरह पका लो। एक लोहेकी कलछीमें कज्जली रखकर आगपर तपाओ, जब पतली कीच-सी हो जावे, उतारकर केलेके पत्तेपर फैला दो और शीघ्र ही दूसरे केलेके पत्तेसे ढक और दबाकर, ऊपरसे गोबर रख दो।

पीछे इस पर्पटीके साथ, सुवर्ण भस्म २ माशे, लोह भस्म २ तोले, ताम्बा भस्म २ तोले, अभ्रक भस्म २ तोले, बंग भस्म ४ माशे, सोना-गेरू ४ माशे, मूँगा भस्म ४ माशे, मोती भस्म २ माशे, शङ्ख भस्म २ माशे और सीपी भस्म २ माशे, इन ग्यारहों चीजोंको एक जगह खरल करके, जलके साथ घोटो और गोला-सा बनाकर एक सीपमें रखो; ऊपरसे दूसरी सीप रखकर, जोड़ोंको मसालेसे बन्द कर दो। पीछे इस सीपको कपोत पुट दो। जब गन्धककी गन्ध आने लगे, तब इसे आगसे निकाल लो। सीपको खोलकर भीतरसे दवाको निकालकर शीशीमें रख दो। इसकी मात्रा एकसे दो रत्ती तक है। अनुपान—पीपलोंका चूर्ण, हींग और सेंधानोन है।

यह रस विषमज्वर नाश करनेमें खूब मशहूर है। यह अग्निदीपक

और बल-वर्ण-वर्द्धक है। इससे आठों तरहके ज्वर, तिल्ली यकृत—जिगर—लिवर, सतत ज्वर, सन्तत ज्वर आदि विषमज्वर, कामला (कमल वायु), पाण्डु रोग, सूजन, मेह, अरुचि, ग्रहणी, आम-दोष, खाँसी, श्वास, मूत्रकृच्छ्र और अतिसार आदि रोग नाश होते हैं।

जीवनानन्दाभ्र

अभ्रक भस्म ४ तोले, सफेद जीरेका चूर्ण २ तोले और शुद्ध धतूरेके बीज २ तोले—इन तीनोंको खरलमें डाल, अडूसा, छोटी कटेरी, आमले और मोथेके रसमें, अलग-अलग, खरल करके एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इस रसके सेवन करनेसे विषमज्वर, तिल्ली, यकृत-लिवर, वमन या क़ै, रक्तपित्त, वातरक्त-गठिया, ग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, शूल, जी मिचलाना तथा बवासीर आदि रोग नष्ट होते हैं। यह रस पुष्टि-कारक, बलदायक, अग्निवर्द्धक और रसायन है।

वसन्तमालती रस

सुवर्ण भस्म १ भाग, मोती भस्म २ भाग, शुद्ध हिंगुल ३ भाग, कालीमिर्च ४ भाग और खपरिया भस्म ८ भाग—इन सबको पहले ज़रा-से मक्खनके साथ खरल करो; पीछे इसमें नीबूका रस डाल-डाल-कर तब तक खरल करो जबतक कि चिकनाई एकदम न जाती रहे। जब चिकनाइ न रहे तब एक-एक रत्तीकी या चार-चार रत्तीकी टिकियाँ बना लो। इसकी मात्रा दो रत्तीकी है। अनुपान—पीपलोंका चूर्ण और शहद है।

इसके सेवनसे जीर्णज्वर, विपमज्वर तथा खाँसी और मन्दाग्नि वग़ैरह रोग नाश होते हैं। यह रस अग्नि-प्रदीपक है। पुराने ज्वरकी यह मशहूर दवा है। इसके सेवनसे रोगी निरोग तो होता ही है; साथ ही बलवान भी हो जाता है।

महाराज बटी

शुद्ध पारा २ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, अभ्रक भस्म २ तोले, विधारेके बीज १ तोले, बङ्ग भस्म १ तोले, लोह भस्म १ तोले, सुवर्ण भस्म ६ माशे, ताम्बा भस्म ६ माशे, भीमसेनी कपूर ६ माशे—भाँगके बीज, शतावर, सफेद राल खानेकी, लौंग, तालमखानेके बीज, बिदारीकन्द, मूसली, कौंचके बीजोंकी गिरी, जायफल, जावित्री, बला, नागबला—हरेक चौथाई तोले—सबको खरलमें डालकर, मूसलीके रस या काढ़ेके साथ खरल करके, चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

अनुपान—शहद।

इसके सेवन करनेसे नाना प्रकारके ज्वर, खाँसी, श्वास, राजयक्ष्मा, कामला, पाण्डु रोग, प्रमेह और रक्तपित्त आदि रोग नाश होते हैं। यह रस बल और बीर्यको बढ़ाता तथा पुष्टि करता है।

मकरध्वज

सोनेके पतले पत्तर ८ तोले, शुद्ध पारा ६४ तोले और शुद्ध गन्धक १२८ तोले लाकर रखो। पहले सोनेके पत्तर और पारेको खूब खरल करो, पीछे इसमें गन्धक मिलाकर खरल करो और कज्जली कर लो।

फिर इस कज्जलीको घीग्वारके रसमें खरल करके सुखा लो। सूखनेपर कपरौटी की हुई काली बोतलमें इसे भर लो, पीछे बालुकायन्त्रमें रखकर तीन दिन-रात आग लगाओ। स्वाँग शीतल होनेपर, बोतलके गलेमें लगा हुआ चमकदार माल निकाल लो।

नोट—इसके पकाने वगैरहकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथे भाग सफा २२२-३२ में देखिये। वहाँ खूब समझाकर लिखा है।

इसकी मात्रा १ जौ भर या आधी रत्ती है। पानमें रखकर खानेसे रसायन है—बुढ़ापा नाश करता है। पानोंके रस और अदरखके रसमें चटानेसे सन्निपातज्वर नाश करता है। अनुपान विशेषसे यह मंदाग्नि-अरुचि और नामर्दी आदि रोगोंमें बड़ा फायदा करता है।

त्र्याहिकारि रस

खपरिया भस्म २ तोले, शंख भस्म २ तोले और शुद्ध तूतिया ६ माशे इन सबको मिलाकर, गोजी, जयन्ती और चौलाईके रसमें, अलग-अलग, सात-सात भावना दो। फिर सुखाकर रख लो। मात्रा—आधी रत्ती। अनुपान——पुराना घी । इससे त्र्याहिकज्वर या तिजारी (तीसरे दिन चढ़नेवाला) ज्वर शान्त हो जाता है।

चतुर्थकारि रस

शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध तूतिया, शङ्ख, भस्म और शुद्ध गन्धक—इनको बराबर-बराबर लेकर घीग्वारके रसमें खरल करके टिकिया बना लो। टिकियोंको शराब-सम्पुटमें बन्दकर गजपुटकी आग दो। स्वाँग शीतल होने पर, निकाल लो और घीग्वारके रसमें घोटकर आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इस रससे शीतज्वर, विशेषकर चौथैया ज्वर जो चौथे दिन आता है नाश होता है। सेवन विधि—इसे सेवन करनेसे पहले कालीमिर्च और घी मिली छाछ पीओ। पीछे इस रसको खाओ। इन रसके खानेसे वमन या क़ै होंगी और चौथैया भाग जायगा।

दूसरा त्र्याहिकारि रस

शुद्ध पारा १ तोले शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध मैनसिल १ तोले, शुद्ध हरताल १ तोले, पिसा-छना अतीस ४ तोले, लोह भस्म २ तोले और चाँदी भस्म आधा तोले—इन सबको खरलमें डाल, ऊपरसे नीमकी छालका रस या काढ़ा डाल-डालकर घोटो। घुटनेपर तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इस रससे त्र्याहिक ज्वर—तिजारी—तीसरे दिन चढ़नेवाला ज्वर एवं अन्य सब विषमज्वर नाश होते हैं।

ज्वरकालहेतु रस

शुद्ध पारा, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध गन्धक, ताम्बा भस्म, शुद्ध मैनसिल,

शुद्ध भिलावे और शुद्ध हरताल—इन सातोंको खरलमें डालकर, थूहरके दूधके साथ घोटो और टिकियाँ बना लो। सूखने पर टिकियोंको शराब-सम्पुटमें रख, गजपुटमें फूँक दो। स्वाँग शीतल होनेपर निकाल लो।

इसकी मात्रा—आधी रत्ती। अनुपान—मधु।

इस रसको मनुष्योंकी भलाइके लिये महादेवने पार्वतीसे कहा था। इससे आठों ज्वर नाश होजाते हैं।

त्रिपुरारी रस

शुद्ध हिंगलूका पारा, ताम्बा भस्म, शुद्ध गन्धक, लौह भस्म, अभ्रक-भस्म और शुद्ध मीठा विष—हरेक दो-दो तोले और चाँदीकी भस्म एक तोले लेकर खरलमें डालो और अदरखके रसके साथ घोट-कर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

अनुपान—चीनी और अदरखका रस।

इससे आठों तरहके ज्वर, दुर्जल ज्वर, तिल्ली, उदर-रोग, सूजन तथा अतिसार आदि रोग नाश होते हैं।

स्वच्छन्द भैरव रस

शुद्ध पारा २ माशे, शुद्ध गन्धक २ माशे, शुद्ध मीठा विष २ माशे, जायफल १ माशे और पीपलोंका पिसा-छना चूर्ण ३॥ माशे—इन सबको खरल करके, आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

पानके पत्तेमें रखकर अथवा अदरख या गोमा (द्रोणपुष्पी) के रसके साथ सेवन करना चाहिये।

पथ्य—दोषोंके बलाबलका विचार करके दही चाँवल आदि देना चाहिये। इस रससे शीतज्वर—जाड़ेका बुखार, सन्निपातज्वर, विशूचिका—हैज़ा विषमज्वर, पीनस, ज़ुकाम, ज्वर, अजीर्ण, मन्दाग्नि, वमन और भयानक सिरका रोग आदि रोग नाश होते हैं हैं।

कल्पतरु रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध विष और ताम्बा-भस्म—हरेक

बराबर-बराबर लेकर—एक दिन सूअरके पित्तेके साथ, एक दिन बकरे के पित्तेके साथ, एक दिन भैंसके पित्तेके साथ, एक दिन रोहू मछलीके पित्तेके साथ और एक दिन मोरके पित्तेके साथ खरल करो, फिर सात दिन सँभालूके पत्तोंके रसमें खरल करो और अन्तमें तीन दिन अदरख के रसमें खरल करो और सरसों-समान गोली बना छायामें सुखा लो।

दोष, अग्नि और अवस्थाका विचार करके लगातार २१ दिन तक एक-एक गोली रोज़ रोगीको खिलाओ। जब तक पसीने आवें कपड़ा उढ़ाये रखो। पसीना आ चुकनेपर दही-चीनी मिलाकर खिलाओ।

इसका अनुपान—पीपलका चूर्ण और गरम पानी है।

इस रससे जीर्णज्वर, विषमज्वर, ज्वरातिसार, पाण्डु और कामला रोग आराम होते हैं।

नोट—जिस रोगीको श्वास, खाँसी और शूल रोग हो उसे यह रस हरगिज न देना चाहिये।

अमृतारिष्ट

गिलोय १२॥ सेर और दशमूल १२॥ सेर, इनको २५६ सेर (६ मन १६ सेर) पानीमें डालकर औटाओ, जब २४ सेर जल रहे, उतारकर छान लो।

फिर इस छने हुए २४ सेर काढ़ेमें ३१॥ सेर गुड़ पुराना (१ सालका), काला जीरा २ सेर, पित्तपापड़ा १ पाव, छातिमछाल ४ तोले, सोंठ ४ तोले, मिर्च ४ तोले, पीपल ४ तोले, मोथा ४ तोले, नागकेशर ४ तोले, कुटकी ४ तोले, अतीस ४ तोले और इन्द्रजौ ४ तोले—ये सब अधकचराकर मिला दो और मिट्टीके बड़े बर्तनमें भरकर मुंह अच्छी तरह बन्द करके १ महीना रक्खा रहने दो। इसके बाद काममें लो। इस अरिष्टसे समस्त ज्वर शान्त होते हैं।

परीक्षित शीतज्वरारि वटी

शुद्ध वत्सनाभ विष, शुद्ध सुहागा, मकरध्वज, कौड़ी-भस्म, मूंगा

भस्म और लोहा भस्म—हरेक तीन माशे, कालीमिर्च १ तोले, छोटी इलायचीके बीज १ तोले और दालचीनी १ तोले—सबको कूट-पीस और छानकर खरलमें तोल-तोलकर डालो; फिर नीबुओंका रस दे-देकर खरल करो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

ये गोलियाँ चढ़े ज्वरमें नहीं दी जातीं। ज्वर चढ़नेसे आठ घण्टे पहले, दो-दो घण्टेमें, एक-एक गोली शहद्के साथ पीसकर देनी चाहिये। एक दिनमें ४-५ गोली तक दी जा सकती हैं। जब ज्वर चढ़ आवे, गोली मत दो। फिर दूसरे दिन ज्वर न होनेकी हालतमें, जब टेम्परेचर ६७ या ६८ डिग्री हो, गोली दे सकते हो। इनसे एक या दो दिनमें ज्वर भाग जाता है।

इन गोलियोंसे जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर, बहुत ही कँप-कँपी, शरीरकी ऐंठनी, कफ, खाँसी और दिलकी कमज़ोरी आराम होती है। यकृतकी ख़राबी या तिल्लीके बढ़नेसे होनेवाले मन्दे मन्दे ज्वर और जीर्णज्वरभी नाश होते हैं। नये जूड़ी ज्वरको ये गोलियाँ रोक देती हैं। मलेरिया-ज्वरोंमें जहाँ कुनैन फेल हो जाती है ये गोलियाँ फेल नहीं होतीं।

सुपरीक्षित सर्व ज्वर-नाशक बटी

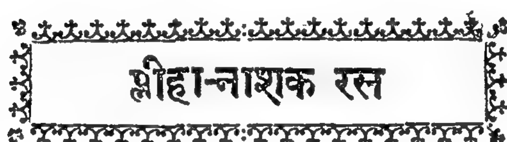
बंसलोचन, छोटी इलायचीके दाने, सत्त गिलोय, गुलबनफशा, गावजुबाँके फूल, गुलाबके फूल, उन्नाव और विलायती शीरेखिस्त—ये सब एक-एक तोले, अभ्रक भस्म ३ माशे, एवं मूंगा भस्म ३ माशे—इन सबको मिलाकर खरल करो और तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंसे सब तरहके नये-पुराने ज्वर रामवाणकी तरह नाश होते हैं, अर्थात् ये सब तरहके ज्वरोंपर अचूक हैं और खूबी यह है कि हर मिज़ाजके आदमीको मुआफ़िक़ आ जाती हैं। कमज़ोर, बालक, बूढ़े और गर्भवती स्त्रियोंके लिए तो ज्वर नाश करनेमें ये परमात्माका आशीर्वाद ही हैं। ये चढ़े हुए ज्वरको धीरे-धीरे कम करती हैं और ज्वर

आनेसे पहले खिलानेसे ज्वरको रोकती हैं। अतः ये चढ़े हुए ज्वरमें भी दी जा सकती हैं। ज्वर आनेसे पहले देनेमें तो कोई बात ही नहीं है।

ज्वरके सिवा ये खाँसी, जुकाम, इनफ्लुएञ्जा आदिमें भी लाभ दिखाती हैं। बड़ी खूबी यह है कि, ये पेटको साफ़ करती और पित्तको शान्त करती हैं।

हमने इन गोलियोंको मुफ्त दे-देकर खूब परीक्षा की है। गृहस्थ-मात्रको इन्हें हर समय पास रखना चाहिये। ("वैद्य" की चीज़ है।)



प्लीहा-नाशक रस

वृहत् लोकनाथ रस

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले और अभ्रक भस्म १ तोले—इनको घीग्वारके रसमें ६ घण्टे खरल करो।

फिर इसमें ताम्बा भस्म २ तोले, लोह भस्म २ तोले और पीली कौड़ीकी भस्म ६ तोले मिलाकर, काकमाचीके रसके साथ ६ घण्टे खरल करो और गोला बना-सुखाकर, सराइयोंमें बन्द करो। फिर कपरौटी करके सुखाओ और गजपुटमें फूँक दो।

इस लोकनाथ रससे प्लीहा-तिल्ली, यकृत-लिवर और अग्रमांस रोग नाश होते हैं।

वृहत् प्लीहारि लौह

हिंगुलका पारा, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध जमालगोटेके बीज, सुहागेकी खीलें और शुद्ध शिलाजीत—हरेक एक-एक तोले लो। ताम्बा भस्म, शुद्ध मैनसिल और हल्दी—हरेक दो-दो तोले लो।

सबको मिलाकर, दन्तीकी जड़, निशोथकी जड़, चीतेकी जड़,

सम्हालूके पत्ते, त्रिकुटा, अदरख और भीमराज—इनके रसों या काढ़ोंमें अलग-अलग एक-एक दिन खरल करके जङ्गली बेर-समान गोलियाँ बना लो।

उपर्युक्त अनुपानके साथ देनेसे प्लीहा, पाण्डु और कामलादि रोग नाश होते हैं।

महामृत्युञ्जय लोह

शुद्ध पारा ६ माशे, शुद्ध गंधक ६ माशे और अभ्रक भस्म ६ माशे, लोह भस्म १ तोले, ताम्बा भस्म २ तोले, जवाखार, सज्जीखार, सेंधानोन, कालानोन, पीली कौड़ीकी भस्म, शङ्ख भस्म, चीतेकी जड़, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध हरताल, शुद्ध हींग, कुटकी त्रिवृत्त, इमलीकी छालकी राख, इन्द्रायणकी जड़, आककी जड़, चिरचिरेकी राख, अम्लवेत, हल्दी, दारुहल्दी, प्रियंगू, इन्द्रजौ, हरीतकी, अजमोद, अजवायन, तूतिया, शरपुँखा और रसौत—ये सत्ताइसों चीजें छै-छै माशे लो—इन सबको खरलमें डालकर, एक दिन अदरखके रसमें घोटो और एक दिन गिलोयके रसमें घोटो। फिर इसमें ८ तोले शहद मिलाकर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

यह लौह किसी खास दोषकी जियादती या जोरके अनुसार उचित अनुपानके साथ देनेसे ज्वर, प्लीहा, खाँसी, श्वास और गोला प्रभृतिको नाश करता है।

यकृत्प्लीहोदरहर लोह

लोह भस्म १ तोले, अभ्रक भस्म ६ माशे, रस-सिन्दूर ३ माशे और त्रिफला ४॥ तोले,—इन सबको साढ़े सैंतीस तोले पानीमें डालकर औटाओ; जब आठवाँ भाग यानी ४ तोले ८ माशे २ रत्ती पानी रहे उतार लो। फिर उसमें ४ तोले ८ माशे २ रत्ती घी, ३ तोले शतावरका रस और ३ तोले दूध मिलाकर फिर औटाओ।

नोट—शुरूमें ही औटानेको धरो, तब लोहा आधा डालना; आधा रख लेना। जब दूसरी बार दूध वग़ैरह डालकर औटाओ, गाढ़ा होनेपर आवे, तब वह आधा रखा हुआ लोहा भी डाल देना।

जब गाढ़ा होनेपर आवे वह आधा बचाया हुआ लोह भस्म तथा जमीकन्द, कापालिका, चव्य, वायविड़ङ्ग, लोध, शरपोंखा, अम्बष्ठा, चीतेकी जड़, सोंठ, पाँचों नमक, जवाखार, वीजदारक, अजवायन और मोम हरेक डेढ़-डेढ़ तोले मिला दो। इसके बाद—सीहोदर नाशार्थ—इसे दो बार अलग-अलग जमीकन्द और मानकन्दके रसमें खरल करो और दो दफा ही पुटमें फूँक दो। मात्रा—डेढ़ माशेसे तीन माशे तक यानी दुअन्नी-भरसे चौअन्नी-भर तक। अनुपान—गरम जल।

इस लौहसे सीहा-तिल्ली, यकृत-जिगर-लिवर और गुल्म-गोला आदि रोग नाश होते हैं।

प्लीहा-नाशक योग

आगपर फुलाई हुइ फिटकरी २ तोले और आगपर फुलाया हुआ सुहागा २ तोले लेकर पीस-छान लो और रख लो। सवेरे-शाम दो-दो रत्ती यह दवा बंगला पानमें रखकर खानेसे ११ दिनमें भयंकर तिल्ली और गोला नाश हो जाता है। पर परीक्षित है, पर विश्वास-योग्य जान पड़ता है। रोगी परीक्षा करें, लाभ ही होगा।



मृतसञ्जीवनी वटिका

पीपरोंका चूर्ण १ तोले, शुद्ध वत्सनाभ विष १ तोले और शुद्ध हिंगुल दो तोले—सबको जामुनके पत्तोंके रसके साथ खरल कर, मूलीके बीज-बराबर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको शीतल जलके साथ

सेवन करनेसे ज्वरातिसार, हैजा और घोर सन्निपातज्वर आराम होते हैं।

गगन सुन्दर रस

सुहागेकी खीलें, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गन्धक और अभ्रक-भस्म—समान-समान लेकर, तीन दिन तक आकके पत्तोंके रसके साथ घोटो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। अनुपान—सफ़ेद खानेकी राल दो रत्ती और शहद।

इससे बढ़ा हुआ ज्वरातिसार, रक्तातिसार, और आम-शूल रोग नाश होते तथा जठराग्नि बढ़ती है। पथ्य—माठा और बकरीका दूध।

कनकप्रभा बटी

शुद्ध धतूरेके बीज, कालीमिर्च, हंसपदी, पीपल, सुहागेकी खीलें, शुद्ध मीठा विष और शुद्ध गन्धक—इन सातोंको एक दिन-भर जयन्ती के रसमें घोटकर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंसे अतिसार, ग्रहणी, ज्वर और मन्दाग्नि आदि रोग नाश होते हैं।

पथ्य—दही-भात, शीतल जल, लावा और तीतर आदिका मांस

॥ समाप्त ॥

